प्रकाशकः—
नाथूराम प्रेमी, मन्त्री—
माणिकचन्द्र जैन ग्रन्थमाला,
हीराबाग, पो० गिरगाँव, बम्बई।

फ़ॅ भूमिका और अनुक्रमणिका आदिके मुद्रक—
मंगेश नारायण कुळकर्णी,
कर्नाटक प्रिंटिंग प्रेस,
३१८ ए, ठाकुद्वार, बम्बई।
और शेष संपूर्ण पुस्तकके मुद्रक—
ए० बोस, इंडियन प्रेस
लिमिटेड, बनारस केण्ट।

निवेदन

—:•:—

दिगम्बर जैन सम्प्रदायके शिलालेखों, ताम्रपत्रों, मूर्तिलेखों और ग्रन्थप्रशस्तियोंमें जैनधर्म और जैन समाजके इतिहासकी विपुल सामग्री बिखरी हुई पड़ी है जिसको एकत्रित करनेकी बहुत ही बड़ी आवश्यकता है। जब तक 'जैनहितैषी' निकलता रहा, तब तक मैं बराबर जैनसमाजके शुभचिन्तकोंका ध्यान इस ओर आकर्षित करता रहा हूँ। परन्तु अभी तक इस ओर कुछ भी प्रयत्न नहीं हुआ है और जो कुछ पोकासा इधर उधरसे हुआ भी है वह नहीं होनेके बराबर है।

बड़ी प्रसन्नताकी बात है कि बाबू हीरालालजीकी कृपा और निस्वार्थ सेवासे आज मेरी एक बहुत पुरानी इच्छा सफल हो रही है और जैन शिलालेखसंग्रहका यह प्रथम भाग प्रकाशित हो रहा है। बाबू हीरालालजी इतिहासके प्रेमी और परिश्रमशील विद्वान् हैं। उनके द्वारा मुझे बड़ी बड़ी आशायें हैं। वे संस्कृतके एम• ए• हैं। इलाहाबाद यूनीवर्सिटीकी ओरसे उन्हें दो वर्ष तक रिसर्च स्कालर्शिप मिल चुकी है और इस समय अमरावतीके किंग एडवर्ड कालेजमें वे संस्कृतके प्रोफेसर हैं। कारंजाके जैनशास्त्रभण्डारोंका एक अन्वेषणात्मक विस्तृत सूचीपत्र सी• पी• गवर्नमेण्टकी ओरसे आपने ही तैयार किया था, जो मुद्रित हो चुका है। आपकी इच्छा है कि शिलालेखसंग्रहके और भी कई भाग प्रकाशित किये जायँ और उनके सम्पादनका भार भी आप ही लेना चाहते हैं। मुझे आशा है कि माणिकचन्द्र ग्रन्थमालाकी ग्रन्थकारिणी कमेटी इस भागके समान आगेके भागोंको भी प्रकाशित करनेका श्रेय सम्पादन करेगी। अस्तव्यस्त और जीर्णशीर्ण अवस्थामें पड़े हुए जैन इतिहासके साधनोंको अच्छे रूपमें प्रकाशित करना बड़े ही पुण्यका कार्य है।

निवेदक—

नाथूराम प्रेमी

श्री मोदी बालचन्द्रजी

(संग्रहक के पिता)

समर्पण

पिताजी,

आपने अत्यन्त परिश्रम करके मुझे जो कुछ
विद्यादान व धार्मिक ज्ञान दिलाया है,
उसीके फलस्वरूप यह प्रथम
भेंट आपके करकमलोंमें
सादर समर्पित है।

आपका पुत्र,
हीरालाल

विषय-सूची

	पृ०
Preface	
प्राथमिक वक्तव्य	
भूमिका—(श्रवणबेल्गोलके स्मारक)	१-१६२
चन्द्रगिरि	१-१६
विन्ध्यगिरि	१६-४२
श्रवणबेल्गोल नगर	४२-५०
श्रवणबेल्गोलके आसपासके ग्राम	५०-५४
लेखोंकी ऐतिहासिक उपयोगिता व भिन्न २ राजवंश	५४-१११
लेखोंका मूल प्रयोजन	१११-१२१
लेखोंसे तत्कालीन दृश्के भावका अनुमान	१२२-१२५
आचार्योंकी वंशावली	१२५-१४४
संघ, गण, गच्छ और शाखा भेद	१४४-१४८
आचार्योंकी नामावली	१४९-१६२
लेख—	१-४२७
चन्द्रगिरिके शिलालेख	१-१५५
विन्ध्यगिरिके शिलालेख	१५७-२११
श्रवणबेल्गोल नगरमें के लेख	२११-२९१
श्रवणबेल्गोलके आसपासके लेख	२९४-२९९
श्रवणबेल्गोल और आसपासके ग्रामोंके अवशिष्ट लेख	३०१-४२७
अवशिष्ट लेखोंके समयका अनुमान...	३०१-३०५
परिशिष्ट १	१-१६
परिशिष्ट २	१७-१८

PREFACE

The inscriptions at Sravana Belgola were first collected and published by Mr. B. Lewis Rice, C.I.E., M.R.A.S., Director of Archaeological Researches in Mysore, as far back as 1889. A thoroughly revised and enlarged edition of the same was brought out by the late Director of Mysore Archaeological Researches, Prâktana Vimarsha Vichakshana Rao Bahadur R. Narsinhachar, M A., M.R A.S. While the first edition contained only 144 inscriptions, Rao Bahadur Narsinhachar has brought to light hundreds of other inscriptions from the same locality and his edition contains no less than 500 of them The site may now be said to be more or less thoroughly explored.

These inscriptions have a peculiar interest for the historian in so far as all of them are associated in one way or another with the Jain Religion. Interest in historical researches has of late been awakened in almost all the important communities of India and it is a happy augury of the times that the Directors of the Manikachandra Digambara Jain Granthamala have decided to include in their distinguished series a set of volumes bringing together in a handy form, all the known inscriptions of the Digambara Jains, thus facilitating the work of the future Jain Historian. It was thought suitable and convenient to start this series with a volume of Sravana Belgola inscriptions and the work was entrusted to me

The present edition is based upon the above mentioned two editions. It has, thus, nothing new to offer to the scholar; but to the general reader, who is interested in Jain History but who for one reason or another can not go to the previous costly editions in Roman and Kanarese characters, this edition has a few advantages. The text of the inscriptions is here presented for the first time in Devanagari characters, the numbers of the inscriptions in the previous

two editions have been given and the verses have been numbered to facilitate reference; the substance of the inscriptions having portions of Kanarese in them has been given in Hindi; all the important information about Sravana Belgola and its surroundings, as contained in the previous two editions is given in the Introduction and the historical importance of the inscriptions from the Jain point of view is more thoroughly discussed and the index of the names of Jain monks, poets and works has been separated from the general index.

My sincere thanks are due to the Mysore Government and its distinguished Directors of Archaeology, mentioned above, without whose previous labours this edition would have been impossible and to Pandit Nathuram Premi, the able Secretary of the Manika-chandra Digambara Jaina Granthamala without whose initiative and encouragement the work would have never been undertaken.

AMRAOTI,
King Edward College,
March 21st 1928.

HIRALAL.

प्राथमिक वक्तव्य

श्रवण बेलगोल के शिलालेख सबसे प्रथम मैसूर सरकार की कृपासे सन् १८८९ में प्रकाशित हुए थे। मैसूर पुरातत्त्वविभाग के तत्कालीन अधिकारी लूइस राइस साहबने उस समय श्रवण बेलगुल के १४४ लेखों का संग्रह प्रकाशित किया। इस संग्रह की भूमिका में राइस साहबने पहले पहल इन लेखों के साहित्य-सौन्दर्य व ऐतिहासिक महत्व की ओर विद्वत्समाज का ध्यान आकर्षित किया व चन्द्रगुप्त और भद्रबाहु वाले प्रश्न का विस्तृत विवेचन कर वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि चन्द्रगुप्त ने यथार्थतः भद्रबाहु मुनिसे दीक्षा ली थी व लेख नं० १ उन्हीं का स्मारक है। तबसे इस प्रश्न पर विद्वानों में बराबर वादविवाद होता आया है। उक्त संग्रह का दूसरा संस्करण अभी सन् १९२२ इस्वी में प्रकाशित हुआ है। इस संग्रह के रचयिता प्राक्तनविमर्शविचक्षण राव बहादुर आर० नरसिंहाचारजी हैं, जिन्होंने श्रवणबेलगोल के सब लेखों की पुनः सूक्ष्मतः जाँच की व परिश्रमपूर्वक खोज करके अन्य सैकड़ों लेखों का पता लगाया। इस संस्करण में उन्होंने पाँच सौ लेखों का संग्रह किया है व एक विस्तृत व विद्वत्तापूर्ण भूमिका में वहाँ के समस्त स्मारकों का वर्णन व लेखों के ऐतिहासिक महत्व का विवेचन किया है।

किन्तु ये संग्रह कन्नड़ी व तेलगु लिपिमें प्रकाशित किये जाने व बहुमूल्य होनेके कारण बहुतसे इतिहासप्रेमियों को उनसे कुछ लाभ न हो सका और अधिकांश जैन लेखक इनका उपयोग न कर सके। वास्तवमें इन लेखोंका परिशीलन किये बिना आजकल जैन साहित्यिक, धार्मिक व राजनैतिक इतिहास के विषयमें कुछ लिखना एक प्रकारसे अनधिकार चेष्टा है, क्योंकि ये लेख प्रायः समस्त प्राचीन दिगम्बर जैनाचार्यों के कृत्यों के प्राचीनतम ऐतिहासिक प्रमाण हैं। इस प्रकार के समस्त उपलब्ध जैन लेख जब तक संग्रह रूपमें प्रकाशित न हो जाँयगे तबतक प्रामाणिक जैन इतिहास संतोषजनक रीति से नहीं लिखा जा सकता।

इसी आवश्यकता की भावना से प्रेरित होकर श्रीयुक्त पं० नाथूरामजी प्रेमी ने सन् १९२७ में उक्त लेखोंका देवनागरी संस्करण तैयार करने का मुझसे अनुरोध किया। प्रथमतः कार्य के भार का ध्यान करके मुझे इसे

स्वीकार करने का साहस न हुआ किन्तु अन्तमें लाचार होकर वह कार्य हाथ में लेना ही पड़ा। सन १९२५ में कार्य प्रारम्भ हुआ। आशा की गई थी कि कुछ मासमें ही कार्य समाप्त हो जावेगा। किन्तु कार्य बड़ा होने व मेरे अलाहाबाद से अमरावती आ जानेके कारण वह आशा पूर्ण न हो सकी। अनेक कठिनाइयाँ उपस्थित हुईं और समय बहुत लग गया। किन्तु हर्षका विषय है कि अन्ततः कार्य निर्विघ्न पूर्ण हो गया।

राइस साहब के संग्रह के १४१ लेखों की, श्रीयुक्त बाबू सूरजभानुजी वकील द्वारा कापी की हुई और पं० जुगलकिशोर जी मुख्तार द्वारा शुद्ध की हुई एक प्रेस कापी मुझे पं० नाथूरामजी द्वारा प्राप्त हुई। प्रथम यह विचार हुआ कि इन्हीं लेखों में नये संस्करण के कुछ चुने हुए लेख सम्मिलित कर प्रथम संग्रह प्रकाशित कर दिया जाय। किन्तु सूक्ष्म विचार करने पर यह उचित न जँचा। किसी न किसी दृष्टिसे सभी लेख आवश्यक जँचने लगे व लेखों का पाठ नये संस्करण के अनुसार रखना आवश्यक प्रतीत हुआ। प्रस्तुत संग्रह में बड़े परिश्रम से पाठ शुद्ध कर उसे सर्वप्रकार मूलके अनुसार ही रक्खा है। पद्यमात्रा भी मूलके अनुसार हैं यद्यपि इससे कहीं कहीं शब्दों के रूप अपरिचित से हो गये हैं। किन्तु छापे की कठिनाई के कारण कनाड़ी भाषा के कुछ वर्णों का भिन्न स्वरूप यहाँ नहीं दर्शाया जा सका। उदाहरणार्थ, ಒ, ಓ को यहां 'ए', ಂ, ಁ को 'ओ' ೆ, ೃ को 'र' व ಲ, ೞ, ೟ को 'ल' से ही सूचित किया है। मुद्रण-शोधन में यथाशक्ति कसर नहीं रक्खी गई किन्तु फिर भी कुछ छोटी मोटी अशुद्धियाँ आ गई हैं। उल्लेख के सुभीते के लिये लेखों की क्रोड संख्या दे दी गई है। यह बात पूर्व संस्करणों में नहीं है। जहाँ पर प्रथम और द्वितीय संस्करण के पाठोंमें कुछ विचारणीय भिन्नता ज्ञात हुई वहाँ दूसरा पाठ फुटनोटमें दे दिया गया है। बहुत अच्छा होता यदि लेखों का पूरा अनुवाद दिया जा सकता किन्तु इससे ग्रंथका आकार बहुत बढ़ जाता। अतएव जिन लेखों में थोड़ी भी कनाड़ी आई है उनका हिन्दी भावार्थ देकर ही संतोष करना पड़ा है। प्रथम १४१ लेख राइस साहब के क्रमानुसार रखकर पश्चात् का क्रम स्वतंत्रताने चालू रक्खा गया है। कोष्टक में नये संस्करण के नम्बर दे दिये गये हैं जिससे आवश्यकता होने पर पहले व दूसरे संस्करण से प्रयत्नोपयोगी

लेख का पुनरुक्ता से मिलान किया जा सकता है। नये संस्करण के पाँच लेख यहाँ दो ही लेखों (७५, ७६)में आ गये हैं व लेख नं० ३९४ और ४०१-४०६ विशेषोपयोगी न होने के कारण छोड़ दिये गये हैं। इस प्रकार इन लेखों की जो बचत हुई उनके स्थान में एपीग्राफिया कर्नाटिका भाग ५ में से चुनकर इस लेख सम्मिलित कर दिये गये हैं।

भूमिका का वर्णनात्मक भाग सर्वश्री रा० व० नरसिंहाचार के वर्णन के आधार पर ही लिखा गया है किन्तु ऐतिहासिक व आचार्यों के सम्बन्ध का विवेचन बहुत कुछ स्वतंत्रता से किया गया है। गोम्मटेश्वर मूर्ति की स्थापना का समय निर्णय व शिलालेख नं १ का विवेचन नरसिंहाचारजी के मतसे कुछ भिन्न हुआ है।

अन्त में हम मैसूर सरकार व उनके पुरातत्व विभाग के सुयोग्य अधिकारी भूतपूर्व राइस साहब व रा० व० नरसिंहाचार के बहुत कृतज्ञ हैं। बिना उनकी अपूर्व खोजों और अनुपम प्रयास के जैन इतिहास पर यह भारी प्रकाश पड़ना व इस पुस्तक का प्रकाशित होना दुःसाध्य था। हम माणिकचन्द्र दि० जैन ग्रन्थमाला के मंत्री पं० नाथूरामजी प्रेमी के विशेष रूपसे उपकृत हैं। आपके सस्नेह प्रेरणा व अपार उत्साह के बिना इससे यह कार्य होना अशक्य था। आपने असाधारण विलम्ब होने पर भी धैर्य रक्खा जिससे ग्रंथ सुचारूरूपसे सम्पादित हो सका। पुस्तक के—विशेषत. कनाड़ी अंशों के—कम्पोजिंग व प्रूफ शोधन में प्रेसवालों को भारी कठिनाई और विलम्ब का सामना करना पड़ा है किन्तु उन्होंने योग्यतापूर्वक इस कार्य को निबाहा। इस हेतु इंडियन प्रेस, अलाहाबाद के मैनेजर हमारे धन्यवाद के पात्र हैं।

भूमिका की अपूर्णताओं और त्रुटियों का ध्यान जितना स्वयं मुझे है उतना कदाचित् हमारे उदार हृदय पाठकों को न होगा; किन्तु विषयकी ओर विद्वानों का लक्ष्य खिंचाने के हेतु इन त्रुटियों में पड़ना भी आवश्यक था। यदि इस पुस्तक से जैन ऐतिहासिक प्रश्नों के हल करने में कुछ भी सहायता पहुँची तो मैं अपने को कृतार्थ समझूँगा। यदि पाठकों ने चाहा और भविष्य अनुकूल रहा तो दक्षिण भारत के जैन लेखोंका दूसरा संग्रह भी शीघ्र ही पाठकों की भेंट किया जायगा।

किंग एडवर्ड कालेज, अमरावती,
फाल्गुन शुक्ला ७, सं० १९८४.

हीरालाल

शुद्धिपत्र

(भूमिका)

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२	५	बेल्गोल	बेल्गोल
७९	७	सल्लखना	सल्लेखना
९८	१	११२४	१२४
१००	१-२	माधनन्दि आचार्यो	माधनन्दि आदि आचार्यो
१०६	८	जगदेव के	जगदेव नामक
११२	१३	भटत	भरत
११८	९	वीरह	वीर
११८	१०	पदावली	पट्टावली
११९	१५	दयालपाल	दयापाल
१५२	४	पुष्पनान्द	पुष्पनन्दि

(लेख)

२१	१०	बोद्	बाहुबल
४८	१८	विष्णुवर्द्धनहारा	विष्णुवर्द्धनके मंत्री गंगराज
४९	२	विष्णुवर्द्धन नरेश	गंगराज मंत्री [द्वारा
५५	१३	पद्यो	पंक्तियों
१४७	१४	एरडु कट्टे बस्ति	एरडुकट्टे बस्तिमें
१५७	११	श्री चामुण्डराज	श्रीचामुण्डराज
१७५	१८	रामचन्द्र मूप	रामचन्द्र मूप
१९४	१३	कुलो.. ङ्ग	कुलोत्तुङ्ग
२०७	२	पण्डितार्य्य	पण्डितार्य्यः
२१२	अन्तिम	सं. (३५४)	सं. ४१४ (३५४)
२१६	१३	१९९	१९८
२१६	१३	१९७	१९९
२१९	१४	२१९ (११५)	२१९ (११५)
२३७	६	२५५ (४१३)	२५५ (४१४)
२७१	२	विजयराज्यय	विजयराज्य
२७७	१	४७७ (३८६)	४७६ (३८६)
२८५	१०	पंक्तिके पश्चात् लेखांक ४९१ छूट गया है।	

सूचिकायें प्रमुख संकेताक्षर

१. [illegible]

२. [illegible]

३. [illegible]

४. [illegible]

५. [illegible]

वर्ष पुराने कुछ लेखों में भी इस स्थान का नाम दरेक सरोवर, दरक्यर: व दरक्यसरोवर पाये जाते हैं।

'देक्लोव' नाम लगभग सातवीं शताब्दि के एक लेख में पाया है,* और लगभग आठवीं शताब्दि के एक दूसरे लेख में इसका नाम 'देक्लोव' पाया जाता है†। इससे पीछे के दो लेखों में देक्युक, देक्युक और देक्युगुक नाम पाये जाते हैं। एक लेख में 'देवर देक्लोव' नाम भी पाया जाता है‡ जिसका अर्थ होता है देव का (जिनदेव का) देक्लोव। बादशेखोन नाम के आसपास दो और देक्लोव नाम के स्थान हैं जो छोटे देक्लोव और कोडि-देक्लोव कहलाते हैं। गोलाकार की विशाल मूर्ति के कारण इसका नाम गोलापुर भी है§। एक अर्वाचीन लेख में दक्षिण काली नाम से भी इस तीर्थ-स्थान का उल्लेख हुआ है¤

बादशेखोन नाम नाम वैसूर गांव में दक्षिण ओर के पहाड़ी-मन्दिरसमूह और दो सुन्दर पहाड़ियों के बीच बसा हुआ है। इन्हें में कहीं पहाड़ी (बेट्टबेट्ट) का नाम से दक्षिण की ओर है 'चन्द्रगिरि' कहलाती है इसी पहाड़ी पर गोलाकार की एक विशाल मूर्ति खोदित है तो चन्द्रा की दूसरी ओर चन्द्रगिरि की ओर इस पर्वत नाम की ओर आकर्षित करती है। इसके

* इण्डि० एण्टि० जि० ७ पृ० १०४ † इण्डि० एण्टि० जि० १० पृ० १८
‡ इण्डि० एण्टि० जि० ७ पृ० ११ § देखो लेख नं० १०२
¤ इण्डि० एण्टि० जि० १२ पृ० १६० ¤ देखो लेख नं० १२०, १४१.

अतिरिक्त कुछ बस्तियाँ (जिन-मन्दिर) भी इन पहाड़ों पर हैं। दूसरी छोटी पहाड़ी (चिक्क बेट्ट), जो ग्राम से उत्तर की ओर है, चन्द्रगिरि के नाम से प्रख्यात है। अधिकांश और प्राचीनतम लेख और बस्तियाँ इसी पहाड़ी पर हैं। कुछ मन्दिर, लेख आदि ग्राम की सीमा के भीतर हैं और शेष श्रवणबेलगोल के आस-पास के ग्रामों में हैं। अतः यहाँ के समस्त प्राचीन स्मारकों का वर्णन इन चार शीर्षकों में करना ठीक होगा—(१) चन्द्रगिरि, (२) विन्ध्यगिरि, (३) श्रवण बेलगोल (ग्राम) और (४) आस-पास के ग्राम। लेख सं० ३५४ के अनुसार श्रवणबेलगोल के समस्त मन्दिरों की संख्या ३२ है अर्थात् आठ विन्ध्यगिरि पर, सोलह चन्द्रगिरि पर और आठ ग्राम में। पर क्रम में इन बस्तियों के नाम यहाँ दिये गये।

चन्द्रगिरि

चन्द्रगिरि पर्वत समुद्र-तल से ३,०५० फुट की ऊँचाई पर है। प्राचीनतम लेखों में इस पर्वत का नाम कटवप्र० (संस्कृत) व कल्वप्पु या कल्वप्पु† (कन्नड़) पाया जाता है। दोड्डगिरि और ऋषि-गिरि नाम से भी यह पहाड़ी प्रसिद्ध रही है‡। इसके शिखर पर के शेष सब

० देखो लेख सं० १, २०, २८, ३१, ३३, १२३, १२१, १८१

† देखो लेख सं० ३४, ३६, १८०, १८१

‡ देखो लेख सं० ३४, ३६.

जिनालय एक दीवाल के घेरे के भीतर प्रतिष्ठित हैं। इस घेरे की उत्कृष्ट लम्बाई ५०० फुट और चौड़ाई २२५ फुट है। सब मन्दिर द्राविड़ी ढङ्ग के बने हुए हैं। इनमें से सबसे प्राचीन मन्दिर ईसा की आठवीं शताब्दि का प्रतीत होता है। घेरे के भीतर के मन्दिरों की संख्या १३ है। सभी मन्दिरों का ढङ्ग प्रायः एक सा ही है। सभी में साधारणतः एक गर्भगृह, एक सुखनासि खुला या घिरा हुआ, और एक नवरङ्ग रहता है। नीचे इस पहाड़ी के सब मन्दिरों व अन्य प्राचीन स्मारकों का सूक्ष्म वर्णन दिया जाता है:—

१ पार्श्वनाथ बस्ति—इस सुन्दर और विशाल मन्दिर की लम्बाई-चौड़ाई ५६×२६ फुट है। दरवाजे भारी हैं। नवरङ्ग और सामने के दरवाजे के दोनों ओर बरामदे बने हुए हैं। बाहरी दीवालें लम्बी और छोटी-छोटी गुम्मटों से सजी हुई हैं। सप्तफणी नाग की छाया के नीचे भगवान् पार्श्वनाथ की १५ फुट ऊँची मनोज्ञ मूर्ति है। इस पर्वत पर यही मूर्ति सबसे विशाल है। सामने सुदृढ़ और सुन्दर मानस्तम्भ खड़ा हुआ है जिसके चारों गुल्मों पर यक्ष-यक्षिणियों की मूर्तियाँ बनी हैं। कहा नहीं जा सकता कि इस मन्दिर के निर्माण का ठीक समय क्या है। नवरङ्ग में एक बड़ा भारी लेख बना हुआ है (लेख नं० ५४) जिसमें शक सं० १०५० में मल्लिषेण-मलधारि देव के समाधि-मरण का संवाद है। पर मन्दिर के निर्माण के विषय की कोई बात

लेख में नहीं पाई जाती। यहाँ के मानस्तम्भ के विषय में अनन्त कवि-कृत कनाड़ी भाषा के 'बेल्गोलद् गोम्मटेश्वर-चरित' नामक काव्य में कहा गया है कि उक्त मानस्तम्भ मैसूर के चिक देव-राज ओडेयर नामक राजा (१६७२-१७०४ ईस्वी) के समय में पुट्टैय नामक एक सेठ-द्वारा निर्माण कराया गया था। इसी काव्य के अनुसार मन्दिर की बाहरी दीवाल भी इसी सेठ ने बनवाई थी। यह काव्य लगभग डेढ़ सौ वर्ष पुराना है।

२ कत्तले बस्ति—चन्द्रगिरि पर्वत पर यह मन्दिर सबसे भारी है। इसकी लम्बाई-चौड़ाई १२४×४० फुट है। गर्भगृह के चारों ओर प्रदक्षिणा है। नवरङ्ग से सटा हुआ एक मुखमण्डप (सभा-भवन) भी है और एक बाहरी बरामदा भी। सामने के दरवाजे के अतिरिक्त इस सारे विशाल भवन में और कोई खिड़कियाँ व दरवाजे नहीं हैं। बाहरी ऊँची दीवाल के कारण उस एक सामने के दरवाजे से भी पूरा-पूरा प्रकाश नहीं जाने पाता। इसी से इस मन्दिर का नाम कत्तले बस्ति (अन्धकार का मन्दिर) पड़ा है। बरामदे में पद्मावती देवी की मूर्ति है। जान पड़ता है, इसी से इस मन्दिर का नाम पद्मावतीबस्ति भी पड़ गया है। मन्दिर पर कोई शिखर नहीं है, पर मठ में इस मन्दिर का जो मान-चित्र है उसमें शिखर दिखाया गया है। इससे जान पड़ता है कि किसी समय यह मन्दिर शिखर-बद्ध रहा है।

बायें छोर पर सर्वाह्नयक्ष की मूर्ति यां हैं। सभी मूर्तियां पद्मासन हैं। बरामदे के सम्मुख जो बहुत ही सुन्दर प्रतोली (दरवाजा) है वह पीछे निर्मापित हुआ है। इसकी कारीगरी देखने योग्य है। घेरे के पत्थरों पर जाली का काम, जिस पर श्रुतकेवलि भद्रबाहु और मौर्य सम्राट् चन्द्रगुप्त के कुछ जीवन-दृश्य खुदे हुए हैं, अपूर्व कौशल का नमूना है। इसी जाली पर एक जगह 'दासोजः' ऐसा लेख है जो इस प्रतोली के बनानेवाले कारीगर का नाम प्रतीत होता है। इसी नाम के एक व्यक्ति ने लेख नं० ५० उत्कीर्ण किया है। यह लेख शक सं० १०६८ का है। यदि ये दोनों व्यक्ति एक ही हों तो यह प्रतोली शक सं० १०६८ के लगभग की बनी सिद्ध होती है। उपर्युक्त लेख की लिपि भी इसी समय की ज्ञात होती है। मन्दिर के दोनों बाजुओं के कोठों पर छोटे खुदावदार शिखर भी हैं। मध्य के कोठे के सम्मुख सभा-भवन में क्षेत्रपाल की स्थापना है जिनके सिंहासन पर कुछ लेख भी है। इस मन्दिर का नाम चन्द्रगुप्त-वस्ति पड़ने का कारण यह बतलाया जाता है कि इसे स्वयं महाराज चन्द्रगुप्त मौर्य ने निर्माण कराया था। इसमें सन्देह नहीं कि इस मन्दिर की इमारत इस पर्वत के प्राचीनतम स्मारकों में से है।

४ शान्तिनाथ वस्ति—यह छोटा सा जिनालय २४×१६ फुट लम्बा-चौड़ा है। इसकी दीवालों और छत पर अभी तक चित्रकारी के निशान हैं। शान्तिनाथ

स्वामी की मूर्ति पद्मासन ११ फुट ऊँची है। मन्दिर के बनने का समय ज्ञात नहीं।

५ सुपार्श्वनाथ बस्ति—इस मन्दिर की लम्बाई-चौड़ाई २५ × १४ फुट है। सुपार्श्वनाथ स्वामी की पद्मासन मूर्ति तीन फुट ऊँची है, जिसके ऊपर सप्तफणी नाग की छाया हो रही है। मन्दिर के बनने के विषय की कोई बात लिखित नहीं है।

६ चन्द्रप्रभ बस्ति—इस मन्दिर का क्षेत्रफल ४२ × २५ फुट है। चन्द्रप्रभस्वामी की पद्मासन मूर्ति तीन फुट ऊँची है। मूलनायक के दोनों ओर पार्श्वनाथ स्वामी और शान्तिनाथ विराजमान हैं। मन्दिर के सामने एक पाषाण पर 'सिद्धसारस्त बसदि' (२५६) ऐसा लेख है। इस लेख की लिपि से ऐसा प्रतीत होता है कि सम्भवतः इसमें मल्लिषेण सिद्धसार द्वितीय, बोप्पण के गुरु, का उल्लेख है। सिद्धसार के द्वारा जिस 'बसदि' (बस्ति) के बनने का इस में उल्लेख है, सम्भव है यह वही चन्द्रप्रभ बस्ति हो; क्योंकि इसके सिवाय अन्य और कोई बस्ति नहीं है। यदि यह अनुमान ठीक हो तो यह बस्ति सन् ८०० ईस्वी के लगभग का सिद्ध होता है।

७ आदिनाथ बस्ति—यह शिखर भवन बनावट और कारीगरी में इस पर्वत पर सबसे सुन्दर है। इसकी लम्बाई-चौड़ाई ६८ × ४६ फुट है। इसका दूसरा खण्ड और

एक सुन्दर गुम्मट भी है। इसमें नेमिनाथ स्वामी की पांच फुट ऊँची मनोहर प्रतिमा है। गर्भगृह के दरवाजे पर दोनों बाजुओं पर क्रमशः यक्ष सर्वाह्न और यक्षिणी कुष्माण्डिनी की मूर्तियां हैं। बाहरी दीवालें स्तम्भों, आलों और उत्कीर्ण या उभेली हुई प्रतिमाओं से अलंकृत हैं। बाहरी दरवाजे की दोनों बाजुओं पर नीचे की ओर 'श्रीचामुण्डराजं माडिसिदं' (२२३) ऐसा लेख है। इससे स्पष्ट है कि यह वस्ति स्वयं गङ्गनरेश राचमल्ल के मन्त्री चामुण्डराज ने निर्माण कराई थी और उसका समय ९८२ ईसवी के लगभग होना चाहिये। पर नेमिनाथ स्वामी के सिंहासन पर लेख है (६६) कि गङ्गराज सेनापति के पुत्र 'एचण' ने त्रैलोक्यरञ्जन मन्दिर अपरनाम वेप्पचैत्यालय निर्माण कराया था। यह लेख सन् ११३८ के लगभग का अनुमान किया जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि एचण का निर्माण कराया हुआ चैत्यालय कोई अन्य रहा होगा जो अब ध्वंस हो गया है और यह नेमिनाथ स्वामी की प्रतिमा वहीं से लाकर इस वस्ति में विराजमान करा दी गई है। मन्दिर के ऊपर के खण्ड में एक पार्श्वनाथ भगवान् की तीन फुट ऊँची मूर्ति है। उनके सिंहासन पर लेख है (नं० ६७) कि चामुण्डराज मन्त्री के पुत्र जिनदेव ने बेलगोल में एक जिन-भवन निर्माण कराया। अनुमान किया जाता है कि इस लेख का तात्पर्य मन्दिर के इसी ऊपरी भाग से है जो नीचे के खण्ड से कुछ पीछे बना होगा।

■ **शासन बस्ति**—मन्दिर के दरवाजे पर जो लेख शासन नं० ५९) है, जान पड़ता है, उसी से इसका नाम शासनबस्ति पड़ा है। इसकी लम्बाई-चौड़ाई ५५ × २६ फुट है। गर्भगृह में आदिनाथ भगवान् की पाँच फुट ऊँची मूर्त्ति है जिसके दोनों ओर चौरी-वाहक खड़े हुए हैं। सुखनासि में यक्ष यक्षिणी गोमुख और चक्रेश्वरी की प्रतिमाएँ हैं। बाहरी दीवालों में स्तम्भों और आलों की सजावट है। बीच-बीच में प्रतिमाएँ भी उत्कीर्ण हैं। आदिनाथ स्वामी के सिंहासन पर लेख है (नं० ६५) कि इस मन्दिर को गङ्गराज सेनापति ने "इन्दिराकुलगृह" नाम से निर्माण कराया। दरवाजे पर के लेख में समाचार है कि शक सं० १०३९ फाल्गुण सुदि ५ को गङ्गराज ने 'परम' नाम के ग्राम का दान दिया। यह ग्राम उन्हें विष्णुवर्द्धन नरेश से मिला था। इसी समय से कुछ पूर्व मन्दिर बना होगा।

८ **मज्जिगण्णबस्ति**—इसकी लम्बाई-चौड़ाई ३२ × १९ फुट है। इसमें अनन्तनाथ स्वामी की साढ़े तीन फुट ऊँची प्रतिमा है। बाहरी दीवाल के आसपास फूलदार चित्रकारी के पत्थरों का घेरा है। मन्दिर के नाम से अनुमान होता है कि उसे किसी मज्जिगण्ण नाम के व्यक्ति ने निर्माण कराया होगा। पर समय निश्चित किये जाने के कोई साधन उपलब्ध नहीं हैं।

९० **एरडुकट्टेबस्ति**—इस मन्दिर का नाम उसके दायीं ओर बायीं बाजू पर की सीढ़ियों पर से पड़ा है। इसकी

लम्बाई-चौड़ाई ५५ × २६ फुट है। आदिनाथ स्वामी की मूर्ति पाँच फुट ऊँची है और प्रभावली से अलंकृत है। दोनों ओर चौरी-वाहक खड़े हैं। गर्भगृह के बाहर सुखनासि में यक्ष और यक्षिणी की मूर्तियाँ हैं। आदिनाथ स्वामी के सिंहासन पर लेख है (नं० ६३) कि इस मन्दिर को गङ्गराज सेनापति की भार्या लक्ष्मी ने निर्माण कराया था।—

११ सवतिगन्धवारणबस्ति—होय्सलनरेश विष्णुवर्द्धन की रानी का नाम शान्तल देवी और उपनाम 'सवतिगन्धवारण' (सौतों के लिए मत्त हाथी) था। इसी पर से इस मन्दिर का यह नाम पड़ा है। साधारणतः इसे गन्धवारण-बस्ति कहते हैं। मन्दिर विशाल है जिसकी लम्बाई-चौड़ाई ६८ × ३५ फुट है। शान्तिनाथ स्वामी की मूर्ति प्रभावली-संयुक्त पाँच फुट ऊँची है। दोनों ओर दो चौरी-वाहक खड़े हैं। सुखनासि में यक्ष यक्षिणी किम्पुरुष और महामानसि की मूर्तियाँ हैं। गर्भगृह के ऊपर एक अच्छी गुम्मट है। बाहरी दीवालें स्तम्भों से अलंकृत हैं। दरवाजे पर के लेख (नं० ५६) और शान्तिनाथ स्वामी के सिंहासन पर के लेख (नं० ६२) से विदित होता है कि इस बस्ति को विष्णुवर्द्धन नरेश की रानी शान्तल देवी ने शक सं० १०४४ में निर्माण कराया था।

१२ तेरिनबस्ति—इस मन्दिर के सम्मुख एक रथ (तेरु) के आकार की इमारत बनी हुई है। इसी से इसका

नाम तेरिनबस्ति पड़ा है। इसमें बाहुबलि स्वामी की मूर्ति है। इसी से इसे बाहुबलि बस्ति भी कहते हैं। इसकी लम्बाई चौड़ाई ७० × २६ फुट है। बाहुबलि स्वामी की मूर्त्ति पाँच फुट ऊँची है। सन्मुख के रथाकार मन्दिर पर चारों ओर छोटी जिन-मूर्तियाँ खुदी हुई हैं। मन्दिर दो प्रकार के होते हैं नन्दीश्वर और मेरु। उक्त रथाकार मन्दिर नन्दीश्वर प्रकार का कहा जाता है। इस पर के लेख (नं० १३७ शक सं० १०३८) से विदित होता है कि इस मन्दिर और बस्ति को विष्णुवर्द्धन नरेश के समय के पोय्सल सेठ की माता माचिकब्बे और नेमि सेठ की माता शान्तिकब्बे ने निर्माण कराया था।

१३ शान्तीश्वर बस्ति—इसकी लम्बाई-चौड़ाई ५६ × ३० फुट है। यह मन्दिर ऊँची सतह पर बना हुआ है। इसकी गुम्मट पर अच्छी कारीगरी है। गर्भगृह के बाहर सुखनासि में यक्ष-यक्षिणी की मूर्त्तियाँ हैं। पीछे की दीवाल के मध्य-भाग में एक आला है जिसमे एक खड्गासन जिन-मूर्त्ति खुदी हुई है। इस मन्दिर को कब और किसने निर्माण कराया, यह निश्चय नहीं हो सका है।

१४ कूगेब्रह्मदेवस्तम्भ—यह विशाल स्तम्भ चन्द्रगिरि पर्वत पर के घेरे के दक्षिणी दरवाजे पर प्रतिष्ठित है। इसके शिखर पर पूर्वमुखी ब्रह्मदेव की छोटी सी पद्मासन प्रतिमा विराजमान है। इसकी पीठिका आठों दिशाओं में आठ हस्तियों पर प्रतिष्ठित रही है पर अब केवल थोड़े से ही हाथी

रह गये हैं। स्तम्भ के चारों ओर एक लेख है (नं० ३८) (५९) जो गङ्गनरेश मारसिंह द्वितीय की मृत्यु का स्मारक है। इस राजा की मृत्यु सन् ९७४ ईस्वी में हुई थी। अतः यह स्तम्भ इससे पहले का सिद्ध होता है।

१५ महानवमी मण्डप—कत्तले बस्ति के गर्भगृह के दक्षिण की ओर दो सुन्दर पूर्व-मुख चतुस्तम्भ मण्डप बने हुए हैं। दोनों के मध्य में एक एक लेखयुक्त स्तम्भ है। उत्तर की ओर के मण्डप के स्तम्भ की बनावट बहुत सुन्दर है। उसका गुम्मटाकार शिखर बहुत ही दर्शनीय है। उस पर के लेख नं० ४२ (६६) में **नयकीर्त्ति** आचार्य के समाधि-मरण का संवाद है जो सन् ११७६ में हुआ। यह स्तम्भ उनके एक श्रावक शिष्य नागदेव मन्त्री ने स्थापित कराया था। ऐसे ही अन्य अनेक मण्डप इस पर्वत पर विद्यमान हैं जिनमें लेख-युक्त स्तम्भ प्रतिष्ठित हैं। एक चामुण्डराय बस्ति के दक्षिण की ओर, एक एरडुकट्टे बस्ति से पूर्व की ओर और दो तेरिन बस्ति से दक्षिण की ओर पाये जाते हैं।

१६ भरतेश्वर—महानवमी मण्डप से पश्चिम की ओर एक इमारत है जो अब रसोईघर के काम में आती है। इस इमारत के समीप एक नव फुट ऊँची पश्चिममुख मूर्त्ति है जो बाहुबलि के भ्राता भरतेश्वर की बतलाई जाती है। मूर्त्ति एक भारी चट्टान में घुटनों तक खोदी जाकर अपूर्ण छोड़ दी गई है। इस मूर्त्ति से थोड़ी दूर पर जो शिलालेख नं० २५ (६१) है

उससे अनुमान होता है कि वह किसी अरिट्टनेमि नाम के कारीगर की बनाई हुई है। पर यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता क्योंकि लेख का जितना भाग पढ़ा जाता है उससे केवल इतना ही अर्थ निकलता कि 'गुरु अरिट्टनेमि' ने बनवाया। पर क्या बनवाया यह कुछ स्पष्ट नहीं है। अरिट्टनेमि अरिष्टनेमि का अपभ्रंश है। लेख ईसा की नवमी शताब्दि का अनुमान किया जाता है।

१७ इरुवे ब्रह्मदेव मन्दिर—जैसा कि ऊपर कह आये हैं, केवल यही एक मन्दिर इस पहाड़ी पर ऐसा है जो घेरे के बाहर है। यह घेरे के उत्तर-दरवाजे के उत्तर में प्रतिष्ठित है। यहाँ ब्रह्मदेव की मूर्ति[1] विराजमान है। सम्मुख एक वृहत् चट्टान है जिस पर जिन-प्रतिमाएँ, हाथी, स्तम्भ आदि खुदे हुए हैं। कहीं-कहीं खोदनेवालों के नाम भी दिये हुए हैं। मन्दिर के दरवाजे पर जो लेख (नं० २३५) है उसकी लिपि से यह दसवीं शताब्दि के मध्य-भाग का अनुमान किया जाता है।

१८ कञ्चिन दोणे—इरुवेब्रह्मदेवमन्दिर से वायव्य की ओर एक चौकोर घेरे के भीतर चट्टान में एक कुण्ड है। यही कञ्चिन दोणे कहलाता है। 'दोणे' का अर्थ एक प्राकृतिक कुण्ड होता है और 'कञ्चिन' का एक धातु जिससे घण्टा आदि बनते हैं। कहा नहीं जा सकता कि इस कुण्ड का यह नाम क्यों पड़ा। यहाँ कई छोटे-छोटे लेख हैं। एक लेख है 'मुरुकेलूंकदम्ब तरसि' (नं८२) अर्थात् कदम्ब की आज्ञा

से तीन शिलाएँ यहां लाई गईं। इनमें की दो शिलाएँ अब भी यहाँ विद्यमान हैं और तीसरी शिला टूट-फूट गई है। कुण्ड के भीतर एक स्तम्भ है जिस पर यह लेख है—'भानभ आनन्द-संवच्छदम्हि कट्टिसिद देोणेयु' (२४४) अर्थात् इस कुण्ड को भानभ ने आनन्द-संवत्सर में बनवाया था। यह संवत् सम्भवतः शक सं० १११६ होगा।

१८ लक्किदेोणे—यह दूसरा कुण्ड घेरे से पूर्व की ओर है। सम्भवतः यह किसी लक्कि नाम की स्त्री-द्वारा निर्माण कराये जाने के कारण लक्किदेोण नाम से प्रसिद्ध हुआ है। कुण्ड से पश्चिम की ओर एक चट्टान है जिस पर कोई बीस छोटे-छोटे लेख हैं जिनमें प्रायः यात्रियों के नाम अङ्कित हैं। इनमें कई जैन आचार्यों, कवियों और राजपुरुषों के नाम हैं (नं० २८४-३१४)।

२० भद्रबाहु की गुफा—कहा जाता है कि अन्तिम श्रुत-केवली भद्रबाहु स्वामी ने इसी गुफा में देहोत्सर्ग किया था। उनके चरण इस गुफा में अङ्कित हैं और पूजे जाते हैं। गुफा में एक लेख भी पाया गया था (नं० ७१ (१६६) पर यह लेख अब गुफा में नहीं है। हाल में गुफा के सन्मुख एक भद्दा सा दरवाजा बनवा दिया गया है।

२१ चामुण्डराय की शिला—चन्द्रगिरि पर्वत के नीचे एक चट्टान है जो उक्त नाम से प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि चामुण्डराय ने इसी शिला पर खड़े होकर विन्ध्यगिरि पर्वत की

ओर बाद चलाया था जिससे गोम्मटेश्वर की दिगम्बरमूर्ति प्रकट हुई थी। शिला पर कई जैन गुरुओं के चित्र हैं जिनके नाम भी अङ्कित हैं।

चन्द्रगिरि पर्वत पर के अधिकांश प्राचीनतम शिलालेख या तो पार्श्वनाथ बस्ति के दक्षिण की शिला पर उत्कीर्ण हैं या उस शिला पर जो शासन बस्ति और चामुण्डराय बस्ति के सन्मुख है।

विन्ध्यगिरि

यह पर्वत दोड्डबेट्ट अर्थात् बड़ी पहाड़ी के नाम से भी प्रख्यात है। यह समुद्रतल से ३,३४७ फुट और नीचे के मैदान से लगभग ४७० फुट ऊँचा है। कभी-कभी इन्द्रगिरि नाम से भी इस पर्वत का सम्बोधन किया जाता है। पर्वत के शिखर पर पहुँचने के लिये नीचे से लगाकर कोई ५०० सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। ऊपर समतल चौक है जो एक छोटे घेरे से घिरा हुआ है। इस घेरे में बीच-बीच में तलघर हैं जिनमें जिन-प्रतिबिम्ब विराजमान हैं। इस घेरे के चारों ओर कुछ दूरी पर एक भारी दीवाल है जो कहीं-कहीं प्राकृतिक शिलाओं से बनी हुई है। चौक के ठीक बीचो-बीच गोम्मटेश्वर की वह विशाल खड्गासन मूर्त्ति है, जो अपनी दिव्यता से उस समस्त भूभाग को अलङ्कृत और पवित्र कर रही है।

१ गोम्मटेश्वर—यह नग्न, उत्तर-मुख, खड्गासन मूर्ति समस्त संसार की आश्चर्यकारी वस्तुओं में से है। सिर के बाल घुँघराले, कान बड़े और लम्बे, वक्षस्थल चौड़ा, विशाल बाहु नीचे को लटकते हुए और कटि किञ्चित् क्षीण है। मुख पर अपूर्व कान्ति और अगाध शान्ति है। घुटनों से कुछ ऊपर तक बमीठे दिखाये गये हैं जिनसे सर्प निकल रहे हैं। दोनों पैरों और बाहुओं से माधवी लता लिपट रही है तिस पर भी मुख पर अटल ध्यान-मुद्रा विराजमान है। मूर्ति क्या है मानो तपस्या का अवतार ही है। दृश्य बड़ा ही भव्य और प्रभावोत्पादक है। सिंहासन एक प्रफुल्ल कमल के आकार का बनाया गया है। इस कमल पर जायें चरण के नीचे तीन पुट चार इञ्च का भार मुड़ा हुआ है। कहा जाता है कि इसको अठारह से गुणित करने पर मूर्ति की ऊँचाई निकलती है। जो हो, पर मूर्तिकार ने किसी प्रकार के माप को लिये ही इसे खोदा होगा। निस्सन्देह मूर्तिकार ने अपने इस अपूर्व प्रयास में अनुपम सफलता प्राप्त की है। एशिया खण्ड ही नहीं समस्त भूतल का विचरण कर आइये, गोम्मटेश्वर की तुलना करने-वाली मूर्ति आपको कठिन ही दृष्टिगोचर होगी। बड़े-बड़े पश्चिमीय विद्वानों के मस्तिष्क इस मूर्ति की कारीगरी पर चकरा गये हैं। इतने भारी और प्रबल पाषाण पर सिद्धहस्त कारीगर ने जिस कौशल से अपनी छैनी चलाई है उससे भारत के मूर्तिकारों का मस्तक सदैव गर्व से ऊँचा उठा रहेगा। यह

सम्भव नहीं जान पड़ता कि ५७ फुट की मूर्त्ति खोद निकालने के योग्य पाषाण कहीं अन्यत्र से लाकर उस ऊँची पहाड़ी पर प्रतिष्ठित किया जा सका होगा। इससे यही ठीक अनुमान होता है कि उसी स्थान पर किसी प्रकृतिप्रदत्त स्तम्भाकार चट्टान को काटकर इस मूर्त्ति का आविष्कार किया गया है। कम से कम एक हज़ार वर्ष से यह प्रतिमा सूर्य, मेघ, वायु आदि प्रकृति-देवी की अमोघ शक्तियों से बातें कर रही है पर अब तक उसमें किसी प्रकार की थोड़ी भी क्षति नहीं हुई। मानो मूर्त्ति-कार ने उसे आज ही उद्घाटित की हो।

एक पहाड़ी के ऊपर प्रतिष्ठित इतनी भारी मूर्त्ति को मापना भी कोई सरल कार्य नहीं है। इसी से उसकी ऊँचाई के सम्बन्ध में मतभेद है। बुचानन साहब ने उसकी ऊँचाई ७० फुट ३ इञ्च और सर आर्थर वेल्सली ने ६० फुट ३ इञ्च दी है। सन् १८६५ में मैसूर के चीफ कमिश्नर मि० मैरिंग ने मूर्त्ति का ठीक ठीक माप कराकर उसकी ऊँचाई ५७ फुट दर्ज की थी। सन् १८०१ ईस्वी में मस्तकाभिषेक के समय कुछ सर-कारी अफ़सरों ने मूर्त्ति का माप लिया था जिससे निम्न-लिखित माप मिले :—

	फुट	इञ्च
चरण से कर्ण के अधोभाग तक	५०	—०
कर्ण के अधोभाग से मस्तक तक (लगभग)	६	—६

	फुट इञ्च
चरण की लम्बाई	५—०
चरण के अग्रभाग की चौड़ाई	४—६
चरण का अंगुष्ठ	२—६
पादपृष्ठ की ऊपर की गुलाई	६—४
जंघा की अर्ध गुलाई	१०—०
नितम्ब से कर्ण तक	२४—६
पृष्ठ-अस्थि के अधोभाग से कर्ण तक	१०—०
नाभि के नीचे उदर की चौड़ाई	१३—०
कटि की चौड़ाई	१०—०
कटि और देहली से कर्ण तक	१७—०
बाहुमूल से कर्ण तक	७—०
वक्षस्थल की चौड़ाई	१६—०
ग्रीवा के अधोभाग से कर्ण तक	२—६
तर्जनी की लम्बाई	१—६
मध्यमा की लम्बाई	१—३
अनामिका की लम्बाई	१—०
कनिष्ठिका की लम्बाई	१—८

लगभग एक सौ वर्ष पुराने 'भरतेशवैभव' काव्य के कर्ता कविचक्रवर्ति रत्नाकर पण्डित के बनाये हुए सोलह श्लोक मिले हैं जिनमें गोम्मटेश्वर की मूर्ति के आप इस और अंगुलों से दिये हैं। अन्तिम श्लोक से पता चलता है कि

मैसूर-नरेश कृष्णराज ओडेयर तृतीय की आज्ञा से कवि ने स्वयं ये माप लिये थे। ये श्लोक नीचे उद्धृत किये जाते हैं।

जयति बेलुगुल-श्री-गोमटेशस्य मूर्त्तेः
परिमितमधुनाहं वच्मि सर्वत्र हर्षात्।
स्वसमयजनानां भावनादेशनार्थं
परसमयजनानामद्भुतार्थं च साक्षात् ॥ १ ॥
पादान्मस्तकमध्यदेशचरमं पादार्ध-युङ्मा तु षट्-
त्रिंशद्धस्तमितोच्छ्रयोस्ति हि यथा श्रीदोर्बलि-स्वामिनः।
पादार्द्वित्रिंशतिहस्तसन्निभमितिर्नाभ्यन्तमस्युच्छ्रयः
पादार्धान्वितषोडशोच्छ्रयभरो नाभेरिशरोन्तं तथा ॥ २ ॥
चुबुकान्मूर्ध-पर्यन्तं श्रीमद्बाहुबलीशिनः।
अस्त्यङ्गुलि-त्रयी-युक्त-हस्त-षट्कप्रमोच्छ्रयः ॥ ३ ॥
पादत्रयाधिक्ययुक्त-द्विहस्तप्रमितोच्छ्रयः।
प्रत्येकं कर्णयोरस्ति भगवद्दोर्बलीशिनः ॥ ४ ॥
पश्चाद्भुजबलीशस्य तिर्यग्भागेस्ति कर्णयोः।
अष्ट-हस्त-प्रमोच्छ्रायः प्रमाकृद्भिः प्रकीर्तितः ॥ ५ ॥
सौनन्देः परितः कण्ठं तिर्यगस्ति मनोहरम्।
पाद-त्रयाधिक-दश-हस्त-प्रमित-दीर्घता ॥ ६ ॥
सुनन्दा तनुजस्यास्ति पुरस्तात्कण्ठ-सूच्छ्रयः।
पाद-त्रयाधिक्य-युक्त हस्त-प्रमिति निश्चितः ॥ ७ ॥
भगवद्गोमटेशस्यांगयोरन्तरमस्य वै।
तिर्यगायतिरस्त्येव खलु षोडश-हस्त-मा ॥ ८ ॥

षष्ठरज्जुक-संलक्ष्य रेखाद्वितय-दीर्घता ।
नवाङ्गुलाधिक्ययुक्तचतुर्हस्तप्रमेयिनुः ॥ ९ ॥
परितो मध्यमेतस्य परीतत्वेन विस्तृतः ।
अस्ति विंशतिहस्तानां प्रमाणं दीर्घलक्षिनः ॥ १० ॥
मध्यमाङ्गुलिपर्यन्तं स्कन्धादीर्घत्वमीयिनुः ।
बाहु-युग्मस्य पादाभ्यां युताष्टादशहस्तता ॥ ११ ॥
मणिबन्धस्थाग्रस्य दिर्घेक्यपरीतत्वात्तमन्नतः ।
द्विपादाधिक-षड्-हस्त-प्रमाणं परिलभ्यते ॥ १२ ॥
हस्ताङ्गुष्ठोच्चयोत्सर्पैकाङ्गुष्ठाग्रपद्द्विहस्त-मा ।
लक्ष्यते गोम्मटेशस्य जगदाश्चर्यकारिणः ॥ १३ ॥
पादाङ्गुष्ठस्याग्र्य दैर्घ्यं द्विपादाधिकता-युतः ।
चतुष्टयस्य हस्तानां प्रमाणमिति निश्चितम् ॥ १४ ॥
दिव्य-श्रीपाद-दीर्घत्वं भगवद्गोमटेशिनः ।
सैकाङ्गुल-चतुर्हस्त-प्रमाणमिति वर्णितम् ॥ १५ ॥
श्रीमद्भव्यनृपालकारितमहासंगेक-पूजोत्सवे
शिष्ट्वा तस्य कटाक्षतोचिरगतस्तातेन शान्तेन वै ।
ज्ञातीतं कविचक्रवर्तुकतर-श्रीशान्तराजेन तद्
दीर्घत्वं परिमाप्य लक्षणमिदाकारादमेतद्विभोः ॥ १६ ॥

इसका निम्नलिखित तात्पर्य निकलता है—

	इस्त अंगुल
चरण से मस्तक तक	९६½—०
चरण से नाभि तक	६०—०

	इंच सेंटीमीटर
आदि से द्वारपाल तक	१६½—१
विमुख से प्रणाम तक	६—१
कंधे की चौड़ाई	२½—०
एक कंधे से दूसरे कंधे तक	९—१
सामने की लंबाई	१०½—२
पीछे की लंबाई	१०—२
एक कूल्हे से दूसरे कूल्हे तक	१६—१
[illegible]	५—०
[illegible]	५½—०
[illegible]	१८—१
[illegible]	६½—०
[illegible]	६½—०
[illegible]	(illegible)—१
[illegible]	५—१

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [

नाम ऋषभदेव प्रथम तीर्थङ्कर के पुत्र थे। इनका नाम बाहुबलि या भुजबलि भी था। इनके ज्येष्ठ भ्राता भरत थे। ऋषभदेव के दीक्षा धारण करने के पश्चात् भरत और बाहुबलि दोनों भ्राताओं में राज्य के लिये युद्ध हुआ जिसमें बाहुबलि की विजय हुई। पर संसार की गति से विरक्त हो उन्होंने राज्य अपने ज्येष्ठ भ्राता भरत को दे दिया और आप तपस्या के हेतु वन को चले गये। थोड़े ही काल में घोर तपस्या कर उन्होंने केवल ज्ञान प्राप्त किया। भरत ने, जो अब चक्रवर्ति राजा हो गये थे, पौदनपुर में इनकी शरीराकृति के अनुरूप ५२५ धनुष की प्रतिमा स्थापित कराई। समयानुसार मूर्ति के आसपास का प्रदेश कुक्कुट-सर्पों से व्याप्त हो गया जिससे इस मूर्ति का नाम कुक्कुटेश्वर पड़ गया। धीरे-धीरे यह मूर्ति लुप्त हो गई और उसके दर्शन केवल दीक्षित व्यक्तियों को मंत्रशक्ति से प्राप्य हो गये। चामुण्डराय मंत्री ने इस मूर्ति का वर्णन सुना और उन्हें उसके दर्शन करने की अभिलाषा हुई। पर पौदनपुर की यात्रा अशक्य जान उन्होंने उसी के समान स्वयं मूर्ति स्थापित कराने का विचार किया और तदनुसार इस मूर्ति का निर्माण कराया। इस वार्त्ता के पश्चात् लेख में मूर्ति का वर्णन है। यही वर्णन थोड़े-बहुत हेर-फेर के साथ भुजबलिशतक, भुजबलि-चरित, गोम्मटेश्वर-चरित, राजावलिकथा और स्थलपुराण में भी पाया जाता है। इनमें से पहले काव्य को छोड़ शेष सब कनाड़ी भाषा में हैं। ये सब ग्रंथ १६वीं

शताब्दि से लगाकर १९वीं शताब्दि तक के हैं। भुजबलि-चरित में वर्णन है कि आदिनाथ के दो पुत्र थे; भरत, रानी यशस्वती से और भुजबलि, रानी सुनन्दा से। भुजबलि का विवाह इच्छा देवी से हुआ था और वे पोदनपुर के राजा थे। कुछ मतभेद के कारण दोनों भाइयों में युद्ध हुआ और भरत को पराजय हुई। पर भुजबलि राज्य त्यागकर मुनि हो गये। भरत ने ५२५ मात० प्रमाण भुजबलि की स्वर्णमूर्ति बनवाकर स्थापित कराई। कुक्कुट सर्पों से व्याप्त हो जाने के कारण केवल देव ही इस मूर्ति के दर्शन कर पाते थे। एक जैनाचार्य जिनसेन दक्षिण मथुरा को गये और उन्होंने इस मूर्ति का वर्णन चामुण्ड-राय की माता कालल देवी को सुनाया। उसे सुनकर माताजी ने प्रण किया कि जब तक गोम्मट देव के दर्शन न कर लूँगी, दूध नहीं खाऊँगी। जब अपनी पुत्री अजितादेवी के मुख से यह संवाद चामुण्डराय ने सुना तब वे अपनी माता को लेकर पोदनपुर की यात्रा को निकल पड़े। मार्ग में उन्होंने श्रवण-बेलगोल की चन्द्रगुप्त बस्ती में पार्श्वनाथ भगवान् के दर्शन किये और भद्रबाहु के चरणों की वन्दना की। उसी रात्रि को पद्मावती देवी ने उन्हें स्वप्न दिया कि कुक्कुट सर्पों के कारण पोदनपुर की वन्दना तुम्हारे लिये असम्भव है। पर तुम्हारी

* दोनों बाहुओं को फैलाने से एक हाथ की अंगुली के अग्रभाग से लगाकर दूसरे हाथ की अंगुली के अग्रभाग तक जितना अन्तर होता है उसे 'मात' कहते हैं।

भक्ति से प्रगट होकर गोम्मटेश्वर तुम्हें यहीं बड़ी पहाड़ी (विन्ध्यगिरि) पर दर्शन देंगे। तुम शुद्ध होकर इस छोटी पहाड़ी (चन्द्रगिरि) पर से एक स्वर्ण बाण छोड़ो, और भगवान के दर्शन करो। माता की को भी ऐसा ही स्वप्न हुआ। दूसरे दिन प्रातःकाल ही चामुण्डराय ने स्नान-पूजन से शुद्ध हो छोटी पहाड़ी की एक शिला पर अवस्थित होकर, दक्षिण दिशा को मुख करके एक स्वर्ण बाण छोड़ा जो बड़ी पहाड़ी के मस्तक पर की शिला में जाकर लगा। बाण के लगते ही गोम्मट स्वामी का मस्तक दृष्टिगोचर हुआ। फिर जैनगुरु ने हीरे की छैनी और सोने के हथौड़े से ज्योंही शिला पर प्रहार किया त्योंही शिला के पाषाण-खण्ड अलग जा गिरे और गोम्मटेश्वर की पूरी प्रतिमा निकल आई। फिर कारीगरों से चामुण्डराय ने दक्षिण बाजू पर ब्रह्मदेव सहित पाषाण खण्ड, सन्मुख ब्रह्मदेव-सहित यक्ष-काय, ऊपर का खण्ड, ब्रह्मसहित त्यागद काय, अखण्ड वागिलु नामक दरवाजा और यत्र-तत्र सीढ़ियाँ बनवाईं।

इसके पश्चात् अभिषेक की तैयारी हुई। पर जितना भी दुग्ध चामुण्डराय ने एकत्रित कराया उससे मूर्ति की जंघा से नीचे के स्नान नहीं हो सके। चामुण्डराय ने घबराकर गुरु से सलाह ली। उन्होंने आदेश दिया कि जो दुग्ध एक वृद्धा को अपनी 'गुल्लकायि' में लाई है उससे स्नान कराओ। आश्चर्य कि उस अत्यल्प दुग्ध की धारा गोम्मटेश के मस्तक पर छोड़ते ही समस्त मूर्ति के स्नान हो गये और सारी पहाड़ी पर दुग्ध

पहाड़ी पर विराजमान कर उनकी पूजन-अर्चन किया करते थे। जाते समय वे इन मूर्त्तियों को उठाने में असमर्थ हुए, इसी से वे उन्हें उसी स्थान पर छोड़कर चले गये।

उपर्युल्लिखित प्रमाणों से यह निर्विवादतः सिद्ध होता है कि गोम्मटेश्वर की स्थापना चामुण्डराय द्वारा हुई है। शिलालेख नं० ८५ (२३४), १०५ (२५४), ७६ (१७५) और ७५ (१७६) भी यही बात प्रमाणित करते हैं। शिलालेख नं० ७५, ७६ मूर्त्ति के आस-पास ही खुदे हैं और मूर्त्ति के निर्माण समय के ही प्रतीत होते हैं। चामुण्डराय कौन थे? भुजबलिशतक आदि ग्रन्थों से विदित होता है कि चामुण्डराय गङ्गनरेश राचमल्ल के मन्त्री थे। शिलालेख नं० १३७ (१४५) से भी यही सिद्ध होता है। राचमल्ल के राज्य की अवधि सन् ९७४ से ९८४ तक बांधी गई है। अतः गोम्मटेश्वर की स्थापना इसी समय के लगभग होना चाहिये। चामुण्डराय का बनाया हुआ एक चामुण्डराय पुराण मिलता है। इसमें ग्रंथ-समाप्ति का समय शक सं० ९०० (सन् ९७८ ईस्वी) दिया हुआ है। इसमें चामुण्डराय के कृत्यों का वर्णन पाया जाता है पर गोम्मटेश्वर की प्रतिष्ठा का कहीं उल्लेख नहीं है। इससे अनुमान होता है कि उक्त ग्रन्थ की रचना के समय (सन् ९७८ ई०) तक चामुण्डराय को इस महत्कार्य के सम्पादन का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ था। बाहुबलि-चरित्र में गोम्मटेश्वर की प्रतिष्ठा का समय इस प्रकार दिया है :—

"कल्यब्दे षट्शताब्दे विनुतविभवसंवत्सरे मासि चैत्रे
पञ्चम्यां शुक्लपक्षे दिनमणिदिवसे कुम्भलग्ने सुयोगे ।
सौभाग्ये मल्लनाम्नि प्रकटित भगवे सुप्रशस्तां चकार
श्रीमच्चामुण्डराजो वेल्गुलनगरे गोमटेशप्रतिष्ठाम् ॥"

अर्थात् कलिक सवत् ६०० मे विभव संवत्सर में चैत्र शुक्ल ५ रविवार को कुम्भलग्न, सौभाग्य योग, मल (मृगशिरा) नक्षत्र में चामुण्डराज ने वेल्गुल नगर में गोमटेश की प्रतिष्ठा कराई। विद्याभूषण, काव्यतीर्थ, प्रो० शरच्चन्द्र घोषाल ने इस अनुमान पर कि यह तिथि गङ्गनरेश राचमल्ल के समय में (सन् ९७४ और ९८४ के बीच) ही पड़ना चाहिये, उक्त तिथि को तारीख २ अप्रेल ९८० ईस्वी के बराबर माना है। उनके कथनानुसार इस तारीख को रविवार चैत्र शुक्ल ५ तिथि थी और कुम्भ लग्न भी पड़ा था। हमने इस तारीख का मि० स्वामी कन्नूपिल्लाई के 'इंडियन एफेमेरिस' से मिलान किया तो २ अप्रेल ९८० ईस्वी को दिन शुक्रवार और तिथि १४ पायें। न जाने प्रोफेसर साहब ने किस आधार पर उस तारीख को रविवार और पञ्चमी तिथि मान लिया है। इसके अतिरिक्त प्रोफेसर साहब की तारीख में एक और भारी त्रुटि है। ऊपर उद्धृत श्लोक में संवत्सर का नाम 'विभव' दिया हुआ है। पर सन् ९८० ईस्वी (शक सं० ९०२) 'विभव' नहीं 'विक्रम' संवत्सर था। इन कारणों से प्रो० घोषाल की निश्चित की हुई तिथि में सन्देह होता है।

उपर्युक्त श्लोक में कल्कि वीर सं० १००० में होना कहा है। कल्कि कौन था और उसका समय क्या से था? हरिवंशपुराण, पद्मपुराण, त्रिलोकसार और त्रिलोकप्रज्ञप्ति में कल्कि राजा का उल्लेख पाया जाता है। कल्कि का दूसरा नाम चतुर्मुख था। त्रिलोकप्रज्ञप्ति में कल्कि का समय इस प्रकार दिया है :—

णिव्वाणगदे वीरे पढमदइगिसट्ठिवासणिल्लंदे।
जादो य सगणरिन्दो तत्तो कक्कीसुदो तुमय बादाओ ॥६३॥
दोण्णि सया पंचण्हं गुत्ताणं तेत्तियं मुहुत्तं च बादालं।
वस्सं होदि सहस्सं केई एवं परूवंति ॥६४॥

अर्थात्—वीर निर्वाण के ४६१ वर्ष बीतने पर शक राजा हुआ, और इस वंश के राजाओं ने २४२ वर्ष राज्य किया। उनके पश्चात् गुप्तवंशी नरेशों का २५५ वर्ष तक राज्य रहा और फिर चतुर्मुख (कल्कि) ने ४२ वर्ष राज्य किया। कोई-कोई लोग इस तरह (४६१ + २४२ + २५५ + ४२ = १०००) एक हजार वर्ष बतलाते हैं। अन्य ग्रंथों में भी कल्कि का समय महावीर के निर्वाण से १००० वर्ष पश्चात् माना गया है। पर इन ग्रंथों में इस बात पर मत-भेद है कि निर्वाण संवत् से १००० वर्ष पीछे कल्कि का जन्म हुआ या मृत्यु। ऊपर हमने जिस मत का उल्लेख किया है उसके अनुसार १००० वर्ष में कल्कि के राज्य के ४२ वर्ष भी सम्मिलित हैं। अतः इस मत के अनुसार निर्वाण सं० १००० कल्कि की मृत्यु

का है। जिन ग्रन्थों में कल्कि का उल्लेख पाया जाता है उन सबके अनुसार निर्वाण का समय शक सं० से ६०५ वर्ष, विक्रम सं० से ४७० वर्ष व ईस्वी सन् से ५२७ वर्ष पूर्व पड़ता है। अतएव कल्कि मृत्यु का समय सन् ४७२ ईस्वी आता है।

संवत् चलाना राजा के राज्य-काल से प्रारम्भ किये जाते हैं। अतः कल्कि संवत् सन् ४७२—४२ = ४३० ईस्वी से प्रारम्भ हुआ होगा। गोम्मटेश की प्रतिष्ठा का समय कल्कि संवत् ६०० कहा गया है जो ऊपर की गणना के अनुसार सन् ईस्वी १०३० के बराबर है। हमने स्वामी कन्नूपिल्लाई के इण्डियन एफेमेरिस से इस संवत् के लगभग उपर्युक्त तिथि, वार, नक्षत्र आदि का मिलान किया तो २३ मार्च सन् १०२८ को चैत्र सुदि ५ रविवार पाया। इस दिन मृगशिरा नक्षत्र और सौभाग्य योग भी वर्तमान थे, और दक्षिणी गणना के अनुसार यह संवत्सर भी विलम्ब था। इस प्रकार बाहुबलिचरित में दी हुई समस्त बातें इस तिथि में घटित होती हैं, जिससे विश्वास होता है कि गोम्मटेश की प्रतिष्ठा का ठीक समय सन् १०२८,२३ मार्च (शक सं० ९५१) है।*

इस तिथि के विरोध में केवल एक किंवदन्ती का प्रमाण प्रस्तुत किया जा सकता है। वह किंवदन्ती यह है कि गोम-

* उपर्युक्त विवेचन लिखे जाने के पश्चात् हमें मैसूर आर्कियालाजिकल रिपोर्ट १९२३ देखने को मिली। इसमें डा० शाम शास्त्री ने विस्तृत रूप से इसी बात को प्रमाणित किया है।

टेश की मूर्ति की प्रतिष्ठा रायमल्लदेव के समय में ही हुई थी और इस नरेश का समय शिलालेखों के आधार पर सन् ९७५ से ९८४ तक निश्चित किया गया है। पर इन निश्चयों पर विशेष जोर नहीं दिया जा सकता क्योंकि एक तो इसके लिये कोई शिलालेखों का प्रमाण नहीं है और दूसरे यह कथन केवल भुजबलिशतक में ही पाया जाता है, जिसकी रचना का समय ईसा की सोलहवीं शताब्दि अनुमान किया जाता है। जिन अन्य ग्रन्थों में गोम्मटेश की प्रतिष्ठा का कथन है उनमें यह कहीं नहीं कहा गया कि यह कार्य रायमल्ल के जीते ही हुआ था। सन् ९७८ ईस्वी में रचे जानेवाले चामुण्डराय पुराण से यह निश्चित है ही कि उस समय तक मूर्ति की स्थापना नहीं हुई थी, और सन् १०२८ से पहले के किसी शिलालेख में इस प्रतिष्ठा का समाचार नहीं पाया जाता।

एक बात और है जिसके कारण ऊपर निश्चित किया हुआ समय ही गोमटेश की प्रतिष्ठा के लिये ठीक प्रतीत होता है। कहा जाता है कि नेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ति चामुण्डराय के गुरु थे और गोमटेश की प्रतिष्ठा के समय उनके साथ थे। द्रव्य-संग्रह नामक ग्रन्थ के टीकाकार ब्रह्मदेव ने ग्रन्थ के मूलकर्त्ता नेमिचन्द्र को धाराधीश भोजदेव के समकालीन कहा है। ऊपर निश्चित किये हुए समय के अनुसार यह कथन अयुक्ति-सङ्गत नहीं कहा जा सकता क्योंकि भोजदेव

का राज्य-काल उस समय विद्यमान था। भोजदेव के सन् १०१९, १०२२ और १०४२ ईस्वी के उल्लेख मिले हैं।

कुछ वर्षों के अन्तर से गोम्मटेश्वर का मस्तकाभिषेक होता है, जो बड़ी धूमधाम, बहुत क्रियाकाण्ड और भारी द्रव्य-व्यय के साथ मनाया जाता है। इसे महाभिषेक भी कहते हैं। इस मस्तकाभिषेक का सबसे प्राचीन उल्लेख शक सं० १३२० के लेख नं० १०५ (२५४) में पाया जाता है। इस लेख में कथन है कि पण्डिताचार्य ने सात बार गोम्मटेश्वर का मस्तकाभिषेक कराया था। पश्चात् कवि ने सन् १६१२ ईस्वी में शान्त-वर्णि-द्वारा कराये हुए मस्तकाभिषेक का उल्लेख किया है, अनन्त कवि ने सन् १६७७ में मैसूर नरेश चिक्कदेवराज ओडेयर के मन्त्री विशालाक्ष पण्डित-द्वारा कराये हुए और शान्तराज पण्डित ने सन् १८२५ के लगभग मैसूर-नरेश कृष्णराज ओडेयर तृतीय द्वारा कराये हुए मस्तकाभिषेक का उल्लेख किया है। शिलालेख नं०९८ (२२३) में सन् १८२७ में होने-वाले मस्तकाभिषेक का उल्लेख है। सन् १९०९ में भी मस्तकाभिषेक हुआ था। अभी तक सबसे अन्तिम अभिषेक हाल ही में—मार्च सन् १९२५ में—हुआ है जिसके विषय में 'वीर' पत्र में यह समाचार प्रकाशित हुआ है—" ता० १५-३-२५ को श्रीमान् महाराजा कृष्णराज बहादुर मैसूर अपने दो साहबों-सहित पहाड़ पर पधारे और अपनी तरफ से अभिषेक कराया। बन्दोबस्त बहुत अच्छा था। आज लगभग ३०,००० मनुष्य

अभिषेक देख सके जिसमें करीब पाँच हजार विन्ध्यगिरि पर थे और शेष सब चन्द्रगिरि पहाड़ पर इधर-उधर बैठकर दूर से अभिषेक देखते थे। महाराजा ने अभिषेक के लिए पाँच हजार रुप्या प्रदान किये। उन्होंने स्वयं गोम्मटस्वामी की प्रदक्षिणा की, नमस्कार किया तथा द्रव्य से पूजन की व कुछ स्वर्ण प्रतिमाजी व भट्टारकजी को भेंट किये व भट्टारकजी को नमस्कार किया। सुबह ८ बजे से दोपहर एक बजे तक इस प्रथम अभिषेक का कार्य अतीव आनन्द व धर्म-प्रभावना के साथ हुआ। इस अभिषेक में जल, दुग्ध, दही, केला, पुष्प, नारियल व चुरमा, घृत, चन्दन, सर्वोषधि, इत्तुरम, लाल चन्दन, बदाम, खारक गुड, शक्कर, खसखस, फूल, चने की दाल आदि का अभिषेक उपाध्यायों द्वारा मचान पर से हुआ।"

कहा जाता है कि जब होय्सल-नरेश विष्णुवर्द्धन जैन-धर्म को छोड़ वैष्णव धर्मावलम्बी हो गया तब रामानुजाचार्य ने गोम्मट की मूर्त्ति को तुड़वा डाला; पर इस कथन में कोई सत्य का अंश प्रतीत नहीं होता क्योंकि मूर्त्ति आज तक सर्वथा अक्षत है।

गोम्मटेश्वर की दो और विशाल मूर्त्तियाँ विद्यमान हैं। ये दोनों दक्षिण कनाड़ा जिले में ही हैं; एक कारकल में और दूसरी एनूर में। कारकल की मूर्त्ति ४१ फुट ५ इञ्च ऊँची है। इसे सन् १४३२ ईस्वी में जैनाचार्य ललितकीर्त्ति के उपदेश से वीर पाण्ड्य ने प्रतिष्ठित कराई थी। एनूर की मूर्त्ति ३५ फुट ऊँची है और सन् १६०४ में चारुकीर्त्ति पण्डित के

उपदेश से चामुण्डवंशीय 'विम्मराज' द्वारा प्रतिष्ठित की गई थी। इन तीनों मूर्तियों की बनावट प्रायः एक सी ही है। बमीठे, सर्प और लताएँ तीनों में एक सी ही दिखायी गयी हैं।

विन्ध्यगिरि के गोम्मटेश्वर की दोनों बाजुओं पर यक्ष और यक्षिणी की मूर्तियाँ हैं, जिनके एक हाथ में चौरी और दूसरे में कोई फल है। मूर्ति के बायीं ओर एक गोल पाषाण का पात्र है जिसका नाम 'ललितसरोवर' खुदा हुआ है। मूर्ति के अभिषेक का जल इसी में एकत्र होता है। इस पाषाण-पात्र के भर जाने पर अभिषेक का जल एक प्रणाली-द्वारा मूर्ति के सम्मुख एक कुएँ में पहुँच जाता है और वहाँ से वह मन्दिर की सरहद के बाहर एक कन्दरा में पहुँचा दिया जाता है। इस कन्दरा का नाम 'शुक्लकायज्ञि बागिलु' है। मूर्ति के सम्मुख का मण्डप नव सुन्दर खचित छतों से सजा हुआ है। आठ छतों पर अष्ट दिक्पालों की मूर्तियाँ हैं और बीच की नवमी छत पर गोम्मटेश के अभिषेक के लिये हाथ में कलश लिये हुए इन्द्र की मूर्ति है। ये छत बड़ी कारीगरी के बने हुए हैं। मध्य की छत पर खुदे हुए शिलालेख (नं० २५१) से अनुमान होता है कि यह मण्डप बलदेव मन्त्री ने १२ वीं शताब्दि के प्रारम्भ में किसी समय निर्माण कराया था। शिला-लेख नं० ११५ (२६७) से विदित होता है कि सेनापति भरत-मय्य ने इस मण्डप का कठघरा (इप्पलिगे) निर्माण कराया था। शिलालेख नं० ७८ (१८२) में कथन है कि नय[illegible].

चक्रवर्ति के शिष्य वसविसेट्टि ने कठघरे की दीवाल और चौबीस तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ निर्माण कराई थीं और उसके पुत्रों ने उन प्रतिमाओं के सम्मुख जालीदार खिड़कियाँ बनवाईं। शिलालेख नं० १०३ (२२८) से ज्ञात होता है कि पट्टाभि-नरेश महादेव के प्रधान सचिव केशवनाथ के पुत्र चन्न बोम्मरस और नञ्जरायपट्टन के श्रावकों ने गोम्मटेश्वरमण्डप के ऊपर के शिखर (पट्टिशाल) का जीर्णोद्धार कराया।

परकोटा—गोम्मटेश्वर की दोनों बाजुओं पर लगे हुए शिलालेख नं० ७५ (१८०) व ७६ (१७७) से विदित होता है कि गोम्मटेश्वर का परकोटा गङ्गराज ने निर्माण कराया था। यही बात लेख नं० ४५ (१२५), ५८ (७३), ८० (२५०) व ४८६ से भी सिद्ध होती है। गङ्गराज होयसल नरेश विष्णु-वर्द्धन के सेनापति थे। उपर्युक्त शिलालेख शक सं० १०४० व उसके पश्चात् के हैं। इनके पहले के शिलालेखों में परकोटा का उल्लेख नहीं है। इससे सिद्ध होता है कि शक सं० १०३८ के लगभग ही इसका निर्माण हुआ है।

परकोटे के भीतर मन्दिरों में इस समय कुल ४३ जिन-मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं, जो इस प्रकार हैं—

ऋषभ	१	शीतल	१	अनन्त	१
अजित	१	शान्ति	१	धर्म	१
संभव	१	चन्द्रप्रभ	१	वासुपूज्य	१	शान्ति	१
अभिनन्दन	१	पुष्पदन्त	१	विमल	१	कुन्थु	१

अर १ मुनिसुव्रत २ नेमि २ वर्द्धमान १
मल्लि २ नमि १ पार्श्व ४ बाहुबलि १
कुष्माण्डिनि २ १ (अज्ञात)

अधिकांश मूर्तियाँ ४ फुट ऊँची हैं। पाँच-छः मूर्तियाँ पाँच फुट, एक छः फुट व दो-तीन मूर्तियाँ तीन साढ़े-तीन फुट की हैं। एक चन्द्रप्रभ की व अन्तिम अज्ञात मूर्ति को छोड़कर शेष जिन मूर्तियों पर लेख हैं वे सब लक्ष्मीसेन भिट्टारकदेव और उनके शिष्य बालचन्द्र अध्यात्मि के समय की सिद्ध होती हैं। लेख नं० ७८ (१८२) व २७७ (१८७) से ज्ञात होता है कि लक्ष्मीसेन के शिष्य जगत्कीर्ति ने यहाँ चतुर्विंशति तीर्थंकरों की प्रतिष्ठा कराई थी। पर केवल तीन मूर्तियों पर जगत्कीर्ति का नाम पाया जाता है (लेख नं० २१७, २१८, २७७)। उपर्युक्त मूर्तियों में पद्मप्रभ तीर्थंकर की कोई मूर्ति नहीं है। चन्द्रप्रभ की एक मूर्ति पर मारवाड़ी में लेख है कि वर्ष (विक्रम) संवत् १६३५ में सोनकीरतजी व अन्य श्रावकों ने प्रतिष्ठित कराई थी (२११)। अज्ञात मूर्ति ढेढ़ फुट की है। इस पर मारवाड़ी में लेख है कि वर्ष (विक्रम) संवत् १५४८ में अगुरातजी अगद.. ...ने प्रतिष्ठित कराई (२१६)।

परकोटे के द्वार पर दोनों बाजुओं पर छः छः फुट ऊँचे द्वार-पालक हैं। परकोटे के बाहर गन्धर्वदेव के ठीक सम्मुख लगभग छः फुट की ऊँचाई पर अम्बादेवस्थान है। इसमें अम्बादेव की पद्मासन मूर्ति है। ऊपर गुम्बट है। स्थान के नीचे कोई

पाँच फुट ऊँची 'गुल्लकायज्जि' की मूर्त्ति है, जिसके हाथ में 'गुल्लकायि' है। जन-श्रुति के अनुसार यह स्तम्भ और गुल्लकायज्जि की मूर्त्ति दोनों स्वयं चामुण्डराय ने प्रतिष्ठित कराये थे।

२ सिद्धर बस्ति—यह एक छोटा सा मन्दिर है जिसमें तीन फुट ऊँची सिद्ध भगवान् की मूर्त्ति विराजमान है। मूर्त्ति के दोनों ओर लगभग छः-छः फुट ऊँचे खचित स्तम्भ हैं। ये स्तम्भ महानवमी मण्डप के स्तम्भ के समान ही उच्च कारीगरी के बने हुए हैं। दायीं बाजू के स्तम्भ पर अर्हदास कवि का रचा हुआ पण्डितार्य की प्रशस्तिवाला बड़ा भारी सुन्दर लेख है [१०५ (२५४)] जिसके अनुसार पण्डितार्य की मृत्यु शक संवत् १३२० में हुई थी। इस स्तम्भ में पीठिका पर विराजमान, शिष्य को उपदेश देते हुए, एक आचार्य का चित्र है। शिष्य सन्मुख बैठा है। दूसरे चित्र में जिनमूर्त्ति है। बायीं बाजू के स्तम्भ पर महाराज कवि का रचा हुआ सुन्दर लेख है [१०८ (२५८)] जिसमें शक सं० १३५५ में श्रुतमुनि के स्वर्गवास का उल्लेख है।

३ अखण्ड बागिलु—यह एक दरवाजे का नाम है। यह नाम इसलिये पड़ा क्योंकि यह पूरा दरवाजा एक अखण्ड शिला को काटकर बनाया गया है। दरवाजे का ऊपरी भाग बहुत ही सुन्दर खचित है। इसमें लक्ष्मी की पद्मासन मूर्त्ति बनी है जिसको दोनों ओर से दो हाथी स्नान करा रहे हैं। जन-श्रुति के अनुसार यह द्वार भी चामुण्डराय ने निर्माण

कराया था। दरवाजे के दोनों ओर दायें-बायें क्रमशः बाहुबलि और भरत की मूर्तियाँ हैं। इन पर जो लेख हैं (३६८-३६९) उनसे विदित होता है कि वे गण्डविमुक्त सिद्धान्तदेव के शिष्य दण्डनायक भरतेश्वर द्वारा प्रतिष्ठित की गई हैं। इनका समय शक सं० १०५२ के लगभग प्रतीत होता है। इन मूर्तियों की प्रतिष्ठा का उल्लेख शिलालेख सं० ११५ (२६७) में भी आया है जिसके अनुसार ये मूर्तियाँ दरवाजे की शोभा बढ़ाने के लिये स्थापित की गई हैं। इस लेख के अनुसार इस दरवाजे की सीढ़ियाँ भी उक्त दण्डनायक ने ही निर्माण कराई हैं।

४ सिद्धरगुण्डु—अखण्ड दरवाजे की दाहिनी ओर एक बृहत् शिला है जिसे 'सिद्धर गुण्डु' (सिद्ध-शिला) कहते हैं। इस शिला पर अनेक लेख हैं। ऊपरी भाग की कई सतहों में जैनाचार्यों के चित्र हैं। कुछ चित्रों के नीचे नाम भी अङ्कित हैं।

५ गुल्लकायज्जिबागिलु—यह एक दूसरे दरवाजे का नाम है। इस दरवाजे की दाहिनी ओर एक शिला पर एक बैठी हुई स्त्री का चित्र खुदा है। यह लगभग एक फुट का है। इसे लोगों ने गुल्लकायज्जि का चित्र समझ लिया है। इसी से उक्त दरवाजे का नाम गुल्लकायज्जिबागिलु पड़ गया। पर चित्र के नीचे जो लेख (४१८) पाया गया है उससे विदित होता है कि यह एक मल्लिसेट्टि की पुत्री का चित्र है। गुल्ल-कायि की मूर्ति का वर्णन ऊपर कर ही चुके हैं।

६ स्थानाङ्ग प्रस्तरेख स्तम्भ—यह प्राचीन लेख (स्तम्भ) भी अद्वितीय है क्योंकि कहा जाता है कि यहाँ [illegible] स्तम्भ था। इस स्तम्भ की आलोचनी प्रशंसनीय है। [illegible] है कि यह स्तम्भ ऊपर है उसके लेख से अनुमान लिया जा सकता है। यह भी चामुण्डराय द्वारा स्थापित कहा जाता है ऐसे स्तम्भ पर सुरे हुए लेख नं० १०८ (२८१) से भी यह बात प्रमाणित होती है। इस लेख में चामुण्डराय के प्रशंसा के पद्य हैं। दुर्भाग्यवश यह लेख हमें पूरा प्राप्त नहीं है। लगता है कि हेगड़े [illegible] [नं० ११० (२८२)] लिखाने के लिए चामुण्डराय का लेख [illegible] यदि यह लेख पूरा लिख जाता तो सम्भवतः [illegible] की आवश्यकता का अनुभव भी नहीं होता। [illegible] की कल्पित बात पर वे सूचियाँ सूची हुई हैं। [illegible] चामुण्डराय की और उनके आश्रयदाता [illegible] [illegible]

७ नेमिनाथ प्रतिमा—यह प्रतिमा [illegible] [illegible] [illegible]

है। सम्भव है कि ये मूर्तियाँ चेन्नण्ण और उनकी धर्मपत्नी की हों। बस्ति से ईशान की ओर दो दीर्घों (कुण्डों) के बीच एक मण्डप बना हुआ है। उपर्युक्त लेख में सम्भवतः इसी मण्डप का उल्लेख है।

८ जोडेगल बस्ति—इसे त्रिकूट बस्ति भी कहते हैं क्योंकि इसमें तीन गर्भगृह हैं। चन्द्रगिरि पर्वत की शान्तीश्वर बस्ति के समान यह बस्ति भी कुछ ऊँची सतह पर बनी हुई है। सीढ़ियों पर से जाना पड़ता है। भीतों की सजावट के लिये इसमें पाषाण के आधार (जोडेगल) लगे हुए हैं, इसी से इसे जोडेगल बस्ती कहते हैं। बीच की गुफा में आदिनाथ की और दायीं बाईं गुफाओं में क्रमशः शान्तिनाथ और नेमिनाथ की पद्मासन मूर्तियाँ हैं। बस्ती के पश्चिम की ओर की चट्टान पर सत्ताइस लेख नागरी अक्षरों में हैं जिनमें अधिकतर तीर्थ-यात्रियों के नाम अङ्कित हैं (नं० ३७८–४०४)।

९ चौबीस तीर्थंकर बस्ति—यह एक छोटा सा देवालय है। इसमें एक अढ़ाई फुट ऊँचे पाषाण पर चौबीस तीर्थंकरों की मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं। नीचे एक कतार में तीन बड़ी मूर्तियाँ खुदी हुई हैं जिनके ऊपर प्रभावली के आकार में इकीस अन्य छोटी-छोटी मूर्तियाँ हैं। इस बस्ति के लेख नं० ११८ (३१३) से ज्ञात होता है कि इन चौबीस तीर्थंकर मूर्ति की स्थापना चारुकीर्ति पण्डित, धर्मचन्द्र आदि ने शक सं० १५७० में की थी।

१० ब्रह्मदेव मन्दिर—यह छोटा सा देवालय विन्ध्यगिरि के नीचे सीढ़ियों के समीप ही है। इसमें सिन्दूर से रँगा हुआ एक पाषाण है जिसे लोग ब्रह्म या 'जारुगुप्पे अप्प' कहते हैं। मन्दिर के पीछे चट्टान पर के लेख नं० १२१ (३२१) से ज्ञात होता है कि इसे हिरिसालि के गिरिगौड के कनिष्ठ भ्राता रङ्गय्य ने सम्भवतः शक सं० १६०० में निर्माण कराया था। मन्दिर के ऊपर दूसरी मंजिल भी है जो पीछे से निर्माण कराई गई विदित होती है। इसमें पार्श्वनाथ की मूर्त्ति है।

श्रवणबेल्गोल नगर

ऊपर कहा जा चुका है कि श्रवणबेल्गोल चन्द्रगिरि और विन्ध्यगिरि के बीच बसा हुआ है। यहाँ के प्राचीन स्मारक इस प्रकार हैं:—

१ भण्डारि बस्ति—यह श्रवण बेल्गोल का सबसे बड़ा मन्दिर है। इसकी लम्बाई-चौड़ाई २६६ × ७८ फुट है। इसमें एक गर्भगृह, एक सुखनासि, एक मुखमण्डप और प्राकार हैं। गर्भगृह में एक सुन्दर चित्रमय वेदी पर चौबीस तीर्थंकरों की तीन २ फुट ऊँची मूर्त्तियाँ हैं। इसी से इसे चौबीस तीर्थंकरबस्ति भी कहते हैं। गर्भगृह में तीन दरवाजे हैं जिनकी आज़-बाजू जालियाँ बनी हुई हैं। सुखनासि में पद्मावती और ब्रह्म की मूर्त्तियाँ हैं। नवरङ्ग के चार स्तम्भों के बीच

जमीन पर एक हाथ फुट का चौकोर पत्थर बिछा हुआ है। आगे के भाग और बरामदे में भी इतने इतने बड़े पत्थर लगे हुए हैं। ये भारी-भारी पाषाण यहाँ कैसे लाये गये होंगे, यह भी आश्चर्यजनक है। नवरङ्गद्वार की चित्रकारी बड़ी ही मनोहर है। इसमें लताएँ व मनुष्य और पशुओं के चित्र खुदे हुए हैं। मुख्य भवन के चारों ओर बरामदा और पाषाण का चार फुट ऊँचा कटघरा है। बस्ति के सन्मुख एक पाषाण-निर्मित सुन्दर मानस्तम्भ है। होयसल नरेश नरसिंह (प्रथम) के भण्डारि हुल्ल द्वारा निर्माण कराये जाने के कारण यह भण्डारि बस्ति कहलाती है। लेख नं० १२७ (३४५) और १३८ (३४९) से ज्ञात होता है कि यह शक सं० १०८१ में निर्माण कराई गई थी व नरसिंह नरेश ने इसे भव्य-चूडामणि नाम देकर इसकी रक्षा के हेतु सकलेश्वर ग्राम का दान दिया था। उक्त लेखों में हुल्ल और उनके बस्ति-निर्माण का सुन्दर वर्णन है।

२ अक्कन बस्ति—नगर भर में यही बस्ति होयसल-शिल्पकला का एकमात्र नमूना है। इस सुन्दर भवन में गर्भगृह, सुखनासि, नवरङ्ग और मुखमण्डप हैं। गर्भगृह में सप्तफणी पार्श्वनाथ की पाँच फुट ऊँची भव्य मूर्ति है। गर्भगृह के दरवाजे पर बड़ा अच्छा खुदाई का काम है। सुख-नासि में एक दूसरे के सन्मुख साढ़े तीन फुट ऊँची पञ्चफणी धरणेन्द्र यक्ष और पद्मावती यक्षिणी की मूर्तियाँ हैं। दरवाजे के आसपास जालियाँ हैं। नवरङ्ग के चार काले पाषाण के

बने हुए आइने के मटरा चमकीले स्तम्भ और कुशल कारीगरी के बने हुए नक्काशी बड़े ही सुन्दर हैं। मंदिर की गुम्मट अनेक प्रकार की जिन-मूर्तियों से चित्रित है, शिखर पर सिंहलाट है। दक्षिण की दीवाल सीधी न होने के कारण उसमें पत्थर के आधार लगाये गये हैं। द्वारे के पास के लेख (नं० ११४ (२२७) से ज्ञात होता है कि यह चौक होय्सल नरेश नरसिंह (द्वितीय) के महामात्य मंत्री चन्द्रमौलि की जैन धर्मानुवर्तिनी भार्या आचियक्क ने शक सं० ११०३ में निर्माण कराई थी व राजा ने उसकी रक्षा के निमित्त चन्नेयनहल्लि नामक ग्राम का दान दिया था। 'अक्कन' आचियक्क का ही संक्षिप्त रूप है इसी से इसे अक्कन बसदि कहते हैं। यही बात लेख नं० ४१((३११) व ४४४ से भी सिद्ध होती है।

३ सिद्धान्त बसदि—यह बसदि अक्कन बसदि के पश्चिम की ओर है। किसी समय जैन सिद्धान्त के समस्त ग्रंथ इसी बसदि के एक बन्द कमरे में रक्खे जाते थे। इसी से इसका नाम सिद्धान्त बसदि पड़ा। कहा जाता है कि धवल, जयधवल आदि अनेक पुरातन ग्रंथ यहीं से मूडबिद्री गये हैं। इसमें एक पाषाण पर चतुर्विंशति तीर्थंकरों की प्रतिमायें हैं। बीच में पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा है और उनके आजूबाजू दोनों पार्श्वनाथ की। यहाँ के लेख नं० ४२० (३१२) से ज्ञात होता है कि यह चतुर्विंशति मूर्ति उक्त भगवान के किसी भक्त ने शक सं० ११६० के लगभग प्रतिष्ठित कराई थी।

४ दानशाले बस्ति—यह छोटा सा देवालय भवन बस्ति के द्वार के पास ही है। इसमें एक तीन फुट ऊँचे पाषाण पर पञ्चपरमेष्ठी की प्रतिमायें हैं। चिदानन्द कवि के मुनिवंशाभ्युदय (शक सं० १६०२) के अनुसार मैसूर के चिक देवराज ओडेयर ने अपने पूर्ववर्ती नृप दोड्ड देवराज ओडेयर के समय में (सन् १६५८—१६७२ ईस्वी) बेलगोल की यात्रा की, दानशाला के दर्शन किये और राजा ने उसके लिये मदनेय ग्राम का दान करवाया। यहाँ पहले दान दिया जाता रहा होगा इसी से इस बस्ति का यह नाम पड़ा।

५ नगर जिनालय—इस भवन में गर्भगृह, सुखनासि और नवरङ्ग हैं। इसमें आदिनाथ की प्रभावली संयुक्त अढ़ाई फुट ऊँची मूर्ति है। नवरङ्ग की बाईं ओर एक गुफा में डेढ़ फुट ऊँची यक्षदेव की मूर्ति है जिसके दायें हाथ में कोई फल और बायें हाथ में कोड़े के आकार की कोई चीज है। पैरों में खड़ाऊँ हैं। पीठिका पर घोड़े का चिह्न बना हुआ है। यहाँ के लेख नं० १३० (२२५) से ज्ञात होता है कि इस मन्दिर को होय्सल नरेश बल्लाल (द्वितीय) के 'पट्टप्रधानी' व नयकीर्ति सिद्धान्त चक्रवर्ति के शिष्य नागदेव मंत्री ने शक सं० १११८ में निर्माण कराया था। नगर के महाजनों-द्वारा ही इसकी रक्षा होती थी इसी से इसका नाम नगर जिनालय पड़ा। 'श्रीनिलय' भी इस मंदिर का नाम रहा है। उक्त लेख में नागदेव मंत्री द्वारा कमठपार्श्वनाथबसदि के सन्मुख 'नृत्य

रङ्ग' और अश्मकुट्टिम (पाषाणभूमि) व अपने गुरु नय-कीर्ति देव की निषद्या निर्माण कराये जाने का भी उल्लेख है। लेख नं० १२२ (३२६) के अनुसार उन्होंने नयकीर्त्ति के नाम से ही नागसमुद्र नामक सरोवर भी बनवाया। यह सरोवर अब 'जिगणेकट्टे' कहलाता है। पर लेख नं० १०८ (२५८) में कहा गया है कि पण्डित यति के तप के प्रभाव से ही नगर जिनालय (नगर जिनास्पद) की सृष्टि हुई।

६ मङ्गायि बस्ति—इसमें एक गर्भगृह, सुखनासि और नवरङ्ग है। इसमें एक साढ़े चार फुट ऊँची शान्तिनाथ की मूर्त्ति विराजमान है। सुखनासि के द्वार पर आजू-बाजू पाँच फुट ऊँची चवरवाहियों की मूर्त्तियाँ हैं। नवरङ्ग में वर्द्धमान स्वामी की मूर्त्ति है जिस पर लेख है, ४२९ (३३८)। मन्दिर के सम्मुख सुन्दरता से खचित दो हस्ती हैं। लेख नं० १३२ (३४१) व ४३० (३३९) से ज्ञात होता है कि यह बस्ति अभिनव चारुकीर्ति पण्डिताचार्य के शिष्य बेल्गोल के मङ्गायि ने बनवाई थी। उक्त लेखों में इसे त्रिभुवनचूड़ामणि कहा है। ये लेख शक की तेरहवीं शताब्दि के ज्ञात होते हैं। शान्तिनाथमूर्त्ति की पीठिका पर के लेख से विदित होता है कि यह मूर्त्ति पण्डिताचार्य की शिष्या व देवराय महाराज की रानी भीमादेवी ने प्रतिष्ठित कराई थी [लेख नं० ४२८ (३३७)]। ये देवराय सम्भवतः विजयनगर के राजा देवराज प्रथम हैं जिनका राज्य सन् १४०६ से १४१६ तक रहा था।

इस महावीर स्वामी की पीठिका पर के लेख से सिद्ध होता है कि इनकी प्रतिष्ठा पण्डितदेव की शिष्या वमलाधि ने कराई थी। इसका भी यही समय ही अनुमान होता है। इसी मन्दिर के एक लेख [नं० १३४ (३४२)] से विदित होता है कि इसकी मरम्मत सम्भवतः शक सं० ११३४ में गेरसोप्पे के हिरिय अय्य के शिष्य गुम्मटण्ण ने कराई थी।

७ जैनमठ—यह यहाँ के गुरु का निवास-स्थान है। इमारत बहुत सुन्दर है, बीच में खुला हुआ आंगन है। हाल ही में दूसरी मञ्जिल भी बन गई है। मण्डप के खम्भे अच्छी कारीगरी के बने हुए हैं। उन पर खूब चित्रकारी है। यहाँ के तीन गर्भगृहों में अनेक पाषाण और धातु की मूर्तियाँ हैं। इनमें की अनेक मूर्तियाँ बहुत सर्वांसोन हैं। इन पर संस्कृत व तामिल भाषा में लेख अक्षरों के लेख हैं जिनसे ज्ञात होता है कि वे अधिकांश मद्रास प्रान्तीय धर्मिष्ठ भाइयों ने प्रदान की हैं। मन्दिरों के चित्र में पञ्चपरमेष्ठी के अतिरिक्त जिनधर्म, जिनागम, चैत्य और चैत्यालय भी चित्रित हैं। मठ की दीवालों पर तीर्थंकरों व जैन राजाओं के जीवन की घटनाओं के अनेक रङ्गीन चित्र हैं। इनमें मैसूर-नरेश कृष्णराज ओडेयर तृतीय के 'दसरा दरबार' का भी चित्र है। पार्श्वनाथ के समवसरण व भरत चक्रवर्ति के जीवन के चित्र भी दर्शनीय हैं। चार चित्र नागकुमार की जीवन-घटनाओं के हैं। एक वन के दृश्य में षड्लेश्याओं के पुरुषों के चरित्र बड़ी उत्तम रीति

से चित्रित किये गये हैं। ऊपर की मञ्जिल में पार्श्वनाथ की मूर्त्ति है और एक काले पाषाण पर चतुर्विंशति तीर्थंकर खचित हैं।

कहा जाता है कि चामुण्डराय ने गोम्मटेश्वर की मूर्ति निर्माण कराकर अपने गुरु नेमिचन्द्र को यहाँ का मठाधीश नियुक्त किया। यह भी कहा जाता है कि इससे पहले भी यहाँ गुरु-परम्परा चली आती थी। लेख नं० १०५ (२५५) व १०८ (२५८) में उल्लेख है कि यहाँ के एक गुरु चारुकीर्त्ति पण्डित ने होयसल नरेश बल्लाल प्रथम (सन् ११००-११०६) को एक बड़ी दुस्साध्य व्याधि से मुक्त किया था जिससे उन्हें बल्लालजीवरक्षक की उपाधि मिली थी।

कल्याणि—यह नगर के बीच के एक छोटे से सरोवर का नाम है। इसके चारों ओर सीढ़ियाँ और दीवाल हैं। दीवाल के दरवाजे शिखरबद्ध हैं। उत्तर की ओर एक सभामण्डप है जिसके एक स्तम्भ पर लेख है (४४४ (३६५) कि यह सरोवर विष्णुवर्द्धन राजेन्द्र ने बनवाया। मैसूर के विष्णुवर्द्धनराजेन्द्र ने सन् १६७२ से १७०४ तक राज्य किया है। कनड़ कवि-कृत गोम्मटेश्वरचरित (शक सं०१७२०) में उल्लेख है कि विष्णुवर्द्धनराज ने अपने टकसाल के अध्यक्ष अरसुप्प की प्रार्थना से 'कल्याणि' निर्माण कराया। पर सरोवर के पूरे होने से प्रथम ही राजा की मृत्यु हो गई, पर कल्याण्ण ने उसे विष्णुवर्द्धनराज के पौत्र कृष्णराज आडयर

प्रथम (सन् १७१३–१७३१) के समय में शिखर, सभामण्डप आदि बनवाकर पूर्ण कराया। सम्भवतः यही बड़ा पुराना सरोवर रहा है जिस पर से इस नगर का नाम बेल्गुल (धवल सरोवर) पड़ा। उक्त पुरुषों ने सम्भवतः इसका जीर्णोद्धार कराया होगा। यह भी हो सकता है कि इस स्थान का नाम देनेवाला धवल सरोवर कोई अन्य ही रहा हो।

८ जक्कियकट्टे—यह भण्डारि बस्ति के दक्षिण में एक छोटा सा सरोवर है। इसके पास की दो चट्टानों पर जैन प्रतिमाओं के नीचे के दो लेखों नं० ४४६ (३६७) और ४४७ (३६८) से ज्ञात होता है कि बोप्पदेव की माता, गङ्गराज के ज्येष्ठ भ्राता की भार्या, शुभचन्द्र सिद्धान्तदेव की शिष्या अक्कियमव्वे ने ये जिनमूर्तियाँ और सरोवर निर्माण कराये। लेख नं० ४३ (११७) व अन्य लेखों से सिद्ध है कि गङ्गराज होय्सल नरेश विष्णुवर्द्धन के सेनापति थे और शक सं० १०४५ में जीवित थे। इस लेख में अक्कियमव्वे की भी प्रशस्ति है। गाणेहल्लि के एक लेख नं० ४८६ (४००) से ज्ञात होता है कि इसी धर्मपरायणा साध्वी महिला ने वहाँ भी एक बस्ति निर्माण कराई थी।

९० चेन्नण्ण का कुण्ड—नगर से दक्षिण की ओर कुछ दूरी पर यह कुण्ड है। इसका निर्माता वही चेन्नण्ण बस्ति का निर्माता चेन्नण्ण है। चेन्नण्ण की कृतियों का उल्लेख लेख नं० १२३ तथा ४४८-४५३ व ४६३-४६५ में है।

नं० ४८० (३६०) से इस कुण्ड का समय शक सं० १५६५ के लगभग प्रतीत होता है।

श्रवणबेलगोल के आसपास के ग्राम

जिननाथ पुर—यह श्रवणबेल्गोल से एक मील उत्तर की ओर है। लेख नं० ४७८ (३८८) के अनुसार इसे होय्सल-नरेश विष्णुवर्द्धन के सेनापति गङ्गराज ने शक सं० १०४० के लगभग बसाया था। यहाँ की शान्तिनाथ बस्ति होय्सल शिल्पकारी का बहुत सुन्दर नमूना है। इसमें एक गर्भगृह, सुखनासि और नवरङ्ग हैं। शान्तिनाथ की साढ़े पाँच फुट ऊँची मूर्ति बड़ा भव्य और दर्शनीय है। यह प्रभावली और दोनों ओर चँवरधारिणियों से सुशोभित है। नवरङ्ग के चार स्तम्भ अच्छी मूँग की कारीगरी के बने हुए हैं। इसके मण्डप भी बड़े सुन्दर हैं। सामने-सामने दो सुन्दर आले बने हुए हैं जो दर्शनीय हैं। बाहिरी दीवालों पर अनेक चित्रपट हैं। कई चित्र अधूरे ही रह गये हैं। इनमें तीर्थंकर, यक्ष, यक्षिणी, ब्रह्म, मानस्तम्भ, मंदिरों, मूर्तिकारिणी, नायक, वाहिनवाही आदि के चित्र हैं। मानस्तम्भों की संख्या चालीस है।

शान्तिनाथ बस्ति

यह बस्ति मैसूर राज्य भर के जैन मंदिरों में सबसे अधिक अलंकृत है। शान्तिनाथ की पीठिका के लेख नं० ४०१

(३८०) से ज्ञात होता है कि इस वस्ति को 'वसुधैकबान्धव रेचिमय्य' सेनापति ने बनवाकर सागरनन्दि सिद्धान्तदेव के अधिकार में दे दी थी। एक लेख (ए० क० अर्सीकेरे ७७ सन् १२२०) में उल्लेख है कि उक्त सेनापति कलचुरि-नरेश के मंत्री थे, पश्चात् उन्होंने होय्सल नरेश बल्लाल (द्वितीय) (सन् ११७३-१२२०) की शरण ली। इससे शान्तिनाथ वस्ति के निर्माण का समय लगभग शक सं० ११२० सिद्ध होता है। नवरङ्ग के एक स्तम्भ पर के लेख नं० ४७० (३८६) से विदित होता है कि इस वस्ति का जीर्णोद्धार पालेद पदुमन ने शक सं० १५५३ में कराया था।

ग्राम के पूर्व में अरेगल्ल वस्ति नाम का एक दूसरा मंदिर है। यह शान्तिनाथ वस्ति से भी पुराना है। इसमें पार्श्वनाथ भगवान् की सप्तफणी, प्रभावली संयुक्त पाँच फुट ऊँची पद्मासन मूर्ति है। सुखनासि में धरणेन्द्र और पद्मावती के सुन्दर चित्र हैं। मन्दिर में सफाई अच्छी रहती है। एक चट्टान (अरेगल) के ऊपर निर्मित होने से ही यह मन्दिर अरेगल वस्ति कहलाता है। पार्श्वनाथ की पीठिका पर के लेख नं० ४७४ (३८६) से विदित होता है कि वह मूर्ति शक सं० १८१२ में बेल्गुल के भुजबलैय्य ने प्रतिष्ठित कराई है। इसका कारण यह था कि प्राचीन मूर्ति बहुत खण्डित हो गई थी। यह प्राचीन मूर्ति अब पास ही के साक्षात में पड़ी हुई है और उसका छत्र वस्ति के द्वारे के पास

अरेगल्ल वस्ति

रक्खा हुआ है जहाँ पर कि लेख नं० १४४ (३८४) है। मंदिर में चतुर्विंशति तीर्थंकर, पञ्चपरमेष्ठी, नवदेवता, नन्दीश्वर आदि की धातुनिर्मित मूर्त्तियाँ भी हैं।

ग्राम की नैऋत दिशा में एक समाधिमण्डप है। इसे शिलाकूट कहते हैं। मण्डप चार फुट लम्बा-चौड़ा और पाँच फुट ऊँचा है। ऊपर शिखर है। इसके चारों ओर दीवालें हैं पर दरवाजा एक भी नहीं है। इस पर के लेख नं ४७९ (३८९) से यह बालचन्द्रदेव के तनय की निषद्या सिद्ध होती है जिनकी मृत्यु शक सं ११२६ में हुई। लेख में बाल-चन्द्रदेव के तनय का नाम घिस गया है, पर उनके गुरु बेलि-कुम्ब के नेमिचन्द्र पण्डित व निषद्या निर्मापक वैरोज के नाम लेख में पढ़े जाते हैं। लेख के अन्तिम भाग में यह भी लिखा है कि एक साध्वी स्त्री कालव्वे ने सल्लेखना विधि से शरीरान्त किया। सम्भवतः यह उक्त मृत पुरुष की विधवा पत्नी रही होगी।

ऐसा ही एक समाधिमण्डप लावरेकेरे सरोवर के समीप है। इसके पास जो लेख (नं० १४२ (३६२) है उससे विदित होता है कि यह चारुकीर्ति पण्डित की निषद्या है जिनकी मृत्यु शक सं० १५६५ में हुई।

लेख नं० ४० (६४) में उल्लेख है कि देवकीर्ति पण्डित, जिनकी मृत्यु शक सं० १०८५ में हुई, ने जिननाथ पुर में एक दानशाला निर्माण कराई थी।

हलेबेलगोल—यह ग्राम श्रवणबेलगोल से चार मील उत्तर की ओर है। यहाँ का होय्सल शिल्पकारी का बना हुआ जैनमन्दिर ध्वंस अवस्था में है। गर्भगृह में अढ़ाई फुट की खड्गासन मूर्त्ति है। सुखनासि में लगभग पाँच फुट ऊँची सप्तफणी पार्श्वनाथ की खण्डित मूर्त्ति रक्खी है। नवरङ्ग में अच्छी चित्रकारी है। छत की छत पर देवियों-सहित रथारूढ़ अष्टदिक्पालों के चित्र हैं जिनके बीच में पञ्चफणी धरणेन्द्र का चित्र है। धरणेन्द्र के बायें हाथ में धनुष और दाहिने में सम्भवतः शङ्ख है। नवरङ्ग में दो चँवरवाही और एक तीर्थंकर मूर्त्ति खण्डित रक्खी हुई है। नवरङ्ग के द्वार पर अच्छी कारीगरी दिखलाई गई है। इस मन्दिर के सम्मुख १०८४ के लेख (नं० ४८२) से विदित होता है कि विष्णुवर्द्धन के पिता होय्सल एरेयङ्ग ने बेलगोल के मन्दिरों के जीर्णोद्धार के लिये जैनगुरु गोपनन्दि को राचनहल्ल ग्राम का दान दिया। इस लेख व लेख नं० ५५ (६८) में गोपनन्दि की खूब प्रशंसा पाई जाती है। यह बलि सम्भवतः लगभग शक सं० १०१६ की बनी हुई है।

इस ग्राम में एक शैव और एक वैष्णव मन्दिर भी है। ज्ञात होता है कि प्राचीन काल में यहाँ अधिक मन्दिर रहे हैं क्योंकि यहाँ के एक तालाब की नहर में प्रायः सारा मसाला टूटे हुए मन्दिरों का लगा हुआ है। ग्राम के मध्य में एक तालाब के पास एक खण्डित जिन प्रतिमा भी है।

साणेहल्लि—यह ग्राम श्रवणबेल्गुल से तीन मील पर है। यहाँ एक ध्वंस जैन मन्दिर है। जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, लेख नं० ४८६ (४००) के अनुसार इसे गङ्गराज की भावज जक्कियब्बे ने निर्माण कराया था।

लेखों की ऐतिहासिक उपयोगिता

विशेष राजवंशों से सम्बन्ध रखनेवाले लेखों का विवेचन करने से पूर्व यहाँ एक ऐसी घटना पर कुछ विचार करना आवश्यक है जिसका राजकीय व जैन-धार्मिक इतिहास से अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध है। जैनसंघ के नायक भद्रबाहु स्वामी के साथ भारतसम्राट् चन्द्रगुप्त मौर्य की दक्षिण यात्रा का प्रसङ्ग जैसा जैन इतिहास के लिए महत्त्वपूर्ण है वैसा ही वह भारत के राजकीय इतिहास में अनुपेक्षणीय है। लगातार कई वर्षों से इस विषय पर इतिहासवेत्ताओं में मतभेद चला आता है। यद्यपि मतभेद का अभी तक अन्त नहीं हुआ, पर अधिकांश विद्वानों का झुकाव एक ओर होने से इस विषय का प्रायः निर्णय ही समझना चाहिए। संक्षेप में, जैनसाहित्य में यह प्रसङ्ग इस प्रकार पाया जाता है—अन्तिम श्रुतकेवली भद्रबाहु स्वामी ने निमित्त-ज्ञान से जाना कि उत्तर भारत में एक बारह वर्ष का भीषण दुर्भिक्ष पड़नेवाला है। ऐसी विपत्ति के समय में वहाँ मुनिवृत्ति का पालन होना कठिन जान

उन्होंने अपने समस्त शिष्यों-सहित दक्षिण की ओर प्रस्थान किया। भारतसम्राट् चन्द्रगुप्त ने भी इस दुर्भिक्ष का समाचार पा, संसार से विरक्त हो, राज्यपाट छोड़ भद्रबाहु स्वामी से दीक्षा ली और उन्हीं के साथ गमन किया। जब यह मुनि-संघ श्रवण बेलगोल स्थान पर पहुँचा तब भद्रबाहु स्वामी ने अपनी आयु बहुत थोड़ी शेष जान, संघ को आगे बढ़ने की आज्ञा दी और आप चन्द्रगुप्त शिष्य-सहित छोटी पहाड़ी पर रहे। चन्द्रगुप्त मुनि ने अन्त समय तक उनकी खूब सेवा की और उनका शरीरान्त हो जाने पर उनके चरणचिह्न की पूजा में अपना शेष जीवन व्यतीत कर अन्त में सल्लेखना विधि से शरीरत्याग किया।

अब देखना चाहिए कि श्रवण बेलगोल के स्थानीय इतिहास से, शिलालेखों से व साहित्य से इस बात का कहाँ तक समर्थन होता है। कहा जाता है कि चन्द्रगुप्त के वहाँ रहने से ही इस पहाड़ी का नाम चन्द्रगिरि पड़ा। इस पहाड़ी पर की प्राचीनतम वस्ति चन्द्रगुप्त द्वारा ही पहले-पहल निर्माण कराये जाने के कारण चन्द्रगुप्त वस्ति कहलाई। इस पहाड़ी पर की भद्रबाहु गुफा में चन्द्रगुप्त के भी चरण-चिह्न हैं। कहा जाता है कि चन्द्रगुप्त ने इसी गुफा में समाधिमरण किया था। सेरिङ्गपट्टम के दो शिलालेखों (ए० क० ३, सेरिङ्गपट्टम १४७, १४८) में उल्लेख है कि कलवप्पु शिखर (चन्द्रगिरि) पर महामुनि भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त के चरण-चिह्न हैं। ये शिला-

लेख लगभग शक सं० ८२२ के हैं। श्रवणबेल्गोल के लगभग शक सं० ५७२ के लेख नं० १७–१८ (३१) में कहा गया है कि 'जो जैनधर्म भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त मुनीन्द्र के तेज से भारी समृद्धि को प्राप्त हुआ था उसके किञ्चित् क्षीण हो जाने पर शान्तिसेन मुनि ने उसे पुनरुत्थापित किया।' शक सं० १०५० के लेख नं० ५५ (६७) (श्लोक ४) में भद्रबाहु और उनके शिष्य चन्द्रगुप्त का उल्लेख है। ऐसा ही उल्लेख शक सं० १०८५ के लेख नं० ४० (६४) (श्लोक ४–५) में व शक सं० १३५५ के लेख नं० १०८ (२५८) (श्लोक ८–९) में है। इन उल्लेखों में चन्द्रगुप्त की गुरुभक्ति और तपश्चरण की महिमा गाई गई है।

साहित्य में इस प्रसङ्ग का सबसे प्राचीन उल्लेख हरिषेण-कृत 'बृहत्कथाकोष' में पाया जाता है। यह ग्रन्थ शक सं० ८५३ का रचा हुआ है। इसमें भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त का वर्णन इस प्रकार पाया जाता है—'पौण्ड्रवर्धन देश में देवकोट नाम का नगर था। इस नगर का प्राचीन नाम कोटिपुर था। यहाँ पद्मरथ नाम का राजा राज्य करता था। इनके एक पुरोहित सोमशर्मा और उनकी भार्या सोमश्री के भद्रबाहु नामक पुत्र हुआ। एक दिन अन्य बालकों के साथ नगर में खेलते हुए भद्रबाहु को चतुर्थ श्रुतकेवली गोवर्धन ने देखा। उन्होंने देखकर जान लिया कि यही बालक अन्तिम श्रुतकेवली होनेवाला है। अतएव माता-पिता की अनुमति से उन्होंने

भद्रबाहु को अपने संरक्षण में ले लिया और उन्हें सब विद्याएँ सिखाईं। यथासमय भद्रबाहु ने गोवर्धन स्वामी से जिन दीक्षा धारण की। एक समय विहार करते हुए भद्रबाहु स्वामी उज्जैनी नगरी में पहुँचे और सिप्रा नदी के तीर एक उपवन में ठहरे। इस समय उज्जैनी में जैनधर्मावलम्बी राजा चन्द्रगुप्त अपनी रानी सुप्रभा-सहित राज्य करते थे। जब भद्रबाहु स्वामी आहार के निमित्त नगरी में गये तब एक गृह में झूले में झूलते हुए शिशु ने उन्हें चिल्लाकर मना किया और वहाँ से चले जाने को कहा। इस निमित्त से स्वामी को ज्ञात हो गया कि यहाँ एक बारह वर्ष का भीषण दुर्भिक्ष पड़नेवाला है। इस पर उन्होंने समस्त संघ को बुलाकर सब हाल कहा और कहा कि "अब तुम लोगों को दक्षिण देश को चले जाना चाहिए। मैं स्वयं यहीं ठहरूँगा क्योंकि मेरी आयु क्षीण हो चुकी है।"*

जब चन्द्रगुप्त महाराज ने यह सुना तब उन्होंने विरक्त होकर भद्रबाहु स्वामी से जिन दीक्षा ले ली। फिर चन्द्रगुप्त मुनि, जो दशपूर्वियों में प्रथम थे, विशाखाचार्य के नाम से जैन संघ के नायक हुए। भद्रबाहु की आज्ञा से वे संघ को दक्षिण के पुन्नाट† देश को ले गये। इसी प्रकार रामिल्ल, स्थूलवृद्ध,

---

* अहमत्रैव तिष्ठामि क्षीणप्रायुर्ममायुषा।

† पुन्नाट बड़ा पुराना राज्य रहा है। कन्नड साहित्य में यह पुन्नाड के नाम से प्रसिद्ध है। 'टालेमी' ने इसका उल्लेख 'पौन्नट'

और भद्राचार्य अपने-अपने संघों-सहित सिंधु आदि देशों को भेजे गये। स्वयं भद्रबाहु स्वामी उज्जयिनी के 'भाद्रपद' नामक स्थान पर गये और वहाँ उन्होंने कई दिन तक अनशन व्रत कर समाधिमरण किया *। जब द्वादशवर्षीय दुर्भिक्ष का अन्त हो गया तब विशाखाचार्य संघ-सहित दक्षिण से मध्यदेश को लौट आये।

दूसरा ग्रंथ, जिसमें उपर्युक्त प्रसङ्ग आया है, रत्ननन्दिकृत भद्रबाहुचरित है। रत्ननन्दि, अनन्तकीर्ति के शिष्य ललित-कीर्ति के शिष्य थे। उनका ठीक समय ज्ञात नहीं है पर वे पन्द्रहवीं सोलहवीं शताब्दि के लगभग अनुमान किये जाते हैं। इस ग्रन्थ में प्रायः ऊपर के ही समान भद्रबाहु का प्राथमिक वृत्तान्त देकर कहा गया है कि वे जब उज्जयिनी आ गये तब वहाँ के राजा 'चन्द्रगुप्त' ने उनकी खूब भक्ति की और उनसे

नाम से किया है और कहा है कि वहाँ रत्नमणि (beryl) बहुत पाये जाते हैं। वहाँ के राष्ट्रवर्मा आदि राजाओं की राजधानी 'कीर्तिपुर' थी। कीर्तिपुर कदाचित् मैसूर जिले के हेगड़े देवकोटे तालुके में कपिनी नदी पर के आधुनिक 'किसूर' का ही प्राचीन नाम है। हरिषेण और जिनसेन कवि अपने को पुन्नाट संघ के कहते हैं। यह संघ सम्भवतः 'किसूर' संघ का ही दूसरा नाम है जिसका उल्लेख शिलालेख नं० १६४ (८१) में आया है।

* प्राप्य भाद्रपदं देशं धंमद्युज्जयिनीभवम्।
चकारानशनं धीरः स दिनानि बहून्यटम्॥
समाधिमरणं प्राप्य भद्रबाहुर्दिवं ययौ॥

अपने सोलह स्वप्नों का फल पूछा। इनके फल-कथन में भद्रबाहु ने कहा कि यहाँ द्वादश वर्ष का दुर्भिक्ष पड़नेवाला है। इस पर चन्द्रगुप्त ने उनसे दीक्षा ले ली। फिर भद्रबाहु अपने बारह हजार शिष्यों-सहित 'कर्नाटक' को जाने के लिये दक्षिण को चल दिये। जब वे एक वन में पहुँचे तब अपनी आयु पूरी हुई जान उन्होंने विशाखाचार्य को अपने स्थान पर नियुक्त कर उन्हें संघ को आगे ले जाने के लिये कहा और आप चन्द्रगुप्ति-सहित वहीं ठहर गये। संघ चोल देश को चला गया। थोड़े समय पश्चात् भद्रबाहु ने समाधिमरण किया। चन्द्रगुप्ति उनके चरण-चिह्न बनाकर उनकी पूजा करते रहे। विशाखाचार्य जब दक्षिण से लौटे तब चन्द्रगुप्ति मुनि ने उनका आदर किया। विशाखाचार्य ने भद्रबाहु की समाधि की वन्दना कर काम्यकुटज को प्रस्थान किया।

चिदानन्द कवि के मुनिवंशाभ्युदय नामक कन्नड काव्य में भी भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त की कुछ वार्ता आई है। यह ग्रन्थ शक सं० १६०२ का बना हुआ है। इसमें कथन है कि "श्रुतकेवली भद्रबाहु बेलगोल को आये और चिक्कबेट्ट (चन्द्रगिरि) पर ठहरे। कदाचित् एक व्याघ्र ने उन पर धावा किया और उनका शरीर विदीर्ण कर डाला। उनके चरणचिह्न अब तक गिरि पर एक गुफा में पूजे जाते हैं..... अर्हद्बलि की आज्ञा से दक्षिणाचार्य बेलगोल आये। चन्द्रगुप्त भी यहाँ तीर्थ-यात्रा को आये थे। इन्होंने दक्षिणाचार्य से दीक्षा ग्रहण की

और उनके बनवाये हुए मन्दिर की तथा भद्रबाहु के चरण-चिह्नों की पूजा करते हुए वहाँ रहे। कुछ कालोपरान्त दक्षिणाचार्य ने अपना पद चन्द्रगुप्त को दे दिया।"

शक सं० १७६१ के बने हुए देवचन्द्रकृत राजावलीकथा नामक कन्नड ग्रन्थ में यह वार्ता प्रायः रत्ननन्दिकृत भद्रबाहुचरित के समान ही पाई जाती है। पर इस ग्रन्थ में और भी कई छोटी-छोटी बातें दी हुई हैं जो अधिक महत्त्व की नहीं हैं। यहाँ कथन है कि श्रुतकेवली विष्णु, नन्दिमित्र और अपराजित व पाँच सौ शिष्यों के साथ गोवर्धनाचार्य जम्बूस्वामी के समाधिस्थान की वन्दना करने के हेतु कोटिकपुर में आये। राजा पद्मरथ की सभा में भद्रबाहु ने एक लेख, जिसे अन्य कोई भी विद्वान् नहीं समझ सका था, राजा को समझाया। इससे उनकी विलक्षण बुद्धि का पता चला। कार्तिक की पूर्णमासी की रात्रि को पाटलिपुत्र के राजा चन्द्रगुप्त को सोलह स्वप्न हुए। प्रातःकाल यह समाचार पाकर कि भद्रबाहु नगर के उपवन में विराजमान हैं, राजा अपने मन्त्रियों-सहित उनके पास गये। राजा का अन्तिम स्वप्न यह था कि एक बारह फण का सर्प उनकी ओर आ रहा है। इसका फल भद्रबाहु ने यह बतलाया कि वहाँ बारह वर्ष का दुर्भिक्ष पड़नेवाला है। एक दिन जब भद्रबाहु आहार के लिये नगर में गये तब उन्होंने एक गृह के सामने खड़े होकर सुना कि उस घर में एक झूले में झूलता हुआ बालक जोर-जोर से चिल्ला रहा है।

यह शिशु बारह बार चिल्लाया पर किसी ने उसकी आवाज नहीं सुनी। इससे स्वामीजी को विदित हुआ कि दुर्भिक्ष प्रारम्भ हो गया है। राजा के मन्त्रियों ने दुर्भिक्ष को रोकने के लिये कई यज्ञ किये। पर चन्द्रगुप्त ने उन सबके पापों के प्रायश्चित्त स्वरूप अपने पुत्र सिंहसेन को राज्य दे भद्रबाहु से जिन दीक्षा ले ली और उन्हीं के साथ हो गये। भद्रबाहु अपने बारह हजार शिष्यों-सहित दक्षिण को चल पड़े। एक पहाड़ी पर पहुँचने पर उन्हें विदित हुआ कि उनकी आयु अब बहुत थोड़ी शेष है; इसलिये उन्होंने विशाखाचार्य को संघ का नायक बनाकर उन्हें चोल और पांड्य देश को भेज दिया। केवल चन्द्रगुप्त को उन्होंने अपने साथ रहने की अनुमति दी। उनके समाधिमरण के पश्चात् चन्द्रगुप्त उनके चरणचिह्नों की पूजा करते रहे। कुछ समय पश्चात् सिंहसेन नरेश के पुत्र भास्कर नरेश भद्रबाहु के समाधिस्थान की वंदना अपने पितामह की वन्दना के हेतु वहाँ आये और कुछ समय ठहरकर उन्होंने वहाँ जिनमन्दिर निर्माण कराये, तथा चन्द्रगिरि के समीप बेल्गोल नामक नगर बसाया। चन्द्रगुप्त ने उसी गिरि पर समाधिमरण किया।

इस सम्बन्ध में सबसे प्राचीन प्रमाण चन्द्रगिरि पर पार्श्वनाथ बस्ति के पास का शिलालेख (नं० १) है। यह लेख श्रवणबेल्गोल के समस्त लेखों में प्राचीनतम सिद्ध होता है। इस लेख में कथन है कि "महावीर स्वामी के पश्चात् परमर्षि

गौतम, लोहार्य, जम्बू विष्णुदेव, अपराजित, गोवर्द्धन, भद्रबाहु, विशाख, प्रोष्ठिल, कृतिकार्य, जय, सिद्धार्थ, धृतिषेण, बुद्धिलादि गुरुपरम्परा में होनेवाले भद्रबाहु स्वामी के त्रैकालदर्शी निमित्त-ज्ञान द्वारा उज्जयिनी में यह कथन किये जाने पर कि वहाँ द्वादश वर्ष का वैषम्य (दुर्भिक्ष) पड़नेवाला है, सारे संघ ने उत्तरापथ से दक्षिणापथ को प्रस्थान किया और क्रम से वह एक बहुत समृद्धियुक्त जनपद में पहुँचा। वहाँ आचार्य प्रभाचन्द्र ने कटवप्रादि व दरीगुफादि-संकुल सुन्दर कटवप्र नामक शिखर पर अपनी आयु अल्प ही शेष जान समाधितप करने की आज्ञा देकर, समस्त संघ को आगे भेजकर व केवल एक शिष्य को साथ रखकर देह की समाधि-आराधना की।"

कार इस विषय के जितने पक्षोंपर दिये गये हैं उनमें दो बातें सर्वसम्मत हैं—प्रथम यह कि भद्रबाहु ने बारह वर्ष के दुर्भिक्ष की भविष्यवाणी की और दूसरे यह कि यह वाणी को सुनकर जैनसंघ दक्षिणापथ को गया। हरिषेण के अनुसार भद्रबाहु दक्षिणापथ को नहीं गये। उन्होंने उज्जयिनी के समीप ही समाधिमरण किया और चन्द्रगुप्ति मुनि अपर नाम विशाखाचार्य संघ को लेकर दक्षिण को गये। भद्रबाहु चरित तथा राजावलीकथा के अनुसार भद्रबाहु स्वामी ने ही समस्त संघ के नायक का काम किया तथा श्रवणबेलगोल की चंद्रगिरि पहाड़ी पर वे अपने शिष्य चन्द्रगुप्त-सहित ठहर गये। पुण्याश्रवकथाकोष तथा आराधनाकथाकोष के दो भद्र,

श्रवणबेल्गोल के लेख नं० १७-१८, ४०, ५४ तथा १०८ भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त दोनों का चन्द्रगिरि से सम्बन्ध स्थापित करते हैं। पर जैसा कि ऊपर के वृत्तान्त से विदित होगा, शिलालेख नं० १ की वार्ता इन सबसे विलक्षण है। उसके अनुसार त्रिकालदर्शी भद्रबाहु ने दुर्भिक्ष की भविष्यवाणी की, जैन संघ दक्षिणापथ को गया व कटवप्र पर प्रभाचन्द्र ने जैन संघ को आगे भेजकर एक शिष्य-सहित समाधि-आराधना की। यह वार्ता स्वयं लेख के पूर्व और अपर भागों में वैषम्य उपस्थित करने के अतिरिक्त ऊपर उल्लिखित समस्त प्रमाणों के विरुद्ध पड़ती है। भद्रबाहु दुर्भिक्ष की भविष्यवाणी करके कहाँ चले गये, प्रभाचन्द्र आचार्य कौन थे, उन्हें जैन संघ का नायकत्व कब और कहाँ से प्राप्त हो गया इत्यादि प्रश्नों का लेख में कोई उत्तर नहीं मिलता। इस गड़बड़ का सुलझाने के लिये हमने लेख के मूल की सूक्ष्म रीति से जाँच की। इस जाँच से हमें ज्ञात हुआ कि उपर्युक्त सारा बखेड़ा लेख की छठी पंक्ति में 'आचार्यैः प्रभाचन्द्रनामाभिधानैः ... इत्यादि पाठ से खड़ा होता है। यह पाठ डा० फ्लीट और रावबहादुर नरसिंहाचार का है। श्रवणबेल्गोल शिलालेखों के प्रथम संग्रह के रचयिता राइस साहब ने 'प्रभाचन्द्रोना..... ' की जगह 'प्रभाचन्द्रेण ... ' पाठ दिया है। डा० टा० के० लड्डू भी राइस साहब के पाठ को ठीक समझते हैं। 'प्रभाचन्द्रा' की जगह 'प्रभाचन्द्रेण' होने से उपर्युक्त सारा बखेड़ा सहज ही

तय हो जाता है। इससे 'आचार्यः' का सम्बन्ध भद्रबाहु स्वामी से हो जाता है और लेख का यह अर्थ निकलता है कि भद्रबाहु स्वामी संघ को आगे बढ़ने की आज्ञा देकर आप प्रभाचन्द्र नामक एक शिष्य-सहित कटवप्र पर ठहर गये और उन्होंने वहीं समाधिमरण किया। इससे लेख के पूर्वापर भागों में सामञ्जस्य स्थापित हो जाता है और अन्य प्रमाणों से कोई विरोध नहीं रहता। मूल में 'प्रभाचन्द्रोना' 'प्रभाचन्द्रेणाम' भी पढ़ा जा सकता है। इस पाठ में कठिनाई केवल यह आती है कि 'म' अक्षर का कोई अर्थ व सम्बन्ध नहीं रहता। पर इसके परिहार में यह कहा जा सकता है कि लेख को खोदनेवाले ने 'प्रभाचन्द्रेणनाम...'की जगह भ्रम से 'प्रभाचन्द्रेणाम' खोद दिया है; वह 'न' को भूल गया। ऐसी भूलें शिलालेखों में बहुधा पाई जाती हैं। प्रभाचन्द्र के भद्रबाहु के शिष्य होने से ऊपर के समस्त प्रमाणों द्वारा यह बात सहज ही समझ में आ जाती है कि प्रभाचन्द्र चन्द्रगुप्त का ही नामान्तर व दीक्षा-नाम होगा।

अब प्रश्न यह उपस्थित होता है कि ये भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त कौन थे और कब हुए। शिलालेख नं० १, जिसकी बातों पर हम ऊपर विचार कर चुके हैं, अपनी लिखावट पर से अपने को लगभग शक संवत् की पाँचवीं-छठी शताब्दि का सिद्ध करता है। अतः उसमें उल्लिखित भद्रबाहु और प्रभाचन्द्र (चन्द्रगुप्त) शक की पाँचवीं छठी शताब्दि से पूर्व

होना चाहिये। दिगम्बर पट्टावलियों में महावीर स्वामी के समय से लगाकर शक की सप्त शताब्दियों तक 'भद्रबाहु' नाम के दो आचार्यों के उल्लेख मिलते हैं, एक तो अन्तिम श्रुत-केवली भद्रबाहु और दूसरे वे भद्रबाहु जिनसे सरस्वती गच्छ की नन्दी आम्नाय की पट्टावली प्रारम्भ होती है। दूसरे भद्रबाहु का समय ईसा पूर्व ४३ वर्ष या शक संवत् से १३१ वर्ष पूर्व पाया जाता है। इनके शिष्य का नाम गुप्तिगुप्त पाया जाता है जो इनके पश्चात् पट्ट के नायक हुए। डा० फ्लीट का मत है कि दक्षिण की यात्रा करनेवाले ये ही द्वितीय भद्र-बाहु हैं और चन्द्रगुप्त उनके शिष्य गुप्तिगुप्त का ही नामान्तर है। पर इस मत के सम्बन्ध में कई शंकाएँ उत्पन्न होती हैं। प्रथम तो गुप्तिगुप्त और चन्द्रगुप्त को एक मानने के लिये कोई प्रमाण नहीं है, दूसरे इसमें उपर्युक्त प्रमाणों में जो चन्द्र-गुप्त नरेश के राज्य त्यागकर भद्रबाहु से दीक्षा लेने का उल्लेख है, उसका कुछ खुलासा नहीं होता और तीसरे जिस द्वादश-वर्षीय दुर्भिक्ष के कारण भद्रबाहु ने दक्षिण की यात्रा की थी उस दुर्भिक्ष के द्वितीय भद्रबाहु के समय में पड़ने के कोई प्रमाण नहीं मिलते। इन कारणों से डा० फ्लीट की कल्पना बहुत कमज़ोर है और अन्य कोई विद्वान् उसका समर्थन नहीं करते। विद्वानों का अधिक झुकाव अब इसी एकमात्र युक्तिसंगत मत की ओर है कि दक्षिण की यात्रा करनेवाले भद्रबाहु अन्तिम श्रुतकेवली भद्रबाहु ही हैं और उनके

साथ जाने वाले उनके शिष्य चन्द्रगुप्त स्वयं भारत सम्राट् चन्द्रगुप्त के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं हैं। यद्यपि वीर निर्वाण के समय का अब तक अन्तिम निर्णय न हो सकने के कारण भद्रबाहु का जो समय जैन पट्टावलियों और ग्रंथों में पाया जाता है तथा चन्द्रगुप्त सम्राट् का जो समय आजकल इतिहास सर्व सम्मति से स्वीकार करता है उनका ठीक समीकरण नहीं होता, * तथापि दिगम्बर और श्वेताम्बर दोनों ही सम्प्रदाय के ग्रंथों से भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त समसामयिक सिद्ध होते हैं। इन दोनों सम्प्रदायों के ग्रंथों में इस विषय पर कई विरोध होने पर भी वे उक्त बात पर एकमत हैं। हेमचन्द्राचार्य के 'परिशिष्ट पर्व' से यह भी सिद्ध होता है कि इस समय बारह वर्ष का दुर्भिक्ष पड़ा था, तथा 'इस भयङ्कर दुष्काल के पड़ने पर जब साधु समुदाय को भिक्षा का अभाव होने लगा तब सब लोग निर्वाह के लिये समुद्र के समीप गांवों में चले गये'। इस समय चतुर्दशपूर्वधर श्रुतकेवली श्री भद्रबाहु स्वामी

* दि० जैन ग्रंथों के अनुसार भद्रबाहु का आचार्यपद निर्वाण संवत् १६२ से १६२ तक २८ वर्ष रहा था प्रचलित निर्वाण संवत् के अनुसार ईस्वीपूर्व ३६० से ३३२ तक पड़ता है, तथा इतिहासानुसार चन्द्रगुप्त मौर्य का राज्य ईस्वीपूर्व ३२१ से २९८ तक माना जाता है। इस प्रकार भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त के अन्तकाल में ३० वर्ष का अन्तर पड़ता है। श्वेताम्बर ग्रंथों के अनुसार भद्रबाहु का समय वि० सं० १२६ से १७० अनुसार ईस्वी पूर्व ३७१ से ३३० तक सिद्ध होता है। इसका चन्द्रगुप्त के समय के साथ साथ समीकरण हो जाता है।

ने बारह वर्ष के महाप्राण नामक ध्यान की आराधना प्रारम्भ कर दी थी। परिशिष्ट पर्व के अनुसार भद्रबाहु स्वामी इस समय नेपाल की ओर चले गये थे और श्रीसंघ के बुलाने पर भी वे पाटलिपुत्र को नहीं आये जिसके कारण श्रीसंघ ने उन्हें संघबाह्य कर देने की भी धमकी दी। उक्त ग्रंथ में चन्द्रगुप्त के समाधि पूर्वक मरण करने का भी उल्लेख है।

इस प्रकार यद्यपि दिगम्बर और श्वेताम्बर ग्रन्थों में कई बातोंमें मत-भेद है पर इन भेदों से ही मूल बातों की पुष्टि होती है क्योंकि उनसे यह सिद्ध होता है कि एक मत दूसरे मत की नकल मात्र नहीं है व मूल बातें दोनों के ग्रन्थों में प्राचीनकाल से चली आती हैं।

अब इस विषय पर भिन्न-भिन्न विद्वानों के मत देखिये। डा० ल्यूमन* और डा० हार्नले† श्रुतकेवली भद्रबाहु की दक्षिण यात्रा को स्वीकार करते हैं। टामस साहब अपनी एक पुस्तक‡ में लिखते हैं कि "चन्द्रगुप्त जैन समाज के व्यक्ति थे यह जैन ग्रन्थकारों ने एक स्वयंसिद्ध और सर्व प्रसिद्ध बात के रूप से लिखा है जिसके लिये कोई अनुमान प्रमाण देने की आवश्यकता ही नहीं थी। इस विषय में लेखों के प्रमाण बहुत प्राचीन और साधारणतः सन्देह-रहित हैं। मैगस्थनीज

* Vienna Oriental Journal VII, 382.

† Indian Antiquary XXI, 59-60.

‡ Jainism or the Early Faith of Asoka P. 23.

के कथनों से भी झलकता है कि चन्द्रगुप्त ने ब्राह्मणों के सिद्धान्तों के विपक्ष में श्रमणों (जैन मुनियों) के धर्मोपदेशों को अङ्गीकार किया था।" टामस साहब इसके आगे यह भी सिद्ध करते हैं कि चन्द्रगुप्त मौर्य के पुत्र और प्रपौत्र बिन्दुसार और अशोक भी जैनधर्मावलम्बी थे। इसके लिये उन्होंने 'मुद्राराक्षस' 'राजतरङ्गिणी' तथा 'आइने अकबरी' के प्रमाण दिये हैं। श्रीयुक्त जायसवाल महोदय लिखते हैं* कि "प्राचीन जैनग्रंथ और शिलालेख चन्द्रगुप्त को जैन राजर्षि प्रमाणित करते हैं। मेरे अध्ययन ने मुझे जैनग्रंथों की ऐतिहासिक बातोंको आदर करने को बाध्य किया है। कोई कारण नहीं है कि हम जैनियों के इस कथन को कि चन्द्रगुप्त अपने राज्य के अन्तिम भाग में राज्य का त्याग जिन दीक्षा ले मुनि वृत्ति से मरण को प्राप्त हुए, न मानें। मैं पहला ही व्यक्ति यह माननेवाला नहीं हूँ। मि० राइस, जिन्होंने श्रवण-बेलगोला के शिलालेखों का अध्ययन किया है, पूर्णरूप से अपनी राय इसी पक्ष में देते हैं और मि० व्हीं० स्मिथ भी अन्त में इस मत की ओर झुके हैं।" डा० स्मिथ लिखते हैं† कि "चन्द्रगुप्त मौर्य का घटना-पूर्ण राज्यकाल किस प्रकार समाप्त हुआ इस पर ठीक प्रकाश एक मात्र जैन कथाओं से ही

* Journal of the Behar and Orissa Research Society Vol. III.

†Oxford History of India 75-76.

पड़ता है। जैनियों ने सदैव उक्त मौर्य सम्राट् को बिम्बसार (श्रेणिक) के सदृश जैन धर्मावलम्बी माना है और उनके इस विश्वास को झूठ कहने के लिये कोई उपयुक्त कारण नहीं है। इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं है कि, शैशुनाग, नन्द और मौर्य राजवंशों के समय में जैन धर्म मगध प्रान्त में बहुत जोर पर था। चन्द्रगुप्त ने राजगद्दी एक कुशल ब्राह्मण की सहायता से प्राप्त की थी यह बात चन्द्रगुप्त के जैनधर्मावलम्बी होने के कुछ भी विरुद्ध नहीं पड़ती। 'मुद्राराक्षस' नामक नाटक में एक जैन साधु का उल्लेख है जो नन्द नरेश के और फिर मौर्य सम्राट् के मन्त्री राक्षस का खास मित्र था।

"एक बार जहाँ चन्द्रगुप्त के जैनधर्मावलम्बी होने की बात मान ली वहाँ फिर उनके राज्य को त्याग करने व जैनविधि के अनुसार सल्लेखना द्वारा मरण करने की बात सहज ही विश्वसनीय हो जाती है। जैनग्रन्थ कहते हैं कि जब भद्रबाहु की द्वादशवर्षीय दुर्भिक्षवाली भविष्यवाणी उत्तर भारत में सच होने लगी तब आचार्य बारह हजार जैनियों को साथ लेकर अन्य सुदेश की खोज में दक्षिण को चल पड़े। महाराज चन्द्रगुप्त राज्य त्यागकर संघ के साथ हो लिये। यह संघ श्रवण बेल्गोला पहुँचा। यहाँ भद्रबाहु ने शरीर त्याग किया। राजर्षि चन्द्रगुप्त ने उनसे बारह वर्ष पीछे समाधिमरण किया। इस कथा का समर्थन श्रवणबेल्गोला के मन्दिरों आदि के नामों, ईसा की सातवीं शताब्दि के उपरान्त के लेखों तथा दसवीं

३८७; उदयेन्दिरम् का दानपत्र (सा० इं० इ० २, ३८७), कुडपु का दानपत्र (मै० आ० रि० १९२१ पृ० २९); ए० क० ७, शिमोगा ४, ए० क० ८ नगर ३५ व ३६ इत्यादि। इसके अतिरिक्त गोम्मटसार वृत्ति के कर्ता अभयचन्द्र सैद्धान्तचक्रवर्ती ने भी अपने ग्रन्थ की उत्थानिका में इस बात का उल्लेख किया है। इन अनेक उल्लेखों से यद्यपि यह स्पष्ट नहीं होता कि जैनाचार्य ने गङ्गराज की अड़ जमाने में किस प्रकार सहायता की या तथापि यह बात पूर्णतः सिद्ध होती है कि गङ्गवंश की जड़ जमानेवाले जैनाचार्य सिद्धनन्दि ही थे। कहा जाता है कि आचार्य पूज्यपाद देवनन्दि इसी वंश के मानो नरसे दुर्विनीत के राजगुरु थे। गङ्गवंश के अन्य बारह एकाधिक अन्य जैनाचार्यों से सम्बन्ध रखते हैं।

लेख नं० ३८ (६४) में गङ्गनरेश मारसिंह के प्रताप का वर्णन पढ़ते हैं। अनेक भारी भारी युद्धों में विजय पाकर अनेक पुराने किले गिरा कर तथा अनेक जैन मन्दिर और अन्य निर्माण कराकर अन्त में अजितसेन भट्टारक के शरीर की सल्लेखना विधि से बङ्कापुर में उन्होंने शरीर त्याग किया। उन्होंने राष्ट्रकूट नरेश इन्द्र (चतुर्थ) का अभिषेक किया था। अन्त में इस अन्य में इनके स्वर्गवास का समय नहीं दिया गया पर गङ्ग पुरुष मल्ल (ए० क० ७, शिकारपुर ८५) में कहा गया है कि इन्होंने शक सं० ८९६ में शरीर त्याग किया था। मारसिंह राष्ट्रकूट और राष्ट्रकूट नरेश कृष्णराज तृतीय इन

दोनों के बीच घनिष्ठ मित्रता थी। मारसिंह ने अनेक युद्ध कृष्णराज के लिये ही जीते थे। कुडलूर के दानपत्र (मैं आ० रि० १९२१ पृ० २६ सन ९६३) में कहा गया है कि स्वयं कृष्णराज ने मारसिंह का राज्याभिषेक किया था

मारसिंह के उत्तराधिकारी राचमल्ल (चतुर्थ) थे। इन्हीं के मन्त्री चामुण्डराज ने विन्ध्यगिरि पर चामुण्डरायबस्ती निर्माण कराई और गोम्मटेश्वर की यह विशाल मूर्ति उद्घाटित की (नं० ७५–७६ आदि)। लेख नं० १०९ (२८१) यद्यपि अधूरा है तथापि इसमें चामुण्डराय का कुछ परिचय पाया जाता है। इससे विदित होता है कि चामुण्डराय ब्रह्मक्षत्र कुल के थे और उन्होंने अपने स्वामी के लिये अनेक युद्ध जीते थे। इतना ही नहीं चामुण्डराय एक कवि भी थे। उनका लिखा हुआ चामुण्डराय पुराण नाम का एक कन्नड ग्रन्थ भी पाया जाता है। यह अधिकांश गद्य में है। इसमें चौबीस तीर्थंकरों के जीवन का वर्णन है। यह ग्रन्थ उन्होंने शक सं० ९०० में समाप्त किया था। इस ग्रन्थ में भी उनके कुल व गुरु अजितसेन आदि का परिचय पाया जाता है तथा किस प्रकार भिन्न भिन्न युद्ध जीतकर उन्होंने समर धुरन्धर, वीर मार्तण्ड, रणरङ्गसिंग, वैरिकुलकालदण्ड, भुजविक्रम, समर-परशुराम की उपाधियाँ प्राप्त की थीं इसका भी वर्णन इस ग्रन्थ में है। वे अपनी सत्यनिष्ठा के कारण सत्ययुधिष्ठिर कहलाते थे। कई लेखों में उनका उल्लेख केवल 'राय' नाम से

दी किया गया है नं० १३७ (२४५)। लेख नं० ६० (१२१) में उल्लेख है कि चामुण्डराय के पुत्र, व अजितसेन के शिष्य जिनदेवन ने बेल्गोल में एक जैन मन्दिर निर्माण कराया था।

इनके अतिरिक्त अन्य कई लेखों में गङ्गवंश के ऐसे नरेशों का उल्लेख मात्र आया है, जिनका अभी तक अन्य कहीं कोई विशेष परिचय नहीं पाया गया। लेख नं० २५६ (४१५) में जिस शिवमार्ग वसदि का उल्लेख है वह सम्भवतः गङ्गवंश के शिवमार नाम (सम्भवतः शिवमार द्वि० श्रीपुरुष के पुत्र) ने निर्माण कराई थी। लेख नं० ६० (१२८) में किसी गङ्गवंश अपर नाम रक्कसगङ्ग का उल्लेख है जिनके देहावसान के एक वीर योद्धा ने बदेग वीर कोलेयगङ्ग के विरुद्ध युद्ध करते हुए अपने प्राण विसर्जित किये। बदेग राष्ट्रकूटवंशी अकालवर्ष तृतीय का उपनाम भी था। गङ्गवंश मारसिंह नरेश की उपाधि भी था (नं० ३ (५८)। लेख नं० ६१ (१३०) में श्रीकरणगङ्ग अपर नाम पृथ्वीकरणगङ्ग का उल्लेख है। विशेष नहीं कहा जा सकता कि यह भी कोई गङ्गवंशी नरेश का नाम है या नहीं, किन्तु कुछ गङ्गनरेशों की विरुदावली उपाधि था। उदाहरणार्थ, रक्कसगङ्ग के एनक पुत्र का नाम रणविक्रमगङ्ग था (ए० क० ८, नगर १५) व मारसिंह की उपाधि गङ्गचिन्तामणि थी (नं० ३ (५८)। अतएव सम्भव है कि श्रीकरणगङ्ग व पृथ्वीकरणगङ्ग भी कोई गङ्गनरेश रहा हो। ए० क० ८ (१३०) में गङ्गराज व एरेयङ्ग के अहाभट्टी का-

सिंग के एक नाती नागवर्म के सल्लेखना मरण का उल्लेख है। सूडि व कूडलूर के दान-पत्रों (ए० इ० ३, १५८; म० आ० रि० १९२५, पृ० २५) में गङ्गनरेश एरेयप्प और उनके पुत्र नरसिंग का उल्लेख है। सम्भव है कि उपर्युक्त लेख के एरेगङ्ग और नरसिंग ये ही हों।

कुछ लेखों में बिना किसी राजा के नाम के गंगवंश मात्र का उल्लेख है [लेख नं० १६३ (३७); १५१ (४११); २४६ (१६४); ४६८ (३७८)]। लेख नं० ४५ (६८) में उल्लेख है कि जो जैन धर्म हास अवस्था को प्राप्त हो गया था उसे गोपनन्दि ने पुनः गङ्गकाल के समान समृद्धि और ख्याति पर पहुँचाया। लेख नं० ५४ (६७) में उल्लेख है कि श्रीविजय का गङ्गनरेशों ने बहुत सम्मान किया था। लेख नं० १०७ (२४५) में उल्लेख है कि दुष्ट ने जिन कोल्लापुर में अनेक बस्तियाँ निर्माण कराई थीं उसकी नींव गङ्गनरेशों ने ही डाली थी। लेख नं० ५८६ में गङ्ग वंशि का उल्लेख है।

२ राष्ट्रकूटवंश—राष्ट्रकूटवंश का दक्षिण भारत में इतिहास ईसवी सन् की आठवीं शताब्दि के मध्यभाग से प्रारम्भ होता है। इस समय राष्ट्रकूटवंश के दन्तिदुर्ग नामक एक राजा ने चालुक्यनरेश कीर्तिवर्मा द्वितीय को परास्त कर राष्ट्रकूट साम्राज्य की नींव डाली। उसके उत्तराधिकारी कृष्ण प्रथम ने चालुक्य राज्य के प्रायः सारे प्रदेश अपने आधीन कर लिये। कृष्ण के पश्चात् क्रमशः गोविन्द (द्वितीय) और ध्रुव ने राज्य

किया। इनके समय में राष्ट्रकूट राज्य का विस्तार और भी बढ़ गया। आगामी नरेश गोविन्द तृतीय के समय में राष्ट्रकूट राज्य विन्ध्य और मालवा से लगाकर काञ्ची तक फैल गया। इन्होंने अपने भाई इन्द्रराज को लाट (गुजरात) का सूबेदार बनाया। गोविन्द तृतीय के पश्चात् अमोघवर्ष राजा हुए जिन्होंने लगभग सन ८१५ से ८७७ ईस्वी तक राज्य किया। इन्होंने अपनी राजधानी नासिक को छोड़ मान्यखेट में स्थापित की। इनके समय में जैन धर्म की खूब उन्नति हुई। अनेक जैन कवि—जैसे जिनसेन, गुणभद्र, महावीर आदि—इनके समय में हुए। गुणभद्राचार्य ने उत्तर पुराण में कहा है कि राजा अमोघवर्ष जिनसेनाचार्य को प्रणाम करके अपने को धन्य समझता था। अमोघवर्ष स्वयं भी कवि थे। इनकी बनाई हुई 'रत्नमालिका' नामक पुस्तक से ज्ञात होता है कि वे अन्त समय में राज्य को त्यागकर मुनि हो गये थे।

"विवेकात्परिहृतराज्येन राज्ञेयं रत्नमालिका।
रचितामोघवर्षेण सुधियां सदलंकृतिः॥"

अमोघवर्ष के पश्चात् कृष्णराज द्वितीय हुए जिनकी अकालवर्ष, शुभतुङ्ग, श्रीपृथ्वीवल्लभ, वल्लभराज, महाराजाधिराज, परमेश्वर परमभट्टारक उपाधियां पाई जाती हैं। इनके पश्चात् इन्द्र (तृतीय) हुए जिन्होंने कन्नौज पर चढ़ाई कर वहां के राजा महीपाल को कुछ समय के लिये सिंहासनच्युत कर दिया। इनकी दिग्विजयों में कृष्णराज तृतीय सबसे प्रधानी हुए

जिन्होंने राजादित्य चोल के ऊपर सन् ९४९ में बड़ी भारी विजय प्राप्त की। इस समय के युद्धों का मूल कारण धार्मिक था। राष्ट्रकूटनरेश जैनधर्मोपासक और चोलनरेश शैव धर्मोपासक थे। इनके समय में सोमदेव, पुष्पदन्त, इन्द्रनन्दि आदि अनेक जैनाचार्य हुए हैं। कृष्णराज के उत्तराधिकारी खोट्टिगदेव और उनके पीछे कर्कराज द्वितीय हुए। इनके समय में चालुक्यवंश पुनः जागृत हो उठा। इस वंश के तैल व तैलप ने कर्कराज को सन् ९७३ में बुरी तरह परास्त कर दिया जिससे राष्ट्रकूट वंश का प्रताप सदैव के लिये अस्त हो गया। जैसा कि आगे विदित होगा, लेख नं० ५७ (शक सं० ९०४) में कृष्णराज तृतीय के पौत्र एक इन्द्रराज (चतुर्थ) का भी उल्लेख है व लेख नं० ३८ में कहा गया है कि गङ्गनरेश मारसिंह ने इन्द्र का अभिषेक किया था। सम्भवतः राष्ट्रकूटवंश के द्वितीयी गङ्गनरेश ने राष्ट्रकूट राज्य को रक्षित रखने के लिये यह प्रयत्न किया पर इतिहास में इसका कोई फल देखने में नहीं आता। दक्षिण का राष्ट्रकूटवंश इतिहास के स्टेज से उड़ गया।

अब इस संग्रह के लेखों में इस वंश के जो उल्लेख हैं उनका परिचय कराया जाता है।

इस वंश के यदेग व अमोघवर्ष तृतीय ने कोंगेय्य वंग के साथ गङ्गवज्र व रक्तमणि के विरुद्ध युद्ध किया था, ऐसा लेख नं० ६० (१३८) (अनु० शक ८६२) के उल्लेख से

ज्ञात होता है। लेख नं० १०६ (२८१) (अनु० शक ८५०) से ज्ञात होता है कि राष्ट्रकूटनरेश इन्द्र की आज्ञा से चामुण्डराय के स्वामी जगदेकवीर राचमल्ल ने बज्जलदेव को पराजित किया था। लेख नं० ३८ (५६) (शक ८९६) से विदित होता है कि राष्ट्रकूटनरेश कृष्ण तृतीय के लिये गङ्गनरेश मारसिंह ने गुर्जर प्रदेश को जीता था व राष्ट्रकूट नरेश इन्द्र (चतुर्थ) का राज्याभिषेक किया था। इन उल्लेखों से स्पष्ट ज्ञात होता है कि गङ्गवंश और राष्ट्रकूटवंश के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध था। इस वंश का सबसे प्राचीन लेख, जो इस संग्रह में आया है, लेख नं० २५ (३५) (अनु० शक ७ ?) है। इस लेख में ध्रुव के पुत्र व गोविन्द (तृतीय) के ज्येष्ठ भ्राता स्तम्भनरेश कम्भरस का उल्लेख है। एक लेख (ए० क० ४, हुंगुडहैर० संख्या ५१) से ज्ञात होता है कि जब गङ्गराज शिवमार द्वितीय को ध्रुव ने कैद कर लिया था तब राजकुमार कम्भ गङ्गप्रदेश के शासक नियुक्त किये गये थे व ए० क० ४, नेलमङ्गल ६१ से ज्ञात होता है कि कम्भ शक सं० ७२४ (ई० सन् ८०२) में गङ्गप्रदेश का शासन कर रहे थे। इसी से चामराज नगर से कुछ ताम्रपत्र मिले हैं (मै० आ० रि १९२० पृ० २१) जिनसे ज्ञात होता है कि जिस समय कम्भ का शिविर सकलात नगर (सगलाक्ष) में था तब उन्होंने अपने पुत्र राजकुमार की प्रार्थना से शक सं० ७२६ (सन् ८०० ई०) में एक ग्राम का दान जैनाचार्य कनकसेन को दिया था। अन्य प्रमाणों से ज्ञात

हुआ है कि ध्रुव नरेश ने अपना उत्तराधिकारी अपने कनिष्ठ पुत्र गोविन्द (तृतीय) को बनाया था व कम्ब को गङ्गप्रदेश दिया था। इस हेतु कम्ब ने गोविन्द के विरुद्ध तैयारी की पर अन्त में उन्हें गोविन्द का आधिपत्य स्वीकार करना पड़ा।

लेख नं० ५७ (१३३) में इन्द्र चतुर्थ की किसी गौड़ के संग्राम में चतुराई आदि का वर्णन है व उल्लेख है कि उन्होंने शक सं० ८०४ में श्रवणबेलगुल में सल्लेखना मरण किया। लेख में यह भी कहा गया है कि इन्द्र कृष्ण (तृतीय) के पौत्र, गङ्गगांगेय (भूतुग) के कन्यापुत्र व राजचूड़ामणि के दामाद थे। यह विदित नहीं हुआ कि ये राजचूड़ामणि कौन थे। इन्द्र की रट्टकन्दर्प, राजमार्तण्ड, चलट्टराव, चलदगल्लि, कीर्तिनारायण, एलेबेडेंग, गंडेगल्लाभरण, कलिगलोलाण्ड और वीरर वीर ये उपाधियाँ थीं। जैसा ऊपर कहा जा चुका है, गङ्गनरेश मारसिंह ने इन्द्र का राज्याभिषेक किया था। लेख नं० ५८ (१३४) 'मावणगन्धहस्ति' उपाधिधारी एक वीर योधा पिट्ट की मृत्यु का स्मारक है। लेख में इस वीर के पराक्रम-वर्णन के पश्चात् कहा गया है कि उसे राजचूड़ामणि मार्गेंड-भट्ट ने अपना सेनापति बनाया था। लेख की लिपि और राजचूड़ामणि व चित्रभानु संवत्सर के उल्लेख से अनुमान होता है कि यह भी इन्द्र चतुर्थ के समय का है।

प्रसङ्गवश लेख नं० ५४ (६०) में साहसतुङ्ग और कृष्ण-राज का उल्लेख है। अकलङ्कदेव ने अपनी विद्वत्ता का वर्णन

है जिसका उल्लेख ए० क० ३, मैसूर ३७ के लेख में पाया जाता है। इस लेख में वे 'समधिगतपञ्चमहाशब्द" महासामन्त कहे गये हैं। जहाँ से यह लेख मिला है उसी वरुव नामक ग्राम में अन्य भी अनेक वीरगल हैं जिनमें गोविंग के अनुजीवी योद्धाओं के रण में मारे जाने के उल्लेख हैं (मैं० आ० रि० १९१६ पृ० ४६-४७)। लेख नं० ४५ (१२५) और ५९ (७३) में उल्लेख है कि होय्सलनरेश विष्णुवर्धन के सेनापति गङ्गराज ने चालुक्य सम्राट् त्रिभुवनमल्ल पेर्माडि-देव (विक्रमादित्य षष्ठ (१०७६-११२६ ई०) को भारी पराजय दी। इन लेखों में गङ्गराज का कल्लेगाल में चालुक्य सेना पर रात्रि में धावा मारने व उसे हराकर उसकी रसद व वाहन आदि सब स्वाधीन कर अपने स्वामी को देने का जोरदार वर्णन है। नं० १४४ (३८४) होय्सलवंश का लेख है पर उसके आदि में चालुक्याभरण त्रिभुवनमल्ल की राज्यवृद्धि का उल्लेख है जिससे होय्सल राज्य के ऊपर त्रिभुवनमल्ल के आधिपत्य का पता चलता है। लेख नं० ५५ (६९) में मलधारि गुणचन्द्र "मुनीन्द्र बलिपुरे मल्लिकामोद शान्तीशचरणार्चकः" कहे गये हैं (पद्य नं० २०)। अन्य अनेक लेखों (ए० क० ७, शिकारपुर २० अ. १२५, १२६, १५३; ए० इ० १२, १४४) से ज्ञात हुआ है कि मल्लिकामोद चालुक्यनरेश जयसिंह प्रथम की उपाधि थी। इससे अनुमान किया जा सकता है कि सम्भवतः बलिपुर में शान्तिनाथ की प्रतिष्ठा

जयसिंह नरेश ने ही कराई थी। इसी लेख में यह भी उल्लेख है कि वासवचन्द्र ने अपने वाद-पराक्रम से चालुक्य राजधानी में बालसरस्वती की उपाधि प्राप्त की थी। लेख नं० ५४ (६७) में उल्लेख है कि वादिराज ने चालुक्य राजधानी में भारी ख्याति प्राप्त की थी तथा जयसिंह (प्रथम) ने उनकी सेवा की थी (पद्य ४१, ४२) इसी लेख में यह भी उल्लेख है कि जिन जैनाचार्य को पोय्सलनरेश ने स्वामी की उपाधि दी या उन्हें ही आहवमल्ल (चालुक्यनरेश १०४२-१०६८ ई०) ने शब्दचतुर्मुख की उपाधि प्रदान की थी। लेख नं० १२० (३२७) व १३७ (३४५) में होय्सल नरेश एरेयङ्ग चालुक्य नरेश की दक्षिण बाहु कहे गये हैं (पद्य नं० ८)।

४ होय्सलवंश—पश्चिमी घाट की पहाड़ियों में कादुर जिले के मुडेगरे तालुका में 'अंगडि' नाम का एक स्थान है। यही स्थान होय्सल नरेशों का उद्गमस्थान है। इसी का प्राचीन नाम शशकपुर है जहां पर अब भी वासन्तिका देवी का मन्दिर विद्यमान है। यहीं पर 'सल' नामक एक सामन्त ने एक व्याघ्र से जैनमुनि की रक्षा करने के कारण पोय्सल नाम प्राप्त किया। इस वंश के भावी नरेशों ने अपने को 'मलपरोल्-गण्ड' अर्थात् 'मलपार्यों' (पहाड़ सामन्तों) में मुख्य कहा है। इसी से सिद्ध होता है कि प्रारम्भ में होय्सलवंश पहाड़ी था। इस वंश के एक 'काम' नाम के नृप के कुछ शिलालेख मिले हैं जिनमें उसके कुर्ग के कोङ्गालव नरेशों से

युद्ध करने के समाचार पाये जाते हैं। होय्सलनरेश इस समय चालुक्यनरेश के माण्डलिक राजा थे। जिस समय ईसा की ११ वीं शताब्दि के प्रारम्भ में चोलनरेशों द्वारा गङ्ग-वंश का अन्त हो गया उस समय होय्सल माण्डलिकों को अपना प्राबल्य बढ़ाने का अवसर मिला। 'काम' के उत्तराधिकारी 'विनयादित्य' ने चोलों से लड़-भिड़कर अपना प्रभुत्व बढ़ाया यहाँ तक कि चालुक्यनरेश सोमेश्वर आहवमल्ल के महामण्डलेश्वरों में विनयादित्य का नाम गङ्गवाडि ९६००० के साथ लिया जाने लगा। विनयादित्य के उत्तराधिकारी बल्लाल ने अपनी राजधानी शशपुरी से 'बेलूर' में हटा ली। द्वारा-समुद्र में भी उनकी राजधानी रहने लगी। इन्होंने चङ्गाल्व-नरेशों से युद्ध किया था। इनके उत्तराधिकारी विष्णुवर्द्धन के समय में होय्सल नरेशों का प्रभाव बहुत ही बढ़ गया। गङ्गवाडि का पुराना राज्य सब उनके आधीन हो गया और विष्णुवर्द्धन ने कई अन्य प्रदेश भी जीते। प्रारम्भ में विष्णु-वर्द्धन जैन धर्मावलम्बी थे पर पीछे वैष्णव हो गये थे। तथापि जैन धर्म में उनकी सहानुभूति बनी ही रही। विष्णुवर्द्धन ने लगभग सन् ११०६ से ११४१ तक राज्य किया और फिर उनके पुत्र नरसिंह ने सन् ११७३ तक। नरसिंह ने अपने पिता के समान ही होय्सल राज्य की वृद्धि की। उनके पुत्र वीर बल्लाल के समय में यह राज्य चालुक्य साम्राज्य के अन्तर्गत नहीं रहा और स्वतंत्र हो गया। वीर बल्लाल ने सन् १२२०

तक राज्य किया। इसके पश्चात् वीर बल्लाल के उत्तराधिकारियों ने होय्सल राज्य को नवें वर्ष तक और कायम रक्खा। सन् १३१० ईस्वी में दक्षिण पर मुसलमानों की चढ़ाई हुई। दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी के सेनापति मलिक काफूर ने होय्सल राज्य को नष्ट-भ्रष्ट कर डाला, होय्सलनरेश को पकड़कर कैद कर लिया और राजधानी द्वारासमुद्र का भी नाश कर डाला। द्वारासमुद्र का पूर्णतः सत्यानाश मुसलमानी फौजों ने सन् १३२६-२७ में किया।

अब इस वंश के सम्बन्ध के जो उल्लेख संगृहीत लेखों में आये हैं उनका परिचय दिया जाता है।

इस संग्रह में होय्सलवंश के सबसे अधिक लेख हैं। लेख नं० ५३ (१४३), ५६ (१३२), १४४ (१४८) व ४९३ में विनयादित्य से लगाकर विष्णुवर्धन तक, लेख नं १३७ (३४५) और १३८ (३४९) में विनयादित्य से नरसिंह (प्रथम) तक व १२४ (३२७), १३० (३३५) और ४९१ में विनयादित्य से बल्लाल (द्वितीय) तक की वंशपरम्परा पाई जाती है। नं० ५६ (१३२) में इस वंश की उत्पत्ति का इस प्रकार वर्णन पाया जाता है—"विष्णु के कमलनाल से उत्पन्न ब्रह्मा के अत्रि, अत्रि के चन्द्र, चन्द्र के बुध, बुध के पुरूरव, पुरूरव के आयु, आयु के नहुष, नहुष के ययाति व ययाति के यदु नामक पुत्र उत्पन्न हुए। यदु के वंश में अनेक नृपति हुए। इस वंश के प्रख्यात नरेशों में एक सल नामक नृपति हुए। एक

समय एक मुनिवर ने एक कराल व्याघ्र को देखकर कहा 'पोय्सल' 'हे सल, इसे मारो'। इस वृत्तान्त पर से राजा ने अपना नाम पोय्सल रक्खा और व्याघ्र का चिह्न धारण किया। इसके आगे द्वारावती के नरेश पोय्सल कहलाये और व्याघ्र उनका लाञ्छन पड़ गया। इन्हीं नरेशों में विनयादित्य हुए"। अन्य शिलालेखों (ए० क० ५, अर्सिकेरे १४१, १५७) से ज्ञात होता है कि विनयादित्य के पिता नृप काम होय्सल थे। अनेक लेखों (ए० क० ५, मल्लराबाद ४३; अक्कलगुद ७६; ए० क० ६, मूडुगेरे १९) से सिद्ध है कि नृप काम ने भी उसी प्रदेश पर राज्य किया था। लेख नं० ४४ (११८) में भी नृप काम का एचि के रक्षक के रूप में उल्लेख है (पद्य ५) अतएव यह कुछ समझ में नहीं आता कि उपर्युक्त वंशावली में उनका नाम क्यों नहीं सम्मिलित किया गया। विनयादित्य के विषय में लेख नं० ५४ (६७) में कहा गया है कि उन्होंने शान्तिदेव मुनि की चरणसेवा से राज्यलक्ष्मी प्राप्त की थी (पद्य नं० ५१), तथा लेख नं० ५३ (१४३) में कहा गया है कि उन्होंने कितने ही तालाब व कितने ही जैनमन्दिर आदि निर्माण कराये थे यहां तक कि ईंटों के लिए जो भूमि खोदी गई वहां तालाब बन गये, जिन पर्वतों से पत्थर निकाला गया वे चूर्ण के समतल हो गये, जिन खानों से चूने की गाड़ियां निकलीं वे खाने गहरी घाटियां हो गये। पोय्सलनरेश जैनमंदिर निर्माण कराने में बड़े दत्तचित्त थे। (पद्य नं० ४—५)।

विनयादित्य के केलेयबरसि रानी से एरेयङ्ग पुत्र हुए जो लेख नं० १२४ (३२७) व १३७ (३४५) में चालुक्यनरेश की दक्षिण बाहु कहे गये हैं। लेख नं १३८ (३४६) के कई पद्यों में इस नरेश के प्रताप का वर्णन पाया जाता है। वे वहाँ 'क्षत्रकुलप्रदीप' व 'क्षत्रमौलिमणि' 'साक्षात्समर-कृतान्त' व मालवमण्डलेश्वर पुरी धारा के जलानेवाले, कराल चोलकटक को भगानेवाले, चक्रगोट्ट के हरानेवाले, व कलिङ्ग का विध्वंस करनेवाले कहे गये हैं।

लेख नं० ४६२ (शक १०१५) विनयादित्य के पुत्र एरेयङ्ग के समय का है। इस लेख में एरेयङ्ग और उनके गुरु गोपनन्दि की कीर्त्ति के पश्चात् नरेश द्वारा चन्द्रगिरि की वस्तियों के जीर्णोद्धार के हेतु गोपनन्दि को कुछ ग्रामों का दान दिये जाने का उल्लेख है। एरेयङ्ग गङ्गमण्डल पर राज्य करते थे, लेख में इसका भी उल्लेख है। एरेयङ्ग की रानी एचलदेवी से बल्लाल, विष्णुवर्धन और उदयादित्य ये तीन पुत्र उत्पन्न हुए।

विष्णुवर्धन की उपाधियों व प्रतापादि का वर्णन लेख नं० ५३ (१४३), ५६ (१३२), १२४ (३२७), १३७ (३४५), १३८ (३४६), १४४ (३८४) और ४६३ में पाया जाता है। वे महामण्डलेश्वर, समधिगतपञ्चमहाशब्द, त्रिभुवनमल्ल, द्वारावतीपुरवराधीश्वर, यादवकुलाम्बरद्युमणि, सम्यक्त्वचूड़ामणि, मलपरोल्गण्ड, तलकाडु-कोङ्ग-नङ्गलि-कोय्तूर-उच्चङ्गि-नोलम्बवाडि-हानुगल-गोण्ड, भुजबल वीरगङ्ग आदि प्रताप-

सूचक पदवियों से विभूषित किये गये हैं। उन्होंने इतने दुर्जेय दुर्ग जीते, इतने नरेशों को पराजित किया व इतने आश्रितों को उच्च पदों पर नियुक्त किया कि जिससे ब्रह्मा भी चकित हो जाता है। लेखों में उनकी विजयों का सुंदर वर्णन है। लेख नं० २२९ (१३७) जो शक सं० १०३९ का है विष्णुवर्द्धन के राज्यकाल का ही है। इस लेख में पोन्नमसेट्टि और नेमिसेट्टि नाम के दो राजव्यापारियों का उल्लेख है। इन व्यापारियों की माताओं माचिकब्बे और शान्तिकब्बे ने जिनमन्दिर और नन्दीश्वर निर्माण कराकर भानुकीर्ति मुनि से जिनदीक्षा ले ली। यह मन्दिर चन्द्रगिरि पर तेरिन बस्ति के नाम से प्रसिद्ध है। लेख नं० ४४५ (३६६) अपूरा है पर इसमें विष्णुवर्द्धन का उल्लेख है। नं० ४७८ (३८८) से ज्ञात होता है कि इस नृपति के हिरियदण्डनायक, स्वामिद्रोहघरट्ट गङ्गराज ने वेल्गुल में जिननाथपुर निर्माण कराया। यह लेख बहुत घिस गया है। विदित होता है कि गङ्गराज ने अन्य नरेश की अनुमति से कुछ दान भी मन्दिर को दिया था। लेख में कंभलग का उल्लेख है। 'कंभलग' एक माप विशेष था। लेख नं० ४८३ (शक १०४०) में विष्णुवर्द्धन के बलियों के जीर्णोद्धार व अर्चियों को आहारदान के हेतु शल्य ग्राम के दान का उल्लेख है। यह दान मन्त्रि बोप, प्रभृति गण, महाजनस्वामि के आचार्य प्रभाचन्द्रदेव को दिया गया। लेख में दान-शासन की प्रशस्ति भी है। लेख नं० ४८० में आयुक्त

त्रिभुवनमल्ल के साथ-साथ विष्णुवर्द्धन का उल्लेख है जिससे सिद्ध होता है कि विष्णुवर्द्धन चालुक्यों के आधिपत्य को स्वीकार करते थे। इस लेख में नयकीर्ति के स्वर्गवास का भी उल्लेख है। लेख नं० ४५ (१२५), ५८ (७३), ६० (२४०), १४४ (३८४) ३६० (२५१) तथा ४८६ (३६७) विष्णुवर्द्धन नरेश ही के समय के हैं। इन लेखों में गङ्गराज की वंशावली तथा उनके प्रतापमय व धार्मिक कार्यों का वर्णन पाया जाता है। गङ्गराज का वंशवृक्ष इस प्रकार है—

कौण्डिन्यगोत्रीय नागवर्मा

मार—माकव्वे

एच (अपर नाम बुधमित्र—नृपकाम होय-सल के आश्रित)—पोचिकब्बे

बम्मचमूप

गङ्गराज

(देखो लेख नं० १४४, पृ० २६६)

लेख नं० ४४ (११८) में गङ्गराज की ये उपाधियां पाई जाती हैं—समधिगतपञ्चमहाशब्द, महासामन्ताधिपति, महा-प्रचण्डदण्डनायक, वैरिभयदायक, गोत्रपवित्र, बुधजनमित्र, श्रीजैनधर्मामृताम्बुधिपवर्द्धनसुधाकर, सम्यक्त्वरत्नाकर, आहार-

भयभैषज्यशास्त्रदानविनोद, भव्यजनहृदयप्रमोद, विष्णुवर्द्धन-भूपालहोय्सलमहाराजराज्याभिषेकपूर्णकुम्भ, धर्महर्म्योद्धरण-मूलस्तम्भ और द्रोहघरट्ट। इसी लेख में यह भी कहा गया है कि गङ्गराज के पिता मुल्लूर के कनकनन्दि आचार्य के शिष्य थे। चालुक्यवंशवर्णन में कहा जा चुका है कि इन्होंने कन्नेगाल में चालुक्य-सेना को पराजित किया था। उनके तलकाडु, कोङ्गु, चेङ्गिरि आदि स्वाधीन करने, नरसिंग को यमलोक भेजने, अदियम, तिमिल, दाम, दामोदरादि शत्रुओं को पराजित करने का वर्णन लेख नं० ८० (२४०) के ९, १० व ११ पद्यों में पाया जाता है। जिस प्रकार इन्द्र का वज्र, बलराम का हल, विष्णु का चक्र, शक्तिधर की शक्ति व अर्जुन का गाण्डीव उसी प्रकार विष्णुवर्द्धन नरेश के गङ्गराज सहायक थे। गङ्गराज जैसे पराक्रमी थे वैसे ही धर्मिष्ठ भी थे। उन्होंने गोम्मटेश्वर का परकोटा बनवाया, गङ्गवाडि परगने के समस्त जिनमन्दिरों का जीर्णोद्धार कराया, तथा अनेक स्थानों पर नवीन जिनमन्दिर निर्माण कराये। प्राचीन कुन्दकुन्दान्वय के वे उद्धारक थे। इन्हीं कारणों से वे चामुण्डराय से भी सौगुणे अधिक धन्य कहे गये हैं। धर्म बल से गङ्गराज में अलौकिक शक्ति थी। लेख नं० ५८ (७३) के पद्य १४ में कहा गया है कि जिस प्रकार जिनधर्मामणी अजितयश्वरसि के प्रभाव से गोदावरी नदी का प्रवाह रुक गया था उसी प्रकार कावेरी के पूर से घिर आने पर भी, जिनभक्ति के

कारण गङ्गराज की लेशमात्र भी हानि नहीं हुई। जब वे कण्णेगल में चालुक्यों को पराजित कर लौटे तब विष्णुवर्द्धन ने प्रसन्न होकर उनसे कोई वरदान माँगने को कहा। उन्होंने परम नामक ग्राम माँगकर उसे अपनी माता तथा भार्या द्वारा निर्माण कराये हुए जिनमन्दिरों के हेतु दान कर दिया। इसी प्रकार उन्होंने गोविन्दवाडि ग्राम प्राप्त कर गोम्मटेश्वर को अर्पण किया। गङ्गराज शुभचन्द्र सिद्धान्तदेव के शिष्य थे। लेख नं० ५९ (७३) से विदित होता है कि दण्डनायक एचिराज ने इस परम ग्राम के दान का समर्थन किया था।

गङ्गराज से सम्बन्ध रखनेवाले और भी अनेक शिलालेख हैं, यद्यपि उनमें गङ्गराज के समय के नरेश का नाम नहीं आया। लेख नं० ४६ (१२६) गङ्गराज की भार्या लक्ष्मी ने अपने भ्राता भूषण की मृत्यु के स्मरणार्थ लिखवाया था। भूषण शुभचन्द्र सिद्धान्तदेव के शिष्य थे। लेख नं० ४७ (१२७) जैनाचार्य मंगलचन्द्र त्रैविद्यदेव की मृत्यु का स्मारक है और इसे गङ्गराज और उनकी भार्या लक्ष्मी ने लिखवाया था। लेख नं० ४९ (१२९) लक्ष्मीमतिजी ने अपनी भगिनी देमति के स्मरणार्थ लिखवाया था। लेख नं० ६२ (१३०) से ज्ञात होता है कि शुभचन्द्रदेव की शिष्या लक्ष्मी ने एक जिन मन्दिर निर्माण कराया जो अब 'एरडुकट्टे बसदि' के नाम से प्रख्यात है। लेख नं० ६४ (७०) में कहा गया है कि गङ्गराज ने अपनी माता पोचब्बे के हेतु कत्तले बसदि निर्माण कराई। लेख नं०

६५ (७४) में गङ्गराज के इन्द्रकुल गृह (शासन वस्ति) बनवाने का उल्लेख है। लेख नं० ७५ (१८०) और ७६ (१७७) में गङ्गराज द्वारा गोम्मटेश्वर का परकोटा बनवाये जाने का उल्लेख है। लेख नं० ४३ (११७), ४४ (११८), ४८ और (१२८) गङ्गराज द्वारा निर्माण कराये हुए क्रमशः उनके गुरु शुभचन्द्र, उनकी माता पोचिकब्बे और भार्या लक्ष्मी के स्मारक हैं। लेख नं० १४४ (३८४) में गङ्गराज के वंश का बहुत कुछ परिचय मिलता है व लेख नं० ४४६ (३६७), ४४७ (३६८) और ४८६ (४००) में गङ्गराज के ज्येष्ठ भ्राता बम्मदेव की भार्या जक्कणब्बे के सत्कार्यों का उल्लेख है। ये सब लेख विष्णुवर्द्धन नरेश के समय के व उस समय से सम्बन्ध रखनेवाले हैं इसी लिये इनका यहाँ उल्लेख करना आवश्यक हुआ।

विष्णुवर्द्धन के समय के अन्य लेख इस प्रकार हैं। लेख नं० १४३ (३७०) में राजा के नाम के साथ ही गङ्गराज के नामोल्लेख के पश्चात् कहा गया है कि बलदङ्गराय हेडेगीय और अन्य सज्जनों ने कुछ दान किया। जान पड़ता है यह दान गोम्मटेश्वर के दायीं ओर की एक कंदरा को भरकर समतल करने के लिये दिया गया था। लेख नं० ५६ (१३२) में विष्णुवर्द्धन की रानी शान्तलदेवी द्वारा 'सवति गन्धवारण वस्ति' के निर्माण कराये जाने का उल्लेख है। इस लेख में मेघचन्द्र के शिष्य प्रभाचन्द्र की स्तुति, होयसल वंश की उत्पत्ति

व विष्णुवर्द्धन तक की वंशावलि, विष्णुवर्द्धन की उपाधियों व शान्तलदेवी की प्रशंसा व उनके वंश का परिचय पाया जाता है। शान्तलदेवी की उपाधियों में 'उद्वृत्तमवतिगन्धवारण' अर्थात् 'बरछू घाव मौतों के लिये मत्त हाथी' भी पाया जाता है। शान्तलदेवी की इसी उपाधि पर से बलि का उक्त नाम पड़ा। लेख नं० ६२ (१०१) में भी इस मन्दिर के निर्माण का उल्लेख है। इस लेख में यह भी कहा गया है कि उक्त मन्दिर में शान्तिनाथ की मूर्ति स्थापित की गई थी। लेख नं० ५३ (१४३) (शक १०५०) में शान्तलदेवी की मृत्यु का उल्लेख है जो 'शिवगङ्ग' में हुई। यह स्थान अब बङ्गलोर से कोई तीस मील की दूरी पर शैवों का तीर्थस्थान है। लेख में शान्तलदेवी के वंश का भी परिचय है। उनके पिता पेर्म्माडि मारसिङ्गय्य गंग थे पर माता माचिकब्बे जिन भक्त थीं। लेख नं० ५१ (१४१) और ५२ (१४२) (शक १०४१) में शान्तलदेवी के मामा के पुत्र बलदेव और उनके मामा सिङ्गिमय्य की मृत्यु का उल्लेख है। बलदेव ने सोरिङ्गेरे में समाधिमरण किया तब उनकी माता और भगिनी ने उनकी स्मारक एक पट्टशाला (वाचनालय) स्थापित की। सिङ्गिमय्य के समाधिमरण पर उनकी भार्या और भावज ने स्मारक लिखवाया। लेख नं० ३६८ (२६५) और ३६९ (२६६) में दण्डनायक भरतेश्वर द्वारा दो मूर्त्तियों के स्थापित कराये जाने का उल्लेख है। भरतेश्वर गण्डविमुक्त सिद्धान्तदेव के

शिल्प में और अन्य शिलालेखों (नागमङ्गल ३२ ए० क० ५, चिकमगलूर १६० ए० क० ६) से सिद्ध है कि वे और उनके बड़े भाई मरियाने विष्णुवर्द्धन नरेश के सेनापति थे। लेख नं० ४० (६४) (शक १०८१) में भी भरत के गङ्गचिमुण्ड-देव के शिल्प होने का उल्लेख है। लेख नं० ११५ (२६०) से विदित होता है कि भरतेश्वर ने जिन दो मूर्तियों की स्थापना कराई थी वे भरत और बाहुबली स्वामी की मूर्तियाँ थीं। इस लेख में भरतेश्वर के अन्य धार्मिक कृत्यों का भी उल्लेख है। उन्होंने उक्त दोनों मूर्तियों के आसपास कटघर (हत्थसिले) बनवाया, गोम्मटेश्वर के आसपास बड़ा गर्भगृह बनवाया, मूर्तियाँ बनवाईं तथा गङ्गवाडि में दो पुरानी बस्तियों का उद्धार कराया और नयी नयी बस्तियाँ निर्माण कराईं। यह लेख भरत की पुत्री शान्तलदेवी ने लिखवाया था। लेख नं० ६८ (१५४) और ३५१ (२२१) भी इसी नाम के सरदार के लिखे होने से यही जान पड़ता है कि उक्त पुत्री का उल्लेख है।

विष्णुवर्द्धन और भरतीदेवी के पुत्र नारसिंह प्रथम हुए जिनकी पत्नी एचलदेवी आदि का उल्लेख लेख नं० १३० (३४५) और १३८ (३४८) में है। लेख नं० १३८ (३४८) में उल्लेख है कि उक्त माता के अनुरोध और सलाह से नारसिंह ने चट्टलदेवी जिनालय निर्माण कराया। यह मन्दिर भण्डारि बसि के नाम से प्रसिद्ध है। लेख में जिनवाहिनी से लेकर नारसिंह प्रथम तक के वर्णन और कुछ के बनवाये गये

के पश्चात् कहा गया है कि एक बार अपनी दिग्विजय के समय सोसेवोलल में आये, सोमनाथेश्वर की वन्दना की और पुत्र के बनवाये हुए चतुर्विंशति जिनालय के दर्शन कर उन्होंने इस मन्दिर का नाम 'भव्यचूडामणि' रक्खा क्योंकि पुत्र की उपाधि 'भव्यचूडामणि' थी। फिर उन्होंने मन्दिर के पूजन, दान तथा जीर्णोद्धार के हेतु 'सबरेंद' नामक ग्राम का दान किया। लेख में यह भी उल्लेख है कि पुत्र ने नरेश की अनुमति से सोमनपुर के तथा व्यापारी वस्तुओं पर के कुल्ल कर (टैक्स) का दान मन्दिर को कर दिया। पुत्र वाजि वंश के अधिराज (एचराज) और लोकाम्बिका के पुत्र, लक्ष्मण और अन्न के छोटे भाई तथा मलधारि स्वामी के शिष्य थे। उपरोक्त ग्राम का दान उन्होंने भानुकीर्ति को दिया था। ये राज्यप्रबन्ध में 'दोरुन्धरावत्त' से भी अधिक कुशल और राजनीति में बृहस्पति से भी अधिक प्रवीण थे। लेख सं. २६० (३४५) में भी सारसिद्ध के सोमनाथ की वन्दना करने का उल्लेख है और इस लेख से यह भी ज्ञात होता है कि पुत्र (वल्लभवर्धन) के समय में भी राजदरबार में ये तथा अन्य (लेख सं. २८० (३४०) व ३८१) से विदित होता है कि ये आचार्य नरेश बल्लाल द्वितीय के समय में भी विद्यमान थे क्योंकि उन्होंने उस नरेश से एक दान ग्राम किया था। इस लेख में पुत्र की कीर्ति और धर्मोपकारपरता का सुन्दर वर्णन है। ये भानुकीर्ति और गङ्गराज की बहिन से ही उत्पन्न किये गये हैं। उन्होंने

के लिये देखो लेख नं० ११२५)। उनके गुरु नरकीर्ति और कनकनन्दि के लेख में कहा गया है कि चन्द्रगिरि की घाटी पर कन्नडदेश के आचणदेवी द्वारा निर्मापित मंदिर के हेतु सम्पूर्ण इतिहास का वर्णन किया गया था और भी इसी का उल्लेख है। इस दान का उल्लेख दूसरे लेख के लेख नं० ४५५ (शक ११०५) तथा लेख नं० १०० (४६) और ४१६ (३३१) में भी है। लेख नं० ११० (११५) में गिरिपत्ति से आकर होयसल नरेश के शिवगण के पश्चात् गङ्गराजसेनापति नरकीर्ति की कीर्ति का वर्णन है और फिर नाम के 'बहुकलाधी' नागदेव का परिचय है। इसी लेख में ११०)। नागदेव के आगे गुरु नरकीर्ति की परम्परा बताने का प्रयत्न लेख नं० ४२ (६६) में भी है। नागदेव के पुत्र मैं० मल्लप्पा और कुछ दामादों का उल्लेख लेख नं० १०० (३३६) और ४६० (५००) में पाया जाता है। लेख नं० ५०१ (३८०) में मल्लिषेणभट्टारक सन्तान के [illegible] में मल्लिनाथ की जीवात्मा कराने के सुखकर वैद्यिग के [illegible] का वर्णन मंदिर के आचारी निर्मूल करने के [illegible] है। यद्यपि इस लेख में किसी मन्दिर का उल्लेख नहीं है पर [illegible] से ज्ञात होता है कि मल्लिषेण [illegible] के [illegible] थे। [illegible] के पास आने में [illegible] [illegible] के सम्बन्ध में [illegible] मैं० आर० नि० [illegible] नं० [illegible], अगस्त [illegible], पृ० [illegible],

शिकारपुर १९७) लेख नं० ४९५ में बल्लालदेव के समय में अपने गुरु श्रीपाल योगीन्द्र के स्वर्गवास होने पर वादिराजदेव के परवादिमल्ल जिनालय निर्माण कराने व भूमिदान देने का उल्लेख है।

इस राज्य का अन्तिम लेख नं० १२८ (३३३) (शक ११२८) का है जिसमें वीर बल्लालदेव के कुमार सोमेश्वरदेव और उनके मन्त्री रामदेव नायक का उल्लेख है। इतिहास में कहीं अन्यत्र बल्लालदेव के सोमेश्वर नामक पुत्र का कोई उल्लेख नहीं पाया जाता। कुछ विद्वानों का अनुमान है कि सम्भवतः नरेश का कोई प्रतिनिधि ही यहाँ विनय से अपने को नरेश का पुत्र कहता है। (लेख के सारांश के लिये देखो नं० १२८)।

बल्लाल द्वितीय के पुत्र नरसिंह द्वितीय के समय का एक ही लेख इस संग्रह में आया है। लेख नं० ८१ (१२६) में कहा गया है कि पृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर नरसिंह के राज्य में पद्मसेट्टि के पुत्र व शास्त्रार्थ सारचन्द्र के शिष्य सोमसेट्टि ने सोमेश्वर की पूजा के लिये कुछ भूमि का दान दिया।

नरसिंह द्वितीय के उत्तराधिकारी सोमेश्वर के समय का लेख नं० ४९९ (शक ११७०) है। इसमें सोमेश्वर की विजय व कीर्ति का परिचय उनकी उपाधियों में पाया जाता है। लेख में कहा गया है कि सोमेश्वर के सेनापति 'शान्त' ने

शान्तिनाथ मन्दिर का जीर्णोद्धार कराया। लेख में मन्दिर आचार्यों की परम्परा भी दी है।

लेख नं० ८६ (२४६) (शक ११८६) में वीर नारसिंह तृतीय (सोमेश्वर के पुत्र व नारसिंह द्वितीय के पौत्र) का उल्लेख है। लेख नं० १२८ (३३४) (शक ११०४) भी लगभग इसी राजा के समय का है। इस लेख में होयसल वंश की स्तुति है, और कहा गया है कि यह राजा के लोग के पुत्र मेलसिंह थे। ये ही सम्भवतः शासनकार के कर्ता थे जिसका उल्लेख लेख के उत्तर पक्ष में ही है। (तालिका के लिये देखो लेख नं० ८६)।

लेख नं० १०५ (२४५) (शक १३८०) के ४८ वें पद्य से १ लेख नं० १०८ (२४८) (शक १३५५) के १५ वें पद्य में उल्लेख है कि बल्लाल लोग की एक ओर स्याही से आचार्य गुरु ने रचा की थी। यह लोग इस वंश के कवाय समय विष्णुवर्धन के लगा आता है जिन्होंने अपने अभ्युदय स्थल किया था। 'भुजबलि शतक' में कहा गया है कि इस लोग का पूर्वजन्म के संस्कार से भारी प्रेम था तो जिसे आचार्य ने पूर्व की। इसी से इन आचार्य को 'कवाय' अथवा की उपाधि प्राप्त हुई।

विजयनगर

जब सन् १३२७ ईस्वी में मुहम्मद तुगलक ने होयसल राज्य का पूर्ण रूप से सत्यानाश कर डाला और होयसल राज्य को अपने साम्राज्य में मिला लिया तब दक्षिण के अन्य राज्य सचेत हुए। वे सब दो वीर योधाओं के नायकत्व में एकत्र हुए। इन वीर योधाओं, जिनके वंश आदि का विशेष कुछ पता नहीं चलता, ने थोड़े ही वर्षों में एक राज्य स्थापित किया जिसकी राजधानी उन्होंने विजयनगर बनाई। उक्त दोनों वीरों के नाम क्रमशः हरीहर और बुक्क थे और वे दोनों भ्राता थे। इन्होंने मुसलमानों के बढ़ते प्रवाह को रोक दिया। इसी समय दक्षिण में मुसलमानों ने बहमनी राज्य स्थापित किया जिसकी राजधानी गुलबर्गा थी। अब दक्षिण में ये दोनों राज्य ही मुख्य रहे और दोनों आपस में लगातार झगड़ते रहे। सन् १४८१ के लगभग बहमनी राज्य बरार, बिदर, अहमदनगर, गोलकुण्डा और बीजापुर इन पांच भागों में बट गया। विजयनगर नरेशों का झगड़ा बीजापुर के आदिल शाहों से चलता रहा। इसमें अधिकतः विजयनगर विजयी रहता था क्योंकि उक्त पांचों मुसलमानी राज्यों में द्वेष था। अन्त में मुसलमानी राजाओं ने अपनी भूल पहचान ली। वे सन् १५६५ में एक होकर तालीकोटा के मैदान पर डटे हुए और यहां दक्षिण भारत में हिन्दू साम्राज्य का निपटारा सदैव के लिये हो गया। विजयनगर नरेश रामराय कैद कर लिये

गये और मार डाले गये और उनकी सुन्दर राजधानी विजयनगर विध्वंस कर दी गई। यह संक्षिप्त में विजयनगर राज्य का इतिहास है।

अब संग्रहीत लेखों में इस राज्य के जो उल्लेख आये हैं उन्हें देखिये।

इस राजवंश के सम्बन्ध का सबसे प्रथम और सबसे महत्व का लेख नं० १३६ (३४४) (शक १२८०) का है जिसमें बुक्कराय प्रथम द्वारा जैन और वैष्णव सम्प्रदायों के बीच शान्ति और संधि स्थापित किये जाने का वर्णन है। वैष्णवों ने जैनियों के अधिकारों में कुछ हस्तक्षेप किया था। इसके लिये जैनियों ने नरेश से प्रार्थना की। नरेश ने जैनियों का हाथ वैष्णवों के हाथ पर रखकर कहा कि धार्मिकता में जैनियों और वैष्णवों में कोई भेद नहीं है। जैनियों को पूर्ववत् ही पञ्च-महावाद्य और कलश का अधिकार है। जैन दर्शन की हानि व वृद्धि को वैष्णवों को अपनी ही हानि व वृद्धि समझना चाहिए। जो वैष्णवों को इस नियम के शासन समस्त बस्तियों में लागू कर देना चाहिए। जब तक सूर्य और चन्द्र हैं तब तक वैष्णव जैन धर्म की रक्षा करेंगे। इसके अतिरिक्त लेख में कहा गया है कि प्रत्येक जैन गृह से कुछ द्रव्य प्रति वर्ष एकत्रित किया जायगा जिससे वैष्णवों के देव की रक्षा के लिये सोने के कलश चढ़ाये जायेंगे व जैन कृत्य मंदिरों के जीर्णोद्धारादि में व्यय किया जायेगा। जो इस शासन का उल्लंघन करेगा

वह राज्य का, संघ का व समुदाय का द्रोही ठहरेगा। इस सम्बन्ध में कदम्बहल्लि की शान्तीश्वर बस्ती का स्तम्भ लेख भी महत्व पूर्ण है। इस लेख में हरिहर द्वारा जैनियों के अधिकारों की रक्षा का उल्लेख है। उसमें कहा गया है कि पक्षादि व्रत गुरुओं के पारक, गुरु और देवों के भक्त, कलिकाल की कालिमा के प्रक्षालक, लाकुलीश्वर सिद्धान्त के अनुयायी, पञ्चक्रीड़ा क्रियाओं के विधायक सात करोड़ शैवों ने एकत्रित होकर मूलसंघ, देशीगण, पुस्तक गच्छ के कदम्बहल्लि के जिनालय को 'एकोटि जिनालय' की उपाधि तथा पञ्चमहावाद्य का अधिकार प्रदान किया। जो कोई इसमें 'ऐसा नहीं होना चाहिए' करेगा वह शिव का द्रोही ठहरेगा। यह लेख लगभग शक सं० ११२२ का है।

लेख नं० १२६ (३२९) में हरिहर द्वितीय की मृत्यु का उल्लेख है जो शार्व्वरी संवत्सर (शक १३१८) भाद्रपद कृष्णा दशमी सोमवार को हुई। अन्य एक लेख (ए० क० ८, शिवमोग्गा १२९) से भी इसी बात का समर्थन होता है। लेख नं० ४२८ (३३७) से विदित होता है कि देवराय महाराय की रानी व पण्डिताचार्य की शिष्या भीमादेवी ने मङ्गायी बस्ति में शान्तिनाथ भगवान् की प्रतिष्ठा कराई। यह राजा सम्भवतः देवराय प्रथम है। शिलालेख से यह नई बात विदित होती है कि इस राजा की रानी जैनधर्मावलम्बिनी थी। यह लेख लगभग शक सं० १३३२ का है। लेख

नं० ८२ (२५३) (शक १३४४) में हरिहर द्वितीय के सेनापति इरुगप का परिचय है और कहा गया है कि उन्होंने बेल्गोल, एक बनकुल और एक तालाब का दान गोम्मटेश्वर के हेतु कर दिया। लेख में इरुगप की वंशावली इस प्रकार पाई जाती है—

पैच दण्डनायक (पुत्तराय प्र० के मंत्री)

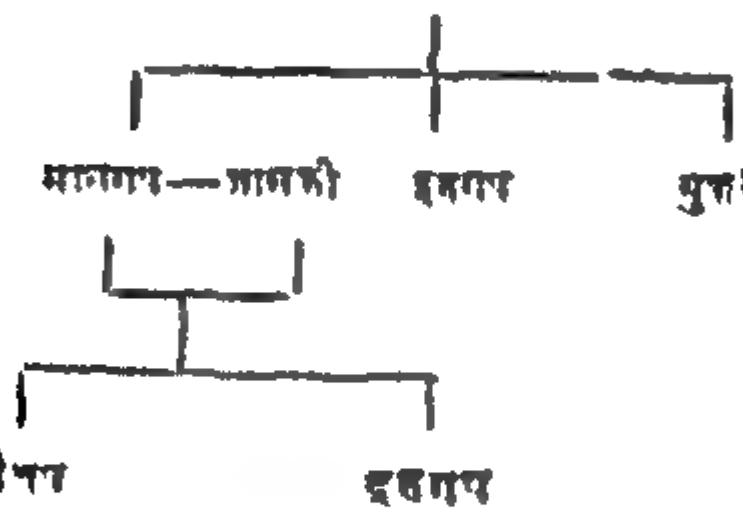

लेख में पण्डितार्य और कनकमुनि की प्रशंसा के पश्चात् कहा गया है कि कनकमुनि के सम्मुख यह दान दिया गया था। यह लेख शक सं० १३४४ का है जिससे विदित होता है कि इरुगप हरिहर द्वितीय के समय में भी विद्यमान थे। इनका संस्कृत का अच्छा विद्वान था। उन्होंने 'मालार्यरत्नमाला' नामक ग्रन्थमाला की रचना की थी। उनके तीन और ग्रन्थ मिले हैं (शक सं० ७, ११६, शक सं० ए० १—१४६) जिनमें से दो शक सं० १३७० और १३७८ के हैं जिनसे पण्डितार्य का उल्लेख है और तीसरा शक सं० १३७० का है और उसमें

कथन है कि इरुगप ने विजयनगर में कुंथजिनालय निर्माण कराया। लेख नं० १२५ (३२८) और १२७ (३३०) में देवराय द्वितीय की क्षय संवत्सर (शक १३६८) में मृत्यु का उल्लेख है।

मैसूर राजवंश

लेख नं० ८४ (२५०) शक सं० १५५६ का है। इसमें मैसूर नरेश चामराज ओडेयर द्वारा बेलगोल के मंदिरों की जमीन के, जो बहुत दिनों से रहन थी, मुक्त कराये जाने का उल्लेख है। नरेश ने जिन लोगों को इस अवसर पर बुलवाया था उनमें भुजबलि चरित के कर्ता पञ्चबाण कवि के पुत्र बोम्मण्ण व कवि बोमण्ण भी थे। इसी विषय का कुछ और विशेष विवरण लेख नं० १४० (३५२) (शक १५५६) में पाया जाता है। इस लेख में राजा की ओर से मंदिर की भूमि रहन करने व कराने का निषेध किया गया है। यद्यपि लेखों में इस बात का उल्लेख नहीं है तथापि यह प्रायः निश्चय ही है कि उक्त विषय के निर्णय के लिये नरेश बेलगोल अवश्य गये होंगे। चिदानन्द कवि के मुनिवंशाभ्युदय में नरेश की बेलगोल की यात्रा का इस प्रकार वर्णन है। "मैसूर नरेश चामराज बेलगोल में आये और गर्भगृह में से गोम्मटेश्वर के दर्शन किये। फिर उन्होंने द्वार पर आकर दोनों बाजुओं के

शिलालेख पढ़वाये। उन्होंने यह ज्ञात किया कि किस प्रकार चामुण्डराय बेल्गोल आये थे और अपने गुरु नेमिचन्द्र की प्रेरणा से उन्होंने गोम्मटेश्वर को एक लाख छयानवे हजार 'वराह' की आय के ग्रामों का दान दिया था। इसके पश्चात् नरेश मिलकर बलि में गये और वहाँ के लेखों से जैनाचार्यों की वंशावली, इनके महत्व व उनके कार्यों का परिचय प्राप्त किया। फिर उन्होंने यह पूछा कि अब गुरु कहाँ गये। धर्मस्थ कवि, जो मन्दिर के अध्यक्षों में से थे, ने उत्तर दिया कि जगदेव के तेलुगु सामन्त के त्रास के कारण गोम्मटेश्वर की पूजा बन्द कर दी गई है और गुरु चारुकीर्ति उस स्थान को छोड़ भैरवराज की रक्षा में भद्रावतीपुर (हरवरोप्पे) में रहते हैं। इस पर नरेश ने गुरु को बुला लेने के लिये कहा और धन देने का वचन दिया। फिर उन्होंने भण्डारि बलि के दर्शन किए और चन्द्रगिरि के सब मंदिरों के दर्शन कर वे सोलिङ्गापट्टण को लौट गये। पट्टमल्ल लौट और पट्टमल्ल पण्डित चारुकीर्ति को लाने के लिये भद्रावतीपुर भेजे गये। उनके आने पर वे सपरिवार व वैभवपूर्ण जुलूस से गये और राजा ने बहुमूल्य दान दिया।" वर्णन में जिस जगदेव का उल्लेख आया है वह चेन्नपट्टन का सामन्त राजा था। वह शक सं० १०४२ में रामराज द्वारा हराकर राज्यच्युत कर दिया गया।

लेख नं० ४२४ (१६५) में लिङ्गणराज ओडेयर द्वारा बेल्गोल में एक कल्याणी (कुण्ड) निर्माण कराने आदि का

उल्लेख है। लेख नं० ८३ (२४९) में कृष्णराज ओडेयर के शक सं० १६४५ में बेलगोल में आने व गोम्मटेश्वर के हेतु बेल्गोल आदि कई ग्रामों के दान का व चिक्कदेवराजवाने कुण्ड के निकट बनी हुई दानशाला के हेतु कवाले नामक ग्राम के दान का उल्लेख है। लेख में कहा गया है कि गोम्मटेश्वर के दर्शन कर नरेश बहुत ही प्रसन्न हुए और पुलकितगात्र होकर उन्होंने उक्त दान दिये। अनन्तकवि कृत 'गोम्मटेश्वर चरित' में भी इस नरेश की बेल्गोल-यात्रा का वर्णन है।

लेख नं० ४३३ (३४३) और ४३४ (३४४) कागज पर लिखी हुई कृष्णराज ओडेयर तृतीय की सनदें हैं जो समय-समय पर बेल्गोल के गुरु को दी गई हैं। इनमें की प्रथम सनद नरेश के मंत्री पुर्णैय्य की दी हुई है और उस में कृष्णराज ओडेयर प्रथम के दान का समर्थन किया गया है। द्वितीय सनद स्वयं नरेश ने दी है। उसमें बेल्गोल के समस्त मंदिरों के खर्च व जीर्णोद्धार के लिये तीन ग्रामों के दान का उल्लेख है। इस लेख में समस्त मंदिरों की संख्या तेतीस दी है—विन्ध्यगिरि पर आठ, चन्द्रगिरि पर सोलह, ग्राम में आठ व मलेयूर की पहाड़ी पर एक। इससे पूर्व मठ को उक्त मंदिरों के खर्च व जीर्णोद्धार के लिये राज्य से एक सौ तीस वराह का दान मिलता था। पर यह उक्त कार्य के लिये अपेक्षित नहीं था इसी से राजमहल के

लक्ष्मी पंडित की प्रार्थना पर इसके बदले तीन ग्रामों का उक्त दान दिया गया *।

कृष्णराज ओडेयर तृतीय के समय का एक और लेख नं० ८८ (२२३) (शक १७४८) है। इस लेख में उल्लेख है कि चामुण्डराज के एक वंशज, कृष्णराज के प्रधान अङ्गरक्षक की मृत्यु गोम्मटेश्वर के मस्तकाभिषेक के दिवस हुई। इस पर उनके पुत्र ने गोम्मट स्वामी की प्रतिवर्ष पूजा के हेतु कुछ दान दिया।

वर्तमान महाराजा कृष्णराज ओडेयर चतुर्थ का नाम तिथि सहित चन्द्रगिरि के शिखर पर अंकित है जो नवम्बर १९०० ईस्वी में उनके बेल्गोल आने का स्मारक है।

कदम्ब वंश

अनुमान शक की नवमी शताब्दि के लेख नं० २८२ (४४३) में काश्चिन देशी के पास एक कदम्ब राजा की आज्ञा से तीन शिलायें लाई जाने का उल्लेख है। यह कदम्ब नरेश कौन था व शिलायें किस हेतु लाई गईं यों यह विदित करने के कोई साधन उपलब्ध नहीं हैं।

---

* लेख नं० १४१ राइस साहब के सेंपइ में छपा है पर श्रीयुक्त नरसिंहाचार के नये संस्करण में वह नहीं छापा गया। श्रीयुक्त नरसिंहाचार का कथन है कि यह लेख उपर्युक्त दोनों सनदों के ऊपर से तैयार किया गया है और इसका अब मठ में पता नहीं चलता (देखो लेख नं० १४१।)

नोलम्ब व पल्लव वंश

लेख नं० १०९ (२८१) में चामुण्डराज द्वारा नोलम्ब नरेश के हराये जाने का उल्लेख है। सम्भवतः यह नरेश दिलीप का पुत्र नन्नि नोलम्ब था। लेख नं० १२० (३१८) में अरकेरे के वीर पल्लवराय व उसके पुत्र शङ्कर नायक के नाम पाये जाते हैं। शङ्कर नायक का नाम लेख नं० ७३ (१७०) व २४९ (१७१) में भी पाया जाता है। ये लेख लगभग शक सं० ११४० के हैं।

चोलवंश

शक की दशवीं शताब्दि के एक अधूरे लेख नं० ४६९ (३७८) में एक चोल पेर्मडि का गङ्गों के साथ युद्ध का वर्णन है। सम्भवतः यह नरेश राजेन्द्र चोल ही था जो गङ्गनरेश मूलराय द्वारा शक सं० ८७१ के लगभग मारा गया था जिसका कि उल्लेख अद्दकूर के लेख में है। लेख नं० ९० (२४०), १६० (२५१) व ४८६ (२९७) में गङ्गराज द्वारा चोलराज नरसिंह वर्मा व दामोदर की पराजय का उल्लेख है।

कोङ्गाल्ववंश

कोङ्गाल्व नरेशों का राज्य अर्कलगुद तालुका के अन्तर्गत कावेरी और हेमवती नदियों के बीच था। इनके लेख शक सं० ९४२ से १०२१ तक के पाये गये हैं। इन्हीं के दरिद्द में चङ्गाल्व राज्य था। इस वंश का सबसे अच्छा परिचय लेख नं० ५०० में राजा की उपाधियों में पाया जाता है।

यहाँ इस वंश के राजा राजेन्द्र चुडासे 'समस्तिलकश्रीमहाराज', 'महामण्डलेश्वर', 'श्रीसोमेश्वरवरलब्धश्रीवर', 'श्रीसकलसोमेश्वरप्रसादासादितसकलैश्वर्य' व 'सूर्यवंशसिरोमणि' कहे गये हैं। इससे ज्ञात है कि सोमेश्वर सरेस सूर्यवंशी थे और चौलवंश से इनकी उत्पत्ति थी। सोमेश्वर व वरणपुर चौल राजा की पाटोत्पत्ति स्थानाती थी। इस वंश के शिलालेखों में अब तक निम्न [illegible] के नाम व समय दिये हुए हैं—

[illegible]	.....
[illegible]	..... १०१५
[illegible]	..... १०९१
[illegible]	..१०९६-११००
[illegible]	...११००

[illegible]

[illegible]

पट्टनाडु (आधुनिक हुलगूर तालुका) था। लेख नं० १०१ (२८८) में कथन है कि इस वंश के एक नरेश कुलोत्तुङ्ग पल्लाल्व महादेव के मन्त्री के पुत्र ने सोमनेश्वर की ऊपरी मञ्जिल का शक सं० १४२६ में जीर्णोद्धार कराया। उक्त नरेश का उल्लेख एक और लेख में भी पाया गया है (ए. क. ४, हुलगूर ६३)

निडुगलवंश

निडुगल नरेश सूर्यवंशी थे और अपने को करिकाल चोल के वंशज कहते थे। वे नोरंबूराधीश्वर की उपाधि धारण करते थे। नोरंबूर (त्रिचनापल्ली के समीप) पाल राज्य की प्रधान राजधानी थी। ये नरेश चोल महाराजा भी कहलाते थे। उनकी राजधानी पेन्जेरु थी जो अब अनन्तपुर जिले में पेनावती कहलाती है। होय्सल नरेश विष्णुवर्द्धन के समय इस वंश का एक 'इरुङ्गोल' नाम का राजा राज्य करता था। लेख नं० ४२ (६६) में उसके नयकीर्ति सिद्धान्तदेव के शिष्य होने व लेख नं० १२८ (२४९) में उसके विष्णुवर्द्धन द्वारा हराये जाने का उल्लेख है।

उपर्युक्त राजकुलों के अतिरिक्त कुछ लेखों में और भी छुटकर राजाओं व राजवंशों का उल्लेख है। लेख नं० १५२ (११) में अरिष्टनेमि गुरु के समाधिमरण के समय दिण्डिग-फराज उपस्थित थे। दिण्डिग का उल्लेख एक और लेख (सा. इ. इ. २–३८१) में भी आया है पर वह लेख लगभग

सन् ८०० का है और प्रस्तुत लेख उससे कोई दो सौ वर्ष पश्चात् अनुमान किया जाता है। लेख नं० १४ (१४) की वंशावली में नागनायक नाम के एक सामन्त राजा का उल्लेख है। लेख नं० ५५ (६८) में कहा गया है कि परमारवंश भारतभोज्य भोज द्वारा व यशःकीर्ति सिंहलनरेश द्वारा सम्मानित हुए थे। लेख नं० ५४ (६७) में कहा है कि अकालवर्ष देव ने हिमशीतल नरेश की सेना में घोड़ों को रवाना किया था व अनुमुलदेव ने पाण्डवनरेश द्वारा लक्ष्मी की प्राप्ति आशा की थी। लेख नं० ३० (१४८) में गङ्गवंशीय नरेशों व नं० २४६ (४५०) में आदित्यवर्म, दामोदर, का उल्लेख है। लेख नं० ४० (६४) में आचार्य अकलंक, नाकसेन, आचार्यवर्य सिंहसेन, आचार्यवर्य [illegible] व [illegible] के शिष्य कहे गये हैं। सिंह के आचार्यत्व के शिष्य होने का समर्थन [illegible] के एक लेख (ई ए. १४, १४) में भी पाया जाता है। [illegible] के शिष्य [illegible] ने अपनी 'पार्श्वनाथचरित' में इन्हें सारस्वतसूत्रवृत्तिकर्ता कहा है। लेख नं० ४१ (१००) में सिंहनन्दिआचार्य व नं० ४१ (६५) में वेलूर के [illegible] का उल्लेख है। [illegible] ने [illegible] की शिक्षा बतलाई थी। लेख नं० १०१ (३४५) में यह कहा है कि [illegible] के [illegible] ने [illegible] राजाओं के [illegible] के [illegible] का उल्लेख है।

लेखों का मूल प्रयोजन

प्रस्तुत लेखों का मूल प्रयोजन धार्मिक है। इस संग्रह में लगभग एक सौ लेख मुनियों, आर्जिकाओं, श्रावक और श्राविकाओं के समाधिमरण के स्मारक हैं; लगभग एक सौ मन्दिर-निर्माण, मूर्तिप्रतिष्ठा, दानशाला, वाचनालय, मन्दिरों के दरवाजे, परकोटे, सिढियां, रङ्गशालायें, तालाब, कुण्ड, उद्यान, जीर्णोद्धार आदि कार्यों के स्मारक हैं, अन्य एक सौ के लगभग मन्दिरों के खर्च, जीर्णोद्धार, पूजा, अभिषेक, आहारदान आदि के लिये ग्राम, भूमि, व रकम के दान के स्मारक हैं, लगभग एक सौ साठ संघों और यात्रियों की तीर्थयात्रा के स्मारक हैं और शेष चालीस ऐसे हैं जो या तो किसी आचार्य, श्रावक, व योधा की स्तुति मात्र हैं, व किसी स्थान-विशेष का नाम मात्र अंकित करते हैं व जिनका प्रयोजन अपूर्ण होने के कारण स्पष्ट विदित नहीं हो सकता।

सल्लेखना—समाधिमरण से सम्बन्ध रखनेवाले सौ लेखों में अधिकांश—अर्थात् लगभग साठ—सातवीं आठवीं शताब्दि व उससे पूर्व के हैं और शेष उससे पश्चात् के। इससे अनुमान होता है कि सातवीं आठवीं शताब्दि में सल्लेखना का जितना प्रचार था उतना उससे पश्चात् की शताब्दियों में नहीं रहा। समाधिमरण करनेवालों में लगभग सोलह के संख्या स्त्रियों—आर्जिकाओं व श्राविकाओं—की भी है। लेखों में कहीं पर इसे सल्लेखना, कहीं समाधि, कहीं संन्यसन,

कहीं व्रत व उपवास व अनशन द्वारा मरण व स्वर्गारोहण कहा है। अनेक स्थानों पर सल्लेखना मरण की सूचना केवल मुनियों व श्रावकों की निषद्याओं (स्मारकों) से चलता है।

सल्लेखना क्यों और किस प्रकार की जाती थी इसके सम्बन्ध में प्राचीन जैन ग्रन्थों में समाचार मिलते हैं। इस विषय पर समन्तभद्र स्वामी कृत रत्नकरण्ड श्रावकाचार में इस प्रकार कहा है—

उपसर्गे दुर्भिक्षे जरसि रुजायां च निःप्रतीकारे।
धर्माय तनुविमोचनमाहुः सल्लेखनामार्याः ॥ १ ॥
स्नेहं वैरं सङ्गं परिग्रहं चापहाय शुद्धमनाः।
स्वजने परिजनमपि च क्षान्त्वा क्षमयेत्प्रियवचनैः ॥ २ ॥
आलोच्य सर्वमेनः कृतकारितमनुमतं च निर्व्याजम्।
आरोपयेन्महाव्रतमामरणस्थायि निश्शेषम् ॥ ३ ॥
शोकं भयमवसादं क्लेदं कालुष्यमरतिमपि हित्वा।
सत्त्वोत्साहमुदीर्य च मनः प्रसाद्यं श्रुतैरमृतैः ॥ ४ ॥
आहारं परिहाप्य क्रमशः स्निग्धं विवर्धयेत्पानं।
स्निग्धं च हापयित्वा खरपानं पूरयेत्क्रमशः ॥ ५ ॥
खरपानहापनामपि कृत्वा कृत्वोपवासमपि शक्त्या।
पञ्चनमस्कारमनाप्नुं त्यजेन्सर्वयत्नेन ॥ ६ ॥

अर्थात् "जब कोई उपसर्ग व दुर्भिक्ष पड़े, व बुढ़ापा व व्याधि सताने और निवारण न की जा सके उस समय धर्म की रक्षा के हेतु शरीर त्याग करने को सल्लेखना कहते हैं। इसके

वन्दना करनी चाहिए। श्रवणबेल्गोल बहुत काल से एक ऐसा ही स्थान माना जाता रहा है। इस लेख-संग्रह में लगभग १६० लेख तीर्थ-यात्रियों के हैं। इनमें से अधिकांश-लगभग १०७—दक्षिण भारत के यात्रियों के और शेष बाहर भारत-वासियों के हैं। दक्षिणी यात्रियों के लेखों में लगभग ५४ में केवल यात्रियों के नाम मात्र अंकित हैं, शेष लेखों में यात्रियों की केवल उपाधियाँ व उपाधियों सहित नाम पाये जाते हैं। कुछ लेखों में यह भी स्पष्ट कहा है कि अमुक यात्री व यात्रियों ने देव की व तीर्थ की वन्दना की। यात्रियों के जो नाम पाये जाते हैं उनमें से कुछ ये हैं—श्रीधरण, वीरराशि, चामुण्डरय, कविरत्न, अकलङ्क पण्डित, अजयकुमार महागुरि, मल्लिय अमात्यवर, गङ्गदेव मन्त्रि, चन्द्रकीर्ति, नागवर्म्म, मारसिङ्गय और मल्लिषेण। सम्भव है कि इनमें के 'कविरत्न' वही कन्नड भाषा के प्रसिद्ध कवि हों जिन्हें चालुक्य चक्रवर्ती तैल तृतीय ने 'कविचक्रवर्ति' की उपाधि से विभूषित किया था व जिन्होंने शक सं० ९१५ में 'अजितपुराण' की रचना की थी। नाग वर्म्म सम्भवतः वही प्रसिद्ध कन्नड़ी कवि हों जिन्हें गङ्गनरेश रक्कसगङ्ग ने अपने दरबार में रक्खा था और जिन्होंने 'छन्दो-म्बुधि' और 'कादम्बरी' नामक काव्यों की रचना की थी। 'चन्द्रकीर्ति' सम्भव है वे ही आचार्य हों जिनका उल्लेख ४२ (११७) में आया है। आचार्य गङ्गा श्री चामुण्डराय और मारसिङ्गय क्रमशः चामुण्डराज मन्त्री और मारसिंह नरेश की

हों। केवल उपाधियों में से कुछ इस प्रकार हैं—समधिगत पञ्चमहाशब्द; महामण्डलेश्वर, श्रीराजन् चट्ट (राजकुमारी), श्रीखडवरवण्ड (गरीबों का सेवक), रणधीर, इत्यादि। उपाधि-सहित नामों के उदाहरण इस प्रकार हैं—श्री ऐचट्य-निरोधि-निष्ठुर, श्रीजिनमार्गनीति-सम्पन्न-सर्वचूडामणि, श्रावत्सराज बालादित्य, अरिष्टनेमि पण्डित परसमयध्वंसक, इत्यादि। जिनके नाम में यह भी कहा गया है कि उन्होंने देव की व तीर्थ की वन्दना की, उनमें से कुछ के नाम ये हैं—मल्लिषेण भट्टारक के शिष्य नरेन्द्रभव्य, अभयनन्दि पण्डित के शिष्य कोसलव्य,[1] श्रीवर्मसेनद्वयगीतव्य, नयनन्दि विमुक्तदेव के शिष्य मयुरव्य, नागनि के राजा इत्यादि। कुछ शिल्पियों के नाम भी हैं, जैसे—गण्डविमुक्तसिद्धान्तदेव के शिष्य मोधरोज, पिदिग, बमोज, चन्द्रादित्य और नागवर्मा।

इस प्रकार के शिलालेख यों तो विशेषोपयोगी नहीं पड़ते हैं पर इतिहासशोधक के लिये कभी-कभी ये ही बड़े उपयोगी सिद्ध होते हैं। कम से कम इतनी बात तो सिद्ध होती ही है कि जिसने प्राचीन समय से इस स्थान तीर्थ माना जाता रहा है और यति मुनि, कवि, राजा, सिपाही आदि जितने प्रकार के व्यक्तियों ने समय समय पर इस स्थान की पूजा वन्दना करना अपना धर्म माना है। इससे इस स्थान की धार्मिकता, प्राचीनता और प्रसिद्धि का पता चलता है।

उत्तर भारत के यात्रियों के लेखों की संख्या लगभग ५३ है। ये सब मारवाड़ी-हिन्दी भाषा में हैं। लिपि के अनुसार ये लेख दो भागों में विभक्त किये जा सकते हैं। ३६ लेखों की लिपि नागरी है और १७ की महाजनी। नागरी लेखों का समय लगभग शक सं० १४०० से १७६० तक है। इनमें के दो लेख स्याही से लिखे हुए हैं। इन लेखों में के अधिकांश यात्री काष्ठा संघ के थे जिनमें के कुछ मण्डितटगच्छ के थे। यह गच्छ काष्ठा संघ के ही अन्तर्गत है। कुछ यात्रियों के साथ उनकी **पचेरवाल** जाति व **गोनामा** और **पीपला** गोत्र का उल्लेख है। कुछ लेखों में यात्रियों के निवासस्थान पुरस्थान, माडवागढ़ व गुढ़यटीपुर का उल्लेख है। महाजनी लिपि के १७ लेख उस विचित्र लिपि के हैं जिसे मुण्डा भाषा कहते हैं। इसकी विशेषता यह है कि इसमें मात्रायें प्रायः नहीं लगाई जातीं। केवल 'अ' और 'इ' की मात्राओं से ही अन्य सब मात्राओं का भी काम निकाल लिया जाता है। व्यञ्जनों में 'ज' और 'झ', 'ट' और 'ठ', 'ड' और 'ढ', 'भ' और 'व' में कोई भेद नहीं रक्खा जाता। यह भाषा आगरा, अवध और पञ्जाब प्रदेशों के व्यापारी महाजनों में प्रचलित है। कुछ लेखों में 'टाकरी' लिपि के अक्षर भी पाये जाते हैं, जो पञ्जाब के पहाड़ी हिस्सों में प्रचलित हैं। इस पर से अनुमान किया जा सकता है कि उक्त सब प्रदेशों से यात्री इस तीर्थस्थान की वन्दना को आते थे। उल्लिखित यात्रियों में अधिकांश अग्र-

वाल और सरावगी जातियों के थे। अग्रवालों के अन्तर्गत ही वे सब अवान्तर भेद पाये जाते हैं जिनका उल्लेख लेखों में आया है; यथा—सरधनवाला, सहनवाला, गद्दानिया इत्यादि। अनेक व्यक्तियों ने अपने को 'पानीपतीय' कहा है जिससे विदित होता है कि वे 'पानीपत' के थे। लेखों में गोपक्षेत्र और गर्ग गोत्रों व ज्ञानपेठ और मोडनगढ़ स्थानों के नाम भी आये हैं। इन लेखों का समय लगभग शक सं० १६७० से १७१० तक है।

जीर्णोद्धार और दान—मन्दिरादिनिर्माण, जीर्णोद्धार और पूजाभिषेकादि के हेतु दान से सम्बन्ध रखनेवाले लेखों को संख्या लगभग दो सौ है। मन्दिरादिनिर्माण के विषय के लेखों का १ भाग पहले मन्दिरों आदि के वर्णन में आ चुका है। यहां तीन लेखों में से मुख्य २ का कुछ परिचय दिया जाता है। शक सं० ११०० के लगभग के लेख नं० ८८ (२१०), ८९ (२१८) और ९० (२४२) में गोम्मटेश्वर की पूजा के हेतु पूजा के लिये दान का उल्लेख है। प्रथम लेख में कहा गया है कि महामण्डलाचार्य विजयकीर्ति के शासन काल में महामण्डलाचार्य चन्द्रकीर्तिदेव ने कुछ भूमि व एक मकान श्री गोम्मटेश की नित्य पूजा में बीस पुष्पमालाओं के लिये लगा दी। द्वितीय लेख में कथन है कि गोपेन के पुत्र कामदेव ने इस घर की पुष्पमालें पूजा के लिये कुछ भूमि का दान महामण्डलाचार्य चन्द्रकीर्तिदेव को दिया। तीसरे

लेख में उल्लेख है कि बेल्गोल के समस्त व्यापारियों ने 'संघ' से कुछ भूमि खरीद कर उसे मालाकार को गोम्मटेश की पूजा में पुष्प देने के लिये दान कर दी। लेख नं० ९१ (२४१) में कथन है कि बेल्गोल के समस्त व्यापारियों ने गोम्मटेश और पार्श्वदेव की पूजा में पुष्पों के लिये प्रतिवर्ष कुछ चन्दा देने का वचन दिया। लेख नं० ९३ (२४३) के अनुसार चेन्नि सेट्टि के पुत्र व चन्द्रकीर्ति भट्टारक के शिष्य कन्नय्य ने कुछ द्रव्य का दान इस हेतु दिया कि कम से कम पुष्पों की छः माला प्रतिदिवस गोम्मटदेव और तीर्थंकरों को चढ़ाई जावें। लेख नं० ९४, ९५, ९७ व ३३० (२४४, २४५, २४७, २००) में गोम्मटेश के प्रतिदिन अभिषेक के हेतु दुग्ध के लिये दान का उल्लेख है। इन लेखों में दुग्ध का परिमाण भी दिया गया है। और बेल्गोल के व्यापारी इस कार्य के प्रबन्धक नियुक्त किये गये हैं। लेख नं० १०६ (२५५) (शक सं० १३२१) में गोम्मटेश की मध्याह्न पूजन के हेतु दान का उल्लेख है।

लगभग शक सं० ११०० के लेख नं० ८६, ८७, ३६१ (२३५, २३६, २५२) में वमविसेट्टि द्वारा स्थापित चतुर्विंशति तीर्थंकरों की अष्टविध पूजा के हेतु व्यापारियों के वार्षिक चन्दों का उल्लेख है। इसी प्रकार लेख नं० ९९-१०२, १३१, १३५, १३७, ४५४ और ४७५ में भिन्न भिन्न सत्पुरुषों द्वारा भिन्न-भिन्न देवों और मन्दिरों की भिन्न भिन्न प्रकार की सेवा और पूजा के हेतु भिन्न-भिन्न समय पर नाना प्रकार के दानों का उल्लेख है।

लेख नं० १३४ (३४२) में कहा गया है कि हिरिय-अय्य के शिष्य गुम्मटन्न ने चन्द्रगिरि पर की चिक्कवस्ति, उत्तरीय दरवाजे पर की तीन वस्तियों और सङ्गायि वस्ति का जीर्णोद्धार कराया। लेख नं० ३७० (२७०) के अनुसार बेगूर के वैयण ने एक बड़ा हौज और छप्पर बनवाया। नं० ४६८ (५००) के अनुसार एक साध्वी स्त्री जिण्णन्न ने एक मन्दिर को रथ का दान दिया, व नं० ४८३ के अनुसार मदेय नायक ने एक नन्दिस्तम्भ बनवाया।

लेखों से तत्कालीन दूध के भाव का अनुमान-

अनेक लेखों में मस्तकाभिषेक के हेतु दुग्ध के लिये दान दिये जाने के उल्लेख हैं जिनसे उस समय के दूध के भाव का कुछ ज्ञान हो सकता है। उदाहरणार्थ, शक सं० ११६७ के एक लेख नं० ६५ (२५५) में कहा गया है कि हलसूर के केतिसेट्टि ने गोम्मटदेव के नित्याभिषेक के लिये ३ मान दूध के लिये ३ गद्याण का दान दिया। यह दूध उक्त रकम के ब्याज से जब तक सूर्य और चन्द्र हैं तब तक लिया जावे। गद्याण दक्षिण भारत का एक प्राचीन सोने का सिक्का है जो करीब दस आना भर होता है, और मान दक्षिण भारत का एक माप है जो ठीक दो सेर का होता है। अतएव स्पष्ट है कि १॥।=) भर (दो आना कम दो तोला) सोने के साल भर के ब्याज से ३६० × ३ × २ = २१६० सेर दूध आता था। शक सं० ११२८ के लेख नं० १२८ (३३३) से ज्ञात होता

है कि उस समय आठ 'हण' का सालाना एक 'हण' ब्याज आ सकता था अर्थात् ब्याज की दर सालाना मूल रकम का अष्टमांश थी। इसके अनुसार १॥॥≈) भर सोने का साल भर का ब्याज ≈)॥॥ (पौने चार आना) भर सोना हुआ। अतएव स्पष्ट है कि शक की बारहवीं शताब्दी के लगभग अर्थात् आज से छः सात सौ वर्ष पूर्व दक्षिण भारत में पौने चार आना भर सोने का २१६० सेर दूध बिकता था। इसे आजकल के चाँदी सोने के भाव के अनुसार इस प्रकार कह सकते हैं कि उस समय एक रुपया का लगभग साढ़े नौ सेर दूध आता था।

इसी प्रकार लेख नं० ८४ (२४४) में जो नित्यप्रति ३ मान दूध के लिये ४ गद्याण के दान का उल्लेख है उसका हिसाब लगाने से २१६० सेर दूध की कीमत पाँच आना भर सोना निकलती है। शक सं० १२०१ के लेख १३१ (३३६) में नित्यप्रति एक 'वल्ल' दूध के लिये पाँच 'गद्याण' के दान का उल्लेख है जिसके अनुसार ३६० 'वल्ल' दूध की कीमत सवा छः आना भर सोना निकलती है। वल्ल सम्भवतः उस समय 'मान' से बड़ा कोई माप रहा है*।

---

* 'गद्याण' और 'आन' का अर्थ मुझे श्रीयुक्त पं० नाथूरामजी प्रेमी द्वारा विदित हुआ है। उन्होंने अबकी बेलगोला से समाचार मँगाकर अपने पहले पत्र में मुझे इस प्रकार लिखा था—"गद्याण = एह साप अनुमान १ तोले के बराबर होता है और एक सुवर्ण वाण्य (?) को

आचार्यों की वंशावली

जैन इतिहास की दृष्टि से ये लेख बहुत महत्त्वपूर्ण हैं जिनमें आचार्यों की परम्परायें दी हैं। दक्षिण भारत के इन प्राचीन लेखों में ऐसी परम्परायें व पट्टावलियाँ पाई जाती हैं। इस सम्बन्ध में सबसे पहले हम उन लेखों को लेते हैं जिनमें उन सुप्रसिद्ध आचार्यों का संक्षिप्त उल्लेख पाया है जिन्होंने मतभेद होने के पश्चात् जैन आगम का अध्ययन और अध्यापन किया। ऐसे लेख नं० १ और १०८ (२५८) हैं। इनमें उन आचार्यों की जिनसंघसिंह परम्परा पाई जाती है। [illegible] के लिये लेख में हरिवंश पुराण की गुर्वावली भी दी गयी है।

[illegible] का [illegible] है। लेख [illegible] के [illegible] देता है। [illegible] "[illegible] है।" इसके पश्चात् [illegible] — [illegible] [illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] [illegible]

नं० १०५ (२५४)	हरिवंश पुराण	नं० १
(शक सं० १३२०)	(शक सं० ७०५)	(अनु० ७ वीं शताब्दी)
महावीर	महावीर	महावीर
१ इन्द्रभूति। गौतम	१ गौतम	१ गौतम
२ अग्निभूति		
३ वायुभूति		
४ अकम्पन		
५ मौर्य		
६ सुधर्म। सुधर्म	२ सुधर्म	२ लोहाचार्य
७ पुत्र		
८ मैत्रेय		
९ मौण्डय		
१० अन्धवेल		
११ प्रभासक। जम्बू	३ जम्बू	३ जम्बू
११ गणधर २ केवली		
१ विष्णु	१ विष्णु	१ विष्णुदेव
२ अपराजित	२ नन्दिमित्र	२ अपराजित
३ नन्दिमित्र	३ अपराजित	३ गोवर्धन
४ गोवर्द्धन	४ गोवर्द्धन	४ भद्रबाहु
५ भद्रबाहु	५ भद्रबाहु	
५ श्रुतकेवली		

११ दशपूर्वी	१ क्षत्रिय	१ विशाख	१ विशाख
	२ प्रोष्ठिल	२ प्रोष्ठिल	२ प्रोष्ठिल
	३ गङ्गदेव	३ क्षत्रिय	३ कृतिकार्य (क्षत्रिकार्य)
	४ जय	४ जय	४ जय
	५ सुधर्म	५ नाग	५ नाम (नाग)
	६ विजय	६ सिद्धार्थ	६ सिद्धार्थ
	७ विशाख	७ धृतिषेण	७ धृतिषेण
	८ बुद्धिल	८ विजय	८ बुद्धिल आदि-
	९ धृतिषेण	९ बुद्धिल	
	१० नागसेन	१० गङ्गदेव	
	११ सिद्धार्थ	११ धर्मसेन	
५ एकादशाङ्गी	१ नक्षत्र	१ नक्षत्र	
	२ पाण्डु	२ यशःपाल	
	३ जयपाल	३ पाण्डु	
	४ कंसाचार्य	४ ध्रुवसेन	
	५ द्रुमसेन (धृतिसेन)	५ कंसाचार्य	
४ आचाराङ्गी	१ लोह	१ सुभद्र	
	२ सुभद्र	२ यशोभद्र	
	३ जयभद्र	३ यशोबाहु	
	४ यशोबाहु	४ लोहाचार्य	

यह अङ्गधारी आचार्यों की पट्टावली है। नामों के क्रम में जो हेर फेर पाये जाते हैं, उसका कारण यह है कि लेख सं० १०५ हरिवंश पुराण से भिन्न छन्दों में लिखा गया है। कवि को प्रत्येक छन्द में नामों का समावेश करने के लिये उनको इधर उधर रखना पड़ा है। इसी कारण कहीं कहीं नामों में भी हेर फेर पाये जाते हैं। लेख में यशःपाल के लिये जयपाल, धर्मसेन के लिये सुधर्म, और यशोभद्र की जगह जयभद्र नाम आये हैं। सुधर्मसेन की जगह जो लेख में द्रुमसेन पाया जाता है, वह सम्भवतः मूल लेख के पढ़ने में भूल हुई है। लेख सं० १ की जो वंशावली परम्परा पाई जाती है उसका कारण यह ज्ञात होता है कि वहाँ लेखक का अभिप्राय पूरी पट्टावलि देने का नहीं था। उन्होंने कुछ नाम देकर आदि लगाकर उस सुप्रसिद्ध परम्परा का सङ्केत मात्र किया है। इसी से कुछ वंशावलियों में बीच एक नाम छूट भी गया है। इन सबों में यद्यपि इन आचार्यों का समय नहीं बतलाया गया तथापि इन्द्रनन्दि-कृत श्रुतावतार में जाना जाता है कि अहद्बलि स्वामी के पश्चात् तीन केवली ६२ वर्ष में, पाँच श्रुत केवली १०० वर्ष में, ग्यारह दशपूर्वी १८३ वर्ष में, पाँच एकादशाङ्गी २२० वर्ष में और चार एकाङ्गी ११८ वर्ष में हुए हैं। इस प्रकार महावीर स्वामी की मृत्यु के पश्चात् आचार्य तक ६८३ वर्ष व्यतीत हुए थे।

बहुत सी लेखों में काल के आचार्यों की वंशावली कुन्द-कुन्दाचार्य से ही शुरू है। दुर्भाग्यवश किसी भी लेख में अभी तक

श्रुतज्ञानियों और कुन्दकुन्दाचार्य के बीच की पूरी गुरुपरम्परा नहीं पाई जाती। केवल उपर्युक्त लेख नं० १०५ में ही इस बीच के आचार्यों के कुछ नाम पाये जाते हैं जो इस प्रकार हैं—

१ कुम्भ	७ सर्वज्ञ
२ विनीत या अविनीत	८ सर्वगुप्त
३ इक्षुधर	९ महिधर
४ वसुदेव	१० धनपाल
५ अपराजित	११ महावीर
६ मेरुवीर	१२ वीरदेव इत्यादि

नन्दि संघ की पट्टावली में कुन्दकुन्दाचार्य की गुरुपरम्परा इस प्रकार पाई जाती है :—

भद्रबाहु
|
गुप्तिगुप्त
|
माघनन्दि
|
जिनचन्द्र
|
कुन्दकुन्द

इन्द्रनन्दिकृत श्रुतावतार के अनुसार कुन्दकुन्द उन आचार्यों में हुए हैं जिन्होंने धरसेनाचार्य के पास ज्ञान प्राप्त किया था।

कुन्दकुन्दाचार्य जैन इतिहास, विशेषतः दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के इतिहास, में सबसे महत्वपूर्ण पुरुष हुए हैं। वे प्राचीन और नवीन सम्प्रदाय के बीच की एक कड़ी हैं। उनसे पहले जो भद्रबाहु आदि श्रुतज्ञानी हो गये हैं उनके नाममात्र के सिवाय उनके कोई ग्रंथ आदि हमें अब तक प्राप्त नहीं हुए हैं। कुन्दकुन्दाचार्य से कुछ प्रथम ही जिन पुष्पदन्त, भूतबलि आदि आचार्यों ने आगम को पुस्तकारूढ किया उनके भी ग्रन्थों का अब कुछ पता नहीं चलता। पर कुन्दकुन्दाचार्य के अनेक ग्रन्थ हमें प्राप्त हैं। आगे के प्रायः सभी आचार्यों ने इनका स्मरण किया है और अपने को कुन्दकुन्दान्वय के कह-कर प्रसिद्ध किया है। लेखों में दिगम्बर सम्प्रदाय का एक और विशेष नाम मूल संघ पाया जाता है। यह नाम सम्भवतः सबसे प्रथम दिगम्बर संघ का श्वेताम्बर संघ से पृथक् निर्देश करने के लिये दिया गया। अनुमान शक संवत् १०२२ के शिलालेख नं० ५५ में कुन्दकुन्द को ही मूल संघ के आदि गणी कहा है यथा—

श्रीमतो वर्द्धमानस्य वर्द्धमानस्य शासने।
श्रीकोण्डकुन्दनामाभून्मूलसंघाग्रणीर्गणी॥

पर शिलालेख नं० ४२, ४३, ४७ और ५० (क्रमशः शकसं० १०९९, १०४५, १०३७ और १०६०) में गौतमादि मुनीश्वरों का स्मरण कर कहा गया है कि उन्हीं की सन्तान के नन्दि गण में पद्मनन्दि अपर नाम कुन्दकुन्दाचार्य हुए। लेख

नं० ५४ (शक १०५०), ४० (शक १०८५) और १०८ (शक १३५५) में गौतम स्वामी के उल्लेख के पश्चात् उन्हीं की सन्तति में भद्रबाहु और फिर उनके शिष्य चन्द्रगुप्त का वर्णन करते हुए कहा गया है कि उनके ही अन्वय में कुन्द-कुन्द मुनि हुए। इन लेखों में इस स्थल पर संघ गणादि का नाम निर्देश नहीं किया गया।

लेख नं० ४१ में बिना किसी पूर्व सम्बन्ध के यह आचार्य-परम्परा भी दी है—

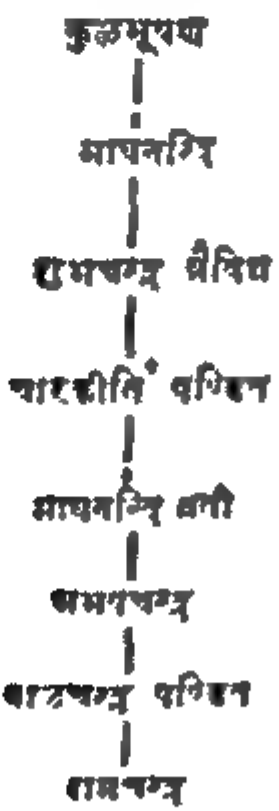

लेख नं० ३१, ३१, ४० और ४१ में वर्णित कुन्दकुन्दान्वय की परम्परा इस प्रकार पाई जाती है।

शक सं० १०८५ के लेख नं० ४० में निम्न प्रकार आचार्य-परम्परा पाई जाती है —

गौतमादि

(उनकी सन्तान में)

भद्रबाहु

|

चन्द्रगुप्त

(उनके अन्वय में)

पद्मनन्दि (कुन्दकुन्द)

(उनके अन्वय में)

उमास्वाति (गृद्धपिच्छ)

|

बलाकपिच्छ

(उनकी परम्परा में)

समन्तभद्र

(उनके पश्चात्)

देवनन्दि (जिनेन्द्रबुद्धि व पूज्यपाद)

(उनके पश्चात्)

अकलङ्क

(उनकी सन्तति में मूल संघ में नन्दिगण का जो देशीगण भेद हुआ उसमें गोलदेशाधिप हुए।)

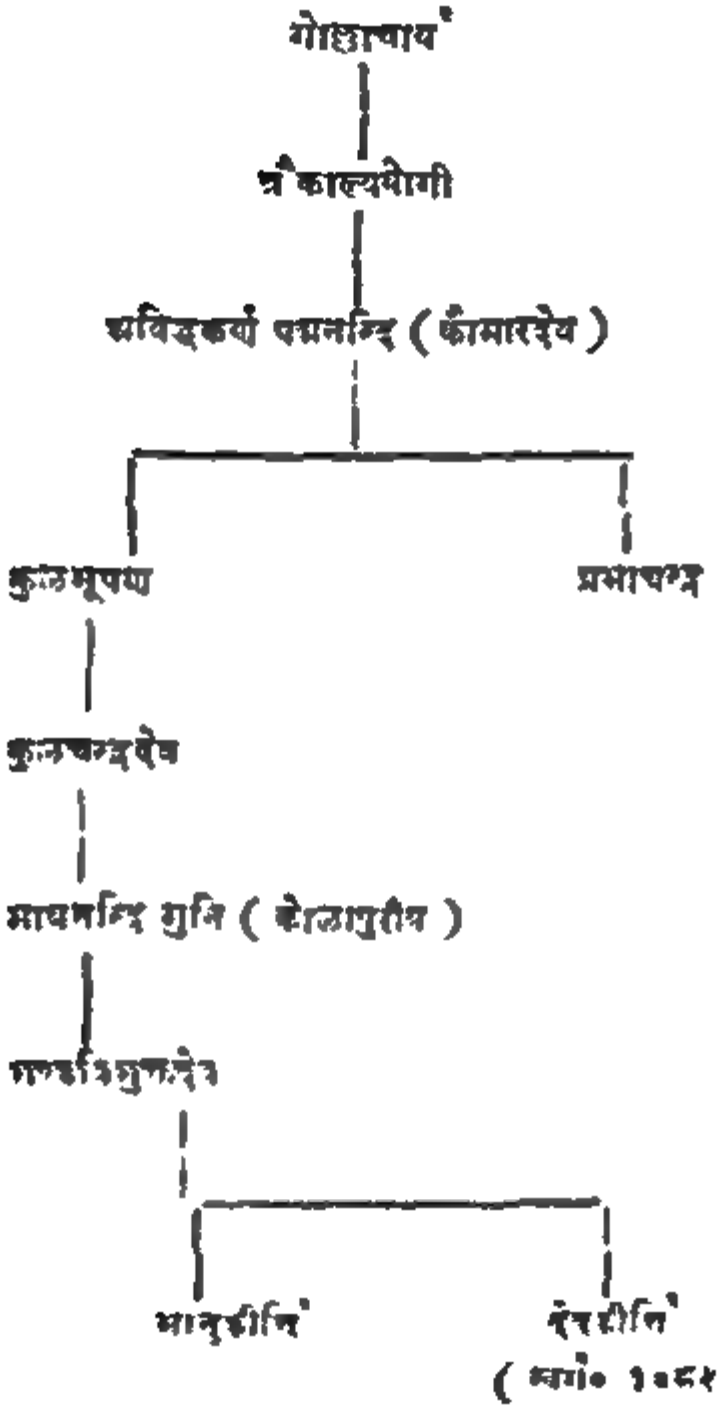

अनुमान शक सं० १०२२ के लेख नं० ५५ की आचार्य परम्परा इस प्रकार है—

मूल संघ, देशीगण, वक्रगच्छ

कुन्दकुन्द (मूलसंघाग्रणी)

(इनके अन्वय में)

देवेन्द्र सिद्धान्तदेव

चतुर्मुखदेव (वृषभनन्दाचार्य)

(इनके ८४ शिष्य थे)

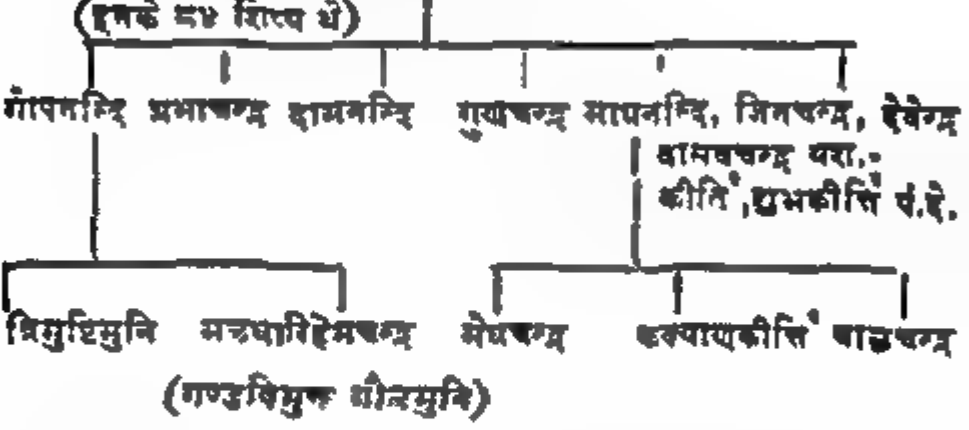

मूल पद्यात्मक लेख के पश्चात् आचार्यों के नामों की गद्य में पुनरावृत्ति है। इस नामावली में ऊपर के भाग से कुछ विशेषतायें पाई जाती हैं। मूलसंघ देशीगण, वक्रगच्छ कुन्दकुन्दान्वय में यहाँ देवेन्द्र सिद्धान्तदेव से प्रथम वसुदेव का नामोल्लेख है। देवेन्द्र सिद्धान्तदेव के पश्चात् चतुर्मुखदेव का द्वितीय नाम वृषभनन्दाचार्य दिया है। चतुर्मुखदेव के शिष्यों में महेन्द्रचन्द्र पण्डितदेव का नाम अधिक है। माघनन्दि के शिष्यों में त्रिरत्ननन्दि का नाम अधिक है। यश:कीर्ति और दामचन्द्र गोपनन्दि के शिष्यों में गिनाये गये हैं। इनमें चन्द्रनन्दि का नाम अधिक है।

लेख नं० १०५ (शक १३२०) की कुन्दकुन्दाचार्य तक की परम्परा हम ऊपर देख चुके हैं। कुन्दकुन्दाचार्य से आगे इस लेख की गुरु-परम्परा इस प्रकार है—

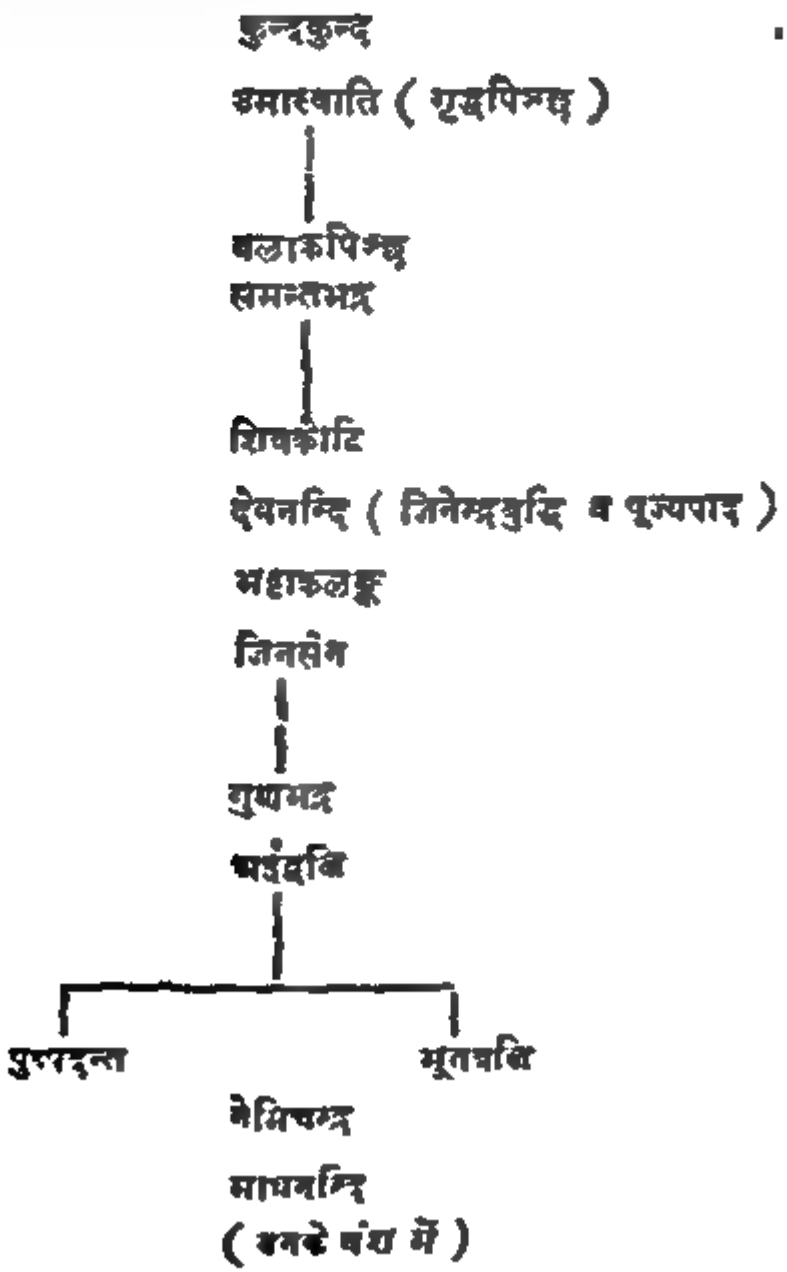

अमरचन्द्र देव (इनके अनुज) श्रुतकीर्ति
|
श्रुतमुनि
|
(इनके प्रशिष्य)
|
अभिनव श्रुतमुनि

श्रुतकीर्ति
|
चारुकीर्ति
|
पण्डितदेव (स्वर्ग ११२०)
|
अभिनव पण्डित

लेख नं० १०८ की परम्परा आदि से अकलङ्कदेव तक लेख नं० ४० के समान ही है। अकलङ्कदेव के पश्चात् संघ-भेद हुआ जिसकी इंगुलेश्वर शाखा की कुछ परम्परा इस प्रकार दी है।

श्रुतकीर्ति
|
चारुकीर्ति
|
पण्डित
|
सिद्धान्तयोगी
|
श्रुतमुनि (स्वर्गवास ११२५)

शक संवत् १०८५ के लेख नं० १११ में मूलसंघ बलात्कार गण की कुछ परम्परा निम्न प्रकार पाई जाती है। लेख बहुत घिसा हुआ होने के कारण परम्परा के ऊपर और नीचे के कुछ नाम स्पष्ट नहीं पढ़े गये।

मूल संघ—बलात्कार गण

.....

.....कीर्ति (वनवासि के)

|

देवेन्द्र विशालकीर्ति

|

शुभकीर्तिदेव भट्टारक

|

धर्मभूषणदेव

|

अमरकीर्ति-आचार्य

|

धर्मभूषणदेव (की निषद्या बनवाई गई शक सं० ११६२)

शक सं० १०४७ के लेख नं० ४८३ में नन्दि संघ, द्रमिल-गण अरुङ्गलान्वय की निम्न प्रकार परम्परा है। इस लेख में आचार्यों का गुरु-शिष्य-सम्बन्ध नहीं बतलाया गया केवल एक के पश्चात् दूसरे हुए ऐसा कहा गया है।

नन्दि संघ, द्रमिलगण, अरुङ्गलान्वय

महावीर स्वामी

|

गौतम गणधर

... .. .

समन्तभद्रस्वामी

एक सन्धिसुमति-भट्टारक
अकलङ्कदेव वादीभसिंह
वक्रग्रीवाचार्य
श्रीनन्दाचार्य
सिंहनन्दाचार्य
श्रीपाल महाराज
कनकसेन वादिराजदेव
श्रीविजयशान्तिदेव
पुष्पसेन सिद्धान्तदेव
वादिराज
शान्तिषेण देव
कुमारसेन सैद्धान्तिक
महिषेण मलधारि
श्रीपाल त्रैविद्यदेव (शक सं० १०४० में
विष्णुवर्द्धन नरेश ने शल्य ग्राम का दान दिया।)

लगभग शक सं० १०८६ के लेख नं० ११३ में उल्लेख है कि देसी गण पुस्तक गच्छ कुन्दकुन्दान्वय के निम्नोल्लिखित आचार्यों ने मिलकर पञ्चकल्याणोत्सव मनाया—

त्रिभुवनराजगुरु भानुचन्द्र सिद्धान्त-चक्रवर्ती, सोमचन्द्र सि० च०, चतुर्मुख भट्टारकदेव, सिंहनन्दि महाचार्य, शान्ति भट्टारक, शान्तिकीर्त्ति, कनकचन्द्र मलधारिदेव और मेमिचन्द्र मलधारिदेव।

शान्तिदेव (त्रिभुवनदेव पोय्सल नरेश द्वारा पूज्य) वासुपूज्यदेव (पाण्ड्य नरेश द्वारा स्वामी की उपाधि और आहवमल्लनरेश द्वारा वासुपूज्यदेव की उपाधि प्राप्त की)
गुणसेन (मुनीन्द्र के)
अजितसेन वादीभसिंह

शान्तिनाथ कविताकान्त कुमारसेन — पद्मनाभ वादिवेतालदेव

अजितसेन भट्टारक (अजितसेन पण्डितदेव के शिष्य, शकाब्द सन् १०२०)

उपर्युक्त वंशावलियों के आचार्यों में से कुछ के शिष्य थे और शास्त्र लिखने वाले लेखों में कही गई हैं वे इस प्रकार हैं—

कुन्दकुन्दाचार्य[1]—ये मूल संघ के अग्रगणी थे (मूल-संघाग्रणीर्गणी) (५५)। इन्होंने चरण चारित्र द्वारा चारण ऋद्धि प्राप्त की थी (४०, ४२, ४३, ४०, ५०) जिसके बल से वे पृथ्वी से चार अंगुल ऊपर चलते थे (१३८) अतीत पद बताने के हेतु कि वे काल और अवस्थान्तर रूप से अस्पृष्ट हैं (१०५)।

उमास्वाति—ये गृद्धपिच्छाचार्य कहलाते थे (४०,४१, ४२, ५०) वे बलाकपिच्छ के गुरु और लोहाचार्य के वर्ण थे (१०४)।

[1] इन आचार्यों के विषय में विशेष ज्ञान के लिये मालिकल्प निम्नलिखित के 'दक्षिण भारतका जैनधर्म' की भूमिका देखिए।

समन्तभद्र—ये वादिसिंह, गन्धहस्ति और समन्तभद्र निधि पदों से विभूषित थे (४०, ४४ ४९३) इन्होंने भस्म व्याधि को जीता तथा पाटलिपुत्र, मालवा, सिन्धु, टक्क (पञ्जाब) काञ्चीपुर, विदिशा (उज्जैन) व करहाटक (कोल्हापुर) में वादियों को आमन्त्रित करने के लिये भेरी बजाई। इन्होंने 'भूतबलि' की जिह्वा को भी स्तम्भित कर दिया था (४४)। समन्तभद्र 'महामूर्ति' जिन शासन के प्रणेता और प्रतिवाद-गजों को वारण में पूर्ण करनेवाले थे (१०८)

शिवकोटि—ये समन्तभद्र के शिष्य व तत्त्वार्थसूत्रटीका के कर्ता थे (१०५)।

पूज्यपाद—इनका दीक्षा नाम 'देवनन्दि' था, बुद्धिकृत के कारण ये जिनबुद्धि कहलाए तथा इनके पादों की पूजा देवताओं करते थे इससे विद्वानों में ये पूज्यपाद के नाम से प्रख्यात हुए (४०, १०५)। ये जैनेन्द्र व्याकरण, सर्वार्थसिद्धि (टीका) जैनाभिषेक, समाधिशतक, इष्ट. शास्त्र व स्वात्मयशास्त्र के कर्ता थे (४०) पूज्यपाद के एक लेख (वि. ए. जै. ६८७) में व्याकरणशास्त्रोदधिचन्द्रायते आदि। पाणिनि सूत्र के शब्दावतार जैनेन्द्र व्याकरण, जैनेन्द्र व्याकरण

० 'पूर्वाद्रि' की जिह्वा को स्तम्भित करने का अर्थ शास्त्रार्थ में हरा देना है (४२, ४४१)। पूर्वाद्रि शब्द का अर्थ है पर्वत' शब्द का भी हो सकता है क्योंकि शब्दार्थक हिन्दू पर्वतों के शब्द के अनेक अर्थ हैं।

न्यास, वैद्यशास्त्र और तत्त्वार्थ सूत्रटीका (सर्वार्थसिद्धि) के कर्त्ता कहे गये हैं। वे सुराधीश्वरपूज्यपाद, अप्रतिमौषधर्द्धि, 'विदेहजिनदर्शनपूतगात्र' थे। उनके पादप्रक्षालित जल से लोहा भी सुवर्ण हो जाता था (१०८)*।

गोल्लाचार्य—ये मुनि होने से प्रथम गोल्ल देश के नरेश थे। नूतन चन्दिल नरेश के वंशचूड़ामणि थे (४७)।

त्रैकाल्ययोगी—इन्होंने एक महाराक्षस को अपना शिष्य बना लिया था। उनके स्मरणमात्र से भूत प्रेत भाग जाते थे। उन्होंने करञ्ज के तेल को घृत में परिवर्तित कर दिया था (४७)।

गोपनन्दि—बड़े भारी कवि और तर्क प्रवीण थे। उन्होंने जैन धर्म की वैसी ही उन्नति की जैसी गङ्गनरेशों के समय में हुई थी। उन्होंने धूर्जटि की जिह्वा को भी स्थगित कर दिया था (५५—४९२)।

प्रभाचन्द्र—ये धारा के भोज नरेश द्वारा सम्मानित हुए थे (५५)।

दामनन्दि—इन्होंने महावादि 'विष्णुभट्ट' को परास्त किया था जिससे वे 'महावादिविष्णुभट्टपरट्ट' कहे गये हैं (५५)।

जिनचन्द्र—ये व्याकरण में पूज्यपाद, तर्क में भट्टाकलङ्क और साहित्य में भारवि थे (५५)।

---

*विशेष जानने के लिये माणिकचन्द्र ग्रन्थमाला के रत्नकरण्ड श्रावकाचार की भूमिका व 'जैन साहित्य संशोधक' भा० १ अं० २, देखिए पृ० ६०-६०।

रामदचन्द्र—इन्होंने चालुक्य नरेश के कटक में वाग्-वरदायी की उपाधि प्राप्त की थी (५३)।

यश:कीर्ति—इन्होंने सिंहल नरेश से सम्मान प्राप्त किया था (५६)।

कलधौतनन्दिकीर्ति—राक्षिनी आदि भूत-प्रेतों को भगाने में प्रवीण थे (५५)।

श्रुतकीर्ति—'तापत्रयाण्डवीय' काव्य के कर्ता थे। यह काव्य अनुलोमप्रतिलोम नामक चित्रालङ्कार-युक्त था अर्थात् यह आदि से अन्त व अन्त से आदि की ओर एक सा पढ़ा जा सकता था। जैसा कि काव्य के नाम से ही विदित होता है यह द्वयर्थक भी था। श्रुतकीर्ति ने देवेन्द्र व अन्य विपक्षियों को बाद में परास्त किया था। सम्भव है कि उक्त देवेन्द्र वही नाम के वे ही श्वेताम्बराचार्य हों जिनके विषय में प्रभावक चरित में कहा गया है कि इन्होंने दिगम्बराचार्य कुमुदचन्द्र को परास्त किया था। (लेख सं० ७० के नीचे का फुटनोट देखिए।)

वादिराज—जयसिंह चालुक्य द्वारा सम्मानित हुए थे (५४)।

चतुर्मुखदेव—पाण्ड्य नरेश से स्वामी की उपाधि प्राप्त की थी।

इन आचार्यों के अतिरिक्त अन्य जिन प्रभावशाली आचार्यों का परिचय हमें लेखों से मिलता है उनका विवरण ऊपर ऐति-

में कोई चारित्र-भेद नहीं है। कई लेखों (१११, १२६ आदि) में बलात्कारगण का उल्लेख है। इन्हीं उल्लेखों से स्पष्ट है कि यह भी नन्दिगण व देशीगण से अभिन्न है।

लेख नं० १०५ में कहा गया है कि प्रत्येक संघ गण, गच्छ और बलि (शाखा) में विभाजित है। देशीगण का सबसे प्रसिद्ध गच्छ **पुस्तकगच्छ** है जिसका उल्लेख अधिकांश लेखों में पाया जाता है। इसी गण का दूसरा गच्छ 'वक्रगच्छ' है जिसकी एक परम्परा लेख नं० ५५ (लगभग शक १०८२) में पाई जाती है। लेख नं० १०५, १०८ व १२६ में देशीगण की **इंगुलेश्वरबलि** (शाखा) का उल्लेख है। बलि या शाखा किसी आचार्य-विशेष व स्थान-विशेष के नाम से निर्दिष्ट होती थी। देशीगण की एक दूसरी 'हनसोगे' नामक शाखा का उल्लेख लेख नं० ७० में पाया जाता है। लेख घिसा हुआ होने से वहाँ यह स्पष्ट नहीं ज्ञात होता कि यह शाखा देशीगण की ही है। पर जिन आचार्यों (गुणचन्द्र व नयकीर्ति) को वहाँ हनसोगे शाखा का कहा है वे ही लेख नं० १२४ में मूल स घ देशीगण, पुस्तकगच्छ के कहे गये हैं। इसी से उक्त शाखा का देशीगणान्तर्गत होना सिद्ध होता है। हनसोगे शाखा का कई अन्य लेखों में भी उल्लेख आया है। हनसोगे एक

पुस्तकगच्छ और वक्रगच्छ

इंगुलेश्वरबलि

हनसोगे व पनसोगे बलि

स्थान-विशेष का नाम था। कहीं-कहीं इसे पनसोगेवलि भी कहा है। (रि० ए० जै० नं० २२३, २३६, ४४६ आदि)

अनेक लेखों (२८, ३१, २११, २१२, २१४, २१८) में नदिनूर संघ का उल्लेख है। इसी संघ को कहीं-कहीं (२७, २०७, २१५) नमिनूर संघ कहा है। इसी का दूसरा नाम 'मयूर संघ' पाया जाता है (२७, २६)। लेख नं० २७ में पहले नमिनूर संघ का उल्लेख है और फिर उसे ही मयूर संघ कहा है। लेख नं० २६ में इसे 'मयूर ग्राम' संघ कहा है जिससे स्पष्ट है कि यह संघ वलि व शाखा के समान स्थान-विशेष की अपेक्षा से पृथक् निर्दिष्ट हुआ है। कहीं पर स्पष्ट उल्लेख तो नहीं पाया गया पर जान पड़ता है कि यह भी देशीगण के ही अन्तर्गत है। इसी प्रकार जो लेख नं० १६४ में **कितूरसंघ*** नं० २०३, २०६ में **कोलातूर संघ** नं० ४६६ में **दिण्डिनूर शाखा** व नं० २२० में **'श्रीपूरान्वय'** का उल्लेख है वे सब भी देशीगण की ही स्थानीय शाखाएँ विदित होती हैं।

नदिनूर, नमिनूर व मयूर संघ

---

* कितूर मैसूर जिले के हेगडदेवनकोटे तालुका में है। इसका प्राचीन नाम कीर्तिपुर था जो पुन्नाट राज्य की राजधानी था। कन्नड साहित्य में पुन्नाट राज्य का उल्लेख है। टालेमी ने भी 'पौन्नट' नाम से इसका उल्लेख किया है। इसी राज्य का पुन्नाट संघ प्रसिद्ध है। हरिवंश पुराण के कर्ता जिनसेन व कथाकोष के कर्ता हरिषेण पुन्नाट-संघीय ही थे। सम्भवतः कितूर संघ पुन्नाट संघ का ही दूसरा नाम है।

इस तालिका लेख सं० १०,११,१२,१३,२०,२० २१ २२,१०२,१०८,१११,११३ और ११२ को छोड़ शेष लेखों में उल्लिखित आचार्यों का परिचय।

क्रम संख्या	आचार्य का नाम	गुरु का नाम	गण, गच्छ, अन्वय आदि	लेख सं०	समय ई० सन् में	विशेष विवरण
१	[illegible]	[illegible]	×	१२	८०१२२	समाधिमरण।
२	[illegible]	×	×	१३	"	समाधिमरण। अद्दयदत्त और पद्मगुप्त मुनीन्द्र ने जिस वसदि की रचना की थी उसके क्षीण होने पर इन मुनिराज ने उसे पुनरुद्धारित किया।
३	[illegible]	"	×	१२२ (१२४) (२१७)	"	समाधिमरण। इनके अनेक शिष्य थे। समाधि के समय 'दिगिभराज' आदी थे। लेख सं० १२२ व २१७ यद्यपि क्रमशः सन् ९६० ई० आदि के अनुमान किये जाते हैं तथापि सम्भवतः इनमें भी इन्हीं आचार्य का उल्लेख है। लेख सं० २१७ में ये 'परमसयद्दं-सरु' पद से विभूषित किये गये हैं व उनकी शिष्या' के कहे गये हैं।
४	[illegible]	×		१८३	"	इनके किसी शिष्य ने समाधिमरण किया।
५	[illegible]	×	"	"	८०१२२	गुरु शिष्या का समाधिमरण। ये दो सम्भवतः लेख सं० ६ के गुरुवेन गुरु के व लेख सं० ६१ के कुरवर्त्ति गुरु के गुरु थे।

नंबर	आचार्य का नाम	गुरु का नाम	संघ, गण, गच्छादि	लेख नं०	समय [illegible] सं० में	विशेष विवरण
६	चरितश्री मुनि	[illegible]	×	३	च० ६२२	समाधिमरण।
७	पानप (भानद)	×	×	६	,,	समाधिमरण।
८	बटदेव गुरु	धर्मसेन गुरु	×	७	,,	,, । इनके गुरु 'किसुवे' परगने में 'वेल्मार' नामक स्थान के थे।
९	उग्रसेन गुरु	पद्मिनि गुरु	×	८	,,	,, । इनके गुरु 'मालनूर' के थे। उग्रसेनजी ने एक मास [illegible] अनशन किया।
१०	गुणसेन गुरु	मौनि गुरु	×	९	,,	,, । लेख नं० २ में सम्भवतः इन्हीं मौनिगुरु का उल्लेख है। गुणसेन 'कोडर' के थे।
११	उल्लिखित गुरु	×	×	११	,,	,, ।
१२	काडाभि(कलाधर) गुरु	×	×	१२	,,	एक शिष्य का समाधिमरण।
१३	नागसेन गुरु	ऋषभसेन गुरु	×	१४	,,	समाधिमरण।
१४	सिंहनंदि गुरु	वेट्टदे गुरु	×	१६	,,	,, ।
१५	गुणभूषित	×	सन्दिगगच्छ(?)	२१	,,	,, । लेख बहुत घिसा है, इससे भाव स्पष्ट नहीं हुआ।

नं०	आचार्य का नाम	गुरु का नाम	संघ, गण, गच्छादि	लेख नं०	समय	विशेष विवरण
२९	भट्टदेवाचार्य	×	×	१९२	श०६२२	समाधिमरण।
३०	रत्ननन्दि मुनि	×	×	१९६	"	" ।
३१	पुष्पनन्दि	×	×	१९७	"	" ।
३२	विनोक भट्टारक	×	कोल्हापुर संघ	२०३	"	" ।
३३	इन्द्रनन्दिआचार्य	×	×	२०५	"	" ।
३४	पुष्पसेनाचार्य	×	नविलूर संघ	२१२	"	समाधिमरण।
३५	श्रीदेवाचार्य	×	×	२१३	"	"
३६	मल्लिसेन भट्टारक	×	×	१४६	अनु० ४थी शताब्दि	इनके एक शिष्य ने तीर्थ वन्दना की।
३७	कुमारनंदिभट्टारक	×	×	२२७	"	×
३८	अजितसेनभट्टारक " गुरु	×	×	३८ ६७	अनु०८२१	लेख नं० ३८ में कहा गया है कि गङ्गनरेश मारसिंह ने इनके निकट समाधिमरण किया। व लेख नं० ६७ के अनुसार इनके शिष्य चामुण्डराय के पुत्र जिनदेवन ने जिन-मंदिर बनवाया।
३९	मठधारिदेव	नयनन्दि विमुक्त	×	२०४	अनु०९७०	नयनन्दि विमुक्त के एक शिष्य ने तीर्थ वंदना की।
४०	रत्ननन्दिदेव	×	×	४१८	श०१०००	महामण्डलेश्वर त्रिभुवनमल्ल कोङ्गाल्व ने

						कुछ भूमि का दान दिया।
४१	प्रभाचन्द्रसिद्धान्त देव	×	×	५००	श०१००।	जैनालय के हेतु कोङ्गाल्व नरेश अदटरादित्य द्वारा भूमिदान। उपाधि-उभयसिद्धान्तरत्नाकर।
४२	गण्डविमुक्तदेव	×	मूलसंघ कानूर गण तगरिल गच्छ	"	"	कोङ्गाल्वनरेश राजेन्द्र पृथ्वी द्वारा वसती-निर्माण और भूमिदान।
४३	देवनन्दि भट्टारक	×	×	५५१	श०१०००	
४४	गोपनन्दि पण्डित देव	चतुर्मुखदेव	मू० दे० पु०	५१२	श०१०१२	पोय्यलनरेश त्रिभुवनमल्ल एरेयङ्ग ने वसतियों के जीर्णोद्धार के हेतु ग्राम का दान दिया। गोपनन्दि ने क्षीण होते हुए जैनधर्म का गङ्ग नरेशों की सहायता से पुनरुद्धार किया। ये षट्दर्शन के ज्ञाता थे।
४५	देवेन्द्रसिद्धान्तदेव	×	"	"	"	उपर्युक्त नरेश के गुरुओं में से थे।
४६	अकलङ्क पण्डित	×	×	१६६	श०१०२०	×
४७	सागनन्दि देव	×	×	२२४	"	चरणचिह्न हैं।
४८	चन्द्रकीर्तिदेव	×	×	२२५	"	"
४९	अमरनन्दिपण्डित	×	×	२२	श०१०२२	एक शिष्य ने देववन्दना की।
५०	शुभचन्द्रसि० देव	कु०मलधारिदेव	मू० दे० पु०	४६	१०२०	ये पोय्सल नरेश विष्णुवर्द्धन के मंत्री
				५१	१०२१	गंगराज दण्डनायक और उनके कुटुंब
				५५,५३, ५४५५,	१०३०	के गुरु थे। इन्होंने [illegible] कुटुम्ब के सदस्यों से कितने ही जिनालय निर्माण कराये,

नंबर	आचार्य का नाम	गुरु का नाम	संघ, गण, गच्छादि	लेख नं०	समय	विशेष विवरण
				४४६, ४४७, ४८६, ४८६,		जीर्णोद्धार कराया, मूर्तियाँ प्रतिष्ठित कराईं और कितनों ही को दीक्षा,
					ई० १०४१	संन्यास आदि दिये।
				४६	१०४२	
				४८, ६२	१०४४	
				४३	१०४०	
				६०	ई० ११००	
२१	दिवाकरनन्दि	देवेन्द्र सि० देव	मू० दे० पु०	११६	१०४१	इस लेख से यह गुरुक्रम विदित होता है— देवेन्द्र सि० देव | दिवाकरनन्दि | मलधारिदेव शुभचन्द्र देव सि० मु०
२२	भानुकीर्ति मुनि	×	मू० दे०	२२६	१०३६	पोय्सल राजगेट्टि ने इनसे दीक्षा ली।
२१	प्रभाचन्द्र सि० देव	मेघचन्द्र त्रै० देव		२१, २२	१०७१	इनकी एक शिष्या ने पट्टशाला (पाषाण-
				४५	१०४३	लय) स्थापित कराई। ये विष्णुवर्द्धन
				४६	१०४५	नरेश की रानी शान्तलदेवी के गुरु थे।

३७	भास्करीर्त्तिदेव	×	×			
३८	कनकनन्दि	×	×			
३९	वर्द्धमानदेव	×	×			
४०	हरिचन्द्रदेव					
४८	गण्डविमुक्त सि० देव	×	मू० दे० गु०	११८	१०५०	इनके शिष्य दण्डनायक भरतेश्वर ने मुनि-वस्ति स्वामी का पादपीठ निर्माण कराया।
				२४१	अ०१०७०	
४१	अयकीर्त्ति	×	×	९१०	१०५०	विष्णुवर्धन नरेश के राज्यकाल में अय-कीर्त्ति का स्वर्गवास हो जाने पर कल्याण-कीर्त्ति को जिनालय बनवाने व पूजनादि के हेतु भूमि का दान दिया गया।
४०	कल्याणकीर्त्ति	×	×			
४१	भानुकीर्त्तिदेव	×	×	१४४	अ०१०९०	
४२	माधवचन्द्रदेव	शुभचन्द्र सि०देव	मू० दे० गु०	"	"	
४३	अयकीर्त्तिदेव	×	×	२४४	अ०१०९९	
	अ०अ०(हिरिय)					
४४	अयकीर्त्ति देव (छिद्र)					
४५	शुभकीर्त्तिदेव	×	×	१८८	अ०१०९०	

नंबर	आचार्य का नाम	गुरु का नाम	संघ, गण, गच्छादि	लेख नं०	समय	विशेष विवरण
१६	त्रिकालयोगी	×	×	४०३	श० १०१०	
१७	अभयदेव	^	मूलसंघ	"	"	
१८	पु० भट्टारक देव	■	×	१३७	श० १०८०	हुल मंत्री के गुरु।
१९	नयकीर्ति सि० देव (म० म०)	गुणचन्द्र सि० दे०	मू० दे० पु० इनसोगे शाखा	"	"	हुल मंत्री ने ग्राम का दान दिया।
				७८	श० १०२०	
				१२२	"	
				११७-२०	"	
				१२४	"	
				१२६	"	
				१२७	"	
२०	रामचन्द्र दे० देव			१३८	१०८१	
२१	भानुकीर्ति सि० देव			१३७	श० १०८०	
२२	बालचन्द्रदेव अध्यात्मि	म० म० नय-कीर्ति देव	मू० दे० पु० इनसोगे शाखा	६६	" १०६२	
२३	प्रभाचन्द्रदेव			७०	" १०६२	
				४६१	" १०६६	कुन्दकुन्दाचार्य के प्राभृत ग्रंथ पर इनकी
				६०	" ११००	कनाड़ी टीका पाई जाती है।
				१०४	"	

					१८७	"	
७५	माधवनन्दि भट्टारक				८५	" ११०७	
७६	पद्मनन्ददेव मंत्रवादि				१२४	" ११०१	
७१	मेरिचन्द्रपं० देव				११६	"	
					११७	११०४	
					१३०	ग्र०१११८	
					१०३		
					१२६		
					१०८	" ११२०	
					१२८	" ११२८	
					८१	ग्र०११२१	
७७	ललनन्दि मुनि						
७८	माधवचन्द्र व्रती	देवकीर्ति म०म०		×	३१	१०८२	देवकीर्तिगुरु बड़े भारी यति, मार्तंड और बना थे। [redacted] निधि को इनका स्वर्गवास होने [redacted] शिष्यों ने इनकी निषद्या बनवाई।
७९	त्रिभुवनमल्ल योगी						
८०	मेघचन्द्र	बालचंद्र अध्यात्मी	मू० दे० गु०		३१६	११०८	इनके [redacted] शिष्य रामदेव रिश्व ने जिनाडय
८१	नयकीर्ति देव	(द्वितीय) नय-कीर्ति देव		×	४०२	ग्र०१११०	बनवाया व दान दिया।
८२	धनकीर्ति देव	×		×	२४३	ग्र०११२१	

नं०	आचार्य का नाम	गुरु का नाम	संघ,गण,गच्छादि	लेख नं०	समय	विशेष विवरण
८३	चन्द्रप्रभदेव म० म०	हरियनपट्टीति	×	८८,८९	श १९०८	
८४	चन्द्रकीर्ति	×			११२०	
८५	कनकनन्दिदेव	×	×	२३८	श ११२०	
८६	मल्लिषेण	×	×	२४१	,,	इनकी प्रतिमा है।
८७	सागरनन्दि सि० देव	×	×	४९१	,,	
८८	शुभचन्द्र त्रै० देव	शुभचन्द्र त्रै० देव	मू० दे० पु०	४७१	,,	
८९	वादिराज	माधवनन्दिसि० देव	,,	,,	,,	
९०	मल्लिषेण मठधारि	×	×			
९१	श्रीपाल योगीन्द्र	×	×	४१९	श० ११२२	
९२	वादिराजदेव	×	×	,,	,,	
९३	शान्तिसिंगपण्डित	श्रीपाल योगीन्द्र	×	,,	,,	
९४	परवादिमल्ल पण्डित	,,	×	,,	,,	
९५	नमिचन्द्र पं० देव म० म० राजगुरु	×	×	४७९	११२९	

९९	अभयनन्दि	×	×	१२१	अ० ११००	
१०	सुरकीर्ति	×	×	"	"	
१८	गुणचन्द्र	×	×	"	"	
१९	भानुकीर्ति	माधवनन्दि सि० च०	मू० दे० गु०	५१६	११००	
१००	माधवनन्दि महारक	भानुकीर्ति	"	"	"	
१०१	चन्द्रप्रभदेव	सुरकीर्ति देव म० म०	×	९९	अ० ११९६	
१०२	चन्द्रकीर्तिमहारक	×	×	९९	अ० ११९०	
१०३	प्रभाचन्द्रमहारक	×	×	९९,१०	"	
१०४	त्रिभुवनचन्द्रदेव	हरिचन्द्रदेव म० म०	×	११०	१२००	इन आचार्यों और अन्य सज्जनों ने चन्दा किया।
१०५	पद्मनन्दिदेव	चन्द्रप्रभदेव	×	"	"	
१०६	कुमुदचन्द्र	×	×	१२१	१२०५	
१०७	माधवनन्दि सि० च०	×	×	"	"	होयसलराय राजगुरु। सम्भवतः ये ही इस शास्त्रसार के कर्ता हैं जिसका उल्लेख प्रारम्भ के एक श्लोक में आया है। माणिक-चन्द्र ग्रन्थमाला नं० २१ में एक 'शास्त्र-सार समुच्चय' नामक ग्रन्थ छपा है और भूमिका में कहा गया है कि सम्भवतः ये कुमुदचन्द्र के गुरु थे। (देखो मा० ग्र० भूमिका पृ० २३-२४)

नंबर	आचार्य का नाम	गुरु का नाम	संघ,गण,गच्छादि	लेख नं०	समय	विशेष विवरण
१२१	अजितकीर्ति	चारुकीर्ति | अजितकीर्ति | शान्तिकीर्ति	देसी गण	७२	१०११	एक मास के अनशन से समाधिमरण।
१२३	चारुकीर्ति पं० आचार्य	×	मू० दे० पु०	४३३	१०३२	मैसूर-नरेश कृष्णराज की ओर से सबदें ग्राम दी।
१२४	सन्मतिसागरवर्णी	चारुकीर्ति गुरु	"	४३४	१०४२	
				४३५	१०३८	इनके मनोरथ से जिनस्थापना की गई।
				४३६	"	
				४३७	"	
				४३८	१०८०	
				४३९	"	

संकेताक्षरों का अर्थ

अ० व अनु० = अनुमानतः। कु० = कुक्कुटासन। दे० देव = दैवियदेव। पं० आचार्य = पंडिताचार्य। ब्र० = ब्रह्मचारी। म० म० = महामण्डलाचार्य। मू० दे० पु० = मूल संघ, देसीगण, पुस्तक-गच्छ। सि० देव = सिद्धान्तदेव। सि० च० = सिद्धान्त चक्रवर्ती। सि० मु० = सिद्धान्त मुनीश्वर।

पार्श्वनाथ चरित्र के दर्शित पथ
और के मिलानेख

१ (१)

(जनधर्म वर्ष ४ पृ० ५२१)

सिद्धम् स्वस्ति ।

जितभवभवता श्रीमद्वर्द्धमानेन तीर्थे-विधायिना ।
वर्द्धमानेन सत्प्राप्त-सिद्धि-श्रीव्यासृतात्मना ॥ १ ॥
श्रीकाश्रीक-दृशोधारवस्तु श्रान्तु धरित्र्यु वः ।
*तेविदाश्रीक-शशि· स्याद्यनुते यत्र देवता ॥ २ ॥
जगत्यधिक्य-माहात्म्य-वृत्तविस्तरसंयुतः ।
श्रीपार्श्वनाथ पुण्यीय-महाहेन्त्यगुणेयुतः ॥ ३ ॥
तस्तु श्री-विशालकम् (लाकाम्) जयत्यत्र जगद्धितम् ।
सत्य शासनमत्यन्तं प्रवादि-मत-शासनम् ॥ ४ ॥
अत्र खलु सकल-जगदुदय-करणोदित-निरतिशय-गुण-
पर्यायभूत-परमजिन-शासन-सरस्वतीमभिवर्द्धित - अव्यजन - कमल-
विकासन-वितिमिर-गुण-किरण-सहस्र-सटोलि महावीर-सवितरि
परिनिर्वृते भगवत्परमर्षि - गौतम - गणधर - साक्षाच्छिष्य-

---

* अविद्या † विशालकेन

[illegible]

१ (३०)

(शासन संख्या ६२२)

श्रीदेवरेनाड शिष्टुर मौनिगुरुविगळ शिष्यरिदर् नागमतिगळियर् मूल सिद्धन् नोन्तु मुडिप्पिदर् ।

* पल्लिकायं † प्रभाचन्द्रेय ‡ ब्रह्म § मुक्तिगे

[अरेकेरेनाडु] में चिन्नूर के मंत्रि गुरु की शिष्या आर्यशान्तियर् ने तीन आर्या के व्रत के पश्चात् शरीरान्त किया।]

३ (१२)

(लगभग शक सं० ६२२)

ओं। दुरितामूद् वृषभाक्षीन्तक्षरे पादेदत्तानगीनेन्द्रमाणांक्

दुर-मिथ्यात्व-प्रमुढ-स्थिरतर-मृषमान्मोहिगन्धेभमाथ् दाम।

धुरविद्याछत्रभेन्द्रान्गुरुवरमुनिमिन्कृत्व शान्तर्कटिप्रमाणेन्

चरितश्रीनामधेयप्रभुमुनिन्प्रवरम् नांग्नुतीर्त्यकथानादान॥

[पाप, अज्ञान व मिथ्यात्व को इस धीर इन्द्रियों का दमन कर कठिन तपश्चर्या का अतिशयी मुनि-व्रत धारण करने वाले वृषभ को शान्त हुए।]

४ (१७)

(लगभग शक सं० ६२१)

.....गल्लोन्नु गुडिपिदर्।

[उनके द्वारा बनवाया गया।]

५ (१८)

(लगभग शक सं० ६२६)

श्रीमत् श्री जयधुलाद् गिर् तीरदेरुच् मेलन्नु गुडिपिदर्।

[जयधुलाचार्य के शिष्यों द्वारा बनवाया गया।]

६ (८)

(लगभग शक सं० ६२८)

श्री मेरुदेवरेय पालपर्-अटारगोन्नु गुडिपिदार्।

[चिक्कबेट्टा अभिलेख के अनुसार अरेकेरेनाडु का अरेकेरे अभिन्न है। अतएव ये अरेकेरेनाडु की प्रजा का दान हो (हुंसे एप्रफी ८, ११८) सकता है।

[मेदुवोले के दानव अरसा ने अनशन प्राणोत्सर्ग किया।]

७ (२५)

(लगभग शक सं० ६२२)

श्री किरूरा वेल्मादरा धर्म्मसेनगुरुवडिगला शिष्यर् आलदेयगुरुवडिगल् सन्यासनं नोन्तु मुडिप्पिदार्।

[किरूर में वेलमार के धर्मसेनगुरु के शिष्य बड़ेगुरु के सन्यासव्रत पाल प्राणोत्सर्ग किया।]

८ (२५)

(लगभग शक सं० ६२२)

श्री मासनूर पट्टिनि गुरुवडिगल शिष्यर् उग्रसेनगुरुवडिगल् मोन्दु तिङ्गल् सन्यासनं नोन्तु मुडिप्पिदार्।

[मसनूर के पट्टिनिगुरु के शिष्य उग्रसेनगुरु ने एक मास तक सन्यास-व्रत पाल प्राणोत्सर्ग किया।]

९ (८)

(लगभग शक सं० ६२२)

श्री अगलिय मौनिगुरवर शिष्य कोट्टूरद गुणसेनगुरुवर्गोन्नु मुडिप्पिदार्।

[अगलि के मौनिगुरु के शिष्य कोट्टूर के गुणसेन गुरु ने व्रत पाल प्राणोत्सर्ग किया।]

१० (७)

(लगभग शक सं० ६२२)

श्री पेरुमालु गुरुवडिगला शिष्य धणणे कुत्तारेविकेगुरवि...डिप्पिदार्।

---

* एचि।

देवनाम्पुर की शिष्या कन्नेकलाकोंडुरुवि (१) के
कराये हुये।]

११ (६)

(लगभग शक सं० ६३६)

श्री एरेगित्तु गुरवडिगल् शान्तु.....दार्।

[एरेगित्तु गुरु (या एरेयडि के गुरु) के शान्त कराये
हुये।]

१२ (४)

(लगभग शक सं० ६३६)

कालीश्वर गुरवडिगल् शा ....

[कोडेनुरु (या कोडे के गुरु) के शान्त कराये (हुये)]

१३ (३३)

(लगभग शक सं० ६३७)

श्री कालाग्निगुरवडिगल शिष्यर् इरेकाड वेंकैडिय
यांदव कराय्कर गुरवडिगलिर्पत्तान्कु दिवसं सन्यासनदिं शान्तु
मुडिप्पिदार्।

[इरेकाड श्री वेंकटरि के कराय्कर गुरु कालाग्नि गुरु के
शिष्य थे इक्कीस दिन तक सन्यास व्रत धार शान्तोत्पन्न किया।]

१४ (३४)

(लगभग शक सं० ६३८)

श्री-ऋषभसेन गुरवडिगल शिष्यर् नागसेन गुरु-
वडिगल् सन्यासनविधि इन्तु मुडिप्पिदार्।

* कराय्कर का तात्पर्य गुरुवृन्द का समूह होता है।

नागसेनमनघं गुणाधिकं नागनायकजितारिमण्डलं ।
राजपूज्यमखिलश्रीयाम्पदं कामदं हतमदं नमाम्यहं ॥

[ऋषभसेनगुरु के शिष्य नागसेनगुरु ने सन्यास-विधि से प्राणोत्सर्ग किया ।]

१५ (२)

(लगभग शक सं० ५७२)

श्री । उद्यानैर्ज्जितनन्दनं च्यवदलिव्याप्तसुरकोत्पन्न—
व्याप्तिश्रीकृत†-शालिपिञ्जरदिशं कृत्वा तु बाह्याचलं ।
सर्व्वप्राणिदयार्त्थदाख्यिमगवद्ध्यानेन‡ सम्बोधयन्
आराध्याचलमस्तके कनकसत्सेनोत्मवत्सत्पति ॥ १ ॥
अहो बहिर्गिरिन्त्यक्त्वा बलदेवमुनिश्रीमान् ।
आराधनम्प्रगृह्यात्वा सिद्धलोकं गतर्पुनः ॥ २ ॥

१६ (३०)

(लगभग शक सं० ६२२)

श्री . . . म्मडिगल् नोन्तु कालं केयूदार् ।

[. . . म्मडिगल ने व्रत पाल देहोत्सर्ग किया ।]

१७-१८ (३१)

(लगभग शक सं० ५७२)

श्री —भद्रबाहु मचन्द्रगुप्तमुनीन्द्रयुगमदिनोप्पेवल् ।
भद्रमागिद धर्म्ममन्दु बलिक्कवेन्दिनिसल्कलो ॥

---

† व्याप्ति श्रीकृत ‡ भगवंता (शा) सेन (सवा पुद्दीराम)

विट्टुमाधर शान्तिसेनमुनीश्वनाकिएवेल्गोल।
अट्टिमेलशनादि विट्टपुनर्भवकेरे आगि .. ॥

[जो जैन-धर्म भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त मुनीन्द्र के तेज से भारी समृद्धि को प्राप्त हुआ था उसके किञ्चित् क्षीण हो जाने पर शान्तिसेन मुनि ने उसे पुनरुत्थापित किया। इन मुनियों ने बेलगोल पर्वत पर अशन आदि का त्याग कर पुनर्जन्म को जीत लिया।]

१८ (३२)

(लगभग शक सं० ६२२)

श्री वेट्टेवे गुरवडिगलमाणाक्कर्स्सिद्धणन्दिगुरवडिगल्नोन्तु-काल्-केय्दार्।

[वेट्टेरेगुर के शिष्य सिद्धनन्दिगुरु ने व्रत पाल देहोत्सर्ग किया]

२० (२६)

(लगभग शक सं० ६२२)

....

.....परद्वारि पीठ दिल्दो नान्

.....तारि कुमारारि नर्च्चिकेय्येतां

स्थिरदरलिन्तुपेगुरम सुरलोकविभूति एय्दिदार्।

[.....इस प्रकार पेगुरम (?) ने सुरलोक विभूति को प्राप्त किया।]

२१ (२९)

(लगभग शक सं० ६२२)

स्वस्ति श्रीगुणभूषितमादि वज्जाङ्देरिमिदा निसिदिगे सद्धर्म्मगुरुसन्तानान् सन्दिङ्ग-गणवा-नयान् गिरिवल्लदामे-

लवि.....स्थलमान् तीरदाणमाकेल्लगं नेलदि मानदा सद्धम्मदा गेलि ससानदि पतान्।

[इस लेख का भाव स्पष्ट नहीं हुआ।]

२२ (४८)

(लगभग शक सं० १०२२)

श्री अभयणन्दि पण्डितर गृह कोत्तव्य चन्दिद्धि देवर वन्दिसिद।

[अभयनन्दि पण्डित के गृहस्थ शिष्य कोत्तव्य ने यहाँ आकर देव-वन्दना की।]

२३ (२८)

(लगभग शक सं० ६२२)

स्वस्ति श्रीहनुङ्गूरा मेल्लुगवासगुरवर्कल्यप्प वेट्टमेल्काल कैयुदार्।

[हनुङ्गूर के मेल्लुगवासगुरु ने कल्लप्प (कलप्प) पर्वत पर देहोत्सर्ग किया।]

२४ (३५)

(लगभग शक सं० ७२२)

स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्दपदवाक्यप्रमाण्या··· महामहासामन्ताधिपति श्रीयल्लम···हा-राजाधिराज··· मेश्वर-महाराजरा मगन्दिर् एणावलोक-श्रीकल्यप्पन् पृथ्वीराज्यं गेय्व···रगर्क्कूल्यप्पु···ल पेर्म्माल्पिना पोन्नदिम-

इदु कोट्टदु···सेल अडिगलं मनसिजरा···गनाधरसि बेनेएत्ति
पैनमुज्जमिसुवन्ति कोट्टदु पोलमेरे सट्टग्गेरेय किलकेरे पैगि
अचरकल्ल मेगं अल्लिन्दा बसेल् कर्ग्गल्लमारदु सल्लु पेरिय आल
···वारि मरल् पुणुमपेरि···तारेयु आलरे मेरे दुवेट्टगं निलकल्लु
कोवलदा पेरिय एम्बु अल्लि कुडिनु अरमरा श्रीकरणमुं·····
·····गादियर दिण्डिगगामुण्डरम् एन्नुवरु···वल्लभ-
वल्लभ-गामुण्डरम कन्दि वञ्चरु कण्डि मारम्मनुं कादलूर
श्रीविक्रम-गामुण्डरं कलिदुग्गगामुण्डरं अगदिपो·····
·····वरर··· ···रणपारगामुण्डरु अन्दमासल उत्तम
गामुण्डरं मविलूर नान्गगामुण्डरं बेल्गोलद गोविन्दपा-
डिय व..लगन्दुं बेल्गोलदा वलि गोविन्दपाडिगे कोट्टदु.

बहुभिर्व्वसुधाभुक्ता राजभिस्सगरादिभिः।
यस्य यस्य यदा भूमिः तस्य तस्य तदा फलं॥
स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धरां।
षष्टिवर्षसहस्राणि विष्टायां जायते कृमिः॥*

[श्रीकलभमहाराज के पुत्र महासामन्ताधिपति एरेयबंग श्रीकम्बय्यन् के राज्य में मनसिज (?) की रानी के व्याधि से मुक्त होने के पश्चात् यात्रा उत्सव समाप्त होने पर कुछ भूमि का दान दिया गया था, जिसकी सीमा आदि लेख में दी है। लेख दान की शपथ के साथ समाप्त होता है।]

* ये दो श्लोक अन्यत्र भी बहुत जगह हैं। इसमें 'यदाभूमि' के स्थान पर 'यस्यभूमि' व 'स्वदत्तां' 'परदत्तां' 'हरन्ति' 'दत्ताम्' पाठ हैं।

चन्द्रगिरि पर्वत पर के शिलालेख।

२५ • (६१)

(लगभग शक सं० ८२२)

श्रीमत्·····पु···शिष्यर्ष्टरिट्टनेमि माडिसिदर् सिरं.

[..के शिष्य अरिट्टनेमि ने बनवाया।]

शासनबस्ति के पूर्व की ओर के शिलालेख

२६ (८८)

(लगभग शक सं० ६२२)

सुरचापंबोलं विद्युल्लतेगलं तेरवोल्मब्जुदोस्तोरि वेगं ।
पिरिदुं श्रीरूप-लीला-धन-विभव-महाराशिगल्निल्लवार्गं ॥
परमार्थं मेच्चेनानीपरधियुलिरवानंन्दु सन्यासनं-गै- ।
ष्टुरु मत्वमनन्दिसेन-प्रवर-मुनिवरन्देवलोकक्के सन्दान् ॥

[रूप, लीला, धन व विभव, इन्द्र-धनुष, बिजली व ओसबिन्दु के समान क्षणिक हैं, ऐसा विचारकर नन्दिसेन मुनि ने सन्यास धार सुरलोक को प्रस्थान किया ।]

२७ (११४)

(लगभग शक सं० ६२२)

श्री ॥ शुभान्वित-श्रीनमिनूरमह्रदा । प्रभावती····· ।
प्रभाप्यर्मा-पर्व्वतदुस्से नोन्मुताम् । स्वभाव सौन्दर्य्य करात्म-
राधिपर् ॥
ग्रामं मयूरसङ्गेऽस्य आर्य्यिका दमितामती ।
कटवप्रगिरिमध्यस्था साधिता च समाधिता ॥

[नमिनूरगण की प्रभावती ने इस पर्वत पर तप धार दिव्य शरीर प्राप्त किया ।]

[मयूरग्रामसंघ की आर्यिका दर्भिनामती ने कटवप्र पर्वत पर समाधि-मरण किया ।]

२८ (८८)

(लगभग शक सं० ६२२)

श्री ॥ तपमान्द्वादशदा विधानमुत्तदिन् कैरदेन्दुताधात्रिमेल् ।
चपलिल्ला नविलूर सद्व्रदमहानन्तामतीखन्तियार् ॥
विपुलश्रीकटवप्रनल् गिरियमेल्नोन्तोन्दु सन्मार्गदिन् ।
उपमील्या सुरलोकसौख्यदेडेयान्तामेंदि इल्दाल् मनम् ॥

[नविलूर संघ की अनन्तामती-गन्ति ने द्वादश तप धार कटवप्र पर्वत पर यथाविधि व्रतों का पालन किया और सुरलोक का अनुपम सुख प्राप्त किया ।]

२९ (१०८)

(लगभग शक सं० ६२२)

श्री ॥ अनवरतमासन्नि भूत-शरण्यमेन्तें विच्छेयं
वनदोलयोग्य... नक्कुमदि.....गलो...
मनवमिकुल .....गदि...नोन्तुसमाधिकूडिदों
अनुपम दिव्यप्पदु सुरलोकद मार्गं डोलिल्दरिन्दिनिम् ॥
मयूरग्रामसंहृत्य मौन्दर्या-ख्यार्य्य-नामिका ।
कटप्रगिरिशैलेच साधितस्य समाधितः ॥

[उपवास के साथ आत्म-संयम-सहित समाधि व्रत का पालन किया और सहज में अनुपम सुरलोक का मार्ग ग्रहण किया । (?)]

[मयूरग्रामसंघ की आर्या ने कटवप्र पर्वत पर समाधि-मरण किया ।]

३० (१०५)

(लगभग शक सं० ६२२)

भद्रादिनामनेकं गुणकीर्त्ति देन्तान्
तुङ्गोरुभक्तिवशदिन् तोरदिक्षिदेदम्
पोङ्गोल् त्रिचित्रगिरिकूटमयंकुचेलम्।

[गुणकीर्ति ने भक्ति सहित यहां देहोत्सर्ग किया।]

३१ (१०६)

(लगभग शक सं० ६२२)

नविलूरा श्रीसङ्घदुल्ले गुरवेनम्मोनियाचारिय्
अवराशिष्यरनिन्दिताग्र्यगणि···वृषभनन्दीमुनी।
भवविरक्तेन-सुमार्गदुल्ले नडेदोन्दाराधना-वेगदिन्
अवरं साधिसि स्वर्गलोकसुख-चित्तं.....माधिगल्।

[नविलूर संघ के मोनिय आचार्य के शिष्य वृषभनन्दि मुनि ने समाधिमरण किया।]

३२ (११३)

(लगभग शक सं० ६२२)

वनता मृत्युवरवानरि देन्दु सुपण्डितन्।
अनेक-शील-गुणमालेगलिन्मगिदोप्पिदोम्॥
विनय-देवसेन-नाम-महामुनि नोन्तु पिन्।
इन दरिद्दु पलिवट्टदे सान्दिवमेरिदान्॥

[मृत्यु का समय निकट जान गुणवान् और शीलवान् देवसेन महामुनि मन शुद्ध स्वर्ग-गामी [illegible]।]

३३ (८३)

(लगभग शक सं० ६२२)

एडेपरेगोनडे केय्दु तपे मरयममान्कोलगुरमन्नु ..।
बडं कोरेदिन्नुवाल्युदरिदिमेनगेन्दु समाधि कूडिए ॥
एडे-विडियल्कगडि कटवप्रवंणगिये निस्तदनन्यन्
पडेगमोलिप्प.....न्दा-सुरलोक-महा-विमानस्थननादं ।

["अब मेरे लिये जीवन अकारण है" ऐसा कहकर कोंड-कुंद संघ के.....(?) ने समाधि-व्रत किया और कटवप्र पर्वत पर से सुरलोक प्राप्त किया ।]

३४ (८४)

(लगभग शक सं० ६२२)

स्वस्ति श्री

अनवद्यगद्यादि-राद्धान्तदुल्ले प्रथित-यशो ..न्दकान्वन्दु..लाम्
विनयाचार प्रभावन्तपदिन्नधिकन्चन्द्र-देवाचार्य्य नामन्
उदित-श्री-कल्पमिप्पनुल्ले रिषिगिरि-शिले-मेल्नेन्तुवन्देहमिकि
निरवद्यन्नेरि स्वर्ग्ग शिवनिल्लेपडेदान्साधुगल्पूज्यमानन् ।

[मुनिराज के वशाग्रो, प्रभावयुक्त, शील-सदाचार-सम्पन्न चन्द्रदेव आचार्य कल्पप्प नामक ऋषिपर्वत पर व्रत पाल स्वर्गगामी हुए ।]

३५ (७६)

(लगभग शक सं० ६२२)

सिद्धम्

नेरेदाद व्रत-शील-नान्यि-गुणदिं स्वाध्याय-सम्पत्तिनिम् ।

करेदल्-नल्तप-धर्म्मदा-यसिमति-श्री-गन्तिपर्व्वेन्दुमेल् ॥
अरिदायुप्यमनेन्तु नोडेनगे तानिन्तेन्दु फल्वप्पिनुल्।
तोरदारायने-नोन्तु तीर्थ-गिरि-मेल् स्वर्गालयक्केरिदार् ॥

[व्रत-शील-आदि-सम्पन्न समिमति-गन्ति कलवप्पु पर्वत पर आई और यह कहकर कि मुझे इसी मार्ग का अनुसरण करना है तीर्थगिरि पर सन्यास धारणकर स्वर्गगामी हुई।]

कांचिन दोणे के मार्ग पर के शिलालेख

३६ (१४५)

(लगभग शक सं० ९२२)

श्री एरेयगवे कवट्टद लो.....।

[कवट्ट में एरेयगवे.....]

३७ (१४९)

(लगभग शक सं० १०७२)

श्रीमतु गरुडकेसिराज स्थिरं जीयातु ।

३८ (५९)

(शक सं० ८९६)

कूगे ब्रह्मदेव स्तम्भ पर

(दक्षिणमुख)

स्वस्ति म.....म् पदधि कृत्वाधि मेदिनी

..चक्र . ...धरो भुञ्जन् भुजासेर्यलात् ।

न्यश्रीजग.....पतेर्गङ्गान्वयस्माभुजां

मूर्धा-रत्नमभू.....वनिनाथस्तेन्दुमेयोदयः ॥ १ ॥

गर्यं । तस्य मकलभगतीतनोत्तुङ्गगङ्गकुलकुधुर-

कौमुदी-महातेजायमानस्य। सत्यवाक्यकोङ्कुणिवर्म्म-धर्म्म-महाराजाधिराजस्य। कुण्डराजोत्तरदिग्विजयविदितगुर्ज्जराधिराजस्य। वनगजमल्लप्रतिमल्लबलवदक्षदर्प्प-दलनप्रकटीकृतविक्रमस्य। गण्डमार्त्तण्ड-प्रतापपरिरक्षित-सिंहासनादि-सकल-राज्यचिह्नस्य। विन्ध्याटवीनिकटवर्त्ति...ण्डक-किरातप्रकरभङ्ग-करस्य। भुजबलपरि..... मान्यखेट-प्रवेशितचक्रवर्त्तिकट...विक्रम... श्रीमदिन्द्रराजपट्टबन्धोत्सवस्य।... ...समुत्साहितगमरसज्जयज्जल.....प...नस्य। मयोपनतयवनवासिदेशाधि..... मणिकुण्डलमदद्विपादि-समस्त-वस्तुप्र... ..समुपलब्ध-सद्धीर्त्तनस्य। प्रबलमाटूरवंशजस्य.....ज-सुतसत्व-भुज-बलावलेप-गजघटाटोपगर्व्वदुर्व्वृत्तसकलनेोलम्बाधिराजमकरविध्वंसकस्य। समुन्मूलितराज्यकण्टकस्य। सच्चूर्ण्णेोकृद्विगिरिदुर्गस्य। संहृतनरगाभिधानखरप्रधानस्य। प्रतापावनतचेर-चोल-पाण्डवपल्लवस्य। प्रतिपालितजिनशासनस्य।.....त-महाध्वजस्य। बलबदरिनृपद्विणापहरण.....हृतमहादानस्य। परिपालितरेवन्धभै...न्धुसम्बन्धबन्धुरावलस्य। श्रीनेोलम्बकुल(लान्त)कदेवस्य। शौर्य्यशासने धर्म्मशासने च समधरतु दिग्मण्डलान्तरमाकल्पान्तरमाचन्द्रतारम्॥

(पश्चिममुख)

.....या के त्यु पायान्त.....तिरिश्चरणोरुरं
..... नान्य एवाहतो ... ... श्रीगङ्गचूडामणि
...वना...द...शणि...कं पल्लव...मा...येनामितं...

...भुजावलेपमल...कृत्वा...गं स्वयं ... गुत्तियगङ्गभूपति ...
नोलम्बान्तकः॥ .....यिय.....मन्मुखं...युधि.....गादलव
.....प्रतिगज.....विक्रमं ॥...त्पलमिव... नोलम्बान्तकः
.....मूनोकादनेक-द्र...नेकयन्धान्धक... चोल-पल्लव...का
नन्दहेतोर...श्रीमारसिंह-चि ... तिलक-सत्र-चन्द्रय...चन्द्र
...व...दर्पर.....दर्पं...गं सं...गं...ह...रः॥...वद्रोपला
...न्महाविजयोत्सवे.....सिंहासनोर्व्वी-प...

इत्याधिष्ठित-वीर-सङ्कर-गिरः चालुक्य-चूडामणे
राजादित्य-हरेर्वधूरजनिश्रीगङ्ग-चूडामणि ।
दैत्येन्द्रैर्म्मधुकैटभप्रभृतिभिर्य्यत्तैर्म्मुरद्वे...
किं गाधारिमिरित्यमुद्धितमिति क्षमावद्ध-राद्धाङ्क...
...लैर्भरगासुरस्य वसुधानन्दाश्रुभिर्भैरिरा...
दार्ढ्यैरकरोत्सरागमवनीपद्मं नोलम्बान्तकः ।

(उत्तरमुख)

(प्रथम ८ पंक्तियाँ अपठ हैं)

..... गन... . ज्ञ-क्षमाभृतः ....
थाव ... न ... .. ह ...ति...सिना.....पद.....क्षि ॥
.....मिश्रीकृत-म.. क-वीर-विग्रय-तंत्र.....गुत्तिय-गङ्ग
भूपमिति यं विरुदं..... .....कृता.....ति पश्चिमद
.....वहम्यदुष्टावनि-कृत्यमिवामिगङ्गराज...न...कृत्य-
कृत...यक-लक्षय.....श्रीगङ्ग-चूडामणिरिति धरणी स्तुतिर्यं
.....कीर्त्तेः ॥ .....स्मन्ति मारसिंह-भूपतिर्निकाम्य-

[इस लेख में गङ्गराज मारसिंह के प्रताप का वर्णन है। इसमें कह
है कि मारसिंह ने (राष्ट्रकूट नरेश) कृष्णराज (तृतीय) के लि
गुर्जर देश को विजय किया, कृष्णराज के विपक्षी चक्रध्वज का मद चू
किया; विन्ध्य पर्वत की तली में रहने वाले किरातों के समूहों को
जीता; मान्यखेट में नृप (कृष्णराज) की सेना की रक्षा की, इन्द्रराज
(चतुर्थ) का अभिषेक कराया, पाताळमल्ल के कनिष्ठ भ्राता बज्रहस्त
को पराजित किया; बनवासीनरेश की धन सम्पत्ति का अपहरण किया,
माहुर वंश का मस्तक झुकाया, नोळम्ब कुल के नरेशों का सर्वनाश किया,
काहुवहि जिस दुर्ग को नहीं जीत सका था उस उच्चङ्गि दुर्ग को स्वाधीन
किया, शवराधिपति मरुग का संहार किया, चोड़ नरेश राजादित्य को
जीता, तापी-तट, मान्यखेट, गोनूर, उच्चङ्गि, बनवासि व पाभसे के पुत्र
जीते, व चेर, चोड़, पाण्ड्य और पल्लव नरेशों को परास्त किया व जैन
धर्म का प्रतिपालन किया और अनेक जिन मन्दिर बनवाये। अन्त में
उन्होंने राज्य का परित्याग कर अजितसेन भट्टारक के समीप तीन दिवस
तक सल्लेखना व्रतका पालन कर वेंकापुर में देहोत्सर्ग किया। लेख
में वे गङ्ग चूड़ामणि, नोळम्बान्तक, पृथिव-गङ्ग, सम्यक्त्वरत्ननिलय, गङ्ग-
विद्याधर, गङ्गकन्दर्प, गङ्गवज्र, गङ्गसिंह, सत्यवाक्य कोङ्गणिवर्म-धर्म-
महाराजाधिराज आदि अनेक पदवियों से विभूषित किये गये हैं।]

१९ (६२)

महानवमी मण्डप में

(शक सं० १०८५)

(पूर्वमुख)

श्रीमत्परमगम्भीर-स्याद्वादामोघलाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥ १ ॥

कैलासाभ्यदोले गङ्ग-चूडामणिया।
नुडिदने कावुदने एल्दे-
गिडदिरुजवनिट्ट रक्के निनगीवुदनें
नुडिदने एम्बदु कय्यदु
नुडिदुदु तप्पुगुमे गङ्ग-चूडामणिया॥

इन्तु विन्ध्याटवी-निकट-तापी-तटवुं। भान्यखेट-पुरवरवुं। गोनूरुमुच्चङ्गियुं। बनवासिदेशवुं। पाभसेयकोटेयुं। मोदलागे पल्लवेडेयोलमरियरं पिरियरुवं कादि गेल्दु पल्लवेडेगलोल महाध्वजमनेत्तिसि महादानंगय्दु नेगल्द गङ्ग-विद्याधरं। गङ्गरोलगण्डं। गङ्गरसिङ्गं। गङ्गचूडामणि गङ्गकन्दर्पं। गङ्गवज्रं। घलदुत्तरङ्गं। गुत्तियगङ्गं। धर्म्मावतारं। जगदेकवीरं। गुडिदन्तैगण्डं। महितमार्त्तण्डं। कदनकर्कशं। मण्डलिक शिरोरत्नं। श्रीमन्नोलम्बकुलान्तकदेवं पल्लवेडगलोलं बसदिगलुं मानस्तम्भगलुमं माडिसिद। मङ्गलं। धर्म्म(भ)द्गलं नसस्यं नडयिसिदनिलिय-सोन्दुवर्ष राज्यमं पत्तुविट्टु यङ्गापुरदोल् राजितरोनभट्टारकर श्रीपादमभिधियोल् आराधनाविधियिमूरुदे...सं नोन्तु समाधियं साधिसिदं॥

दृष्ट॥ एल्ले नोलम्बतिलक मन्तवेरेयं नी नीविकोल् निम्मनुं-गोल्ले माण्डलिक पाणडय पल्लव मयङ्ग)ण्डोडदिम्मिनमण्डलदिं पिङ्गदे निलवदोगनिवनिन्नुं स...गङ्ग-
मण्डलिक देवनिवासदत्त विजय-गोरव नोलम्बान्तकं॥

[इस लेख में गङ्गराज मारसिंह के प्रताप का वर्णन है। इसमें कथन है कि मारसिंह ने (राष्ट्रकूट नरेश) कृष्णराज (तृतीय) के लिए गुर्जर देश को विजय किया; कृष्णराज के विपक्षी चक्रध्वज का मद चूर किया; विन्ध्य पर्वत की तली में रहने वाले किरातों के समूहों को जीता; मान्यखेट में नृप (कृष्णराज) की सेना की रक्षा की, इन्द्रराज (चतुर्थ) का अभिषेक कराया; पाताळमल्ल के कनिष्ठ भ्राता वज्रहस्त को पराजित किया; वनवासीनरेश की धन सम्पत्ति का अपहरण किया; माहर वंश का मस्तक झुकाया, गोलम्ब कुल के नरेशों का सर्वनाश किया; कडुवट्टि जिस दुर्ग को नहीं जीत सका था उस उच्चङ्गि दुर्ग को स्वाधीन किया, शबराधिपति भरत का संहार किया; चौड नरेश राजादित्य को जीता; तापी-तट, मान्यखेट, गोनूर, उच्चङ्गि, वनवासि व पाभसे के युद्ध जीते, व चेर, चोड, पाण्ड्य और पल्लव नरेशों को पराजित किया व जैन धर्म का प्रतिपालन किया और अनेक जिन मन्दिर बनवाये। अन्त में उन्होंने राज्य का परित्याग कर अजितसेन भट्टारक के समीप तीन दिवस तक सल्लेखना व्रतका पालन कर बंकापुर में देहोत्सर्ग किया। लेख में वे गङ्ग चूडामणि, गोलम्बान्तक, गुत्तिय-गङ्ग, मण्डलिकत्रिनेत्र, गङ्ग-विद्याधर, गङ्गकन्दर्प, गङ्गवज्र, गङ्गसिंह, सत्यवाक्य कोङ्गणिवर्मे-धर्म-महाराजाधिराज आदि अनेक पदवियों से विभूषित किये गये हैं।]

३९ (६३)

महानवमी मण्डप में

(शक सं० १०८१)

(पूर्वमुख)

श्रीमत्परमगम्भीर-स्याद्वादामोघलाञ्छनं।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥ १ ॥

स्वस्ति समस्त-भुवन-स्तुत्य-नित्य-निरवद्य-विद्या-विभव-प्रभाव-प्रह्वरुद्वरीपाल-मौलि-मणि-मयूख-शेखरीभूत-पूत-पद-नख-प्रकरः। जितपूजिनजिनपतिमतपर्यायोधिलीलामुधाकरः। चार्व्वाकाखर्व्वगर्व्वदुर्व्वारोर्व्वीधरोत्पाटनपटिष्ठनिष्ठुरोपालम्भदम्भोलिदण्डरुः अकुण्ठ-कण्ठ-कण्ठीरव-गभीर-भूरि-भीम-ध्वान-निर्दलितदुर्मदबौद्धमदवेदण्डरुम्। अप्रतिहत-प्रसरदसम-शस्त्रसमुपन्यसननित्यनैसित्य-पात्र-दात्र-दलितनैयायिकनयनिकरनस्रः। चपलकपिलविपुलविपिनदहन-दावानलरुः। शुम्भदम्भोद-नाद-मोदितविततवैरोचिकप्रकरमदमरालरुः। शरदमलशशधरकरनिकरनीहारहाराकारानुवर्त्तिकीर्त्तिवल्लीवेल्लितदिगन्तरालरुमप्पश्रीमन्महामण्डलाचार्य्यरु श्रीमद्देवकीर्त्तिरण्डितदेवरु।

कुर्य्यान्नमः कपिल-वादि-वनोग्र-वह्नये
चार्व्वाक-वादि-मकराकर-वाडवाग्नये।
बौद्धौघवादितिमिरप्रविभेदभानवे
श्रीदेवकीर्त्तिमुनये कविवादिवाग्मिने॥ २॥

मद्भूयं अल्पवल्गीविलयमुपनयंश्चण्डनैतण्डिकोक्ति-
श्रीलण्डं मूलखण्डं झटिति विघटयन्वाङ्मयैकान्तभेदं।
निर्भिन्दंगण्डशैलं सपदि विदलयन्मूढनिर्गूढगर्ज-
स्फूर्जन्मेधामदोत्रांजयतु विजयते देवकीर्त्तिर्द्विपेन्द्रः॥ ३॥

चतुर्मुखचतुर्वक्त्रनिर्गमागमदुग्गहा।
देवकीर्त्तिमुखाम्भोजे नृत्यतीति सरस्वती॥ ४॥

चतुरवे सत्कविन्दवंद्यमिरुवे शब्दब्रह्मदोल् प्रम-

अनेकमतिदोल् प्रवीदनं सदागम-सर्व-विचारदोल् सुपू-
ज्यते सदृदोल् पवित्रते चरित्रदोलोन्दि विराजिसल् प्रसि-
द्धने मुनि-देवकीर्त्तिविबुधाग्रणिगोपुवुदी धरित्रियोल् ॥ ५ ॥
शाकवर्षसासिरद एम्भत्तनेय ॥

वर्षे ख्यात-सुभानु-नामनि सिते पक्षे तदाषाढ़के
मासे तद्बुधवीतिथौ बुध-युते वारे दिनेशोदये ।

श्रीमत्ताकिंकचक्रवर्त्ति-दशदिग्जीर्णोर्जकीर्त्तिप्रियो
जातः स्वर्गवधूमनःप्रियतमः श्रीदेवकीर्त्तिव्रती ॥ ६ ॥
जातेकीर्त्यवशेषके पतिवतौ श्रीदेवकीर्त्तिप्रभौ
वादीभेभरिपौ जिनेश्वर-मत-क्षोराब्धिवाराधती ।
क स्थानं वरवाग्वधूर्जनमुनिप्रातं ममेति स्फुटं
चाक्रोशं कुरुते समस्तधरणी दाक्षिण्य-लक्ष्मीरपि ॥ ७ ॥
सच्छिष्यो नुतसत्तपस्तपनिन्दुमुनिपः श्रीमाधवेन्दुव्रती
भव्याम्भोरुहभास्करस्त्रिभुवनाख्यानश्चयोगीश्वरः ।
एते ते गुरुभक्तिनो गुरुनिषद्याया: प्रविख्यामिमां
भूत्वाकामममकार्यमिजयशस्सम्पूर्णदिग्मण्डलाः ॥ ८ ॥

[इस लेख में अपने समय के अद्वितीय कवि, तार्किक और वक्ता महामण्डलाचार्य मुनि देवकीर्त्ति पण्डित की विद्वत्ता का व्याख्यान है। इस समय जैनाचार्य के सम्मुख सांख्यिक, चार्वाक, नैयायिक, वेदान्ती, बौद्ध आदि सभी दार्शनिक हार मानते थे।

शक सं० १०८२ सुभानु संवत्सर आषाढ़ शुक्ल ६ बुधवार को रवियोदय के समय इन तार्किक चक्रवर्त्ति श्री देवकीर्त्ति मुनि का स्वर्ग-

वाद हुआ। उसके शिष्य अखण्डनन्दि, माघनेन्दु और त्रिभुवनमल्ल ने अपने गुरु की स्मारक यह निषद्या प्रतिष्ठित कराई।]

४० (६४)

उसी स्तम्भ पर

(शक सं० १०८५)

(वसन्ततिलका)

भद्रं भूयाज्जिनेन्द्राणां शासनायाघनाशिने ।
कुतीर्थ-ध्वान्त-सङ्घात-प्रभिन्नघन भानवे ॥१॥
श्रीमन्नाभेयनाथाग्रगण्य-जिनवरानीक-सौधोरु-वार्द्धिः
प्रध्वस्ताघ-प्रमेय-प्रचय-विषय-कैवल्य-बोधोरु वेदिः ।
शब्दब्रह्मेति-मुद्रा-शबलित-जगतानन्द नादेक-घोषः
स्याद्वादाचन्द्र-तारं परम-सुख-महावीर्य-वीर्या-निकायः ॥२॥
श्रीमन्मुनीन्द्रोत्तमरत्नवर्गा श्रीगौतमाद्या प्रथमिल्लवर्गे
तत्राग्रयो लब्धमहर्द्धिगुणाल्लब्धनो बोधनिधिर्बभूव ॥३॥
[आ] भद्रम्भवेनो बोधि भद्रबाहुरिति श्रुत ।
श्रुतकेवलिनाथेषु परमर्षिमा मुनि ॥४॥
चन्द्र-प्रकाशोज्वल-कान्ति-कीर्तिं आचन्द्रगुप्तोदयिनाथ शिष्य ।
परम प्रभाचन्द्रनदेवताभिरार्चित स्वस्य गणा मुनीनां ॥५॥
तस्यान्वये भूविदिते बभूव यः पद्मनन्दि प्रथमाभिधानः ।
आकौण्डकुन्दादि मुनीश्वराख्यस्सत्संयमादुद्गत-चारणर्द्धिः ॥६॥
अभूदुमास्वाति मुनीश्वरोऽसावाचार्य-शब्दोत्तरगृद्धिपिच्छः ।

तदन्वये तत्सदृशोऽस्ति नान्यस्तात्कालिकाशेष-पदार्थ-वेदी ॥७॥

श्री गृद्धपिच्छ-मुनिपस्य बलाकपिच्छः
शिष्योऽजनिष्टभुवनत्रयवर्त्तिकीर्त्तिः।
चारित्रचञ्चुरखिलावनिपाल-मौलि-
माला-शिलीमुख-विराजितपादपद्मः ॥८॥

एवं महाचार्य्य-परम्परायां स्यात्कारमुद्राङ्कितसत्वदीपः।
भद्रस्समन्ताद्गुणतोगणीशस्समन्तभद्रोऽजनिवादिसिंहः ॥९॥

ततः ॥

यो देवनन्दि-प्रथमाभिधानो बुद्ध्या महत्या स जिनेन्द्रबुद्धिः।
श्रीपूज्यपादोऽजनिदेवताभिर्य्यत्पूजितं पाद-युगं यदीयं ॥१०॥

जैनेन्द्रं निज-शब्द-भोगमतुलं सर्व्वार्थसिद्धिः परा
सिद्धान्ते निपुणत्वमुद्धकविता जैनाभिषेकः स्वकः।
छन्दस्सूक्ष्मधियं समाधिशतक-स्वास्थ्यं यदीयं विदा
माख्यातीह स पूज्यपाद-मुनिपः पूज्यो मुनीनां गणैः ॥११॥

ततश्च ॥

(पश्चिममुख)

अजनिष्टाकलङ्कं यज्जिनशासनमादितः।
अकलङ्कं वभौ येन सोऽकलङ्को महामतिः ॥१२॥

इत्याद्युद्धमुनीन्द्रसन्ततिनिधौ श्रीमूलसङ्घेततो
जाते नन्दिगण-प्रभेदविलसद्देशीगणेविश्रुते।
गोल्लाचार्य्य इति प्रसिद्ध-मुनिपोऽभूद्गोल्लदेशाधिपः
पूर्व्वं येन च हेतुना भवभिया दीक्षां गृहीतस्सुधीः ॥१३॥

श्रीमत्त्रैकाल्ययोगी समजनि महिका काय-लग्ना तनुत्रं
यस्याभूद्दृष्टि-धारानिशितशर-गणाभ्रष्टमार्त्तण्डबिम्बं।
चक्रं सद्वृत्तचापाकलित-यति-वरस्याधरान्निर्जिगीषुं
गोल्लाचार्य्यस्य शिष्यस्समजयतु भुवने भव्यसत्कैरवेन्दुः ॥१४॥
तच्छिष्यस्य ॥
अविद्धकर्णादिकपद्मनन्दिसैद्धान्तिकाख्योऽजनि यस्य लोके।
कौमारदेव-प्रथितप्रसिद्धिर्भीयात्तुसो ज्ञाननिधिस्सधीरः ॥१५॥
तच्छिष्यः कुलभूषणाख्ययतिपश्चारित्रवारान्निधि-
स्सिद्धान्ताम्बुधिपारगो नतविनेयस्तत्सधर्म्मो महान्।
शब्दाम्भोरुहभास्करः प्रथिततर्कग्रन्थकारः प्रभा-
चन्द्राख्यो गुणराज-पण्डितवरः श्रीकुण्डकुन्दान्वयः ॥१६॥
तस्य श्रीकुलभूषणाख्यमुनेश्शिष्यो विनेयस्तुत-
स्साधुवृत्तः कुलचन्द्रदेवमुनिरप्यस्सिद्धान्तविद्यानिधिः।
तच्छिष्योऽजनि माघनन्दिमुनिपः कोल्लापुरे तीर्थकृ-
द्वाक्यारामनिकायपारगोऽखण्डवृत्तिश्चारित्रचक्रेश्वरः ॥१७॥
एवं माघि धनञ्जयादि तिलिगोलं माणिक्यदिं मण्डना-
वलितारावियनि नमं शुभदमा गिर्प्पन्तिरिरंगुनि-
र्म्मलवीगल् कुलचन्द्रदेव-चरणाम्भोजालमेवायिनि—
श्रुतसैद्धान्तिकमाघनन्दिमुनिपं श्रीकोण्डकुन्दान्वयम् ॥१८॥
हिमवत्कुन्दकोश-मृणालकल-सरत्तरहार-हारेन्दुकुन्दो—
पमकीर्त्तिं-व्याप्तदिग्मण्डलनवनत-भू-मण्डलं भव्य-पद्मो-
द्य-मरीचीमण्डलं पण्डित-जनि-विनतं माघनन्द्याख्यवाचं

प्रति रा[म]पवपाण्डवीयमं विभु (बु) धचम-
स्कृतियेनिसि गत-प्रत्या —
गवदिं पेल्दमल्लकीर्त्तियं प्रकटिसिदं ॥२४॥

अवरमजरु ॥

यो बौद्धक्षितिभृत्करालकुलिशश्चार्वाकमेघान (नि) लो
मीमांसा-मत-वर्त्ति-वादि-मदवन्मातङ्ग कण्ठीरवः ॥
स्याद्वादाब्धि-शरत्समुद्गतसुधा-शोचिर्म्ममल्लैमतु-
रम श्रीमान्भुवि भाति कनकनन्दि-ख्यात-योगीश्वरः ॥२५॥

यैतार्त्ती गुरुलोकलाञ्छनिपुटा संसेवते यत्पदं
भोद्दिष्टः प्रतिहारको निरमति द्वारं च यत्वान्तिके ।
यैन क्रीडति सन्ततं गुणतपोलक्ष्मीर्य्यश (:) श्रीप्रिय—
स्सोऽयं शुम्भति देवचन्द्रमुनिपो भट्टारकोपाग्रणी ॥२६॥

अवर गधर्म्मकर्म्माधनन्दि-व्रैविद्य-देवर विद्यापक्रवर्त्ति-श्रीमद्देवकीर्त्ति-पण्डितदेवर शिष्यरु श्रीशुभचन्द्रत्रैविद्य-देवरं गण्डविमुक्तगादि चतुर्म्मुख-रामचन्द्रत्रैविद्यदेवरं वादिवज्राङ्कुश-श्रीमदकलङ्कत्रैविद्यदेवनमापम्मेरवरन गुडुगुम्बु माणिक्यभण्डारि मरियाने दण्डनायकरु श्रीगन्धहात्तिय सर्व्वाधिकारिगिरियदण्डनायकंभरतिमय्यङ्गलुश्रीकरणद हेग्गड सूचिमय्यङ्गलु जगदेक-दानि हेग्गडे कोरयेनु ।

अवरङ्गं गिरि खाति-वंश-तिलक-श्री-यक्षराजं निजा-
-न्विके श्रीकान्विके श्रीक चन्दिने गुणीक्षाचारे दैवं दिवी-

-श-कदम्ब-स्तुत-पाद-पद्मनखं माधं यदुद्घोषिपा-
-लक-चूड़ामणि नारसिङ्गनेनलेश्रोम्पुलनोहुल्लपं ॥२७॥

श्रीमन्महाप्रधानं सर्व्वाधिकारि हिरियभण्डारि अभिनवगङ्ग-दण्डनायक-श्रीहुल्लराजं तम्म गुरुगलप्पश्रीकोण्डकुन्दान्वयद श्रीमूलसङ्घद देशियगणद पुस्तकगच्छद श्रीकोडलापुरद श्रीरूप-नारायणन पसदिय प्रतिविद्धद श्रीमत्कैलङ्कदेव प्रतापपुरवं पुनर्द्धर-रवं माडिसि जिननाथपुरदलु कल्ल दानशालेयं माडिसिद श्रीमन्महामण्डलाचार्य्यरेंदकीर्त्तिपण्डितदेवर्गे परोक्षविनय-वागि निरिदियं माडिसिद अवर शिष्यर्लयखण्डि-माधव-त्रिभुवनदेवर्महादान-पूजाभिषेक-माडि प्रतिष्ठेयं माडिदरु

मङ्गल महा श्री श्री श्री ॥

[इस लेख में गौतम गणधर से लगाकर मुनिदेवकीर्त्ति पण्डितदेव की गुरु-परम्परा दी है† । कमलनन्दि और देवचन्द्र के भ्राता श्रुतकीर्त्ति* त्रैविद्य मुनि की प्रशंसा में कहा गया है कि उन्होंने देवेन्द्र सदृश विपक्ष-वादियों को पराजित किया और एक चमत्कारी काव्य राघव-पाण्डवीय की रचना की जो आदि से अन्त को व अन्त से आदि को दोनों ओर पढ़ा जा सके × । प्रतापपुर की रूपनारायण बस्ती का

† भूमिका देखो ।

* श्रुतकीर्त्ति की प्रशंसा के ये दोनों छन्द नागचन्द्रकृत 'रामचन्द्र-चरितपुराण' अपर नाम 'पम्प रामायण' के प्रथम आश्वास में पं० २४-२५ पर भी पाये जाते हैं । इस काव्य की रचना शक सं० १०२१ के लगभग हुई है । जिन विपक्ष-सैद्धान्तिक देवेन्द्र का यहाँ उल्लेख है वे सम्भवतः 'प्रमाणनय-तत्त्वालोकालङ्कार' के कर्त्ता वादि-अपर श्वेताम्बरा-

जीर्णोद्धार व जिननाथपुर में एक दानशाला का निर्माण कराने वाले महामण्डलाचार्य देवकीर्त्ति पण्डितदेव के स्वर्गवास होने पर यादव-वंशी नारसिंह नरेश (प्रथम) के मंत्री हुल्लप ने यह निषद्या निर्माण कराई जिसकी प्रतिष्ठा देवकीर्त्ति आचार्य के शिष्य लक्ष्मनन्दि, माधव और त्रिभुवनदेव ने दान सहित की।]

४१ (६५)

उसी मण्डप में

(शक सं० १२३५)

श्रीमत्स्याद्वादमुद्राङ्कितममलमहीनेन्द्रचक्रेश्वरेड्यं
जैनीयं शासनं विश्रुतमखिलहितं देशपूरं गभीरं।
जीयात्कारुण्यजन्मावनिरमितगुणैर्व्वर्ण्यनीक-प्रवेकैः
संसेव्यं मुक्तिकन्या-परिचय-करणप्रौढसेवतित्रलोक्यां ॥१॥

श्रीमूलसङ्घ-देशीगण-पुस्तकगच्छ-कोण्डकुन्दान्वाये।
गुरुकुलमिह कथमिति चेद्ब्रवीमि सङ्क्षेपतो भुवने ॥२॥

यः सेव्यः सर्व्वलोकैः परहितचरितं यं समाराधयन्ते
भव्या येन प्रबुद्धं स्वपर-मत-महा-शास्त्र-तत्त्वं नितान्तं।
यस्मै मुक्त्यङ्गना संस्पृहयति दुरितं भीरुतां याति यस्मा—
द्यस्याशानास्ति यस्मिंस्त्रिभुवन-महितो विद्यते शीलराशिः ॥३॥

चार्य देवेन्द्र व देवसूरि हैं, जिनके विषय में प्रभावक-चरित में कहा गया है कि उन्होंने वि० सं० ११८१ में दिगम्बराचार्य कुमुदचन्द्र को वाद में पराजित किया था।]

तन्मेघचन्द्रत्रैविद्यशिष्यो राद्धान्तवेदी लोकप्रसिद्धः।
श्रीवीरनंदी मोक्षुलदन्तवासी गुणाब्धिः प्रास्ताङ्गजन्मा ॥४॥
यः स्याद्वाद-रहस्य-वादनिपुणोऽगण्यप्रभावो जना-
नन्दः श्रीमदनन्तकीर्त्तिमुनिपश्चारित्रभास्वत्तनुः।
कामोग्राहि-गर-द्विजापहरणे रुद्रो नरेन्द्रोऽभव-
त्सच्छिष्यो गुरुपञ्चकस्मृति-पथ-स्वच्छन्द-सन्मानसः ॥ ५ ॥
मलधारिरामचन्द्रो यमी तदीय-प्रशस्य-शिष्योऽसौ।
श्वरणयुगलसेवापरिगतजनतैति चन्द्रतां जगति ॥ ६ ॥
परपरिणतिदूरोऽप्यात्मसत्सारधीरो
विषय-विरति-भावो जैनमार्ग-प्रभावः।
कुमत-घन-समीरो ध्वस्तमायान्धकारो
निरितमुनिविनूतो रागकोपादिपारः ॥ ७ ॥
चित्ते शुभावनां जैनीं वाक्ये पञ्चनमस्क्रियां।
कायं व्रतसमारोपं कुर्व्वन्प्राप्यात्मविन्मुनिः ॥ ८ ॥
पञ्चत्रिंशत्संयुत-शत-द्वयाधिक-सहस्र-नुतवर्षेषु।
वृत्तेषु शकनृपस्य तु काले विस्तीर्णविलसदर्ण्णवनेमौ॥९॥
प्रमादि (सं)वत्सरेमासे श्रावणे वनुमत्यजत्।
पक्षे कृष्णचतुर्दश्यां शुभचन्द्रो महायतिः ॥१०॥
अमरपुरममरवास तद्गत-जिन-चैत्य-चैत्यभवनानां।
दर्शन-कुतूहलेन तु यातो यातार्त्त-रौद्र-परिणामः ॥ ११ ॥

सच्छिष्यर् ॥

दुरितान्धकारविहिम—

-करेरागेदर्प्पद्मणन्दिपण्डितदेवर् ।
वर-माधवेन्दु-समया—
भरणश्रीमूलसङ्घ-देशीगणदोल् ॥ १२ ॥
गुरु-रामचन्द्र-यतिपन
वर-शिष्य-शुभेन्दुमुनिय निम्मिगेयं वि—
स्तरदिं माडिसिदं बेलु—
करेयधिपं राय-राज-गुरुगुम्मट्टं ॥ १३ ॥
श्रीविजय-पार्श्व-जिनवर-चरणारुण-कमल-युगल-यजन-रतः।
बोगार-राज-नामा तद्वैयावृत्यतो हि शुभचन्द्रः ॥ १४ ॥
हेयादेय-विवेकता जनतया यस्मात्मदादीयते
तस्य श्रीकुलभूषणस्य वरशिष्योमाधनन्दिव्रती ।
सिद्धान्ताम्बुधितीरगो विशद-कीर्तिर्म्मस्य शिष्योऽभवत्
त्रैविद्यः शुभचन्द्र-योगि-तिलकः स्याद्वाद-विद्याञ्चितः॥१५॥
तच्छिष्य श्रुतकीर्त्ति-प्रथित-गुण-गण-पण्डितस्यस्य शिष्यः
ख्यातः श्रीमाघनन्दि-व्रति-पति-नुत-भट्टारकस्यस्य शिष्यः।
सिद्धान्ताम्भोधिसीत-द्युतिरभयशशी तस्य शिष्यो महीयान्
बालेन्दुः पण्डितस्तत्पदनुतिरमलो रामचन्द्रोऽमलाङ्गः॥१६॥
चित्रं सम्प्रति पद्मनन्दिनिह कृत्तं तावकीनं तपः
पद्मानन्दपि विश्रुताप्रमद इत्यासीन्मतां नम्रतां ।
कामं पूरयसे शुभेन्दु-पद-भक्तयासक्त-चेतः सदा
कामं दूरयसे निराकृत-महा-मोहान्धकारागम ॥१७॥
काम-विदारोदारः समावृतोप्यक्षमो जगन्निभासि

श्रीपद्मनन्दिसैद्धान्तो पण्डित-जन-हृदय-कुमुदशीतकर ॥१८॥
पण्डित-समुदयवति शुभचन्द्र-प्रिय-शिष्य भवति
मुदयाम्नि।
श्री-पद्म-नन्दि-पण्डित-यमीश भवदिवर-मुनिपमानोक ।१९।
श्रीमद्ध्यात्मिशुभचन्द्रदेवस्य स्वर्गोद्यानंदासिना पद्म
नन्दि-पण्डित-देवेन माधवचन्द्रदेवेन च परोक्ष-विनय-निर्मितं
निषद्या कारयिता ॥ अर्हं भवतु जिनशासनाय ॥

[इस लेख में शुभचन्द्र मुनि की आचार्यपरम्परा और उनके स्वर्ग वास की तिथि दी हुई है। कुन्दकुन्दान्वय, सूरस्थ गण, पुस्तक गच्छ, देशी गण में गुरुशिष्य परम्परा में मेघचन्द्र त्रैविद्य, श्रीपद्मनन्दि, जगन्नन्दि कीर्ति, महाकवि माधवचन्द्र और शुभचन्द्र मुनि हुए। शुभचन्द्र मुनि का शक सं० १०४८ आषाढ कृष्ण १४ को स्वर्गवास हुआ। उनके शिष्य पद्मनन्दि पण्डितदेव और माधवचन्द्र ने उनकी निषद्या निर्माण कराई। लेख में माधवचन्द्र मुनि की आचार्य परम्परा इस प्रकार दी है। कुन्दकुन्दान्वय, माधवनन्दि व्रती, शुभचन्द्र त्रैविद्य, श्रीपद्मनन्दि पण्डित, माधवनन्दि महाव्रती, जगन्नन्दि, माधवचन्द्र पण्डित और माधवचन्द्र।]

---

४८ (६६)

महामण्डली मण्डप के उत्तर में एक स्तम्भ पर

(शक सं० १०४८)

(पूर्वमुख)

श्रीमत्सामन्तचूडामणिप्रभाभासुरपादपद्मयुगः।
श्रीवीरबल्लालमहादेवो जयति क्षितिरमणः ॥ १

श्रीमन्नाभेयनाथाद्यमल-जिनवरानीक-सौधोरु-वार्द्धिः
प्रध्वस्ताघ-प्रमेय-प्रचय-विषय-कैवल्य-बोधोरु-वेदिः ।
शस्त-स्यात्कार-मुद्रा-शबलित-जनतानन्द-नादोरु-घोषः
स्थेयादाचन्द्रतारं परम-सुख-महावीर्य्य-वीची-निकायः ॥२॥
श्रीमन्मुनीन्द्रोत्तमरत्नवर्ग्गा श्रीगौतमाद्यार्प्रभविष्णवस्ते ।
तत्राग्र्यधी मन्मथदर्प्प-युक्तास्तत्सन्ततौ नन्दिगणे बभूव ॥३॥
श्रीपद्मनन्दीत्यनवद्यनामा ह्याचार्य्यशब्दोत्तरकोण्डकुन्दः
द्वितीयमासोदभिधानमुच्चश्चरित्रसञ्जातसुचारणर्द्धिः ॥४॥
अभूदुमास्वातिमुनीश्वरोसावाचार्य्य-शब्दोत्तरगृद्धपिञ्छः ।
तदन्वये तत्सदृशो(शो)ऽस्ति नान्यस्तात्कालिकाशेष-
पदार्थ्य-वेदी ॥५॥

श्रीगृद्धपिञ्छ-मुनिपस्य बलाकपिञ्छ-
शिष्याऽजनिष्ट भुवनत्रय-वर्त्ति-कीर्त्तिः ।
चारित्रचञ्चुरखिलावनिपालमौलि-
माला-शिलीमुख-विराजित-पाद-पद्मः ॥६॥
तच्छिष्या गुणनन्दिपण्डितयतिश्चारित्रचक्रेश्वर
स्तर्क्क-व्याकरणादि-शास्त्र-निपुणस्साहित्य-विद्यापतिः ।
मिथ्यावादिमदान्ध-सिन्धुर-घटासङ्घट्टकण्ठीरवो
भव्याम्भोज-दिवाकरो विजयतां कन्दर्प्प-दर्प्पापहः ॥ ७ ॥
तच्छिष्याखिलशास्त्र विवेक-निधयश्शास्त्राब्धिपारङ्गता
स्तेपूत्कृष्टतमा द्विसप्ततिमितास्सिद्धान्त-शास्त्रार्थक —
व्याख्याने पटवो विचित्र-चरितास्तेषु प्रसिद्धोमुनि—

ज्ञानानून-नय-प्रमाणनिपुणो देवेन्द्र-सैद्धान्तिक ॥ ८ ॥
अजनि महिपपृष्ठा-वस्तराराजिताङ्घ्रि
श्रीजित-मकरकेतूत्कण्ठ-दोर्दण्ड-गर्वः ।
कृतय-निकर-मूर्द्धानीक-दम्भोलि-दण्ड
स्समजयतु विशुधचन्द्राभार्त्ती-भाल-पट्टः ॥ ९ ॥
तच्छिष्यः कलधौतनन्दिमुनिपश्चिद्वान्त-चक्रेश्वर
पारावार-परीत-धारिणि-कृत-व्याप्तार्कतीर्थेश्वरः ।
पश्चात्तोग्मद-कुम्भि-कुम्भ-दलन-प्रोन्मुक्त-मुक्ताफल-
प्राप्तु-प्राज्यितकेसरी बुधनुतो वाक्कामिनी-वल्लभ ॥ १० ॥
अवगें रविचन्द्र-सिद्धान्तविदर्गंवृत्तेचन्द्रसिद्धान्तमुनि-
प्रवरवरवर्गें शिष्यप्रवर श्रीदामनन्दि-व्रतमुनि पतिगल् ॥ ११ ॥
बोधित-भव्यरत्न-गहनमोह-वनिर्मल शुद्ध-मानसर्
श्रीधरदेवरत्नवरगंग तनूभवरादरा वरा—
श्रीधरगांद शिष्यरवरोल् तनगत्यंतलधारिदेवर
श्रीधरदेवर् तत-मोन्द्र-ति (कि)र्गट-तर्कनिषेधतत्परर् ॥ १२ ॥
आनतभावनिताम-जालकशिरा-रत्न-प्रभा-भासुर-
श्रीपादाम्बुरुह-द्वया वर-तपोलक्ष्मीसनाथर्जन ।
माद्-व्यूह-मदीभ-दुर्द्धर-वधि सत्कीर्त्तिश्रियाँ वल्लभं-
ख्यातश्रीधरदेव एव मुनिपो भाजाति भूमण्डले ॥ १३ ॥

तच्छिष्यवर् ॥
अज्ञानौघ-तमः-प्रचण्ड-किरण-स्फूर्त्ति-प्रदान-प्रभुः-
शीलश्रीवनितामनःप्रियतिलकाचारचरित्रोज्ज्व-

(दक्षिणमुख)

भातिश्रीजिन-पुङ्गव-प्रवचनाम्भोराशि-राका-शशी
भूमौ विश्रुत-माघनन्दिमुनिपस्सिद्धान्तचक्रेश्वरः ॥१४॥
तच्छिष्यर् ॥

सच्छीलश् शरदिन्दु-कुन्द-विशद-प्रोद्यद्यशा-श्रीपति-
र्दुर्वादिद्विपकेसरि-प्रतिभट-स्याद्वादि-कालाम्बुदः।
श्रीजैनेन्द्र-वचःपयोनिधि-शरत्सम्पूर्ण-चन्द्रः क्षितौ
भाति श्रीगुणचन्द्र-देव-मुनिपो राद्धान्त-चक्राधिपः ॥१५॥
तत्सधर्म्मर् ॥

उद्भूते नुत-मेघचन्द्र-शशिनि प्रोद्यद्यशश्चन्द्रिके
संवर्द्धेत तदस्तु नाम नितरां राद्धान्त-रत्नाकरः।
चित्रं तावदिदं पयोधि-परिधि-क्ष्मां समुद्वीक्षते
प्रायेणात्र विजृम्भते भरत-शास्त्राम्भोजिनी सन्ततं ॥१६॥
तत्सधर्म्मर् ॥

चन्द्र इव धवल-कीर्त्तिर्द्धर्त्रीकृत-सकल-भुवन-पृष्ठः।
तच्छुभचन्द्रकीर्त्तिसकल-भट्टारक-चक्रवर्त्ति नाऽस्य विभाति ॥१७॥
तत्सधर्म्मर् ॥

नैयायिकगज-सिंहो मीमांसकगिरि-निकरनिरशन-शतनः
वादि-घन-दाव-दहनाजयनिमहानुदयचन्द्रशब्दगतः ॥१८॥
सिद्धान्त-चक्रवर्त्ती श्रीगुणचन्द्रव्रतीश्वरस्य बभूव
श्रीनयकीर्त्ति-मुनीन्द्रो जिनपति-महिमालिनार्यवरो गण्यः
॥१९॥

स्मन्यनवरत-विनत-महिप-मुकुट-मौक्तिक-मयूख-माला-सरो-
मण्डनीभूत-पादसरोरुहद्वं। भव्यजन-हृदयानन्दद्वं।
फेणहकुन्दान्वय-गगन-मार्त्तण्डद्वं। लीला-मात्र-विजितेभ-
कुसुमकोदण्डद्वं। दर्शीय-गम-गजेन्द्र-मान्द्र-मद-धारावभासद्वं।
विस्तरद्वविलासद्वं। पुलकगच्छस्वन्द-मरसी-सरोजद्वं। वन्दि-
जनसुरभूजद्वं। श्रीमद्गुणचन्द्र-सिद्धान्त-चक्रवर्त्ति-चारुतर-चरण
सरसीरुह-षट्चरणद्वं। अशेष-दोषदूरीकरणपरिणतान्तःकरण-
रत्नप्प श्रीमन्नयकीर्त्ति-सिद्धान्त-चक्रवर्त्ति गले त्वपरेन्द्रद्वं॥

साहित्य-प्रमदा-मुखाब्जमुकुरश्चारित्र-चूडामणि
श्रीजैनागम-वार्द्धि-वर्द्धन-सुधांशोचिस्मुद्भासते।
यशस्त्य-त्रय-गारव-त्रय-समदण्ड-त्रय-ध्वंसक —
स्स श्रीमान्नयकीर्त्ति देवमुनिपस्सैद्धान्तिकाग्रेसरः॥२०॥
माणिक्यनन्दिमुनिप श्रीनयकीर्त्तिव्रतीश्वरस्य सधर्म्मः।
गुणचन्द्रदेवतनयः सिद्धान्त-पयोधि-पारगो-भुवि भाति॥२१॥
हार-हीर-हरारहास-हलभृत्कुन्देन्दु-मन्दाकिनी—
कर्पूर-स्फटिक-स्फुरद्यशसो-धौतत्रिलोकोदरः।
उद्दण्ड-स्मर-भूरि-भूधरपविः ख्यातो बभूवक्षितौ
सश्रीमान्नयकीर्त्ति देवमुनिपस्सिद्धान्तचक्रेश्वरः॥२२॥
शाके रन्ध्रनवद्युचन्द्रसहिते दुर्म्मुख्याच्यसंवत्सरे
वैशाखेधवले चतुर्द्दशदिने वारे च सूर्य्यात्मजे।
पूर्व्वाह्णे प्रहरेगतेऽर्द्धसहिते स्वर्गं जगामात्मवान्

* ष्य

विख्यातो नयकीर्त्ति-देव-मुनिपो राद्धान्त-चक्राधिपः ॥२३॥
श्रीमज्जैन-वचोदधि-वर्द्धन-विधुस्सादित्यविद्यानिधिम्

(पश्चिम मुख)

सर्प्पदर्प्पक-दुष्टि-मस्तक-सुठत्रोत्कण्ठ-कण्ठीरवः ।
स श्रीमान् गुणचन्द्रदेवतनयस्सौजन्यजन्यावनि
स्थेयान् श्रीनयकीर्त्ति देवमुनिपस्सिद्धान्तचक्रेश्वरः ॥२४॥
गुरुवादं खचराधिपङ्गे बलिगं दानके विप्पङ्गे तां
गुरुवादं सुर-भूधरके नेगन्दा कैलास-शैलके तां ।
गुरुवादं विनुतङ्गे राजिसुविरुद्धोलङ्गे लोकके मद्
गुरुवादं नयकीर्त्तिदेवमुनिपं राद्धान्त-चक्राधिपं ॥२५॥

तच्छिष्यर् ॥

हिमकर-शरदभ्र-क्षीर-कल्लोल-जाल-स्फटिक-मित-यश-श्री-
शुभ्र-दिक्-चक्रवालः ।
मदन-मद-तिमिस्र-श्रेणितीव्रांशुमाली जयति निखिल-वन्दो
मेघचन्द्र-व्रतीन्द्रः ॥२६॥

तत्सधर्म्मर् ॥

कन्दर्पाहिबकर्पतीक्ष्ण रसनुत्राणोपमोरस्थली
चञ्चद्भूरमला विनेय-जनता-नीरेजिनी-भानवः ।
त्यक्ताशेष-बहिर्व्विकल्प-निचयश्चारित्र-चक्रेश्वर
गुम्मन्त्यण्णितटाक-वासि-मलधारि-स्वामिनो भूतल ॥२७॥

तत्सधर्म्मर् ॥

षट्-कर्म्म-विषय-मन्त्रे नानाविध-रोग-हारि-वैद्ये च ।

जगदेकमूर्तिरेष श्रीधरदेवो बभूव जगति प्रथितः ॥२८॥
सत्यधर्मैर् ॥

सर्व-व्याकरणागम-साहित्य-प्रभृति-सकल-शास्त्रार्थज्ञ ।
विख्यात-दामनन्दि-त्रैविद्य-मुनीश्वरो धरामे जयति ॥२९॥
श्रीमज्जैनमताब्धिपूर्णशशिनो नैरर्थ्यवादिप्रभा-
ध्वान्तौघावनिभृत्करालकुलिशो बौद्धाब्धिकुम्भोद्भवः ।
यामीमांसकगन्धसिन्धुरशिरोनिर्भेदकण्ठीरव—
स्त्रैविद्योत्तमदामनन्दिमुनिपस्सोऽयं भुविभ्राजते ॥३०॥
सत्यधर्मैर् ॥

दुग्धाब्धि-स्फटिकेन्दु-कुन्द-कुमुद-श्यामासि-कीर्तिप्रिय-
स्सिद्धान्तोदधि-वर्द्धनामृतकरःपारात्यै-रत्नाकरः ।
ख्यात-श्री-जयकीर्त्तिदेवमुनिपश्रीपाद-पद्म-प्रियो ।
भात्यस्मांभुविभानुकीर्त्ति-मुनिपस्सिद्धान्तचक्राधिपः ॥३१॥
उरगेन्द्र-क्षीर-नीराकर-रजत-गिरि-श्रीमिलच्छत्र-गङ्गा—
हरहासैरावतेभ-स्फटिक-वृषभ-शुभ्राभ्रनीहार-हारा—।
मर-राज-श्वेत-पद्मद्रुह-दलधर-वाक्-राहु-हंसेन्दु-कुन्दो-
त्करचञ्चत्कीर्तिकान्तं धरेयाज्जैसेदनी भानुकीर्त्ति-प्रतीन्द्रं
सत्यधर्मैर् ॥ ॥३२॥

सद्वृत्ताकृति-शोभिताखिलकला-पूर्णस्सुरत्नाकरः
शश्वद्विश्व-वियोगि-दुःखविकर-श्रीबालचन्द्रो मुनिः ।
यत्रेणोन-कलेन-काम-सुहृदाचञ्चद्वियोगिद्विषा
लोकेस्मिन्नुपमीयते कथममा तेनाद्य बालेन्दुना ॥३३॥

अखण्ड-मदन-मद-गज-निर्मदन-पटुतर-प्रताप-मृगेन्द्रः ।
भव्य-कुमुदौघ-विकसन-चन्द्रो भुवि भाति बालचन्द्र-मु
॥

तारादि-क्षीर-पुर-स्फटिक-मुर-सरित्तारहारेन्दु-कुन्द—
श्वेतोग्रकीर्त्ति-लक्ष्मी-प्रसर-धवलिताशेषदिक्-चक्रवाल
श्रीमत्सिद्धान्त-चक्रेश्वर-सुत-नयकीर्त्ति-व्रतीशाङ्घ्रि-भक्त

(उत्तर मुख)

श्रीमान्भट्टारकेशो जगति विजयते मेघचन्द्रव्रतीन्द्रः ॥३
गाम्भीर्य्ये मकराकरो वितरणे कल्पद्रुमस्तेजसि
प्रोद्दण्ड-द्युमणिः कलास्वपि शशी धैर्य्ये पुनर्मन्दरः ।
सर्व्वोर्व्वी-परिपूर्ण्ण-निर्म्मल-यशो-लक्ष्मी-मनो-रञ्जनो
मात्सर्य्यां भुवि माघनन्दिमुनिपो भट्टारकाग्रेसरः ॥३६
वसुपूर्ण्णसमस्ताशःक्षितिचक्रे विराजते ।
चक्रचकुवलयानन्द-प्रभाचन्द्रोमुनीश्वरः ॥३७॥
वत्सधर्म्मर् ॥

उद्दण्डमदकोटयो नियमिताक्षिप्यन्ति येन क्षितौ
यद्वाग्जातसुधारसोऽखिलविपद्युच्छेदकश्शोभते ।
यत्तन्त्रोद्धविधिःसमस्तजनतारोग्याय संवर्त्तते
सोऽयं शुम्भति पद्मनन्दिमुनिनाथो मन्त्रवादीश्वरः ॥३८
तत्सधर्म्मर् ॥

पक्षचन्द्र-मरीचि-शारद-घन-क्षीराब्धि-ताराचल—
प्रोद्यत्कीर्त्ति-विकास-पाण्डुर-तर-ब्रह्माण्ड-भाण्डोदरः ।

वादान्ता-कठिन-स्तन-द्वय-तटी-हारी गभीरस्थिरं
सोऽयं सकल-नेमिचन्द्र-मुनिपो विभ्राजते भूतले ॥३९॥
भण्डाराधिकृत-सकल-सचिवार्धीशो जगद्विश्रुत—
श्रीदुल्लो नयकीर्ति-देव-मुनि-पादाम्भोज-युग्मप्रिय-।
कीर्ति-श्री-निलय-परार्थ-चरितो नित्यं विभाति क्षितौ
सोऽयं श्रीजिनधर्म-रत्नकरः सम्यक्त्व-रत्नाकरः ॥४०॥
श्रीमद्दोरकणाधिपस्सचिवनाथो विश्व-विद्वन्निधि-
श्चातुर्वर्ण्य-महाश्रमदान-करणोत्साही क्षितौ शोभते।
श्रीनीलो जिन-धर्म-निर्मल-मनास्साहित्य-विद्याप्रिय-
स्सौजन्यैक-निधिर्गगाङ्क-विशद-प्रोद्यद्यशश्रीपतिः ॥४१॥
आराध्यो जिनपो गुरुश्च नयकीर्ति-ख्यात-योगीश्वरो
जैनाम्बा जननी तु यस्य जनक (:) श्रीयरमदेवो विभुः।
श्रीमत्कामलता-सुता पुरपति श्री मल्लिनाथस्सुतो
भात्यस्यां भुवि नागदेव-सचिवश्चण्डाश्विकावल्लभः ॥४२॥
सुर-राज-शरदिन्दु-प्रस्फुरत्कीर्ति-शुभ्रो
भवदखिल-दिगन्ता बान्धवू-चित्तकान्त ।
बुध-निधि-नयकीर्ति-ख्यात-योगीन्द्र-पादा—
म्बुज-युगकृत-सेव. शोभते नागदेवः ॥४३॥
ख्यातश्रीनयकीर्ति देवमुनिनाथानां पयःप्रोल्लस-
त्कीर्तीना परमं परात्त-विनय कर्तुं निषद्यालयं ।
भक्ताकारयदाशशाङ्क-दिनकृत्तारं स्थिरं स्थायिनं
श्रीनागस्सचिवोत्तमो निजयशश्शुभ्र-दिग्मण्डलः ॥४४॥

[इस लेख में नागदेव मंत्री द्वारा अपने गुरु श्री नयकीर्ति योगीन्द्र की निषद्या निर्माण कराये जाने का उल्लेख है। नयकीर्तिमुनि का स्वर्ग-वास शक सं० १०९९ वैशाख शुक्ल १४ को हुआ था। मुनि की विस्तार-सहित वर्णन की हुई गुरु-परम्परा में निम्नलिखित आचार्यों का उल्लेख आया है। पद्मनन्दि अपर नाम कुन्दकुन्द, उमास्वाति गृद्धपिच्छ, बलाकपिच्छ, गुणनन्दि, देवेन्द्र सैद्धान्तिक, कनकनन्दि, रविचन्द्र अपर नाम सम्पूर्णचन्द्र, दामनन्दिमुनि श्रीधरदेव, मलधारिदेव, श्रीधरदेव, माधवनन्दि मुनि, गुणचन्द्रमुनि, मेघचन्द्र, चन्द्रकीर्ति भट्टारक और उदयचन्द्र पण्डितदेव। नयकीर्ति गुणचन्द्रमुनि के शिष्य थे और उनके सधर्म गुणचन्द्र मुनि के पुत्र माणिक्यनन्दि थे। इनकी शिष्य-मण्डली में मेघचन्द्र त्रैविद्य, मलधारिस्वामी, श्रीधरदेव, दामनन्दि त्रैविद्य, भानुकीर्ति मुनि, बालचन्द्र मुनि, माधवनन्दि मुनि, प्रभाचन्द्र मुनि, पद्मनन्दि मुनि और मेरुमिचन्द्र मुनि थे।]

४३ (११७)

चामुण्डराय वस्ति के दक्षिण की ओर मण्डप में प्रथम स्तम्भ पर

(शक सं० १०४५)

(पूर्वमुख)

श्रीमत्परम गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥१॥

श्रीमन्नामेयनाथाद्यमल-जिनवरानीकसौधोरु-वाद्धिः
प्रध्वस्ताघ-प्रमेय-प्रचय-विषय-कैवल्य-बोधोरु-वेदिः।
शास्त्याद्यारकार-मुद्रा-शबलित-जनतानन्द-नादोरुघोषः
श्रेयादाचन्द्रतारं परम-सुख-महा-वीर्य-वीर्या-निकायः ॥२॥

श्रीमन्मुनीन्द्रोत्तमरत्न-वर्णाश्रीगौतमाद्याः प्रभविष्णवस्ते ।
तत्राभ्युदा मन्मथदर्पदुष्कालत्तन्नतो नन्दिगणे बभूव ॥३॥
श्रीपद्मनन्दीत्यनवद्यनामा ह्याचार्य्यशब्दोत्तरकोण्ड-
कुन्दः ।
द्वितीयमाख्यादविधानमुद्यच्चरित्रसञ्जातसुचारणर्द्धिः ॥४॥
अमुद्रुमास्यातिमुनीश्वरोऽभाद्याचार्य्यशब्दोत्तरगृद्ध्र
पिञ्छः ।
तदन्वये तत्सदृशोऽस्ति नान्यस्तात्कालिकाशेषपदार्थवेदी ।५।
श्रीगृद्ध्रपिञ्छ-मुनिपस्य बलाकपिञ्छशिष्योऽजनिष्टभुवन-
त्रयवर्त्ति कीर्त्तिः ।
चारित्रभुच्चुरशिक्षावनिपालमौलिमाला-शिलीमुख-विरा-
जित-पाद-पद्मः ॥६॥
तच्छिष्यो गुणनन्दिपण्डितयतिश्चारित्रचक्रेश्वरः
तर्कव्याकरणादिशास्त्रनिपुणस्माद्वित्यविद्यापतिः ।
मिथ्यावादिमदान्धसिन्धुर-घटा-सङ्घट्ट-कण्ठीरवो
भव्याम्भोजदिवाकरो विजयतां कन्दर्प-दर्पापहः ॥७॥
तच्छिष्याखिलशास्त्रवित्तपनिधेरुत्तीर्णवाग्वारिधेः
स्तोपूत्कृष्टतमाद्रिमप्रतिभिदः सिद्धान्तशास्त्रार्थक-
व्याख्यानेपटवो विचित्र-चरितास्तेषु प्रसिद्धोमुनिः
नानानूननयप्रमाणनिपुणो देवेन्द्रसैद्धान्तिकः ॥८॥
अजनिमदिप-चूड़ा-रत्न-राराजिताङ्घ्रिर्व्विजितमकरकेतूद्
गहदोर्दण्डगर्व्वः ।

[इस लेख में नागदेव मंत्री द्वारा अपने गुरु श्री नयकीर्ति योगीन्द्र की निषद्या निर्माण कराये जाने का उल्लेख है। नयकीर्तिमुनि का स्वर्गवास शक सं० १०९९ वैशाख शुक्ल १४ को हुआ था। मुनि की विस्तार-सहित वर्णन की हुई गुरु-परम्परा में निम्नलिखित आचार्यों का उल्लेख आया है। पद्मनन्दि अपर नाम कुन्दकुन्द, उमास्वाति गृद्धपिच्छ, बलाकपिच्छ, गुणनन्दि, देवेन्द्र सैद्धान्तिक, कलधौतनन्दि, रविचन्द्र अपर नाम सम्पूर्णचन्द्र, दामनन्दिमुनि, श्रीधरदेव, मलधारिदेव, श्रीधरदेव, माधवनन्दि मुनि, गुणचन्द्रमुनि, मेघचन्द्र, चन्द्रकीर्ति भट्टारक और उदयचन्द्र पण्डितदेव। नयकीर्ति गुणचन्द्रमुनि के शिष्य थे और उनके सधर्मा गुणचन्द्र मुनि के पुत्र माणिक्यनन्दि थे। उनकी शिष्य-मण्डली में मेघचन्द्र व्रतीन्द्र, मलधारिस्वामी, श्रीधरदेव, दामनन्दि व्रैविद्य, भानुकीर्ति मुनि, बालचन्द्र मुनि, माधवनन्दि मुनि, प्रभाचन्द्र मुनि, पद्मनन्दि मुनि और मेमिचन्द्र मुनि थे।]

४३ (११७)

चामुण्डराय वस्ति के दक्षिण की ओर मण्डप में प्रथम स्तम्भ पर

(शक सं० १०४५)

(पूर्वमुख)

श्रीमत्परम गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥१॥
श्रीमन्नामेयनाथाद्यमल-जिनवरानीकसौधोरु-वाद्धिः
प्रध्वस्ताघ-प्रमेय-प्रचय-विषय-कैवल्य-बोधोरु-वेदिः ।
शस्तस्यात्कार-मुद्रा-शबलित-जनतानन्द-नादोरुघोषः
स्थेयादाचन्द्रतारं परम-सुख-महा-वीर्य-वीर्या-निकायः ॥२॥

[illegible]

कुनयनिकरमूघ्नांकदम्भोलिदण्डःस जयतु विबुधेन्द्रो
भारती-भालपट्टः ॥९॥

(दक्षिणमुख)

तच्छिष्यःफलधौतनन्दिमुनिपः सैद्धान्तचक्रेश्वरः
पाराबारपरीतधारिणि-कुल-व्याप्तोरुकीर्त्तीश्वरः।
पश्चाद्दोन्मदकुम्भि-कुम्भ-दलन-प्रोन्मुक्त-मुक्ताफल—
प्राग्भुग्भाक्षितकेसरी बुधनुतो वाक्कामिनीवल्लभः ॥१०॥
अवर्गे रविचन्द्रसिद्धा—
न्तविदसम्पूर्णचन्द्र-सिद्धान्त-मुनि-।
प्रवररवरवर्गशिष्य—
प्रवरश्रीदामनन्दि-सन्मुनि-पतिगलु ॥११॥
बोधितभव्यरत्नमदनम्मंद-गर्जित-शुद्ध-मानसर्
श्रीधरदेवरेम्बरवर्गप्रतनूभवरादरायरम्
श्रीधरनंदि शिष्यरवरोल् नेगल्दर्म्मलधारि-देवरु।
श्रीधरदेवनंनतनरेन्द्र-किरीट-लटार्च्चित-क्रैमर् ॥१२॥
मलधारिदेवरिन्द
वेल्गिदुदु जिनेन्द्रशासन मुन्नि—
र्म्मलमागिमत्तमीगल्
वेल्गिदपुदु चन्द्रकीर्त्तिभट्टारकरिं ॥१३॥
अवर शिष्यर्॥
परमाप्तागम-शास्त्र-सत्यनिलयं सिद्धान्त-चूड़ामणि
स्फुरिताचारपरं विनेयजनतानन्दं गुणानीकमु—

न्दरनेम्युन्नतिवि समस्त-भुवन-प्रस्तुत्यनादं दिवा—
करणन्दि-प्रतिनाथनुच्चयशो विभ्राजिताशातटं ॥१४॥
विदितव्याकरणाद तर्कद सिद्धान्तद विशेषदि प्रेविरा—
जदरेन्दो-धरवण्णिपुदु दिवाकरणन्दिदेवसिद्धान्तिगरं।१५।
वरराद्धान्तिकचक्रवर्त्ति दुरितध्वंसि कन्दर्पसि—
न्नुरविंहं वर-शील-सद्गुण-महाम्भोराशि पट्टंगपु-
टकर-देवेम-शशाङ्क-मन्निभ-यश-श्री-रूपनों दोदिवा-
करणन्दिव्रतिनिर्म्मदं निरुपमं भूपन्द्रवृन्दार्च्चितं ॥१६॥

(पश्चिममुख)

वर-भव्यानन-पद्मसुद्धलरलज्ञानोकनेत्रोत्पत्त
कोरगल्पापतमल्लमं परवनेत्तं जैनमार्गाम्बुधा—
स्वमत्युज्वलभागले वंद्यगितेाभूभागमं श्रीदिवा—
करणन्दिव्रतिनाथदिवाकरकराकारम्बोलुर्व्वीनुत ॥१७॥
षट्कर्कृचन्द्रविल्लमद्भुवनामृताम्भःपानेननृप्यतिविनेयचकों

रहन्द ।

नैनेन्द्रागमनमरोवरराजहंसो जोयादसौमुविदिवाकरण-
न्दिदेवः ॥१८॥

अवर शिष्यरु ॥

गण्डविमुक्तदेव-मल्लधारि-मुनीन्द्रपादपद्मगं
कण्डोदमाप्यमें नेनेद भव्यजनकमकोण्डचण्ड —
दण्ड-विरोधि-दण्ड-नृप-दण्ड-यमत्रयु-वज्रदण्ड-को—
दण्ड-कराल-दण्डधर-दण्डभयं-पेरपिट्टि-पेगलें ॥१९॥

बलयुतरं मल्लल्युव लतान्तशरङ्गिदिरागितागिस
ल्बलिसे पल्लचि तूल्दवननोडिसिमेय् वगंयाद दूसरिं।
कलेयदे निन्द कर्ब्बुनद कर्गिद सिप्पिनमक्के-वेत्त क—
त्तलमेनिसित्तु पुत्तडर्देमेय्य मलं मलधारि-देवरं ॥२०॥
मरेदुमदोम्मे लौकिकद वार्त्तेयनाडद कैत्त वागिलं
तेरेयद भानुवस्तमितमागिरे पोगद मेय्यनोम्मेयुं।
तुरिमद कुक्कुटासनकें सोलद गण्डविमुक्तवृत्तियं
मरेयद घोर-दुश्चर-तपश्चरितं मलधारिदेवर ॥२१॥

आ-धारित्र-चक्रवर्त्ति गल शिष्यरु ॥

पञ्चेन्द्रिय प्रथित-सामञ्ज-कुम्भपोट्ट-निर्लोट-लम्पट-महांम-
क्षमम-सिद्ध।
सिद्धान्त-वारिनिधि-पूर्ण-निशाधिनाथो वाभाति भूरिभुवने
शुभचन्द्रदेवः ॥२२॥

शुभाभ्राभसुरद्विपामरगरित्तारापतिस्पष्ट—
ज्योत्स्ना-कुन्द-शशीक्षु-कन्यु-कमलाभाशा-तरङ्गोत्करः।
प्रलय-प्रध्वस्त-कीर्त्तिमन्वहमिमां गायन्ति देवाङ्गना
दिव्यां शुभचन्द्रदेव भवतश्चारित्रभूमामिनि ॥२३॥

शुभचन्द्रमुनीन्द्रयशा
स्वमेयात्मरियागमाम्बरदिन्नो चन्द्र।
प्रभुवेगिरे कन्दि कुन्दिद—
नभव-गिरोमणिगदंक कन्दुं कुन्दु ॥२४॥

गलसु विजयदुत्तर—

[illegible]

महाराजराज्यसमुद्धरणकलिगलाभरणश्रीजैनधर्म्मामृताम्बुधिप्रवर्द्ध
न-सुधाकर-सम्यक्त—रत्नाकराद्यनेकनामावलीसमासादितप्रशस्तोन्न
म्महाप्रधानदण्डनायकगङ्गराजं तम्म गुरुगल् श्रीमूलसङ्घदेसि
गगद पुस्तकगच्छद शुभचन्द्र सिद्धान्तदेवर्ग्गे परोक्षविनयं
निसिधिगेय निलिसि महापूजेयं माडि महादानमं गेय्दर ॥
आमहानुभावनत्तिगे ॥ शुभचन्द्रसिद्धान्तदेवर गुरु ॥

वरजिनपूजेयनत्या—
दरदिन्दं जक्कणब्बे माडिसुवलुस—।
वरिते गुणान्विते यें—
न्दी धरणीतल मेचि पोगलुतिर्प्पुदु निर्ब्बं ॥२९॥
दोरेये जक्कणिकब्बेगी गुणनदोल् चारित्रदोल् शीलदोल्
परमश्रीजिनपूजेयोल् सकलदानाग्रर्य्यदोल् सारवदोल् ।
गुरुपादाम्बुजभक्तियोल् विनयदोल् भव्यर्क्कलं कन्दर्प—
दरदि मिसिमुतिर्प्पं पेम्पिनेडेयोल् मत्तन्यकान्ताजनम् ॥३०॥
श्रीमत्प्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेवर गुरु हेग्गडेमरिसमुद्रं वरेवं ॥
विनदल्कारिमुत्तिप्पर्क्क महामानाचारि लोकरिसिद
गङ्गज महा ॥ श्री श्री ॥

[इस लेख में पोय्सल महाराज गङ्गनरेश विष्णुवर्द्धन द्वारा अपने गुरु शुभचन्द्र देव की निषद्या निर्माण कराये जाने का उल्लेख है। शुभचन्द्र देव का स्वर्गारोहण शक सं० १०२२, आसोज कृष्ण १० को हुआ था। इनके गुण वर्णना-वर्णन में मलिषेणदेव और श्रीधरदेव के उल्लेख सब से प्रथम ग्यारह श्लोक में ही हैं जो अत्यधिक शिलालेख सं० ५४ (६६) के हैं। इनके वरदान चन्द्रकीर्ति महारक, दिवाकरनन्दि,

गुंगुरगलुदासविसनरदासयशं नृपकामयोल्सलं
पोरेद महीशनेन्दोडेने वण्णिपरार्नेगल्देचिगाङ्न ॥५॥

कं [द] ॥ मनुचरितनेचिगाङ्न
मनेयोल् मुनिजनमम्मुदमुं सुधजनमु ।
जिनपूजने जिनवन्दने
जिनमहिमेगलाश्रकालमुं शोभिसुगु ॥६॥

आमहानुभावनर्ङ्गिर्येन्तप्पनेन्दोडं ।
उत्तम-गुण-मणि-निलया—
दुत्तिगनेनल्कोण्डुदेन्दु जगमेल्लं क—।
द्यस्तुविनममलगुणसा—
स्तुतिगे जगदोलगे पोगिपुदवेये नोन्तसु ॥७॥
मनुचं जिनपतिनुतिगि ।
मनमं मुनिजनचरणगि सकलमिदि—
नेनगोन्दी सत्पुनेगल्
मनमं जगदोलगं पोगिपुदवेनिसिपुदु ॥८॥
अन्त दिनुनेचिगाङ्न—
मनमदोलुदिसि सद्गुणमनुना—
मन जननि जननि सुख—
क्के नेगल्वन् पोगिपुदे गुणदुर्जनिगिं ॥९॥
मन्निसिद पोन्नाम्बिके पति—
जनमं सुधजनमु मेच्चेनेम्बी मनल्ल—
ल्लने मन्निसु परमे सुगम—

[न] नन्तमं नेरपि परपि जममंजगदोलु ॥१०॥

ध [घन] ॥ इन्तेनिसिदापोचाम्बिकें बेल्गोलद तीर्थं मोदलागनेकतीर्थंगलोलु पल्लवुं चैत्यालयङ्गल माडिसि महादान गेय्दु ॥

ध्रु [च] ॥ अदनिन्नेनेम्येनानेन्दमस्द सुकृतमं नोड रोमाञ्चमाद—

पुदु पेल्वुद्योगदिन्दं स्मरियिपदेनमो वीतरागाय गाई—
रुद्यद योपिद् भावदी काम्बद परिणतियिं गेल्दु सल्लेखनासम्पददिन्दं देविपोचाम्बिकें सुरपदमं लीलेयिं सूरेगोण्डल् ॥११॥

शकवर्ष १०४३ नेय साधारण संवत्सरदाषाढ़ शुद्ध ५ सोमवारदन्दु सन्यसनमं कैकोण्डु एकपार्श्वनियमदि पञ्चपदमनुच्चारिसुत्तं देवलोकक्के सन्दलु ॥ श्री जगज्जननियपुत्रं ॥ समधिगतपञ्चमहाशब्द महासामन्ताधिपति महाप्रचण्डदण्डनायकं । वैरिभयदायकं । गोत्रपवित्रं । बुधजनमित्र । श्रीजैनधर्म्मामृताम्बुधिप्रवर्द्धनसुधाकरं । सम्यक्त्वरत्नाकरं । आहाराभयभैषज्य-शास्त्रदानविनोद । भव्यजनहृदयप्रमोद । विष्णुवर्द्धन भूपालप्रोटमल्लमहाराजगजाधिपैकपूर्णकुम्भ । धर्म्महर्म्योद्दरणमूलस्तम्भ । सुटिदन्तेगण्डपेगलेर बेट्टोण्ड । द्रोहघरट्टाद्यनेक नामावलीसमालङ्कृतनप्प श्रीमन्महाप्रधानं दण्डनायकं गङ्गराजं सन्नुतमाम्बिकें पोचलदेवियर दिवकें सल्लसु परोक्षविनयदेन्दी निसिधिगेयं निल्लिसि प्रतिष्ठे गेय्दु महादानपूजाभ्यर्च्चनाभिषेकङ्गलं माडिद मङ्गलमहा श्री श्री ॥

श्री प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवगुरुं पेर्गंडे चावराजं वरेदं ॥
रूवारिहोय्सलाचारियमगं वर्द्धमानाचारि विरुदलवारि-
मुखतिलकं कण्डरिसिद ॥

[इस लेख में 'मार' और 'माकव्वे' के सुपुत्र 'एचि' व 'एचि-गाङ्ग' की भार्या 'पोचिकब्बे' की धर्मपरायणता और अन्त में संन्यास-विधि से स्वर्गारोहण का उल्लेख है। पोचिकब्बे ने अनेक धार्मिक कार्य किये। उन्होंने बेल्गोल में अनेक मन्दिर बनवाये। शक सं० १०५१, आषाढ़ सुदि ५ सोमवार को इस धर्मवती महिला का स्वर्गवास हो जाने पर उसके प्रतापी पुत्र महासामान्ताधिपति, महाप्रचण्ड दण्डनायक, विष्णुवर्द्धन महाराज के मंत्री गङ्गराज ने अपनी माता की स्मारक यह निषद्या निर्माण कराई।

यह लेख प्रभाचन्द्र सिद्धान्त देव के गृहस्थ शिष्य चावराज का रचा हुआ और होय्सलाचारि के पुत्र वर्धमानाचारि द्वारा उत्कीर्ण है]

४५ (१२५)

एरडु कट्टे वस्ति के पश्चिम की ओर एक पाषाण पर।

(लगभग शक सं० १०४०)

श्रीमत्परमगम्भीर-स्याद्वादामोघलाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥
भद्रमस्तु जिनशासनाय सम्पद्यतां प्रतिविधानहेतवे ।
अन्यवादिमदहस्तिमस्तकस्फाटनाय पटवे पटीयसे ॥ २ ॥

स्वस्ति 'समधिगतपञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वर द्वारवतीपुर वराधीश्वरं यादवकुलाम्बरद्युमणि सम्यक्त्वचूडामणि मलपरोल्

गण्डारनेकनामावली-समालङ्कृतस्य श्रीमन्महामण्डलेश्वरं त्रिभुवनमल्ल बलकाडुगोण्ड भुज-बलवीर गङ्ग विष्णुवर्द्धन होय्सलदेवर विजयराज्यसुखरात्रसाभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमा चन्द्रार्कतारं सलुत्तंइरे सत्पादपद्मोपजीवि ॥

वृत्त ॥ जनताधारनुदारनन्यवनिताहृत्कामगुरुदी-
घनवृत्त-स्तन-दानपुरस्सरधीर शास्त्रैकरक्षे ।
जनकं शास्त्रैक शासनाष्टये विबुधव्रज्यानवर्म्मप्रयु-
क्तं निकामाप्तचरित्रं सार्थनमिदंनेर्कं महाराज्यलेर ॥ १ ॥

कन्द ॥ विशदमनं बुधजन—
मित्र द्विजकुलपवित्रनेंबम जगदोलु ।
पात्रमरिपुकुलकन्दपमित्र
कौण्डिन्यगोत्रन गलचरित्र ॥ २ ॥
मनुचरितनधिगाढ्न
नेनेयालुगुनिजगगुरुगुं बुधजनगुं ।
जिनदत्तनंजिनवन्दने
जिनगहिंगणलाव काकमु सोमिसुगुं ॥ ३ ॥
वनजगुलनलिनमित्र-
वृत्तिवनोजन एन्दरवु जगतल्लं ई-
रेंलुदिनमलकुगुत्तरा
रूपितनं जगदोजन चारित्रवदेवमास्तु ॥ ४ ॥
जनजिनेशिनेंचिरात्रन दोसिकवदेव बुधजनिक-जन्दे-
वरा-देव-दान-चरितकर्ट्टेसेदोडंट्टे विबुध-बुधक-चारित्र दान

बाणनुवसम-समर-रस-रसिक-रिपु-नृप-कलापावलेप-लोप-लोलुप-कृपाणनुवाहाराभय-भैषज्य-शास्त्रदान-विनोदनुं सकल-लोक-शोकापनोदनुं ॥

वृत्त ॥ वज्रं वज्रभृतो हलं हलभृतश्चक्रं तथा चक्रिण
श्शक्तिश्शक्तिधरस्य गाण्डिवधनुर्गाण्डीव-क्रोदण्डिनः ।
यच्चक्रत्त वितनोति विष्णुनृपतेष्कार्य्यं कयं माद्दौ-
र्गंङ्गो गाङ्ग-तरङ्गरञ्जित-यशो-राशिस्सवर्ण्णो भवेत् ॥ ७ ॥

इन्तेनिप श्रीमन्महाप्रधानं दण्डनायकं द्रोहघरट्टगङ्गराजं चालुक्यचक्रवर्त्तिं त्रिभुवनमल्ल पेर्म्माडिदेवनदलं पन्निर्व्वरुसामन्तर्व्वेरसुकण्णेगालयोडिनलुबिट्टिरे ॥

कन्द ॥ तंगेयारुवमं हारुव
यगेयं तनगिरुल वरवेनुत सवङ्गं ।
घुरुघकटकिगरनलिरं
पुगिसिदुदु भुजासि गङ्गदण्डाधिपन ॥ ८ ॥

वचन ॥ एम्बिनमवत्कन्दकेलियिन्दमनिवरुं सामन्तरुमं भङ्गिसि तदीयवस्तु-वाहनसमूहमं निजस्वामिगे-तन्दु कोट्टुनिज-भुजाविष्टम्भकेमेच्चि मेच्चिदें बेडिकोल्लेने ॥

कन्द । परमप्रसादमं पडेदु
राज्यमं धनमनेनुमं वेडदन-
स्वरमागे बेडिकोण्डं
परमननिदनद्दंदर्च्चनाभ्यर्चितचित्त ॥ ९ ॥

अन्तुबेडिकोण्डु ॥

गुणमणिगणसिंधु शिष्टलोकैकबन्धुः
विबुधमधुपफुल्लः फुल्लबाणादिसख्यः ॥१ ॥
श्रीवधुचन्द्रलेखे सुरभूरुहदुद्भवदिं पयोधिवे-
लावधु पेम्पुवेत्तवोल निन्दिते नागले चारुरूपलो- ।
लावति दण्डनायकिति लक्कनदेमति बूचिराजने-
म्मीविभु पुट्टे पेम्पु वडेदार्ज्जिसिदलु पिरिदप्प कीर्त्तिय ॥२।

आवयव्वेय मगनेन्तप्पनेन्दडे ॥

स्वस्ति समस्तभुवनभवनविख्यातख्यातिक्रान्तानिकामकमनी यमुखकमलपरागपरभागसुभगीकृतात्मीयवक्त्रं । स्वकीयकायका न्तिपरिहसितकुसुमचापगात्रं । आहारामयभैषज्यशास्त्रदान विनोदनं । सकललोकशोकामनोदनं । निखिलगुणगणाभरणनं जिनचरणशरणनुमेनिसिद बूचयं ।

वृत्त ॥ विनयद सीमे सत्यद तवर्म्मने शौचद जन्ममूमि येन्दनवरतं पेगल्चुदु जनं विबुधोत्करकैरवप्रबो-
धनहिमरोचियं नेगर्द बूचियनुद्धपरार्थसद्गुणा-
भिनवदपौचियं सुभटभीकरविक्रमसव्यसाचियं ॥ ३ ॥

आन्यण्णं सकवर्ष १०३७ नेय विजयसंवत्सरद वैशाखशुद्ध १० आदित्यवार दन्दु सर्व्वसङ्गपरित्यागपूर्व्वकं मुडिपिदं ॥

(पश्चिममुख)

पद्य ॥ त्यागंसर्व्वगुणाधिक तदनुजं शौर्यं च तद्वान्यवं
धैर्यं गर्व्वगुणातिदारुणरिपुं ज्ञानं मनोज्ञं सतां ।

श्रीवासंवसुधा सुधैकजनकं श्रीभूषणोदारितं
श्रव्यं सत्यगुदीकवंशतिलकं किं वा न चातुर्थकाक् ॥ ४ ॥
यो श्रीमच्चे सकलंकविभूषणगुणं दानकर्मे भूषणो
धर्मरत्नाकरभूजभूषमणनी सम्मोरत्नाधा विधा ।
यो रङ्गाकरभूदयुक्तिनिपुणो यो मंत्रभूषं गत-
श्रीराज्ञ स्वास्वमना मनोविलसितं श्रीदर्शनभूषणः ॥ ५ ॥
धारादारहति प्रसिद्धसरस्वत्यूर्जित-श्रीरिति
प्राप्तश्रीगणधिप्रशस्त्यगुणरत्नुरचैर्मनीषीति च ।
श्रीमद्दृष्टभूषणं त्रिविधमा लक्ष्मीमदत्ता शिवा—
लम्भ स्वापयतिस्म धर्मगुणरत्नाकरादृष्टि प्रति ॥ ६ ॥
धरे क्षपुधाद्यु विभुवविनेयनिकायमनाथमाद्युवाक्-
सरलियुमीगर्ग्गो जगदोक्षाग्गंमनादरर्यावेषादले—
न्दिरदं विषादमादमादवुसिरं भव्यजनान्त [रङ्ग] दोलु
निरुपमनेयूदिद नंगदं धृविवगं दिविजेन्द्रलोकमं ॥७॥
श्री मूलसङ्घ देसिगगण पुस्तकगच्छद शुभचन्द्रसिद्धान्त-
देवर गुड्डं धृवगन निधिधिगं ॥

[इस लेख में 'मालवे' राजा के पुत्र 'धृविराज' व धृवय के सौन्दर्य, शौर्य और सद्गुणों का वर्णन है। यह तेजस्वी और धर्मिष्ठ पुरुष शक सं० १०१० वैशाख सुदि १० रविवार को सर्व-परिग्रह का त्यागकर स्वर्गगामी हुआ। उसके स्मरणार्थ सेनापति गङ्ग ने एक पाषाण-स्तम्भ आरोपित कराया।

धृविराज के गुरु मूल संघ, देसीगण पुस्तक गच्छ के शुभचन्द्र सिद्धान्त देव थे।]

४७ (१२७)

उसी मण्डप में द्वितीय स्तम्भ पर

(शक सं० १०३७)

(दक्षिणमुख)

भद्रं भूयाज्जिनेन्द्राणां शासनायाघनाशिने ।
कुतीर्थ-ध्वान्तसङ्घातप्रभिन्नघनभानवे ॥ १ ॥
श्रीमन्नाभेयनाद्याद्यमलजिनवरानीकसौधोरुवार्द्धिः
प्रध्वस्ताघ-प्रमेय-प्रचय-विषय-कैवल्यबोधोरु-वेदिः ।
शस्तस्यात्कारमुद्राशबलितजनतानन्दनादोरुघोषः
स्थेयादाचन्द्रतारं परमसुखमहावीर्य्यवीचीनिकायः ॥ २ ॥
श्रीमन्मुनीन्द्रोत्तमरत्नवर्गाः श्रीगौतमाद्याः प्रभविष्णवस्ते ।
तत्राम्बुधौ सन्नमहर्द्धियुक्तास्तत्सन्ततौ नन्दिगणे बभूव ॥३॥
श्रीपद्मनन्दीत्यनवद्यनामाद्याचार्य्यशब्दोत्तरकोण्डकुन्दः ।
द्वितीयमासीदभिधानमुद्यच्चरित्रसञ्जातसुचारणर्द्धिः ॥४॥
बभूवुमास्वातिमुनीश्वरोऽसावाचार्य्यशब्दोत्तरगृद्धपिञ्छः ।
तदन्वये तत्सदृशोऽस्ति नान्यस्तात्कालिकाशेषपदार्थवेदी ॥५॥
श्रीगृद्धपिञ्छमुनिपस्यबलाकपिञ्छः
शिष्योऽजनिष्टभुवनत्रयवर्त्तिकीर्तिः ।
चारित्रचुञ्चुरखिलावनिपालमौलि-
मालाशिलीमुखविराजितपादपद्मः ॥६॥
तच्छिष्योगुणनन्दिपण्डितयतिश्चारित्रचक्रेश्वर-
श्चतर्कव्याकरणादिशास्त्रनिपुणस्साहित्यविद्यापतिः ।

शिष्यावादिमदान्धसिन्धुरघटासङ्घट्टकण्ठीरवो
भव्याम्भोजदिवाकरो विजयतां कन्दर्पदर्पापहः ॥७॥
सच्छिष्यावलिशाखा विवेकनिपुणैरलाञ्छिपारङ्गता-
नेकैरुद्धृतमया द्विषन्नृपतिभिर्गाढान्वयाभ्यर्चक-
ख्याख्याने पटवो विचित्रचरितास्तेषु प्रसिद्धो मुनिः
सामान्यैनयभद्रबाहुनिपुणो देवेन्द्रसैद्धान्तिकः ॥८॥
अजनि महिषचूडाग्ररत्नराजिवाहि-
र्विलसितसकरकेसूत्पलदेरण्डगर्वः ।
कृतयनिकरमूधानीकदम्भोलिदण्ड
स्त्रजपटु विबुधेन्द्रो भारतीमालपट्टः ॥९॥
तच्छिष्यः फलपीलनन्दिमुनिपस्सैद्धान्तचक्रेश्वरः
पाराद्वाग्पतिवादिविप्रकुलभ्याघ्रोरुकीर्त्तीश्वरः ।
पक्षाक्षान्मदकुम्भिकुम्भदलनप्रोन्मुक्तमुक्ताफल—
प्राग्भाराञ्चितकेसरी पुरनुता वाक्कामिनीवल्लभः ॥१०॥
तत्पुत्रको महेन्द्रादिकीर्त्तिर्म्मदनाङ्कुरः ।
यस्य वाग्देवता शक्रा श्रीर्वा मालामयूयुजत् ॥११॥
तच्छिष्यो वीरनन्दी कवि-गमक-महावादि-वाग्मित्वयुक्तो
यस्य श्रीनाकसिन्धुत्रिदशपतिगजाकाशगङ्गायकीर्त्ति ।
गायन्त्युच्चैर्हसन्ते त्रिदशयुवतयः प्रीतिरागानुबन्धात्
सोऽयं जीयात्प्रमादप्रकरमहिधराभीलदम्भोलिदण्डः ॥१२॥
श्रीगोल्लाचार्य्यनामा समजनि मुनिपस्सुन्दरस्त्रत्रयात्मा
सिद्धान्तार्थ-सार्थ-प्रकटनपटु-सिद्धान्त-शास्त्राब्धि-वीची—

सङ्घातचालिताद्रिः प्रमदमदकलालीढबुद्धिप्रभावः
जीयाद्भू पाल-मौलि-द्युमणि-विदलिताङ्घ्रि प्रज्वलद्भीविलासः ॥
पेर्ग्गडे चावराजं वरेदंमङ्गल ॥

(पश्चिममुख)

यीरणन्दिविबुधेन्द्रसन्ततौ नूत्नवन्दितनरेन्द्रवंशचू-
डामणिः प्रथितगोल्लदेशभूपालकः किमपि कारणेन सः ॥१४॥
श्रीमत्त्रैकाल्ययोगी समजनि महिकाकायलग्नातनुत्रं
यस्याभूद्दृष्टिधारा निशित-शर-गणा भीष्ममार्त्तण्डबिम्बं ।
चक्रेसद्वृत्तपापाकलिलयतिवरस्यापशून्यिजेतुं
गोल्लाचार्य्यस्य शिष्यस्समभवतु भुवने भव्यसत्कैरवेन्दुः ॥१५॥
तपस्तामर्य्यतो यस्य ह्यासीऽभूद्ब्रह्मराक्षसः ।
यस्य स्मरणमात्रेण मुञ्चन्ति च महाग्रहाः ॥१६॥
प्राग्व्याख्यातां गतं लोके करणस्य हि लक्षणं ।
तपःसामर्य्यतस्तस्य तपः किं वर्ण्यतुं क्षमं ॥१७॥
त्रैकाल्य-योगि-यतिपाप-विनेयरक्ष-
सिद्धान्तवार्द्धिपरिवर्द्धनपूर्णचन्द्रः ।
दिग्नागकुम्भभिदिनोज्ज्वलकीर्त्तिकान्तो
जीयादभावभयनन्दिगुणार्णवार्यः ॥१८॥
येनाशेषपरीषहादिरिपवस्सम्यग्जिताः प्रोद्भटाः
येनात्रा दशलक्षणात्तमहाधर्म्मांकवक्षस्थलाः ।
येनाशेष-भवोपताप-हननस्याप्यात्मसौख्यं
प्राप्तं स्याद्भयनन्दिमुनिपसोऽयं कृतार्थो भुवि ॥१९॥

तस्शिष्यस्सकलागमार्थनिपुणो लोकज्ञतामंयुत-
स्सच्चारित्रविचित्रवादविलसन्मौनीन्द्रचन्द्रोदयः ।
मिथ्यान्धारजनप्रतापहननश्रीमान्महेन्द्रप्रभु-
र्ख्यातस्सत्फलनेन्दुनामयमुनिपः कामाटवीपावकः ॥२०॥
अस्मिन् सकलचन्द्रो विधविधम्भरेश
प्रणुतपदपयोज कुन्ददारेन्दुरोचिः ।
विदशगजमुखस्तम्भयोमसिन्धुप्रकाश
प्रतिमविशदकीर्तिर्व्याप्तदिग्मण्डलान्तः ॥२१॥
शिष्यस्तस्य दृढव्रतशमनिधिर्म्मत्संयमाम्भोनिधिः
शीलानां विपुलालयस्समभवद्विख्यातिभिर्व्युत्थितिभिर्युतः ।
नानासद्गुणरत्नरोहणगिरिर् श्रीरामणो जन्मभूः
प्रख्यातो भुवि मेघचन्द्रमुनिपस्त्रैविद्यचक्राधिपः ॥ २२ ॥
त्रैविद्यवागीश्वर-मेघचन्द्रस्याभूत्प्रभाचन्द्रमुनिस्सुशिष्यः ।
शुभद्रताम्भोनिधिपूर्णचन्द्रो निर्दूतदग्वत्रितयो विशाल्यः २३
पुष्पास्त्रानून-दानोत्कट-कट-करटिच्छेद-दक्षान्मृगेन्द्रः
नानाभव्याब्जषण्डप्रतति-विकसन-श्रीविधानैकभानुः ।
संसाराम्भोधिमध्यान्तरणकरणतीयानरत्नत्रयेशः
सम्यग्जैनागमार्थान्वित-विमलमतिः श्री प्रभाचन्द्र
योगी ॥ २४ ॥

(उत्तरमुख)

श्रीभूपालकमौलिलालितपदस्सज्ञानलक्ष्मीपति—
र्यश्चारित्रोत्करवाहनस्त्रिजगयशश्छत्रभ्रातपत्रांचितः ।

त्रैलोक्याद्भुतमन्मथारिविजयस्सद्धर्मचक्राधिपः
पृथ्वीसंस्तवतूर्य्यघोषनिनदस्त्रैविद्यचक्रेश्वरः ॥ २५ ॥
शब्दौघस्य शिरोमणिः प्रविलसत्तर्कैकचूडामणिः
सैद्धान्तेद्धशिरोमणिः प्रशमवद् ज्ञातस्य चूड़ामणिः ।
प्रोद्यत्संयमिनां शिरोमणिरुदञ्चद्भव्यरत्नामणि-
र्जीयात्सन्नुतमेघचन्द्रमुनिपस्त्रैविद्यचूड़ामणिः ॥ २६ ॥
त्रैविद्योत्तममेघचन्द्रयमिनः पत्युर्म्ममासि प्रिया
वाग्देवी दिसहावहित्थहृदया तद्व्रश्यकर्म्मार्त्तिनी ।
कीर्त्तिर्व्वारिधिदिक्कुलाचलकुले स्वादात्मा प्रद्युम-
त्यन्वेष्टुं मणिमन्त्रमन्त्रनिचयं सा सम्भ्रमाभ्राम्यति ॥२७॥
तर्कन्यायसुवर्त्मवेदिरमलार्हत्सूक्तिरत्नौकिकः
शब्दमन्यविशुद्धशङ्खकलितस्याद्वादसद्द्रुमः ।
व्याख्यानोर्ज्जितघोषपत्तर् प्रविपुलप्रज्ञोद्भवोर्वीधरो
जीयाद्विश्रुतमेघचन्द्र-मुनिपस्त्रैविद्य-रत्नाकरः ॥ २८ ॥
श्रीमूलसङ्घकुव-पुस्तक-गच्छ-देशी
यो यद्वाधिपसुतार्किकचक्रवर्त्ती ।
सैद्धान्तिकेश्वरशिलामणिमेघचन्द्र-
स्त्रैविद्यदेव इति सद्भिबुधा(:) स्तुवन्ति ॥ २९ ॥
सिद्धान्ते जिन वीरसेन-सदृशः शास्त्राब्ज-भा-भास्करः
षट्तर्कैप्यफलङ्कदेवविबुधः साक्षादयं भूतले ।
सर्व्व-व्याकरणे विपश्चिदधिपः श्रीपूज्यपादस्स्वयं
त्रैविद्योत्तममेघचन्द्रमुनिपो वादीभपञ्चाननः ॥ ३० ॥

त्रैलोक्याद्भुतमन्मथारिविजयस्सद्धर्म्मचक्राधिपः
पृथ्व्योसंस्तवतूर्य्यघोषनिनदस्त्रैविद्यचक्रेश्वरः ॥ २५ ॥
शब्दौघस्य शिरोमणिः प्रविलसत्तर्कश्चूड़ामणिः
सैद्धान्तेद्धशिरोमणिः प्रशमवद् व्रातस्य चूड़ामणिः।
प्रोद्गत्संयमिनां शिरोमणिरुदग्वाग्वल्लरीसामणि-
र्जीयात्सन्नुतमेघचन्द्रमुनिपस्त्रैविद्यचूड़ामणिः ॥ २६ ॥
त्रैविद्योत्तममेघचन्द्रयमिनः पत्युर्म्ममासि प्रिया
वाग्देवी दिमहावदित्यहृदया तद्व्रतैकर्म्मार्त्तिनी।
कीर्त्तिर्द्वारिधिदिक्कुलाचलकुले स्यादात्मा प्रथ्नुम-
त्यन्वेष्टुं मणिमन्त्रतन्त्रनिपुणं सा सम्भ्रमाभ्याप्यति ॥२७॥
तर्कन्यायसुवर्णवेदिरमलाहेत्सूक्तिरत्नौक्तिकः
शब्दस्वच्छविशुद्धशङ्खकलितस्याद्वादगङ्गाद्रुमः।
व्याख्यानोर्जितघोषगर्व्वपिहितप्रक्षोद्भवीर्वीधरो
जीयाद्विद्भुतमेघचन्द्र-मुनिपस्त्रैविद्य-चन्द्राकरः ॥ २८ ॥
श्रीमूलसङ्घकृत-पुस्तक-गच्छ-देशी
योगद्रकाधिपसुतार्किकचक्रवर्त्ती।
सैद्धान्तिकेश्वरशिरोमणिमेघचन्द्र-
त्रैविद्यदेव इति सद्भिरुपास्यते(:) स्तुवन्ति ॥ २९ ॥
सिद्धान्तं जिन वीरसेन-गदितः शास्त्रार्त्थ-भा-भास्करः
षट्तर्कैकशकुन्तदेवविबुधः साक्षादयं भूतले।
सर्व्व-व्याकरणे विधिश्चिदधिपः श्रीपूज्यपादस्स्वयं
त्रैविद्योत्तममेघचन्द्रमुनिपो वादीभपञ्चाननः ॥ ३० ॥

क्षर गुद्दि ॥

परमपदार्थनिर्भयमनान्त विदग्धते दुर्भपङ्गलोल्
परिचयमेन्दुमिश्रदतिमुग्धते वनितेयङ्गे चित्तदोल् ।
सिरिदनुरागमं पडेव रूपु विनेयजनान्तरङ्गदोल्
निरुपमभक्ति पडेव पेम्पिनु लक्ष्मणेगेन्दुमन्वितं ॥ ३ ॥
चतुरतेयोल् लावण्य दो-
क्षतिरायमेनें नेगल्द देवभक्तियोलिन्दी
क्षितियोलगे गङ्गराजन
सति लक्ष्म्यम्बिकेयोलिवरसतियरोरेये ॥ ४ ॥
सौभाग्यदोलमर्दादं
सोमास्पदमादरूपिनोलि प्रथ-
सोभूत लक्ष्मियेन्दपु-
दी भूवलमिनितुमेन्दे लक्ष्मीमतियं ॥ ५ ॥
शोभेयनें कय्कोण्डुदो
सौभाग्यद कथियेनिप्प लक्ष्मीमतियि-
न्दो भुवन-वलदोलादा-
भय-भैषा(ष)ज्यशास्त्रदानविधानं ॥ ६ ॥
वितरणगुणमदे वनिता—
कृतियं कय्कोण्डुदेनिप वदिमेय लक्ष्मी-
मतियलवो दैवबाधि-
ष्टितेयल्लदे केवलं मनुष्याङ्गनेये ॥ ७ ॥
श्रमगमनं दरिशलोचनं

कलधौतनन्दि के पुत्र महेन्द्रकीर्त्ति हुए जिनकी आचार्यपरम्परा में क्रम से वीरनन्दि, गोलाचार्य, त्रैकाल्ययोगी, अभयनन्दि और सकलचन्द्र मुनि हुए। लेख में इन आचार्यों के तप और प्रभाव का श्रद्धा वर्णन है। त्रैकाल्ययोगी के विषय में कहा गया है कि तप के प्रभाव से एक महाराक्षस उनका शिष्य होगया था। उनके स्मरणमात्र से बड़े बड़े भूत भागते थे, उनके प्रताप से करञ्ज का तैल घृत में परिवर्तित होगया था। सकलचन्द्रमुनि के शिष्य मेघचन्द्र त्रैविद्य हुए जो सिद्धान्त में वीरसेन, तर्क में अकलङ्क और व्याकरण में पूज्यपाद के समान विद्वान् थे।

शक सं० १०१७ मार्गसिर सुदि १४ बृहस्पतिवार को उन्होंने सल्लेखनासहित शरीर-त्याग किया। उनके प्रमुख शिष्य प्रभाचन्द्र सिद्धान्त देव ने महाप्रधान दण्डनायक गङ्गराज द्वारा उनकी निषद्या निर्माण कराई।

लेख चावराज का लिखा हुआ है।]

४८ (१२८)

उसी मण्डप में तृतीय स्तम्भ पर

(शक सं० १०४४)

श्रीमत्परमगम्भीर-स्याद्वादामोघलाञ्छनं।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं॥ १॥

जयतु दुरितदूरः चोरकूपारहारः
प्रथितपृथुलकीर्त्तिश्रीशुभेन्दुव्रतीशः।
गुणमणिगणसिन्धुः शिष्टलोकैकबन्धुः
विबुध-मधुप-फुल्लः फुल्लबाणादि-सख्रः॥ २॥

अवर गुप्ति ॥

परमपदार्थनिर्भरमनान्त विदग्धते दुर्भयदुर्नयोल्
परिचयमेन्दुमिष्टदतिमुग्धते वनिनियङ्गे चित्तदोल् ।
पिरिदनुरागमं पदेव रूपु विनेयजनान्तरङ्गदोल्
निरुपमभक्तियं पदेव पेम्पिवु लक्ष्मलेगेन्दुमन्वितं ॥ ३ ॥

चतुरतेयोल् लावण्य दो-
लतिशयमेने नेगल्द देवभक्तियोलिन्दी
क्षितियोलगे गङ्गराजन
सति लक्ष्म्यम्बिकेयोलितरसतियर्दोरेये ॥ ४ ॥

सौभाग्यदोलमर्दं
सोभास्पदमादरूपिनोलिप प्रख-
ख्यातमुमेनिसिय्दपु-
दी मूवलमिनितुमय्दे लक्ष्मीमतियं ॥ ५ ॥

शोभेयनें कय्कोण्डुदो
सौभाग्यद कणियेंनिप्प लक्ष्मीमतियि-
न्दी भुवन-स्तुतदोलाहा-
राभय-भैश(ष)ध्यशास्त्रदानविधानं ॥ ६ ॥

वितरणगुणमदे वनिता-
कृतियं कय्कोण्डुदेनिप महिमेय लक्ष्मी-
मतियेल्लवो देवताधि-
ष्ठितेयप्पुदे केवलं मनुष्याङ्गनेये ॥ ७ ॥

इभगमने हरिणलोचने

शुभलक्षणे गङ्गराजनर्द्धाङ्गने ता–
नभिनवरुग्मिणियेनल्लो
त्रिभुवनदोल् पोल्वरोलरे लक्ष्मीमतियं ॥ ८ ॥

श्रीमूलसङ्घद देशियगणद पुस्तकगच्छद श्रीमत्-शुभचन्द्र सिद्धान्तदेवर गुड्डि दण्डनायकिति लकब्बे शक वर्ष १०४४ नेय प्लवसम्वत्सरद शुद्ध ११ शुक्रवारदन्दु सन्यसनं गेय्दु समाधिवेरसि मुडिपि दिवलोकके सन्दल् ॥

परोक्षविनेयके निषिधिगेयं श्रीमद्दण्डनायक-गङ्गराजं निलिसि प्रतिष्ठेमाडि महादानमहापुजेगलं माडिदरु मङ्गल महा श्री श्री ॥

[इस लेख में दण्डनायक गङ्गराज की धर्मपत्नी लक्ष्मीमति के गुण, शील और दान की प्रशंसा की गई है। इस धर्मपरायण साध्वी महिला ने शक सं० १०४४ में सन्यास-विधि से शरीर त्याग किया। वह मूलसंघ पुस्तक-गच्छ देशीगण के शुभचन्द्राचार्य की शिष्या थी। अपनी साध्वी स्त्री की स्मृति में दण्डनायक गङ्गराज ने यह निषद्या निर्माण कराई।]

४८ (१२६)

उसी मण्डप में चतुर्थ स्तम्भ पर

(शक सं० १०४२)

(उत्तरमुख)

भद्रमस्तु जिनशासनस्य ॥

जयतु दुरितदूरः क्षीरकूपारहारः

प्रथितपृथुलकीर्तिरभो शुभेन्द्र व्रतीशः ।
गुणमणिगणसिन्धुः शिष्ट लोकैकबन्धुः
विबुधमधुपपूज्यः फुल्लवाणादिगन्धः ॥ १ ॥

श्रीवधूचन्द्रलेखे सुरभूरुहदुग्धवदि पयोधि-वे-
लावधू पेम्पु वेत्तबोलनिन्दितें नागवं चारुरूपली-
लावति दण्डनायकिति लक्कले देवति भूचिराजनं
म्बी विभु पुट्टे पेम्पु बदेदार्जेसिदलू पिरिदप्पकीर्तियं ॥२॥

वचन ॥ श्रा वरवेय मगलेन्दप्पलेन्दहे । स्वस्ति निम्नुपाति-जितवृजिन-भाग - भगवदर्हदहंतीयचारुचरणारविन्दद्वन्द्वानन्दब-न्दनवेलाविलोकनीयाद्भायमाण-लक्ष्मीविलासेयुं । अपहस्तनी-यस्त्रीयजीवितेशजीवितान्तर्जीवनविनोदानारतरतिविलासेयुं । कालेयकालराक्षसरक्षाविकलसकलवाणिजत्राणतिग्मचण्डचा-मुण्डातिभैरवाजभ्रंलिमानसराजमानराजहंसवनिताकल्पेयुं । परमजिनमतपवित्राणकरणकारणीभूत -जिनशासनदेवताकारा-कल्पेयुं । अभिरामगुणगणवशीकरणीयतानुकरणीयचरणीमुनेयुं । श्रीसाहित्यसत्यापितसरोरादमुनेयुं । सद्धर्मानुरागमतियुं एनिमि-दहेमियक ॥

पद्य ॥ श्रीचामुण्डमनोमनोरमरथव्यापारदैकक्रिया
श्रीचामुण्डमनस्सरोजरजसाराजद्विरेफाङ्गना ।
श्रीचामुण्डगृहाङ्गणोद्गतमहाशोकल्पवल्ली स्वयं
श्रीचामुण्डमनःप्रिया विजयतां श्रीदेवतल्लङ्गना ॥ १ ॥

(पश्चिममुख)

आहारं त्रिजगज्जनाय विभयं भीताय दिव्यौषधं
व्याधिव्यापदुपेतदीनमुखिने श्रोत्रे च शास्त्रागमं ।
एवं देवमतिस्सदैव ददती प्रश्चये स्वायुषा—
मर्हद्देवमतिंविधाय विधिना दिव्या वधू प्रोदभू ॥ ४ ॥
आसीत्परशोभकरप्रतापाशेषावनीपालकृतादरस्य ।
चामुण्डनाम्नो वणिजःप्रियाऽऽ मुख्यामतो या भुविदे-
मतीवि ॥ ५ ॥

भूलोक-चैत्यालय-चैत्य-पूजा-व्यापार-कृत्यादरतोऽवतीर्णा
स्वर्गात्सुरस्त्रीतिविलोक्यमाना पुण्येनलावण्यगुणेनयात्र ॥६॥
आहारशास्त्राभयमेषजानां दात्रिन्यलंवर्ण्यचतुष्टयाय ।
पश्चात्समाधिक्रिययायुरन्ते स्वस्थानवत्स्वः प्रविवेशयोच्चैः ॥७॥
सद्धर्मशत्रुं कलिकालराजं जित्वा व्यवस्थापितधर्म्मदृष्ट्या ।
तस्याजयस्तम्भनिभंशिलाया स्तम्भंव्यवस्थापयतिस्म लक्ष्मीः ॥८॥

श्रीमूलसङ्घद देशिगगणद पुस्तकगच्छद शुभचन्द्र सिद्धान्तदेवर गुड्डि शकवर्ष १०४२ नेय विकारिसंवत्सर-दफाल्गुणद ११ बृहवारदन्दु सन्यासन विधियिं देमियक्क सुडिपिदलु ॥

[इस लेख में चामुण्ड नाम के किसी प्रतिष्ठित और राजसन्मानित वणिक् की धर्मवती भार्या 'देमति' व 'देवमति' की प्रशंसा है। इस महिला की माता का नाम 'नागले' व उसके एक भाई और बहिन के नाम क्रमशः वृषिराज और लक्ष्मी थे। दान-पुण्य के कार्यों में जीवन

व्यतीत कर इस महिला ने शक सं० १०४२, फाल्गुण वदि ११ बृहस्पति वार को संन्यास-विधि से शरीर त्याग किया। यह महिला शुभचन्द्र सिद्धान्तदेव की शिष्या थी।]

५० (१४०)

गन्धवारण बस्ती के प्रथम मण्डप में एक स्तम्भ पर

(शक सं० १०६८)

(पूर्वमुख)

भद्रं भूयादिभेन्द्राणां शासनायाघनाशिने ।
कुतीर्थध्वान्तसंघातप्रभिन्नघनभानवे ॥ १ ॥
श्रीमन्नाभेयनाथाद्यमल्लजिनवरानीकसंधोरुवार्द्धिः
प्रध्वस्ताघप्रमेयप्रचयविषयकैवल्यबोधोरुवेदिः ।
शान्तस्यात्कारमुद्राशबलितजनवानन्दनादोरुघोषः
ख्येयादाचन्द्रतारं परमसुखमहावीर्य्यबीर्यानिकायः ॥ २ ॥
श्रीमन्मुनीन्द्रोत्तमरत्नवर्ग्गाः श्रीगौतमाद्याः प्रभविष्णवस्ते ।
तत्राम्बुधौसप्तमऋद्धियुक्तास्तत्सन्ततौमन्दिगणे बभूव ॥ ३ ॥
श्रीपद्मनन्दीत्यनवद्यनामाद्याचार्य्यशब्दोत्तरकोण्डकुन्दः ।
द्वितीयमासीदभिधानमुद्यच्चरित्रसंजातसुचारणर्द्धिः ॥ ४ ॥
अभूदुमास्वाति मुनीश्वरोऽसावाचार्य्यशब्दोत्तरगृद्ध-
पिञ्छः ।
तदन्वयेतत्सदृशोऽस्तिनान्यस्तात्कालिकाशेषपदार्थवेदी ॥५॥
श्रीगृद्धपिञ्छमुनिपस्यबलाकपिञ्छः
शिष्योऽजनिष्टभुवनत्रयवर्त्तिकीर्त्तिः ।

चारित्रचञ्चुरखिलावनिपालमौलि-
मालाशिलीमुखविराजितपादपद्मः ॥ ६ ॥
तच्छिष्योगुणनन्दिपण्डितयतिश्चारित्रचक्रेश्वर-
स्तर्कव्याकरणादिशास्त्रनिपुणस्साहित्यविद्यापतिः ।
मिथ्यावादिमदान्धसिन्धुरघटासङ्घट्टकण्ठीरवो
भव्याम्भोजदिवाकरो विजयतां कन्दर्पदर्पापहः ॥ ७ ॥
तच्छिष्यात्रिशता विवेकनिधयश्शास्त्राब्धिपारङ्गता-
स्तेषूत्कृष्टतमा द्विसप्ततिमितास्सिद्धान्तशास्त्रार्थक-
व्याख्याने पटवो विचित्रचरितास्तेषु प्रसिद्धो मुनिः
नानानूननयप्रमाणनिपुणो देवेन्द्रसैद्धान्तिकः ॥ ८ ॥
अजनि महिपचूडारत्नराराजिताङ्घ्रि-
र्व्विजितमकरकेतूद्दण्डदोर्दण्डगर्व्वः ।
कुनयनिकरमूघ्नीकदम्भोलिदण्ड
स्सजयतु विबुधेन्द्रो भारतीभालपट्टः ॥ ९ ॥
तच्छिष्यः कलधौतनन्दिमुनिपस्सैद्धान्तचक्रेश्वरः
पाराधारपरीतधारिणिकुलव्याप्तोरुकीर्त्तीश्वरः ।
पश्चाच्चोन्मदकुम्भिकुम्भदलनप्रोन्मुक्तमुक्ताफल—
प्रांशुप्राञ्चितकेसरी बुधनुतो वाक्कामिनीवल्लभः ॥ १० ॥
तत्सुत्रको महेन्द्रादिकीर्त्तिर्म्मदनशङ्करः ।
यस्य वाग्देवता शक्रा श्रौतीं मालामयूयुजत् ॥ ११ ॥
तच्छिष्योवीरणन्दीकवि-गमक-महाशादि-वाग्मित्वयुक्तो
यस्य श्रीनाकसिन्धुग्विदशपतिगजाकाशसङ्काशकीर्त्तिः ।

गायन्युच्चैर्दिगन्ते त्रिदशयुवतयः प्रीतिरागानुबन्धात्
सोऽयं जीयात्प्रमादप्रकरमहिधरामीक्षदम्मोलिदण्डः ॥१२॥
श्रीगोल्लाचार्य्यनामा समजनि मुनिपस्युद्धरत्रयात्मा
सिद्धात्मार्थे-सार्थे-प्रकटनपटु-सिद्धान्त शास्त्राब्धि-पार्श्वा-
सङ्घातक्षालिताहः प्रमदमदकलालीढबुद्धिप्रभावः
जीयाद्भूपाल-मौलि-द्युमणि-विदलिताङ्घ्रि रत्नप्रभश्री-
विलासः ॥ १३ ॥
वीरणन्दिविबुधेन्द्रसन्ततौ मूलचन्दिलनरेन्द्रवंशभू-
डामणि. प्रथितगोल्लदेशभूपालक. किमपि कारणेन सः ॥१४॥
श्रीमत्त्रैकाल्ययोगी समजनि महिकाकायकल्लाबपुत्र
यस्याभूद्दृष्टिधारा निशित-शर-गणा मोक्षमार्त्तण्डबिम्बे ।
चक्रेऽदद्वृत्तबाधाकलितयतिवरस्यापराद्भिर्जयं
गोल्लाचार्य्यस्य शिष्यस्समजयदु भुवने भव्यगास्करेन्दु ॥१५॥
गङ्गपत्तन लिखित

(दक्षिणमुख)

तपस्सामर्थ्यतो यस्य छत्रीभूदम्बरान्तरम् ।
यस्य स्मरणमात्रेण शुष्यन्ति च महाग्रहाः ॥ १६ ॥
प्राग्भाग्यतां गतं लोके करस्थस्य हि तैलकं ।
तपस्सामर्थ्यतस्तस्य तपः किं वर्ण्यतेऽधुना ॥ १७ ॥
त्रैकाल्य-योगि-यतिपाम-विनेयरत्न-
स्निग्धान्तरात्मविधरिद्धनयूर्जितश्रीः ।
दिग्नागकुम्भलिखितोज्ज्वलकीर्तिकान्तो

जीयादसावभयनन्दिमुनिर्ज्जगत्यां ॥ १८ ॥

येनाशेषपरीषहादिरिपवस्सम्यग्जिता: प्रोद्धता:
येनाप्ता दशलक्षणोत्तममहाधर्म्माख्यकल्पद्रुमा: ।
येनाशेष-भवोपताप-हननं स्वाध्यात्मसंवेदनं
प्राप्तं स्याद्मयादिनन्दिमुनिपस्सोऽयं कृतार्थो भुवि-॥ १९ ॥

तच्छिष्यस्सकलागमार्थनिपुणो लोकज्ञतासंयुत-
स्सच्चारित्रविचित्रचारुचरितस्सौजन्य कन्दाङ्कुर: ।
मिथ्यात्वाञ्जननप्रतापहननश्रीसोमदेवप्रभु-
र्जीयात्सत्सकलेन्दु नाममुनिप: कामाटवीपावक: ॥ २० ॥

अपिच सकलचन्द्रो विश्वविश्वम्भरेश-
प्रणुतपदपयोज: कुन्दहारेन्दुरोचि: ।
त्रिदशगजसुवस्त्र्योमसिन्धुप्रकाश-
प्रतिमविशदकीर्त्तिर्व्वाग्वधूकर्ण्णपूर: ॥ २१ ॥

शिष्यस्तस्य दृढव्रतश्शमनिधिस्सरसंयमाम्भोनिधि:
शीलानां विपुलालयस्समितिभिर्य्युक्तिस्त्रिगुप्तिश्रित: ।
नानासद्गुणरत्नरोहणगिरि: प्रोद्यत्तपोजन्मभू:
प्रख्यातो भुवि मेघचन्द्र मुनिपस्त्रैविद्यचक्राधिप: ॥२२॥

श्रीभूपालकमौलिलालितपदस्पष्टानलक्ष्मीपति—
श्चारित्रोत्करवाहनस्थितयशश्शुभ्रातपत्रान्वित: ।
त्रैलोक्याद्भुतमन्मथारिविजयस्मद्धर्म्मचक्राधिप:
पृथ्वीसंस्तवतूर्य्यघोषनिनदस्त्रैविद्यचक्रेश्वर: ॥ २३ ॥

शाब्दीकस्य शिरोमणिः प्रविलसत्तर्कैकचूडामणिः
सैद्धान्तेषुशिरोमणिः प्रशमवद्-भाषस्य चूडामणि ।
प्रोद्यत्संयमिनां शिरोमणिरदः श्रीमूलसङ्घस्य यः
श्रीपाल्यामृतमेघचन्द्रमुनिपश्चैविद्यचूडामणिः ॥ २४ ॥

वादीभेन्द्र दिगन्तविश्रुतकृतिर्वाग्मित्वविख्यापनी ।
कीर्तिर्व्याप्तदिगन्तरा भुवि सभाक्षोभकरी सद्गुणा
प्यन्वेषुं मतिमन्त्रतन्त्रनिचयं मां सम्भ्रमाभ्यागति ॥ २५ ॥

तर्कव्याकरणच्छन्दोऽलंकृतिसमन्वाद्यैः समग्रैर्बुधै
शब्दब्रह्मविशुद्धबुद्धिविभवैः श्रीपूज्यपादोपमैः ।
ख्याताशेषविजृम्भणाय भुवि यः श्रीमूलसङ्घोदयी
जीयाद्दिव्यमहेन्द्रचन्द्र मुनिपश्चैविद्य-चक्राकरः ॥ २६ ॥

श्रीमूलसङ्घ-पुस्तक-गच्छ देशी
यापट्टणाधिपसुनामिकचक्रवर्ती ।
सैद्धान्तिकेश्वरशिखामणिमेघचन्द्र—
त्रैविद्यदेव इति सद्विदुषा ( ) स्तुवन्ति ॥ २७ ॥

सिद्धान्त जिनसेन-भट्टारकाचार्यवर्य-आ-आकर-
षट्तर्केष्वकलङ्कदेवविबुधस्याद्यं भुवने ।
सर्व-व्याकरण विपश्चिदधिप श्रीपूज्यपादस्यवं
त्रैविद्योत्तममेघचन्द्रमुनिपो वादीभपञ्चानन: ॥ २८ ॥

लिखिता मनोहर वरनागरहोदरस्य गङ्गराज लिखित
(परिचयपत्र)

रुद्राणीशस्य कण्ठं धवलयति हिमज्योतिषोज्ञातमङ्गं
पीतं सौवर्ण्णशैलं शिशुदिनपतनुं राहुदेहं नितान्तं ।
श्रीकान्तावक्षभाङ्गं कमलभवपुर्म्मेघचन्द्रव्रतीन्द्र-
त्रैविद्यस्याखिलाशावलयनिलयसत्कीर्त्तिचन्द्रातपोऽसौ ॥२

मूवत्तारुं गुणदिं
भावजनं कट्टि पेट्टवेल्देर् वृषदिं ।
भाविसुवे मेघचन्द्र-
त्रैविद्यरदेन्तो शान्तरमनं वर्ण्णिसुवर् ॥ ३० ॥

मुनिनाथं दशधर्म्मधारिदृढपट्त्रिंशद्गुणं दिव्यज्ञा-
न-निधानं निजगिरि चापमल्लिनीज्यासूत्रमोरोन्देपू—
विन बाणङ्गलुमय्दे हीनमधिकङ्गाक्षेपमं माल्पुदा—
म नयं दर्प्पक मेघचन्द्रमुनियोल् माणुन्निदोर्द्दर्प्पमं ॥३१॥
श्रवणीयं शब्दविद्यापरिणतिमहनीयं महातर्कविद्या—
प्रवणत्वं श्लाघनीयं जिननिगदितसंशुद्धसिद्धान्तविद्या—
प्रवणप्रागल्भ्यमेन्देन्दुपचितपुलकं कीर्त्तिसल् कूर्त्तु विद्व-
न्निवहं त्रैविद्यनामप्रविदितनेसेदं मेघचन्द्रव्रतीन्द्रं ॥ ३२ ॥
क्षमेगीगल् जीवनं तीविदुदतुलतपःश्रीगे लावण्यमीगल्
समेगन्दिर्प्पन्तु तन्निं श्रुतवधुगधिकप्रौढियार्त्ती गजेन्द्र-
न्दे महाविख्यातियं ताल्दिदनमलचरित्रोत्तमं भव्यचेता—
रमणं त्रैविद्यविद्योदितविशदयशं मेघचन्द्र व्रतीन्द्रं ॥३३॥
इदे हंसीवृन्दमीण्टल् वगेदपुदु चकोरीचयं चञ्चुविन्दं
कदुकल् माडेप्पुदोसं जडेयोलिगरिमल्लेन्दिर्प्पंसेज्जेगेरल् ।

पदेदर्पं कृष्णनेम्यन्तेसेदु विसल्लमरुन्दतीकन्दकान्तं
पुदिदत्तो मेघचन्द्रव्रतितिलकजगद्भूषिकीर्तिप्रकाशं ॥१४॥
पूजितविद्यविबुध-स—
माजं पैविद्यमेघचन्द्रव्रतिरा—
राजिसिदं विनमितमुनि—
राजं पृथ्वीभागभागद्वितारा राजं ॥ १५ ॥
स्वस्थारम्भरतनतनुरा—
शुद्धरने बोगल्वे पोगल्वे जिनशासन-दु—
ग्याधिसुधांशुवनधिन्न-क—
कृद्धबलिमकीर्ति मेघचन्द्रव्रतिय ॥ १६ ॥

तरसधर्म्मेद ॥

श्रीबालचन्द्रमुनिराजपवित्रपुत्र.
प्रोद्यद्यशादिजनमानसनाभवित्रः ।
जीयादयं जितमनोजभुजप्रताप
स्याद्वादसूक्तिसुभगश्शुभकीर्तिदेव ॥ १७ ॥
किंवापस्मृतिविस्मृत किमुकथितमत्त किंगुणपद-
व्यमोऽस्मिन्नवदनुद्रवबोल्लानासने हरणे ।
तत्रानंशुभकीर्तिदेवविदुषा विद्वेषिमाथाविद
द्वाग्वज्राशनिकेन जिह्मितमतिर्वादीवराकस्त्वयं ॥ १८ ॥
घनदर्पोन्नतवैद्य-क्षितिधरपविर्यावन्दनौ वन्दनौ वन्—
दनेगलैवायिकोक्तस्तिमिरतरविदौ वन्दनौ वन्दनौ वन्-
दनेसन्मोमांसकोदन्कटि-करिरिपु दौ वन्दनौ वन्दनौ वन्

दने पो पो वादि पोगेन्दुलिवुदु शुभकीर्त्तिद्यकीर्त्तिप्रपोगे।३९॥
वितर्योक्तियल्तजंपशु—
पतिमाङ्गि येनिप्प मूवरं शुभकीर्त्ति—
प्रतिमनिधियोल् नामो—
चितचरितरेतोडर्दडितरवादिगजलवे ॥ ४० ॥
सिङ्गद सरमं केल्द म-
तङ्गजदन्तलुकि वसुफलल्लदे सभेयोल् ।
पोङ्गि शुभकीर्त्ति-मुनिपनो—
लेङ्गल नुडियल्के वादिगल्गेन्तेरदेयें ॥ ४१ ॥
पो साल्युदु वादि वृथा-
वासं विबुधोपहासमनुमनोप—
न्यासं निजनेंर्ध—
वासं मेरपुदे वादिवज्राङ्कुशनोल् ॥ ४२ ॥
गङ्गण्डन निर्मित ॥ सेवगुरुवरदेव रूवारिरामोजन मग
दामोज कण्डरिसिद ॥

(उत्तरमुख)

श्रीविजयोर्जीधरमेघचन्द्रस्याभूत्प्रभाचन्द्र-
मुनिर्गुणिराद्यः ।
शुम्भत्तर्काम्भोनिधिपूर्णचन्द्रो निर्दूतषण्णवितर्यो विशाल्यः ।४३
श्रीविजयोर्जितमेघचन्द्रसुतः पीयूषवारांनिधिः
सम्पूर्णीकृतपूर्णनिर्मलतनु पुण्यैकधानन्दनः ।
श्रीमेरुव्रतलक्षणः शुचिरुचिः प्रार्थ्योपवासव्रतः

सिद्धान्ताम्बुधिवर्द्धनो विजयतेऽपूर्व्वप्रभाचन्द्रमा· ॥४४॥
संसाराम्भोधिमध्योत्तरणकरतयानरत्नत्रयेशः ।
सम्यग्जैनागमार्थान्वितविमलमतिःश्रीप्रभाचन्द्रयोगी ॥४५॥
सकलजनविनूतं चारुबोधत्रिनेत्रं
सुकरकविनिवासं भारतीनृत्यरङ्गम् ।
प्रकटितनिजकीर्तिं दिव्यकान्तामनोज्ञ
सकलगुणगणेन्द्रं श्रीप्रभाचन्द्रदेव ॥ ४६ ॥

सत्तरधर्म्मर् ॥

गणधररं श्रुतदोल् चा-
रण-रिपुवरनमलचरितदाल् योगिजना-
भिनंतसेव्यनप्पं शिवा—
नंतसुखप्रदं वीरणन्दिगौडान्तिकरोल् ॥ ४७ ॥
हरिहर-हिरण्यगर्भर—
गुरवलिये गेल्द कामन दीप्ततपो—
भरदिन्दुरिपिदानं वि—
स्तरिसिदरार्वीरणन्दिगौडान्तिकर ॥ ४८ ॥
धन्यर्पिसर्जनतां जनस्य भवने कर्प्पूरपूरायते ।
यत्कीर्त्तिः कटकायते विय कचभरं सद्गोलमान्तायते ॥
... . ।
जंजीवाद्भुविवीरणन्दिगुरिपो राद्धान्तकक्कापिप. ॥४९॥
दिव्यश्रीवधूसौतिरत्नगुणालङ्कृतिर्मेघचन्द्र-
त्रैविद्यस्याभवत्तपो यदनमद्दिक्पूता भेदमे बलवान: ।

सैद्धान्तव्यूहचूडामणिरनुपलचिन्तामणिर्भूजनानां
योऽभूत्सौजन्यचन्द्रश्रियमवतिमहो वीरनन्दी मुनीन्द्रः ॥५०॥

श्रीप्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेवर गुड्डि विष्णुवर्द्धन सुजबल वीरगङ्ग बिट्टिदेवन हिरियरसि पट्टमहादेवी ॥

शान्तल-देविय सद्गुण-
वन्तेगे सौभाग्यमान्यवतिगे वचश्री-
कान्तेयुमच्युत [.....]
कान्तेयुमेणेयल्लदुलिद सवियर्दोरेयं ॥ ५१ ॥

शान्तल-देविय सायि ।

दानमननूनमं कः
केनार्त्थी येण्दु कोट्टु जिननं मनदोल् ।
ध्यानिसुतं मुडिपिदलिन्
नेनेन्बुदे भाचिकब्बे योन्दुमतियम् ॥ ५३ ॥

शकवर्ष १०६८ नेय क्रोधनसंवत्सरद् आश्विजशुद्ध-दशमी बृहवार दन्दु धनुलग्नद पूर्व्वाह्न आरुघलिगेयप्पागल् श्रीमूलसङ्घद कोण्डकुन्दान्वयद देशिगगणद पुस्तकगच्छद श्री मेघचन्द्रत्रैविद्यदेवर हिरियशिष्यरप्प श्री प्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेवरु स्वर्गस्तरादरु ॥

[इस लेख के प्रथम इकतीस पद्य शिलालेख नं० ४७ (१२७) के प्रथम इकतीस पद्यों के समान ही हैं, केवल ४७ वें लेख में पद्य नं० २१ और २४ और इस लेख में पद्य नं० ३० अधिक हैं। कुन्दकुन्दाचार्य से प्रारम्भ कर मेघचन्द्र व्रती तक की गुरु-परम्परा का वर्णन करने के

पश्चात् लेख में मेघचन्द्र के गुरुभाई माघनन्दि मुनिराज का उल्लेख है। तत्पश्चात् शुभकीर्ति आचार्य का उल्लेख है जिनके सम्मुख वाद में बौद्ध, मीमांसकादि कोई भी नहीं ठहर सकता था। इसके पश्चात् लेख में मेघचन्द्र त्रैविद्यदेव के शिष्य प्रभाचन्द्र और वीरनन्दि का उल्लेख है। प्रभाचन्द्र आगम के अच्छे ज्ञाता और वीरनन्दि भारी सैद्धान्तिक थे। लेख के अन्तिम भाग में विष्णुवर्द्धन-नरेश की पटरानी शान्तलदेवी की धर्मपरायणता का भी उल्लेख है। ये प्रभाचन्द्र की शिष्या थीं। प्रभाचन्द्रदेव का स्वर्गवास शक सं० १०६८ आसोज सुदि १० बृहस्पतिवार को हुआ। यह लेख उन्हीं का स्मारक है।]

५१ (१४१)

उसी स्थान के द्वितीय मण्डप में प्रथम स्तम्भ पर

(शक सं० १०४१)

(पूर्वमुख)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥
सकल-जन-विनुतं चारु बोध-त्रिनेत्रं
सुकरकविनिवासं भारतीनृत्यरङ्गं ।
प्रकटितनिज-कीर्त्तिर्व्यक्तकान्तामनोज्ञं
सकलगुणगणेन्द्रं श्रीप्रभाचन्द्रदेव ॥ २ ॥

अवर गुरुनेन्तप्पनेन्दडे ॥

स्वस्ति समस्तभुवनजनवन्द्यमानभगवदर्हत्सुरभिगन्धगन्धोदकधारापवित्रीकृतोत्तमाङ्गसुजनमनःकमलिनीराजहंस महाप्रचण्डदण्डनायक। शत्रुभयदायक। पतिहित

प्रकारन । एकाङ्गवीर । सङ्ग्रामरान । साहसभीम । दुर्नि
विनेयजनबुधजनमनस्सरोवरराजहंसननूनदानाभिनवश्रेयांस ।
जिनमतानुप्रेक्षाविचक्षण । कृतधर्म्मरक्षण । दयारत्नभरितवसुंधर ।
जिनवचनचन्द्रिकाचकोरनुमप्प श्रीमनु बलदेवदण्डनायकनेंबं
नेगर्द ॥

पलरं मुन्निन पुण्यदोन्दोदविनि भाग्यक्के पक्काहेडं
पलरिं तेजदिनोन्दिनि गुणदिनादौदार्य्यदिं धैर्य्यदिं ।
सलनाचित्तहरोपचारविधियिं गाम्भीर्य्यदिं सौर्य्यदिं
बलदेवङ्गे समानमप्परोलरे मत्तन्यदण्डाधिपर् । २ ॥

बलदेवदण्डनायक—

ननवद्यभुजबलपराक्रम मनुचरित
जननिधियेोष्टनधात्रा—
बलदेनु समनारा मन्त्रिचूडामणियानु ४ ।

आ महानुभावनर्ङ्गलाक्षमयन्तप्पवन्दद
मतिरामन्तु नाप्पंद
क्षितियाल् सौभाग्यवतियनुन्नतमानव
पतिहितेय गुणवानव
ममतंकीर्त्तिपुदु दाशिकव्वेय भुवनदल ५ ।
अवर्म्मो सुङ्कपुंटिद—
बलनिनर्म पोगलें रामचन्द्रमाल
लवरिर्म्मुंटुगाद्दि
दविनेय सूरगदेवनुं गिरुवनु ६ ॥

(पश्चिम मुख)

अवरोलगे ॥

दोरेयारी भुवनङ्गलोलु दिटकं केलु सम्यक्त्वदोलु सत्यदोलु
परमश्रीजिनपूजेयोलु विनयदोलु सौजन्यदोलु पेम्पिनोलु ।
परमोत्साहदे मार्प्पदानदेडेयोलु सौचव्रताचारदोलु
निरुतं नोर्प्पडे नागदेवनें बलं धन्यंपेरर्डन्यरे ॥ ७ ॥

अन्तेनिप नागदेवन

कान्ते मनोरमलसकलगुणगणेश्वरी—
कान्तेगवधिकं नोर्प्पडे
कोन्विय देरंयेनिसि नागियकं नेगरर्दलु ॥ ८ ॥

अन्तवरिर्ज्जर तनयं
मन्ततमग्गिनोर्व्वियोलगे जसवेसेविनेगं ।
चिन्तितवस्तुधनीयलु
चिन्तामणिकामधेनुवेनिपं बल्ल ॥ ९ ॥

एन्तेन्तु नोर्प्पड गुण-
वन्तं कलिसुचिदयापरं सत्यविदं ।
भ्रान्तेनेनुतं बुधर—
श्रान्तं कीर्त्तिपुदु धात्रियोलु बष्टयनं ॥ १० ॥

आतननुज्ञाते भुवन—
ख्यातियनेरे वर्णिद दानगुणदुन्नतियि ।
सीतादेविगवधिकं
भूतलदोलगेचियङ्कनेनेमेवदराय ॥ ११ ॥

आजगज्जननि योडवुट्टिदं ॥

भाविसिदप्पपदङ्गल—

मोवदे परिदिक्कि मोहपासद लोडरं ।

देव-गुरु-सन्निधानद-

ला-विभु बलदेवनमरगलियं पडेदं ॥ १२ ॥

सकवर्षं १०४१नेय सिद्धार्थि संवत्सरद मार्गशिर-शुद्धपाडिय सोमवारदन्दु मेरिङ्गेरेय तीर्थदलु सन्यासनविधि मुडिसिद ॥

आतन जननि नागियक्कनु एचियक्कनु परोक्षविनयदे कल्पपुनाडलु ओम्माडिगेय इलसुवहगानेय माडिसि तम्म गुरुगलु प्रभाचन्द्रसिद्धान्त-देवर काल कल्दिसेधारापूर्वकं माडिकोट्ट आचन्द्रार्कस्थायि आ कॆरेय मूडल देसेयलु सलुव बेदले ॥

[इस लेख में किसी दान या धर्मार्थ मासिक चौदान् गुरुओं के सन्यास-विधि से मरण होने पर उनकी माता चेलि अतिमब्बे द्वारा उनकी स्मृति में एक वसतिका (पाषाणालय) बनाये जाने और उसके चलाने के लिए कुछ जमीन दान करने का उल्लेख है। लेख के अंत का यह वाक्यांश दिया गया है कि यह पुण्य कार्य जबतक चन्द्र, सूर्य और पृथ्वी रहेंगे तबतक स्थायी रहे। लेख में उल्लिखित गुरु का नाम प्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेव और उनकी गुरु आर्यिका का नाम था। उनकी अन्तिमी का नाम कुरियक्के था। शक सं. १०४१ अर्थात् ईस्वी सन् १११९ में यह लेख लिखा गया। इस के पश्चात् इस दान दिया गया और यह लेख लिखा गया। लेख के दूसरे पक्ष में प्रभाचन्द्रदेव का उल्लेख है।]

१ [ये दो पंक्तियाँ।]

लेख में यह सम्वत् सिद्धार्थि सम्वत्सर कहा गया है पर मिलान करने से शक सं० १०४१ विकारी और शक सं० १०६१ सिद्धार्थी पाया जाता है। लेख में सम्वत् की भूल है।

५२ (१४२)

उसी मण्डप में द्वितीय स्तम्भ पर

(शक सं० १०४१)

(पूर्व्वमुख)

श्रीमत्परमगम्भीर-स्याद्वादामोघलाञ्छनं।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥

स्वस्त्यनवरतप्रबलरिपुबलविपमरावनीमहामहारिसंहारकरणकारणप्रचण्डदण्डनायकमुख्यदर्प्पणकर्णेजपकुभृत्कुलिश जिनधर्म्महर्म्यमाणिक्यकलश मलयजमिलितकाश्मीरकालागरुधूपधूमध्यामलीकृतजिनार्च्चनागार। निर्व्विकार मदनमनोहराकार। जिनगन्धोदकपवित्रीकृतोत्तमाङ्ग वीरलक्ष्मीभुजङ्गनाहाराभयभैषज्यशास्त्रदानविनोद जिनधर्म्मकथाकथनप्रमोदनुमप्प श्रीमत्तुबलदेवदण्डनायकनेनेनेगर्द ॥

स्थिरनें वाप्पमरातिरिन्दवधिकं गम्भीरनें वाप्पु सागरदिन्दग्गलमेन्तु दानियें सुराट्चीजके सारण्डनम्।
सुरराजङ्गे यें वन्दु कीर्त्तिपुदुकय्कोण्डकरिं सन्ततं
धरेयेल्लंबलदेवमात्यननिलालोकैकविख्यातनं ॥ २ ॥

बलदेव दण्डनायक—

नवनव्यभुजबलपराक्रमं मनुचरितं।

जलनिधिवेष्टितधात्री—
वलदोलु ममनारो मन्त्रिचूडामणियेनु ॥ ३ ॥
पलरुं मुन्निन पुण्यदिन्दोदविनिर्माप्यकेवलादोटं
पलर्दि तेजदिनोल्पिनिं गुणदिनादौदार्य्यदिंधैर्य्यदि ।
ललनाचित्तहरोपचारविधियिं गाम्भीर्य्यदिं सौर्य्यदिं
वलदेवङ्गे समानमप्परोलरं मत्तन्यदण्डाधिपङ ॥ ४ ॥
आ वलदेवङ्गं मृग—
शावेक्षणेयेनिप वाचिकव्ये गवखिलो—
र्व्वीवन्धु पुट्टिदं गुण—
लोधरनदटनेव सिद्धिमय्यनुदारं ॥ ५ ॥
जिनधर्म्माम्बरतिग्मरोचिमुचरित्रं भव्यवंशोत्तमं
सिद्धिनिधानं मन्त्रिचूड़ामणि बुधविनुतं गोत्रवंशाम्बरार्क ।
वनिताचित्तप्रिय निर्म्मलननुपमनत्युत्तमं कूरे कूर्म्म
विनयाम्भोराशि विद्यानिधिगुणनिलयं धात्रियोल्सिद्धि-
मय्यं ॥ ६ ॥

(पश्चिममुख)

जिनपदभक्तनिष्टजनवत्सलनाश्रितकल्पभूरुहं
मुनिचरणाम्बुजातयुगभृङ्गनुदारननूनदानि म—
त्तिन पुरुषर्ग्गे पेलिपुददाहेरियेम्बिनेगं नेगद्दनी—
मनुजनिधाननेन्दु पेगल्गुं धरे पेर्ग्गडे सिद्धिमय्यन ॥ ७ ॥
एने नेगल्द सिद्धिमय्यन
वनिते मनोरथन लक्ष्मियेनिपलु रूपिं ।

जनविनुते गिरिय देविय—
ननुनयदिं पोगल्वुदखिल भूतलवेल्लं ॥ ८ ॥

वचन ॥ ओ महानुभावनवमानकामदोसु ॥

परमश्री जिनपादपङ्कजरहस मद्भृङ्गियिं वाग्वि नि—
र्भरदिं पञ्चपदङ्गलं नेनेयुतं दुर्मोहमन्दोहमं ।
परिहरिसुतं स्वण्डितुतं समाधिविधियिं भव्याब्जिनीभास्करं
निरतं श्रेयोगे सिद्धिवधूजनमेन्द्राबासम श्रीदिवं ॥ ९ ॥

स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाकल्याणाद महाप्रातिहार्य-चतुस्त्रिंशदतिशयविराजमान-भगवदर्हत्परमेश्वर-परममहारक - मुनिकुलतिलक-विनिर्गतसदगदादिवनुष्यरूपनिरूपणप्रवण - वादीभ्रसादिसकल-शास्त्रपारावारपरमतपश्चरणनिरतकरण श्रीमत्पण्डिताचार्य प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवर शुद्ध शालिवाहन शिरिवर्षंगळु सलुत १०४१ नेय सिद्धार्थसम्वत्सरद कार्तिक शुद्ध द्वादश सोमवा-रदन्दु महापूजेयं माडिनिसिदिय निरिसिदर् ॥

[महाप्रभावशाली, कीर्तिवाले और वज्रवाले इन्द्रनन्दिवाले के शिष्य श्रेष्ठ धर्मवाली वाचिकब्बे ने पुण्य सिद्धिवाला कार्य किया था। महाप्रभावशाली और गुणवाले थे। इसकी धर्मपत्नी का नाम सिरिदेवी था। सिद्धिवधू के समाधिमरण से स्वर्गलोक प्राप्त किया। इन्द्रनन्दिवाले प्रभाचन्द्र के शिष्य सिरिवर्धनु और वाचिकब्बे ने सिद्धिवधू की स्मृति के लिये सं० १०४१ कार्तिक शुदि १२ सोमवार को यह निषद्या निर्माण कराई]

[नोट—जैसा कि लेख सं० ८२ में आगे लिखा जा चुका है इस सं० १०४१ सिद्धार्थी नहीं था जैसा कि इस लेख में श्री पूज्य ने लिखा है]

५३ (१४३)

उसी मंडप में तृतीय स्तंभ पर—

(शक सं० १०५०)

(पूर्वमुख)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥ १ ॥

श्रीमद् यादववंशमण्डनमणिः क्षोणीशरत्नामणि-
र्लक्ष्मीहारमणिः नरेश्वरशिरःप्रोत्तुङ्गगुम्फन्मणिः ।
जीयान्नीतिपथेचदर्पणमणिः लोकैकचूड़ामणि
श्रीविष्णुर्विनयार्च्चितो गुणमणिः सम्यक्त्वचूड़ामणिः ॥ २ ॥

एरेदमनुज्झ सुर-भू-
मिरुहं शरणेन्दवज्र कुलिशागारं ।
परवनितेगनिलतनयं ।
धुरदोलु पोण्दंज्झ मृत्तु विनेयादित्यं ॥ ३ ॥

एने तानु कोरे देगुलङ्गलेनितानुं जैनगंधङ्गल-
न्तेनेतुं नार्कलनूर्गलं प्रजेगलं सन्तोषदि माडिदं ।
विनयादित्यनृपालपोय्सलने सन्दिर्दा बलिन्द्रङ्ग मे-
लेने पेम्पं पोगल्वनावनो महागम्भीरनं घोरनं ॥ ४ ॥

इट्टिगेगन्दगल्द कुलिगलकेरेयादवु कल्लुगं गोण्ड पेर्-
व्वेट्टु धरातलके मरियादवु सुण्णद भण्डि बन्द पे-

र्व्वटैयं पक्षमादुवेने माडिसिदं जिनराजगेहमं
नेटने पोय्सलेश्वरनेने वण्णिप परार्म्मलं राजराजनं ॥ ५ ॥

कन्दं ॥ आ पोय्सल भूपङ्गे म-
हीपाल कुमारनिकरपूहारङ्गं ।
श्रीपति-निज-भुज-विजय-म-
हीपति जनियिसिदनदटनेंन्यन्नृप ॥ ६ ॥

वृत्त ॥ विनयादित्यनृपालनात्मजनिलालोकैककल्पद्रुमं
मनुमार्गं जगदेकवीरमेरेयङ्गोर्व्वीशं सिद्धला-
सनगुं रिपुभूमिपालकमदस्सम्मर्दनं विष्णुव-
र्द्धन भूपं सेगल्दं धरालेयदोल् आराजकण्टीरवं ॥ ७ ॥

कन्दं ॥ आ सेगल्देंयङ्ग नृपा —
नन गुणहट्टं निमर्दने सकलधरि —
त्री नायकर्त्ति जनता —
भानुसुतं विष्णुभूपनुदय सेयर्दं ॥ ८ ॥
अरिनरपतिरायकालन-
कारणुदत्तवैरिमण्डलंधारदले —
हरण निजाम्बरैका —
भरण श्री विष्णु हेबली वरदव ॥ ९ ॥

स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वरं । द्वारावतीपुरवराधीश्वर । यादवकुलाम्बरदिनमणि । समधिगत-चमरि । अरुष्करोत्तुङ्ग । चलकेतु गरुड । आहितगुंडरिव । वैरिभये केंडे व । समधिगतोग्र ग्रहदण्डवड । वरिपेरगण्ड-

निजराज्याभ्युदयैकरक्षणदक्ष । अविनयनरपालकुलनिग्रहदक्ष । धर्कगोर धनदावानलन् । अहितमण्डलिकज्वालानल । नोडम्ब-मण्डलिकमण्डनप्रचण्डदोर्दण्डनिल । प्रबलरिपुबलसंहरणकारण । विद्विष्टमण्डलिकमदनिवारणकरण । नोलम्बाधिराजगोण्ड । प्रतिपक्षनरपालकविभयनिर्मूलनगोण्ड । तप्पं तप्पुव । जय श्रीकान्तेयनप्पुव । कूरेकूर्प्पं सौर्य्यमं नोर्प्प । वीराङ्गना-लिङ्गितदक्षिणदोर्दण्ड । नुडिदन्तं गण्ड । अरियमनहृदय-शूल । वीराङ्गनालिङ्गित लोल । उद्धतारातिकुञ्जरकुञ्जर । शरणागतवज्रपञ्जर । महजकीर्त्तिध्वज । सङ्ग्रामविजयध्वज । चेङ्गिरेय मनोभङ्ग । वीरभङ्ग । नरसिङ्गवर्म्मनिर्म्मूलन । कप-पालकालानल । हानुङ्गलु गण्ड । चतुर्म्मुख गण्ड । चतुरचतु-र्म्मुखन् । आहवपण्मुख । सरस्वतीकर्णावतंसन् । उन्नतविष्णुवंश । रिपुहृदयशेल्ल । भीतरंकोल्ल । दानविनोद । चम्पकामोद । चतुस्समयसमुद्धरण । गण्डराभरण । विवेकनारायण । वीरपारा-यण । साहित्यविद्याधर । समरधुरन्धर । पोय्सलान्वयभानु । कविजनकामधेनु । कलियुगपार्थ । दुष्टगेंधूर्त्त । सङ्ग्रामराम । साहसभीम । हयवरसराज । कान्तामनोज । मत्तगजमगदत्त । अभिनवचारुदत्त । नीजगिरिसमुद्धरण । गण्डराभरण । कोङ्ग-रमारि । रिपुकुलनलप्रहारि । तेरेयुरनलेव । कोयतूरतुलिव । हेब्जेरुदिसापट्ट । सङ्ग्रामजत्तपट्ट । पाण्ड्यनेंचेङ्कोण्ड । उच्चङ्गि गोण्ड । एकाङ्गवीर । सङ्ग्रामधीर । पोम्बुधनिर्द्धाटण । सावियलें निर्ल्लोटण । वैरिकालानलन् । अहितदावानल । शत्रुनरपाल-

दिशापट्ट मित्तनरपाललल्लाटपट्ट । घट्टवनलिव । सुलुवर सेलेव । गोविन्दवाडिमयङ्करन् । अहितवल्लसङ्कर । रोद्दवतुलिव । सित्तगरं पिडिव । रायरायपुरसूरेकार । वैरिभङ्कार । वीरनारायण । सौर्य्येपारायण । श्रीमलुकेशवदेवपादाराधक । रिपुमण्डलिकसाधकाद्यनेकनामावलीसमालङ्कृतनु गिरिदुर्ग-वनदुर्गजलदुर्गाद्यनेकदुर्गोल्लङ्घनश्रमदि कोण्ड चण्डप्रतापदिं गङ्गवाडितोम्भत्तरु-सासिरमुमं लोकिगुण्डिवर मुण्डिगे माध्य-म्माडि । मत्तं ॥

वृत्त—एल्लेयोलट्टुटरनुद्धतारिगल भाटन्दोसि बेङ्कोण्डुदो-
र्व्वल्लदिं देशमनावगं वनगे माध्यं माडिरलु गङ्गम—
ण्डल्लमेन्दोल्लंगे तेत्तु मित्तु बेसनं पूण्दिर्प्पिनं विष्णु पे-
ग्गल्लनिर्दं सुल्लदिन्दं राज्यदोदविन्दं सन्ततोरसाद्दिं ॥१०॥
एत्तिद नेत्तन्नत्तलिदिराद-नृपालकरल्कि बल्कि क—
ण्डित्तु समस्तवनुगल्लनासुतनमंगलेपुण्डु सन्तसं ।
सुत्तलुमाल्लगिप्परेनं मुन्निनवर्गमनेकरादव-
र्गोत्तलगं पोगर्त्तेगेनं वण्णिपनावनो विष्णुभूपनं ॥ ११॥

अन्तु त्रिभुवनमल्ल समकाडुगोण्ड भुजबलवीरगङ्ग विष्णु-वर्द्धन पोय्सलदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमा-चन्द्रार्कतारं वरं सलुत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि पिरियरसि पट्ट-महादेवि शान्तलदेवी ॥

(दक्षिणमुख)

स्वस्त्यनवरतपरमकल्याणाभ्युदयसहस्रफलभोगभागिनि

द्वितीयलक्ष्मीलक्षणसमानेयुं । सकलगुणगणानूनेयुं । अखिल कलुमिथ्यादेवियुं । पतिहितसत्यभावेयुं । विवेकैकदृढरतियुं । प्रत्युत्पन्नवाचस्पतियुं । मुनिजनविनेयजनविनीतेयुं । चतुस्संघसमुद्धरणेयुं । अतगुणशीलचारित्रान्तःकरणेयुं । लोकविख्यातेयुं । पतिव्रताप्रभावप्रसिद्धसीतेयुं । सकलजनविलचिन्तामणियुं । सम्यक्त्वचूडामणियुं । उद्भूतसकलविलासकारणेयुं । पुण्योपार्जनकरणकारणेयुं । मनोजराजविजेयवसतेयुं । निजकलाभ्युदयदीपिकेयुं । गीतवाद्यसूत्रधारेयुं । जिनसमयसमुद्धरितप्राकारेयुं । जिनधर्मकथाकथनप्रमोदेयुं । आहाराभयभैषशास्त्रदानविनोदेयुं । जिनधर्मनिर्मलेयुं । भव्यजनवत्सलेयुं । जिनगन्धोदकपवित्रीकृतोत्तमाङ्गेयुमप्प ॥

कंद ॥ आ नेगरं विष्णुनृपन म—
नो-नयन प्रिये पलाशनीलाब्जि च—
न्द्रानने कामन वलियमु
तानेसे नोले सरिसमाने शान्तलदेवी ॥ १२ ॥

वृत्त । पुरदोलु विष्णुनृपालकनुं विजयश्रीवधूवल्लभं
परमानन्ददिनायु निम्म विभुत्वाभावजद्युतिगं ।
वरविग्विभ्रमनयदिगलुनेरेव कीर्तिश्रीयेनुल्लिर्पुदो
परंपोप्पु शान्तलदेवियं नेरय वर्णिसल्पन्नेवरिन्दं ॥ १३ ॥

कन्दकाव्य विष्णुपन—
आनन्दाब्धिकलोलकाव्यलहरि मेत्तरिदन्ने ता—

[illegible]देविय सौभाग्यम—

नेम्र गन्नवणि सुवेनेम्बनेत्रण्णिसुव ॥ १४ ॥

शान्तलदेविगे सद्गु ख—

मन्नेगं सौभाग्यमाग्यवतिगं बच:श्री—

कान्तेयुमगजेयुमन्मुन—

कान्तेयुमेलेयरुदुलिद नलियदोंरेयं ॥ १५ ॥

अकर ॥ शुक्लतु प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवर पेलनादि गुरुगलि

गाचिसिद

दिविषत्सेव्यंगे शारदिदुरुयं नम्दे शाश्वतु पेर्म्मेंद सिद्धान्त ।

धारं विश्वचरित्रनप्पं बलकं जिनमार्गमनाल्दु सिद्धान्त

शारदि शान्तलदेविय शरिदिर्पर्पविदलाक्षुवर्मुगुलदंतु ॥ १६ ॥

शकवर्ष १०४० मूलस विरोधिकृत्सम्वत्सरद चैत्र शुद्धपञ्चमी

सोमवारदन्दु निजगु ब सौभैदल शुरिपि स्वर्गस्थरादरु ।

मूल ॥ ई कलिकालदाल मनुष्यरल्लिर्द्द [illegible]

स्थापितकाम्यपुण्यनिधियेनि सद्धर्मपुण्योदयं

आकल्पान्तम गुरुगलाचरिसि [illegible]

स्वाकृतियिन्दिवं दुधानल्लु सर पेर्म्मेंद शारदिदुरु ॥ १७ ॥

दारपर्म्मेंद शारदिदु विभविंदं काणरादु [.....]

गुरुवादेन्दोडं तदुरानयवाद धर्म्मोपदेशक्रियं ।

परिवारम्बुजभास्करं जिनवरादि [illegible]

गुरुवेनिप्पं शशिगुरुवरल्लु पर मुक्ति [illegible] ॥ १८ ॥

कन्द ॥ अनुपम शान्तल देवियु—
मनुनयदिं तन्दे मारसिङ्गय्यनुमि-
निने जननि-माचिकब्बेयु—
मिनिवरु मोडनोडने मुडिपि स्वर्गंतरादरु ॥ १९ ॥

लेखक बोकिमय्य ।

(पश्चिममुख)

अरसि सुरगतियनेय्दिद—
लिरलागेनगेन्दु बन्दु बेलुगोळदलु दु—
र्द्धर-सन्यासनदि [न्दं]
परिणते तायि माचिकब्बे तानुं तोरेदलु ॥ २० ॥

वृत्त ॥ अरेमगुस्दिर्दकण्मलर्गलोदुव पच्चपदं जिनेन्द्रनं
स्मरियिसुवोजे बन्धुजनमं विडिपुत्रति सन्यसदोल
न्दिरलो सेदेन्दुतिङ्गलुपवासदोलिर्प्पिनेमाचिकब्बे तां
सुरगतिगेय्दिदलु सकलभव्यरमस्निधियोलु समाधियिं ॥२१॥

कन्द ॥ आ मारसिङ्ग मय्यन
कामिनिजिनचरणभक्ते गुणसंयुते स-
दाम-पवित्रने पेन्दो—
भूमिजनं पोगळ्दे माचिकब्बेये नेगल्दलु ॥ २२ ॥
जिनपदभक्ते बन्धुजनपूजितेयाश्रितकामधेनुका—
मन मतिगं महासनिगुणाम्बुधि दानविनोदे मन्तनं ।
मुनिजनपादपङ्कजभक्ते जनस्तुत मारसिङ्गम—
य्यन सति माचिकब्बे येनं कीर्तिसुगुं धरे मेच्चिनिचुं ॥२३॥

जिननाथं सनगाग्रनागं बलदेवं सन्दे पेत्तच्चे म—
द्वनिताग्रेसरे वाचिकच्चे येने सम्मं सिद्धणं सन्दमान्—
सनदिन्दग्गद माचिकच्चे सुर-लोकक्कोदलेन्देन्दुमे—
दिनियेन्लें पेगलुत्तमिप्पुदेने वण्णिप्पण्णनेवण्णिपं ॥ २४ ॥

कन्द ॥ पेण्डिरसेन्यासनं गोण्डवरोलगिनिर्वतरारेम्बिनं कैं-
कोण्डागलुघोरवीरव्रतचरिलतेयं मेच्चि सन्तोषदिन्दं ।
पाण्डित्यं चित्तदोलु तत्तिरे जिनचरणाम्भोजमं भावियुत्त
कोण्डाहलुघाश्रितन्नं सुरगतिवधुवलुलीलेयिं माचिकब्बे ॥२५॥

दानमनन्नमं कः
केनार्थी येन्दु कोट्ट जिननै मनदोलु ।
ध्यानिसुतं गुडिपिदलि—
क्कें नेम्बुदो माचिकब्बेयोन्दुव्रतियं ॥२६॥

इन्तु सम्म गुरुगलु प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवरं वर्द्धमानदेवरं रविचन्द्रदेवरं गमलमव्यजनङ्गल गलिपियोलु सन्यसनमं कैकोण्डवर पेत्त समाधिय केलुत्त गुडिपिदलु ॥

पण्डितमरणदिनी भू—
मण्डलदोलु माचिकब्बेयन्तेनेल्लार्ं—
कोण्डिन्तु नेगल्दलरिगल्—
रण्डितमं घोर-वीर-सन्यासनम ॥ २७ ॥

अपर वंशावतारमेन्नेन्दडे ॥

कन्द ॥ जिनधर्मनिर्मलं भ—
व्य-निधानं गुरुगलाश्रयं मनुचरितं ।

मुनिचरण-कमल-भृङ्ग
जन-विनुतं नागवर्म्मदण्डाधीशं ॥ २८ ॥

वृत्त ॥ अनुपम-नागवर्म्मनकुलाङ्गने पेम्पिन चन्दिकव्वे स—
ज्जननुते मानिदानिगुणिमिकपतिव्रते सीलदिन्दे मे—
दिनिसुतेगं मिगिलुपेागल्लानरियें गुणदङ्कार्तियं
जिनपदभक्तेयं भुवनसंस्तुतेयं जगदेकदानियं ॥२९॥
अवर्गों सुपुत्रं बुधजन—
निवहक्कार्त्तीव कामधेनु वेनुत्तं ।
भुवनजनं पेागल्लु मि—
कवनुदयं गेय्दनुत्तमं बलदेव ॥३०॥

वृत्त ॥ सकलकलाश्रयं गुणगणाभरणं प्रभु पण्डिताश्रयं
सुकविजनस्तुतं जिनपदाब्जभृङ्गननूनदानिलौ—
किकपरमार्थमेम्बेरडुमन्नेरे बल्लनेनुत्ते दण्डना—
यक बलदेवनं पेागल्बुदम्बुधि-वेष्टित-भूरि-भूतलं ॥३१॥
मुनिनिवहके भव्यनिकरके जिनेश्वर-पूजेगलगे मि—
कनुपमदानधर्म्मदोदविङ्गे निरन्तरमेन्दे मार्गदिं ।
मनेयोल्ललनाकुलं मदुवेयन्दद पाङ्गिनोलुण्बुदेन्दडिं
गनुजनिधाननं पेागल्वने वेागल्वं बलदेवमार्त्यन ॥३२॥
स्थिरने मेरु-गिरीन्द्रदिन्दे मिगिले गम्भीरने पाप्पु सा-
गरदिन्दगल मेन्तु दानियें सुरोर्वीजकमेलु भोगिपे ।
सुरराजङ्गे येन्दु कीर्त्तिपुदु कय्कोण्डल्करिं सन्ततं
धरेयोल् श्रीबलदेवमास्यननिभानोकैकविख्यातन ॥३३॥

कन्द ॥ बलदेव-दण्डनायक—

नलद्द्य-भुजबल-पराक्रमं मनुचरितं ।
जलनिधिवेष्टितधात्री—
तलदोलु समनारो मन्त्रिचूडामणियोलु ॥३४॥

श्रीमत् चारुकीर्त्तिदेवर गुड्ड लेखकयोळिमप्प वरद विरुदरु वारि-मुखतिलक गङ्गाचारिय सम्म कांवाचारि कण्डरिसिद॥

(उत्तर मुख)

स्वस्त्यनवरतप्रबलरिपुबलविषमसमरावनिमहामहारिसंहार-करणकारण । प्रचण्डदण्डनायकमुखदर्पण । कथकमागध-पुण्यपाठककविगमकिवादिवादिमजनवादारिट्टसन्तर्पण । जिन-समयमहागगनशोभाकरदिवाकर । सकलमुनिजननिरन्तरदान-गुणाश्रयश्रेयांस । सरस्वतीकर्णावतंस । गोत्रपवित्र । पराङ्ग-नापुत्र । बन्धुजनमनोरञ्जन । दुरितप्रभञ्जन । क्रोधलोभानृत-भयमानमदविदूर । गुणचारुदत्तश्रीमूतवाहनसमानपरोपका-रोदार । पापविदूर । जिनधर्म्मनिर्म्मल । भव्यजनवत्सल । जिनगन्धोदकपवित्रीकृतोत्तमाङ्गन् । अनुपमगुणगणोत्तुङ्ग । मुनिचरणसरसिरुहभृङ्ग । पण्डितमण्डलीपुण्डरीकवनप्रसङ्ग । जिनधर्म्मकथाकथनप्रमोदनुं । आहाराभयभैषज्यशास्त्रदानविनो-दनुमप्प श्रीमत् बलदेव दण्डनायकनेने नेगल्द ॥

आ बलदेवङ्गं मृग—
शावेक्षणे यनिप चापिकव्वेगव रिनो—
र्व्वी-बन्धु पुट्टिदं गुणि—

लोपरनद्दटनेंव सिद्धिमय्यनुदारं ॥३५॥

वृत्त ॥ जिनपतिमतनिष्टजनवत्सलनाश्रितकल्पभूरुहं
मुनिपरणाम्बुजातयुगभृङ्गनुदारननूनदानि म—
तिन पुरुषर्गें पोलिसुवुदार्दोरेयेम्बिनेसं नेगल्दनी-
मनुज निधाननेन्दु पोगल्वुं धरे पेम्गडे सिद्धिमय्यन ॥३६॥
जिनधर्म्मोद्धरतिग्गरोधि सुचरित्रं भव्यपंरोजसं सि-
द्धनिधाने मन्त्रिचिन्तामणि बुधविनुतं गोत्रपवित्रराजं ।
वनिताचित्तप्रियं निर्म्मलननुपमनत्युत्तमं कूरे कूर्म्म
विनयाम्भोराशि विद्यानिधि गुणनिकरं सिद्धियोल्दिद्धिरारं ॥
॥ ३७ ॥

कन्द ॥ श्रीकादंबि गुणाम्बुधि—
धी गुणदोलु दानधर्म्मचिन्तामणि भू—
देविय कोल्ली देविय
देवियन्न सिद्धिमय्यन वणुव ॥ ३८ ॥

[illegible]

लयवरकुकोलगगरेंय तोण्टयुमं नाल्वत्तुमूवरालपोन्नेनिसि कट्टिसि चारुगिद्दे विनमनकटयुमं श्रीमद्विष्णुवर्द्धन पोय्सलदेवरं पेडि-कोण्डु सुखदिं सासिरद नाल्वत्तय्दनेय शोभकृत्संवत्सरद पैत्रशुद्धपडिवद्दुरगविवारदन्दु तम्म गुरुगलु श्रीमूलसङ्घद देसियगणद पोस्तकगच्छद श्रीमन्मेघचन्द्रत्रैविद्यदेवरशिष्यरप्प प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवर्ग्गे पादप्रक्षालनं माडि सर्व्वबाधापरिहार-वागि बिट्टदत्ति ॥

वृत्त ॥ प्रियदिन्दिन्तिदनेय दे काव पुरुषर्ग्गायुं महाश्रीयुम—

केयिदं कायदे कायद पापिगे कुरुक्षेत्रोर्व्वियोलु बाणरा-
सियोलेक्कोटिमुनीन्द्रर कविवेयं वेदाढ्यर कोन्दुदो-
न्दयसं मार्ग्गमिदेन्दु सारिदपुवी रौलाचरं सन्ततं ॥३९॥

श्लोक ॥ स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेति वसुन्धरां ।
षष्टिवर्षसहस्राणि विष्टायां जायते कृमिः ॥४०॥

[यह लेख तीन भागों में विभक्त है। आदि से बत्तीसवें पद्य तक इसमें द्वारावती के यादव वंशीय पोय्सळ नरेश विनयादित्य व उनके पुत्र और उत्तराधिकारी एरेयङ्ग व उनके पुत्र और उत्तराधिकारी विष्णु-वर्द्धन का वर्णन है। विष्णुवर्द्धन बड़ा प्रतापी नरेश हुआ। इसने अनेक माण्डलिक राजाओं को जीतकर अपना राज्य-विस्तार बढ़ाया। इसकी पटरानी शान्तळदेवी जैनधर्मावळम्बिनी, धर्मपरायणा और प्रभा-चन्द्र सिद्धान्तदेव की शिष्या थी। इसने शक सं० १०२० चैत्र सुदि ५ सोमवार को शिवगङ्गे नामक स्थान पर शरीर त्याग किया। शान्तळदेवी के पिता का नाम मारसिङ्गय्य और माता का नाम माचिकब्बे था। इन्होंने शान्तळदेवी के पश्चात् शरीरत्याग किया।

लेख के दूसरे भाग में, जो पद्य २० से ३४ तक जाता है, शान्तल देवी की माता माचिकब्बे का देवगोल में आकर एक मास के अनशन व्रत के पश्चात् संन्यास विधि से देहत्याग करने का वर्णन है और पश्चात् इसके कुल का वर्णन है। दण्डाधीश नागवर्म और इनकी भार्या चन्द्रिकब्बे के पुत्र प्रतापी बलदेव दण्डनायक और इनकी भार्या बाचि-कब्बे से [illegible] माचिकब्बे की उत्पत्ति हुई थी। माचिकब्बे ने अपने गुरु प्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेव, वर्धमानदेव और विजयदेव की साक्षी से संन्यास ग्रहण किया था।

लेख के अन्तिम भाग में बलदेव दण्डनायक और इनके गुरु सिद्धिमन्द की प्रशस्ति के पश्चात् शान्तलदेवी द्वारा सवति गन्धवारण नामक जिन मन्दिर निर्माण कराये जाने और इसकी आजीविका आदि के लिये विष्णुवर्धन नरेश की अनुमति से [illegible] भूमि का दान दिये जाने का उल्लेख है। यह दान मूलसंघ, देशिय गण, पुस्तक गच्छ के मेघचन्द्र त्रैविद्यदेव के शिष्य प्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेव को दिया गया था।)

[नोट—लेख में शक सं० १०२० विरोधिकृत् कहा गया है। पर ज्योतिष गणना के अनुसार शक सं० १०२० क्रोधन व सं० १०२१ विरोधिकृत् सिद्ध होता है। आगे का लेख (२७) शक १०२० क्रोधन संवत्सर का ही है। दान सोभनकृत् (सुभकृत्) संवत् में दिया गया था और विरोधिकृत् से आठ वर्ष पूर्व (शक सं० १०२०) में पड़ता है।]

५६ (६०)

पार्श्वनाथ बस्ति में एक स्तम्भ पर

(शक सं० १०५०)

(उपजाति)

श्रीसन्नाबन्धुरेन्दुरिन्द्र-वरिष्ठचन्द्रप्रभ-श्री-सुधा—
धारा-धौत-जगत्त्रयोऽपह-महः-पिण्ड-प्रकाण्डं महत् ।
यत्तत्तिग्मरुचि-प्रभे-वार्द्धि-विपुल-श्रीवर्द्धमानं सदा
भर्तुर्भव्य-चकोर-चक्रमवतु श्रीवर्द्धमानो जिनः ॥१॥

श्रीपादस्मृतिविदिताभिख्यो गदी गौतम—
स्वामी सप्तमऋद्धिभिश्चिजगतीमापादयत्पादयोः ।
यद्दोधाम्बुधिमेत्य वीर-हिमवत्कुत्कीलकण्टाद्बुधा—
म्भोदाना सुखनं पुनाति वचन-स्यन्दन्द-मन्दाकिनी ॥२॥

श्रीवैद्य-दर्शनभद्रलग्न-दृक्-चरित्र-विख्यात-बोध-वपुषस्तु-
षदेवलीन्द्राः ।
निर्भिन्दना विबुध-वृन्द-शिरोभिवन्द्याद्दुर्मदुषः-कुलिशतः
कुमतादिमुद्राः ॥३॥

वन्द्यैः कथन्नु महिमा भव भद्रबाहो-
स्मोदाक-मल्ल-मद-मर्दन-वृषभाहोः ।
यच्छ्रुत्वताप्तसुकृतेन स चन्द्रगुप्त-
श्चक्रे प्रणम्य सुचिरं वन-देवताभिः ॥ ४ ॥

वन्द्योविभुर्भुवि न कैरिह कौण्डकुन्दः
कुन्द-प्रभा-प्रणयि-कीर्त्ति-विभूषिताशः।
यश्चारु-चारण-करांबुजचञ्चरीक-
श्चक्रे श्रुतस्य भरते प्रयतः प्रतिष्ठाम् ॥ ५ ॥

वन्द्योभस्मक-भस्म-मात्कृति-पटुः पद्मावती-देवता-
दत्तोदात्त-पदस्स-मन्त्र-वचन-व्याहूत चन्द्रप्रभः।
आचार्य्यस्स समन्तभद्रगणभृत्सेहे काले कलौ
जैने वर्त्मनि समन्तभद्रमभवद्भद्रं समन्तान्मुहुः ॥ ६ ॥

पूर्णं ॥ वन्द्यैरंबिधा बादारम्भसरम्भविजृम्भितामिज्यतय-
स्तूर्णम्यः ॥

वृत्त ॥ पूर्वं पाटलिपुत्र-मध्य-नगरे भेरी मया ताडिता
पश्चान्मालव-सिन्धु-ठक्क-विषये कांचीपुरे वैदिशे।
प्राप्तोऽहं करहाटकं बहु-भटं विद्योत्कटं सङ्कटं
वादार्थी विचराम्यहं नरपते शार्दूल-विक्रीडितं ॥ ७ ॥

घटाटु-सटसटाभिघातिति स्फुट-पटु-वाचाटधूर्जटेरपि जिह्वा।
वादिनि समन्तभद्रे स्थितवति तत्र सदसि भूप कास्था-
न्येषां ॥ ८ ॥

पांडवो भारि-मल्ल जिनदत्त-सिंहा-लम्मावली-भारत —
ख्यातामिः पटुवृत्तिभा भगवतस्सोऽलं प्रभावीचयः।
छायस्यापि य सिंहनन्दि-मुनिना नोपेक्षकं वा शिवा-
लम्भोराज्य-समाप्तमाप्त-चरितं तेनाशिषन्नो बुधः ॥ ९ ॥

वक्रग्रीव-महामुने-र्ईश-शत-ग्रीवोऽप्यहीन्द्रो यथा—
जातं स्तोतुमलं वचोबलमसौ किं भक्त-वागिभ-व्रजं ।
योऽसौ शासन-देवता-बहुमतो ह्रीं-वक्त्र-वादि-ग्रह—
ग्रीवोऽस्मिन्नघ-शब्द-वाच्यमवदद् मामान्ममाखेन षट् ॥१०

नवस्तोत्रं तत्र प्रसरति कवीन्द्राः कथमपि
प्रणामं वज्रादौ रचयत परन्नन्दिनि मुनौ ।
नवस्तोत्रं येन व्यरचि सकलार्हत्प्रवचन-
प्रपञ्चान्तर्भाव-प्रवण-वर-मन्दर्भं सुभगं ॥ ११ ॥

महिमा स पात्रकेसरिगुरोः परं भवति यस्य भक्त्यासीत्
पद्मावती सहाया त्रिलक्षण-कदर्थनं कर्तुं ॥ १२ ॥

सुमति-देवमुं स्तुवतेन वरसुमति-सप्तकमाप्ततयाकृतं ।
परिहृतापथ-तत्त्व-पथार्त्तिना सुमति-कोटि-विवर्त्तिभवार्त्ति-
हृत् ॥ १३ ।

उदेत्य सम्यग्दिशि दक्षिणस्यां कुमारसेनो मुनिरत्नमाप
तत्रैव चित्रं जगदेक-भानोस्तिग्मद्युतेसौ तस्य तथा प्रकाशः ॥१४

धर्म्मार्थकामपरिनिर्वृतिचारुचिन्तारत्नामणिः प्रतिनिकेतम
कारियेन
म स्तूयते सरससौख्यभुजा-सुजातश्चिन्तामणिर्मुनिवृष
न कथं जनेन ॥१५॥

चूडामणिः कवीनां चूडामणि-नाम-सेव्य-काव्य-कविः ।
श्रीवर्द्धदेव एव हि कृतपुण्यः कीर्त्तिमाहर्तुं ॥१६॥

चूर्णि ॥ य एवमुपश्लोकितो दक्षिणेन ॥

जह्नोः कन्यां जटामेव बभार परमेश्वरः ।
श्रीवर्द्धदेव सन्धत्से जिह्वामेव सरस्वतीं ॥१७॥

पुण्यास्य जयो गणस्य चरणम्भूमृच्छिखा-घट्टनं
पद्भ्यामस्तु महेश्वरस्तदपि प्राप्तुं तुलामीश्वरः ।
यस्याखण्ड-कलावतोऽष्ट-विलसद्दिक्पाल-मौलि-स्खलत्-
कीर्त्तिस्यस्सरितो महेश्वर इह स्तुत्यस्स कैरित्यान्मुनिः
॥ १८ ॥

यन्मप्तति-महा-वादान् जिगायान्यानघामितान् ।
अक्षरक्षोऽर्च्चितस्मोऽर्च्यो महेश्वर-मुनीश्वरः ॥ १९ ॥

तारा येन विनिर्जिता घट-कुटी गूढावतारा समं
बौद्धैर्यो धृत-पीठ-पीडित-कुदृग्देवात्त-सेवास्तुतिः ।
प्रायश्चित्तमिवाङ्घ्रि-वारिज-रज-स्नानं च यस्याचरत्
दोषाणां सुगतस्स कस्य विषयो देवाकलङ्कः कृती ॥२०॥

चूर्णि ॥ आर्यदेवमात्मनोऽनन्य-सामान्य-निरवद्य-विद्या-विभवोपबृंहणमाकर्ण्य ॥

राजन्साहसतुङ्ग सन्ति बहवः श्वेतातपत्रा नृपाः
किन्तुत्वत्सदृशा रणे विजयिनस्त्यागोन्नता दुर्लभाः ।
त्वद्वत्सन्ति कवयो न सन्ति बहवो वादीश्वरा वाग्मिनो
नाना-शास्त्र-विचारचातुरधियः काले कलौ मद्विधाः ॥२१॥

नमो मल्लिषेण मलधारि-देवाय ॥

(पूर्वमुख)

राजन्मत्तारि-दर्प-प्रविदलन-पटुत्वं यथात्र प्रसिद्ध—
स्तद्वत्ख्यातोऽहमस्यां भुवि निरवसद-मदोत्पाटनः पण्डितानां।
नोचेदेवोऽहमेते तव सदसि सदा सन्ति सन्तो महान्तो
वक्तुं यस्यास्ति शक्तिः स वदतु विदिताशेष-शास्त्रो यदि स्यात्॥
॥ २२ ॥

साहङ्कार-वतीकृतेन मनसा न द्वेषिणा केवलं
नैरात्म्यं प्रतिपद्य नश्यति जने कारुण्य-बुद्धया मया।
राज्ञः श्रीहिमशीतलस्य सदसि प्रायो विदग्धात्मनो
बौद्धौघान्सकलान्विजित्य सुगतः पादेन विस्फोटितः॥२३॥
श्रीपुष्पसेन-मुनिरेव पदम्महिम्नो
देवस्स यस्य ममभूत्स भवान्सधर्म्मा।
श्रीविभ्रमस्य भवनमनु पद्ममेव
पुष्पेषुमित्रमिह यस्य सहस्रधामा॥२४॥
विमलचन्द्र-मुनीन्द्र-गुरोर्म्मुखप्रशमितास्खिल वादिमदं पदं।
यदि यथावदवैष्यत पण्डितैर्मनुतदान्ववदिष्यतवाग्विभोः
॥ २५ ॥

चूर्णिः॥ तथाहि। तत्प्रथमापादित-परवादि-हृदय-शोकः पद्मा-वसन्धन-श्लोकः॥

पद्मं शत्रु-भयङ्करोरु-भवन-द्वारे सदा सञ्चरन्—
नाना-राज-करीन्द्र-वृन्द-तुरग-व्रातांकुले स्थापितम्।
शैवान्पाशुपतांस्तथागतसुतान्कापालिकान्कापिला—

नुदिश्योद्धत-चेतसा **विमलचन्द्राशाम्बरेणादरात्** ॥२६॥
दुरित-ग्रह-निग्रहाद्भयं यदि भो भूरि-नरेन्द्र-वन्दितम् ।
ननु तेन हि भव्यदेहिनो भजतश्रीमुनिभिन्द्रनन्दिनम्
॥ २७ ॥

घट-वाद-घटा-कोटि-कोविदः कोविदां प्रवाक् ।
परवादिमल्ल-देवो देव एव न संशयः ॥२८॥

चूर्णि ॥ येनेयमात्म-नामधेय-निरुक्तिरुक्तानाम पृष्टवन्तं कृष्ण-राजं प्रति ॥

गृहीत-पक्षादितरः परस्यात्तद्वादिनस्ते परवादिनस्युः ।
तेषां हि मल्लः **परवादिमल्ल**स्तन्नाममग्नाम वदन्तिसन्तः
॥ २९ ॥

आचार्य्यवर्य्यो यतिराय्यदेवो राद्धान्त-कर्त्ता
ध्रियतां स मूर्ध्नि[1] ।
यत्स्वर्ग्ग-यानोत्सव-सीम्नि कायोत्सर्ग्गस्थितः
कायमुदुत्मसर्ज्ज[2] ॥३०॥

श्रवण-कृत-तृणाऽसौ संयमं ज्ञातु-कामैः
शमन-विहित-वेला-सुप्त-लुप्तावधानः ।
श्रुतिमरभसवृत्योन्मृज्य पिच्छेन शिश्ये
किल मृदु-परिवृत्या दत्त-तत्कोट-वर्त्मा ॥३१॥
विश्वं यश्रुत-बिन्दुनावरुरुधे भावं कृशामोयया
बुध्येवाति-महीयसा प्रवचसा यद्वं गणाधीश्वरैः ।
शिष्यान्प्रत्यनुकम्पया कृशमतीनेदं युगीनान्मुनी-

स्तं वाचार्च्यत चन्द्रकीर्त्ति-गणिनं चन्द्राभ-कीर्त्ति युधा· ॥३२॥

मद्धर्म्मे-कर्म्म-प्रकृति प्रणामाचार्य्याभ-कर्म्मे-प्रकृति-प्रमोक्ष. ।
यस्मान्नि कर्म्म-प्रकृतिश्रमामो भट्टारकं दृष्ट-कृतान्त-पारम् ॥ ३३ ॥

अपि स्य-थाग्व्यस्त-समस्त-विद्यस्त्रैविद्य शब्देऽप्यनुमन्यमान ।
श्रीपालदेव. प्रतिपाल्यनीयमसौ यतस्तत्व-विवेचनी धी: ॥ ३४ ॥

तीर्थं श्रीमतिसागरो गुरुरिला-चक्र चकार स्फुर-
ज्ज्योति:-पीत-समर्पय:-प्रविततिः पूतं प्रभूताशय: ।
यस्माद्भू रि-पराङ्मुख-भावन-गुण-श्रीवर्द्धमानोल्लस-
द्वल्लीत्पत्तिरिला-तलाधिप-शिरश्चूडारकारिण्यभूत् ॥३५॥

यत्राभियोक्तरि लघुर्द्धु-धाम-क्षेम-क्षौम्याङ्गभूराग च भवत्यपि-
भूति-भूमि: ।
यिद्या-धनञ्जय-पद विशददधानो जिष्णु.स एव हि महा-
गुनिर्हेमसेन: ॥३६॥

वृणिष्व ॥ यस्यायमवनिपति-परिषदि निषद्य-भट्टी-निपात-श्रीति-
दुग्ध-दुर्गार्द्र-गर्ज्जितास्फ़-प्रतिवादिलोक. प्रतिज्ञाश्लोक. ॥

तर्के व्याकरणे कृत-श्रमतया श्रीमत्तयाप्युद्भटो
मध्यस्थेषु मनीषिषु स्थितिभृतामग्रे मया स्पर्द्धया ।
य: कश्चित्प्रतिवक्ति तस्य विदुषो वाग्मेय-भङ्गं परं
कुर्म्मेऽहत्यमिति प्रतीहि नृपते हेमसेनं सतं ॥३७॥

द्वितैषिणां यस्य नृणामुदात्त-वाचा निबद्धा हित-रूप-सिद्धिः।
वन्द्यो **दयापाल**-मुनिः स वाचा सिद्धस्सतान्मूर्द्धनि यः
प्रभावैः ॥ ३८ ॥

यस्य श्रीमतिसागरो गुरुरती चन्द्रप्रभश्चन्द्रसूः
श्रीमान्यस्य स **वादिराज**-गणभृत्सब्रह्मचारी विभोः।
एकोऽतीव कृती स एव हि दयापालव्रती यन्मन—
स्यास्तामन्य-परिग्रह-ग्रह-कथा स्वे विग्रहे विग्रहः ॥३९॥

त्रैलोक्य-दीपिका वाणी द्वाभ्यामेवोदगादिह।
जिनराजात एकस्मादेकस्मा **द्वादिराजतः** ॥४०॥

आरुद्धाम्बरमिन्दु-बिम्ब-रचितैरुत्सुक्यं सदा यद्यश-
श्छत्रं वाक्कुचमरीज-राजि-रुचयोऽभ्यर्णं च यत्कर्णयोः।
सेव्यःसिंहसमर्च्यं-पीठ-विभवः सर्व्व-प्रवादि-प्रजा-
दत्तोच्चैर्जयकार-सार-महिमाश्रीवादिराजोविदां ॥४१॥

चूर्णिं ॥ यदीय-गुण-गोचरोऽयं वचन-विन्यास-प्रसरः कवीनां।
नमोऽर्हते ॥

(दक्षिणमुख)

श्रीमच्चालुक्य-चक्रेश्वर-जयकटके वाग्वधू-जन्म-भूमौ
निष्काण्डण्डिण्डिमः पर्य्यटति पटु-रटो **वादिराजस्य**
जिष्णोः।
जह्यु श्चद्वाद-दर्पो जहिहि गमकता गर्व्व-भूमा जहाहि
व्याहारेर्ष्यां जहीहि स्फुट-मृदु-मधुर-श्रव्य-काव्यावतंसः
॥ ४२ ॥

पातालं व्याल-राजो वसति सुविदितं यस्य जिह्वा-सहस्रं
निर्गन्ता स्वर्गतोऽसौ न भवति विषणो वज्रभृत्तस्यशिष्यः ।
जीवेतान्तावदेतौ निरुपम-बल-वचाद्वादिनः केऽत्रनान्ये
गर्व्वं निर्मुच्य सर्व्वं जयिनमिन-सभे वादिराजं नमन्ति
॥ ४३ ॥

वाग्देवी सुचिरप्रयोग-सुदृढ-प्रेमाणमप्यादरा-
दादत्ते मम पार्श्वतोऽयमधुना श्रीवादिराजो मुनिः ।
भो भो पश्यत पश्यतैव यमिनां किं धर्म्म इत्युच्चकै-
रुद्घोष्य-परः पुरातनमुनेर्व्वाग्वृत्तयः पान्तु वः ॥४४॥
गङ्गावनिश्वर-शिरो-मणि-षष्ठ-सन्ख्या-राजोल्लसत्करण चारु-
नरेन्दु-लक्ष्मीः ।
श्रीशब्द-पूर्व्व-विजयान्त-विनूत-नामा धीमानमानुष-गुणोऽ-
जनतमः प्रमाथुः ॥४५॥

पूर्णं ॥ स्तुता हि सा भगवतेयं श्रीवादिराज-देवेन ॥

पट्टिशा-वपसो. प्रशस्तमुभयं श्रीहेमसेने मुनौ
प्रागासीत्सुचिराभियोग-वशतो नीतं परामुन्नतिं ।
प्रायः श्रीविजये तदेतदखिलं तत्पीठिकायां स्थिते
सद्भूतं कथमन्यथानतिपिराद्विद्येदगीटक् वपः ॥४६॥
विद्योदयोऽस्ति न मदोऽस्ति तपोऽस्ति भास्व-
न्मौनत्वमस्ति विभुतास्ति न चास्ति मानः ।
यस्मिन्ये कमलभद्र-मुनीश्वरन्तं
यः ख्यातिमापदिह शाश्वदपैर्गुणौघैः ॥४७॥

स्मरण-मात्र-पवित्रतमं मनो भवति यस्य सतामिह तीर्थिनां।
तमतिनिर्म्मलमात्म-विशुद्धये कमलभद्रसरोवरमाश्रये
॥ ४८ ॥

सर्व्वार्द्ध्यैर्य्यमिहालिलिङ्ग सुमहाभागं कृती भारती
भास्वन्तं गुण-रत्न-भूषण-गणैरप्यग्रिमं योगिनां।
तं सन्तस्तुवतामलङ्कृत-दयापालाभिधानं महा-
सूरिं भूरिधियोऽत्र पण्डित-पदं यत्रैव युक्तं स्मृताः ॥४९॥

विजित-मदन-दर्प्पः श्रीदयापालदेवो
विदित-सकल-शास्त्रो निर्ज्जिताशेषवादी।
विमलतर-यशोभिर्व्याप्त-दिक्-चक्रवालो
जयति नत-महीभृन्मौलि-रत्नारुणाङ्घ्रिः ॥५०॥

यस्योपास्य पवित्र-पाद-कमल-द्वन्द्वन्नृपः पोय्सलो
लक्ष्मीं सन्निधिमानयत्स विनयादित्यः कृपाशामुवः।
कल्पस्यार्हति शान्तिदेव-यमिनस्तामत्यमित्थं वचे-
स्थाप्यातुं विरलाः खलु स्फुरदुरु-ज्योतिर्ग्गणा लाटपाः ॥५१॥

स्वामीति पाण्डुय-पृथिवी-पतिना निसृष्ट-
नामाग्र-दृष्टि-विभवेन निज-प्रसादात्।
धन्यस्स एव मुनिराहवमल्लभूभु—
गाख्यायिका-ग्रथित-शब्द-चमुम्मुं खाद्यः ॥५२॥

श्रीमुल्लूर-विदूर-सारवसुधा-रत्ने स नाथो गुणै
नाद्येन महीचितामुख-महः पिण्डस्थिरोन्मण्डनः।

आराध्यो गुणसेन-पण्डित-पतिस्स स्याग्र्यकामैर्जनै-
यत्सूक्तागद-मन्त्रतोऽपि गलित-ग्लानिं गतिं लम्भिताः ॥५३॥

वन्दे यन्दितमादरादहरहस्स्याद्वाद-विद्या-विदां
स्वान्त-ध्वान्त-वितान-धूनन-विधौ भास्वन्तमन्यं भुवि ।
भक्त्या त्वाजितसेन-मानतिकृतां यत्सन्निधेयोगान्मनः—
पद्मं मद्य भवेद्विकास-विभवभ्योन्मुक्त-निद्रा-भरं ॥५४॥

मिथ्या-भाषण-भूषणं परिहरेतीदृश्य...स्मुच्चय
स्याद्वादं वदतानमेव विनयाद्वादोम-कण्ठीरवं ।
नो चेत्तद्गु.. गर्ज्जित-श्रुति-भय-भ्रान्ता स्थ यूयं यत-
स्तूर्णं निग्रह-जीर्णकूप-कुहरे वादि-द्विपाः पातिनः ॥५५॥

गुणाः कुन्द-मन्दोडुमर-समरा वगमृत-वाः—
ध्रुव-प्राप-प्रेयः-प्रमर-मरमा कीर्त्तिरिव सा ।
नतेन्दु-म्योत्साह्प्रेन्नृ॑प-मय-चकोर-प्रणयिनी
न कासां श्लाघानां पदमजितसेन प्रतिपतिः ॥५६॥

सकल-भुवनपालानम्र-मूर्द्धावबद्ध—
स्फुरित-मुकुट-चूड़ालीढ-पादारविन्द ।
मदवदरिपल-वादीभेन्द्र-कुम्भ-प्रभेदी
गणभृदजितसेनो भाति वादीभसिंहः ॥५७॥

र्णिं ॥ यस्य संसार-वैराग्य-वैभवमेवंविधास्यवाच स्सूचयन्ति ।
प्राप्तं श्रीजिनशासने त्रिभुवने यद्दुर्लभं प्राणिनां
यत्संसार-समुद्र-मग्न-जनता-हस्तावलम्बायितं ।

यत्पादाः परनिर्मलेषु-सकल-ज्ञान-त्रिधाऽवृता-
स्तास्तत्रैव गहने कृतो भयकराः कामात्र देहे रतिः ॥६८॥
आत्मैवास्य विदितमधुनानन्त-बोधादि रूपं
तत्सम्पाद्ये तनु समयं वर्त्ततेऽत्रैव चेतः।
लग्नान्यस्मिन्सुरपति-सुखे चक्रि-सौख्ये च तृष्णा
तत्पुण्यार्थैरखिलमधी-क्षोभनैर्द्रोंकपूर्त्तः ॥६९॥
अज्ञानध्वान्तनाशे सकल-विषय-ज्ञान-वपुषं
मया प्राप्तं ज्ञानः करलमपि तत्साधनतया।
यदी-दानदृष्टे. कलुषितमनाः कोऽपि यतना
कथं ज्ञानज्ञाने कलयति तनोऽन्यत्र यतने ॥७०॥

(पश्चिमभाग)

पूर्णं ॥ यस्य च शिष्यगणः कविताकाकल-वादिकोला
हलाचलनामगणना प्राप्तिलनाथपदानाम पण्डितदेवस्य-
पादिपद्म-मुलाचार्यवर्य-श्रीपद्मनन्दि ॥

स्वामाचार्य महाव्रतं पालयता या सिद्ध-सिद्धान्त-
भाषाभव्य-सुखावबोध-सरसा वैदुष्य-पण्डित्यता।
दुःप्राप्यान्य सिद्धान्तादि-पदवीं प्राप्तेन शास्त्रे न वा
वस्तु यादि सकलाभी प्रभवति भुव. कस्यन्तुर्यं ॥७१॥
श्रीमूलसंघ भव दन्यसि सिद्धान्त-
पाठ्यमान-कलाकलि चारित्रवती ।
कीर्तिर्यस्य परावादिगजसंघ
कीर्तिस्तम्भाय पुर-गन्ध-गजता तस्याय ॥७२॥

दीक्षा च शिक्षा च यतो यतीनां जैनेंतपस्तापहरन्दधानात्
कुमारसेनोऽवतु यच्चरित्रं श्रेयः पथोदाहरणं पवित्रं ॥६३॥
जगद्भरिम-धम्मर-स्मर-मदान्ध-गन्ध-द्विप-
द्विधाकरण-केसरी चरण-भूष्य-भूमृच्छिखः ।
द्वि-षड्-गुण-वपुस्पशरद्-चण्ड-धामोदयो
दयेत मम मल्लिषेण-मलधारिदेवो गुरुः ॥६४॥
वन्दे तं मलधारिणं मुनिपति मोह-द्विषद्-व्याहति-
व्यापार-व्यवसाय-सार-हृदयं सत्संयमोद्योग-श्रियं ।
यत्कायोपचयीभवन्मनसपि प्रध्वस्त-भक्ति-क्रमा-
नम्राकूत-मनो-मिलन्मल-मपि प्रक्षालनैकक्षमं ॥६५॥
मनुष्य-तिमिर-च्छटा-कटिल-जन्म-जीर्णाटवी-
दवानल-युवा-गुणं पृथु-तपः-प्रभाव-त्विषं ।
पदं पद-पयोरुह-भ्रमित-भव्य-भृङ्गावलि-
र्ममोऽस्तु मल्लिषेण-मुनिराज-मनो-मन्दिरं ॥६६॥
नैर्मल्याय मलाविलाङ्गमरिल-त्रैलोक्य-राज्यश्रियै
नैस्त्रिंशन्यमनुष्य-गाढहृदयेन्द्रच्छद्मनाशन्तपः ।
यस्यासौ गुण-रत्न-रोहण-गिरिः श्री मल्लिषेणो गुरु-
र्वन्द्यो येन विचित्र-चारु-चरितैर्धात्री-पवित्री-कृता ॥६७॥
यस्मिन्नप्रतिमा क्षमाभिरमते यस्मिन्दया निर्दया-
दक्षेणा यत्र-ममत्वधीः प्रणयिनी यत्रानुरक्ता सक्तृता ।
कामं निर्वृति-कामुकस्य बहुधाप्यस्मेश्वरो योगिना-
माश्चर्यायं कथमनाम चरितैरसौ मल्लिषेणो मुनिः ॥६८॥

यः पूज्यः पृथिवीतले यमनिशं सन्तस्तुवन्त्यादरात्
येनानङ्ग-धनु-र्जितं मुनिजना यस्मै नमस्कुर्व्वते।
यस्मादागम-निर्णयोयमभृतां यस्यास्ति जीवेदया
यस्मिन्श्रीमलधारिणित्रतिपतौ धर्म्मोऽस्ति तस्मै नमः ॥६९॥
धवल-सरस-वीर्य्यं सैष सन्यास-धन्यां
परिणतिमनुतिष्ठं नन्दिमां निष्ठितात्मा।
व्यसृजदनिजमङ्गं भङ्गमङ्गोद्भवस्य
प्रथितुमिव समूलं भावयन्भावनाभिः ॥७०॥

चूर्ण्णि ॥ तेन श्रीमद जितसेन-पण्डित-देव-दिव्य-श्री-पाद-कमल-मधुकरी-भूत-भावेन महानुभावेन जैनागमप्रसिद्धसल्लेखना-विधि-विमृज्यमान-देहेन समाधि-विधि-विलोकनोचित-करण-कुतूहल-मिलित-सकल-सङ्घ-सन्तोष-निमित्तमात्मान्तःकरण-परिणति-प्रकाशनाय निरवद्यं पद्यमिदमाशु विरचितं ॥

आराध्यरत्न-त्रयमागमोक्तं विधाय निश्शल्यमशेषजन्तोः
क्षमां च कृत्वा जिनपादमूले देहं परित्यज्य दिवंविशामः ॥७१॥
शाके शून्य-धराम्बरावनिमिते संवत्सरे क्रीलके
मासेफाल्गुनके तृतीय-दिवसेवारेसितेभास्करे।
स्नातौ श्वेत-सरोवरे सुरपुरं यातो यतीनां पति-
र्मध्याह्ने दिवसत्रयानशनतः श्री मल्लिषेणो मुनिः ॥७२॥

श्रीमन्मलधारि-देवगुरुविरुद-लेखक-मदनमहेश्वरं मल्लिनाथं वरेदं विरुद-रूवारि-मुख-तिलकं गङ्गाचारि कण्ठरिसिदं ॥

५५ (६९)

कत्तिले बस्ती के द्वारे से दक्षिण की ओर एक स्तम्भ पर

(लगभग शक सं० १०२२)

(पूर्वमुख)

श्रीमत्परमगम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥
भद्रमस्तु जिनशासनाय सम्पदां प्रविधानहेतवे ।
अन्यवादि-मद-द्विप-मस्तक-स्फाटनाय पटवे पटीयसे ॥ २ ॥

श्लोक ॥ श्रीमतो वर्द्धमानस्य वर्द्धमानस्य शासनं ।
श्री कोण्डकुन्द-नामाभून्मूलसङ्घाग्रणी गणी ॥ ३ ॥
तस्यान्वयेऽजनि ख्याते ..देसिके गणे ।
गुणी देवेन्द्रसैद्धान्त-देवो देवेन्द्र-वन्दितः ॥ ४ ॥

तच्छिष्यः ॥

जयति चतुर्मुख-देवो योगीश्वर-हृदय-रत्नज-वन-
दिननाथः ।
मदन-मद-कुम्भि-कुम्भस्थल-दलनोत्कट-पटिष्ठ-निष्ठुर-
सिंहः ॥ ५ ॥

योन्दोन्दु दिग्विभागदो—
लोन्दोन्दशेषवामदि कार्योत्स-
र्गोन्दलेने नेगन्दु तिङ्गल्—
मन्ददे पारिसि चतुर्मुखाख्येयनाल्दर ॥ ६ ॥

अवर्गलिगं शिष्यराद-
र्प्पविमल-गुणरमल-कीर्त्ति-कान्ता-पतिगल् ।
कवि-गमकि-वादि-वाग्मि—
प्रवर-नुतर्च्चतुरसीति-सङ्ख्ये यनुळर् ॥ ७ ॥

अवरोलगे गोपणन्दि —
प्रवर-गुणरदिष्ट-मुद्रराघातयश-
र्कविता पितामहर्त्त—
र्क-वरिष्ठर्व्वक्कगच्छदोल् पेसर्व्वडेदर् ॥ ८ ॥

जयति भुविगोपनन्दी जिनमतसरसदमृतजलधिवुडुनिकरः
देश्यीयगणाग्रगण्यो भव्याम्बुज-षण्ड-षण्डकरः ॥ ९ ॥

वृत्त ॥ शुद्धयशोभिरामनभिमान-सुवर्ण-धराधरं तपो-
मुद्धल-लब्धिम-वल्लभनिलावलवन्दितगोपनन्दिया—
वृद्धमसाध्यमप्प पनकालदनिन्द-जिनेन्द्र-धर्म्ममं
गृद्धनृपालरन्दिन विभूतिय रूढियनेय्दे माडिदं ॥ १० ॥

जिनपादाम्भोज-भृङ्गं मदन-मद-हरं कर्म्म-निर्म्मूलनं वाग्-
वनिता-चित्त-प्रियं वादि-कुल-कुधर-वज्रायुधं चारु-विद्व-
ज्जन-पात्रं भव्य-चिन्तामणि सकल-कला-कोविदं काव्यकला-
सननेन्दानन्ददिन्दं पोगल्वे नेगल्दनो गोपणान्दिव्रतीन्द्रं
॥ ११ ॥

मल्लेयदे शाङ्गर मट्टविन भैरतिक पोङ्गि कडङ्गि वागदि-
र्म्मोल्लनोलगुडु वैरि तन्ने-दोरदे वैणवडङ्गडु वाग्—

अवर सधर्म्मरु ॥

श्रीधाराधिप भोजराज-मुकुट-प्रोताश्म-रश्मि-च्छटा-
च्छाया-कुङ्कुम-पङ्क-लिप्त-चरणाम्भोजात-नद्मीधवः ।
न्यायाब्जाकरमण्डने दिनमणिश्शब्दाब्ज-रोदोमणि-
श्चेयात्पण्डित-पुण्डरीक-तरणिश्रीमान्प्रभाचन्द्रमाः ॥१७॥
श्रीचतुर्म्मुख-देवानां शिष्योऽधृष्यःप्रवादिभिः ।
पण्डितश्रीप्रभाचन्द्रो रुद्रवादि-गजाङ्कुशः ॥ १८ ॥

अवर सधर्म्मरु ॥

यौद्धोर्व्वीधर-शम्बः नय्यायिक-कञ्ज-कुड्मल-विधु विश्वः ।
श्रीदामनन्दिविबुधः क्षुद्र-महा-वादि-विप्रभट्टारः
॥ १९ ॥

तत्सधर्म्मरु ॥

मलधारिमुनीन्द्रोऽसौ गुणचन्द्राभिधानकः ।
चलिपुरे मल्लिकामोद-शान्तीश-चरणार्च्चकः ॥२०॥

तत्सधर्म्मरु ॥

श्रीमाघनन्दि-सिद्धान्त-देवो देवगिरि-स्थिरः ।
स्याद्वाद-मुख-सिद्धान्त-वेदी वादि-गजाङ्कुशः ॥२१॥
सिद्धान्तामृत-वार्द्धि-वर्द्धन-विधुः साहित्य-विद्यानिधि-
र्वैद्वांसि प्रथितर्क-कर्कश-मतिःशब्दागमे भारतिः ।
सम्यक्चारुतम-धर्म्म-कर्म्म-निरतस्सद्वृत्त-बोधोदयः
श्रेयान्द्वादशमाघनन्दि-मुनिपः श्रीवक्रगच्छाग्रणीः ॥२२॥

दुष्टपरवादि-मल्लोत्कृष्टश्रीगोपनन्दि-यतिपतिशिष्यः ॥२७॥

अवर सधर्म्मरु ॥

मत्तदा [धा] रि हेमचन्द्रो गण्डविमुक्तश्च गौल-
मुनिनामा।
श्री गोपनन्दि-यति-पति-शिष्योऽभूच्छुद्ध-दर्शनज्ञानाढ्यः॥
॥ २८ ॥

कन्द ॥ धारिणियोल् मनसिजसं—

हारिगलं नेनेयलुमपापं किडुगुं।
सूरिगलनमल-गुण-स-
न्धारिगलं गौल-देव-मत्तधारिगलं ॥ २९ ॥

अवर सधर्म्मरु ॥

श्री मूलसङ्घगतदोषमेघे देशीगणे सचरितादिसद्गुरुघे।
भारत्यलङ्के वरवक्रगच्छे जातः सुभावः शुभकीर्त्ति देवः॥
॥ ३० ॥

आजिरगे कीर्ति-नर्त्तकिगाजिर भूगोलवागे शुभकीर्ति
बुधं।
राजावलि-पूजितनें राजिसिदनो वक्रगच्छ देशीयगणं
॥ ३१ ॥

अवर सधर्म्मरु ॥

श्री माघनन्दिसिद्धान्तामृत-निधि-जात-मेघचन्द्रस्य
श्रीसोदरस्य भुवन-ख्याताभयचन्द्रका सुता जाता
॥ ३२ ॥

अवर सधर्मेरु ॥
कल्याणकीर्ति नामामुद्भव्य-कल्याण-कारकः ।
शाकिन्यादि-ग्रहाणां च निर्द्धाटन-दुर्द्धरः ॥ ३३ ॥

अवर सधर्मेरु ॥
सिद्धान्तामृत-वार्द्धि-सूत-सुवचो-लक्ष्मी-ललाटेक्षणः
शब्द-व्याहृति नायिकाम्ब(क)चकोरानन्दचन्द्रोदयः ।
साहित्य-प्रमदाकटाच-विधिय-व्यापार-शिक्षागुरुः
श्रीमूलसङ्घ-कमलाकर-राजहंसो
देशीय-सङ्घ-गुण-प्रवरावतंसः ।
जीवाजिजनागम-सुधाम्भोधि-पूर्णेन्दुः
श्रीवक्रगच्छ-तिलको मुनिबालचन्द्रः ॥३५॥
सिद्धान्तादिशिलागमार्थ-निपुण-व्याख्यानसंशुद्धिधि
शुद्धाध्यात्मक-तत्वनिर्णयद-वचो-विन्यासादि प्रौढिसं-
बद्ध-व्याकरणार्थ-शास्त्र-भरतालङ्कार-साहित्यादि
शास्त्रोत्तम-बालचन्द्र-मुनिपस्तार्त्ताति लोकं
॥

विधाता-भरित-स्व-शीतलकर-प्रभ्राजितसागर-
प्रोद्भूत-सम्यक्कलानत कुवलयानन्दसस्तामीश्वरः ।
काम-ध्वंसन-भूषितः क्षितितले जातो यथार्थाह्व
स्मोऽयं विश्रुत-बालचन्द्र-मुनिपस्सिद्धान्त-च

(उत्तरमुख)

श्रीमूलसङ्घद देशीयगणद पुस्तकगच्छद कोण्डकुन्दान्वय परियलिय षट्टुदेवर बलिय। देवेन्द्रसिद्धान्तदेवर। अवर शिष्यरु यूपभनन्द्याचार्य्यरेन्द्र चतुर्म्मुखदेवरु। अवर शिष्यरु गोपनन्दि-पण्डितदेवरु। अवर सधर्म्मरु महेन्द्र-चन्द्र-पण्डित-देवरु। देवेन्द्र-सिद्धान्तदेवरु। शुभकीर्त्ति-पण्डित-देवरु। माघनन्दि-सिद्धान्त-देवरु। जिनचन्द्र-पण्डित-देवरु। गुणचन्द्र-मल्लधारि-देवरु। अवरोलगे माघनन्दि-सिद्धान्त-देवरशिष्यरु। चिरन्तनन्दि-भट्टारक-देवरु। अवर सधर्म्मरु कल्याणकीर्त्तिभट्टारकदेवरु। मेघचन्द्र-पण्डित-देवरु। बालचन्द्र-सिद्धान्त-देवरु। आ गोपनन्दिपण्डित-देवर शिष्यरु यशकीर्त्ति-पण्डित-देवरु। वासवचन्द्र-पण्डित-देवरु। चन्दनन्दिपण्डितदेवरु। हेमचन्द्र-मल्लधारि गण्डविमुक्तेन्द्र गौलदेवरु त्रिमुष्टि-देवरु।

[यह लेख कुछ आचार्यों की प्रशस्तिमात्र है। लेख के अन्तिम भाग में उपरिवर्णित आचार्यों के नामों की पुनरावृत्ति है। ये सब आचार्य मूलसंघ देशिय गण और पुस्तक गच्छ के देवेन्द्र सिद्धान्तदेव के समकालीन शिष्य थे। चतुर्मुखदेव इसलिए कहलाये क्योंकि इन्होंने चारों दिशाओं की ओर अलग मुख होकर आठ आठ दिन के उपवास किये थे। गोपनन्दि अद्वितीय कवि और नैयायिक थे जिनके सम्मुख कोई वादी नहीं ठहरते थे। प्रभाचन्द्र चारणीक भोजदेव द्वारा सम्मानित हुए थे। माघनन्दि, और जिनचन्द्र भारी कवि, नैयायिक और

वैयाकरण थे। देवेन्द्र बङ्कापुर के आचार्यों के नायक थे। वासवचन्द्र ने अपने वाद-पराक्रम से चालुक्य राजधानी में बालसरस्वती की उपाधि प्राप्त की थी। यशःकीर्ति सैद्धान्तिक सिंहल द्वीप के नरेश द्वारा सम्मानित हुए थे। त्रिमुटि मुनीन्द्र बड़े सैद्धान्तिक थे और तीन मुट्ठि अन्न का ही आहार करते थे। मठधारि देवचन्द्र और शुभकीर्तिदेव बड़े सदाचारी आचार्य थे। कल्याणकीर्ति शाकिनी आदि भूत प्रेतों को भगाने की विद्या में निपुण थे। बालचन्द्र आगम और सिद्धान्त के अच्छे ज्ञाता थे।]

५६ (१३२)

गन्धवारण बस्ति के पूर्व की ओर

(शक सं० १०४६)

श्रीविद्योत्तमभेदचन्द्रसुनयःपीयूषवाराशिजः
सम्पूर्णोक्षयवृत्तनिर्मलतनु.पुण्यद्बुधानन्दनः।
त्रैलोक्य प्रभरत्नरश्मिरुचिरश्चर्यप्रालदोषागमः
सिद्धान्ताम्बुधिवर्द्धनो विजयते पूर्व्वः प्रभाचन्द्रमाः ॥ १ ॥

श्रीसोदराम्बुजभवाद्बुदिवोऽत्रिरत्रि-
जातेन्दुपुत्र-बुधपुत्र-पुरूरवस्तः।
आयुस्ततश्च नहुषो नहुषाद्ययातिः
तस्माद्यदुर्यदुकुले यदवो बभूवुः ॥ २ ॥

यदासंवु संवु नृपतिः कश्चित. कदाचित्
कश्चिद्वने मुनिवरंच(च्च)-चक्षः कराले।

शार्दूलकं प्रतिह पोय्सल इत्यतोऽभू-
त्तस्याभिधा मुनिवचोऽपि चमूरसक्षम: ॥ ३ ॥
ततो द्वारवतीनाथा पोय्सला द्वोपिलाञ्छना ।
जातास्तत्पुरे तेषु विनयादित्यभूपति: ॥ ४ ॥
स श्रीमुखिकरं जगज्जनहितं कृत्वा धरां पात्रवत्
प्रत्येतान्तचमूहमत्तकमने लक्ष्मीं थिरं बालवत् ।
दोर्दण्डे विपुलण्डलीकचमुरे वीरश्रियं नाटयन्
विक्षेपात्तिमरिक्षु शिक्षितरिपुक्षोणी:प्रशास्त्रोदय: ॥ ५ ॥
श्रीमत्पादपयंशमण्डनमणि: सोमोद्भवस्वामणि-
र्धर्मप्रीढमणि: सरोरुहशिर:प्रोद्भूतशुभ्रन्मणि: ।
श्रीवार्तीनिधिचन्द्रमण्डलमणिर्लक्ष्मीलतालम्बन-
स्तम्भोद्दण्डभुजाभिनन्दितजिनो भूमण्डलचूडामणि: ॥६ ॥

[illegible] ॥ [illegible] मनुजङ्ग सुरम्—
[illegible]
[illegible]
[illegible] विनयादित्य ॥ ७ ॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] विनयादित्यं ॥ ८ ॥
[illegible]
[illegible]

श्रीपतिनिज-भुजविनयम—
द्वीपति जनियिसिदनदटनेरेयङ्गनृपं ॥ ९ ॥

वृत्त ॥ अनुपमकीर्त्ति मूरनेय मारति नाल्कनेयुपवृंहियव्-
देनेयसमुद्रमारनेय पूगल्वेयेल्नेयुर्व्वरेपने-
ष्टेनेय कुलाद्रियोम्मनेयुद्धमयेतहंसिप—
तेनेय निधानमूर्त्तियेने पोसेदरारेरेयङ्गदेवन ॥ १० ॥

अरिपुरदोल्पगद्धगिलुद्धन्धगिलेम्बुदरातिभूमिरा-
लरशिरदोल्गग्गिनरिगरीगरिलेम्बुदु वैरिभूमने-
शार कदल्गोल् चिमिरिचमि चिमीचिमिनेम्बुदुकोपवह्निदु-
र्द्धरतरमेन्दोडङ्गुरदे कादुवरारेरेयङ्गदेवन ॥ ११ ॥

कन्द ॥ आ नेगल्द् एरेग नृपालन
सूनु हृदङ्गैरिमर्दने सकलधरि-
त्री-नाथनतिप्रजनता-
भानुसुत जिष्णु विष्णुवर्द्धननेसेदं ॥ १२ ॥

उदेयं गेयवोडनोडन-
न्नुदितोदितमागे सकलराज्याभ्युदयं ।
मदवदराति-नृपालक-
पदविदलननमम विष्णुवर्द्धन भूपं ॥१३॥

वृत्त ॥ केलरं किर्त्तिकि वेरं विदुर्केलरनल्लुमसङ्गदोलुरा—
स्दले गोण्डाडेपदिन्दं केलर सङ्गलं मेरि मिन्दुकोपं ।
मलेवरयुद्धरंतोसङ्गदुलिदु निजप्राभवसाम्यम वे-
ल्पुलदि जिष्कष्टकं साडिदनधिकबलं विष्णु जिष्णुप्रतापं॥१४॥

दुर्व्वारारिधराधरेन्द्रकुलिशं श्रीविष्णुभूपालना-
ईर्व्यट्टिलु सेडेदेडि पोगि भयदिन्दावन्दनीवन्दनेन्द् ।
उर्व्वीपालर कण्डे लोकमनितुं तद्रूपमागिर्प्पिनं
सर्व्वं विष्णुमयं जगत्तेनिपिदें प्रत्यक्षमागिर्दुदो ॥१५॥

वचन ॥ स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्दमहामण्डलेश्वरं द्वारावती-
पुरवराधीश्वरं यादवकुलाम्बरदिनमणि सम्यक्त्वचूडामणि मत्त-
परोल्गण्डायनेकनामावलीसमालङ्कृतनुं । मत्तं चङ्गा-
तलकाडु नीलगिरि केरेयु नङ्गलि केरेयालं तेरेयूरु केय-
तूरु केङ्गलियू उच्चङ्गि तलेयूरु पेरम्बुर्च्चेयन्धासुरचीक
पलेयवट्टम येन्दिवु मोदलागनेक दुर्ग्गं प्रयङ्गलनमदि केरेयु
पण्ड-प्रतापदि गङ्गावाडि तोम्मत्तरु सासिरमुमनुण्डिगे साध्यं
माडिसुत्तदि राज्यं गेय्युत्तमिरे श्रीमन्महामण्डलेश्वरं त्रिभु-
वनमल्ल तलकाडुगोण्ड भुजबलवीरगङ्ग विष्णुवर्द्धन पेरु-
मालदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमानमागन्दार्क-
तारं बर मलुत्तमिरे ॥

कन्द ॥ आ नेगर्दं विष्णुनृपन म—
नो नयनप्रियं चलाङ्कनीलाङ्कमि च-
न्द्रानने कामन रतिय्यु ।
तानेसु नाल्व सरि समाने शान्तल देवि ॥ १६ ॥

वृत्त ॥ अगद मारमिङ्क न मनानयनप्रियं माधिकस्तेज-
स्लगदर्कीर्त्ति येनेसेवसदन-प्रभे विष्णुवर्द्धनङ्ग-
माद विभवङ्गळनन्यभिरिच्छैवरागे लक्ष्मिय-

लयमं माडिसि देवता पूजेगर्पिसमुदायक्काहारदानक्क कल्कणिनाड मोट्टेनविलेयं तम्म गुरुगल् श्रीमूलसङ्घद देसियगणद पुस्तकगच्छद श्रीमन्मेघचन्द्र त्रैविद्यदेवर शिष्यर् प्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेवर्गे पादप्रक्षालनं माडि सर्व्वबाधापरिहारवागि विट्ट दत्ति ॥

वृत्त ॥ प्रियदिन्दिन्तिदनेयदे कायपुरुषर्गायुं महाश्रीयु मकेयिदं कायदे काय्व पापिगे कुरुक्षेत्रोर्व्वियोल् बाणरासियोलेकोटिमुनीन्द्ररं कविज्ञेयं वेदाढ्यरं कोन्दुदेन्दयसं सार्ग्गुमिदेन्दु सारिदपुवी शैलाचरंसन्ततं ॥ २० ॥

श्लोक ॥ स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेति वसुन्धरां ।
षष्टिर्व्वर्षसहस्राणि विष्टायां जायते कृमिः ॥ २१ ॥

एल्लसनकट्टव केरेयागि कट्टिसि सवतिगन्धहस्तिबसदिगे सरुगिगे देवियरु जिनालयके विट्टरु ॥ श्रीमत् पिरियरसि पट्टमहादेवि शान्तलदेवियरु तावु माडिसिद सवतिगन्धवारणद बसदिगे श्रीमद्विष्णुवर्द्धन पोय्सल देवर पेडिकोण्डु गङ्गसमुद्रद केलगण नडुवयलय्वत्तु कोलग गद्दे तोटवं श्रीमत्प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवर कालं कर्च्चि धारापूर्व्वकं माडि विट्ट दत्ति इदनलिदवं गङ्गेय तडियोले हदिनेण्टु कोटि कविलेयं कोन्द महापातक ॥ मङ्गलमहा श्री श्री ॥

(दक्षिण पार्श्वपर) श्रीमत्प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवर शिष्यरु महेन्द्रकीर्त्ति देवरु मुन्नूरहदिमूरु कच्चिन हाक्षविगेय शान्तलदेविय बसदिगे माडिसि कोट्टरु मङ्गलमहा श्री श्री ।

[यह लेख शान्तलदेवी के दान का स्मारक है। लेख में यादवकुल की उत्पत्ति ब्रह्मा और चन्द्र से बतलाई है। इस कुल में 'सळ' नामक एक राजा हुआ। एक बार वन में किसी साधु ने एक व्याघ्र की ओर संकेत कर इस राजा से कहा 'पोय्सळ' (हे सळ, इसे मारो)। तभी से इस राजा का नाम पोय्सळ पड़ गया और उसने सिंह का चिह्न अपने मुकुट पर धारण किया। तब से इस वंश का नाम पोय्सळ पड़ गया। लेख में इस वंश के विनयादित्य, एरेयङ्ग और विष्णुवर्द्धन नरेशों के प्रताप का वर्णन है। विष्णुवर्द्धन की पटरानी शान्तलदेवी, जो पति-व्रत, धर्मपरायणता और भक्ति में रुक्मिणी, सत्यभामा, सीता जैसी देवियों के समान थी, ने सवति गन्धवारणवस्ति निर्माण कराकर अभिषेक के लिए एक तालाब बनवाया और उसके साथ एक ग्राम का दान मन्दिर के लिए प्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेव को कर दिया।]

[नोट—लेख की ठीक तारीख 'सासिरद नवसयदनेय' है, परन्तु खोदनेवाले की भूल से जब 'नवसय' छूट गया और 'सासिरदयदनेय' खुद गया तब उसने 'सासिरद, के 'द' को य० में बदलकर जितना अच्छा उससे हो सका उसे शुद्ध कर दिया। यद्यपि पढ़ते समय इसमें ठीक अर्थ निकल आता है परन्तु देखने में यह बड़ा विचित्र मालूम होता है।]

५७ (१३३)

गन्धवारण वस्ति के उत्तर की ओर स्तम्भ पर।

(शक सं० ८०४)

(उत्तर मुख)

संसारवनमध्येऽस्मिन्नृजुंखद्वान् जन-द्रुमान्।
आलोक्यालोक्य सद्वृत्तान्छिनत्ति यमतक्षकः ॥ १ ॥

लयमं माडिसि देवता पूजेगर्पिसमुदायक्काहारदानक्क कल्कविनाड मोट्टेनविलेयं तम्म गुरुगल् श्रीमूलसङ्घद देसियगणद पुस्तकगच्छद श्रीमन्मेघचन्द्र त्रैविद्यदेवर शिष्यर् प्रभाचन्द्र सिद्धान्त देवर्गे पादप्रक्षालनं माडि सर्व्वबाधापरिहारवागि विट्ट दत्ति ॥

वृत्त ॥ प्रियदिन्दिन्तिदनेयूदे कावपुरुषर्ग्गायुं महाश्रीयु मकेयिदं कायदे काय्व पापिगे कुरुक्षेत्रोर्व्वियोल् बाणरासियोलेकोंटिमुनीन्द्ररं कविलेयं वेदाढ्यरं कोन्दुदोन्दयसं सार्ग्गुमिदेन्दु सारिदपुवी शैलाक्षरंसन्ततं ॥ २० ॥

श्लोक ॥ स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरंति वसुन्धरां ।
षष्टिर्व्वर्षसहस्राणि विष्टायां जायते कृमिः ॥ २१ ॥

एल्लसनकट्टव केरेयागि कट्टिसि सवतिगन्धवारणबसदिगे सरुगिगे देवियरु जिनालयक्के विट्टरु ॥ श्रीमत् पिरियरसि पट्टमहादेवि शान्तलदेवियरु तावु माडिसिद सवतिगन्धवारणबसदिगे श्रीमद्विष्णुवर्द्धन पोय्सल देवर बेडिकोण्डु गङ्गसमुद्रद केलगण नडुवयलय्वत्तु कोलग गद्दे तोटवं श्रीमत्प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवर कालं कर्च्चिं धारापूर्व्वकं माडि विट्ट दत्ति इदनलिदवं गङ्गेय बडियोनल्ल हदिनेण्टु कोटि कविलेयं कोन्द महापातक ॥ मङ्गलमहा श्री श्री ॥

(दक्षिण पार्श्वपर) श्रीमत्प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवर शिष्यरु महेन्द्रकीर्त्ति देवरु मुन्नूरहदिमूरु कच्चिन होन्नविगेय शान्तलदेवियरु बसदिगे माडिसि कोट्टरु मङ्गलमहा श्री श्री ।

[यह लेख शान्तलदेवी के दान का स्मारक है। लेख में पोय्सल कुल की उत्पत्ति कहा और चन्द्र से बतलाई है। इस कुल में 'सल' नामक एक राजा हुआ। एक बार वन में किसी साधु ने एक व्याघ्र की ओर संकेत कर इस राजा से कहा 'पोय्सल' (हे सल, इसे मारो)। तभी से इस राजा का नाम पोय्सल पड़ गया और उसने सिंह का चिह्न अपने झंडे पर धारण किया। तब से इस वंश का नाम पोय्सल पड़ गया। लेख में इस वंश के विनयादित्य, एरेयङ्ग और विष्णुवर्द्धन नरेशों के प्रताप का वर्णन है। विष्णुवर्द्धन की पटरानी शान्तलदेवी, जो पति-व्रत, धर्मपरायणता और भक्ति में रुक्मिणी, सत्यभामा, सीता जैसी देवियों के समान थी, ने सवति गन्धवारणवस्ति निर्माण कराकर अभिषेक के लिए एक तालाब बनवाया और उसके साथ एक ग्राम का दान मन्दिर के लिए प्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेव को कर दिया।]

[नोट—लेख की ठीक लाईन 'सासिरद् मक्कलपदनेय' है, परन्तु खोदनेवाले की भूल से अब 'मक्कल' छूट गया और 'सासिरदपदनेय' खुद गया तब उसने 'सासिरद्' के 'द्' को ४० में बदलकर जितना अच्छा उससे हो सका उसे शुद्ध कर दिया। यद्यपि पढ़ते समय इससे ठीक अर्थ निकल आता है परन्तु देखने में यह बड़ा विचित्र मालूम होता है।]

५७ (१३१)

गन्धवारण वस्ति के उत्तर की ओर स्तम्भ पर।

(शक सं० ९०४)

(उत्तर मुख)

संसारकाननमध्येऽस्मिन्नृजुंखद्वान् जन-द्रुमान्।
आलोक्यालोक्य सद्वृत्तान्छिनत्ति यमतक्षकः ॥ १ ॥

श्रीराजत्कृष्णराजेन्द्रन मगन मगं सत्यशौचद्वयाल-
ङ्कारं श्रीगङ्गगाङ्गेयन मगल मगं वीरलक्ष्मीविलासा-
गारं श्रीराजचूड़ामणियलियनिदें पेम्पो पेलेन्दलम्पि
भूरिद्दमाचक्रमुंवण्णिसे सले नेगल्दं रट्टकन्दर्प्पदेवं ॥ २ ॥
परभूमीश्वरभीकरंकरनिशावेम्मासि शत्रुक्षिती-
श्वरविध्वंसपरं पराक्रमगुणाटोपं विपक्षावनी—
श्वरपक्षक्षयकारणं रणजयोद्योगं द्विपन्मेदिनी-
श्वरसंहारहविर्भुजं भुजबलं श्रीराजमार्त्तण्डन ॥३॥
इरियल्कण्मुत्तरोयलाररसेवर् पुण्डीवरानुमा-
न्तिरियल्कन्मरदाव गण्डगुणमावीदार्य्य मेन्दल्कदा-
न्तिरिवण्मुं पिरिदीव पेम्पुमेसेदोप्पिल्दप्पुवार्व्वण्णसल्
नेरेवर्व्वीरद चागदुन्नतिकेयं श्री राजमार्त्तण्डन ॥४॥
किडद जसक्के ताने गुरियादचलं नेरेदर्तियंगत्यमं ।
कुडुव चलं तोदलनुडियदिर्प्प चलं परवेण्णोलोतोदं-
बड़द चलं शरण्गे बरेकाव चलं परसैन्यमं पेर-
ङ्गे डे गुडदट्टि कोल्व चलमाल्द चलं चलदङ्कुकार्न ॥५॥
इरु पेरदेननि पेगलुतिल्दपुदीवनेगल्ते कल्पभू-
मिरुहदिनग्गलं नुड़ि सुराचलदिन्दचलं पराक्रमं ।
खरकरतेजदि बिसिदु चागद नम्रिय वीरदन्दमी-
नेरेतेने वण्णिसल्नेरेवरारलवं चलदङ्कुकारन ॥ ६ ॥
भोगसुग मल्लदुल्लुदने पेल्दपेनेन्दुमतर्क्यविक्रमं
मृगपति गल्लदिल्ले गल सन्द गभीरते वार्द्धिगल्लदि-

रङ्गेगडजगत्प्रसिद्धिगेज्जे.....महोन्नति-ने...ग.....
.....मेप्रमोक्षवानरिवें.....॥७॥

(पूर्वमुख)

दुस्थितलोकरक्षणवरुवेम्बुदु वैरिनरेन्द्रकुम्भिकु-
म्भस्थल-पाटन-प्रवण-केसरियेम्बुदु कामिनीजनो-
रस्थलहारमेम्बुदु महाकविचित्तसरोरुहाकरा-
वस्थितहंसनेम्बुदु समस्तमहीजनमिन्द्रराजनं ॥ ८ ॥
पुसियुदे वक्कु कोट्टलिपि कोल्वुदे मन्तणमन्यनारिगा-
टिसुवुदे चित्तमीयदुदे विनयमारमनेय्दे कुर्त्तव-
ञ्चिसुवुदे कल्त कल्पियेने मत्तवरं पेसगोण्डदेन्तु पो-
लिसुवुदो पेलिमीगडिन राजवनूजरोलिन्द्रराजनं ॥ ९ ॥
निखिलविनम्रभूपवर-
मुग्राज्जनेत्रोत्पलकालोलशिली-
मुखनिकर-दिनेसेवुदु पदनख-
कमलाकरविलासमहिवर जवन ॥ १० ॥
मन्निसि पिरिदोंवेंगाद-
लं नुडियन्तोडर्दु माणनल्लरिन्दमिदे-
नुन्नतिवडेंदुदो चागद
नन्निय बीरद नेगल्ते चलदग्गलिया ॥ ११ ॥
शरदमृतकिरणरुचियिं
धराचरव्याप्तियिं जगज्जनस्तुतियिं
करमेसेदिल्दपुदेनी-

श्वरमूर्त्तियें कीर्त्ति कीर्त्तिनारायणन ॥ १२ ॥
नुडिवर्षीरमनोन्दुगण्डु सेडेवर्चागकेमुय्वाम्परी-
वड़े पल्गच्चुवरामे सौचिगलेमेन्दिर्प्पर्प्परलोयरोल्-
गडणं नम्मिगे बीगुवर्नुडितोदल् दोसके पकादेदं
बडगण्डर् कलिकालदोल् कलिगलोल् गण्डं वरं गण्डरे ॥१३॥

(दक्षिणमुख)

श्रीगं विजयके विदेगे
चागकदटिङ्गे जसके पंम्पिङ्गि नित—
कांगरमिदेन्दु कन्दुक-
दागमदोले नेगल्गुमल्ते बीरर बीर ॥ १४ ॥
श्रोलगं दक्षिण सुकरदुष्करमं पोरगण सुकरदुष्करभेदमं
श्रोलगे वामद विषममनक्षिय विषम दुष्करम निजदर पोरग-
गलिके येनिपति विषममनदरतिविषम दुष्करमेन्व दुष्कर्म
एल्लेयोलोर्व्वने चारिसल्वल्लंनाल्कुप्रकरणमुमनिन्द्रिराजं
॥ १५ ॥

चारिसे नाल्कु प्रकरण-
चारणे मूनूर मूवतेण्टेनिसिदवा-
चारणेगलनमर्दि
चारिसुगुं कोटि तेरदिनेन्नेयेडङ्गं ॥ १६ ॥
बलसुवेरुव सुलिवगल्विन्तप्प चारणदोपमक्षदे पोट्टव-
ट्टिगे समनागेगिरिगेय कोल्मुट्टि मिगलुं नेलसुमणमीयदिन्तो-

न्दसविधेयल्वरे पोरगोळगेडदोळं वसुदोळं कडुगडुपिन्ने
गर्व्व
वसुधेयन्दप्पदे चारित्रवधूजेयं रङ्गनन्दर्प्पनन्तावं बल्लं ॥१७॥
मेरुसिन निलिरिदु गिरिगेय-
नलेदोर्म्मेगुट्टोळोळोळगे पोरगळे मेलेवो—
रुपसदडे चारित्र बहलिके-
यलविदुकेवलमे कीर्त्तिनारायणन ॥ १८ ॥
गिरिगे मेरुसिन्दं किरिदक्क कालोल्पु नाल्वरलल्लविग-
किरिदुमक्क—
दुरगे वेट्टदि पिरिदक्क वलयमुं भूवलयदिनत्त पिरिदुमके ।
गिरिगे कोल्वलि वलयमिन्तिनितुमं बगेवोट्टं करमरि-
दिन्तिवरोल्-
इरदं पत्तेण्टुवलयं चारित्रदमं भोगमिक्कवनळनिन्द्रराजं
॥ १९ ॥

कडुपुगलुद वलंगद
वेंदेट्टगल्ल वेरे भङ्गिगल्ल लसिगलिदें ।
कडुमाडेने यदिकयूवर-
मडदपुलेने विरमेलेरु मेलेवविवेंट्टं ॥ २० ॥
नेगल्द मण्डलमाले त्रिमण्डल यामकमण्डलमर्द्धचन्द्रमार्ग
बगेवोदरिदप्प सर्व्वतोभद्रमुरवलं चक्रव्यूहं बल्मेगलं ।
पोगलिसल्लद पेरवु दुष्करदेलेपङ्कजनाभदिनेन्तेयोल्

जगदोल्लेलेवबेडेङ्गनोर्व्वने वल्ल...न्तारालं मान्तरमे ॥ २१ ॥

(पश्चिम मुख)

वरवल्ल मेलेवरेम्बुदे-
विरं मुन्निल्लि कडुपिनोल्वन्तु विघदि-
न्दुरवल्लमेलेदु मुरियुं ।
विदमेनल्वलल पोरगनेल्लेबयेडेङ्गं ॥ २२ ॥

एरकमल्लदे पोल्लदागेरगि दोरेकोण्डे कोल्व तेरनल्लदे नेरेयें वरल्ले तक्कदियल्लि पोसुवल्लियें पोसलरिदेयिङ्ग। परियनादिट्टे मुरियल्लि कडुपिनोल् मुरिदयिल्लिल्लिय विन्नयर-नेरेयें कल्पदे वीररधीरने गिडेगला-भरणने नोडि कल्ला ॥ २३ ॥

आसुवनुं कूकुवनुं
पोसुवनुं गडयें नेगल्द तक्कदियोल्लेनु-
न्तामदेयु कुडुदेयुं
विसन्देयुविदमेल्लेगुमेल्लेबयेडेङ्गं ॥२४॥
एरगन्नरियदे जिण्डुकम्मगुल्दुंवरलयमरियदेतप्पेपिन्दुं
तेरनन्नरियदे भद्रमनिल्लियुम्मूरेगलदें कट्टाडियुं ।
मुरियें पोयिसिदनुरेयें कोन्दु धरेगडे वगगंड विरुदेनिसदें
नेरेयें कडुजाणनेनिसरुडे वरकुंमे गेडेगलाभरणन कल्लरमं
॥ २५ ॥

कालगं कयुगल्ल मुरगद
कालल्ल विरियुल्लोडल्लि मच्चिसुवेडेयुं ।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

गिय...दिसिमो...लदो...नु... मे...गदेन ...ल... वंसु... पोदिसुवेल्वेयुरि... यांडि... नगिसुगुवेन्न... वपेद...केयं भावन-गन्ध-हस्तियं ॥

अदिरदिदिर्च्चिनिन्दरि...नेने पायिसि उन्न मिण्डनु कुडुरेय येम्मियुं पेरसि पोल्वदु मेणिदिरे...देदु काल् गुदि-गोलं तानं.....

(पूर्व मुख)

साधिसि पोग... ..निरदे.....दिव.....
वेरिव.....न्तलिय.....ल्दरि...लय.....ल्दन्तवलो
.....पेनकेल.....पोलगदेल्लाये.....उनदा.....
यविट्टनेवे.....मलिपि.....य.....पडलु-

बलिदु निजाधिपं वेसलिदेर्व्वेसनं कुसिदिर्म्मेकेल्दुवा-
ल्बलिपननव्यवस्थितननोर्व्वेसकल्कुव जोलगल्लरं
पलियेदे यिल्लदोल्पलेयुतिर्प्पुदु भावन गन्धहस्तियं ॥
परबलवेय्दि कय्दुवेडेयाडुव ताणदोलल्लि वीरमं
परवधु वट्टेलावरेडेयाडुवताणदोलल्लि सौचमं ।
परिकिसि सन्दरिल्ल पेररोर्व्वरुवेन्नलिदण्मु सौचमे-
म्बरदरेल..... .....॥

(दक्षिण मुख)

.....वागेदि-
ट्टिगरन...वुदं दोरेगे वर्कुमे भावनगन्धहस्तियं ॥
मोडनेय नायकर्कुदिदु तागुमे...मल्ल वकदोड्डुपु-

[illegible]

[illegible]

(पश्चिममुख)

[illegible]

[illegible]

[illegible]

५६ (७३)

शासन वस्ति के सामने एक शिला पर।

(शक सं० १०३६)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥
भद्रमस्तु जिनशासनाय सम्पद्यतां प्रतिविधान-हेतवे ।
अन्यवादि-मद-हस्ति-मस्तक-स्फाटनाय घटने पटीयसे. ॥२॥
नमो वीतरागाय नमरिसद्धेभ्यः ॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महाशब्द-महामण्डलेश्वरं द्वारवती-पुरवराधीश्वरं यादव-कुलाम्बर-शु-मणि सम्यक्त्व-चूड़ामणि मलपरोलुगण्डाद्यनेकनामावली-समालङ्कृतरूप श्रीमन्महामण्डलेश्वरं त्रिभुवनमल्ल तज्जकाडुगोण्ड भुज बल-वीर-गङ्ग विष्णुवर्द्धन-होय्सल-देवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतारं सलुत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि ॥

वृत्त ॥ जनताधारनुदारनन्यवनितादूरं दयासुन्दरी-
पति-पूत्त-स्तन-हारनुग्र-रणधीरं मारनेनेन्दपै ।
जनकं तानेने माक्रमदन्वे विबुध-प्रख्यात-धर्म्म-प्रयु-
क्त-निकामाप्त-चरित्रे तायेनलिदेनेयं महाधन्यनो ॥ ३ ॥

कन्द ॥ विश्रुतमलं बुध-जन-मित्रं द्विजकुलपवित्रनेयं जगदोलु ।
पात्रं रिपु-कुल-कन्द-खनित्रं कौण्डिन्य-गोत्रनमलचरित्रं ॥४॥
मनुचरितनेचिगाजुन

मनेयंलु मुनिजन समूहमुं बुधजनमुं ।
जिनपूजने जिनवन्दने ।
जिनमहिमेगल्लावकाशमुं शोभिसुगुं ॥ ५ ॥
दशम-गुण-पतिवनिता—
धृतियनोल्तकोण्डुदेन्दु जगमेच्चमुरु—
रयंसुविनममल-गुण-स-
म्पत्तिगे जगदोल्गं पेरचिकव्येये नोन्तलु ॥ ६ ॥
मन्तेनिसिद् एचिराजन पेरचिकव्येय पुत्रनखिलदी-
र्त्यंकरपरमदेवपरमचरितोत्कर्णनादीर्ण्ण-विपुल-पुलक-परिकलित
वारवाणनुवसम-समर-रस-रसिक-रिपुनृपकलापावलेप-लोप शो-
लुप-कृपाणनुवाहाराभय-भैषज्य-शास्त्र-दान-विनोदनुं सकललोक-
शोकापनोदनुं ।
पृथ्वी ॥ वज्रंवज्रभृतो हरस्य हलभृत्चक्रं यथा चक्रिण-
श्चण्डिश्चण्डिधरस्य गाण्डिवधनुर्गोण्डोवकोदण्डनः ।
यद्वद्विक्रमनीति विष्णुनृपतेरुत्कार्य्य कर्यं भाटयो
र्गङ्गो गङ्ग-उरङ्ग-रक्षितयशो-राशिस्स-वर्य्यो भवेतु ॥ ७ ॥
इन्तेनिप श्रीमन्महाप्रधाने दण्डनायके द्राहपरङ्गे गङ्गराजे
चालुक्य-चक्रवर्त्ति-त्रिभुवनमल्ल-चेरम्मरिंडिवन दलं पत्तिर्व्वे-
रसामन्तर्व्वेरसुकण्डेगाल-गोंडिनलु विट्टिरे ॥
कन्द ॥ तेगं बाहवम हारव
वगेयं तनगिरलवरमेनुत मवङ्गं ।
पुगुव कटकिगरनलिरं

पुगिसिदुदु भुजासि गङ्ग-दण्डाधिपन ॥ ८ ॥

वचन ॥ एम्बिनमवस्कन्दकेलियिन्द मनिवरं सामन्तरमं
भङ्गिसिवदीय-वस्तुवाहन-समूहमं निजस्वामिगे तन्दु कोट्ट,
निजभुजावष्टम्भक्के मेच्चिमेच्चिदेंबेदि कोञ्चिमेने ॥

कन्द ॥ परम-प्रसादमं पडे—

दु राज्यमं धनमनेलुमं वेडदन —
स्वरमागे वेडिकोण्डं
परमननिदनईदर्च्चनाञ्चित-चित्तं ॥ ९ ॥

अन्तु वेडिकोण्डु—

वृत्त ॥ पसरिसे कीर्त्तनंजननि योचलदेवियरर्त्तियंवडु मा-
डिसिद जिनालयक्कमोसेदात्म-मनोरमे लक्ष्मिदेवि मा-
डिसिद जिनायलक्कमिदु पूजन योजितमेन्दु कोट्ट सं-
न्तोसमनज्जमाम्पनेने गङ्गपमूपनिदेनुदारनेा ॥ १० ॥

अकर ॥ आदियागिर्प्पुदार्हत-समयक्के मूलसङ्घं कोण्डकुन्दा-
न्वयं

यादु वेडदं बलयिपुदक्षिय देसिगगणद पुस्तकगच्छद ।
वोवविनवद कुक्कुटासन मन्त्रधारि-वेवर शिष्यरेनिप पेम्पि-
द्वादमेसेदिर्प्पं शुभचन्द्र-सिद्धान्त-देवर गुरु गङ्गपमूपरि ॥
गङ्गवाडिय वमदिगलनिवोक्कलनिवनानेयुदे पोसयिसिदं
गङ्गवाडिय गोम्मटदेवगं सुत्तालयमनेयुदे माडिसिदं ।
गङ्गवाडिय तिगुलरं वेडुकोण्डु वीरगङ्गङ्के निमिर्प्पिसे कोट्टं
गङ्गराजना मुडिन गङ्गरायङ्गं नूम्मेडिधन्यनक्कं ॥ १२ ॥

एत्तिदनेल्लगल्लि नेलेवीडने माडिदनेल्लगल्लि कण्
पत्तिदुदेल्लिगल्लि मनमावेडेयेयदिदुदेल्लिगल्लि स-
म्पत्तिन जैनगेहमने माडिसे देशदोलेल्लिगल्लिगे-
सेत्तलुमावगं पडेय मारकंबोलादुदु गङ्गराजनि ॥ १३ ॥
जिनधर्म्माम्बुधियत्ति मच्चरसियं लोकं गुणंगाल्वुदे-
कंने गोदावरि निन्द कारणदिनीगलु गङ्गदण्डाधिना-
थनुमं कावेरि पेर्किर्पे मुत्ति पिरिदुं नीरोत्तियुं मुट्टिवि-
ल्लेने सम्यक्त्व पेम्पनिनेरेये वण्णिप्पण्णने वण्णिपं ॥१४॥

इन्तेनिप दण्डनायक गङ्गराजं सकवर्ष १०३६ नेय हेमल
म्बि संवत्सरद फाल्गुण शुद्ध ५ सोमवार दन्दु तम्म गुरुगलु
शुभचन्द्र-सिद्धान्तदेवर कालंकर्चि परमनं कोट्टर् ॥ दण्डनायक
एचिराजनुं तनगभिवृद्धियागे मलिसिदं । परमन सीमान्तरं
मूडलु सल्लद कल्ल इप्पत्ते गडि । तेङ्कलु कडिद कुम्मरि हो-
गागि । इदुवलु वेर्कनोलगेरेय मावितकेरेय गडेयोलगागि ।

पेलुगोलके होद बट्टे गडि । बडगलु मेरे । नेरिल्ल-केरेय
मूडण कोडियिं तेङ्कण होमगेरेय-दक्षिणदादुदेल्लं । आहोसगेरेय
बडगण कोडियिन्दं मूड होद नीरवकेयिन्दं । अय्कनकट्टद ।
ताइवल्लदिन्द । तेङ्कलादुदेल्लविनितुं परमङ्गे सीमेयागि बिट्ट
दत्ति ॥ ईधर्म्मम प्रतिपालि-सिदङ्गे महापुण्यमक्कुं ॥
वृत्तं ॥

प्रियदिन्दिन्तिदनेय्दे काव-पुरुषर्गायुं महाभोगमु
क्कंयिदं कायदे काव पापिगे कुलक्षेत्रोर्ज्जियंगाल् बादरा-

सियोल्लेल्कोटि मुनीन्द्रर कविलेयं वेदाढ्यर कोन्दुदो-
न्दयसं सार्ग्गुमिदेन्दु सारिदपु वीशैलाचर्र सन्ततं ॥ १५ ॥

श्लोक ॥

स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेद्वसुन्धरां ।
षष्टिर्व्वर्षसहस्राणि विष्ठायां जायते कृमिः ॥ १६ ॥
बहुभिर्व्वसुधा दत्ता राजभिस्सगरादिभिः ।
यानि यानि यदा धर्म्मे तानि तानि तदा फलं ॥ १७ ॥
विरुद-रूवारि-मुखनिलकं वर्द्धमानाचारि खण्डरिसिदं ॥

[यह लेख एक दान का स्मारक है। मार और माकिअब्बे के पुत्र एचिराज हुए। एचिराज और पोचिकब्बे के पुत्र महाप्रतापी गङ्गराज हुए। ये होय्सल नरेश विष्णुवर्द्धन के महादण्डनायक थे। इन्होंने तिगुलों (तैलङ्गों) को परास्त कर गङ्गवाडि देश को वश किया तथा चालुक्य-नरेश त्रिभुवनमल्ल पेर्माडिदेव की सेना को जीतकर अपने भारी पराक्रम का परिचय दिया। उनकी स्वामि-भक्ति तथा विजय-शीलता से प्रसन्न होकर विष्णुवर्द्धन नरेश ने उन्हें पारितोषिक माँगने को कहा। उन्होंने 'परम' नामक ग्राम माँगा। इस ग्राम को पाकर उन्होंने इसे अपनी माता पोचब्ब देवी तथा अपनी भार्या लक्ष्मीदेवी द्वारा निर्मापित जिन-मन्दिरों की आजीविका के हेतु अर्पण कर दिया। यह लेख इसी दान का स्मारक है। गङ्गराज जैसे पराक्रमी थे वैसे धर्मिष्ठ भी थे। इस दान के अतिरिक्त इन्होंने गङ्गवाडि प्रान्त के समस्त जिन-मन्दिरों का जीर्णोद्धार कराया, गोम्मट स्वामी का परकोटा बनवाया तथा अनेक स्थलों पर नये-नये जिन-मन्दिर निर्माण कराये। लेख में कहा गया है कि इन कृत्यों से क्या गङ्गराज गङ्गराय (चामुण्ड राय-गोम्मट स्वामी के प्रतिष्ठाकारक) की अपेक्षा भी कुछ अधिक धन्य

नहीं कहे जा सकते ? लेख में ग्राम की सीमा दी हुई है जिससे विदित होता है कि यह ग्राम श्रवण बेल्गोळ के उत्तर ही ईशान दिशा में था। उक्त दान शक संवत् १०३६, फाल्गुण शुद्धि ५ सोमवार को दिया गया था। महाराज कुन्दकुन्दान्वय देशीगण पुस्तक गच्छ के कुडुरास्तय मलधारिदेव के शिष्य शुभचन्द्र सिद्धान्त देव के शिष्य थे। दान की रक्षा के हेतु लेख में कहा गया है कि जो कोई इस दान-द्रव्य में हस्तक्षेप करेगा वह कुरुक्षेत्र व वाराणसी में साठ करोड़ ऋषियों, कपिल गौओं व वेदज्ञ पण्डितों के पाप का पापी होगा।]

६० (१२८)

बाहुबलि मन्दिर के पूर्व की ओर प्रथम चौरंगल् पर

(लगभग शक सं० ८६०)

श्रीमान्नयसेने सेव्य-
पादरसेने नेगन्द गङ्गवज्रन सेङ्क
ल्योगायुपनेम्बरसंग-
ल्योगेय (गेविग) मार्प्पडेंगोरेयलन्दन वट्ट ॥ १ ॥

एरडमणिय कोळेयगङ्गन काळेगदोन्दल सार्द निरायिस्द
काळेगकिडे एरडमणिय कलिसिद वलमु मार्प्पडंगुडुवने पोगळ्दे।

पोडने काळग कयिसिद पोलयिलर्प्पेरडिङ्गं मार्प्पडं
किडे कडिकय्दा नृपुं किडे तम्म वल पोरमागदलि व-
न्दिदिनेडेयन्दे बलियाङ्गे पायिसि भूसुरंगम पडम्
पडिसि पोगल्तेयं पडेदु कान्तुदु कोसिगना-कानिवट ॥२५

अरिरि...सिद वरंगल कोळेयगङ्गन मार्प्पडंगम

बेदरुविनं तेरल्चि पलरुं तुलिलाल्गलनिक्कि तन्न वी-
रद...लदेल्गेयं परबलं पेगलल्वडिकं...मागि वि-
ल्ददटिनलुर्केयं मेरेदु सावुदु वोयिगनन्तिलाम्बोल् ॥३॥
नट्ट-सरल्गलिन्दिदक (क्न्वयक्को) यिंकिडि केय्दुबेडिदो-
ल्लिट्ट निसान्तहेतुगलिनादमगुर्व्विसिबट्ट वीलुवो-
ल्वोट्टने नोन्दु पोल्वेडेयं(ल् नय्य) गोण्डु विमान म...लं
मुट्टलुमित्तरिछ गल वोयिगनं दिविजेन्द्र-कान्तेय... ॥४॥

[यह एक वीरगल है। इसमें उल्लेख है कि गङ्गवज्र (नरेश) अपर नाम रक्कसमय्य के वोयिग नाम के एक वीर योद्धा ने 'वहेग' और 'कोणेय गङ्ग' के विरुद्ध युद्ध करते हुए अपने प्राण विसर्जित किये। युद्ध में इसने ऐसी वीरता दिखाई कि जिसकी प्रशंसा उसके विरोधियों ने भी की]

६१ (१३६)

उसी स्थान के द्वितीय वीरगल् पर

(लगभग शक सं० ८७२)

श्री-युवतिगे निज-विजय-
श्री-युवतियं सवतियेनिसे रण-मूर्ध्व-नृपा-
लायदोलायद मेय्-गलि
यायिकनेम्ब नेगल्तेयं प्रकटिसिदन् ॥१॥
श्री-दयितन यायिकन म-
नो-दयितेगे प्रभदोलेसेद आयय्यगे साम् ..

आदर्तनयपेल्ल्
मादुयरं देयिल्लम्मनेम्बर् पेसरिं ॥२॥
अवरोल-चुट्टिदोल्लरिविन
तवरेने धर्मदरगुम्तियेने नेगल्दल्लम्-
भुवनक्के खायियब्बिगम्
आयनिजेगं दोरेयेनल्के पेण्डिरमोल्दर ॥३॥
धीरन तनयं विबुधो-
दारं परंगेलेद श्रीक-विद्याधरनन्
आ-रमणिगे पुटियेने पेररू
आदमनागलिप पेम्पिनोल् पेलिपुदे ॥४॥
आवक-धर्म्मदोल् दोरेयेनल् पेररिल्लेने सन्द रैवलि-
आवकि ताने सकलनिकेपोल् जनकात्मजे ताने हर्षिनोल्-
देवकि ताने पेम्पिनोलकलन्पलि ताने जिनेन्द्र-भक्ति-सद्-
भावदे खायिकब्बे जिन-शासन-देवते ताने काणिरे ॥५॥
उदयविद्याधरनप्प खायिकेन्द्र

(उसी पाषाण के शिखर पर)

...रिविरिदरि.....आ आ .....द अन.....रे मूप...
...रवि..... लि...प ..मु... ..वनि..... न प...मुदर-
गिरन्दरागि पसिवालिवगानादेनेदल्लि मुनोल् कादि वलि... ..
विल्लवरन जननि खायिक्के कण्ड .....दिवरदे केल्वार लि...
मालाग्रह.....करिप...लिनेमुमरे मुंदविदे...हारि...मुंदु

नुव गदल् वगियुरल्लि सत्तल् ·····वेत्त·····यब्बे सायलेन्दु पेण्डतियें·····वेत्तण्नलोगले पलरुं वेलगिद रायद चल्ल मसुल वलगि गन्दिनिप्पण्डतियिन् ।

[यह भी एक वीरगल है जिसमें पराक्रमी और प्रसिद्ध वणिक और जावय्ये की पुत्री 'सावियब्बे' का परिचय है। सावियब्बे का पति 'धोर' का पुत्र 'लोक विद्याधर' था। यह स्त्री रेवती, देवकी, सीता, अरुन्धती आदि सदृश रूपवती, पतिव्रता और धर्मप्रिया थी। वह पक्की श्राविका थी। जिन भगवान् में उसकी शासन देवता के सदृश भक्ति थी। उसने 'वगियुर' नामक स्थान पर अपने प्राण विसर्जित किये]

[नोट—लेख का अन्तिम भाग जिसमें इस वीराङ्गना के प्राण-त्याग का वर्णन है, बहुत घिस गया है इससे स्पष्ट नहीं है। ऐसा कुछ विदित होता है [redacted] यह सती स्त्री अपने पति के साथ युद्ध में गई थी और वहाँ लड़ते-जूझते इसने वीरगति पाई। लेख के ऊपर जो चित्र खुदा है उसमें यह स्त्री घोड़े पर सवार हुई हाथ में तलवार लिये हुए एक हाथी पर सवार वीर का सामना करती हुई चित्रित की गई है। हाथी पर चढ़ा हुआ पुरुष इस पर वार करता हुआ दिखाया गया है। 'सावियब्बे' सावियब्बे का संक्षेप रूप है]

६२ (१३१)

गन्धवारण वस्ति में शान्तीश्वर की मूर्त्ति के पादपीठ पर

(लगभग शक सं० १०४४)

प्रभाचन्द्र-मुनीन्द्रस्य पद-पङ्कजषट्पदा ।

शान्तलो शान्ति-जैनेन्द्र-प्रतिबिम्बमकारयत् ॥१॥

(सिंहपीठ पर)

उत्तौ वक्र-गुणं दृशोस्तरलतां सद्विभ्रमं भ्रूयुगं
कादिप्यं कुचयोर्नितम्ब-फलके भासेऽतिमात्र-क्रमम् ।
दोषानेव गुणीकरोति सुभगं सौभाग्य-भाग्यं तव
व्यक्तं शान्तल-देवि वक्तुमवनौ शक्नोति कोऽन्या
कविः ॥२॥

राजते राज-सिंहोव पार्श्वे विष्णु-मदीभृतः ।
विख्याता शान्तलाख्या सा जिनागारमकारयत् ॥३॥

[नोट—गन्धवारण वसति का निर्माण शान्तल देवी ने शक सं० १०४४ विरोधिकृत श्रावण में कराया था। देखो लेख सं० ८३ (१४१)]

६१ (१२०)

एरडु कट्टे वसति में आदीश्वर की मूर्त्ति के सिंहपीठ पर

(लगभग शक सं० १०४०)

शुभचन्द्र-मुनीन्द्रस्य सिद्धान्त सिन्धु-चन्द्रिनः ।
पद-पद्म-युगं अस्मीर्लक्ष्मीरिव विराजत ॥१॥

या प्रीता पतिदेवताव्रतविधौ शान्तौ स्थितिर्यो पुन-
र्द्यौ वाचा वचनं जिनार्च्चनविधौ या भोजनौ कल्पद्रु
कार्ये मोक्षिरभूद्रथे जय-रमा यो राजसेनापतेः

सा लक्ष्मीर्व्यसवि गुणैक-वसति र्व्यातीवनम्रतनान् ॥ २ ॥
श्रीमूलसङ्घ देसिग गणद पुस्तकान्वय ॥

६४ (७०)

कत्तले वस्ति की ऊपर की मञ्जिल में आदीश्वर की मूर्ति के सिंहपीठ पर

(लगभग शक सं० १०४०)

भद्रमस्तु श्रीमूलसङ्घ देशिकगणद श्रीशुभचन्द्र-सिद्धान्त-देवर गुरुं दण्डनायक-ग(ङ्ग)व्यनु तम्म दापि पो-यकोगं माडिसिदो वसदि मङ्गलं ॥

[दण्डनायक गङ्गराज्य (या गङ्गवंश्य) शुभचन्द्रसिद्धान्तदेव के शिष्य, ने यह वसदि अपनी माता पोचकब्बे के लिए निर्माण कराई। (आगे का लेख टूटा)]

६५ (७४)

गामन वस्ति में आदीश्वर की मूर्ति के सिंहपीठ पर

(लगभग शक सं० १०४०)

श्रीमान्देशयुभचन्द्रदेवगणभृद्वादीन्द्रवज्रांकुरः
शास्त्राब्धौ बुधसिन्धुवर्द्धनविधौ राकाशशाङ्कोपमः।
तच्छिष्यो विनयैकसिन्धुरखिलक्ष्मापालमौलिस्फुर-
त्पादाम्भोरुहसिद्धसेनमुनिपः श्रीकीर्त्तिभट्टारकः ॥ १ ॥

६६ (१२०)

चामुण्डराय वस्ति में नेमीश्वर की मूर्त्ति के सिंहपीठ पर

(लगभग शक सं० १०६०)

गङ्गसेनापतिगनुर् एषणो भारतीयः ।
त्रैलोक्यरङ्गनं जैनचैत्यालयमर्पीकरत् ॥ १ ॥
सुधनसुरगवां बन्धुरेषणः कमलाषयः ।
धोप्पणापरनामाङ्कु चैत्यालयमर्पीकरत् ॥ २ ॥

६७ (१२१)

ऊपर की मञ्जिल में पार्श्वनाथ की मूर्त्ति के पादपीठ पर

(लगभग शक सं० ९९९)

जिन गृहमं पेसरागिसदोळ्
जनमेल्लं पोगळ्द मन्जि-चामुण्डन न-
न्दननोसदि माडिसिदं
जिन-देवन अजितसेन-मुनिवर गुरुं ॥ १ ॥

[चामुण्ड के पुत्र जिनदेव ने अजितसेन मुनि के लिए जिनालय के समीप जिन मन्दिर निर्मित कराया ।]

६८ (१५७)

काञ्चिन दोणे के एक स्तम्भ पर

(शक सं० १०५६)

(उत्तर मुख)

श्रीमत्-परम-गम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥

स्वस्ति समस्तगुणसम्पन्नरप्प श्रीमत् त्रिभुवनमल्ल चलदङ्कराव होय्सल-सेट्टियरु अय्यावलेय युण्डिगेय दम्मिसेट्टिय मगं मल्लि-सेट्टिगे चलदङ्कराव-होय्सलसेट्टिय् एन्दु पेसरक्कोट्टरिन्तु सकवर्ष १०५८ सौम्यसंवत्सरद माघ-मासद शुद्ध-पचद सङ्क्रमणदन्दु तन्नवसानमनरिदु तन्न बन्धुगलं बिडिसि समचित्तदोलु मुडिपि स्वर्गस्थनादं ॥

(पश्चिम मुख)

आवन सति एन्तप्पलेन्दडे ॥

तुरवम्मरसग सुगवेग सुपुत्रि स्वस्ति श्रीजिन-गन्धोदक-पवित्री - कृतोत्तमाङ्गे युरुभाहारामयभैषज्यशास्त्रदानविनोदेयरप्प चट्टिकब्बे तन्न पुरुष चलदङ्कराव होय्सल सेट्टिगं वनगं तन्न मग बूचणङ्ग परोक्ष-विनेयमागि माडिसिद निसिधिगे ॥

[त्रिभुवनमल्ल चलदङ्करावहोय्सलसेट्टि ने दम्मिसेट्टि के पुत्र मल्लिसेट्टि को चलदङ्करावहोय्सलसेट्टि की उपाधि प्रदान की। मल्लिसेट्टि 'अय्यावले' के एक राज्यकर्मचारी (युण्डिगेय) थे। इनकी पत्नी जैनधर्म-परायणा चट्टिकब्बे थी जिसके पिता और माता के नाम

क्रमशः गुरुवम्मरस और सुग्गव्वे थे। इसी साध्वी स्त्री ने अपने पति की यह निषद्या निर्माण कराई।]

[नोट—अरहावले सम्भवतः बम्बई प्रान्त के कलादि जिलान्तर्गत आधुनिक 'ऐहोले' का ही प्राचीन नाम है। लेख में शक १०५१ सौम्य संवत्सर का उल्लेख है। पर ज्योतिष-गणना के अनुसार शक १०५१ पिङ्गल संवत्सर था और सौम्य संवत्सर उससे आठ वर्ष पूर्व शक सं० १०४३ में था। अतएव लेख का ठीक समय शक सं० १०४३ ही प्रतीत होता है]

६८ (१५८)

काञ्चिन दोणे के प्रवेशद्वार के निकट पड़े हुए एक टूटे पाषाण पर*

(लगभग शक सं० १०९२)

(प्रथम मुख)

....

.....ध्यावृत्तविच्छित्तये।

...क...कलिकल्मषघ्नमुदितं श्रीबालचन्द्रंमुनि

पश्याम श्रुत-रत्न-रोहणधरं धन्यास्तु नान्ये वयं ॥१॥

प्रचुर-कलान्वितरकुटिलरचञ्चलसुर-पच-वृत्त-

होपाषय-प्रकाशरनेयालचन्द्र देवप्रभावमेनच्चरियें ॥२॥

श्री बालचन्द्र ....

---

* यह पाषाण अब नहीं मिलता।

(द्वितीय मुख)

.....भद्रमप्प त्रिलो.....वरविद्धितपूर्त्त नित्य-कीर्त्ति-चित्य-समुचितचरितो य...र-धृत...धुविनु.....यित्वाहं भुजविम्बचितमणि .....कर स्वं चिरादिमु.....सम... .....गतिभिस्स.....चग्रियरुद्ध-श्रीकवि.....नथ..... श्रीवहं...

(तृतीय मुख)

....रानेा बभा.....चित्रतनूभृतामं.....यतेश्वरा...। सकल.....वन्द्य पादारविन्दं स...ममूर्त्ति सर्व्वसत्वा...वक्र-दुरित-राशिभव्यद.....नुविजित - मकरकेतु.....त्तिंग्र-सीन्द्रं। भानेा... ..सुविरू...चक्रा.....रेा वत्पद् भव.....

[यह लेख बहुत टूटा हुआ है। इसमें बालचन्द्र मुनि की कीर्ति वर्णित रही है। द्वितीय पद्य पम्परामायण (आश्वास १ पद्य ८) में भी पाया जाता है।]

७० (१५५)

ब्रह्मदेव मन्दिर के निकट पड़े हुए एक टूटे पाषाण पर

(लगभग शक सं० १०९२)

.....दा...न्वयद हन...य वलिय श्रीगुणचन्द्रसिद्धान्त-देवरशिष्यरु श्रीनयकीर्त्तिसिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगल शिष्यरु श्री-

दायण्णन्दिप्रैविद्य-देवर्क भानुकीर्त्तिसिद्धान्तदेवर्क श्री अभ्या-
भिनवालपचन्द्रदेवर्क ॥

परमागमसारविधि (हिम-
किर)ुं राद्धान्तचक्रि नयकीर्त्तिवर्मा-
धरशिष्यन..... क्षचिन्
पविशुतनप्पाभि बालचन्द्र गुनोर्ग्गं ॥ १ ॥
बालचं . ...

[यह लेख अधूरा ही रह गया है। इस (लेख) में गुणचन्द्र सिद्धान्तदेव के प्रमुख शिष्य नयकीर्ति सिद्धान्त चक्रवर्ती के दादा गुरु थे ऐसा है, भानुकीर्ति सिद्धान्तदेव और अभयनन्दि बालचन्द्र थे ऐसा ज्ञात होता है। बालचन्द्र की उपाधि का जो पद आया है वह इनकी आयुवृद्धि की दशा के अन्त में भी पाया जाता है देखो शिलालेख नं० ५०। २५०। पद्य १०]

७१ (१६६)

भद्रबाहु गुफा के भीतर पश्चिम की ओर

चट्टान पर० (नागरी अक्षरों में)

(लगभग शक सं० १०२६)

श्रीभद्रबाहु स्वामिन पादमं जिनचन्द्र [illegible]

[illegible] यह लेख अब नहीं मिलता।

७२ (१६७)

भद्रबाहु गुफा के बाहर पश्चिम की ओर चट्टान पर

(शक सं० १७२१)

शालिवाहन शकाब्दाः १७२१ नेय शुक्लनामसंवत्सरद भाद्रपद ब ४ बुधवारदन्दि । कुन्दकुन्दान्वय (न्वय) देसिगगद श्री पाद। शिष्यरप्प अजितकीर्त्ति-देवरु अवर शिष्यरु शान्ति-कीर्त्ति देवर शिष्यरप्प अजितकीर्त्तिदेवरु माडोपवासदं स्वर्गस्थरु माडि ई गरियल्लि देवगतरादरु ।

[कुन्दकुन्दान्वय देसीगण के आर्य (कीर्ति पण्डितदेव) के शिष्य अजितकीर्तिदेव के शिष्य शान्तकीर्ति देव के शिष्य अजितकीर्ति देव ने एक मास के उपवास के पश्चात् शक सं० १७२१ भाद्रपद शु ४ बुधवार को स्वर्गगति प्राप्त की ।

७३ (१००)

भद्रबाहु गुफा के मार्ग पर अरणसिद्ध के पास चट्टान पर

([illegible] शक सं० ११३७)

[illegible] श्री ईश्वर सवत्सरद [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[इस लेख का अर्थ ज्ञात नहीं हो सका ।]

पर बाण चढ़ावे। लेख में संवत्सर का नाम ईश्वर दिया हुआ है। शक ११६६ ईश्वर संवत्सर था]

७४ (१६५)

प्राकार के बाहर दक्षिण भागस्थ तालाब के उत्तर की ओर चट्टान पर

(सम्भवतः शक सं० ११६८)

स्वस्ति भोपराभवसंवत्सरद मार्गशिर बहुल अष्टमी मुक्रवारदन्दु मलेयाल अय्याडि-नायक दिरिय-बेट्टदि चिक्कबेट्टक्के ॥

['मलयाळ अय्याडि नायक' ने विन्ध्यगिरि से चन्द्रगिरि का निशाना लगाया। लेख में पराभव संवत्सर का उल्लेख है। शक ११६८ पराभव संवत्सर था]

७२ (१६७)

भद्रबाहु गुफा के बाहर पश्चिम की ओर चट्टान पर

(शक स० १७३१)

शालिवाहन शकाब्दः १७३१ नेय शुक्लनामसंवत्सरद भाद्रपद ब ४ बुधवारदल्लि । कुन्दकुन्दान्य (न्वय) देसिगणद श्री चारु। शिष्यराद अजितकीर्त्ति-देवरु अवर शिष्यरु शान्ति-कीर्त्ति देवर शिष्यराद अजितकीर्त्तिदेवरु मासोपवासवं सम्पूर्ण माडि ई गवियल्लि देवगतरादरु ।

[कुन्दकुन्दान्वय देशीगण के चारु (कीर्ति पण्डितदेव) के शिष्य अजितकीर्तिदेव के शिष्य शान्तकीर्ति देव के शिष्य अजितकीर्ति देव ने एक मास के उपवास के पश्चात् शक सं० १७३१ भाद्रपद वदि ४ बुधवार को स्वर्गगति प्राप्त की ।]

७३ (१७०)

भद्रबाहु गुफा के मार्ग पर चरणचिह्न के पास चट्टान पर

(सम्भवतः शक स० ११३७)

स्वस्ति श्री ईश्वर संवत्सरद मलयाल कोरयु-सट्टरु इल्लिदं एद गद्देय इडुवण बुणिसेय मूरगुण्डिगे

[इस स्थान पर खड़े होकर 'मलयाल कोरयु सट्टरु' ने आई भूमि के पश्चिम की ओर इमली के वृक्ष के समीप की तीन शिलाओं

पर पाद चढ़ाये। लेख में संवत्सर का नाम ईश्वर दिया हुआ है। शक ११३६ ईश्वर संवत्सर था]

७४ (१६५)

प्राकार के बाहर दक्षिण भागस्थ तालाब के उत्तर की ओर चट्टान पर

(सम्भवतः शक सं० ११६८)

स्वस्ति भोपराभवसंवत्सरद मार्गशिर बहुल अष्टमी शुक्रवारदन्दु मलेयाल अध्यादि-नायक हिरिय-बेट्टदि चिक्कबेट्टक्केय्द ॥

['मलयाळ अध्यादि नायक' ने विन्ध्यगिरि से चन्द्रगिरि का निशान उठाया। लेख में पराभव संवत्सर का उल्लेख है। शक ११६८ पराभव संवत्सर था]

विन्ध्यगिरि पर्वत पर के शिलालेख

७५ (१७९-१८०)

गोम्मटेश्वर की विशालमूर्त्ति के वामचरण के पास

नागरी अक्षरोंमें

श्री चामुण्डे-राजें करवियले ।

(लगभग शक सं० ९५०)

श्रीगङ्गराजे सुत्ताले करवियल्लं ।

(लगभग शक सं० १०३९)

[चामुण्डराज ने (मूर्ति) प्रतिष्ठित कराई । गङ्गराज ने परकोटा निर्माण कराया ।]

७६ (१७५,१७६,१७७)

दक्षिणचरण के पास

(पूर्वद हळे कन्नड अक्षरों में) श्रीचामुण्डराजें माडिसिदं ।
(मन्त्र और वट्टेळुत्तु,, ,,) श्रीचामुण्डराजनु सेय्व्रित्तान् ।
(कन्नड अक्षरों में) श्रीगङ्गराज सुत्ताल्यवं माडिसिदं ।

[सारपर्व पूर्वोक्त और समय भी पूर्वानुसार]

७७ (१८४)

पद्मासन पर

(लगभग शक सं० १०७२)

स्वस्ति समस्तदैत्यदिविजाधिप-किन्नर-पन्नगानम-
न्मस्तक-रत्ननिर्गत-गभस्तिशतावृत-पाद.....।
प्राप्त-समस्त-मस्तक-तमः-पटलं जिनधर्मशासनम्
विस्तरमागेनिल्के धरं-शरधि-सूर्य्यशशाङ्कतक्षिनं ॥ १ ॥

[जैनशासन सदा जयवन्त हो।]

७८ (१८२)

वाम हस्त की ओर बमीठे पर

(लगभग शक सं० ११२२)

श्रीनयकीर्त्तिसिद्धान्तचक्रवर्त्तिगल गुड्ड श्रीवसविसे-
ट्टियरु सुत्तालयद भित्तिय माडिसि चव्वीसतीर्थंकरं माडिसिदरु
मत्तं श्री वसविसेट्टियर सुपुत्ररु नम्बिदेवसेट्टि बोकि
सेट्टि जिन्निसेट्टि बाहुबलि-सेट्टि तम्मदय माडिसिद
तीर्थंकर मुन्दण जालान्दरवं माडिसिदरु ॥

[नयकीर्त्ति सिद्धान्त चक्रवर्त्ति के शिष्य वसविसेट्टि ने परकोटे की दीवाल बनवाई और चौबीस तीर्थंकरों को प्रतिष्ठित कराया व उनके पुत्र नम्बिदेव सेट्टि, बोकिसेट्टि, जिन्निसेट्टि और बाहुबलि सेट्टि ने तीर्थंकरों के सम्मुख जालीदार वातायन बनवाया।]

७९ (१८३)

उपर्युक्त लेख के नीचे जहाँ से मूर्त्ति के अभिषेक के लिए व्यवहार में लाया हुआ जल बाहर निकलता है

(लगभग शक सं० ११२२)

ओवलिंग सरोवर

८० (१८८)

दक्षिण हस्त की ओर बमीठे पर

(लगभग शक सं० १०८०)

श्रीमन्महामण्डलेश्वर प्रतापहोय्सल नारसिंहदेवर कैयल्ल महाप्रधान हिरियभण्डारि हुल्लमय्य गोम्मटदेवर पादिधदेवर चतुर्व्विंशतितीर्थंकर अष्टविधार्च्चनगं रिपियराहारदानक्कं सव-वेरं बिडिसि कोट्ट दत्ति ।

[महाप्रधान हुल्लमय्य ने अपने स्वामी होय्सल नरेश नारसिंह देव से सवग्रेड (ग्रामक ग्राम पारितोषक में) पाकर इसे गोम्मट स्वामी की अष्टविध पूजन और ऋषि मुनि आदि के आहार के हेतु अर्पण कर दिया]

८१ (१८६)

तीर्थंकर मुत्तालय में

(सम्भवतः शक सं० ११५३)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥

स्वस्ति समस्तभुवनाश्रयं श्रीपृथ्वी-वल्लभ-महाराजाधिराज-परमेश्वरं द्वारावतीपुरवराधीश्वरं यादवकुलाम्बरदिनमणि मण्डलीक-चूडामणि सगरराज्यनिर्म्मूलनं चोलराज्य-प्रतिष्ठाचार्य्यं श्रीमत्प्रतापचक्रवर्त्ति होय्सल-श्रीवीरनारसिंहदेवरसरु पृथ्वीराज्यं गय्युत्तिरलु तत्पादपद्मोपजीविगुं श्रीमन्नयकीर्ति-सिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगल्ल शिष्यरु श्रीमदध्यात्मबालचन्द्रदेवर गुड्ड स्वस्ति समस्तगुणसम्पन्नरुं जिनगन्धोदक-पवित्रीकृतोत्तमाङ्गरुं सद्धर्म्म-कथाप्रसङ्गरुं चतुर्व्विधदानविनोदनुमप्प पदुमसेट्टिय मग गोम्मटसेट्टि खरसंवत्सरद पुण्य शुद्ध उत्तरायण-सङ्क्रान्ति पाडिदिय बृहद्वारदन्दु श्रीगोम्मटदेवर चउवीसतीर्थंकर अष्ट-विधार्च्चनेगे अक्षयमण्डारवागि कोट्ट गद्याण ॥ १२ ॥

[होय्सल नरेश नारसिंह के राज्य में पदुमसेट्टि के पुत्र व अध्यात्मि बालचन्द्रदेव के शिष्य गोम्मट सेट्टि ने गोम्मटेश्वर की पूजार्चन के लिए १२ 'गद्याण' का दान दिया।]

[नोट—दान 'खर' संवत्सर की उक्त तिथि को दिया गया था। शक सं० ११२३ खर संवत्सर था।]

८२ (२५३)

ब्रह्मदेव मण्डप में एक स्तम्भ पर

(शक सं० १३४४)

(दक्षिण मुख)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।

जीयान् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासने ॥ १ ॥
श्रीयुक्तरायस्य बभूव मन्त्री श्रीवैद्यदण्डेश्वरनामधेयः ।
नीतिर्यदीया लिखितामिनन्द्या निरीक्षयामास विपक्ष-
लोकम् ॥ २ ॥
दानं चेत्कथयामि तुच्छपदवीं गाहेत सन्तानको
वैदग्धिं यदि सा बृहस्पतिकथा कुत्रापि सेलीयते ।
क्षान्तिश्चेदनपायिनी जडतया स्तूयत सर्व्वंसहा
स्तोत्रं वैद्यपदण्डनेतुरतनौ शक्यं कवीनां कथं ॥ ३ ॥
तस्मादजायन्त जगद्भयन्तः पुत्रास्त्रयो भूपतिधारणशीलाः ।
यैर्भूपितोऽजायत मध्यलोको रत्नैस्त्रिभिर्जैन इवापवर्गः ॥ ४ ॥
द्रुरुगपदण्डनाथमथ धुक्तमभ्यनुजौ
स्वमहिमसम्पदाविरचयन् सुतरां प्रथितौ ।
प्रतिभटकामिनीपृथुपयोधरहारहरो
महिवगुणोऽभवद् जगति मङ्गपदण्डपतिः ॥ ५ ॥
दाक्षिण्यप्रथमाम्पदं सुचरितस्यैकाश्रयस्सत्यवा-
गाधारस्सतत वदान्यपदवीमभ्यारजङ्गालकः ।
धर्म्मोपप्लवरः क्षमाकुलगृह सौजन्यसङ्केतभूः
कीर्त्ति मङ्गपदण्डपोऽयमवनेऽजैनागमानुव्रतः ॥ ६ ॥
जानकीव भवदस्य गेहिनी चारुशीलगुणभूषणोज्वला ।
जानकीव तनुवृत्त-मध्यमा राघवस्य रमणीयतेजसः ॥ ७ ॥
आस्तां तयोरस्तमितारिवर्गौ पुत्रौ पवित्रीकृतधर्म्ममार्गौ ।
जायानभूत्तत्र जगद्विजेता भव्याग्रणी र्व्वैद्यपदण्डनाथः ॥ ८ ॥

द्रुरुगपदण्डाधिपतिस्तस्यावरजस्समस्तगुणशाली ।
यस्य यशश्चन्द्रिकया भीलन्ति दिवाप्यरातिमुखपद्माः ॥ ९ ॥

वृत्त ॥

ब्रह्मन् भाललिपिं प्रमार्ज्जय न चेद् ब्रह्मत्वहानिर्भवे-
दन्यां कल्पय कालराजनगरीं तद्वैरिपृथ्वीभृतां ।
वेताल व्रज वर्द्धयोदरवलिं पानाय नव्यासृजां
युद्धायोद्धतशस्त्रवैर् द्रुरुगपद्मापः प्रकोपोऽभवत् ॥ १० ॥
यात्रायां ध्वजिनीपतेरिरुगपद्मापस्य धाटीघटद्-
घोटीघोरखुरप्रहारचलितैः प्रोद्भूतधूलिव्रजैः ।
रुद्धे भानुकरेऽगमद्रिपुकराम्भोजं च संकोचनम्

(पश्चिम मुख)

प्रापत्कीर्त्तिकुमुद्वती विकसनं दीप्तः प्रतापानलः ॥ ११ ॥
यात्रायामिरुगेश्वरेण सहसा शून्यारिसौधाङ्गण-
प्रोद्भासद्विधुकान्तकान्तशकले गच्छद्वनेभाधिपः ।
दृष्ट्वा स्वप्रतिमां प्रतिद्विपमिति क्षिप्रैकदन्तस्वयं
त्राहि त्राहि गजाननेति बहुधा वेतालवृन्दैस्तुतः ॥ १२ ॥
कोऽयं धात्रा लिखितं ललाटफलके वर्त्मं प्रमार्ष्टुं क्षमो
वार्त्तां धूर्त्तवचोमयीमिति वयं वार्त्तां न मन्यामहे ।
यद् धात्र्यामिरुगेन्द्रदण्डनृपतौ सञ्जातमात्रे क्षितौ
निश्चोरप्यधिकश्रियापटि रिपुस्त्रीरत्नचौरोऽभवत् ॥ १३ ॥
यद् बाहाविरुगेन्द्रदण्डनृपतेर्व्विश्वत्यनन्यापुरं
शेषार्थीयफलागमे नियमितां सख्यानुनायास्सदा ।

गाढ़ालिङ्गनसान्द्रसम्भवसुखप्रोद्भूतरोमाञ्चितैः
सद्यः सङ्गमजातवर्गुणतया स्वायुः कृशार्थैः पदी ॥ १४ ॥
आहारप्रतिबद्धयावदुभयोरप्यं च
राज्ञ च क्षत्र समग्रापत्तनिरवद्यानम् ।
हिमानृताब्दविशाम्यगते स पौर्व्वं
मूर्च्छां च ददाव तोऽस्त्र बभूव दूरे ॥ १५ ॥
हाने धाम्य गुणात्र एव कवला दोनेषु दृष्टिर्जिने
भक्तिर्द्धर्म्मपथे जिनेन्द्रवचनाभाकर्णनेषु श्रुती ।
जिह्वा तद्गुणकीर्त्तनेषु वपुषश्चौल्यं च तद्वन्दने
प्राणं तच्चरणाब्जसौरभभरे सर्व्वं च तत्सेवने ॥ १६ ॥
चिह्नं पट्टबनाबबन्धसमा भवले भुवने
मल्लिनिर्म्मलसत्व. परमधीरत्वाँ चिकुरे ।
बाहौ च तस्य बाहुपरिघे धरणीवलयं
परमितरोहराक्रम-कथापि च तत्कुचयोः ॥ १७ ॥
कर्णैर्व्विस्मृतकुण्डलैरविरतासङ्गैर्ल्ललाटस्थलै-
राकीर्णैरलकैः पयोधरतटैरस्पृष्टमुक्तागुणैः ।
विम्बोष्ठैरपि वैरिराजमुदयस्ताम्बूलरागोज्झितै-
र्यस्यत्य स्फारतरं प्रतापमसकृद् व्याकुर्व्वते सर्व्वतः ॥ १८ ॥

पूर्वमुख)

यत्कीर्त्तिभिसुरसुन्दरीपरिलब्धिनाभि-
र्धौत चिराय निजविम्बगते कलङ्के ।

स्वच्छात्मप्रकटुहिनदीधितिरङ्गनाना-
मव्याजमाननरुचि कवलीकरोति ॥ १९ ॥
यत्पादाब्जरजःकणा प्रसुवते भक्त्या नतानां भुवं
यत्कारुण्यकटाक्षकान्तिलहरी प्रक्षालयत्याशय ।
मोहाङ्कुरणं विलोति विमला यद्वैखरीमौखरी
वन्द्यः कस्य न माननीयमहिमा श्रीपण्डिताख्यो यतिः
॥ २० ॥
मन्दारद्रुममञ्जरीमधुझरीमञ्जुस्फुरन्माधुरी-
प्रौढाहङ्कृतिरूढिपाटवपरीपाटी कुकाटी भटः ।
नृत्यद्दुष्कपदंगर्त्तविलुठत्सल्लोककल्लोलिनी-
सङ्क्षापी खलु पण्डिताख्यमिनां व्याख्यानकोलाहलः
॥ २१ ॥
कारुण्यप्रथमावतारसरणिश्रान्तेर्निधानं स्थिरं
वैदुष्यस्य तपःफलं सुमनतासौभाग्यभाग्योदयः ।
कन्दर्पद्विरदेन्द्रपञ्चवदनः काव्यामृतानां खनि-
र्जैनाम्भोम्बरभास्करश्रुतमुनिर्जागर्त्ति नग्नाङ्कितः ॥ २२ ॥
युक्त्यागमार्णवविलोडनमन्दराद्रि-
रध्यात्मागमाम्बुरुहकाननपालसूर्यः ।
शुद्धाशयः प्रतिदिनं परमागमेन
सवर्द्धते श्रुतमुनिर्यतिसार्वभौमः ॥ २३ ॥
तत्सन्निधौ वेन्नुगुरं जगदेकतीर्थं
श्रीमानसारिगणपाहुव दण्डनाथः ।

श्रीगुम्मटेशवरचनाचनयोगहेतो-
र्योऽयोक्तमं वेलुगुल्लाख्यमहत्पुरीशः ॥ २४ ॥
शुभकृति वत्सरे जयति कार्त्तिकमासि तिथौ ।
सुरपतनम्र पुष्पसुरभ्युपि शोभवधौ ॥२५॥
गदुपवनं स्वनिर्मितनवीनतडाकयुतम् ।
यदिदकुलाचलोदितशतार्कवरं मुदितः ॥२६॥
दुरितपदण्डशौर्यरविमण्डलयशःकुमदर्शनचंद्रं ।
आचन्द्रतारकमिदं वेलुगुलनगर्यं प्रकाशतामतुलं ॥२७॥
दानपात्रनयाम्भेभ्य दानान्यपरानुपालनं ।
दानात्स्वर्गमवाप्नोति पालनाच्युतं पदं ॥२८॥
स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धरां ।
षष्टिवर्षसहस्राणि विष्ठायां जायते कृमिः ॥२९॥
मङ्गल महा श्री श्री श्री श्री ॥

८३ (२४९)*

न० ८२ के पश्चिम की ओर मण्डप में एक स्तम्भ पर

(शक स० १६२१)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥१॥

स्वति श्री जिनाभ्युदय शालिवाहनशकवर्ष १६२१ ने सलुव शोभकृतु संवत्सरद कार्त्तिक ब १३ गुरुवारदल्लु श्रीमन् महाराजाधिराज राजपरमेश्वर कर्णाटकराज्याभिषेक

* लेख के नीचे का बोर्ड देखो ।

परितृप्त परमाह्लाद परममङ्गलीभूत षड्दर्शनसंरक्षणविच-
क्षणोपाय विद्वद्गरिष्ठदुष्टदुप्तजनमदविभञ्जन महिशूर धरा-
धिनाथरप्प दोड्डकृष्णराजवडेयरैयनवरु ॥ मत्तं ॥

वृत्त ॥ जनताधारनुदारसत्यसदयं सत्कीर्त्तिकान्ताजयं
विनयं धर्म्मसदाश्रयं सुखचयं तेजः प्रतापोदयं ।
जननाथं वरकृष्णभूवरललामप्रख्यातचन्द्रोदयं
घनपुण्यान्वितचित्तियाण्म पडेदं सद्धर्म्मसम्पत्तियं ॥२॥

कन्द ॥ श्रीमद्वेल्गुलदचलदि
सोमाकर जरिव देवगोमटजिनपन ।
श्रीमुखवलोकिसलोड-
नामोदयु पुष्टि हरुषभाजननुर्दं ॥३॥

वचन ॥ पार्त्थिवकुलपवित्रनुं कृष्णराजपुङ्गवनुं वेल्गुगुर
जिनधर्म्मके पिटन्थ ग्रामाधिग्रामभूमिगल् । आर्हनहल्लियुं ।
होसहल्लियुं । जिननाथपुरं । बल्लियग्रामम्मुं । राघनह-
ल्लियुं । कणनहल्लियु । जिननहल्लियुं । कोप्पलुगल् वेरसु
कनवे-वेल्गुगुलमेतं । सप्तसमुद्रमुद्धन्नेवर सप्तपरमस्था-
नाधिपतियप्प गोम्मटस्वामियवर पूजोत्सवक्कुं पुण्यसमृद्धि-
सम्प्राप्तयनिमित्तमर्त्थवागियुं । अदल्लदमिन्नर—माडिपुर्म्मं
मर्व्वमान्यवागि दयपालिसियु मत्तं ।

कन्द ॥ चिगदेवराजकल्या-
णिय भागदोलिर्प्प अन्नत्रयाधिगतिगे ।

सुगुणियु कवालेंमामव
जगदेरयनु फुल्लराजशेखर निर्त ॥४॥

इन्दी बेल्गुलधर्म्मदु
अन्तरिसदे चन्द्रगुप्तवेरडनेवरं ।
सन्ततदिन्देम्मय भू-
कान्तर रक्षिसलि धर्म्मवृद्धिय वेंसर्व ॥५॥

यी धर्म्मम परिपालिसिदवर् धर्म्मार्त्थकामंगळाद्रुवं परमपदंवि
पडेयुवर् ॥

इन्ति ॥ प्रियदिन्दी जिनधर्म्ममं नडेयिसुगुं महाभाग्य-
मदेयिदं कायद नीचपापिगं कुरुवेंत्रार्दिवोल् बादरा-
शियोलंस्कोडि मुनीन्द्र कविवेवं वेदाद्यरं कोन्दुदा-
ग्दयसे स्वर्गुमिदेन्दु फुल्लयुपशेखाकारगल् ॥ मिसगु ॥
इतिमङ्गलं भवतु ॥ श्री श्री श्री ॥

[मंत्री-भरत फुल्लराज शेखर ने गोम्मटेश्वर भगवान के दर्शन किये और हर्ष से पुलकित होकर बेलगोल में जैन धर्म के प्रभावनार्थ सदा के लिए एक ग्राम का दान किया। इस ग्राम में बेल्गुल भी है]

[नोट—लेख में एक सं० १६६१ शोभकृत का उल्लेख है। पर एक १६६१ व तो शोभकृत ही था और न उस समय फुल्लराज शेखर का ही राज्य था। अतः यह ठीक नहीं एक सं० १६६६ है जो शोभकृत था जैसे उस फुल्लराज शेखर का राज्य था।]

८४ (२५०)

उसी स्तम्भ की दूसरी बाजू पर

(शक सं० १५५६)

श्री शालिवाहन शकवरुष १५५६ नेय भावसंवत्सरद आषाढ़-शु-१३ स्थिरवार मङ्गयोगदलु श्रीमन्महाराजाधिराज राजपरमेश्वर मैसूरपट्टनाधीश्वर षड्दरुशन-धर्म्मस्थापनाचार्य्यरादं चामराजवोडेयरु अय्यनवरु बेलुगुलद स्थानदल्लि इप्पनु यत्तुदिन मेलु आगिरलागि आचामराजवोडेयरु-अय्यनवरु यीचेत्रव मेडवहिडिदन्तावरु होसवोडव केरुपप्पन मग चन्नप्पन बेलुगुलद पायिसेट्टियर मक्कलु चिक्कण्ण चिगपायसेट्टि यिवरु मुन्नाद मेडवहिडिदन्तावर करसि निम्म मडियिन मालवनु तीरिसेनु यत्तलागि चामण्ण चिक्कण्ण चिगपायिसेट्टि मुरण्ण राज्जण्णन पदुमप्पन मग पण्डण्ण पदुमरसय्य दोड्डण्ण पञ्चपाण्डवरिगल्ल मग वम्मप्प बोम्मण्णरु यिप्पत्तण्ण गुन्नण्ण चारुकीर्त्ति नागप्प बेल्लय्य बोम्मिसेट्टि होगडिगिप रायण्ण परियण्णगोड बैरसेट्टि बैरप्प वीरय्य इवरु मुन्दार समस्त तम्म नन्देसायिगलिगे पुण्येवागलियेन्दु बोम्मदेवामिय मन्त्रियिवरि तम्म गुरु चारुकीर्त्तिपण्डितदेवर गुन्दे धारादत्तवागि यी-मडहिन पत्तमालवनु यी-मडव कोट्ट स्थानदल्लिगे यी-वर्षक्क गोडुगलु यी-मालवनु धारापूर्वकवागि कोट्टेवु यी विष्टन पत्तमालवनु आवनादरु अनुपिसर कासिराजैवरवल्लि

साहस्रकपिलेयनु आचलनु कोन्द पापके होगुवरु येन्दु धरेद शिलाशासन ॥ श्री श्री ॥

[बेल्गुल मन्दिर की ज़मीन आदि बहुत दिनों से रहन थी। उक्त विधि को महाराज रामराज ओडेयर ने सेवक आदि रहनदारों को बुलाकर कहा कि तुम मन्दिरों की भूमि को मुक्त कर दो, हम तुम्हारा रुपया देते हैं। इस पर रहनदारों ने अपने पूर्वजों के पुण्य-निमित्त बिना कुछ लिये ही श्रीगोम्मटस्वामी और अपने गुरु चारुकीर्ति पण्डित देव की साक्षी में मन्दिरों की भूमि रहन से मुक्त कर दी और यह शिलालेख खिंचाया।]

८५ (२३४)

गोम्मटेश्वर-द्वार की बाईं ओर एक पाषाण पर

(लगभग शक सं० ११०२)

श्रीगोम्मटजिननं नर-
नागामर-दितिज खचर-पति-पूजितनं ।
योगाग्निहतस्मरनं
योगिध्येयननमेयनं स्तुतियिसुवें ॥१॥

क्रमदि मेच्चेणदोरद क्रमदे याव विट्टु सन्निट्ट च-
क्रमदुं निःप्रभमागे सिग्गनोलकोण्डात्मापजङ्घोल्पु गे-
य्दुमहीराज्यमनित्तु पोगि तपदि कर्म्मारि विध्वंसिया-
ष मदारमं पुरुसन्नुवाहुबलिवोल् मत्तारो मानोन्नतर् ॥२॥
भुतजयबाहुबाहुबलिकेवलिरूपसमानपञ्चवि-

शति-समुपेत-पञ्चशतचापसमुन्नतियुक्तमप्प तत्-
प्रतिकृतियं मनोमुददे माडिसिदं भरतं जितासिल-
क्षितिपतिचक्रि पौदनपुरान्तिकदोल् पुरुदेवनन्दनं ॥३॥
चिरकालं सल्वे तज्जिनान्तिकधरित्रीदेवदेवेशभी-
करणं कुक्कुटसर्प्पसङ्कुलमसङ्ख्यं पुट्टे दल् कुक्कुटे-
श्वर-नामन्तदधारिगादुदुबलिकं प्राक्तपोगौरवगो-
चरमन्तामहि मन्त्रतन्त्रनियतर्काप्यर्गडिन्नुं पलर् ॥४॥
केलल्कप्पुदु देवदुन्दुभिरवं मातेनो दिव्यार्च्चना-
जालं काणलुमप्पुदाजिनन पादोद्यन्नखप्रस्फुर-
ल्लीलादर्प्पणमं निरीक्षिसिदवर्काप्यर्गिंजातीव ज-
न्मालम्बाकृतियं महातिशयमादेवज्ञविश्रुतं ॥५॥
जनदि तज्जिनविश्रुतातिशयमं तां केल्दु नोल्पल्लि चे-
तनेयोल् पुट्टिरे पोगलुचमिसे दूरं दुर्गमं तत्पुरा-
वनियंन्दार्य्यजनं प्रबोधिसिदोडन्दावन्दु वरेवल्-
लपनेवि माडिपेनेन्दु माडिसिदनिन्दीदेवने गोमटं ॥६॥
श्रुतमुं दर्शनशुद्धियु विभवमुं सद्वृत्तमुं दानमुं
धृतियुं नम्रोन्नते मन्द गजकुलचन्द्रं राघवस्तं जग-
न्नुतनामूमिपनद्वितीयविभवं चामुण्डरायं मनु-
प्रतिमं गोम्मटनर्ं माडिसिदनिन्दी देवने यत्नदि ॥७॥
अतिनुद्राकृतियादेहागदवरोत्सौन्दर्य्यमौन्नत्यमुं
नुतसौन्दर्य्यमुमागे मत्तातिशयंवानागदौन्नत्यमुं ।
नुतसौन्दर्य्यमुमूर्ज्जितातिशयमुं तन्नल्लि निर्व्विघ्नं वे

क्षितिमभ्युज्ज्वलां गोम्मटेश्वरजिनश्रीरूपमात्मोपमं ॥८॥
प्रतिविद्धं वरेयल् मयं नेरयें नोडल् नाकलोकाधिपं
स्तुतिगेय्यल् फणिनायकं नेरेयनेन्दन्दन्वरारार्प्पुरिं ।
प्रतिविद्धं वरेयल् समन्तु तवे नोडच् वण्णिसल् निस्समा-
कृतियंदक्षिणकुक्कुटेशवनुवं माश्चर्य्यसौन्दर्य्यमं ॥९॥
मरंदु पारदु मेन्ने पक्षिनिवहं कच्चुर्ग्गारेयदोल्
मिरुगुत्तुं पोरपोण्मुगुं सुरभिकारमोरारुवच्छायमी-
रेरदाश्चर्य्यमनीक्षिसोक्कद जनं वानेरदे कण्डिदुं दा-
नेरवेन्नेट्टने गोम्मटेश्वरजिनश्री मूर्त्तियं कीर्त्तिसल् ॥१०॥
नेलगट्टानागलोकं तलमवनि दिशाभित्ति भित्तिव्रजं स्व-
स्तलभागं मुखमं मेगण सुरर विमानोत्करं कूटजालं ।
विलसत् तारोपमन्तर्व्वलतमखिविताने समन्तागे नित्यं
निलयं श्रीगोम्मटेशङ्गे निसिदुदु जिनाकावलोकं त्रिलोक
॥ ११ ॥

अनुपमरूपने स्वानुदयने निर्ज्जितवाक सत्तु दा-
रने मेरे गेल्दुभिमानखिलोर्व्वियनत्यभिमानियें तपसू-
स्थनुमेरक्कुं प्रयिच्चनेयोलिरंपुदेम्बननूनबोधने
विनिहतकर्म्मबन्धनने बाहुबलीशनिदेनुदाचनो ॥ १२ ॥
अभिमानस्थिरभावमं नगगे माल्कत्युद्धमानोन्नतं
शुभसौभाग्यमनङ्गज भुजबलाविष्टम्भमं चक्रव-
र्त्तिभुजादर्प्पविदारि बाहुबलि तृष्णाच्छेदमं मुक्तरा-
ज्यभरं मुक्तियनानिर्व्वृतिपदं श्रीगोम्मटेशं जिनं ॥१३॥

स्फुरदुद्यत्सितकान्तिधिं परिसरत्सौरभ्यदिन्दं दिशो-
रुकरमं मुट्टिसुवुं नमेरुसुमनोवर्षं स्फुटं गोम्मटे-
श्वरदेवोत्तमचारुदिव्यशिरदोल् देवर्कलिन्दादुदं
धरयेल्लं नेरे कन्दुदामहिमेयादेवद्रुदाश्चर्यमें ॥ १४ ॥
एनगाय्दोचिरालागदाय्तेनगे कालकेम्बवोल्गाय्ते पे-
ल्वनितायालकवृद्धगोपतियुं कण्डल्करिन्दाखिनं ।
दिनवेान्दावगमुद्घदिव्यकुसुमासारं महीलोकवो-
धन मन्तोपदमाय्तु गोम्मटजिनाधीशोत्तमाङ्गामदोल् ॥१५॥
मिरुगुव तारकप्रकरमोपरमेश्वरपादसेवेगे-
न्दिरपुदे भक्तियिन्दमने निर्म्मलिनं घनपुष्पवृष्टि व-
न्दिरगिदुदभ्रदि धरेगवभ्रतराङ्गुतहर्षकोटि कण्-
देरेदिरे सन्द वेल्गुनद गोम्मटनाधन पादपद्मदोल् ॥१६॥
भरतननादिचक्रधरनं भुजयुद्धदे गेल्द कालदोल्
दुरितमहारियं तविसि केवलबोधमनाल्द कालदोल् ।
सुरपति मुन्ने माडिदुदु पूमळेयीदेारेयकुमेम्बिनं
सुरिदुदु पुष्पवृष्टि विभुबाहुबलीयन मेले लीलेयि ॥१७॥
केम्मगिदेकं नाड पलवन्दद नन्दिद विन्दिगर्कलं
नीं मरुलागि देवरिवरेन्दवरं मतिगेट्टु निन्नने-
कम्म तोलल्चिदप्पे भवकाननदोल् परमात्मरूपनं
गोम्मटदेवनं नेनेय नोगुवे जाति जरादिदुःखमं ॥१८॥
सम्मदवागलागं कोलेयुं पुसियुं कलवुं परान्नना-
सम्मतियुं परिग्रहद काङ्क्षेयुमेम्बिवरिन्दमादोडे-

न्दुं मनुजद्विरत्नेय परत्रेय कंडेनुतुं महोच्चरोल्
गोम्मटदेवनिर्दु सलें मारुतवोल्तेसेदिर्दनोडिमं ॥ १९ ॥
एम्मुमनोरमन्तनुमनिन्दुवुमं नेनेविल्लुमन्नुमं
कंम्मगनाथयुग्ममने माडि विसुट्टु तपक्के पुण्दु नि-
न्दिम्मिनिलप्पुदें पडेदुदेन्दविमुग्धयरल्पनादमुं
गोम्मटदेवनिम्रकिविगेय्दवे निम्नवोलारुं निःकुपर् ॥२०॥
एम्मनिदेक्के नीं विसुटेयेन्देन्नेयुं क्षतिकाङ्क्षियर्कलु
तम्मनलिन्दे बन्दु विगियप्पिदरम्बिनमङ्गदल्लि पु-
सुं मुरिदेन्नि तल्प क्षतिकालियुमेप्पे तपोनियोगदोल्
गोम्मटदेवनिर्दिरवहोन्द्रसुरेन्द्रमुनीन्द्रवन्दितं ॥ २१ ॥
तम्मनेपोदरंनुमरेक्षरुमेय्दे तपक्के नीनुमि-
न्तम्म तरक्के वोदादेनगोसिरियोप्पदु पेडेनुत्तमं-
पने मनमिल्दुमल्लमिगेयुं तगंगोल्लदे दीक्षेगोण्डे नीं
गोम्मटदेव निम्न तरिसन्दलगार्य्यजनक्के गोम्मटं ॥ २२ ॥
निम्मडियेंन्न धात्रियोलगिर्दपुवेंबिदु वेड धात्रि तां
निम्मदुमेन्नदुं तगंवोडल्लदु वेन्दु दृष्टिवोधवी-
र्य्य महिवात्मधर्म्ममभवोक्तियोलेम्ब निजाप्तवोक्तियि
गोम्मटदेव नीं मनद मानकषायमनेय्दे तूल्दिदै ॥ २३ ॥
तम्मतपस्विगल्गं कुतपस्थिति वेल्दवलाङ्गसङ्गतं
तम्म शरीरमागे नेगलन्यतरापरशस्तवृत्तकं ।
कम्मरियोजनन्दमे वलं स्वपराश्रयसौख्यहेतुवं
गोम्मटदेव नीं तपमनान्नुपदेशकनादुदोप्पदे ॥ २४ ॥

नों मनमं निजात्मनोलकम्पितमागिर्द मोहनीयमु-
ल्यम्मयिदोडि योज्जे घनघातिगलं वज्रटक्रबोधसौ-
ख्यं महिमान्वितं नेगल्दे वर्त्तिसि मत्तमघातिघातदिं
गोम्मटदेवमुक्तिपदमं पडेदे निरुपायसौख्यमं ॥ २५ ॥
कम्पिसदप्प काड पोसपुगल्विनर्म्मिसि पादपद्मसं
सम्मदरिन्दे नोडि भवदाहृतियं वचनोप्पु पल्लपा-
ङ्गि मनमोन्दु कीर्त्तिपवरें कुवकुय्यरो शकनन्ददिं
गोम्मटदेव निम्मनरिदर्म्मिसुतिर्प्पवरें कृतार्थरो ॥ २६ ॥
कुसुमास्त्रं कामसाम्राज्यद महिमेयनान्विदोंडं मुभे तन्नो-
रसुधा साम्राज्यमुक्तं भरतकरविमुक्तं रवाङ्गाम्रगुपा-
सु-गम-तन्नृपरोर्व्वडमनेनरिदोडं त्रेदूवं मुक्तिसाम्रा-
ज्यसुखार्थं दीक्षेयं बालुवलित वंदनेम्मन्नरेनेन्दामाधर ॥ २७ ॥
मनदि नुडिदिं तनुवि-
न्दनसु मुभेवरिदधमनरिपेनेम्बी-
मनविन्दमोसंदु गोम्मट-
जिनने स्तुतिगेसदनिन्दु सुजनोर्वोल ॥ २८ ॥
सुजनम्बेम्बार तनगा-
त्रजनुपमगुण पुदनि धैर्य्यं ।
सुजनाभ्यर्चनविर्प्पं
सुजनम्बुनमम्ब पुदिन्दे निर्प्पं ॥ २९ ॥
ई-जिनभक्तेगामनमं
माडिसगामनर्कलं गिनिर्म्बोमद दि-

नहीं आता। यदि बड़ी भी हुई और सौन्दर्य भी हुआ तो उसमें दैवी प्रभाव का अभाव हो सकता है। पर यहाँ इन, तीनों के मिश्रण से गोम्मटेश्वर की छटा अपूर्व हो गई है।' कवि ने एक दैवी घटना का उल्लेख किया है कि एक समय सारे दिन भगवान् की मूर्ति पर आकाश से 'नमेरु' पुष्पों की वर्षा हुई जिसे सभी ने देखा। कभी कोई पक्षी मूर्ति के ऊपर होकर नहीं उड़ता। भगवान् की भुजाओं के अधोभाग से नित्य सुगन्ध और केशर के समान रक्त ज्योति की आभा निकलती रहती है।

बाहुबलि स्वामी ने किस प्रकार राज्य को त्याग कठिन तपस्या स्वीकार की, कैसा घोर तप किया, कर्म शत्रुओं को कैसा दमन किया आदि विषयों का वर्णन बड़ा ही चित्ताकर्षी है।

शेष की कविता बड़े ऊँचे दर्जे की है। यह उच्च कविताम्बोधिपण्डित अपर नाम 'सुजनोत्तंस' की रचना है। इसे उन्होंने मयूरीनि के शिष्य बालचन्द्र मुनि के शिष्य कनकप्रभ देवन के आग्रह से रचा।]

८६ (२३५)

उसी पाषाण के पश्चिम मुख पर

(लगभग शक सं० ११०७)

ಅಸ್ತಿ ಶ್ರೀ ಚೆಲ್ವಗುಣಜನೀಲಂ ಗೋಮ್ಮಟದೇವರ ಪುಣ್ಯಚರಿತ್ರಂ ಪೊಗ ಳ್ವಪ್ರತಿಮೆಯಲ್ಲದೆ ಬಣ್ಣಿಸಲ್ಕೆಡೆಯಿಲ್ಲದಿರ್ದೊಡಂ ಪೇೞ್ವೆನ್ ಪೇೞ್ವೆನ್ ಪೇೞ್ವೆನ್

प २ उयमसेट्टि विदियमसेट्टि प ४ महदेव सेट्टि रट्ठे सेट्टि प २ पारिससेट्टि यमविसेट्टि रायिसेट्टि प ४ मारगूलिसेट्टि हेग्गसल-सेट्टि प २ नम्बिदेवसेट्टि प ५ चेाकिसेट्टि प ५ जिनिसेट्टि प ५ बाहुबलिसेट्टि प ५ पट्टसामि अट्टिसेट्टि मालिसेट्टि प ३ महदेव-सेट्टि गोविसेट्टि प २ जम्मिसेट्टि सूकिसेट्टि प २ मारण्डिसेट्टि महदेवसेट्टि प २ चैरिसेट्टि मारिसेट्टि प २ सेाविसेट्टि दुग्गिसेट्टि प २ हारुवसेट्टि हरदिसेट्टि प २ बम्मण्डि प २ सान्तेय प १ कूडेय्य प २ मारसिंगसेट्टि कूडिसेट्टि यमविसेट्टि प २ चट्टिसेट्टि यसविसेट्टि प १ मल्लिसेट्टि प १ महदेव वरिर प २ यन्मेय मसण प २ कालेय गाडेय प २ गपुडुसामि मदवनिगसेट्टि प २ मालि-सेट्टि पारिमसेट्टि प २ हेगडिसेट्टि बोकिसेट्टि प २ गड्डिसेट्टि आय्यसेट्टि देविसेट्टि (प) २ मालिसेट्टि दम्मिसेट्टि प २ मारि-सेट्टि आय्यमसेट्टि प २ मारज हरियण कालेय प २ मारगो-ण्डनहल्लिय गुम्मज चैरय प १ माकिसेट्टि यूविसेट्टि प १ रुचि-सेट्टि प १ अकवेय महदेवसेट्टि पारिस्ससेट्टि प १ निडिय मल्लिसेट्टि प १...

[मोसले के बड़ व्यवहारि यमवसेट्टि द्वारा प्रतिष्ठापित चतुर्विंशति तीर्थंकरों की अष्टविधपूजन के लिए मोसले के महाजनों ने एक मासिक चन्दा देने का संकल्प किया।]

८७ (२३६)

उसी पाषाण के पूर्व मुख पर

(लगभग शक स० ११०७)

श्रीवसविसेट्टियर तीर्त्थंकर अष्टविधार्च्चनेगं मेासलेय नक्कर वरिस निर्वन्धियागि चवुण्डेय जक्कण्ण किरिय-चवुण्डेय प २ महदेवसेट्टि कम्बिसेट्टि प १ उयमसेट्टि पारिससेट्टि प १ बोकि-सेट्टि बूकिसेट्टि प १ माचिसेट्टि होन्निसेट्टि सुग्गि सेट्टि प १ सूकिसेट्टि प १ रामिसेट्टि हाविसेट्टि (प) १ मच्चिसेट्टि बसविसेट्टि प १ मल्लिसेट्टि गुड्डिसेट्टि चिकमल्लिसेट्टि(प)२ मसणिसेट्टि माचि-सेट्टि अम्माण्डिसेट्टि प २ आलियमारिसेट्टि मुदिसेट्टि प २ करि-किसेट्टि चिकमादि प २ करिय बम्मिसेट्टि मारिसेट्टि प १ मल्लि-सेट्टि अरियिसेट्टि कालिसेट्टि प २ मल्लिगार माचिसेट्टि सेट्टियण प १ तेरणिय चेण्डेय हंगडे बसवण्ण चन्देय रामेय हुल्लेय जक्कण प २ मालगौण्ड सेट्टियण माचय मारेय चिक्कण गोलेय प १ मादि-गौण्ड गौण्डेय माचेय बम्मेय होन्नेय जक्कगौण्ड प १

[तात्पर्य पूर्वोक्तानुसार ही है]

८८ (२३७)

पूर्वोक्त लेख के नीचे

(संभवतः शक सं० १११८)

नल संवत्सरद उत्तरायण-सङ्क्रान्तियन्दु श्रीमन्महापसा-यितं विजयण्णनवरल्लिय चिक्कमदुक्कण्ण श्रीगोम्मटदेवर

नित्यार्च्चनेगे २० वासिग हुविङ्गे श्रीमन्महामण्डलाचार्य्यर चन्द्र-प्रभदेवर कैयलु मारुगोण्डु गङ्गसमुद्रवलु गद्दे स १ वेरलु कं २०० नूरलुं कोण्डु कोट्ट दत्ति मङ्गलमहाश्री ।

[उक्त तिथि को महापत्नावित विजयवंश के दामाद विनय मनुकुल ने गङ्गसमुद्र की कुछ भूमि महामण्डलाचार्य चन्द्रप्रभदेव से खरीदकर गोम्मटदेव की प्रतिदिन की पूजन के हेतु बीस पुष्प मालाओं के लिए अर्पण की ।]

[नोट—लेख में मात्र संवत्सर का उल्लेख है । शक सं० १११८ मात्र था]

८८ (२३८)

पूर्वोक्त लेख के नीचे

(सम्भवतः शक सं० ११२०)

कालयुक्तिसंवत्सरद कार्त्तिक शु १ मा श्रीगोम्मटदेवर पर्व्वनेगे हुविन पडिगे श्रीमन्महामण्डलाचार्य्यर हिरिय नयकीर्त्तिदेवर शिष्यर चन्द्रप्रभदेवर कयलु यगलिवर कबि सेट्टिय सोमेयनु गद्दे पडवलगेय गद्दे को १० गङ्गरगुद्दलिल्लि कोम्म वगलि को १० धान्यवलु गुत्तेय केयमेगे गद्याण श्रीन्दुदीन वेरलु अक्कुन श्रीमे ।

[उक्त तिथि को कविसेट्टि के (पुत्र) सोमेय ने शक भूमि का दान गोम्मटदेव की पुष्प-पूजन के हेतु हिरियनयकीर्ति देव के शिष्य महामण्डलाचार्य चन्द्रप्रभदेव को कर दिया ।]

[नोट—लेख में कालयुक्त संवत्सर का उल्लेख है । शक सं० ११२० कालयुक्त था ।]

भुवने धण्णसे गोवि-
न्दवाडियं वेडिदं जिनार्च्चन लुब्धं ॥१२॥
गोम्मटमंने मुनिसमुदा-
यं मनदोल्मेचि मेचि विचलिसुत्तुं ।
गोम्मटदेवर पूजेग-
ळं मुददि पिट्टनल्ते धोरोदात्तं ॥१३॥

अक्षर ॥ आदियागिर्प्पुदार्हतसमयके मूलसङ्घं कोण्डकु-
न्दान्वयं

धादु वेडदं वर्द्धयिपुदल्लिय देसिगगणद पुस्तकगच्छद ।
योधविभवद कुकुटासनमल्लधारि देवर शिष्यरेनिप पेम्पि-
ङ्गादमेसेदिर्म्मे शुभचन्द्रसिद्धान्तदेवर गुड्डं गङ्गचमूपति
॥ १४ ॥

गङ्गवाडिय वसदिगळेनिसोलवनितुमं वानेय्दे पोसयिसिदं
गङ्गवाडिय गोम्मटदेवगं सुत्ताल्दयमनेय्दे माडिसिदं ।
गङ्गवाडिय तिरुवरं वेड्डोण्डु वीरगङ्गङ्गे निमिर्चि कोट्टं
गङ्गराजनामुन्निन गङ्गर रायङ्गं नूर्म्मडि धन्यनल्ते ॥ १५ ॥

धर्म्मस्यैव बलाल्लोको जयत्यखिलविद्विषः ।
आरोपयतु तत्रैव सर्व्वोऽपि गुणमुत्तम ॥१६॥

श्रीमज्जैनवचोम्बुधिवर्द्धनविधु-साहित्यविद्यानिधि-
रसर्प्पर्दर्पकहस्तिमल्लकलुठत्प्रोत्कण्ठकण्ठीरवः ।
स श्रीमान् गुणचन्द्रदेवतनयस्सौजन्यजन्यावनि-
रत्थेयान् श्रीनयकीर्त्तिदेवमुनिपस्सिद्धान्तचक्रेश्वरः ॥१७॥

कवदिग्जैत्रविदं वरुत्ते नरसिंहचोणिपं कण्डु स-
न्मतिर्दिं गोम्मटपार्श्वनाथजिनरं मत्तोचतुर्व्विंशति-
प्रतिमागेहमनिन्दितर्कें विनुतं प्रोत्साहदिं विट्टन-
प्रतिमल्लं सवणेरवेकफगेरेयुमं कल्पान्तरं सल्विनं ॥१८॥

नरसिंहक्षितिमाद्रिवज्रदुरुकलशाहदकहुल्लकरजिह्विकेया-
नतधारागङ्गाम्बुनि नयकीर्त्ति मुनीशपादसरसीमध्ये ॥१९॥

ललनालीलेगे मुन्नवेन्तु कुसुमास्त्रं पुट्टिदों विष्णुगं
ललितश्रीवधुविभ्रवन्तें नरसिंहक्षोणिपालन्नवे-
चलदेवीवधुगं परार्थचरितं पुण्याधिकं पुट्टिदों
पलनयद्वैरिकुलान्तकं जयभुजं बल्लालभूपालकं ॥२०॥

चिरकालं रिपुगल्गसाध्यमेनिसिर्द्दं चक्रियं मुत्ति
दुर्द्धरतेजोनिधि धूलिगोटेयनें कोण्डाकामरेयावनी-
श्वरनं सन्दोडेयक्षितीश्वरनाभण्डारमं स्त्रीयरं
तुरगप्रायमुमं समन्दु पिडिदं बल्लालभूपालकं ॥२१॥

स्वस्ति श्रीमन्नयकिर्त्ति सिद्धान्तचक्रवर्त्तिगल गुरुगं श्रीमन्म-
हाप्रधानं सर्व्वाधिकारि हिरियभण्डारि मुल्लयप्पलु श्रीमत्प्रताप
चक्रवर्त्ति वीरबल्लालदेवर कय्यलु गोम्मटदेवर पार्श्वदेवर
चतुर्व्विंशति तीर्थंकरर अष्टविधार्च्चनगे रिषियराहारदानकं
मंडिकोण्डु सवणेरवेकफगेरेय बिट्ट दत्ति ॥

परमागमवारिधिहिम-
किरणं राद्धान्तचक्रिनयकीर्त्तियमी-

श्वरशिष्यनमलनिजचित्-
परिणतनध्यात्मिबालचन्द्रमुनीन्द्रं ॥ २२ ॥
कन्तुकुलान्तकालयमनूर्ज्जितशासनमं निधिधिका-
सन्तवियं सटाक सरसीकुलमं नयकीर्त्ति देवसे-
द्दान्तिकरोल्परोलविनयङ्गनीतेरदिन्द माहवरा-
रिन्दिरे नोन्तरारेनिसिदं नयकीर्त्तिनिलाविभागदोल् ॥२३॥

[यह लेख आदि से आठवें पद्य तक लेख सं० ११ (७१) के पूर्वभाग के समान ही है। केवल इसमें तीसरा पद्य अधिक है। इस लेख में भी विष्णु नरेश के महादण्डनायक गङ्गराज के पराक्रम का अच्छा वर्णन है। उन्होंने तलकाडु पर चेरा डालनेवाले चोल सामन्त अदियम नरसिंह वर्मा, दामोदर व विष्णुवर्धन को भारी पराजय दी। इस पर विष्णुवर्धन ने प्रसन्न होकर उनसे पारितोषक मांगने को कहा। उन्होंने गोम्मटेश्वर की पूजन निमित्त 'गोविन्द वाडि' का दान मांगा। इसे नरेश ने सहर्ष स्वीकार किया।

गङ्गराज कुन्दकुन्दान्वय के कुक्कुटासन मलधारिदेव के शिष्य शुभचन्द्र सिद्धान्तदेव के शिष्य थे। उनके शिष्यों को हराकर गङ्गवाडि की रक्षा करने, गङ्गवाडि के गोम्मटेश्वर का परकोटा बनवाने व अनेक जैन बस्तियों का जीर्णोद्धार कराने का लेख सं० ११ के सदृश यहां भी उल्लेख है और यहां भी वे चामुण्डराय से सौगुणे अधिक धन्य कहे गये हैं।

पद्य १७ और १८ में गुणचन्द्र देव के गुरु नयकीर्ति देव का परिचय करते कहा गया है कि नरसिंह नरेश ने दिग्विजय से लौटते हुए गोम्मटेश्वर के दर्शन किये और सदा के लिए पूजनार्थ तीन ग्रामों का दान दिया। इसके पश्चात् नरसिंह नरेश और पृथ्वी देवी से उत्पन्न होनेवाले बल्लाल नृप का कामदेव और कोदेव राजाओं को जीतने, उच्चङ्गि

का किला विजय करने तथा अपने प्रधान कोषाध्यक्ष, नयकीर्ति' देव के शिष्य 'हुलय' द्वारा उक्त तीनों ग्रामों के दान को पूरा करने का उल्लेख है।

अन्त में नयकीर्ति देव के शिष्य अध्यात्मि बालचन्द्र के अपने गुरु के स्मारक अनेक शासन रचने व तालाब आदि निर्माण करवाने का उल्लेख है।]

[नोट—पद्य १७ से ऐसा विदित होता है कि उसके लिखे जाने के समय नयकीर्ति जीवित थे। किन्तु अन्तिम पद्य से स्पष्ट होता है कि उनके लिखे जाने के समय नयकीर्ति का स्वर्गवास हो चुका था। सम्भव है कि लेख का पूर्व भाग (पद्य २१ तक) नयकीर्ति के जीवन-काल में ही लिखा गया हो और शेष भाग पीछे से जोड़ा गया हो।]

८१ (२४१)

उपर्युक्त लेख के नीचे

(लगभग शक सं० ११००)

स्वस्ति समस्तगुणसम्पन्नरप्प श्रीबेलुगुलतीर्थद समस्त माणिक्य नखरङ्गलु श्रीगोम्मटदेवर पारिश्वदेवरिगे वर्षनिवधि-यागि हुविनपडिगे जातिहवलके तोलेगे वा १ करिदक्के बीस १ यिद आचन्द्रार्कतारं बरं सलिसुवरु ॥ मङ्गल महा श्री श्री ॥

[बेल्गुळ के समस्त जौहरियों ने गोम्मट देव और पार्श्वदेव की पुष्प-पूजन के लिए अपने माणिक्यों पर उक्त वार्षिक चन्दा देने का संकल्प किया।]

८२ (२४२)

उपर्युक्त लेख के नीचे

(लगभग शक सं० ११००)

स्वस्ति श्री वेलुगुलतीर्त्तद गुम्मिसेट्टिय वसेय चिक्कैवेय कैवव्य येकाव्व मरिसेट्टिय मग लक्ष्मण लोकय्यसहितिय मगलु सोमीदे मंडमेलद समस्तनमस्कृतु गोम्मटदेवर दुविन पडगं गङ्गसमुद्र दिन्दे गद्दे स १ आगोम्मटपुरद भूमियोळगे सोन्दुहोन्न येरडे गुलयकैय्य समुदायद्वन्न कय्यलु मारुगोण्डु मा (म) लेगारगे आचन्द्रार्कतारं वरं सलुवन्तागि वरदुकोट्ट शासन ॥

[वे गुल के गुम्मिसेट्टि आदि समस्त व्यापारियों ने गङ्गसमुद्र और गोम्मटपुर की दो भूमि खरीद कर उसे गोम्मटदेव की पूजा के निमित्त उस देव के लिये एक माली को सदा के लिए प्रदान कर दी।]

८३ (२४३)

उसी पाषाण की दूसरी बाजू पर

(सम्भवतः शक सं० ११९०)

स्वस्ति श्रीभावसंवत्सरद भाद्रपद शुक्रवारदन्दु श्री गोम्मटदेवरिंगेयु तीर्थंकरिंगेयु दुविन पडिगं चन्द्रसेट्टिय मग चन्द्रकीर्त्ति भट्टारकदेवर गुड्ड कल्लय्यनु अक्षयभण्डारवागि कोट्ट ग १ प २½ यि-मरियादेयलु कुन्ददे ६ वासिग-दुब्बनि-कुवक मङ्गलमहा श्री श्री ॥

[चेन्निसेट्टि के पुत्र व चन्द्रकीर्ति भट्टारक देव के शिष्य कहुण ने कम से कम ६ पुष्प मालाएँ नित्य चढ़ाये जाने के हेतु उक्त तिथि को उक्त दान दिया।]

[नोट—लेख में भाव संवत्सर का उल्लेख है शक सं० १११७ भाव संवत्सर था।]

८४ (२४४)

उपर्युक्त लेख के नीचे

(सम्भवतः शक सं० ११८७)

स्वस्ति श्रीभावसंवत्सरद पुष्य सुद्ध ५ मि (बृ) श्रीगोम्मट-देवर नित्याभिषेकके श्रीप्रभाचन्द्रभट्टारकदेवर गुड्ड बारकनूर मेधाविसेट्टिगे परोक्षविनेयक्के अक्षयभण्डारक्के कोट्ट गद्याण नाल्कु यद्दोन्निङ्गे अमृतपडिगे आचन्द्रार्क्कं नित्यपाडि ३ य मान हाल नडसुवदु यि-धर्म्मव माणिक-नकरङ्गलु एलयिगलु आरैवर मङ्गलमहा श्री श्री ॥

[प्रभाचन्द्र भट्टारक देव के शिष्य बारकनूर के मेधावि सेट्टि की स्मृति में गोम्मट देव के अभिषेकार्थ ३ 'मान' दुग्ध प्रति दिवस देने के लिए उक्त तिथि को ४ 'गद्याण' का दान दिया गया।]

[नोट—लेख में भाव संवत्सर का उल्लेख होने से समय उपर्युक्त।]

८५ (२४५)

उपर्युक्त लेख के नीचे

(लगभग शक सं० ११८७)

हलसूर सेट्टियर मग कंतिसेट्टियर गोम्मट-देवरिगे

नित्यपडि मूडुवान दाडनु अभिषेकक्के कोट्ट ग २ एक होन्न पडिगे दाड नडयिसुवरु माडिकलवर नडेयिसुवरु आचन्द्रार्क-वुल्लनक मङ्गलमहा श्री ॥

[गोम्मट देव के नित्याभिषेक के लिये मोनि सेट्टि के पुत्र हडसूर-निवासी कोति सेट्टि ने १ 'मान' दूध के लिए २ गद्याण का दान दिया जिसके ब्याज से दूध लिया जावे ।]

८६ (२४६)

उसी पाषाण की दायीं बाजू पर

(शक सं० ११९६)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥

श्रीमत्प्रतापचक्रवर्त्ति होय्सल श्रीवीरनारसिंहदेवरसरु श्रीमद्राजधानिद्वारसमुद्रदलु सुखसङ्कथा विनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरे शकवरुष ११९६ नेय श्रीमुखसंवत्सरद श्रावण सु १५ आदियारदलु श्रीमन्महामण्डलाचार्य्यर नयकीर्तिदेवर शिष्यर चन्द्रप्रभदेवर कय्यलु होन्नचगेरेय मादय्यन मग सन्नु-देवनु सट्टिसेट्टियर मग बोम्मण्ण अगप्पसेट्टियर मक्कलु दोरय चवुडय्यनवरु श्रीगोम्मटदेवर अमृतपडिगे मत्तियकेरेय नट्टकल्ल सीमामर्य्यादेयोलगाद गद्दे मुप्पालयद चतुर्व्विंशतितीर्थंकर अमृतपडिगे कोट्ट मोदलेरिय गद्दे मत्तगे बेन्दु-सहित सर्व्वबाधापरिहारवागि धारापूर्व्वकं माडिकोण्डु आचन्द्रार्कतारं बरे सल्वन्तागि कोट्ट दत्ति । मङ्गलमहा श्री श्री श्री ॥

[होय्सल नरेश श्री वीर नारसिंह के समय में उक्त तिथि को होय-चगेरे के मादय्य के पुत्र सम्भुदेव ने महामण्डलाचार्य नयकीर्ति देव के शिष्य चन्द्रप्रभदेव से मालिव केरे की उक्त भूमि खरीदकर उसे गोम्मट देव और चतुर्विंशति तीर्थंकर के पुण्य-पूजन के लिये प्रदान कर दी।]

८७ (२४७)

उपर्युक्त लेख के नीचे

(सम्भवतः शक सं० ११६७)

स्वस्ति श्रीभावसंवत्सरद भाद्रपद शुद्ध ५ शादिवार दलु श्रीगोम्मटदेवर नित्याभिषेकक्के श्रुतपञ्चमिगे श्रीप्रभाचन्द्र-भट्टारकदेवरगुरु गेरसप्पेय गोविन्दसेट्टिय मग शारिदेवन अक्षयभण्डारवागि हरिसिद गद्याण नाल्कु विन्नविल्ल होन्नु हाग यिप्पि आचन्द्रार्कतारं बरे सल्वन्तागि नडसुवन। मङ्गलमहा श्री श्री श्री ॥

[उक्त तिथि को गेरसप्पे के गोविन्द सेट्टि के पुत्र व प्रभाचन्द्र भट्टारक देव के शिष्य शारिदेव ने गोम्मटदेव के नित्याभिषेक के लिए ४ गद्याण का दान किया। इस दान के मूल 'लेख' पर मूल 'दान' सम्बन्धी व्यवस्था की दृष्टि से मूल 'पत्र' पृष्ठ अंकित लिख लिया जाना चाहिए।]

८८ (२२३)

अष्टदिक्पालक मण्डप में एक स्तम्भ पर

(शक सं० १७४८)

(पूर्व मुख)

श्री स्वस्ति श्रीविजयाभ्युदय शालिवाहन शक वरूष १७४८ ने सन्द वर्त्तमानकके मत्तुव व्ययनामसवत्सरद फाल्गुण ब५ भानुवारदल्लु काश्यपगोत्र अहनियसूत्र वृषभप्रवरे प्रथमानुयोगशास्त्राया श्रीचायुण्डराज वरूस्थराद चिलिकेरे शानन्तराजे अरसिनवर प्रपौत्र तोटदेवराजे अरसिनवर पौत्र सत्यमङ्गलद चतुर्वे-अरसिनवर पुत्र श्रीमन्महिसूरपुरवराधीश्वर श्रीकृष्णराजवडेयरवर सम्मुखदलि भारिगाडु कन्दाचार सवारकचेरि—

(उत्तर मुख)

चिलारके भवि देवराजे अरसिनवरु श्रीगोमटेश्वरस्वामियवर मस्तकाभिषेकपूजोत्सवदिवस स्वर्गस्थरादके श्रीमठदिन्द वर्षप्रतिवर्षदल्लु श्रीगोमटेश्वरस्वामिय वरिगे पादपूजे मुन्नाद सेवार्त्थ नडेयुवहागे चिवर पुत्रराद पुट्टदेवराजे अरसिनवरु १०० वरह हाकिरुव पुट्टुवट्टिन संवेगे भट्ट भूपाद्धर्त्ता जिनशासने । श्री ।

[काश्यप गोत्र, अहनिय सूत्र, वृषभ प्रवर और प्रथमानुयोग शास्त्रों में चावुण्डराज के वंशज, चिलिकेरे शानन्तराजे अरसु के प्रपौत्र, तोटदेवराजे अरसु के पौत्र व सत्यमङ्गल के चतुर्थ अरसु के पुत्र, मैसूर नरेश श्री कृष्णराज वडेयर के प्रधान अङ्गरक्षक (भवि) देवराजे अरसु की मृत्यु गोम्मटेश्वर के मस्तकाभिषेक के दिवस हुई । अतएव उनके

पुत्र पुट्ट देवराजे अरसु ने गोम्मट स्वामी की वार्षिक पाद पूजा के लिए उक्त तिथि को १०० 'वरह' का दान किया।]

टैंट (२२४)

उसी मण्डप में एक द्वितीय स्तम्भ के पश्चिम मुख पर

(शक सं० १४५६).

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं॥ १॥

सस्वस्थं सविरद १४५६ तनेय विलम्बि संवत्सरद माघ शुद्ध ५ बलु गेरसोप्पेय चतुर्दिसदिंद दानविनोदमदन मग कन्दर्पनु तन्न सेंत्र अहहासिरलागि चतुर्दिसदिंद अहनु विविधि कोट्टु एकर्ं बेन्दु तण्डरर्ं आहारदान त्यागद मदन मुरिद हरिन तोंड बेन्दु पडि अक्कि अक्षतेपुञ्ज इडुव आचन्द्रार्कस्थायियागि नाडु नडसि बरुवनु मङ्गलम श्री श्री श्री॥

[गेरसोप्पे के चतुर्दि सेंटि से घेरी भूमि उसके सुख का दी है इसलिए ही अर्थात् दानशील का पुत्र कविसत्य सदैव विनयान्वित दान का पालन करेगा—एक गेय (तथा) दो आहार, त्यागद मद के मारने के बाद (की रेखा-रेखा) व अक्षत पुंज के लिए एक 'वरह' उपहार।]

१०० (२२५)

उसी स्तम्भ के दक्षिण मुख पर

(शक सं० १४५६)

तत्संवत्सरदलु गेरसोप्पेय चौडिसेट्टिरिगे दोडदेवप्पगल मग चिक्कणनु कोट्ट धर्म्मसाधन नमगं अनुमत्य वरक्कागि नीवु नमगे परिहरिसि कोट्ट दक्के १ तण्डक्के आहार दानवनु आचन्द्रार्कस्थायि यागि नडसि बहेवु मङ्गलमहा श्री श्री श्री श्री ॥

[दोड देवप्प के पुत्र चिक्क ने यह 'धर्म साधन' चौडि सेट्टि को दिया कि 'आपने हमारे कष्ट का परिहार किया है इसके उपलक्ष्य में मैं सदैव एक संघ (तण्ड) को आहार दूँगा।]

१०१ (२२६)

नं० १०० के नीचे

(शक सं० १४५६)

तत्संवत्सरदलु गेरसोप्पेय चायुडिसेट्टिरिगे कविगल मग बोम्मणनु कोट्ट धर्मसाधन नमधि अनुमत्य वरक्कागि नीवु नमगे परिहरिसि कोट्ट दक्के वर्ष १ के आरतिङ्गलु पर्य्यन्त १ तण्डक्के आहारदानवनु आचन्द्रार्कस्थायियागि नडसि बहेवु मङ्गलमहा श्री श्री श्री श्री ॥

['कवि, के पुत्र बोम्मण ने चायुडि सेट्टि को यह 'धर्म-साधन' दिया [illegible] 'आपने हमारी आपद् का परिहार किया है इसके उपलक्ष्य में मैं सदैव वर्ष में छह मास एक संघ (तण्ड) को आहार दूँगा'।]

१०२ (२२७)
उसी स्तम्भ के पूर्व मुख पर
(शक सं० १४५९)

इ मोदल...त्सवत्सरदलु गेरसोप्पेय चवुडिसट्टिगिं हुविन चेन्नय्यनु कोट धर्मसाधनद सम्बन्ध नन्न चेत्रवु अद हाकिरलागि नीवु आचेत्रवनु विडिसि कों..... ॥

[चेनय्य माली (हुविन) ने चवुडि सेट्टि को यह 'धर्म-साधन' दिया [redacted] 'आपने मेरी जमीन रहन से मुक्त की है इसलिए मैं'''।]

१०३ (२२८)
उसी मण्डप में तृतीय स्तम्भ के पूर्व मुख पर
(शक सं० १४३२)

स्वस्तिश्रीमत्१४३२ नेय शुक्लसंवत्सरद वैशाख ५० १०लु मण्डलेश्वरकुलो द्भव चङ्गाल्वमहादेवमहीपालन प्रधानसिरोमणि केशव-नाथ-वर-पुत्र कुल-पवित्रं जिनधर्म्ममहायप्रतिपालकरद सोम्यणमन्त्रिमहोदयरद सम्यक्त्वचूडामणि चेन्नयोम्मरसन नञ्जरायपट्टणद श्रावकभव्यजनङ्गल गोष्ठिमहाय श्री गुम्मटस्वामिय बलिवाडव जीर्णोद्धारव माडिसिदरु श्री ॥

[मण्डलेश्वर कुलोत्पन्न चङ्गाल्व महादेव महीपाल के प्रधान मन्त्री, केशवनाथ के पुत्र, सोम्पण मन्त्री के भ्राता सम्यक्त्व व नञ्जराय पट्टण के श्रावकों ने गोम्मट स्वामी के 'बलिवाड' (? मठ की भक्षिठ) का जीर्णोद्धार कराया।]

१०४ (१८५)

गोम्मटेश्वर के दक्षिण की ओर कूष्माण्डिनी के पादपीठ पर

(लगभग शक सं० ११००)

श्रीनयकीर्त्ति सिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगल शिष्यरु श्रीबाल-चन्द्रदेवर गुरु येर्तिसेट्टिय मग वम्मिसेट्टि माडिसिद यक्षदेवते॥

[नयकीर्त्ति सिद्धान्त चक्रवर्त्ति के शिष्य बालचन्द्र देव के शिष्य वम्मि सेट्टि, कंटि सेट्टि के पुत्र, ने यह यक्ष देवता प्रतिष्ठित कराया ।]

१०५ (२५४)

सिद्धरबस्ती में उत्तर की ओर एक स्तम्भपर

(शक सं० १३२०)

(पश्चिम मुख)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥
श्रीनाभेयोऽजितःशम्भव-नमिविमलाःसुव्रतानन्तधर्म्मा-
ह्यन्द्राङ्कशान्तिकुन्थु ससुमतिसुविधिश्शीतलो वासुपूज्यः ।
मल्लिश्रेयांसुपार्श्वौ जलजरुचिरनानन्दनः पार्श्वनेमी
श्रीवीरश्चेति देवा भुवि दधतु चतुर्व्विंशतिर्म्मङ्गलानि ॥ २ ॥
वीरो विशिष्टां विनताय रातीमित्रैलोक्यैरभिवर्ण्यते यः
निरस्तकर्म्मा निखिलार्त्थवेदी
पायादसौ पश्चिमतीर्थनाथः ॥३॥

तस्याभवन् सदसि वीरजिनस्य सिद्ध-
सम्वर्द्धयो गणधराः किल रुद्रसङ्ख्याः ।
ये धारयन्ति शुभदर्शनबोधवृत्तै
मिथ्यात्रयादपि गणान् विनिवर्त्य विश्वान् ॥४॥

इन्द्राग्नि भूतीमपि वायुभूतिरकम्पनो मौर्य्य सुध-
र्म्मपुत्राः ।
मैत्रेयमौण्ड्योपुनरन्धवेलः प्रभासकश्चेति तदीय-
संज्ञाः ॥५॥

पूर्व्वज्ञानिह वादिनोऽवधिजुषो धीपर्य्ययज्ञानिनः
सेवे वैक्रियकांश्च शिक्षकयतीन्कैवल्यभाजोऽप्यमून् ।
इत्यन्यम्युनिधित्रयोत्तरनिशानाथास्तिकायैश्शतै
रुद्रोनैकशताचलैरपि मितान्सप्तैव नित्यं गणान् ॥६॥

सिद्धि गते वीरजिनेऽनुबद्ध-केवल्यभिख्यास्त्रयएव जाताः ।
श्रीगौतमस्तो च सुधर्म्मजम्बू यैः केवली वै तदिहानु-
बद्धं ॥७॥

जानन्ति विष्णुरपराजितनन्दिमित्रौ
गोवर्द्धनेन गुरुणा सह भद्रबाहुः ।
ये पञ्चकेवलिवदप्यखिलं श्रुतेन
शुद्धा ततोऽस्तु मम धीः श्रुतकेवलिभ्यः ॥८॥

विद्यानुवादपठने स्वयमागताभि-
र्विद्याभिरात्मचरितादमलादभिन्नाः ।

पूर्व्वोक्ति ये दशपुरूष्यपि धारयन्ति
शास्त्रोन्यभिन्नदशपूर्व्वधरान् समस्तान् ॥९॥
वंशश्चियः प्रोष्ठिल गङ्गदेवौ
जयस्सुधर्म्मा विजयो विद्याखः।
श्रीयुद्धिलोऽन्यौ धृतिषेणनागौ
सिद्धार्थकरचेलभिधानभाजः ॥१०॥
नक्षत्रपाण्डु जयपालकंसा-
चार्य्यावपि श्रीद्रुमषेणकरच।
एकादशाङ्गीधरसेन सुद्धा ये चान्य संज्ञा हृदि मे वसन्तु ॥११॥
आचार-संज्ञाङ्ग-श्रुतोऽभवंस्तं
लोहस्सुभद्रो जयपूर्व्वभद्रः।
यशो यशोबाहुरभी हि मूल-
स्तम्भा जिनेन्द्रागमरत्नहर्म्ये ॥ १२ ॥
श्रीमान्कुम्भो विनीतो
हलधरवसुदेवाचला मेरुधीरः
सर्व्वज्ञ सर्व्वगुप्तो
महिधर-धनपालोमहावीरवीरौ।
इत्यादानेक सुरिभ्यश्च सुपदसुपेतेषु दीप्यत्तपःशा-
स्त्राधारेषु पुण्यादजनि मजगतां
कोण्डकुन्दो यतीन्द्रः ॥ १३ ॥
रजोभिरस्पृष्टतमत्वमन्तर्बाह्येऽपि संव्यञ्जयितुं यतीशः।

रजः पदं भूमितलं विहाय चतुरङ्गुलं सः ॥१३॥
आमानुमास्वातिरयं यतीश-
स्तत्त्वार्थसूत्रं प्रकटीचकार।
तन्मुक्तिमार्गावरणोपमानां भवेत्समन्तं भविनां [illegible]॥१४॥
तस्मै शिलाऽतनि गृद्धपिच्छ-द्वितीयमस्य प्रवाद-
पिच्छः।
यत्पक्षिरत्नानि मलीमसानि जोषं
पुनन्त्यञ्जनमण्डनानि ॥ १५ ॥
समन्तभद्रस्य शिवाय सोपज्ञादोषरत्नाकुलसुक्तिजालः।
यस्य प्रभावात्प्रकटीबभूव तत्त्वप्रदीपः दुरवादुकानां
[illegible] ॥ १७ ॥

स्याकार-मुद्रित-समस्त-पदार्थ-पूर्णं
त्रैलोक्य-हर्म्यमखिलं न हि भ्रमन्ति।
दुर्वादुकोक्तिमरुतां पिहितान्तराले
सामन्तभद्र-वचन-स्फुट-रत्नदीपः ॥ १८ ॥

तस्यैव शिष्यशिवकोटिनरीश्वरोऽसौ रत्नत्रयं वनदेहयष्टिः।
संसार-वाराकर-पोतमेतत्तत्त्वार्थसूत्रं तदलञ्चकार ॥ १९ ॥
प्रागभ्यधायि गुरुणा किल देवनन्दी
बुद्ध्या पुनर्विपुलया स जिनेन्द्रबुद्धिः।
श्रीपूज्यपादइति चैष बुधैः प्रचख्ये
यत्पूजितः पदयुगे वनदेवताभिः ॥ २० ॥
भट्टाकलङ्कोऽकृत सौगतादिदुर्वाक्यपङ्कैस्सकलङ्कभूतं।

जगत्स्वनामेव विधातुमुच्चैः सार्थं समन्ताद्कलङ्कमेव ॥२१॥
जीयाज्जगत्यां जिनसेनमूरिर्यस्योपदेशोज्ज्वलदर्पणेन ।
व्यक्तीकृतं सर्व्वमिदं विनेयाः पुण्यं पुराणं पुरुषा
विदन्ति ॥ २२ ॥

विनय-भरण-पात्रं भव्यलोकैकमित्र
विबुधनुतचरित्र षट्खण्डेन्द्रामपुत्रं ।
विहितभुवनभद्रं वीतमोहोरुनिद्रं
विनमत गुणभद्रं तीर्णविद्यामसुद्रं ॥ २३ ॥

मद्व्यञ्जनस्वरनभस्तनु लक्षणाङ्ग-
च्छिन्नाङ्ग-भौम-शकुनाङ्ग-निमित्तकैर्यः ।
कालत्रयेऽपि सुखदुःखमयाजयार्थं
तत्साधिवस्तुनरवैति समस्तमेव ॥२४॥

यः पुष्पदन्तेन च भूतबल्याख्येनापि शिष्य-द्वितयेन रेजे ।
कल्पप्रदानाय जगज्जनानां प्राप्तोऽङ्कुराभ्यामिवकल्पभूजः॥२५॥
अर्हद्बलि स्सद्गुरुर्विधं म श्रीकोण्डकुन्दान्वयमूलसङ्घं ।
कालस्वभावादिह जायमानद्वेषेतरास्वीकरणाय चक्रे ॥२६॥
[illegible] विपरीत-रूपे खिले विसङ्घे वितनोतु भेदं ।
[illegible] यस्तं

रजः पदं भूमितलं विहाय चचार मन्ये चतुरङ्गुलं सः ॥१४॥
श्रीमानुमास्वातिरयं यतीश-
स्तत्त्वार्थसूत्रं प्रकटीचकार।
यन्मुक्तिमार्गाचरणोद्यतानां पाथेयमग्र्यं भवति प्रजानां॥१५॥
तस्यैव शिष्योऽजनि गृद्धपिञ्छ-द्वितीयसंज्ञस्य बलाक-
पिञ्छः।
यत्सूक्तिरत्नानि भवन्ति लोके
मुक्त्यङ्गनामोहनमण्डनानि ॥ १६ ॥
समन्तभद्रस्य चिराय जीयाद्वादीभवज्राङ्कुशसूक्तिजालः।
यस्य प्रभावात्सकलावनीयं वन्ध्यास दुर्वादुकथा
चैवापि ॥ १७ ॥

स्याकार-मुद्रित-समस्त-पदार्थ-पूर्णं
त्रैलोक्य-हर्म्यमखिलं स खलु द्योतयति।
दुर्वादुकोक्तितमसा पिहितान्तरालं
सामन्तभद्र-वचन-स्फुट-रत्नदीपः ॥ १८ ॥

तस्यैव शिष्यश्चिरतपोकोटिपरिक्षपो लब्धात्मसंवेदयदृष्टिः।
संसार-वाराकर-पोतमेतत्तत्त्वार्थसूत्रं तदलञ्चकार ॥ १९ ॥
प्रागभ्यधायि गुरुणा किल देवनन्दी
बुद्ध्या पुनर्विपुलया ॥ जिनेन्द्रबुद्धिः।
श्रीपूज्यपादाति चैव बुधैः प्रचख्ये
यत्पूजितं पदयुगं वनदेवताभिः ॥ २० ॥
भट्टाकलङ्कोऽकृत सौगतादिदुर्वाक्यदङ्कैस्सकलङ्कभूतं।

जगत्स्वनामेव विधातुमुच्चैः सार्थं समन्ताद्धवलद्धुमेव ॥२१॥

जीयाज्जगत्यां जिनसेनसूरिर्व्यस्यापदेशोज्ज्वलदर्पणेन ।
व्यक्तीकृतं सर्व्वमिदं विनेयाः पुण्यं पुराणं पुरुषा
विदन्ति ॥ २२ ॥

विनय-भरक-पात्रं भव्यलोकैकमित्र
विबुधनुतचरित्रं तद्गणेन्द्राग्रपुत्रं ।
विहितभुवनभद्रं चाप्तमोहोग्रनिद्र
विनमत गुणभद्रं सोर्ण्णविद्यासमुद्रं ॥ २३ ॥

सद्व्यञ्जनस्वरनभस्तनु लक्षणाङ्क-
च्छिन्नाङ्ग-भौम-शकुनाङ्ग-निमित्तकैर्यः ।
कालत्रयेऽपि सुखदुःखजयाजयार्थं
तत्साधितत्पुनर्वदति समस्तमेव ॥२४॥

यः पुष्पदन्तेन च भूतयस्याख्येनापि शिष्य-द्वितयेन रेजे ।
फलप्रदानाय जगज्जनानां प्राप्तोऽङ्कुराभ्यामिव कल्पभूजः॥२५॥
अर्हद्बलि स्मद्वचनुर्विधं स श्रीकोण्डकुन्दान्वयमूलसङ्घं ।
कालस्वभावादिह जायमानद्वेषैरशाल्यीकरणाय चक्रे ॥२६॥

सिताम्बरादौ विपरीत-रूपे खिन्ने विसङ्घे विनयोद्यु भेदैः
यत्सेननन्दि-प्रविदेयसिंहसङ्घे यतं मनुते
कुटुम्बः ॥२७॥

सङ्घे पुनः तत्र गणाग्रगण्ये काले-त्रयेण
लोकाय चक्षुरिव भिदाजुषिनन्दिसङ्घ

देशीगणे धृतगुणेऽन्विवपुस्तकाच्छ-
गच्छेऽकुलेश्वरबलिर्ज्जयति प्रभूता ॥२८॥
तत्रासन्नाग-देवोदय-रवि जिन - मेघ - प्रभा-बाल-
चन्द्रा
देवश्रो-भानुचन्द्रश्रुतनप गुणधर्म्मादयः कीर्त्तिदेवाः।
देव-श्रीचन्द्र-धर्म्मेन्द्र-कुल-गुण-तपो भूषणास्तर-
योऽन्ये
विद्या दामेन्द्रपद्मामरवसु-गुण-माणिक्यनन्द्या
ह्वयाश्च ॥२९॥

(उत्तर मुख)

विहितदुरितभङ्गा भिन्नवादीभशृङ्गा
विनत-विविध-सङ्गाः विश्वविख्याङ्गभृङ्गाः ।
विजितमगदनङ्गाऽशेषदुरोगसङ्गा
विशदचरणतुङ्गा विश्रुताऽलेऽस्तसङ्गाः ॥३०॥
श्रीयाञ्छ्रीनेमिचन्द्रः कुवलयवलयकुन्द कुदकोदीदुगोदो
निर्योगन्दृष्टिवाभाविरचन कुशलत्वभाद्रयशापः ।
चन्द्रार्यैव प्रदृशामृत-वचन-रचा नीयते यस्य शान्ति
धर्म्मव्याजस्य नेतुस्त्वमभिमतपदं यश्च नेमी रथस्य ॥३१॥
श्रीमाघनन्दीविबुधो भव्यानन्दत्वमेवाप्तनुतात्मनाम ।
समुद्रमत्यवनिर्जरत्व न येन पाराम्बभिनन्दितानि ॥३२॥
मुद्रे वर्षे धृत-वादिसिंहे गुरुप्रवाहोऽप्रतिबंधगीत्रे ।

अथादितोऽभून्निजपादसेवाप्रमोदितोकोऽभयचन्द्रदेवः
॥ ३३ ॥

जयति जिततमोऽरिस्त्यक्तदोषानुषङ्गः
पदमखिलकलानांपात्र-मम्भोरुहार्याः ।
अनुगतजयपक्षश्चात्तमित्रानुकूल्य-
स्सततमभयचन्द्रस्सत्सभारत्नदीपः ॥३४॥

तदीयतनुजश्श्रुतमुनिगणिपदेशतपोभरनियन्त्रिततनुस्तु-
षजिनेशः ।
तवोऽजनि जिनेन्द्रवचनाम्बुधिपारगतबलयशा भृत-
समस्तसुधाशः ॥३५॥

भव-विपिनकृशानुर्भव्यपद्मे जभानु-
स्स वितततमसोनु स्सम्पदे कामधेनुः ।
भुविदुरितवनोऽरिप्रोत्थसन्तापवारि-
श्रुतमुनिवरसूरिश्शुद्धशीलोऽस्तनारिः ॥३६॥

चण्डोद्दण्डत्रिदण्डं परम-सुख-पदं पापबीजं परागो-
दारागारोरुकार-त्रिविधमधिकृता गौरवं गारवं च ॥
तुल्यंभल्लोन-शल्य-त्रयमतुलवपुश्शर्म्मसर्म्मच्छिदं हो-
भाषोन्मेषि त्रिदोषं श्रुतमुनिमुनिपो निर्म्मुमोचैक पद्म ॥३७॥

प्रक्षिप्यभगणेद्रुमहमा भुवितदीये प्रवर्द्धयति पूर्णेकलइन्दु-
रिवयस्म ।
अनादिनिधनादि-परमागम-पयोधिमभूदभिनवश्रुतमुनि-
र्गणिपदे सः ॥३८॥

मार्गे दुर्गे निसर्गात्प्रतिभटकदुजल्पेन वादेन वापि
श्रव्ये काव्येऽतिनव्ये मृदुमधुरपदैः शर्म्मदैर्ब्रह्मदेशच ।
मन्त्रे तन्त्रेऽपि यन्त्रे नुतसकलकलायां च शब्दार्णवे वा
को वान्यः कोविदोऽस्ति श्रुतमुनिमुनिवद्विश्व-विद्या-
विनोदः ॥३९॥

शब्दे श्री पूज्यपादः सकल-विमत-जित्तर्कतन्त्रेपुदेवः
सिद्धान्ते सत्यरूपे जिन-विनिगदिते गौतमः केवलकुन्दः।
अध्यात्मे वर्द्धमानो मनसिज-मथने वारिमुग्दुःखवन्हा-
वित्येषं कीर्त्तिपात्रं श्रुतमुनिवदभूद्भूतये कोऽत्र कश्चित्
॥४०॥

श्रद्धां शुद्धां प्रवृद्धां दधतमधिकृतां जैनमार्गे सुसर्गे
सिद्धिं बुद्धेर्म्महर्द्धेर्बुध-वर-निवहैरद्भुतामर्त्यमानां ।
मित्रं चित्रं चरित्रं भवचय-भयदं भव्यनव्याम्बुजाना-
मप्येनोम्यूनमेनं श्रुतमुनि-मुनिपं चन्द्रमाराधयध्वं ॥४१॥
श्रीमानिहाऽस्याभयचन्द्रसूरेस्यानुजात [श्र]श्रुतकीर्त्ति-
देवः ।
अभूज्जिनेन्द्रादितलक्षणानामापूर्णचन्द्रीकृत-पात्र-वृत्तः ॥४२॥
विदित-सकलवेदे वीत-खेदो-विषादे
विजित-निखिल-वादे विश्वविद्याविनोदे ।
विदितचरितमोदे विस्फुरच्चित्त-प्रसादे
विनुत-जिनप-पादे विश्वरक्षां प्रपेदे ॥४३॥
स श्रीमालिवनूजसदनु गणिपदं सन्यधाच्छ्रुतकीर्त्तिः

कीर्त्याकीर्ण्णत्रिलोक्या मुत्तुरयति विधुः कार्यमद्याप्यनुन्यः।

(तृतीय मुख)

यस्योपन्यास-वन्य-द्विप-पटु-पटयोत्पाटितारिषाटुवादः
पद्मागद्यात्तमित्रोरलतरकवयोऽप्युत्थिता वादिपद्माः ॥४४॥
आहर्त्तोद्यारुकीर्त्तिः पदनतवसुधाधीश्वरोऽधीश्वरोऽयं
गर्व्वं कुर्व्वन्तमुर्व्वीश्वर-मदगिरि महावादिनं वादवन्ध्यं।
चक्रे दिक्कोदमेरत्नरसवचा' समाधिताशेषमाध्यो
ऽवेद्यावेद्यादविद्याव्यपगमविलसद्विश्वविद्याविनोदः ॥४५॥
यस्याल-सोल्लिपालं वसित-यति-वरं वादिभिर्व्वं जितानि
वेगावेगाद्गतासु स्थितिमपि महतोत्त्रासयतामानिनाम।
आतीर्य्यैव स्वयं सोऽप्रतिहतविदुषां सूरेरवाचारयत्-
त्रिस्तोमाख्येव-शास्त्राम्बुनिधिमभयसूरिं परं सिंहशार्य्यं
॥४६॥

शिष्टो दुष्टाय पिष्टो-करण-निपुण सूनाय तस्यापदंष्टु-
द्विष्टव्य पीयूष-निष्य-न्दन पटु वचन पण्डित खण्डिताय'।
सूरिभ्यो विनयाभ्युद्दविक्रमने सर्व्वंदाभ्यर्थितानां
श्रीमानस्याद्भुतात्मा जैनुगुप्तनगर तत्र धर्म्मानिरुद्धै ॥४७॥
यस्मिन्भासुरराजो भुजबलिनमिने गुम्मट कर्म्मठाज
भक्त्या शक्त्या च मुक्त्यैजित-सुर-नगर स्थापयद्रत्नमयी।
दृष्ट्वाऽऽज्ञ-प्रयासोऽस्त्र-मनु-जिन-विम्बानि मान्यानि धान्य:
कैलासे कीर्त्तयाली त्रिभुवन-विजयस्तम्भ-शोभेव चक्रे ॥४८॥
स्थाने तत्पट्टनाम्नोऽस्खलतरमतुलं पण्डिताऽद्वैतरागु

श्रीमानेषोऽर्ककीर्त्तिर्न्नृप इव विलसत्सालसोपानकायैः।
चित्रं शीर्षेऽभिषिच्य त्रिभुवनतिलकं वं पुनस्सप्तवारान्
पद्मोन्मुक्तं विधायाखिलजगदुरुपुण्यैस्तथालङ्चकार ॥४९॥
किंवा चोराभिषेकादुतनिजयशसो निर्म्मलाच्छद्रुराष्ट्रोन्
गोत्राद्रीन्स्फाटिकीं च क्षितिममरगजान्दिग्गजानेष धीरः।
क्षीरोदान्सप्तसिन्धूनुदरिजलधरान्शारदान्नागलोकं
शेषाकीर्ण्णं विदीर्ण्णामृतकलशमपि स्वर्व्वितेने न विद्मः ॥५०॥
मेरौ जन्माभिषेकं सुरपतिरिव तत्तथैवात्र शैले
देवस्यादर्शयन्नो परमखिलजनस्यैष सूरिर्व्विधाय।
सन्मार्गं चाधुनैनं पिहितमपि चिरं वामदृग्वाक्तमोभि-
र्भिन्दंस्तानि पूर्व्वं पुरुरिव पुनरभ्याकलङ्कोऽपनीय ॥५१॥
रे रे फाणाद कोणं शरणमधिवस क्षुद्रनिद्रानिशासं
मैमांसेच्छामनुष्ठा व्रज निजपटुवादेषु कृच्छ्राद्गुरुत्व।
बौद्धापुद्धे विमुग्धोऽस्यपसर सहसा साङ्ख्यमार्ह सङ्ख्यं
श्रीमान्मध्नाति वादीन्द्रगजमभयसूरिः परं वादिसिंहः ॥५२॥
पेरवर्य्यं बहुवरुष शारवतमुखे धत्तश्च सर्व्वज्ञतां
विभ्राणे च गिरीशतां शिवतया श्रीचारुकीर्त्तीश्वरौ।
वन्द्यायं जिनमार्गसारजिनभाग्भोमानयं मार्गणे
हेमाद्रि समधत्त मार्गणमुखश्चेमा स हेमाचले ॥५३॥
स्फूर्ज्जद्दूर्जटि-भाल-लोचन-शिखि-ज्वालावलीदग्ध तं
हं हो मन्मथजीवनौषधिरभूदेषा पुरा शैलजा।

सर्व्वज्ञोत्तमचारुकीर्त्ति मुनेस्सम्यक्तपो-वह्निना
निर्द्दग्धस्य चरित्रचण्डमरुतोद्भूतस्य का ते गतिः ॥५४॥
पितामहपरिष्वङ्गसङ्गतैनःप्रशान्तये ।
चारुकीर्त्ति वचोगङ्गालिङ्गिताङ्गो सरस्वती ॥५५॥
आस्यं वाणीनिवास्यं हृदयमुरुदयं स्वं चरित्रं पवित्रं
देहं शान्त्यैकगेहं सकलसुजनवागम्यमुद्भूत-पुण्यं ।
अन्या भव्या गुणालिस्त्रिखिलसुखवतेर्य्यस्य सोऽयं जगत्यां
जत्याख्यप्रसादो जयतु चिरमयं चारुकीर्त्तिव्रतीन्द्रः ॥५६॥
मूढं प्रौढं दरिद्रं धनपतिमधमं मानवं मानवन्तं
दुष्टं शिष्टं च दुःखान्वितमपि सुखिनं दुर्मदं धर्म्मशीलं ।
कुर्व्वन् सामन्तभद्रं चरितमनुसरन्नप सामन्तभद्रं ।
(चतुर्थमुख)
तन्वन् श्रीचारुकीर्त्तिर्जगति विजयते चन्द्रिका-चारु-
कीर्त्तिः ॥५७॥
रे रे चाटर्वाक गर्व्वं परिहर विकटालि पुरैव प्रमुच्य
साङ्ख्याक्षक्षपैय-राजत्परिकर-निकराडम्बरपटोऽसि
भट्ट ।
पूर्व्वं काणाद तूर्ण्णं त्यज निजमनिशं मानमाक्षपिरानं
हिंसम्भुंसोऽभिधास्यो व्रजतियदपराम्बादिनःसिद्धसार्य्यः
॥५८॥
तत्पण्डिताक्ष-प्रभुरतो वरिवारिनाथो
सम्यक्त्व-बोध-चरणोन्नतदानशिक्षो,

मग बोम्मण्णनोलगाद गौडुगल समचदलि देवरिगे पादपूजेय माडि क्रयवागि कोण्डु कोट्ट असाधारणवहन्त कीर्तियनू पुण्यवनू उपार्ज्जिसि कोण्डनु मङ्गलमहा श्री श्री श्री ॥

[कर्नाट देश की गङ्गवती नामक नगरी में माणिक्यदेव और उनकी भार्या पाचायि रहते थे। इनके मायण्ण नामक पुत्र हुआ जो चन्द्रकीर्ति का शिष्य था। मायण्ण ने उक्त तिथि को बेल्गुल के गङ्गसमुद्र नामक सरोवर की दो खण्डुग भूमि खरीद कर उसे गोम्मट स्वामी के अष्टविध पूजन के लिये बेल्गुल के कई पुरुषों के समक्ष दान की।]

१०७ (२५६)

उपर्युक्त लेख के नीचे

(लगभग शक सं० ११०३)

शीलदि चन्द्रमौलिविभुवाचलदेवि निजोद्यकान्तेया-
लोलमृगाक्षि बेल्गुलद गुम्मटनाथन पादद-
र्चालिगे बेडे बेक्कुन शीमेयनित्तनुदारवीरय-
ल्लाल-नृपालकनुर्व्वियुमब्धियुमुल्लिनमेदे मल्लिवन ॥ १ ॥

अन्तु धारापूर्व्वकर्यं माडिकोटन्त सीमसीमे। मूड होलेनहल्लि वेङ्क यस्तिहल्लि देवरहल्लि पडुव चोलेनहल्लि हाडोनहल्लि (पूर्व मुख के नीचे)

बडग मरुचेनहल्लिय चिट्टकोट सीमो आचन्द्रार्कस्थायियागि सलुगं मङ्गलमहा श्री श्री श्री ॥

[चन्द्रमौलि की पत्नी आचट देवी की प्रार्थना पर वीरबल्लाल नृप ने 'वेङ्क' नामक ग्राम का दान गोम्मटनाथ के पूजन के हेतु किया। लेख में ग्राम की सीमा दी हुई है।

नोट—घाघरा देवी के मन्दिर के अनेक दानों का वर्णन शक सं० ११०१ के लेख नं० १२४ (२२७) में है। अतएव प्रस्तुत लेख का समय भी शक सं० ११०१ के लगभग होना चाहिये। पर आश्चर्य यह है कि यह लेख इससे बहुत पीछे के दो लेखों (नं० १०२ और १०१) के नीचे खुदा हुआ है। लिपि भी इसकी उतनी पुरानी प्रतीत नहीं होती। सम्भव है कि किसी आधार पर लेख पीछे से ही लिखा गया हो।

१०८ (२५८)

सिद्धरवस्ती में दक्षिण ओर एक स्तम्भ पर

(शक सं० १३५५)

(प्रथम मुख)

श्री जयत्यजय्यमाहात्म्यं विशालितकुशासनं।
शासनं जैनमुद्भासि भुक्तिमुक्त्यैकशासनं ॥ १ ॥
अपरिमितगुणमनन्यशरणमभयं प्रदत्तबहुमानं।
निरवधिभावनाकविभवं प्रणतु हृदय पर श्यामि ॥ २ ॥
दर्शनारिप्रभञ्जनमुद्भटजडं मानमयान्तर्गूढं
सत्यावकारसुधाभिषिक्तिर्जनिश्चाकाव्यकुपाण्डित ।
आरोप्य भुवनाग्रमभूद्यः नयन्त पदा-
नेतं तीर्थकृता महीधरहृदय मध्यमधाम्नामतां ॥ ३ ॥
तद्वानवत् त्रिभुवनप्रभुरित्यृषि
श्रीवर्द्धमानमुनिरन्तिम-तीर्थनाथः ।
यद्दर्शनाद्विरपि संस्मृतसिद्धसाधो
पूर्वोत्तरानितनवान् विशदापकार ॥ ४ ।

तस्याभवच्चरमचिज्जगदीश्वरस्य
यो योऽन्वराज्यपदसंश्रयतः प्रभूतः ।
श्रीगौतमोगणपतिर्भगवान्वरिष्ठः
श्रेष्ठैरनुष्ठितनुतिर्मुनिभिस्स जीयात् ॥ ५ ॥

तदन्वये शुद्धिमति प्रतीते समग्रशीलामलरत्नजाले ।
अभूद्यतीन्द्रो भुवि भद्रबाहुः पयःपयोधाविव पूर्ण-
चन्द्रः ॥ ६ ॥

भद्रबाहुरयमिः समग्रबुद्धिसम्पदा
शुद्धसिद्धशासनं सुशब्द-बन्ध-सुन्दरं ।
इष्टवृत्तसिद्धिरत्र बद्धकर्म्मभित्तपो-
वृद्धिवर्द्धितप्रकीर्त्तिरुदधे महर्द्धिकः ॥ ७ ॥

यो भद्रबाहुः श्रुतकेवलीनां मुनीश्वराणामिह पश्चिमोऽपि ।
अपश्चिमोऽभूद्विदुषां विनेता सर्व्वत्र वार्त्यप्रतिपादनेन ॥ ८ ॥

तदीय-शिष्योऽजनि चन्द्रगुप्तः समग्रशीलानतदेवबृन्दः ।
विवेश यत्तीव्रतपःप्रभाव-प्रभूत-कीर्त्तिर्भुवनान्तराणि ॥ ९ ॥

तदीयवंशाकरतः प्रसिद्धादभूददोषा यतिरत्नमाला ।
बभौ यदन्तर्म्मणिवन्मुनीन्द्रस्स कुण्डकुन्दोदित-चण्ड-
दण्डः ॥ १० ॥

अभूदुमास्वातिमुनिः पवित्रे वंशे तदीये सकलार्थवेदी ।
सूत्रीकृतं येन जिनप्रणीतं शास्त्रार्थजातं मुनिपुङ्गवेन ॥११॥
स प्राणिसरक्षणसावधानो बभार योगी किल गृद्धपक्षान् ।

तदा प्रभृत्येव बुधा वदन्तु राद्धान्तसिद्धान्तविचारगृद्धु-
पिच्छं ॥ १७ ॥
तस्मादभूद्योगिकुलप्रदीपो बलाकपिच्छः स तपो-
महर्द्धिः ।
यद्वन्नसम्पर्शनमात्रतोऽपि वायुर्विषादीनमपाकरोति ॥ १३ ॥
समन्तभद्रोऽजनि भद्रमूर्त्तिस्तत. प्रणेता जिनशासनस्य ।
यदीयवाग्वज्रकठोरपातैश्चूर्णीचकार प्रतिवादिशैलान् ॥१४॥
श्री पूज्यपादो धृतधर्म्मराज्यस्तपो सुराधीश्वर-पूज्य-
पादः ।
यदीयवैदुष्यगुणानिदानीं वदन्ति शास्त्राणि तदुद्भवानि ॥१५॥
धृतविश्वबुद्धिरयमत्र योगिभि-
र्घटकुट्यभावमनुबिभ्रदुच्चकैः ।
जिनरुग्भुव यदनङ्गचापहृत्
स जिनेन्द्रबुद्धिरिति सार्थवित्तया ॥ १६ ॥
श्रीपूज्यपादमुनिरप्रतिमौषधर्द्धि-
र्जीयाद्विदेहजिनदर्शनपूतगात्र ।
यत्पादधौतजलसंस्पर्शप्रभावा-
त्कालायसं किल तदा कनकीचकार ॥ १७ ॥
ततः परं शाब्दिकलोकधातुं
मुनीशमभ्येत्य कलङ्कभूरि. ।
मिथ्यान्धकारस्थगिताखिलार्थो-
प्रकाशितो येन वचोमयूखैः ॥ १८ ॥

तस्मिन्गते स्वर्गभुवं महर्षौ दिवःपतीन्नर्तुमिव प्रकृष्टान् ।
तदन्वयोद्भूतमुनीश्वराणां बभूवुरित्थं भुवि सङ्घभेदाः ॥१९॥

स योगिसङ्घश्चतुरः प्रभेदानासाद्य भूयानविरुद्धवृत्तान् ।
यथावयं श्रीभगवान्जिनेन्द्रश्चतुर्मुखानीव मिथस्तमांसि ॥२०॥

देव-नन्दि-सिंह-सेन-सङ्घभेदवर्त्तिनां
देशभेदतः प्रबोधभाजि देवयोगिनां ।
वृत्ततस्समस्ततोऽविरुद्धधर्म्मसेविनां
मध्यतः प्रसिद्ध एष नन्दिसङ्घ इत्यभूत् ॥ २१ ॥

नन्दिसङ्घे सदेर्शीयगणे गच्छे च पुस्तके ।
इंगुलेश्वलिर्ज्जीयान्मङ्गलीकृतभूतलः ॥ २२ ॥

तत्र सर्व्वशरीरिरक्षाकृतमतिर्न्निर्जितेन्द्रिय-
स्सिद्धशासनवर्द्धनप्रतिलब्ध-कीर्त्तिकलापकः ।
विश्रुत-श्रुतकीर्त्ति-भट्टारकयतिस्समजायत
प्रस्फुद्वचनामृतांशुविनाशिताखिलसत्तमाः ॥ २३ ॥

कृत्वा विनेयान्कृतकृत्यवृत्तोभिधाय तपु श्रुतभारमुच्चैः ।
स्वदेहभारं च भुवि प्रशान्तस्समाधिभेदेन दिवं स भेजे ॥२४॥

(द्वितीयमुख)

गते गगनवाससि त्रिदिवमत्र यस्योच्छ्रिता
न वृत्तगुणसंहतिर्व्वसति केवलं तद्यशः ।
प्रमन्दमदमन्मथप्रणमदुग्रचापोच्छल-
त्प्रतापहतिकृत्तपत्ररणभेदलब्धं भुवि ॥ २५ ॥

श्रीचारुकीर्त्तिमुनिप्रतिमप्रभाव-
स्तत्प्रादभूभिजयशोधवलीकृताशः ।
यस्याभवत्तपसि निष्टुरतोपशान्ति-
श्चित्ते गुणे च गुरुता कृपया शरीरे ॥ २६ ॥
यस्तपोवह्निभिर्व्वैरिस्तिताघट्टयो
वर्त्तयामास सारत्रय भूतत्रं ।
युक्तिशास्त्रादिक च प्रकृष्टाशय-
श्चक्रवर्त्तिविधाम्बुधेर्द्विजचन्द्रमा. ॥ २७ ॥
यस्य पार्श्वगिन पादयोस्सर्व्वदा
सद्भिर्मौलिभिरिन्दवः पादरजस्यु च ।
चिन्तयत्यभवत्कृपालता कर्म्मेत
त्यन्यथा नीलता कि भवेत्तत्तनो ॥ २८ ॥
सर्वा शर्मरामवतापि बाला कञ्च प्रशान्तिं विदधाति सर्वा ।
यल्लालराजोन्मिषदेणशान्तिरासीत्किलैवंविधकु
मेषजेन ॥ २९ ॥
मुनिर्म्मलांघा-कमलो विधारित समाधिभेदं समवाप्य सत्तम ।
विहाय देहं दिविभावहीं पदं विवेश दिव्यं वपुरिद्ध-
वैभवं ॥ ३० ॥
अतमाधारि तस्मिन्कृतिनि परमे-
ष्ठिनि नानविद्यतहा पवित्रतयसि-
स्तोम; बान्धुभिरन्वाहमस्तोमधिष्ठितं
सर्व्वमुत्तमंरित्यच वस्तुभिरुपाधोत ॥ ३१ ॥

विबुधजनपालकं कुबुध-मत-हारकं ।
विजितसकलेन्द्रियं भजत तमलं बुधाः ॥ ३२ ॥
धवल-सरोवर-नगर-जिनास्पदमसदृशमाकृतवदुरु-
तपोमहः ॥ ३३ ॥

यत्पादद्वयमेव भूपतिततिश्चक्रे शिरोभूषणं
यद्वाक्यामृतमेव कोविदकुलं पीत्वा जिजीवानिशं ।
यत्कीर्त्या विमलं बभूव भुवनं रत्नाकरैरप्यृतं
यद्विद्या विशदीचकार भुवने शास्त्रार्थजातं महत् ॥ ३४ ॥

कृत्वा तपस्तीव्रमनल्पमंधास्सम्पाद्य पुण्यान्यनुपप्लुतानि ।
तेषां फलस्यानुभवाय वस्वचेता इवाप त्रिदिवं स योगी ॥३५॥

तस्मिन्जाते भुवि सिद्धान्तयोगी
श्रीवज्राख्यो वर्द्धयन् सिद्धशास्त्रं ।
तुङ्गे व्योम्नि द्वादशात्मा करीषे-
ऽवैदुल्यम्भूद्भुविभिद्वयन्यैः ॥ ३६ ॥

दुर्वारांगुष्कं शास्त्रजातं विवेकी यापाने कान्तार्थसम्भूषया यः ।
इन्द्रोऽवन्या मेघजालेरिवया भूद्वां भूयस्संदधे वा
विभेद ॥ ३७ ॥

यद्वत्सद्भूजनवाक्यनिपातमौक्ति-
रत्नावलीनिधनमुं विदधुः सभायां ।
तद्वन्न वस्तु न वपुर्न च वस्त्रजातं
नो धौम्यते न च वहत्न च भाव्यमिदं ॥ ३८ ॥

प्रविश्य शास्त्राम्बुधिमेष धीरो जगाह पूर्वं मकलान्तरत्नं ।
परेऽमत्यांस्तदनुप्रवेशादेकैकमंशात्र ल मन्यमापु ॥३९॥

सम्प्राप्य शिष्यान्स मुनिः प्रसिद्धा-
न्व्याघ्रयामास कृपामबुद्धीन ।
जगत्यविघ्नाकरणाय धर्म-
प्रवर्तनायाखिल संविदं च ॥ ४० ॥

कृत्वा भक्तिं ते गुरोम्सर्व्वशास्त्रं
नीत्वा वत्सं कामधेनुं पयो वा ।
स्वीकृत्याज्ञैस्तत्पिकन्ताऽतिपुष्टा
शक्ति रक्षां व्याघ्रयामासुरिद्धां ॥ ४१ ॥

तदीयशिष्येषु विद्वत्तरेषु गुणैरनेकैश्च समुज्ज्वलित्व ।
वराज शैलेषु सपुत्रवत्सु य रम्यकुटेरिव मन्दराद्रि ॥ ४२ ॥

कुलेन शीलेन गुणेन सत्या शास्त्रेण रूपेण च यावत्व गत्व ।
विचार्य तं मुनिपद स नीत्वा कुलाधिप स
गणत्यकार ॥ ४३ ॥

अथैकदा चिन्तयतिस्मनेवा स्थिति गणाधीश्वर निःस्पृहाऽन्त्य ।
गणार्य चाहूय स्वगणं समर्थं तपश्चरिष्यामि समाधि-
योग ॥ ४४ ॥

विचार्य चैवं हृदय गणाग्रणीर्भवेद्यामास विनयवान्वर ।
मुनिः समाहूय गणाधिनाथं स्वपुत्रमित्व कृतपुण्य-
शालिन ॥ ४५ ॥

(तृतीयमुख)

मदन्वयादेष समागतोऽयं गणो गुणानां पदमस्य रक्षा।
त्वयाङ्ग सद्भक्तियतानितीष्टं समर्प्पयामास गणी गणं
स्वं ॥ ४६ ॥

गुरुविरहसमुद्यद्दुःखदूनं वदोयं
मुखमगुरुवचोभिरस्त्र प्रसन्नांचकार।
सपदि विमलिताब्द-क्लिष्ट-प्रांसु-प्रतानं
किमधिवसति यो[ऽ]पिन्मन्दफूत्कारयातैः ॥ ४७ ॥

कृतिततिहितवृत्तस्नस्वगुप्तिप्रवृत्तो
जितकुमतविशेषश् शोषितारोषदोषः।
जितरतिपति-मत्यक्षस्त्र-विद्या प्रभुत्व-
स्मुकृतफल-विधेयं सोऽ गमद्दिव्यभूयं ॥ ४८ ॥

गतऽत्र तस्मिंश्चिपदाश्रयोऽयं
मुनीश्वरस्मङ्गुमवर्द्धमानराम्।
गुणैश्च शास्त्रैश्चरितैरनिन्दितैः
प्रथिन्तयन्तद्गुरुपादपङ्कजम् ॥ ४९ ॥

प्रकृत्य कृत्यं कृतसद्गुरुश्रो विहाय चाकृत्यमनल्पबुद्धिः।
प्रवर्द्धयन् धर्ममनिन्दितं तद्गुरूपदेशान् सफलीचकार ॥५०॥

अथ[ऽ]न्यदा[ऽ]यं मुनिभिर्मनोज्ञगिरिस्तुतानन्
अमन्द-मद-मत्त-करिकुल-वारिशोभादनान्।
अमन्नमरमूर्तिभृद् अमितवारिविश्रोचनन्
वरद्रु-तरिविभ्रम-मदय-चारुतोलिर्न्नुदि ॥ ५१ ॥

का त्वं कामिनि कथ्यतां श्रुतमुनेः कीर्तिः किमाख्यत
ब्रह्मन् मत्प्रियसन्निधौ भुवि चुधरसम्भृत्यते सर्वतः ।
नेन्द्रः किं सख गोत्रभिद् धनपतिः किं नान्यसौ किन्नर
शेषः कृत्रतनास्य च द्विरसना रुद्रः पशूनां पतिः ॥ ४३ ॥

वाग्देवताहृदय-रञ्जन-मण्डनानि
मन्दार-पुष्प-मकरन्दरसोदमानि ।
आनन्दितास्त्रिजग-दनान्यमूनि वर्मन्ति
कर्णेषु यस्य वचनानि कवीश्वराणां ॥ ४४ ॥

यमन्तभद्रोऽप्यमभद्रभद्रः
भी-भृत्यपाहाऽपि न भुज्यपादः ।
मयूरपिच्छोऽप्यमयूरपिच्छ-
स्त्रिचत्र विद्वाऽप्यविद्व एव ॥ ४५ ॥

एवं जिनप्रोक्तितधर्मयुग्यैः प्रमाणयन्त मुनि पंच-दाक्षिने ।
अदत्तपत्त्वा कलिना प्रयुक्ता यथाय रागात्मभाव
दुतवत् ॥ ४६ ॥

एवा स्वल प्राप्य महानुभावं समय पमात्कत्वकीर्तिः ।
तथा शर्मोत्साऽमनुप्रविश्य मनुष्यलोके प्रतिबद्धलोभैः ॥४६॥

अङ्गान्यनूनं मनुजानि यस्य च प्रसाद्य दृत्त भाजः ।
प्रकल्पमापनुपुरिद्धरागाश्च चित्तमाश्वत्कमाश्वपूर्व ॥ ४७ ॥

य भोग-भागं कविभेव भोगी मुदं च धर्मं हृदय प्रशान्ति
गमाश्रमं महिपतीतकारिण्यस्मिन् प्रसर्पेऽधिहृदुर्मै. ४८

अङ्गेषु वसिन् प्रविजृम्भमाणे
निश्चित्य योगी तदसाध्यरूपतां ।
ततःसमागत्य निजाश्रमस्थ
प्रणम्य पादाववदत् कृताञ्जलिः ॥ ५९ ॥
देव पण्डितेन्द्र योगिराज धर्म्मवत्सल
त्वत्पद-प्रसादतस्समस्तमर्जितं मया ।
सयशः श्रुतं व्रतं तपश्च पुण्यमक्षयं
किं ममात्र वर्त्तित-क्रियस्य कल्प-कार्द्धिपः ॥ ६० ॥
देहतो विनात्र कष्टमस्ति किं जगत्त्रये
तत्र रोग-पीडितस्य वाच्यता न शाश्वतः ।
देव एव योगतो वपु-र्विमर्जनं-क्रम-
स्साधु-धर्म्म-सर्व्व-हृत्य वेदिनां विदांवर ॥ ६१ ॥
विज्ञाप्य कार्य्ये मुनिरित्थमर्थ्यं
मुहुर्मुहुर्योगयतो गणीशात् ।
स्वाङ्गेन सल्लेखनमात्मनीनं
समाधिना भावयति स्म भाव्यं ॥ ६२ ॥
जगद्-विषत्-तिमि-तिमिङ्गिल-नक्र-चक्र-
ग्रासग्रह-मृत्यमृति-भीम-मकर-नादि ।
दीर्घाऽनघाध्व-पयोनिधि-मध्य-भागे
क्षिप्तात्मनं क्षिपति मां पतितस्य मन्युः ॥ ६३ ॥
इह खलु परत्र गगन-गामसां केवल
न देवमुत्तारकं निखिल-देह-भाजामपि ।

अतोऽस्य मुनयः परं विगमनाय यद्वाञ्छया
यतन्त इह सन्ततं कठिन-काय-तापादिभिः ॥ ६४

अथं विषयसञ्चयो विषमभेषदोषास्पदं
मृगाजनिजुषामहो बहुभवेषु सम्माहकृत् ।
अतः खलु विवेकिनस्तमपहाय सर्वंसहा
विशन्ति पदमक्षयं विविध-कर्म-दा-दुस्तिरम् ॥ ६५ ।

(चतुर्थं सुत्र)

दर्शन-दुःख-शिखि-शङ्कुविभङ्गयहि
क्षीप्राजरक्षक-तपातप-ताप यमौ ।
स्पर्क-चन्दनादि-विषयामिषसंङ्ग-लिप्सा
का वाचलाक्ष्य शुचि सञ्चरति प्रभुत्व ॥ ६६ ॥

स्पष्टु स्त्रीशामेनस्तं शृहित किं
गात्रस्वाभाविमृष्टूरा च किं स्यात् ।
पुत्रादानां शत्रु-कार्यं किमर्थं
मृत्योर्मित्रं स्यर्थता भानुरासीत् । ६७ ॥

॥ हि कान्य बहु-दु ख-शीत्र-
मिव बडाग्नेन-राग-दाहा ।
॥ कृत्नाकारमपांक्षराक्षा
दर्शयमङ्गस्य विष-ज्वरा हि ॥ ६८ ॥

लब्धं मेवा प्राकृतन-जन्म-पुण्यात्
शुभ-म सद्गाश्रमपूर्वभूत ।

मदाश्रयः श्रीजिन-धर्म्मसेवा
ततो विना मा च परः कृती कः ॥ ६६ ॥
इत्थं विभाव्य सकलं भुवन-स्वरूपं
योगी विनश्वरमिति प्रशमं दधानः ।
अद्धावमोलिवदगस्खलितान्तरङ्गः
पश्यन् स्वरूपमिति सोऽवहितः समाधौ ॥ ७० ॥
हृदय-कमल-मध्ये सैद्धमाधाय रूपं
प्रसरदमृतकल्पैर्म्मूलमन्त्रैः प्रसिञ्चन् ।
मुनि-परिषदुदीर्ण-स्तोत्र-घोषैरमर्षैः
श्रुतमुनिरथमङ्गं स्वं विहाय प्रशान्तः ॥ ७१ ॥
अगमदमृतकल्पं कल्पमल्पीकृतेना
विगलितपरिमोहस्तत्र भोगाङ्गकेषु ।
विनमदमर-कान्तानन्द बाष्पाम्बु-धारा-
पवन-धुत-रजोऽन्तर्योमि-सोपानरम्यं ॥ ७२ ॥
यतौ याते तस्मिन् जगदजनि शून्यं जनिभृतां
मना-मोह-ध्वान्त गत-वलमपूर्यप्रतिहतं ।
व्यधोऽप्युत्रक्षोका नयन-नव-सुधां विरचयन्
विधाता किं कुर्य्यादिह न महतां दुःसहवरः ॥ ७३ ॥
पादा यस्य महामुनेरपि न कैर्मूर्ध्नाभिवन्दिता
हृत्वं मत्र विशांवरस्य हृदयं जग्राह कथानकं ।
सोऽयं श्रीमुनि-भानुमान विधि-वशादस्तं प्रयातो महान्
यूयं तद्विधिमत्र हन्त तमसा हन्तुं यतध्वं बुधाः ॥ ७४ ॥

यत्र प्रयान्ति परलोकमनिन्दवृत्ता-
स्थानस्य तस्य परिपूजनमेव मत्वा ।
इत्या भवेदिति कृताकृतपुण्यपापं
स्वेयादियं श्रुतमुनेरुचिरं निषद्या ॥ ७५ ॥
दृग्-शर-शिखि-विधु मित-शक-
परिधावि शरद्द्वितीयपक्षाढ्ये
सित-नवमि-विधु-दिनोदयनृपि
सविशाखे प्रतिष्ठितमिदम् ॥ ७६ ॥
विजीन-सकल-क्रिय विगत-रागमत्युज्ज्वलं
विलङ्घित-समस्तपुन्नाग-विरहित विपुलाशय ।
अवाङ्-मनस-गोचर विजित-वाक्-गोचरमिदम
महाभ-हृदयस्थिता भवतु भाम चिरं महत् ॥ ७७ ॥
प्रबन्ध-चनि-गण्ड-पालङ्कृतात्पादित यया ।
मङ्गराज-कवर्वीशो वाणी वीणायतनरा ॥ ७८ ॥

(नोट—यहांतक कोई कुल यह अनुवाद की अन्तिम प्रशस्ति
जिस प्रबंधोत्तिका के अतिरिक्त अन्य काव्य ग्रन्थों में भी अनुपम है ।)

१७६ (२८१)

श्यागदब्रह्मदेवस्तम्भ पर

(अनन्त शक सं० २४०)

(उत्तर मुख)

ब्रह्म-चत्र-कुलोदयाचल-नेता-नुपामाद्यो नुभाव
मद्य-चत्रकुलाब्धि-वर्द्धन-कलो-नेता चरसुधा-दीधितः ।

प्रभ-चत्र-कुलाकराचल-भव-श्री-हार-यष्टीमणिः
प्रभ-चत्र-कुलाग्निचण्डपवनश्चापुपदराजोऽजनि ॥ १ ॥
कल्पान्त-क्षुभिताब्धि-भीषण-बलं पातालमल्लानुजम्
जेतुं यज्जियलदेवमुद्यतभुजस्यैन्द्र-चितीन्द्राज्ञया ।
पत्युश्रीजगदेकवीर नृपतेर्जैत्र-द्विपस्यामदो
भावरन्तिनि यत्र भग्नमहितानीकं मृगानीकवत् ॥ २ ॥
अस्मिन् दन्तिनि दन्त-यत्र-दलित-त्रिट्-कुम्भि-कुम्भोपरि
वीरासंस-पुरानिषादिनि रिपु-व्यालाङ्कुशे च स्थिते ।
स्याद्कोनाम न गोचरप्रतिनृपो मदुद्दाम-यूथाग्रग-
प्राग्रायति मेदिलम्बरराजगजरे यः स्वामिवः स्वामिना ॥३॥
स्वामि शार-पयोधिमन्थु परिधिर्यश्चापु त्रिकूटपुरी
लङ्कान्तु प्रति नायकोऽस्तु च गुदारातिलथापि सन् ।
न जातु जगदेकवीर-नृपत स्वत्तेजसंतिष्ठता-
निश्चर्यं रणसिङ्ग-पार्थिव-वरो वेनोजितं गोजितम् ॥४॥
यावद्व्याप्य दधत् भुवि यश कण्ठप्रदेशकण्ठया
नाभ्यस्थान खल-सिंहलेश्वरसुतस्त्वत्तः पराभूतये ॥
कल्याण रणरङ्गसिङ्ग-विजयी श्रीमति नाकुनो
नाथांशा-दृत-राज-लक्ष-कलिङ्ग यस्मै वि निर्णीयिपः ॥ ५ ॥
भाद्रं नृप विक्रमादनिधन-द गङ्गाधिराज्य त्रिधं
यत्तदेव यत्तदद्भुत-गुणैस्त्वत्तोऽन्यराजाहवः ।
इत्थं दोर्बल-कालिङ्ग-दल यत्र यात त्रिधराजधानीम्
तं कोऽन्यः कलयेत् कलाप्त गणाः पुण्यांशवः पाहवा ॥६॥

[नोट—केवल यही एक लेख है जिसमें चामुण्डराय मंत्री का स्वतन्त्र और विस्तृत रूप से वर्णन पाया जाता है। दुर्भाग्यवश यह लेख का एक खण्ड मात्र है। ज्ञात होता है कि अवश्य एक ऐसा था लेख नं० ११० (२८२) जिसमें के लिये इतने कष्टप्रद इस महत्त्वपूर्ण लेख की सीध बाबू जिसका आभी है। यदि यह लेख पूरा मिल जाता तो सम्भव है कि इसमें चामुण्डराय और गोम्मटेश्वर मूर्ति के सम्बन्ध की अनेक बातें विदित हो जातीं जिनके विषय में अब कुछ अनुमान ही लगाये जाते हैं।

११० (२८७)

उसी स्तम्भ पर

(लगभग शक सं० ११०४)

(दक्षिणमुख)

श्री-गोम्मट-जिन-पादद्वय-कमलैक-परमैश्वर्यः ।
श्रीगङ्गगोविन्दाख्यं भोग-पुर-द्वारमिदं हेर्माडे कारयत् ॥

[गङ्गगोविन्द और गुल्लवाल हेर्माडे ने कल्याण जिन के सम्मुख स्थित स्तम्भ के लिये यह देवता निर्माण कराया।]

१११ (२७४)

दक्षिण चामिलु के पूर्व की ओर चट्टान पर

(शक सं० १६८४)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं
श्रीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥
श्रीमूल-सङ्घपद्मनन्दि-सैद्धान्तिक-देवनसुधाकरा-कायेन्द्र-कल्पतरु-
मल्ल-कविकल्प-विकल्प-विद्याकरा.. . . . . मलधारि-लक्ष्मीकीर्त्ति-

[illegible]

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलाचार्य्यादि-प्रशस्त्य-विराजित-चिह्नालङ्कृतरुं विसम्बोधाववोधितरुं सकल-विमल-केवल-ज्ञान-नेत्र-त्रयरुं अनन्त-ज्ञान-दर्शन-वीर्य्य-सुखात्मकरुं विदितात्म-मद्धर्म्मोद्धारकरुं एकत्व-भावना-भावितात्मरुं उभय-नय-प्रमाणैकसत्यरुं त्रिदण्ड-रहितरुं त्रिशल्य-निराकृतरुं चतु-कषा-विनाशकरुं चतुर्व्विधवुपसर्ग्गगिरिकन्दरादि-धैर्य-समन्वितरुं पञ्च-दम-प्रमाद-विनास-कर्त्तुगलुं पञ्चाचार-वीर्य्याचार-प्रवीणरुं सदुदरुशनद भेदाभेदिगलुं सदु-कर्म्मागाररुं सप्तनयनिरतरुं अष्टाङ्ग-निमित्त कुशलरुं अष्ट-विध-ज्ञानाचार-सम्पन्नरुं नव-विध-ब्रह्मचरिय-विनिर्म्मुक्तरुं दश-धर्म्म-शर्म्म-शान्तरुं मेकादशाश्रावकाचारवुपदेशमतवाचार-चारित्ररुं द्वादशानुप्रेक्षा-निरतरुं द्वादशाङ्ग-श्रुतप्रविधान सुधाकररुं त्रयोदशाचार-शील-गुण-धैर्य्यमं सम्पन्नरु एम्बत-नाल्कु-लक्ष जीव-भेद-मार्ग्गणरुं सर्व्व-जीव-दया-पररुं श्रीमत्कोण्डकुन्दान्वय-गगन-मार्त्तण्डरु विदितोत्तण्ड-कुम्भमाण्डरुं देशिगण-गजेन्द्र-सिन्धूरमदधारावभासुररुं श्री-महादेशि-गण-पुस्तक गच्छ कोण्ड-कुन्दान्वय श्रीमत् त्रिभुवनराज-गुरु-श्रीभानुचन्द्र-सिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगलु श्री-सोमचन्द्र-सिद्धान्त चक्रवर्त्तिगलु चतुर्म्मुखभट्टारकदेवरु श्रीसिंहनन्दिभट्टाचार्य्यरु श्री शान्तिभट्टारकाचार्य्यरु श्री-शान्तिकीर्त्ति...र...भट्टारकदेवरु... श्रीकनकचन्द्रमल-धारिदेवरु श्री नेमिचन्द्र मलधारिदेवरु चतुसहश्रीसकल-गण-पाधारस.....ड-देवधामरु कलिदुग-गणधर-रुषासव

मुनीन्द्ररुं अवर शिष्यरु गौरश्रीकन्तियरुं सोमश्रीकन्तियरुं ...नश्रीकन्तियरुं देवश्रीकन्तियरुं कनक-श्रीकन्तियर शिष्य...यिप्पत्तु-एण्टुतण्ड-शिष्यरु वेरसु हेवणन्दि संवत्सरद फाल्गुणसु ८ त्रि श्री गोम्मटदेवर तीर्थनन्द.....पञ्च कल्याण ....

[इस लेख में कुन्दकुन्दान्वय, देशी गण, पुस्तकगच्छ के महाप्रभावी आचार्यों—त्रिभुवनराजगुरु भानुचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्त्ति, सोमचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्त्ति, चतुर्मुख भट्टारकदेव, सिंहनन्दि भट्टाचार्य, शान्ति भट्टारकाचार्य, शान्तिकीर्त्ति भट्टारकदेव, कनकचन्द्र मलधारिदेव, और मेरुचन्द्र मलधारिदेव—के उल्लेख के पश्चात् कहा गया है कि इन सब आचार्यों व अनेक गणों और संघों के आचार्य, कलियुग के गणधर पचास मुनीन्द्र, व उनकी शिष्याओं गौरश्री, सोमश्री, देवश्री, कनकश्री व शिष्यों के अट्ठाइस संघों ने उक्त तिथि को एकत्रित होकर पञ्चकल्याणोत्सव मनाया।]

नोट—लेख में संवत्सर का नाम हेवणन्दि दिया हुआ है जिससे सम्भवतः हेमलम्ब का तात्पर्य है। शक सं० १०२६ हेमलम्ब था।]

११५ (२६७)

एक शिला पर जो उस चट्टान के सामने खड़ी है

(सम्भवतः शक सं० १२३८)

स्वस्ति श्रीमूलसङ्घदेशीगण-पुस्तकगच्छ-कोण्डकुन्दान्वय श्रीमेरिचिट्ट-देवर शिष्यरु पद्मणन्दिदेवरु नल-संवत्सरद चैत्र-सु-१ सोमवारदन्दु नायक-श्रीमन्नगरोजिनीराजमरा-ळरादरु मङ्गलमहाश्री ॥

[उक्त तिथि को मेरिचिट्टदेव के शिष्य पद्मनन्दिदेव ने समाधिमरण किया।]

[नोट—लेख में मूल सवत्सर का उल्लेख है। शक सं० १२१८ भाद्र था]

११५ (२६७)

अखण्डवागिलु की शिला पर

(लगभग शक सं० १०८२)

स्वस्ति श्रीमन्महाप्रधान भव्य-जन-निधाने सेनेयङ्कार रण-रङ्ग-सोर श्रीमन्मरियाने-दण्डनाथानुजं दानभानुजनेनिसिद भरतमव्य-दण्डनायकनी-भरतबाहुबलिकेवलिगल प्रतिमेग-लुमनी - बसदिगलुमातीर्थ-द्वार-पथ-शोभार्थं माडिसिदनी-रङ्गद द्वप्पलिगेयुमनीमहासोपानपङ्क्तियुमं रचिसिदं श्रीगोम्मटदेवर सुखलु रङ्गम द्वप्पलिगेयं विगियिसिदनन्तुमल्लदेयुमी-गङ्गवाडिना-डोलल्लिगल्चिगंल्लि नेर्प्पडं ।

कन्द ॥ प्रकट-यशो-विभुवेण्क-
शुकले-बसदिगलनोसेदु जीर्णोद्धार-
प्रकरमनिप्पुरनलौ-
किक-धृति माडिसिदनेसेयं भरत-चमूपं ॥ १ ॥
भरत-चमूपतिसुते सु-
स्थिरं शान्तल-देवि बूचिराजाङ्गने
तद्भरतनेयंभरि.....
...नेा सदु बरयिसिदनिद ॥ २ ॥

[भरिबले दण्डनाथ के लघु भ्राता महामंत्री भरतमय दण्डनायक ने ये भरत और बाहुबलि केवलि की मूर्ति यों व ये बस्तियां इस तीर्थ-

स्थान के द्वार की शोभा के लिये निर्माण कराई। उन्होंने रङ्गशाला की हप्पलिगे (कटघर ?) व महासोपान व गोम्मटदेव की रङ्गशाला की हप्पलिगे भी निर्माण कराये, तथा गङ्गवाडिभट में अम्मी नवीन बस्तियाँ बनवाईं और दो सौ बस्तियों का जीर्णोद्धार कराया। भरत चमूपति की सुता शान्तल देवी……ने यह लेख लिखवाया।]

११६ (३१२)

बोदेगल बस्ति के पश्चिम की ओर चट्टान पर

(शक सं० १६०२)

श्रीमतु शालिवाहन शकवरुष १६०२ सिद्धार्त्थि-संवत्सरद माघ-बहुल १० यल्लु मुनिगुन्दद सीमेय देश-कुलकरणिय मकलुवाङ्क हेन्नप्पय्यन अनुज वेङ्कप्पैय्यन पुत्र सिद्दप्पैन अनुज नागप्पैय्यन पुण्यक्कोयराद बनदाम्मिकेयरु बन्दु दरुशनवादरु भद्रं भूयात् श्री ॥ श्रुतसागर-वर्णिगल समेत यिद तिथियल्लि माडिशूर गिडगप्प नागप्पन पुत्र दानप्पसेट्टर पुण्य-क्कां नागव्वन मैदुन भिट्टप्पनु दरुशनवादरु ॥

[उक्त तिथि को श्रुतसागर गणी के साथ उक्त व्यक्तियों ने तीर्थ वंदना की।]

११७ (२५९)

कञ्चि गुड्डि बागिलु के दक्षिण की ओर चट्टान पर

(सम्भवतः शक सं० १५३१)

श्री सोम्यस वत्सरदोलु विभवद श्राश्वयुज ब ७ मियोल वां श्रीसोमनाथपुरवेनिसिद कोङ्गनाडिङ्गदं अनादिय ग्रामं ॥

आ-श्रमदलु श्रीमत्पण्डित देवर शिष्यरु काश्यप-गोत्रद द्विज-कुल-सम्पन्नरु सेनबोव मायण्ननवरु अवर मदवलिगे महादेविगल प्रिय-पुत्र हिरियण्णनु श्री गुम्मटनाथ-स्वामिगल दिव्य-श्री-पदवनु हरुषदिनदागि परमजिनेश्वर-भक्तरु वर-गुणिगलु मुक्ति-पथवं पडदरु ॥ श्री

[काश्यप गोत्रीय ब्राह्मण और पण्डित देव के शिष्य सेनबोव मायण्ण के पुत्र जिनभक्त हिरियण्ण ने उक्त जिन और अम्बादि माता कोल्लापुर की गन्धवा की (?) और उसकी पत्नी महादेवी ने गोम्मटनाथ स्वामी के चरणाम्बुज की वन्दना कर मुक्ति-मार्ग प्राप्त किया।]

[नोट—लेख में सौम्य संवत्सर का उल्लेख है। शक सं० १२१३ सौम्य था]

११८ (३१२)

चौबीस तीर्थंकर बस्ति में

(शक सं० १५७०)

(नागरी लिपि)

श्रीं नमः सिद्धेभ्यः गोमट-स्वामीः आदीश्वर मुख्य-नायिकः चौबीस तीर्थंकर कि परतीमाः चारुकीरती पण्डितः धरमचन्द्र भट्टारकार उपदसाः सके १५७० सर्वधारी-नाम-संवत्सर वैशाख वदी २ शुक्रवार देहराड़ी पवी स्थरे .... गेरवालः अवरेगोत्रः जीनासाः पीवा सा का पुत्र. सदावनसाः बभ्रूसाः व लामाघाका पुत्रः ताकामा मनासा. फगुरपूरे सावसा भाससा..... वद...भोपव.....रखे राव.....

११८ (२००)

जलकुंड बागिलु को जानेवाले मार्ग के पश्चिम की ओर चट्टान पर

(लिपि सं० १३१५)

(नागरी लिपि)

संवत् १३१८ वर्षे वैशाख-सुदि ७ सोमे श्री काष्ठा-संघे माथुरगच्छे...श्री-राजकीर्त्तिः । तत्पट्टे भ० श्री लक्ष्मीसेनस्तत्पट्टे भ० श्री चन्द्रभूषणस्तत्पट्टे योगु ब्रह्मचारी भाई वीरण्ण-भाई-पुत्र वं भा धनाई तथा पुत्र प रत्नाकर पुजनाई तथा पुत्र वं भ्रातृजन पद्माई स-परिवार गोमट-स्वामि या यात्रा.....सफल

१२० (३१८)

पहाड़ी पर चढ़ने के मार्ग के पूर्व की ओर चट्टान पर

(लगभग शक सं० ११४०)

श्रीकरेय वीर वीरपल्लव-रायन मक्क केदेसट्टर-नायक्क वेल्लुगोल प्य...येच वेन्नवडिगर वेटके ॥

१२१ (३२१)

ब्रह्मदेव मण्डप के पीछे चट्टान पर

(सम्भवतः शक सं० १३०१)

सिदार्त्ति स। कार्त्तिक सुद्ध २ रलु। श्री-ब्रह्म-देवर-मटपवन्नु हिरिसालि गिरिगौडना वम्म रङ्गैयन से वे ॥

१२३ (३७५)

चेन्नण्णन के कुञ्ज में एक चट्टान पर

(लगभग शक सं० १५९५)

पुट्टसामि-सट्टर आं-देवीरम्मन मग चेन्नण्णन मण्डप आदि-तीर्त्तद कोलविदु हालु-गोळनोविदु अमुर्त-गोळनोविदु गङ्गे नदियो। तुङ्गवद्रियोविदु मङ्गला गौरियो विदु चन्द-वनवोविदु सङ्गार-तोटवो। अयि अयिया अयि अयियं बले तीर्त्त बले तीर्त्त जया जया जया जय॥

[यह पुट्टसामि और देवीरम्म के पुत्र चन्नण्ण का मण्डप और आदितीर्थ है। यह दुग्धकुण्ड है या कि अमृतकुण्ड? यह गङ्गा नदी है या तुङ्गभद्रा या मङ्गलगौरी? यह चन्दावन है कि विहारो-पवन? ओहो! क्या ही उत्तम तीर्थ है?]

श्रवण बेलगोल नगर में के शिलालेख

१२४ (३२७)

अक्कन बस्ति में द्वार के समीप एक पाषाण पर

(शक सं० ११०३)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥ १ ॥
भद्रम्भूयाज्जिनेन्द्राणां शासनायाघ-नाशिनं ।
कुतीर्थ्य-ध्वान्त-सङ्घात-प्रभेद-घन-भानवे ॥ २ ॥
स्वस्ति श्री-जन्म-गेहं निभृत-निरुपमोर्व्वानलोद्दाम-तेजं
विस्तारान्तःकृतोर्व्वी-वलममलयशश्चन्द्र-सम्भूति-धामं ।
वस्तु-प्रातीद्भव-स्थानकमतिशय-सत्वावलम्बं गभीरं
प्रस्तुत्यं नित्यमम्भोनिधि निभमेसगुं हेय वलोर्व्वीश-
वंशं ॥ ३ ॥
अदरोलु कौस्तुभदोन्दनर्घ्य-गुणमं देवेभदुद्दाम-स-
त्वदगुर्व्व हिमरश्मियुज्वल-कला-सम्पत्तियं पारिजा-
यदुदारत्वद पेम्पनोर्व्वने नितान्तं वाल्दि वानल्ले पु-
ट्टिदनुद्रेजित-वीर-वैरि-विनयादित्यावनीपालकं ॥ ४ ॥
कं ॥ विनयं बुधरं रक्षिसे
धन-तेजं वैरि-वलमनलरिसे नेगल्दं ।

विनयादित्य-नृपाग्रक-
ननुगत-नामार्त्थनमल कीर्त्ति-समर्थं ॥ ५ ॥
आ-विनयादित्यन वधु
भावोद्भव-मन्य-देवता-सन्निभं सद्-
भाव-गुण-भरनमित्त क-
ला-विलासितं केलेयरसियेम्बनु पेसरिं ॥ ६ ॥
आदम्पतिगं तनूभव-
नादं शचिगं सुराधिपतिगं मुन्ने-
न्तादं जयन्तनन्तं वि-
पाद-विदूरान्तरङ्गनेरेयङ्ग-नृपं ॥ ७ ॥
आतं चालुक्य-भूपालन बलद भुजा-दण्डमुद्दण्ड-भूप-
ग्रात-प्रोत्तुङ्ग-भूभृद्-विदलन-कुलिशं वन्दि-सस्यौघ-मेघं ।
श्वेताम्भोजात-देव-द्विरदन-शरदधेन्दु-कुन्दावदात-
ख्यात-प्रोद्यद्यशश्री-धवलितभुवनं धीरनेकाङ्गवीरं ॥ ८ ॥
एरेयनेन्नेगनिसि नेगल्दिर्द्
एरेयङ्ग नृपाल-तिलकनङ्गने चलुवि-
ङ्गरेवङ्ग शील-गुणदि
नेरदेचलदेवियन्तु नोन्तरुमोलरे ॥ ९ ॥
एने नेगल्दवरिर्ग्गं
तनूभवन्नेगल्दरल्ते बल्लाल वि-
ष्णु-नृपालकनुदयादि-
त्यनेम्ब पेसरिन्दमखिल-वसुधा-तलदोल् ॥ १० ॥

अवरोल् मध्यमनागियुं भुवनदोलु पूर्वापराम्भोधिये-
यदुविने कूडे निमिच्चुंबोन्दु-निज-बाहा-विक्रम-क्रीडेयु-
द्भवदिन्दुत्तमनादनुत्तम-गुण-श्रातैक-धामं धरा-
धव-चूडामणि यादवाब्ज-दिनपं श्रीविष्णुभूपालक
॥ ११ ॥

एसेगंसेव येोयतूर्स्तन्-
तलवनपुरमन्ते रायरायपुरं क-
ल्वल बलेद विष्णु-तेजो-
ज्वलनदे वेन्दवु बलिष्ठ-रिपु दुर्गङ्गल् ॥ १२ ॥

इनितं दुर्गम-वैरि-दुर्ग-चयमं कोण्डं निजाचेपदि-
न्दिनिबर्भूपरनाजियोल् तविसिदं तन्नस्व-सद्भावदि-
न्दिनिबर्भानतगिंतनुद्भव-पदम कारुण्यदिन्देन्दुवा-
ननितं लेकदे पेल्वोडब्ज-भवनुं विभ्रान्तनप्पं बलं ॥१३॥

कं ॥ लक्ष्मीदेवि खगाधिप-
लक्षमङ्गे सेदिर्दं विष्णुगेन्तन्ते बलं ।
लक्ष्मा-देवि-लसन्मृग—
लक्ष्मानने विष्णुगप्रसतियेने नेगल्दल् ॥ १४ ॥

अवर्गों मनोजनन्ते सुदती-जन-चित्तमनोल्कोलल्केसा-
ल्ववयव-शोभेयिन्दतनुवेम्बभिधानमनादङ्गना-
निवहमनेच्चु मुव्वनमानदे वीरतनेच्चु युद्धदोल् ।
वविसुवेनादनात्म-भवनप्रतिमं नरसिंह-भूभुजं ॥१५॥

पडे-मातें बन्दु कण्डङ्गमृत-जलधि तां गर्व्वदिं गण्डवातं
नुडिवावङ्गे नेनम्बै प्रलय-समयदोल् भेरियं मीरि बर्प्पी
कडलन्नं कालनन्नं मुलिद कुलिकनन्नं युगान्ताग्नियन्नं
सिडिलन्नं सिंहदन्नं पुरहरनुरिगण्डलनी नारसिंहं
॥ १६ ॥

तदर्द्धाङ्ग-लक्ष्मि ॥

मृदु-पदेयेचलदेवी —
मुदतिये नरसिंह-नृपविगनुपमसौख्य-
प्रदे पट्ट-महादेवी-
पदविगे सलें योग्येयागि धरेयोल् नेगल्दल् ॥ १७ ॥

वृत्त ॥ ललना-लोलेगे मुन्नवेन्तु कुसुमास्त्रं पुट्टिदों विष्णुगं
ललित-श्री-वधु-विङ्गवन्ते नरसिंहचोलिपालङ्गवे-
चल-देवी-वधुगं परार्थ्य-चरितं पुण्याधिकं पुट्टिदों
बलवद्वैरि-कुलान्तकं जय-भुजं वल्लाल-भूपालकं ॥ १८ ॥
रिपु-भूपालेभ-सिंहं रिपु-नृप-नलिनानीक-राका-शशाङ्कं
रिपु-राजन्योघ-मेघ-प्रकर-निरसनोद्भूत-वात-प्रपातं ।
रिपु-धात्रीशाद्रि-वज्रं रिपु-नृपति-समस्तोम-विध्वंसनार्कं
रिपु-पृथ्वीपालकालानलनुदयिसिदं वीर-वल्लाल-देवं ॥ १९ ॥
गत-लीलं लालनालम्बित-वहल-भयोग्र-ज्वरं-शूत्रं रं स-
न्मृत-शूलं गोलनुच्चैःकर-धृत-विलसत्पल्लयं पल्लवं-प्रो-
द्भित-चेलं चोलनादं कदन-वदन-दोलु भेरियं पोरसेवीरा-
धिप-भूभृज्जात-कालानलनवुल-बलं वीर-वल्लाल-देवं ॥ २० ॥

भरदिन्दं तंत्र दोर्म्मर्व्वदिनोडेयरस काय्दु कादल्कणं पू-
ण्डिरे मल्लाल-क्षितीशं नडदु बलसियुंमुत्तेसेना गजेन्द्रो-
त्कर-दन्ताघात-सञ्चूर्णितशिखरदोलुद्भिन्नयोत्सिक्तदंभा-
सुर-कान्ता-देश-कोश-प्रभु-जनक-दयोपान्वितं पाण्डयभूपं
॥ २१ ॥

चिरकालं रिपुगलमाघ्यमेनिसिर्दं भुक्तियंमुत्तिदु-
र्द्धर-तेजो-निधि धूलि-गोटेयने कोण्डाकाम-देवावनी-
श्वरन मन्दोडेय क्षितीश्वरनमाभण्डारमं लोयर'
तुरग-व्रातमुमं समन्तु पिडिदं बल्लाल-भूपालकं ॥२२॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरं द्वार-
वतीपुरवराधीश्वरं तुलुवमल-जलधि-बडवानलं दायाद-दावानलं
पाण्डय-कुल-कमलवेदण्ड गण्ड-भेरुण्ड मण्डलिक-वेण्टेकार
चोल-कटक-सूरेकार। सङ्ग्राम-भीम। कलि-काल-काम। सकल-
वन्दि-वृन्द-सन्तर्पण-समग्र-वितरणविनोद। वासन्तिका देवी-
लब्ध-वर प्रसाद। यादव-कुलाम्बर-शुमणि। मण्डलिक-
मकुट-चूडामणि कदन-प्रचण्ड मल्लपरोल्गण्ड शनिवारसिद्धि
गिरि-दुर्ग्ग-मल्ल नामादि-प्रशस्ति-सहितं श्रीमत्त्रिभुवन-मल्ल
सेलकाडु-कोङ्गु-नङ्गलि-नोलम्बवाडि-बनवसे-हानुङ्गल-गोण्ड-
भुज-बल-वीर-गङ्ग-प्रताप-होय्सल वीर-बल्लाल देवरखिल-
मण्डलमं दुष्ट-निग्रह-शिष्ट-प्रतिपालन-पूर्व्वकं सुखसङ्कथा-विनो-
ददि राज्यं गेय्युत्तिरे।

-त्पाद-पद्मोपजीवि ॥

जनकं शिष्टेष्ट-चिन्तामणि जननि जगत्ख्यातेयक्कव्वेयेन्द-
न्दिनिसं श्री-चन्द्रमौलि-प्रभुगं सममे कालेय-मन्त्रीश वर्गं
॥ २३ ॥

पति-भक्तं वर-मन्त्र-शक्ति-युतनिन्द्रङ्गेन्तु भास्वद्-बृह-
स्पति-मन्त्रीश्वरनादनन्ते विलसद्बल्लाल-देवावनी-
पतिगं-विश्रुत-चन्द्रमौलि-विबुधेशं मन्त्रियादं समु-
न्नत-तेजो-निलयं विरोधि-सचिवोन्मत्तेभ-पञ्चाननं ॥ २४ ॥

वर-तर्काम्बुज-भास्करं भरत-शास्त्राम्भोधिचन्द्रं समु-
द्धुर-साहित्य-लतालवालनेसेदं नाना-कला-कोविदं ।
स्थिर-मन्त्रं द्विज-वंश-शोभितनशेषस्तुत्यनुद्यद्यशं
धरेयोल् विश्रुत-चन्द्रमौलि-सचिवं सौजन्य-जन्माश्रयं
॥ २५ ॥

तदर्धाङ्ग-लक्षिम ॥

घन-बाहा-बहुवोर्म्मि-भासिते मुख-व्याकोश-पद्मेक्षण-म-
ण्डने दृङ्नीन-विलासे नाभिविततावर्त्तेलावण्य-पा-
वन-वाग्मन्यूते चन्द्रमौलिगधुवी श्री दाचियकं जग-
ज्जन-सन्तुत्यं कवत्व-दूर नुतं गङ्गा-देवि तानभ्रते ॥ २६ ॥

स्तुत्यनवरत-विनमदमर-मौलि-माला-मिलित-चरण-नलिन-
युगल-भगवदर्हत्परमेश्वर-स्नात-गन्धोदक-पवित्रोत्तमाङ्गं पुं ५१

श्रिंधानुन-दान-समुद्युक्तुमप्प कोमनु दिरिव-इंग्लिडियाधिप-
देयिन्-बरवेन्ते-दाडे ॥

परकोर्ण-वर्णिसिदाता—

द्विरदोर्वं माडुवाडि-नाड विनूतं ।
परम-श्रावकनमलं
परमियोलो-श्रियेयनायकं विभुवेसेदं ॥ २७ ॥
श्रावन्न सहित कोवाम्बुज-
शीतांशु-शास्त्रवोद-विदग्धराशं-
पोल-परोक्षंगणिक-वि-
नीतंगे चन्द्रवेगवतेयरोरुण्डे ॥ २८ ॥

वसुत्र ॥

जिन-पति-पद-सरसीरुह-
विनमद्भृङ्गं समस्त-सज्जनानङ्गं ।
विनय-निधि-विरव-श्रुतियोलू
अनुपमनो बम्म-देव इम्गडे नेगल्दं ॥ २९ ॥

वत्सरोदर ॥ गत-दुरितनमल-चरितं
विलस्त-सन्तार्पणाखिलार्थि-प्रकरं ।
क्षितियोल्-याचेय-नायक-
नति-धीर कल्प-वृक्षं गंङ्गे वन्दं ॥ ३० ॥

वत्सरोदरि ॥

सरसिरुह-वदने घन-कुचे
हरिणाक्षि मदोत्कट-कोकिल-स्वने मदन-

त्करि-पनि-गमने तनूदरि
धरेयोल् फालक्ष्ये रूपिनागरमादम् ॥ ३१ ॥

तत्सहोदरि ॥

धरेयोल् रूढिग मासयाडिपरसं हेम्माडि-दं गुणा-
करना-भूषन चित्त-वल्लभे क्रमत्सौभाग्ये गङ्गानिधा-
कर-तारापद-हार-हार-शरदभ्रोदस्फुरत्कीर्त्ति-भा-
सुरयप्पाचल-देवि विश्व-भुवन-ख्यातियं ताल्दिदल् ॥
॥ ३२ ॥

तत्सहोदरं ॥

वर-विद्वज्जन-कल्प-भूजनमनाम्भोराशि-गम्भीरनु-
द्धुर-दर्प्प-प्रतिनायक-प्रकर-तीव्र-ध्वान्त-सङ्घात-सं-
हरणार्क्कं शरदभ्रशुभ्रविलसत्कीर्त्यङ्गनानङ्गमं
धरेयोल् सेवण-नायकं नेगल्दनुपद्धैर्य-शौर्य्याकरं ॥
॥ ३३ ॥

कं ॥ गिरिसुतेगे जह्नुकन्येगे
धरणी-सुतेगत्तिमब्बेगनुपम-गुण-दोल् ।
दोरेयेनलिन्तीसकलो-
र्व्वरेयोल् बाचब्बे शीलवति सति नेगल्दल् ॥३४॥

तत्पुत्रं ॥

परसैन्याहि-विहङ्गनूर्ज्जितयशस्सङ्गं जिनेन्द्रांघ्रि-प-
द्म-रजो-भृङ्गनुदार-तुङ्गनेसेदं वन्नोप्पुवीसद्गुणो-

त्करदि देशिय-दण्डनायकनिन्नाभिष्टार्थसन्दायकं
धरेयोल् धर्म्मेय-नायकंनिरिवलदोनानाघसन्त्रायकं ॥३५॥

वृत्तनिवे ॥

यतपत्रेक्षणे मल्लिसेट्टि-विभुगं निरवद्य-चारित्र-भा-
सितेगं माचये-सेट्टिकुव्वेगवनूनात्मीय-सौन्दर्य्य-नि-
र्जित-चित्तोद्भवकान्तेयुद्भविसिदल् देोचव्वे सत्कान्ते सा-
र-नुषारांशु-समप्रभा-धवलिताशा-चक्रेयाधात्रियोल् ॥
॥ ३६ ॥

धर्म्मेय-नायकनतुजं ॥

मार मदनाकारं
हार-क्षीराब्धि-विशद-कीर्त्याधारं ।
धीरं धरेयोल् नेगल्दं
दूरीकृत-सकल-दुरित-विमलाचारं ॥ ३७ ॥

वरतुजे ॥

हरिणी-लोचने पद्मवानने घनश्रोणिस्तनाभोग-भा-
सुरं बिम्बाधरे कोकिल-स्वने सुगन्ध-श्वासे पञ्चचतु-
शरि-भृङ्गावलि-नीलकेशे-कल-हंसीयानेयीकम्बुक-
न्धरेयप्पाचलदेवि-फल्तु-सतियं सौन्दर्य्ये दिन्देवियल् ॥
॥ ३८ ॥

वरतुजे ॥

इन्दु-मुखि मृग-विलोचने
मन्दर-गिरि-धैर्य्ये गुरु-कुच-द्वये भद्रो-

वृन्द-शिति-केश-विलसिते
चेन्दव्वे विनूतेयादलखिनोर्व्वरेयोल् ॥ ३९ ॥

वदनुजं ॥

हार-हरहास-हिम-रुचि-
तारगिरि-स्फटिक-शङ्ख-शुभ्राम्बुरुह-
चोर-सुर-सिन्धु-शारद-
नीरद-भासुर-यशोऽभिरामं कामं ॥ ४० ॥
सिरिगं विष्णुगवेन्तु मुन्नवसमाख्यं पुट्टिदों शम्भुगं
गिरिसञ्जातेगवेन्तु षड्वदननादों पुत्रनन्तोगली-
धरणी-विश्रुत-चन्द्रमौलि-विभुगं श्रीयाचियक्कङ्गवु-
द्भुर-तेजंगुणि सोमनुद्भविसिदं निस्सीम पुण्योदयं ॥४१॥
वर-लक्ष्मी-प्रिय-वल्लभं विजयकान्ताकर्णपूरं विभा-
सुर-वाणी-हृदयाधिपं तुहिन-तार-चीर-वाराशि-पा-
ण्डुरकीर्त्तीशनुदग्र-दुर्द्धर-तुरङ्गारूढ़-रेवन्तनु-
द्भुर-कान्ता-कमनीयकामनेसेदं श्री सोमनी धात्रियोल्
॥ ४२ ॥
परमाराध्यननन्त सौख्य-निलयं श्री-मज्जिनाधीश्वरं
गुरु-सैद्धान्तिक-चक्रवर्त्ति नयकीर्त्ति-ख्यात-योगीश्वरं ।
धरणी-विश्रुत-चन्द्रमौलि-सचिवं हृत्कान्तनेन्दन्दडा-
देरियोयाचलदेविगिन्दु विशदोद्यत्कीर्त्तिगी धात्रियोल।४३।
भरदिं बेलुगोल-तीर्थ-दोल् जिन-पति-श्री-पार्श्व-देवोद्धम-
न्दिरमं माडिसिदल् विनूत नयकीर्त्तिख्यात-योगीन्द्रभा-

गुरु-शिष्योत्तम-बालचन्द्र-मुनि-पादाम्भोजिनीभक्तं सु-
शिवपथाचलदेवि कोर्त्ति-वनिताधा-चक्रे सङ्कल्पिवि.४५
वद्गुरुहस्त श्रीसुवनसु देशिगगण पुस्तकगच्छ कौण्ड-
कुन्दान्वयदोल् ॥

कं ॥ विदित-गुणचन्द्र-सिद्धा-
न्त-देव-मुनिनाथ-वंदि परमत-गुभुङ्-
भिदुर नयकीर्त्ति-सिद्धा-
न्त-देवमेसदं गुणीन्द्रगणस्त-म-ह ॥ ४५ ॥

वर-सौद्धान्त-पयोधि-वर्द्धन-सदाराकाधिपं सार-दा-
न-दधि-भासित-कीर्त्ति भैल सिरिनन्दिसिद्धान्तदेव मुदं-
भर-गाम्भीर्यदि मेरु-भास पवने जयपाकुभ-प्रात भा-
स्वती-भालनयकीर्त्ति देव-मुनिपं विख्यातिवं तालिदरा ४६
वरिष्ठम् ॥

वर-सौद्धान्त-नय-भानुकीर्त्ति मुनिपर्गे-भासमाधन्द्र व-
भासमाधुत मायनन्दि मुनिराजर्गेन्द्रनन्दि क्षती
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

गौरि तपङ्गलं नेगल्दु तां नेरेदल् गड चन्द्रमौलियोल्
नारियगिन्नदे-सोगगु पेल्पलवुं भवदोल् निरन्तरं ।
सार-तपङ्गलं पडेदु तां नेरेदं गड चन्द्रमौलि-गं-
भीरेयनिप्प तन्नननिपाचलेवोल् सोगगिङ्गनेन्तरार् ॥४९॥

शकवर्षद मायिरद नूर नाल्कनेय प्लव-संवत्सरद पौष्य-शुद्ध-सप्तदिगेसुक्रवारदुत्तरायण संक्रान्तियन्दु ॥ ॥ शीलदि चन्द्रमौलि-विभुगाचल-देवि-निजोद्भ-कान्तेगा-
लोल-मृगाक्षि-मादिसिद बेल्गोल-तीर्थद पार्श्वदेवर-
र्च्चालिगे बंडे बम्मेयनहवियनिसनुदारि-वीर-व-
ल्लालनृपालकन्धरेयुमच्चियमुल्लिनमंब्दे सल्विनं ॥५०॥

तदयनिपनिस दत्तिय-
नदनाचले बालचन्द्र-मुनि-राजर्गं-
पद-युगमं पूजिसि चतु-
रुदधि-वर निमिरे कीर्त्तिं जिनपतिगिसलु ॥ ५१ ॥

अन्तु धारा-पूर्व्वकं माडि कोट्ट तट्ट इम-सीमे । मूड कोरेय हल्लं । अल्लि तेङ्कु मेट्टरे । अल्लिं तेङ्कु हिरिय-उंदारि । अल्लि तेङ्कु आमद-मर । अल्लितेङ्कु मेलिय अनोब्बे । अल्लि तेङ्कुल्लुहा-
डोब्बे । अल्लि तेङ्कु नागर-कट्टक होद हेदारि । अल्लि पडुव कोन्-
तट्टिय हल्लं । अल्लि पडुव मर-नेल्लिय गुण्डु । अल्लि पडुव मेट्टरे । अल्लि पडुव हिरियरेय कल्लाल्लि । अल्लि पडुवलु कडार कोडि । अल्लि पडुव कल्लाणि । अल्लि पडुव बलिद-दारियोब्बे । अल्लि बडग-होलिय दारि । अल्लि बडग देवबन कोरेय

ताय्वक्क । अप्पि मडग हुणिसेय गुण्डु । अप्पि मडगल्लालद गुण्डु । अप्पि मूडलोन्बे । अप्पि मूड नट्ट-गुण्डु । अप्पि मूडल-सेयलियनगुड्डे । अप्पि मूडलालद-मर । अप्पि मूडल् केम्बरय इल्लम सीमे कूडिस्तु ॥ स्वस्ति वृत्ति ॥ श्री-करद केरियणन तम्म बाचणन कैयि मार कोण्डु बेक्कन कीलकेरय पामगट्टम बिट्टरदर सीमे । मूड सागर । तेङ्क सागर । पडुव हुलगट्ट । मडग नट्ट कल् । हिरिय अक्कियब्बेय केरेय सेट । केलङ्गेरे । गङ्ग-समुद्रद कीलेरिय सेट । बमदिय मुन्दण अङ्गडि इप्पत्तु ॥ नानादेसियुं नाडुं नगरमुं देवरद-विधार्च्चनेगे बिट्टाय इवसद हेरिङ्गे बल्ल १ अडकेय हेरिङ्गे हाग १ मेलसिन हेरिङ्गे हाग १ अरिसिनद हेरिङ्गे हाग १ इक्षिय मल्लवेगे हाने १ सीरेय मल्लवेगं होङ्गे वीस १ एलेय हेरिङ्गे अडनूरु ॥

दानं वा पालनं वापि दानाच्छ्रेयोऽनुपालनं ।
दानात्स्वर्गमवाप्नोति पालनादच्युतं पदं ॥ ५२ ॥
बहुभिर्व्वसुधा दत्ता राजभिस्सगरादिभिः ।
यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलं ॥ ५३ ॥
स्व दत्तां पर-दत्तां वा यो हरेत वसुन्धरां ।
षष्टिर्व्वर्ष-सहस्राणि विष्ठायां जायते कृमिः ॥ ५४ ॥

मङ्गलमहा श्री श्री श्री ॥

[इस लेख में चन्द्रमौलि मंत्री की भार्या आचलदेवी (अपर नाम आचियक्क) द्वारा निर्मापित कराये हुए जिन मन्दिर (अक्कन बसदि) को चन्द्रमौलि की प्रार्थना से होय्सल वीर बल्लाल द्वारा सम्मेलन-हल्लि नामक ग्राम का दान दिये जाने का उल्लेख है। प्रथम के वाक्य

पद्यों में होयसल वंश के नरेशों का वर्णन है। जिसकी वंशावली इस प्रकार दी है—

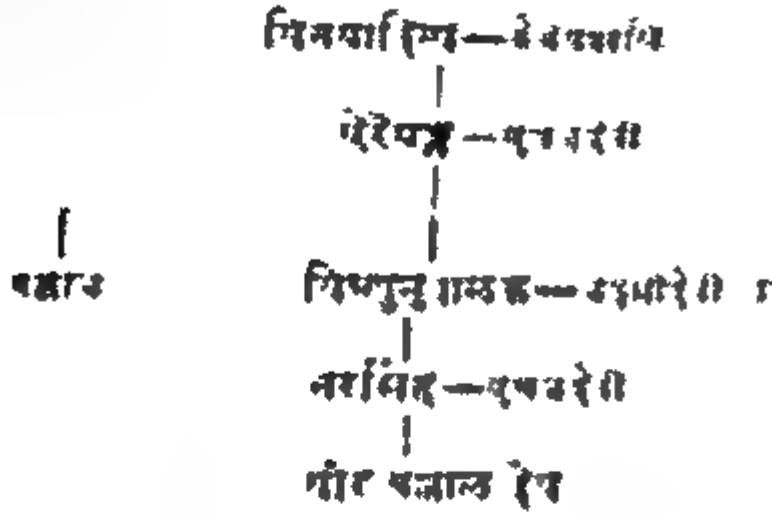

विष्णुवर्धन की कीर्ति में कहा गया है उन्होंने कई युद्ध जीते और अपने शत्रुओं के छक्के छुड़ा दिये जैसे कि कोंगुदेश, नङ्गलि तथा तलकाडु आदि।

वीर वल्लाल देव की युद्ध-दुन्दुभी बजते ही उदय नरेश की शान्ति भङ्ग हो गई, गुर्जर-नरेश को भीतिग्रस्त हो गया, गौड़-नरेश को मूर्छा आ गया, पाण्ड्य-नरेश पलायनवृत्ति लेकर खड़े हो गये, और चोल-नरेश के वस्त्र स्खलित हो गये। चोलेश्वर-नरेश ने अभिमान में आकर युद्ध करने की ठानी, पर वल्लाल-नरेश ने उद्यत हुये के शिरों को चूर्ण कर डाला और पाण्ड्य-नरेश को उसकी अङ्गनाओं-सहित कैद कर लिया।

पद्य बाइस से आगे इन्हीं द्वारवती के बाद वंशी नरेश त्रिभुवन-मल्ल वीर वल्लाल देव का परिचय है। लेख में इनकी अनेक प्रताप-सूचक पदवियों तथा इनके तलकाडु, कोंगु, नङ्गलि, नोडम्बवाडि, बनवासे और हानुंगल की विजय का उल्लेख है। शम्भुदेव और अक्कले के पुत्र चन्द्र-मौलि इन्हीं त्रिभुवन मल्ल वीरवल्लालदेव के मंत्री थे।

पद्य सत्ताइस से चालीस तक आचल देवी के वंश का वर्णन है जो इस प्रकार है—

चन्द्रमौलि की भार्या आचलदेवी की वंशावली

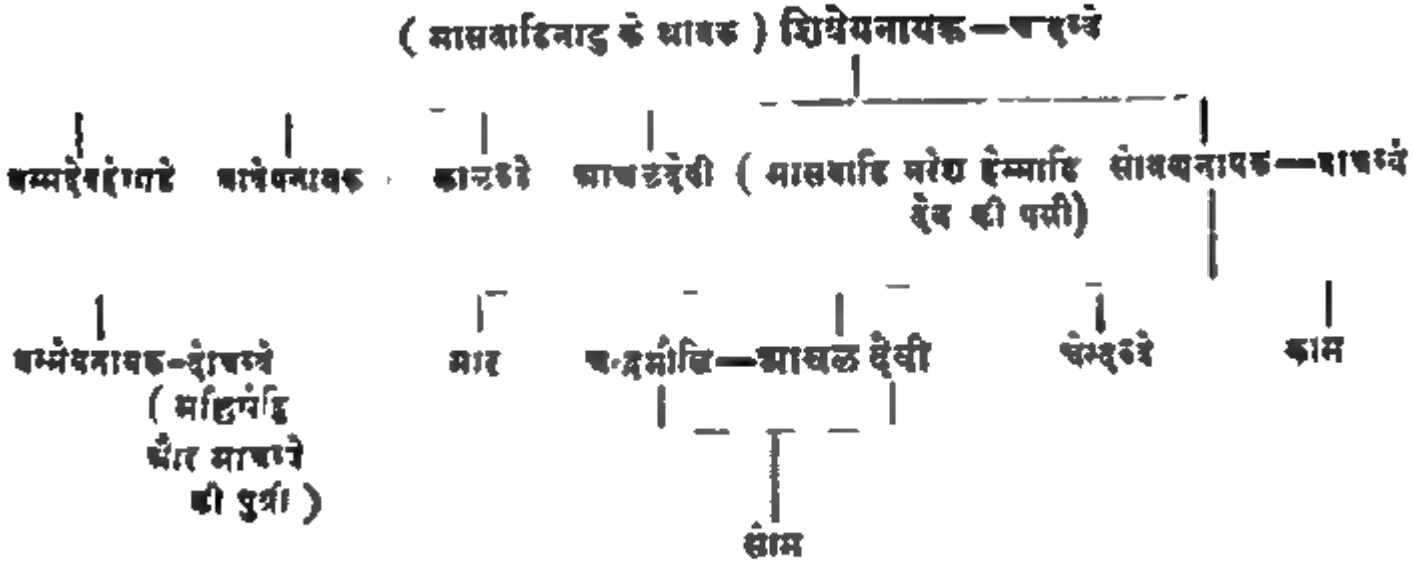

आचल देवी नयकीर्ति के शिष्य बालचन्द्र की शिष्या थी। नय-कीर्ति सिद्धान्तदेव मूलसंघ, देशियगण, पुस्तक गच्छ, कुन्दकुन्दान्वय के गुणचन्द्र सिद्धान्तदेव के शिष्य (सुत) थे। नयकीर्ति के शिष्यों में भानुकीर्ति, प्रभाचन्द्र, माघनन्दि, पद्मनन्दि और मेमिचन्द्र थे।]

१२५ (३२८)

शक्कुन वस्ति के प्रधान प्रवेश-द्वार के सामने की दक्षिणी दीवाल पर

(शक सं० १३६८)

क्षयाह्वय-कृ-वत्सरे द्वितय-युक्त-वैशाखके
महो-तनय-वारके युत-बलर्क्ष-पक्षेतरे।
प्रताप-निधि-देवराट् प्रलयमाप इन्द्रावासमं
चतुर्दश-दिने कथं पितृपतेर्निवार्या गतिः ॥

१२६ (३२९)

उसी दीवाल के पूर्व कोण पर

(शक सं० १३२६)

मारण-संवत्सरद भाद्र-पद-बहुल-दशमिय सो-
मवारदन्दु हरिहररायनु स्वर्गक्के सन्दनादन्दु ॥

१२७ (३३०)

उपर्युक्त लेख के नीचे

(शक सं० १३६८)

क्षयाख्य-शक-वत्सरे-द्वितय-युक्त-वैशाख के
महीतन [य]- वारके यु..... .. ..

१२८ (३२३)

नगर जिनालय के बाहर

(? शक सं० ११२८)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥
भय-क्षोभ-द्वय-दूरनं मदन-घोर-ध्वान्त-तीव्रांशुवं
नय-निक्षेप-युत-प्रमाण-परिनिर्णीतार्थ-सन्दोहनं ।
नयनानन्दन-शान्त कान्त तनुवं सिद्धान्तचक्रेशनं
नयकीर्ति व्रति-राजनं नेनेदोडं पापोत्करं पिङ्गुगुं ॥ २ ॥

अवर शिष्यरु ॥

श्री-दामनन्दि त्रैविद्य-देवर श्री-भानुकीर्त्ति-सिद्धान्त-देवर बालचन्द्र-देवर प्रभाचन्द्र-देवर माघनन्दि-भट्टारक-देवर मन्त्रवादि-पद्मनन्दि-देवर नेमिचन्द्र-पण्डित-देवर इन्तिवर शिष्यरु नयकीर्त्ति-देवरु ॥

धरेयोल् खण्डलि-मूलभद्र-विलसद्-वंशोद्भवर्सत्य-शौ-
चरवर् सिंह-पराक्रमान्वितरनेकाम्भोधि वेला-पुरा-
न्तर-नाना व्यवहार-ज्ञान-कुशलर् ख्यातर-वत्न-त्रया-
भरणर् श्रवणगुल-तीर्थ-वासि-नगरङ्गल् स्तुत्यं शान्तिदरु ॥
॥ ३ ॥

श्रीगोम्मटपुरद समस्त-नगरङ्गल्गे श्रीमत्-प्रताप-चक्रवर्त्ति वीरबल्लाल-देवर कुमार सोमेश्वर-देवन प्रधानं हिरिय-

माणिक्य-भण्डारि-रामदेव-नायकर मन्त्रियिल्लु श्रीमन्नय-कीर्ति-देवरु कोट्ट शासनपत्यलेय-क्रमवेन्तेन्दडे गोम्मट-पुरद मनेदेरे शुक्ल-संवत्सर मोदलागि आचन्द्रार्क्क-तारं वरं सलुवन्तागि हणवोन्दर मोदलिङ्गे एन्दुहणव तेत्तु सुखविप्पर तेलिगर गाणवोलगागि अरमनेय न्यायवन्यायमल्लत्तय एनु मन्दडं आस्थलदाचार्य्यरु तावे तेत्तु निर्ण्णयिसुवरु श्रीकृत्त कारण कर्त्तेयिङ्ग ई-शासन-मर्य्यादेय मीरिदवरु धर्म्म-स्थलव कंडिसिदवरु ई-वीर्य्यद नखरङ्गलोलगे श्रीव्वरिव्वरु प्रामिणिगलागि आचार्य्यरिगे कौटिल्य-बुद्धिय कल्पिसि वोन्दकोन्द नेनदु तोल्लसादव माडि हाग वेल्लेयनलिहि वेडिकोल्लियेन्दु आचार्य्यरिगे मनंगोट्टडे अवरु समय-द्रोहरु राजद्रोहरु वणिग-पंगयरु नेत्त-गयरु कोलेकवर्त्तेगोडेयरु इवनरिदु नखरङ्गलु उपेक्षिसिदरादडं ई-धर्म्मव नग्वरङ्गले कंडिसिदवरल्लदे आचार्य्यरं दुर्ज्जनरं कंडिसिदवरल्ल नखरङ्गल अनुमतविल्लदे श्रीव्वरिव्वरु प्रामिणिगलु आचार्य्यर मनेयनके अरमनेयनके होकडे समय-द्रोहरु मान्य-मन्नणेय पूर्व्व-मर्य्यादे नडसुवरु ई-मर्य्यादेय किडिसिदवरु गङ्गे-तडिय कविलेयं ब्राह्मणं कोन्द पापद होहरु।

स्व-दत्तां पर दत्तां वा यो हरेति वसुन्धरां।
षष्टिर्व्वर्ष-सहस्राणि विष्टायां जायते कृमिः ॥ ४ ॥

[नयकीर्त्ति सिद्धान्तचक्रवर्त्ति के शिष्य दामनन्दि, भानुकीर्त्ति, बालचन्द्र, प्रभाचन्द्र, माधनन्दि, पद्मनन्दि और मेमिचन्द्र हुए। इनके शिष्य नयकीर्त्तिदेव हुए। नयकीर्त्तिदेव ने वीरबल्लालदेव के कुमार

सोमेश्वरदेव के मंत्री रामदेव नायक के समक्ष बेल्गोल नगर के व्यापारियों को यह शासन दिया कि वे सर्वदेव के लिये आठ 'हण' का टैक्स दिया करेंगे जिसका एक 'हण' प्याज आ सकता है। इसके अतिरिक्त वे और कोई टैक्स नहीं देवेंगे। यदि राज्य की ओर से कोई व्याज, कन्याद व मडमय टैक्स लगाये जावेंगे तो स्वयं बेल्गोल के आचार्य ही उसका प्रबन्ध करेंगे। यदि कोई व्यापारी आचार्य को छल-कपट सिखावेंगे तो वे धर्म के और राज्य के द्रोही ठहरेंगे। व्यापारियों को अपने अधिकार पूर्ववत् ही रहेंगे। वे व्यापारी संदलि और मूलभद्र के वंशज जैनधर्मावलम्बी थे।]

[नोट—श्रवण बेल्गोल पर पूरा अधिकार जैनाचार्य का ही था। वहां के टैक्स आदि का भी वे ही प्रबन्ध करते थे।]

१२६ (३३४)

नगर जिनालय में दक्षिण की ओर

(शक सं० १२०५)

स्वस्ति श्री-मूलसङ्घेऽस्मिन्बलात्कार-ग.....

..... शासनाराध्य शासकृत् ॥ १ ॥

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।

जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ २ ॥

नमः कुमुदचन्द्राय विद्या-विशद-मूर्त्तये ।

यस्य वाक्-चन्द्रिका भव्य-कुमुदानन्द-नन्दिनी ॥ ३ ॥

नमो नग्नजनानन्द-स्यन्दिने साधनन्दिने ।

जगत्प्रसिद्ध-सिद्धान्त-वेदिने चित्तमोदिने ॥ ४ ॥

स्वस्ति श्री जन्म-गेहं निभृत-निरुपमौर्व्वानलोद्दामतेजं
विस्तारान्तःकृतोर्व्वी-वलयमयश-यशश्चन्द्र-सम्भूति-धामं।
वस्तु-व्रातोद्भव-स्थानक्रमतिशय-सत्त्वावलम्बं गभीरं
प्रस्तुत्यं नित्यमम्भोनिधि-निभमेसेगुं होय्सलोर्व्वीश-वंशं
॥ ५ ॥

स्वस्ति श्री-जयाभ्युदयं **सकवर्ष १२०५** नेय **चित्रभानु संवत्सर श्रावण सु १०** वृ दन्दु स्वस्ति समस्त-प्रशस्ति-सहितं श्रीमन्महा-मण्डलाचार्य्यरुमाचार्य्य-वर्य्यरुं श्री-मूल-सङ्घद देसिगर देशिय-गणाग्रगण्यरुम् राज-गुरु-गलुमप्प **नेमिचन्द्र**-पण्डित-देवर शिष्यरु **बालचन्द्र**-देवरु श्रीमन्महामण्डलाचार्य्यरुमाचार्य्य वर्य्यरुं **होय्सल**-राय-राज-गुरुगलुमप्प श्री-**माधवन्दि**-सैद्धान्त-चक्रवर्त्तिगल प्रिय-शुद्धुगलुमप्प श्री-वेलुगुल-तीर्त्थद बलात्कार-गणाग्रगण्यरुमगण्यपुण्यरुमप्प समस्त-माणिक्य-नगरङ्गलु नलवर-जिनालयद आदि-देवर अमृत-पडिगे **राचेयन**हल्लिय होलवेरेगोलगाद एडवलगेरेय केलगे पूर्व्वदत्ति मोदलेरिय तोटमुं अमृत-पडिय गद्दे...आरर भूमिय सेरुवेगे आ-**बालचन्द्र**-देवर कय्यलु समस्त-माणिक्य-नगरङ्गलु विडिसि कोण्ड वलय-शासनद क्रमदिन्दं दन्दे **राचेयन**-हल्लिय **मल्लिकार्जुन**-देवर देव-दानद गद्दे होरगागि आ-गद्देयि मूडलु नट्ट कल्लु। अल्लिं तेन्क हामरे गल्लु। अल्लि तेङ्क गिडिगनालद गुण्डुगल्लि मूडण किरु-कट्टद गद्दे। नीरोत्तोलगाद चतुस्सीमे। आ-किरु-कट्टद पडुवण कोडियलु हुट्टु गुण्डिनलि बरद मुकोडे हसुगे नेट्टे अल्लि तेङ्क हिरिय वेट्टद

सप्पल हामरे-गल्लु। आव मूडय देवलङ्गेरय तेङ्कण कोडिय गुण्डि-नलि वरद मुकोडे हसुवे नेट्टे आ-केरे-नीरोतिङ्गे सीमे। आकेरेय बडगण-कोडिय गुण्डि-नल्लि वरद मुकोडे हसुवे नेट्टे इन्तीकेरेगुं किरु-कटे वोलगाद चतुस्सीमेय गडे ॥

[इस लेख में चुमुरुक्कल और माघनन्दि को नमस्कार के पश्चात् होय्सल वंश की कीर्ति का उल्लेख है और फिर कहा गया है कि उक्त तिथि को इंगलेश्वर, देशिय गण, मूलसंघ के नेमिचन्द्र पण्डितदेव के शिष्य बालचन्द्रदेव और बेल्गोल के समस्त जौहरियों (माणिक्य नगारुज) ने नगर जिनालय के आदिदेव की पूजन के हेतु कुछ भूमि का दान दिया। यह भूमि उन्होंने बालचन्द्रदेव से खरीद की थी। ये जौहरी होय्सलवंश के राजगुरु महामण्डलाचार्य माघनन्दि के शिष्य थे। लेख के प्रथम पद्य में शाकसार नामक किसी शास्त्र के कर्ता का उल्लेख रहा है। यह पद्य मिल जाने से आचार्य का नाम नहीं पढ़ा गया]

१३० (२३५)

नगर जिनालय में उत्तर की ओर

(शक सं० ११११८)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छने।
जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासने जिन-शासने ॥ १ ॥

स्वस्ति-श्रीजन्म-गेहं निभृत-निरुपमोर्व्वीलोकाभरणं जे
विम्बाराभ्यन्तःकृतार्हत्तिलकमखिल-यशश्चन्द्र-सम्भूति-धामं।
वस्तु-श्रातोद्भव-ध्वानक्रमतिशय-सल्लावलम्बं गभीरं
प्रस्तुत्यं नित्यमम्भो-निधि-निभमेसगुं होय्सलोर्व्वीश-वंशं

॥ २ ॥

मदरोल् कौस्तुभदेान्दनग्र्यगुणमं देवेभदुद्दाम-स-
त्वदगुर्व्वं हिम-रश्मियुज्वल-कला-सम्पतियं पारिजा-
तदुदारत्वद पेम्पनेार्व्वने नितान्तं वाल्दि वानल्ले पु—
ट्टिदनुद्वेजित-वीर-वैरि-विनयादित्यावनी-पालकं ॥ ३ ॥

क ॥ विनयादित्य-नृपालन

तनु-भवनेरेयङ्ग-भूभुजं वत्तनयं ।
विनुतं विष्णु-नृपालं
जनपति तदपत्यनेसेदनीनरसिंहं ॥४ ॥

तत्पुत्रं ॥

गव-लीलं लालनालम्बित-बहल-भयोग्र-ज्वरं गूर्ज्जरं स-
न्धुत-शूलं गौलनुच्चैः-कर-धृत-विलसत्पल्लवं पल्लवं प्रो-
ज्झित चेलं चोलनादं कदन-वदनदोल् भेरियं पोय्से वीरा-
हित-भूभृज्वाल-कालानलनतुलबलं वीर-बल्लाल-देवं
॥ ५ ॥

चिरकालं रिपु-गल्गसाध्यमेनिसिद्दुच्चैर्यं मुक्ति दु-
र्द्धर-तेजेा-निधि-धूलिगेाटेयने केाण्डाकाम-देवावनी-
श्वरनं सन्दोडेय क्षितीश्वरनभण्डारमं स्रोयर्
तुरग-श्रातमुमं समन्तु पिडिदं बल्लाल-भूपालकं ॥६॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द-महा मण्डलेश्वर द्वारवती-
पुरवराधीश्वर । तुलुव-बल-जलधि वडवानल । दायाद-
दावानल । पाण्डय कुल-कमल-वेदण्ड । गण्ड-भेरुण्ड ।
मण्डलिक - बेंटेकार । चोल कटक-सूरेकार । सङ्ग्राम-भीम ।

कसि-काल-काम । मकल-चन्द्र-कुन्द-मन्तर्पाल-समय-विवरण विनोद । यासन्तिका-देवी-लब्ध-वर-प्रसाद । यादव-कुलाम्बर-तुर्मणि । मण्डलिक-मकुट-चूडामणि कदन-प्रचण्ड मल्ल-परोल्-गण्ड नामादिप्रशस्ति-सहितं श्रीमत्—त्रिभुवनमल्ल-तलकाडु कोङ्कु-नङ्गलि नोणम्बवाडि-चनयमे हानुङ्गल् लोकिगुण्डि-कुम्मट-एरम्बरगेयोलगाद समस्त-देशाद नानादुर्गाङ्गलं लीला-मात्रदि साध्यं माडिकोण्ड भुज-पञ्ज-वीर गङ्ग-प्रताप-चक्रवर्ति होय्सल वीर-बल्लाल-देवर् समस्त-महीमण्डलं दुष्ट-निग्रह-शिष्ट-प्रतिपालन-पूर्वक सुखसङ्कथाविनोददि राज्यं गेय्युत्तिरे । तदीय-करतल-कलित-कराल-करवाल-धारा-दलन-निष्पन्नोद्धत-चतुर्पयोधि-परिखा-परीत-पृथुल-पृथ्वी-वलयान्तर्भवित्वं श्रीमद्-विद्य-कुक्कुटेश्वर-जिनाधिनाथ पद-कुशेशयाराधकत्वमुं श्रीमाकमठ-पार्श्वदेवादि-नाना-जिनवरागार-मण्डितमुमप्प श्रीमद् बेलोल-तीर्थद श्रीमन्महा-मण्डलाचार्य्यरेन्नप्परेन्दडं ॥

भय-लाभ-द्वय-दूरनं मदन-घोर-ध्वान्त-तीव्रांशुवं
नय-निक्षेप-युत-प्रमाण-परि-निर्मीतार्थ-सन्दोहनं ।
नयनानन्दन-शान्त-कान्त-तनुवं सिद्धान्त-चक्रेशनं
नयकीर्त्ति-व्रति-राजनं नेनेदोडं पापोत्करं पिङ्गुगु ॥ ७ ॥

तच्छिष्यर् श्री-दामनन्दि-त्रैविद्य-देवरं । श्री भानुकीर्त्तिसिद्धान्त देवरं। श्री बालचन्द्र-देवरं । श्री-प्रभाचन्द्र देवरं । श्री माधवनन्दि-भट्टारक-देवरं । श्री मन्त्रवादि-पद्म-

नन्दि-देवरं । श्री नेमिचन्द्र-पण्डित देवरं । श्री-मूल-सङ्घ देशिय-गणद पुस्तक-गच्छद श्री कोण्ड-कुन्दान्वय-भूषरर श्रीमन्महामण्डलाचार्य्यर् श्रीमन्नयकीर्ति-सिद्धान्त-चक्र त्तिगल गुरुं ॥

क्षितितलदोल् राजिसिदं
भूत-सत्यं नेगल्द नागदेवामात्यं ।
प्रतिपालित-जिन-धैर्यं-
कृत-कृत्यं योगमदेव-सचिवापत्यं ॥ ८ ॥

अनुनिते ॥

मुरहिं पट्टण-स्वामियेम्ब पेसरं तालिदं लक्ष्मी-रमण-
रमणन्पि-गुणि-मल्लि-सेट्टि-विभुगं श्रीकोलसाकार-नि-
रतंगं-माचेयेसेट्टिकब्बेगमनूलोत्साहमं तालि पु-
ट्टिद चन्द्रब्बे रमाम-गण्यं भुवन-प्रख्यातियं तालिरल् ॥

तनुज ॥

परमानन्दविनेन्तु नाकपतिगं पौलोमिगं पुट्टिदं
वर-सौन्दर्य-प्रयत्ननन्ने तुहिन-धारोद-कलांक-मा-
धुर-कीर्तिंद्रिय-नागदेव-विभुगं चन्द्रब्बेगं पुट्टिदं
धरणी-पट्टण-स्वामि-शिरव-विभुनं श्रीमल्लिदेवाख्यं ॥ १ ॥
क्षितिपालं विभुनं-धर्मदेव-विभुगं जोगब्बेगं पुट्टिदं
गुणनं-पट्टणस्वामिगाश्रित-जन-प्रख्यातं-मल्लि-देवरुं-
गणिगं-कामलदेविगं जनकनं-श्रीनागदेवाह्वयं
गुणगं-चन्द्रनं नारिगोडनेनेवं श्रीनागदेवाह्वनं ॥ ११ ॥

कारिसे वीरबल्लाल-नृपन-स्वामिनामुना ।
नागेन पार्श्वदेवाग्रे नृत्य-रङ्गाग्रम-कुट्टिने ॥ १२ ॥

श्रीमन्नयकीर्त्ति-सिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगलो परोक्ष-विनयार्त्थ-वागिमुडिवमुमं निषिधियुमं श्रीमत्कनठ-पार्श्व-देवर वसदिय मुन्दण कल्लु-कट्टिम नृत्य-रङ्गमुमं माडिसिद वदनन्वर ॥

श्री-नगर-जिनालयमं
श्री-निलयमनमल-गुण-गणम्माडिसिदं ।
श्रीनागदेवसचिवं
श्री-नयकीर्त्ति-व्रतीश-पद-युग-भक्तं ॥ १३ ॥

तज्जिनालय-प्रतिपालकरप्प नगरङ्गल् ॥

धरेयोल् खण्डलि-मूलभद्र-विशदम्-वंशोद्भवर्स्सत्य-शौ-
चरवर् हिंसह-पराक्रमान्वितरनेकाम्भोधि-वेला-पुरा-
न्तर-नाना-व्यवहार-जाल-कुशलर् विख्यात-रत्न-त्रया-
भरणर् श्वेतगोल-तीर्थ-वासि-नगरङ्गल् रुदियं साल्विदर्
॥ १४ ॥

शकवर्ष ११९८ नेय राक्षससंवत्सरद जेष्ठ शु १ बृहवार दन्दु नगर-जिनालयक्के बडवलगेरेय मोदलेरिय तोटमुं यारु-सलगे-गद्देयुं उडुकर-मनेय मुन्दण केरेय केलगण पेरले कोलग १० नगर-जिनालयद बडगण केलि-सेट्टिय केरि आ-तेङ्कण परडु मने आ-अङ्गडि सेट्टियङ्कि गाण परडु मनेगे इव अरडु ऊरिङ्गे मलविय इव मूरु ॥

[इस लेख में नयकीर्त्ति के शिष्य नागदेव मंत्री-द्वारा नगर जिनालय तथा कमटपारवंदेव वसदि के सन्मुख शिलाकुट्टम और छत्रादि बनवाने व नगर जिनालय को कुछ भूमि का दान दिये जाने का उल्लेख है। आदि में लेख नं० १२४ के समान होय्सल वंश का परिचय है। वीरबल्लाल देव के प्रताप का वर्णन कुछ अधिक बढ़ाकर अलंकृत रूप में है। इसके पश्चात् नयकीर्त्तिदेव और उनके शिष्यों दामनन्दि, भानुकीर्त्ति, बालचन्द्र, प्रभाचन्द्र, नागनन्दि, पद्मनन्दि और मेमिचन्द्र का उल्लेख है। नागदेव के वंश का परिचय इस प्रकार है—

धर्म्मदेव—जोगम्बे

(वीर बल्लालदेव के पट्टण स्वामी) नागदेव—चन्द्रम्बे (चन्दले)
(मल्लिसेट्टि और नागले की पुत्री)

(मल्लिदेव) (कामलदेवी)

खंडलि और मूलभद्र के वंशज व्यापारियों का भी उल्लेख है। वे ही व्यापारी जिनालय के रक्षक थे।]

१३१ (३३६)

नगर जिनालय के भीतरी द्वार के उत्तर में

(शक सं० १२०१ तथा १२१०)

स्वस्ति श्रीमतु-शक-वर्ष १२०३ नेय प्रमाथि-संवत्सरद मार्गशिर-सु (१०) वृ दन्दु श्रीवेलुगुल-तीर्थद समस्त नख-रङ्गलिगं नगर-जिनालयद पूजाकारिगलु श्रीमन्मदु धरसिद

मासनद समवेन्तेन्दडे । नगर-जिनालयद आदि-देवर देव दानद गद्दे येरडु एळि उत्तरदु वेडुदकाल्कदलु देवर अष्टविधार्चने अमृत-पडि-महित श्रीकार्य्यवनु नडरडुवु नियामिसि कोट्ट पडियनु कुन्ददे नडमुवेवु आ-देव-दानद गद्दे येरडन्नु आधिक्य हालोवे गुडगे एम्म वंशवादियागि मक्कळु मक्कळु दप्पदे आव माडिदडं राजद्रोहि समयद्रोहिगळेन्दु वेडम्बट्टु परसिद शासन इन्तप्पुदक्के अवर येल्ल श्री-गोम्मटनाथ ॥ श्री वेलुगुळ तीर्थद नगर-जिनालयद आदिदेवर नित्याभिषेकके श्री-कुलिगेरेय सेरेयन अव-भण्डार-दागि कोट्ट गद्याणं अयिदु-होन्निन्न हालु प १ ॥

सर्व्वधारि संवत्सरद द्वितीय-भाद्रपद-दु ५ ब्रि। श्री-वेलुगुळ-तीर्थद जिननाथ-पुरद समस्त-माणिक्य-नगरद्दलु सम्मोलेहम्बट्टु परसिद शासनद क्रमवेन्तन्दडे । नगर-जिनालयद श्री-आदिदेवर जीर्णोद्धारवुपकरण श्री कार्य्यक्केयू धारापूर्व्वक माडि आपन्द्रार्कतारं परं सलुवन्तागि आ-येरडु-पट्टद समस्त-नगरद्दलू स्वदेशि-परदेशियिन्दं वन्दनेय दवण गद्याळ-पुरके गद्याणं वोन्दरोपादिय दवण आदिदेवरिगे सलुवन्तागि कोट्ट शासन यिदरोळे विरहित-गुणवनाद माडिदडमवन सन्तान निस्सन्तान अव देव-द्रोहि राज-द्रोहि समय-द्रोहिगळेन्दु वेडम्बट्टु परसिद समस्तनकरद्दलोप्प श्री-गोम्मट ॥

[यह लेख तीन भागों में विभक्त है। प्रथम भाग में उल्लेख है कि उक्त तिथि को नगर जिनालय के पुजारियों ने बेलगोल के व्यापारियों

को यह लिखा-पढ़ी कर दी कि जब तक मंदिर की देव-दान भूमि में धान्य पैदा होता है तब तक वे सदैव विधि अनुसार मंदिर की पूजा करेंगे।

दूसरे भाग में उल्लेख है कि नगर जिनालय के आदि देव के नित्याभिषेक के लिये हुलिगेरे के सोवण्ण ने पाँच गद्याण का दान दिया जिसके ब्याज से प्रति दिन एक 'बल्ल' दुग्ध लिया जावे।

तीसरे भाग में उक्त तिथि को बेल्गोल के समस्त जौहरियों के एकत्रित होकर नगर जिनालय के जीर्णोद्धार तथा बर्तनों आदि के लिये रकम जोड़ने का उल्लेख है। उन्होंने सौ गद्याण की आमदनी पर एक गद्याण देने की प्रतिज्ञा की। जो कोई इसमें कपट करे वह निपुत्री [illegible] देव, धर्म और राज का द्रोही होवे।]

[नोट—लेख के प्रथम भाग में शक सं० १२०३ प्रमाथिसंवत्सर का उल्लेख है। पर गणनानुसार शक सं० १२०३ रूप तथा शक सं० १२०१ प्रमाथी सिद्ध होते हैं। लेख के तृतीय भाग में सर्वधारि संवत्सर का उल्लेख होने से वह शक सं० १२१० का सिद्ध होता है।]

१३२ (२४१)

मंगायि वस्ति के प्रवेश मार्ग के बायीं ओर

(लगभग शक सं० १२४७)

स्वस्ति श्री-मूलसङ्घ देशिय-गण पुस्तक-गच्छ कोण्डकुन्दान्वयद श्रीमदभिनव-चारुकीर्त्ति-पण्डिताचार्य्यर शिष्यरु सम्यक्त्वाद्यनेक-गुण-गणाभरण-भूषितरु राय-पात्र-चूडामणि वेलुगुलद मङ्गायि माडिसिद त्रिभुवनचूडामणियेम्ब चैत्यालयक्के मङ्गलमहा श्री श्री श्री ॥

सेाऽयं श्री-गोम्मटेशत्रिभुवन-सरसी-रत्नने राजहंसो भव्यः...व-भानुर्व्वेलुगुल-नगरी साधु जेंजीयतीरं ॥ २ ॥

नन्दन-संवत्सरद पुरय-शु ३ लु गेरसोप्पेय हिरिय-आय्यगल शिष्यरु गुम्मटण्णगलु गुम्मटनाथन सन्निधियल्लि वन्दु चिक-वेट्टदल्लि चिक-वस्तिय कल्ल-कटिसि जीर्न्नोद्धारि बद्दग-वागिल्ल वस्ति मूरु मङ्गायि-वस्ति वोन्दु द्वारे मरियदु-वस्ति जीर्णोद्धार वेान्दु तण्डकके अहारदान ।

[गुम्मटेश की प्रशस्ति के पश्चात् लेख में उल्लेख है कि उक्त तिथि को गेरसोप्पे के हिरिय- आर्य के शिष्य गुम्मटण्ण ने यहाँ आकर चिक वस्ति के शिला कुट्टम का, उत्तर द्वार की तीन वस्तियों का तथा मंगायि वस्ति का—कुल पांच वस्तियों का—जीर्णोद्धार कराया ।]

[नोट—लेख में नन्दन संवत्सर का उल्लेख है । शक सं० ११२४ नंदन था ।]

१३५ (३४३)

उपर्युक्त लेख के नीचे

(सम्भवतः शक सं० १२४१)

विकारि-संवत्सरद श्रावण शु १ गेरसोप्पेय श्रीमति अव्वेगलु समस्त-गोष्टिय कोडु ग ४ ॥

[उक्त तिथि को गेरसोप्पे की श्रीमती अव्वे और समस्त गोष्ठी ने चार गद्याण का दान दिया ।]

[नोट—लेख में विकारी संवत्सर का उल्लेख । शक सं० १२४१ विकारी था ।]

१६६ (१४४)

भण्डारि बस्ति में पूर्व की ओर प्रथम स्तम्भ पर

(शक सं० १२८०)

स्वस्ति समस्त-प्रशस्ति-महितं ॥

पाषण्ड सागर-महा-बडवामुखाग्नि-
श्रीवृक्षराजभरताम्बुज-मूल-दाम ।
श्री-विष्णु-शङ्ख-मणि-मण्टपमार्गदार्यो
रामानुजो विजयते यति-राज-राज ॥१॥

शक वर्ष १२८० नय कीलक-संवत्सरद भाद्रपद-शु १० सू० आमि श्रीमन्महा-मण्डलेश्वरं आरिराय-विभाड भाषेय सप्पुव रायर गण्ड श्री वीरबुक्क-रायनु पृथ्वी-राज्यव माडुव कालदल्लि श्रीवैष्णवरिगू भक्तरिगू सेनाग्र बादल्लि आनेयंगान्दि होस-पट्टव पेनुगुण्डं कन्नेडद-पट्टव पोल-गाद समस्त-नाड मध्य-प्रभवनु श्री-वुक्क-रायङ्गे भक्तरुमाडुव अन्यायङ्गळन्नु विघ्नं माडलागि वैष्णवेल्-तिरुमले-पे भाग-वैष्णवेल्-तिरुनारायणपुरमुखवाद सकलाचार्यरेल्ल सकल-समयि गळू सकलप्रपन्निकरू श्रीवैष्णव तिरुपति-तिरुविडियन्नीरक नारायणन्तु-प्रभवनु सावन्त-वोडेयनु तिरिकुल जान्वुवकुल वाल्लगाद इदिनेन्टु-नाड श्रीवैष्णवरकैय्यलु महारायनु वैष्णव दर्शनक्के-ऊ जैन-दर्शनक्क-ऊ भेदविल्लवेन्दु रायनु वैष्णव-र कैय्यलु जैनर के-विडिदु कोट्ट श्री-जैन-दर्शनक्के पूर्व्वमरियादे

यलु पञ्चमहावाद्यङ्गलू कलयवु सलुवुदु जैनदर्शनक्के भक्तर देसे यिन्द हानि-वृद्धियादरू वैष्णव-हानि-वृद्धियागि पालिसुवरु यी-मर्य्यादेयलु यल्ला-राज्य-दोलगुल्लन्तह बस्तिगलिगे श्री-वैष्णवरु शासनव नट्टु पालिसुवरु चन्द्रार्क्क-स्थायियागि वैष्णव-समयं जैन-दर्शनव रक्षिसिकोण्डु बहंउ वैष्णवरू जैनरू बोन्दुभेदवागि काणलागदु श्री तिरुमलेय तात य्यङ्गलु समस्त-राज्यद भव्य-जनङ्गल अनुमतदिन्द बेलुगुलद तिर्थदल्लि वैष्णव-अङ्गरक्षेगेसुक समस्त-राज्यदोलगुल्लन्तह जैनर यागिलुगट्टलेयागि मने-मनेगं वर्षक्के १ हण कोट्टु आ-यें-त्तिद होन्निङ्के देवर अङ्ग-रक्षेगेयिप्पत्ताख्नू मन्तविट्टु मिक्क होन्निङ्के जीर्ण्ण-जिनालयङ्गलिगे सोधयनिकूदु यी-मरियादेयलु चन्द्रार्क्करुल्लन्नं तप्पलीयदे वर्ष-वर्षक्के कोट्ट कीर्त्तियनू पुण्य-वनू उपार्जिसिकोम्बुदु यी-माडिद कट्टलेयनु आवनोब्बनु मीरि-दवनु राज-द्रोहिसङ्घ-सम्दायक्केद्रोहि तपस्वियागलि ब्राम्हि-णियागलि यी-धर्म्मव केडिसिदरादडे गङ्गेय तडियल्लि कपि-लेयनु ब्राह्मणनू कोन्द पापदल्लि होहरु ॥

श्लोक ॥ स्वदत्तं परदत्तं वा यो हरेति वसुन्धरां ।
षष्टि-वर्ष-सहस्राणि विष्टायां जायते कृमि ॥२॥

(पांचवें से जोड़ा हुआ)

कल्लेदद हर्व्वि-सेट्टिय सुपुत्र वुसुवि-सेट्टि वुक्क-रायरिगे बिन्नहंमादि तिरुमलेय-तातय्यङ्गल विजयं-गैसि तरन्दु जीर्णोद्धार

व मादिमिसेट्टि प्रभयसमयकृदि बुसुवि-सेट्टियिगे गद्दु-नाल्क पट्ट कट्टिदरु ॥

[बीर पुट्टराय के राज्य-काल में जैनियों और वैष्णवों में झगड़ा हो गया। तब जैनियों में से आचलगोड्डि आदि बारहों ने पुट्टराय से प्रार्थना की। राजा ने जैनियों और वैष्णवों के हाथ से हाथ मिला दिये और कहा कि जैन और वैष्णव दर्शनों में कोई भेद नहीं है। जैन दर्शन को पूर्ववत् ही सब सदा मान और कर का अधिकार है। यदि जैन दर्शन की हानि या वृद्धि हुई तो वैष्णवों को इसे अपनी ही हानि या वृद्धि समझना चाहिये। श्रीवैष्णवों को इस विषय के शासन समस्त राज्य की बस्तियों में लगा देना चाहिये। जैन और वैष्णव एक हैं, वे कभी दो न समझे जावें।

अवण बेलगोल में वैष्णव अङ्ग-रक्षकों की नियुक्ति के लिये राज्य भर में जैनियों से प्रत्येक घर के द्वार पीछे प्रतिवर्ष जो एक 'हण' लिया जाता है उसमें से तिरुमले के तातय्य, देव की रक्षा के लिये, बीस रक्षक नियुक्त करेंगे और शेष द्रव्य जैन मन्दिरों के जीर्णोद्धार व पुताई आदि में खर्च किया जायगा। यह नियम प्रति वर्ष जब तक सूर्य चन्द्र हैं तब तक रहेगा। जो कोई इसका बन्द पन करे वह राज्य का, देव का और समुदाय का द्रोही ठहरेगा। यदि कोई तपस्वी व प्राधिकारी इस धर्म में प्रतिघात करेगा तो वह गङ्गातट पर एक कपिला गौ और ब्राह्मण की हत्या का भागी होगा।

(पीछे से जोड़ा हुआ)

बलेंद के हरिसेट्टि के पुत्र बुसुवि सेट्टि ने पुट्टराय को प्रार्थनापत्र देकर तिरुमले के तातय्य को बुलवाया और उक्त शासन का जीर्णोद्धार कराया। दोनों सज्जनों ने मिलकर बुसुवि सेट्टि को संघनायक का पद प्रदान किया।]

१३७ (३४५)

उसी स्थान में द्वितीय स्तम्भ पर

(लगभग शक सं० १०८०)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥

भद्रमस्तु जिन-शासनाय ॥

स्वस्ति-श्री-जन्म-गेहं निभृत-निरुपमौर्व्वीनलोद्दाम-तेजं
विस्तारान्तःकृतोर्व्वीतलममल-यशश्चन्द्र-सम्भूति-धाम ।
वस्तु-श्रावेद्धव-स्थानक्रमतिशय-सत्त्वावलम्बं गभीरं
प्रस्तुत्यं नित्यमम्भोनिधि-निभमेसेगुं होय्सलोर्वीश-वंशं
॥ २ ॥

अदंरालु कौस्तुभदोन्दनर्घ्य-गुणमं देवेभदुद्दाम-स-
त्त्वदगुर्व्वं हिम-रश्मियुज्वल-कला-सम्पत्तियं पारिजा-
तदुदारत्वद पेम्पनोर्व्वने निसान्तं वाल्दि वानल्ते पु-
ट्टिदनुद्वेजित-वीर-वैरि-विनयादित्यावनीपालकं ॥ ३ ॥

क ॥ विनयं बुधरं रञ्जिसे
घन-तेजं वैरि-बलमनलखिसे नेगल्दं ।
विनयादित्य-नृपालक-
नेनुगत-नामार्थनमल-कीर्त्ति-समर्थं ॥ ४ ॥
श्री-विनयादित्यन वधु
श्रावेद्धव-मन्त्र-देवता-सन्निभे स-

द्भाव-गुप्त-भवनन्दिसक-
ल्ला-विद्यमिते-श्रेयवरमिर्यस्वजे पेसरिं ॥ ४ ॥
श्रा-दम्पतिगं तनूभव-
नाद श्रीचिगं सुराधिपतिगं मुलं-
स्तादं जयन्तनन्त वि-
पाद-विद्याल्लङ्क नेरेयङ्ग-नृपं ॥ ६ ॥
आतं श्रीमुनिय-भूपालन वसदगुत्तादेवगुरुवर-भूप-
आत-प्रोन्नुङ्ग-भूभृय विदलन कुलिशं वा-दनाथीव-मंच ।
रदंताभोजात-देव-द्विरदन-सारङ्गेन्दु-कु-दावदात-
ख्यात-प्रोद्यद्यशोश्री-धवलित-भुवनं धारनेङ्काङ्ग-धार ॥ ७ ॥
एरेयङ्गनेनेनिसि नगरि-
न्नेरेयङ्ग-नृपालतिलक-गुणवाल्म-
न्नेरवह शील-गुणाढ
नोंदचलदेवियन्तु नो-तमाक्षा ॥ ८ ॥
धन नना-नवनिर्व्वर्णं
तनूजरत्नंलन्दलर्क मलल्लालं वि-
ख्यातं नृपालकुलवालि-
स्वनमं पगरिन्दमास्थान-कमुपा-सकरान् ॥ ९ ॥
वृत्त ॥ अवरान् मध्यमनागियु गुणनेहाम् पुर्व्वोपकारान्वितर-
ग्दुदिन कुल निर्मलर्पुवो-दु निज-दादा-विक्रमोदारदु-
द्धरितेन्दुप्रथनादनुत्तम-गुण-ग्रामैक-धाम मरा-
भव-भूपं मलि-वादवाद्य-देवनं श्री-विष्णु-भूपालकं ॥ १० ॥

कन्द ॥ एलेगेसेव कोयतूर्त्त-
त्तलवन-पुरमन्ते रायरायपुरंव-
ल्वल वलेद विष्णुतेजो-
ज्वलनदे वेन्दुवु वलिष्ठ-रिपु-दुर्गङ्गल् ॥ ११ ॥

वृत्त ॥ इनितं दुर्गम-वैरि-दुर्गचयमं कोण्डं निजाचारदि-
न्दिनिवर्भूपरनाजियोल्तविसिदं वन्नल-मङ्गावदि-
न्दिनिवर्गानतगिंत्तनुद्धव-पदमं कारुण्यदिन्दिन्दु वा-
ननितं लेक्कदे पेल्वोडन्न-भवनुं विभ्रान्तनप्पंबलं ॥ १२ ॥

कन्द ॥ लक्ष्मी-देवि-खगाधिप-
लक्ष्मङ्गे-सेदिर्द विष्णुगेन्तन्ते वलं
लक्ष्मा-देवि-लसन्मृग-
लक्ष्मानने विष्णुगम्न-सतियेने नेगल्दल् ॥ १३ ॥

भवर्ग्गों मनोजनन्ते तुदती-जन-चित्तमनोल्कोलक्के मा-
ल्यवयव शोभेयिन्दतनुवेम्बभिधानमनानदङ्गना-
निग्रहमनेच्चु मुत्थनणमानदे वीररनेच्चु युद्धदोल्
तविसुवोनादनात्म-भवनप्रतिमं नरसिंह-भूभुजं ॥ १४ ॥

पडे मातेन्दु कण्डङ्गमृत-जलधि तां गर्व्वदि गण्ड-वातं
नुडिवातङ्गेनेम्बै प्रलय-समय-दोल् मेरेयं मीरिवर्प्पा-
कडलन्न कालनन्नं मुलिद-कुलिकनन्नं युगान्ताग्नियन्नं
सिडिलन्नं सिंहदन्नं पुर-हर-मुरिगण्णन्नी नारसिंहं ॥१५॥

रिपु-सर्प्पदर्प्प-दावानल-यदल-सिखा-जाल-कालाम्बुवाहं
रिपु-भूपोद्यत्प्रदोष-प्रकर-पटुतर-स्फार-झञ्झा-समीरं ।

जिन-सत्पुण्य-पुराण-संश्रवणदिं सन्तोषमं ताल्दि भ-
व्यनुतं निच्चलुमिन्दे पोस्तुगलेंदं श्री हुल्ल-दण्डाधिपं ॥२
कन्द ॥ निप्पटमे जीर्णमादुद-
नुप्पट्टाव्वन महा-जिनेन्द्रालयमं ।
निप्पोसतु माडिदं कर-
मोप्पिरे हुल्लं मनस्वि बङ्कापुरदोल् ॥ २५ ॥
मत्तमल्लिय ॥
हर ॥ कलिवनमुं विटत्वमुमनुल्लवनादियोळ्बंतुर्व्वियोळ्
कलिविटनेम्बनातन जिनालयमं नेरे जीर्णमादुदं ।
कलि सल दानदोल् परम-सौख्य-रमारतियोल् विटं विनि-
रचलवे निसिदं हुल्लनदनेंसिसिदं रजताद्रि-तुङ्गमं ॥ २६ ॥
प्रियदिन्दं हुल्ल-सेनापति केोपण-महा-तीर्थदोल् धात्रियुं वा-
विंयुमुल्लत्रं चतुर्व्विंशति-जिन-मुनि-सद्मके निश्चिन्तमाग-
चय-दानं सल्व पार्द्धि बहु-कनक-मना-चैत्र-नर्मिंतु सद्वृ-
वियनिन्तीलोकनेंबम्पोगलें विडिसिदं पुण्य-पुञ्जैकधामं ॥
॥ २७ ॥
आकेल्लम्बेरेयादि-तीर्थमदुमुभं गङ्गरि निर्म्मिसं
लोक-प्रस्तुतमाय्तु काश्य-वयदिं नामावशेषं वहि-
ल्ला-कल्प-स्थिरमागे माडिसिदनी-भासज्जिनागारमं
श्री-कान्तं वलदिन्दमंग्दे कलसं श्री-हुल्ल-दण्डाधिपं ॥ २८ ॥
कन्द ॥ पद्म-महा-वसतिगल्
पद्म-सुकल्याण-वाल्केयिं हुल्ल-चमू-

धरेयं गेल्दिर्दं तिण्पुल्लननुदधिपनेनेम्ब गुण्पुल्लनं म-
न्दरमं माकर्कोल्कि पेम्पुल्लननमर-मद्दोजातमं मिक्क बोकं-
सरमप्पार्पुल्लनंपुल्लननेसेव जिनेन्द्राङ्घ्रि-पद्मेज-पूजो-
त्करदोल् तल्पोय्दलम्पुल्लननुकरिसल् मत्तनागोसमर्दं ॥
सुजनस्मन्तति-सेविसं गुरु-वचो-निर्दिष्ट-नीति-क्रमं
समरारावि-वन्न-प्रभेदन-करं भो-जैन-धर्मा-समा-
ज-महोत्साह-परं पुर-न्दरन पेम्पं ताल्दि भण्डारि-दू-
रमहण्डाधिपनिर्दपं महियोलुण्डुभ-भाषितं ॥ २० ॥
गलतं प्राणि-वधं विनोदमनुतालापं वचः-प्रौढि गं-
भलमन्यार्थमनोल्दु कोन्बुदे पलं तेलं पर-स्त्रीयरोल्
रति-लीलाल्प-धन-क्रोध-मदि-वाचेल्लर्गमार्गांनिवा-
र्यनल्लं पुल्लननक्कुमेन्दु बुधरुं मुल्लानं ॥ २१ ॥
निज-जिन-शासनोद्धरणरादियोलारेंदं रायमल्ल-भू-
वर-वर-मन्त्रि रायने वलिक्कं पुण्यतुलाधरं विष्णु-भू-
वर-वर-मन्त्रिगङ्गनुमे वलिक्कं नृपिंद्र-चूडा-भू-
वर-वर-मान्य-कृष्णने वेरल्विनुल्लं पेलल्लागदे ॥ २२ ॥
जिन-गीतामार्ग-प्रवर्तन-समर्थ वहिर् प्रपञ्चर-
वनुपान-शुद्ध भाव-निलयांत-र्भावनिर्दा कुवृत्ति-दू-
रनुमप्पुल्लननेम्बनल्लधारि देवरे नल्लर् गुणाल् निर्म-
लनप्पुल्लन-गोत्रक नाल्वरा नमुनि-वृन्द-प्रस्तुता ॥ २३ ॥
जिन-[illegible]
जिन-[illegible]

जिन-चतुर्व्य-पुराण मेंश्रवबदि सन्तोषमं तास्दि भ-
व्यनुतं निष्कलुमिन्दे पोल्तुगल्वं आ पुष्प-दन्ताधिपं ॥२४॥

कन्द ॥ निष्पटमे जीर्णमादुद-
नुप्पट्टाय्तन महा-जिनेन्द्रालयम ।
निर्प्पासनु माडिद कर-
मोर्पिर पुष्प मनन्त बह्मापुरदोल् ॥ २५ ॥

मत्तमल्लिय ॥

वृत ॥ कलितवनमुं विटवनुमनु-सवनादिया नाल्वंगुर्व्वंगाम्
कलिविटनम्बनातन जिनालयम नर जीर्णमादुदं ।
कलि राज दानदोल् परम पौरुष-चमार्गतियाल् विटं जिन-
यपजवे निर्मिसिदं पुष्पनदनोन्नामद अनाद्रि-पुष्पम ॥ २६ ॥

मियदिन्दं पुष्प-धनापति पोगपल्-महा-तीर्थदोल् पार्श्वयु का-
लिंगुलुल्लम पतुर्व्वंशति-जिन-गृहमनु निर्मिसलागा-
पय-दाने सल्व पार्श्व बहु-कनक मनोज्ञ-मार्गमु बहुम-
तियनि-तानाकमल्लम्पमागे निसदिसदं पुष्प पुन्नैकयाम ॥

॥ २७ ॥

आकल्पक्के दयादि-तीर्थमदुगुल्ल साधुगे निर्म्मल
लोक-प्रानुतमाम्बु कोल्ल-पयरिं नामाधयं काल-
कालम्प-तिरस्कार माडिसिदनी-मल्लिजिनालयं
श्री-कान्त सदादि-दमम्द कलसे का पुष्प-दन्ताधिप ॥ २८ ॥

कन्द ॥ पक्ष-महा-वनालिगल
पक्ष-मुलस्पाद-वाक्षदि पुष्प-नम्-

पं चतुरं माडिसिदं
काञ्चन-नग-धैर्य्यनेसेव केल्लङ्गेरेयोल् ॥ २९ ॥

कन्द ॥ हुल्ल-चमूपन गुण-गण-
मुल्लनितुमनारं नेरेये पोगल्लल् नेरेवर्
पल्लदोलल्लेदुदधिय जल-
मुल्लनितुमनारं पवणिसल् नेरेवप्पर् ॥ ३० ॥

संश्रित-सद्गुणं सकल-भव्य-नुतं जिन-भाषितार्थ-नि-
स्संशय बुद्धि-हुल्ल-पृतना-पति कैरव-कुन्द-हंस-शु-
भ्राशु-यशं जगन्नुतदोलो-वर-बेल्गुल तीर्थदोल् चतु-
र्विंशति तीर्थकृन्निलयमं नेरे माडिसिदं दलिन्विदं ॥ ३१ ॥

कन्द ॥ गोम्मटपुर-भूपलमिदु
गोम्मटमाख्येनं समस्त-परिकर-सहितं ।
मम्मददि हुल्ल-चमू-
पं माडिसिदं जिनोत्तमालयमनिदं ॥ ३२ ॥

वृत्त ॥ परिसूत्रं नृत्त-गेहं प्रविपुल-विलसत्पत्त-देशस्थ-शैल-
स्थिर-जैनावास-युग्मं विविध-सुविध-पत्रोल्लसद्-भाव-रूपो-
त्करं-राजद्वार-हर्म्यं बेरसतुल-चतुर्विंश-तीर्थेशगेहं
परिपूर्णं पुण्य-पुञ्ज-प्रतिममेसेदुदीयन्ददि हुल्लनिन्दं ॥ ३३ ॥

स्वस्ति श्री-मूल-सङ्घद देशिय-गणद पुस्तक-गच्छद कोण्ड-
कुन्दान्वय-भूषणरप्प श्री-गुणचन्द्रसिद्धान्त-देवर शिष्यरप्प
श्री-नयकीर्त्ति-सिद्धान्त-देवरेन्बप्परेन्दोडे ॥

वृत्त ॥ भय-मोह-दुख-दूरनै मदन-घोर-ध्वान्त-नीरांशुकं
नय निक्षेप-युत-प्रमाण-परिनिर्णीतार्थ-सद्दाहनै ।
नयनान-दन-शान्त-कान्त-तनुकं सिद्धान्त-चक्रेशनं
नयकीर्त्ति-व्रतिराजनं नमेंदाद पापापकरं पिरिदु ॥१४॥
कुल-दिग्जैत्रविधे वरत्त नरसिंह-क्षोणिप कण्डु स-
म्मतिथि गौम्मट-पार्श्वनाथनिगर मनोवस्तुर्वंतिप-
प्रतिमागेदमनिन्तिवर्कं विनत प्रारब्धहरि (रि) ष्ट-
प्रतिमात्र सुदमागुत्तमय कल्पा-तं सल्पनै ॥ १५ ॥
अरकें नयकीर्त्ति-सिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगल अदा-आय्य नाचार्यरं
इनाचार्यर्मागि ॥
वृत्त ॥ तवदोलिन्तिव नारसिंह-नृपनं वा पक्षद सद्गुरु-
ध्यानेनी मैन-गुरुक्रमाद्दिनमनल्पं पुत्तु रुग्मालिये ।
नुवन-प्रार्थितनागुत्तिप्पे सकलाम्नायान्तरंगिप्पु
दिवि चन्द्रार्कुगुमुर्वियोलगयुं सिल्वन्ते सन्मान्यने ॥ १६ ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [

देसेयोळ् जन्नवुरक्कं सवणेरिङ्गं सागरमय्यंदे जन्नवुर सवणेर केरेयेंरिय नडुवण हिरिय हुंगिसे सीमे वडगलदेसेयोळ् कक्किन कोहु अदर मूडण वीरज्जन केरे आ-केरेयोळगे सवणेर बेडुगन हल्लिय नडुवे वसुरिय दंणे अल्लि मूडलाज्जन कुम्मरि अल्लि-मूड चिल्लदरे सीमे ॥

ई-स्थलदिन्दाद द्रव्यमनिल्लियाचार्य्यरी-स्थानद वसदिगळ खण्ड-स्फुटित-जीर्णोद्धारक्कं देवता-पूजेगं रङ्गभोगक्कं वसदिगे बेंद कैय्य प्रजेगं ऋषि-समुदायदाहार-दानक्कं सलिसुवुदु ॥

इदनावं निज-कालदोळ् सु-विधियिं पालिप्प लोकोत्तमं
विदितं निर्म्मल-पुण्य-कीर्त्तियुगमं वां वाल्दुगुं मत्तमि-
न्तिदनावं किडिपोन्दु केट्ट-घगेयं तन्दावनाल्दुं गभीर
दुरन्तो..... ॥ ३७ ॥

[इस लेख में होय्सल वंशी नारसिंह नरेश के मन्त्री हुल्लराज द्वारा गुणचन्द्र सिद्धान्तदेव के शिष्य नयकीर्ति सिद्धान्तदेव को सवणेर ग्राम दान करने का उल्लेख है। प्रारम्भ में होय्सल वंश का यही वर्णन है जो लेख नं० १२४ में पाया जाता है। हुल्ल वाजिवंशी यक्षराज और लोकाम्बिके के पुत्र थे। वे बड़े ही जिनभक्त थे। 'यदि पूछा जाय कि जैन धर्म के सच्चे पोषक कौन हुए तो इसका उत्तर यही है कि प्रारम्भ में राचमल्ल नरेश के मन्त्री राय (चामुण्डराय) हुए, उनके परचात् विष्णु नरेश के मन्त्री गङ्गराज (गङ्गराज) हुए और अब नर-सिंहदेव के मन्त्री हुल्ल हैं।' हुल्ल मन्त्री के गुरु कुक्कुटासन मलधारिदेव थे। मन्त्री जी को जैनमन्दिरों का निर्माण व जीर्णोद्धार कराने, जैनपुराण सुनने तथा जैन साधुओं को आहारादि दान देने की बड़ी रुचि थी। उन्होंने बंकापुर के नाती और प्राचीन दो मन्दिरों का जीर्णोद्धार कराया,

कोपण में निवास के लिये 'बसतियों' का प्रबन्ध किया, गङ्गवेता द्वारा स्थापित प्राचीन 'बेलहरों' में एक विशाल जिन मन्दिर व अन्य पाँच जिन मन्दिर निर्माण कराये व बेलगुल में पार्श्वनाथ, ब्रह्मदेव व दो आचार्यों सहित चतुर्विंशति तीर्थंकर मन्दिर निर्माण कराया। गङ्गराज प्राप्त का दान शासित इस लेख के विनष्ट होने से बचाने पर इस मन्दिर की रक्षा के हेतु दिया गया था।]

१३७ (३४६)

उसी पाषाण की दायीं बाजू पर

(लगभग शक संवत् १०८०)

ओमस्तुसाध्यंवर्ग
भू—मंडितं मन्मथ दुग्ध राशयं स-
द्धामिनि-पद्मावतिनो
र्धमानुर्विनय-मूर्तिर्यं मल्लिभर्त्ता ॥ १ ॥

कमनीयानन इन्नामवरोहि नमालिताभ्यासाद-
•दमलाङ्ग-द्युति-कान्तिवि कुच-वक्षाङ्ग द्वन्द्वाहि आनंदा-
रमनङ्ग पद्मल-दैवि वाग्मुतामर्त्यु पुण्य राशा•वर-
ङ्ग-मराजं वमिताप्य पार्श्वनिवासाङ्ग मि य•••हासवर ॥ २ ॥

चञ्च-भावं नयनवं कारदेहुदय कत्व-तरला पदो-
प्त-जयत्साद्द-नमरके कर्कंतत पद्मावतं काव्यं कव-
कत्रसारव गोवल्लाहिन्द्र इदयवे-न्दु पद्मावती-
ललना-मह कव-तीत्र-गुदय पारस्मराद्धं-वर ॥ ३ ॥

सरगेन्द्र-चीर-नीराकर-रजत-गिरिश्री-सित-च्छत्र-गङ्गा-
हर-हासैरावतेभ-स्फटिक-वृषभ-शुभ्राभ्र-नीहार-हारा-
मर-राज-श्वेत-पङ्केरुह-हलधर-वाकुल्लहंसेन्दु-कुन्दो-
त्कर-चच्चत्कीर्त्ति-कान्तं बुध-जन-विनुतं भानुकीर्त्ति-
व्रतीन्द्रं ॥ ४ ॥

श्री नयकीर्त्ति-मुनीश्वर-
सूनु श्री भानुकीर्त्ति-यति-पतिगित्तं ।
भूनुतनप्पाहुल्लप-
सेनापति धारेयेरेदु सवणेरुं ॥ ५ ॥

[इस लेख में हुल्लराज मन्त्री की धर्मपत्नी पद्मावती (पद्मदेवी) की प्रशंसा के पश्चात् उल्लेख है कि हुल्लराज ने नयकीर्त्ति मुनि के शिष्य (सूनु) भानुकीर्त्ति को धारापूर्वक सवणेरु ग्राम का दान दिया।]

१३७ (३४७)

उसी पाषाण की बायीं बाजू पर

(शक सं० १२००)

स्वस्ति श्री-जयाभ्युदयश्र-शक-वरुषं १२०० नेय [illegible]
धान्य-संवत्सरद चैत्र-सु १ सु भण्डारियय्यन बसदिय
श्री-देवरय्यन्न-देवरिगे नित्याभिषेकक्के क्षेत्र-भण्डारवागि
श्रीमत्तु महा-मण्डलाचारियर उदयचन्द्र-देवर शिष्यर मुनि-
चन्द्र-देवर गरे प ५ कं हालु मान २ श्रीमत्तु चन्द्रप्रभ-देवर

विवरद-भुवा-वमन्तर्धमदारतिवार्द्धि-नारकाकान्तः ।
साक्षात्मरकृतान्तो जयति चिरं भूप-मकुट-मणिरेयङ्गः ॥
॥ ८ ॥

अपि च ॥ शरदमृत-द्युति-कीर्त्ति-र्मनसिजमूर्त्ति-
र्द्विरादिकुरुकपिकेतुः ।
कवि-काम-जलधि-सम्भु-
र्जयति चिरं उप-मौलि-मणिरेयङ्गः ॥ ९ ॥

अपि च ॥ जयवश्मीकृतसङ्गः हत-रिपु-भङ्गः प्रभूत-गुण-तुङ्गः ।
भूरि-प्रताप-रङ्गो जयति चिरं नृप-किरीट-मणिरेयङ्गः ॥१०॥

अपि च ॥ लक्ष्मीप्रेमनिधिर्विदग्ध-मनसा चातुर्य्यचर्चा-विधि-
र्कीर्त्तिश्री-नलिनी-विकास-मिहिरो गाम्भीर्य्य-रत्नाकरः ।
कीर्त्ति-श्री-क्रतिका-वसन्त-समयश्चौ-दर्य्यलक्ष्मीमय-
स्तत्सीमानरेयङ्ग-उद्भूपति के कैर्न सेवन्यते ॥ ११ ॥

अपि च ॥ करसाकारेयङ्गनण्डजपतेर्द्विर्द्विकमल्लाहवे
स्तोतुं मालव-मण्डलेश्वरपुरी धारामपाद्यात् पदात् ।
बोः दण्डुत्र-कराम घोरकटकं द्राक् काञ्चिदीशं व्यधान्
निर्द्वागाकृतचक्रगोदुमकरोद् भग्नं कलिङ्गेश्व ॥ १२ ॥

कान्ता सत्य लतान्तवाणवलना लावण्यपुण्यादयैः
सौभाग्यस्य च विश्वविस्मयकृतर्णाशरित्रा-भूतः ।
पुत्रोत्पत्तिसत्कर्मायु सकलास्त्रोजयोनेर्बधू-
रासीदेचल-नामपुण्यसविता राज्ञो यशस्कामधुक् ॥ १३ ॥

१३८ (२४६)

भण्डारिवस्ति में पश्चिम की ओर

(शक सं० १०८१)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघलाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥
भद्रं भूयाज्जिनेन्द्राणां शासनायाघनाशिनं ।
कुतीर्थ्य-ध्वान्त-सङ्घात-प्रभेद-घन-भानवे ॥ २ ॥
स्वस्तिश्रीयदुवंशाय यदुभूषाय यद्धरः ।
क्षत्र-मौक्तिकसन्तानरत्नखानायक-मण्डनं ॥ ३ ॥
श्रीधर्म्मभ्युदयाब्जषण्डतरणिस्सत्यव्रचूडामणि-
र्भाति श्रीनरसिंहभूपधरणिर्नानार्थि-चिन्तामणिः ।
वंशे यस्य जनाश्रि मौक्तिक-मणिर्बभूव भूमण्डनः
श्रीरामाधिप कौन्तुभोऽत्र विनयादित्याभिधानोऽधुना ॥४॥
अपि च ॥ श्री-कान्ता-कमनीय-कौशिक-मनोहारास्तमित्यांधकार-
ध्वान्ति-च्छित्तिपान्धकार-हरणाद् भूयद् प्रतापान्वयात् ।
दिक्-पद्माकमलाद्विरा-कुवलय-प्रध्वंसनाद्भूपते
ख्याताऽन्वर्थनिरुक्तयेव विनयादित्याभिधानोऽधुना ॥५॥
धात्रा निर्म्मलकोदर-प्रकटनेरंगोद्गुणा स्वस्य किं
तस्य स्त्रिया कैलियनामदधतो मनाग राज्य-प्रकृतिर्बभूव ॥६॥
तयोरनूनुनूतनूरिकीर्त्तिर्वेरा क्रमाक्रान्तदिगन्तभूमिः ।
तनूभव स्वकुलपद्मराय प्रतापनूता-वेरेयनूपः ॥ ७ ॥

अपि च ॥ कुन्तल-कदली-कान्ता पृथु-कुच-कुम्भा महालसा भाति
महा।
स्मर-समरसज्जविजयमनङ्गोद्भवचारु-मूर्त्तिरेचलदेवी ॥
॥ १४ ॥

अपि च ॥ शचीव शक्रं जनकात्मजेव रामं गिरीन्द्रस्य सुतेव शम्भुं।
पद्मेव विष्णुं मदयत्यजस्रं सानङ्गलक्ष्मीरेयङ्ग भूपं ॥१५॥

कौसल्यया दशरथो भुवि रामचन्द्रं
श्रीदेवकीवनितया वसुदेवभूपः ।
कृष्णं शचीप्रमदयेव जयन्तमिन्द्रो
विष्णुं तया स नृपतिर्ज्जनयांबभूव ॥१६॥

उदयति विष्णौ तस्मिन्ननेशदरिचक्र-कुलमिलाधिपचन्द्रे ।
अधिकतर-श्रियमभजत्कुवलय - कुलमम्बदमलधर्म्माम्भोधिः॥
॥ १७ ॥

अपि च ॥ निर्दलितकोयतूरो भस्मीकृतकोङ्ग-रायरायपुरः ।
घट्टित-घट्ट-कवाटः कम्पितकाञ्चीपुरस्सविष्णुनृपालः॥१८॥

अपि च ॥ अतुल-निज-बल-पदाहति-धूलीकृततद्विराटनरपतिदुर्गः।
वनवासितवनवासो विष्णुनृपस्सरलितोरु-वल्लूरः ॥१९॥

अपि च ॥ निज-सेना-पद-धूलीकर्दमित-मलप्रहारिणीवारिः ।
कलपाल-शोणिताम्बु-निशातीकृत-निजकरासिरवनिप-
विष्णुः॥२०॥

अपि च ॥ नरसिंह-वर्म्म-भूभुज-महस्रभुज-भूजपरशुरामोऽपि ।
चित्रं विष्णुनृपालश्शतकृत्वोऽप्याजिनिहित-शत्रु-चत्रः॥२१॥

स्तदियम-पृथुशौर्य्यार्य्यमराहुरघेट्टिरि-गिरीन्द्र-हति-पवि-
दण्डः
तलवनपुरलक्ष्मीं पुनरहरज्जयमिव रिपोस्स विष्णु-नृपः
॥२२॥

अपि च ॥ चक्रिप्रेषित-मान्त्रवेश्वरजगदेवादिसैन्यार्णवं
घूर्णन्तं महमापिबत्करतलेनाहत्य मृत्यु-प्रभुः ।
प्राक् पश्चादसिनामहोदिह महौ तत्कण्ठवेण्यावधि-
र्मांविष्णुर्भुजदण्डचर्चितनितान्तोत्तुङ्गतुङ्गाचलः ॥ २३ ॥

अपि च ॥ दुरुक्तोल-चोणी-पति-मृगमृगारातिरतुलः
कदम्ब-चोर्णीश-क्षितिरुह-कुलच्छेद-परशुः ।
निज-व्यापारैक-प्रकटितलसद्वीर्य्यमहिमा
स विष्णुः पृथ्वीशो न भवति वचोगोचरगुणः ॥२४॥

माचाङ्गस्मो-र्व्विपदपगमे विश्वलोकस्य नाना
लक्ष्मीदेवी विशदयशसा दिग्वधूवक्त्रभित्तिः ।
दृप्यद्वैरि-क्षितिप-दितिजत्रात-विध्वंस-विष्णोः
विष्णोरस्य प्रणय-वसुधासीत्सुधानिर्म्मितार्द्रा ॥ २५ ॥

ब्रह्माण्ड-भाण्ड-भरितामलकीर्ति-लक्ष्मी-
कान्तस्तयोरजनि मनुरजातशत्रुः ।
पृथ्वीश-पाण्डु-पृथयोरिव पुण्यपाको
दैत्य-द्विषत् कमलयोरिवनारसिंहः ॥ २६ ॥

अपि च ॥ गर्व्वं बन्धेर मुख काञ्चन-चय चोलाधु राणेकुरु
क्षेमं भिन्धय चेर चोरमुखा दूरेण विद्रावय ।

स्व गौडेति नृसिंह-भूरि-नृपतेर्म्मध्ये मदस्सर्व्वदा
दुर्व्वारस्सरति ध्वनिः परिजनानिर्व्याज-निर्घोष-जिव् ॥२७॥

अपि च ॥ शौर्यं नैष हरेः परत्र तरणेरन्यत्र तेजस्विता
दानित्वं करिणः परत्र रविनामन्यत्र कीर्तिः सदा ।
राज्यं चन्द्रमसस्परत्र विषमास्त्रत्वं च पुष्पायुधा—
दन्यत्रान्य-जने मनाक् च सहते श्रीनारसिंहो नृपः ॥२८॥

अपि च ॥ स भुज-बल-वीर-गङ्ग-प्रताप-होय्सलापर-नामा ।
पालयति चतुस्समयं मर्य्यादामम्बुनिधिरिवाति प्रीत्या
॥२९॥

चागल्ल-देवी-रमणो यादव-कुल-कमल-विमल-मार्त्तण्ड-श्रीः॥
छित्वा दृप्त-विरोधि-वंश-गहनं दिग्जैत्र-यात्रा-विधा-
वारब्धोदय-मूधरं रविरिवाद्रि दीप-वर्त्ति-श्रिया ।
नत्वा दक्षिण-कुक्कुटेश्वर-जिन-श्री-पाद-युग्मं निधिं
राज्यस्याभ्युदयाय कल्पितमिदं स्वख्यातमण्डारिणा ॥ ३० ।

सर्व्वाधिकारिणा कार्य्य-विधौ योगन्धरायणा-
दपि दक्षेण नीतिज्ञगुरुणा च गुरोरपि ॥ ३१ ॥

लोकाम्बिकातनूजेन जक्कि-राजस्य सूनुना ।
न्यायसा लोक-रचैक-सूत्रधारेण धीमता ॥ ३२ ॥

मलधारि-स्वामि-पद-प्रथित-मुदा वाजि-वंश-गगनांशुमता ।
दिन-रुचिना गङ्ग-महो-निरवद्य-जिनागार-दान-नोयधि-विभवै
॥ ३३ ॥

दूरी-कृत-कलि-स्यूत-नृ-कलङ्केन भूयसा ।
चरित्र-पयसा कीर्ति-धवलीकृत-दिङ्मुखिना ॥ ३४ ॥
त्रिशक्ति-शक्ति-निर्भिन्न-मदवद्रि-वैरिणा ।
क्षुल्लपेन जगन्नुत-मन्त्रि-माणिक्य-मौलिना ॥ ३५ ॥
चतुर्विंशति-जिनेन्द्र-श्रा-निलयं मन्त्रयाचकं ।
सद्धर्म-चन्दनोद्भूतो दृष्ट्वा निर्म्मापितं ततः ॥ ३६ ॥
द्वितीयं यस्य सम्यक्त्व-चूड़ामणि-गुणाख्यया ।
भव्य-चूड़ामणिनाम तस्मै प्रीत्या ददात्ततः ॥ ३७ ॥
दानार्थं भव्य-चूड़ामणि-जिन-भवनो वासिनां सन्मुनीनां
भोगार्थं चानुजज्ञेनोद्धरणमिह जिनेन्द्राष्टविध्यर्चनार्थं ।
श्री-पार्श्व-स्वामिनां च त्रिजगदधिपतेः कुक्कुटेशस्य पत्युः
पुण्यश्री-कन्यकाया विवहन-विधयं मुद्रिकामर्पयन्वा ॥३८॥
एकाशीत्युत्तर-सहस्र-शक-वर्षेषु गतेषु प्रमादि-
संवत्सरस्य पुण्य-मास शुद्ध शुक्रयारचतुर्दश्यामुष-
रायसक्रान्तौ श्री-मूल-संघदेशियगणपुस्तकगच्छान्वयिने
विधाय ॥

नरसिंह-हिमाद्रितुहिन-कलश-हर-क-मुख्य-कर-जिह्वकेय
नव-धारा गङ्गाम्बुनि सचतुर्विंशतिजिनेश-पादसरसीमध्ये
सवणेरुमदाद्भूपविरचित-बलि-क्रम्नं-नृपति-शिवि-खच

प्रगुणित-कुबेरविभवस्त्रिगुणोदय-सिंहविक्रमो नरसिंहः

अतःपरं ग्राम-सीमाभिधास्यते ॥ तत्र पूर्व्वस्यां दिशि सुवर्णेर-वेक्कन यडेय सीमे कुरडियरे अल्लि तेङ्कु हिरियोब्बेयि पोगलु विम्बिसेट्टियकेरेय कोडिय किव्वयलु ॥ अल्लि तेङ्कु बरहालकेरेय अच्चुगट्टुमेरेयागि हिरियोब्बेय बसुरिय तेङ्कुल कोम्बरेय हुणिसे ॥ दक्षिणस्यां दिशि विनत्तिय सुवर्णेर यडेय एरेय दिसेय हुणिसेय कोन हिरियाल । अल्लि हडुवलु हिरियोब्बेय सेत्त मेरडिय हडुवण बल्लेयकेरेय तेङ्कुलकोडिय बल्लरिय बन ॥ अल्लिन्दत्त तरिहलिय कलियमनकट्टद बाय्वल्ल जन्नवुरद हिरिय केरेय बाय्वल्ल सीमे ॥ पश्चिमायां दिशि जन्नवुरक्के सयलेरिङ्ग मागरमरियादे जन्नवूर सुवर्णेर केरेयेरिय नडुवण हिरियहुणिसे सीमे ॥ उत्तरस्यां दिशि कक्किन कोलु अदर मूडण पीरजन केरेयाकेरेयागि सुवर्णेर येडुगनहल्लिय नडुवे बसुरिय दोळे । अल्लिन मूडनालज्जन कुम्मरि अल्लिं मूड चिक्कदरे सीमे ॥

सामान्योऽयं धर्म्म-सेतुर्नृपाणां काले काले पालनीयो भवद्भिः
सर्व्वानेतान् भाविनः पार्थिवेन्द्रान् भूयो भूयो याचते
रामचन्द्रः ॥ ४० ॥

स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धरां ।
षष्टिं वर्ष-सहस्राणि विष्ठायां जायते कृमिः ॥ ४१ ॥
न विषं विषमित्याहुर्वेदस्वं विषमुच्यते ।
विषमेकाकिनं हन्ति देयस्वं पुत्र-पौत्रकं ॥ ४२ ॥
गवाञ्चोत्मा-लक्ष्मी वपुषि यदभक्ष-वनरसो
दिशाशीयक्षोणी स्फुरदुदधिदूर्वैकवसने ।

त्रिलोकप्रासाद-प्रकटित-सुधा-धाम-विशदं
यशो यस्य श्रीमान् स जयति चिरं दुल्लप-विभुः ॥ ४३ ॥
अस्तु स्वस्ति चिराय दुल्ल भवते श्रीजैन-चूडामणे
भव्य-व्यूह-सरोज-षण्ड-तरणे गाम्भीर्य-वाराम्बिधे ।
भास्वद्विश्व-कलाविधे जिन-नुत-वीराब्धि-वृद्धीन्दवे
स्याद्वत्कीर्ति-सिताम्बुजोदरलसद्वारासि-वार्द्धीन्दवे ॥४४॥

श्री गोम्मट-पुरद तिप्पेसुङ्कदल्लि अडकेय हरिङ्गे २०० दसुम्बेगं अटकणु कप्पु दे .....गं बिसिगं १ दसुम्बे गोफल ५ मेलसु हरिङ्गेपट्ट १ दसुम्बेग मान १ मरियन्नायदल्लि गलेय..... .....रेग हाग १ मेलेन्ने २०० गाणदेरं इनितुमं तम्म सुङ्कदधि कारदन्दु चतुर्व्विंशति-तीर्थंकरपू .....प्रधान सर्व्वाधिकारि हिरिय-भण्डारि दुल्लय्यङ्गलु हेगडे लक्कय्यङ्गलुं हेगडे-म..... .....हाय्सल नारसिंह-देयन कय्य पंडितकोण्डु विट्टु ॥ इप्पत्त-नाल्वर मनेदेरं प ..... वा नुडिदुदे सट्टाणि तम्म पेल्दन्ददोलार्ण्णडदोडदे मार्गमेन्दडे नडेदु... ... ...

शशिदिन्दम्बरमब्जदि तिलि-गोलं नेगट्ठ लिन्दानने
पोम्मगावि धनमिन्द्रनि त्रिदिवमासे... ... ...
... ...कीर्ति-देव-मुनिवि सिद्धान्त-चक्रेश-नि-
न्दसंगुं श्रीजिन-धर्म्ममन्दडे बलिक्कं बण्णिपं बण्णिपं ॥४५॥

.....वा लक्ष्या चमू-नायकः ॥ श्री दुल्ल रसवलेकमेवमददादाद्य.....व मानय.....

.....क्त्या मुदा धारापूर्व्वकमुर्व्वरा-स्तुति-भृ.....म्म

.....श्री श्री

भव्याम्भोरुह-भास्करस्सुरसरिन्नीहारवृ .....

.....रु..... .....निः पुरातर्व्व-रत्नाकरः ।

सिद्धान्ताम्बुधि-वर्द्धनामृतकरः कन्दर्प्पशैलाशनि-

स्सोऽयं विश्रुत-भानुकीर्त्ति-मुनि.....वं भूवल्ले ॥४॥

[इस लेख में भी होय्सलवंशी नारसिंह देव के वंश-परिचय के पश्चात् उनका चतुर्विंशति मन्दिर की वन्दना करने तथा हुल्ल द्वारा सर्वज्ञ देव ग्राम का दान करने का उल्लेख है। इस लेख में हुल्ल के लघु भ्राता लक्ष्मण का व उसके का भी नाम आया है। नारसिंह देव ने उक्त बस्ती का नाम भव्यचूडामणि रखा। हुल्लराज की उपाधि सत्यवाक्य चूडामणि थी। लेख का अन्तिम भाग बहुत घिस गया है। इसमें हुल्लराज द्वारा, शोभनदेव आदि द्वारा नारसिंह देव का प्रशंसापत्र देकर गोम्मटपुर के कुछ देवगो का दान चतुर्विंशति तीर्थंकर बलि के लिये कराने का उल्लेख है। अन्त में भानुकीर्ति मुनि का भी उल्लेख है।]

१३८ (३५१)

मठ के उत्तर की गोशाला में

(शक सं० १०४१)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।

जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥

स्वस्ति श्री-वर्द्धमानस्य वर्द्धमानस्य शासने ।

श्री-क्रौण्डकुन्दनामाभूच्चतुरङ्गुलचारणः ॥ २ ॥

तस्यान्वयेऽजनि ख्याते विख्याते देशिके गणे ।
गुणी देवेन्द्र-सिद्धान्त-देवो देवेन्द्र-वन्दितः ॥ ३ ॥

अवर सन्तानदोल् ॥

वृत्त ॥ पर-वादि-क्षितिभृन्निशात-कुलिश श्री-सूक्त-रत्नाञ्जष्ट्—
चरणं पुस्तक-गच्छ देशिग-गण प्रख्यात-यागीश्वरा—
भरणं मन्मथ-भञ्जनं जगदोज्जादं ख्यातनादं दिवा-
करणन्दि-व्रतिपं जिनागम सुधाम्भोराशि-राराधिपं ॥ ४ ॥

अन्तेनल्लिन्नेनक्करियेनेन्दे जगत्त्रय-वन्दारप्पे-
र्म्पं वर्ज्जदिर्देरेम्बुदने वल्लेनदन्तादे संयम चरि-
त्रं वपमेन्दिवनलगमिन्तु दिवाकरनन्दि-देव-सि-
द्धान्तिगनन्दवान्तु रमनाविद्यात्रानदनेन्तु वण्णिपें ॥ ५ ॥

वरिष्यरप्प ॥

नेरेये वनुत्रमिक्किदवोलिर्द मनन्निने मेच्चनाम्मेंतु
दुरिसुवुदिल्ल निर्दे वर मग्गुलनिक्कुवुदिल्ल पानिन्
किरु तेरेयेम्बुदिल्लनुगुवुदिल्ल मलुवुदिल्लहीन्द्रनुं
नेरेवने वण्णिसल्गुरु-गणावलियं मलधारि-देवरं ॥ ६ ॥

वरशिष्यर् ॥

व ॥ कन्दुमहापथसंकल्प-जीव-दयापर-जैन-मार्ग-रा-
द्धान्त-पयोधिगन्तु विषय-वैराग्यनुडुत-कर्म्म-भञ्जन-
सन्तत-भव्य-पद्म-दिनदुत्तमनं शुभचन्द्र-देव-सि-
द्धान्त-मुनीन्द्रनं पोगल्दुम्बुधि-वेष्टित-भूरि-भूतल ॥ ७ ॥

.....क्त्या मुदा धारापूर्व्वकमुर्व्वरा-स्तुति-भृ.....म्म
.....श्री श्री
भव्याम्भोरुह-भास्करस्सुरसरित्रोहारबु .....
.....कु..... .....निः पुरास्यर्य-रत्नाकरः ।
सिद्धान्ताम्बुधि-वर्द्धनामृतकरः कन्दर्प्पशैलाशनि-
स्सोऽयं विश्रुत-भानुकीर्त्ति-मुनि.....तं भूतले ॥४६॥

[इस लेख में भी होयसलवंशी नारसिंह देव के वंश-परिचय के पश्चात् उनका चतुर्विंशति मन्दिर की वन्दना करने तथा हुल्ल द्वारा सवन्योड ग्राम का दान करने का उल्लेख है। इस लेख में हुल्ल के लघु भ्राता लक्ष्मण का य अमर का भी नाम आया है। नारसिंह देव ने शक्र बस्ती का नाम भव्यचूडामणि रखा। हुल्लराज की उपाधि सम्यक्त्व चूडामणि थी। लेख का अन्तिम भाग बहुत घिस गया है। इसमें हुल्लप्प हेग्गडे, सोकप्प आदि द्वारा नारसिंह देव को प्रार्थनापत्र देकर गोम्मटपुर के कुछ देवसों का दान चतुर्विंशति तीर्थंकर बस्ति के लिये कराने का उल्लेख है। अन्त में भानुकीर्ति मुनि का भी उल्लेख है।]

१३८ (३५१)

मठ के उत्तर की गोशाला में

(शक सं० १०४१)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥
स्वस्ति श्री-वर्द्धमानस्य वर्द्धमानस्य शासने ।
श्री-पोयसकुन्दनामाभूच्चतुरब्धिधरः ॥ २ ॥

.....क्त्या मुदा धारापूर्व्वकमुर्व्वरा-स्तुति-मृ.....म्म

.....श्री श्री

भव्याम्भोरुह-भास्करस्सुरसरित्रोहारवु .....

.....क्ष..... .....निः पुरात्यर्य-रत्नाकरः ।

सिद्धान्ताम्बुधि-वर्द्धनामृतकरः कन्दर्प्पशैलाशनि-

स्सोऽयं विश्रुत-भानुकीर्त्ति-मुनि.....वं भूतज्ञे ॥४॥

[इस लेख में भी होय्सलवंशी नारसिंह देव के वंश-परिचय के पश्चात् उनका चतुर्विंशति मन्दिर की वन्दना करने तथा हुल्ल द्वारा सब्बेरु ग्राम का दान करने का उल्लेख है। इस लेख में हुल्ल के लघु भ्राता लक्ष्मण का व अमर का भी नाम आया है। नारसिंह देव ने उक्त बस्ती का नाम भव्यचूडामणि रखा। हुल्लराज की उपाधि सम्यक्त्व चूडामणि थी। लेख का अन्तिम भाग बहुत घिस गया है। इसमें हुल्लदेव हेग्गडे, सोकय्य आदि द्वारा नारसिंह देव को प्रार्थनापत्र देकर गोम्मटपुर के कुछ देवलों का दान चतुर्विंशति तीर्थंकर बस्ति के लिये कराने का उल्लेख है। अन्त में भानुकीर्त्ति मुनि का भी उल्लेख है।]

१३८ (३५१)

मठ के उत्तर की गोशाला में

(शक स० १०४१)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।

जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥

स्वस्ति श्री-वर्द्धमानस्य वर्द्धमानस्य शासने ।

श्री-कौण्डकुन्दनामाभूच्चतुरङ्गुलचारणः ॥ २ ॥

.....कत्या मुदा धारापूर्व्वकमुर्व्वरा-स्तुति-भृ.....म्म

.....श्री श्री

भव्याम्भोरुह-भास्करस्सुरसरित्रोद्धारवु .....

.....क्रु..... .....निः पुरात्तर्य-रत्नाकरः ।

सिद्धान्ताम्बुधि-वर्द्धनामृतकरः कन्दर्पशैलाशनि-

स्सोऽयं विश्रुत-भानुकीर्त्ति-मुनि.....तं भूतले ॥४६॥

[इस लेख में भी होय्सलवंशी नारसिंह देव के वंश-परिचय के पश्चात् उनका चतुर्विंशति मन्दिर की वन्दना करने तथा हुल्ल द्वारा सर्वपरेु ग्राम का दान करने का उल्लेख है। इस लेख में हुल्ल के लघु भ्राता लक्ष्मण का व अमर का भी नाम आया है। नारसिंह देव ने अक बस्ती का नाम भव्यचूडामणि रक्खा। हुल्लराज की उपाधि सम्यक्त्व चूडामणि थी। लेख का अन्तिम भाग बहुत घिस गया है। इसमें हुल्लदेव हेग्गडे, लोकय्य आदि द्वारा नारसिंह देव को प्रार्थनापत्र देकर गोम्मटपुर के कुछ टेक्सों का दान चतुर्विंशति तीर्थंकर वस्ति के लिये कराने का उल्लेख है। अन्त में भानुकीर्त्ति मुनि का भी उल्लेख है।]

१३८ (३५१)

मठ के उत्तर की गोशाला में

(शक स० १०४१)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।

जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥

स्वस्ति श्री-वर्द्धमानस्य वर्द्धमानस्य शासने ।

श्री-कोण्डकुन्दनामाभूच्चतुरङ्गुलचारणः ॥ २ ॥

.....क्त्या मुदा धारापूर्व्वकमुर्व्वरा-स्तुति-भृ.....म्म

.....श्री श्री

भव्याम्भोरुह-भास्करस्सुरसरित्रोद्धारवु .....

.....कु..... .....निः पुरात्तर्य-रत्नाकरः ।

सिद्धान्ताम्बुधि-वर्द्धनामृतकरः कन्दर्प्पशैलाशनि-

स्सोऽयं विश्रुत-भानुकीर्त्ति-मुनि.....तं भूतले ॥४६॥

[इस लेख में भी होय्सलवंशी नारसिंह देव के वंश-परिचय के पश्चात् उनका चतुर्विंशति मन्दिर की वन्दना करने तथा हुल्ल द्वारा सर्व्वपरिहार ग्राम का दान करने का उल्लेख है। इस लेख में हुल्ल के लघु भ्राता लक्ष्मण का व अमर का भी नाम आया है। नारसिंह देव ने उक्त बस्ती का नाम भव्यचूड़ामणि रक्खा। हुल्लराज की उपाधि सम्यक्त्व चूड़ामणि थी। लेख का अन्तिम भाग बहुत घिस गया है। इसमें हुल्लदेव हेग्गड़े, लोकय्य आदि द्वारा नारसिंह देव को प्रार्थनापत्र देकर गोम्मटपुर के कुछ टेवसों का दान चतुर्विंशति तीर्थंकर बस्ति के लिये कराने का उल्लेख है। अन्त में भानुकीर्त्ति मुनि का भी उल्लेख है।]

१३८ (३५१)

मठ के उत्तर की गोशाला में

(शक सं० १०४१)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।

जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥

स्वस्ति श्री-वर्द्धमानस्य वर्द्धमानस्य शासने ।

श्री-कोण्डकुन्दनामाभूच्चतुरङ्गुलचारणः ॥ २ ॥

व देवेन्द्र सिद्धान्त देव की आज्ञा में हुए थे। उनके द्वारा शिष्य मल्लिषेण देव और शुभचन्द्र देव सिद्धान्त शुद्धीन्द्र थे। [illegible] उनके द्वारा [illegible] देवेन्द्र सिद्धान्त देव [illegible] [illegible] [illegible]

इन्दिवर गुरुगलप्प श्रीमद्दिवाकरणन्दि-सिद्धान्त-देवर ॥
पुउ ॥ आ-मुनि-दीचेयंकुडे समम-तपो-निधियागि दान-वि-
न्तामणियागि सद्गुण-गणाग्रणियागि दया-दम-क्षमा—
श्री-मुख-लक्ष्मियागि विनयार्णव-चन्द्रकेयागि सन्तत
श्रीमति गन्तियन्नेंगल्दरुर्व्वियोलुर्व्वरे कूर्पु कीर्त्तिसतु ॥८॥
श्रीमति गन्तियर्ज्जित-कषायिगलुप्रतपश्चरित्रमि-
न्तीमहियोळ् पोगर्सेंगे नेगर्सेंगे नोन्तु समाधिविधि अगल्-
त्यामियनिप्प पेळ्दिन जिनेन्द्रन पाद-पयोज-युग्मम-
प्रेमदे सिरादोळ् निलिसि देवनिवास-विभूतिगंदिवरतु ॥९॥
शक-वर्ष १०४१ नेय विलम्बि सम्यक्त्वरत्न फाल्गुण-
शुद्ध-पञ्चमी बुधवार-दन्दु गन्धवन-विधिय गामरि
गन्तियन्गुडिगि दत्तिकब्बे गन्दर् ॥
अगलिसलेन्द चारु-तपं
पगुरुत्त गुप्त-गणमं दनुपालिसुत्तिर्प-
न्गलिन्द निजगुरुगे-निसि-
दगर्यं माडुर्के गन्तियम्मोंदिसिदर् ॥ १० ॥
कमल प्रात्त गलु[ब्ब] चतुरात्मालि सिद्धान्तरोल्,
तिरुवा गुप्त-गण-प्रभव-मनदोलु निर्मेलरादं मुनी-
श्वरनाद्र श्रीत भार तोर-तपदाल् कल्पोर्व्व नोन्तन्दिवा-
करणन्दि-व्रत पालनं गडनेनो पागोन्द्र-पट्टक्कळ् ॥११॥

के देवता शिक्षालय देव की माता में हुए थे। उनके दो शिष्य अनुयायी देव और शुभचन्द्र देव शिक्षालय शुभचन्द्र थे। [illegible] दीक्षा उनके एक शिष्य का समाधिस्थान किया। यह [illegible] शाला में स्थापित कराया।

१४० (४५५)

मठ के अधिकार में एक साधु-पत्र पर का लेख

(शक सं० १४५६)

[illegible]

इन्तिवर गुरुगलप्प श्रीमद्दिवाकरणन्दि-सिद्धान्त-देवर ॥
पृत्त ॥ आ-मुनि-दीचेयंकुडे समम-तपो-निधियागि दान-चि-
न्तामणियागि सद्गुण-गणाम्बुधियागि दया-दम-क्षमा—
श्री-मुख-लक्ष्मियागि विनयार्णव-चन्द्रिकेयागि सन्तवं
श्रीमति गन्तियन्नेगल्दरुर्व्वियोलुर्व्वरे कूर्त्तु कीर्त्तिसलु ॥ ८ ॥
श्रीमति गन्तियर्ज्जित-कषायिगलुग्रतपङ्गलिन्दमि-
न्तीमहियोल् पोगर्त्तेगे नेगर्त्तेगे नोन्तु समाधियिं जगत्-
स्वामियेनिप्प पेम्पिन जिनेन्द्रन पाद-पयोज-युग्मम-
प्रेमदे चित्तदोल् निलिसि देवनिवास-विभूतिगन्दिदलु ॥ ९ ॥
सक-वर्ष १०४१ नेय विलम्बि-सम्वत्सरद फाल्गुण-
शुद्ध-पञ्चमी-बुधवार-दन्दु मन्यसन-विधियिं श्रीमति
गन्तियम्मुडिपि देवलोकक्के सन्दर् ॥

अगणितमेने भाक्त-तप
प्रगुणिते गुण-गण-विभूषणान्वितेयि-
न्तगणित-निजगुरुगे-निसि-
धिगेयं माडुव्वे गन्तियम्मांबुधिगर् ॥ १० ॥
करुणं प्राणि गणक्के नोन्त चतुरात्मम्प्रति सिद्धान्तदोल्
परिणामं गुण-सेव्य-भव्य-जनदोल् निर्म्मत्सरत्वं मुनी-
श्वररोल् प्रीतियुं घोर-वीर-तपदोल् कय्गुम्बि पेम्पल् दिवा-
करनन्दि-व्रति पेम्पनें वडेदनो योगीन्द्र-चूडाङ्कनाल् ॥ ११ ॥

[यह लेख देखिए गए कुलचन्द्रस्वामि के शिलालेख सहित और इसकी लिपि भाषा आदि के आधार से। शिलालेख सहित बड़े भारी लेखों में।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

सार्धं हेमाद्रि-पार्श्वेश चारु-श्री-चैत्य-वेश्मना ।
द्वात्रिंशत्प्रमितानां श्री-सपर्योत्सव-दैवते ॥ ९ ॥
जिनेन्द्रपञ्चकल्याण-श्री-रथोत्सव-सम्पदे ।
श्रीचारुकीर्त्ति-योगीन्द्र-मठ-रक्षण-कारणात् ॥१० ॥
आहाराभय-भैषज्यशास्त्र दानादि-सम्पदे ।
बेल्गुलाख्यमहाग्रामं विन्ध्य-चन्द्राद्रिभासुरं ॥ ११ ॥
भूदेवी-मङ्गलादर्श-कल्याण्याख्य-सरोऽन्वितं ।
जिनालयैस्तु ललितैर्मण्डितं गोपुरान्वितैः ॥ १२ ॥
स-तटाकं स-पाम्पेयं होस-हल्लिसमाह्वयं ।
ईशानदिक्स्थितं ग्रामं शाल्याद्युत्पत्तिभासुरं ॥ १३ ॥
उत्तनहल्लीति विख्यातं प्रतीच्यां ककुभि स्थितं ।
ग्रामं कडलालुनामानं ग्रामं गोपाल-संकुलं ॥ १४ ॥
पूर्वं पूर्णार्य्य-मन्त्रित्वं कुमारे नृपतौ सति ।
इति ग्रामान् चतुःसंख्यान् ददौ भक्त्या स्वयं मुदा ॥१५ ॥
स्वस्ति श्री-दिल्लि-हेमाद्रि-मुधा-संगीत-नामसु ।
तथा श्वेतपुरश्रेमवेणु बेल्गुल संस्थितु ॥ १६ ॥
संस्थानेषु समस्तेषु-सिंह-पीठ-विभासिना ।
श्रीमता चारुकीर्त्तीना पण्डितानां मतां वरो ॥ १७ ॥
शासनोक्त्या तान् ग्रामानपेयाग्रान् सादरं ।
ददः श्रीकृष्ण-भूपालः पालिताखिल-मण्डलः ॥ १८ ॥

[यह मूल सनद का मठ के गुरुओं द्वारा किया हुआ कन्नड पाठ का अनुवाद है। मूल शासन चार्ले नं० (३५०) कन्नड में दिया गया है।]

१५२ (३६२)

तावरेकेरे के उत्तर की ओर चट्टान पर

श्रीमत्कमठकृत १२६३ नय
श्रीपद्मावतीकीर्त्ति-पण्डित यति सोभानुसंवत्सरे
माघे पुण्यचतुर्द्दशी तिथिवरं कृष्णे सुपक्ष गता।
मध्याह्ने वर मूलभे च करण भार्गव्यवारं धृते
योगे स्वर्गपुरं जगाम सतिमान् श्रीवेल-चक्रेश्वरः ॥ श्रीः ॥

१५३ (३६३)

नगर के पूर्व की ओर बाणावर चलवप्प के खेत में एक शिला पर

(लगभग शक सं १०४२)

स्वस्ति श्रीमत्त्रिभुवनमल्ल-पृथ्वी-वल्लभ-श्रीरंगपट्टण-पाताल-
[illegible] दिरिय-दण्डनायकर [illegible] मलधारिदेव-
देवरगण [illegible] कण्डु [illegible] बेलगोलद [illegible] तावरे-
कोट्टिय मले मेट्टि-कट्टिद रायवेय मले मधि-कोट्टु .... अविक
कोट्टि-मक्कलु मट्टि मट्टि मधिसिदि नड [illegible] सिरिक [illegible]-हारि [illegible]
किव..... .. ..यमगद चैत्य..... ...र.....

[इस लेख में मुख्यतः श्रीमत्कमठ पण्डित के शिष्य मलधारि देवरगण आदि के कुछ मठ या [illegible] का उल्लेख है। लेख का अधिकांश भाग घिस गया है इससे पूरा भाव स्पष्ट नहीं हो सका।]

श्रवण बेल्गोल के आसपास

१४४ (३८४)

जिननाथपुर में अरेगल बस्ति के पूर्व्व की ओर

(लगभग शक सं० १०५७)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥
भद्रमस्तु जिन-शासनाय सम्पन्नतां प्रतिविधान-हेवबे ।
भव्य-वादि-मद-हस्ति-मस्तक-स्फाटनाय पटवे-पटीयसे ॥२॥
स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ-महाराजाधिराज परमेश्वर-परम-भट्टारक सत्याश्रय-कुल-तिलक चालुक्याभरण श्रीमत्त्रिभुवनमल्ल-देवर राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमान माचन्द्रार्क्कतारम्बरं मल्लुत्तमिर ॥
विनयादित्य-नृपालं
जन-विनुतं पोटसलाम्बरान्वयदिनप ।
मनु-मार्ग्गनेनिसि नेगल्द
वन-निधि-परिवृत-समस्त-धात्रीतलदोल् ॥ ३ ॥
तत्पुत्र ॥
एरेय ङ्ग-भोगमल्ल-
क्षितिपति सिंगनि-भूपर धुरदेवोल् ।

तरिसन्दु गेल्दु वार-
वैरवट्टागिदुं सुखदे राज्यं गेय्दं ॥ ४ ॥

आनेगन्द धरेय नृपासन
गुरु दृष्टिरि-धर्मने सकल-धरि-
त्रा-नाथनर्चि-जनता-
कानीने भरा नगर्द चामुण्डनृपं ॥ ५ ॥

आगल उम्म ॥

कैरुं तु मनयज्ञम
नङ्गय गलर्दलि दोषि गुणदर्यं द
मङ्गलनिरु कृति-माण्ड गु-
मिङ्गं आ-विष्णुवर्द्धनोदयपाल ॥ ६ ॥

[illegible] पुरवराधीश्वर [illegible] मलपरोलगण्ड राज-आर्यण्ड मलवाङ्-कैरु [illegible] सुर-सरघू-उपुरि-सलेगुर्पेम्बुगुन्द-पुरवरोल [illegible] पुरवरदोल [illegible]

वृत्त ॥ [illegible]
[illegible] नलवत्तेलं कैरुं [illegible]
[illegible] ''दय [illegible]

श्रवण बेलगोल के आसपास

१४५ (३८४)

जिननाथपुर में अरेगल बस्ति के पूर्व्व की ओर

(लगभग शक सं० १०५७)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥
भद्रमस्तु जिन-शासनाय सम्पद्यतां प्रतिविधान-हेतवे ।
अन्य-वादि-मद-हस्ति-मस्तक-स्फाटनाय पटवे-पटीयसे ॥२॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ-महाराजाधिराज परमेश्वर-परम-भट्टारक सत्याश्रय-कुल-तिलक चालुक्याभरण श्रीमत्त्रिभुवनमल्ल-देवर राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमान माचन्द्रार्क्कतारम्बरं सल्लुत्तमिरे ॥

विनयादित्य-नृपालं
जन-विनुतं पोय्सलान्वयाभ्युदयदिनप ।
मनु-मार्ग्गंनेनिसि नेगल्द
धन-निधि-परिवृत-समस्त-धात्री-नवदोज ॥ ३ ॥

वत्सुव ॥

एरेयङ्ग-पोय्सलं त-
ल्लरेयट्टि विरोधि-भूपरं घुरदेडेयोल् ।

वरिमन्दु गेल्दु वार-
वेरवट्टागिर्दु गुरुवर वाक्यं गेल्दं ॥ ४ ॥

आनेगन्दु एरग नृपालन
मुन्नु पृथ्वीरि-मर्दने सकल-धरि-
त्राननाथनमं जनता-
कानीने धरग नगर्द यज्ञालनृपं ॥ ५ ॥

आतन तम्म ॥

कोङ्गं खु मलयलुम
नङ्गय नाडोडिसि कोंकिगुरिवरं ट
ङ्गलमिक्कि-गाण्ड वृ
सिङ्गं आ विष्णुवर्द्धनोदयापाल ॥ ६ ॥

[illegible] दोरसमुद्रदल्लिय महाराज-महाराणि वप्प दोरसमुद्रद
पुरवराधीश्वर यादवकुलाम्बर-दिनमणि वप्प-पृथ्वि
मलपरोल्गण्ड राज-मार्तण्ड तलकाडु-कोङ्गु-नङ्गलिकोङ्ग-
नूर्-तरूर्-उच्चङ्गि-तलेकाडुगोम्बुगोण्ड भुजबल
पुरुषनाद काण्डु गङ्गवाडि [illegible] [illegible]
गुरुवाद राज्य तन्नोलिर्प [illegible]

वृत्त ॥ जिनधर्माम्बोधि-नागवर्द्धन भुव आधारस्तंभ [illegible]
[illegible] तनयनेनिसि-राजमल्ल कोंगाल्व-[illegible]
तनयोत्पादित पोयिसट्टे [illegible]
[illegible] ॥ ७ ॥

श्रवण बेल्गोल के आसपास

१४४ (३८४)

जिननाथपुर में अरेगल बस्ति के पूर्व्व की ओर

(लगभग शक सं० १०५७)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥
भद्रमस्तु जिन-शासनाय सत्यप्रता प्रतिविधान-हेतवे ।
अन्य-वादि-मद-हस्ति-मल्ल-स्फाटनाय पटवे-पटीयसे ॥२॥
स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ-महाराजाधिराज परमेश्वर-परम-भट्टारक सत्याश्रय-कुल-तिलक चालुक्याभरण श्रीमत्त्रिभुवनमल्ल-देवर राज्यसुस्थिरराज्याभिवृद्धि-प्रवर्द्धमान माघनन्दिकंतारम्बर सन्तुष्टमिर ॥

विनयादित्य-नृपाले
जन-विनुतं पोय्सलान्वयाम्बरदिनप ।
मनु-मार्गमनोसि मेलल्द
वन-निधि-परिवृत-समस्त-धात्री तलदा ॥ ३ ॥

तदीय ॥

एरेय[ङ]-भाटमल्ल त-
न्नेरयट्टि विरोधि-भूप पुरदहयोल् ।

तस्मिन्नु गच्छ्वा वार-
वंरयद्वागितुं गुरवद वाश्व संदद ॥ ४ ॥
आनगाद्व सरमा नृपायन
पूत्रं पृदब्रिं-अहंने सकाम-धरि-
रा नाचनधिं जनाना
कानीने पदा नगन्द यद्मानानृषं ॥ ५ ॥
आगन नाम ॥

कोरं न मनवयुम
नकृष गलवहिता वंगिगृणिवन्त ह
गङ्गानोनकोन-नाथड यु
'नगं' आ विष्णुपद्धेनोनवंपाव ॥ ६ ॥

[illegible]

श्रवण बेल्गोल के आसपास

१४४ (३८४)

जिननाथपुर में अरेगल बस्ति के पूर्व्व की ओर

(लगभग शक सं० १०५७)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥
भद्रमस्तु जिन-शासनाय सम्यग्यतां प्रतिविधान-हेवबे ।
अन्य-वादि-मद-हस्ति-मस्तक-स्फाटनाय घटने-पटीयसे ॥२॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ-महाराजाधिराज परमेश्वर-परम-भट्टारक सत्याश्रय-कुल-तिलकं चालुक्याभरणं श्रीमत्त्रिभुवनमल्ल-देवर राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमान माचन्द्रार्क्कतारम्बरं सल्लुत्तमिरे ॥

विनयादित्य-नृपालं
जन-विनुतं पोय्सलान्वयान्वयदिनपं ।
मनु-मार्ग्गनेनिसि नेगल्दं
वन-निधि-परिवृत-समस्त-धात्री-वनदोल् ॥ ३ ॥

वत्सुत्र ॥

एरेयङ्ग-पोय्सलं व-
ल्लरेयट्टि विरोधि-भूपरं धुरदेंडेयोल् ।

वासदिनुदयिसिदं सचि-
मासुरवर-कीर्त्ति पंचदण्डाधीशं ॥१२॥

वृत्त ॥ माडिसिदं जिनेन्द्रभवनङ्गलना कोलनादि-तीर्थदलु
रूढियिनेल्लं-वेत्तेसेव बेलगोलदलु चतु-स्तव-निर्मितियिं ।
नोडिदरं मनङ्गोलिपुवेम्बिनमेच चमूपनर्त्थि कै-
गूडे धरित्रि कोण्डु कोनेदाडे जमन्नलिदाडे लोजेयि ॥१३॥

अन्तु दान-विनोदनुं जिनधर्मोभ्युदय-प्रमोदनुमागि पत्तकाल सुखदलिर्द्द बळिक सन्यासन-विधियि शरीरमं विट्टु सुर-लोक निवासियादनित्त ॥

वृत्त ॥ मलवत्युद्धत-देश-कण्टकरनाटन्दोसिवेङ्गोण्डुदो-
र्व्वलदिं कांक्षुरनोसि वैरि नृपरं वेलट्टि तुल्वोविसुत्तन्य-मं-
डलमं तत्पतिगेय्दे माडि जगदोलु वीरक्के वानिन्तुगु-
न्दलेयार्द्द कलि गङ्गनप्रतनयं श्री वोप्प-दण्डाधिपं ॥१४॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-सामन्ताधिपति महाप्रचण्डदण्डनायक वैरिभय-दायक द्रोह-गरट्ट सेमामज्जषड्ढ । दयवत्सराजं । कान्ता-मनोज्ञ । गोत्र-पवित्र । सुभजन-मित्रं । श्रीमत्तु वोप्पदेव-दण्डनायकं । तम्मगडनप्प एचि-राज दण्ड-नायकङ्गे परोक्ष-विनयं निसिधिगेयं निलिसि आतन माडिसिद वसदिगं । खण्ड-स्फुटितोद्धाहार-दानर्द्दं । गङ्गसमुद्र-दत्तु १० खण्डुग गद्दयुं हविन-तोटमुं वसदिय मूडल किरु-गेरेयुं । वेडन-कैरेय पेर्द्दलेयुं तम्म गुरुगलप्प श्रीसुलसहृद देसिग-गद्दद पुस्तक

मन्तु ॥

अदटार्प्पुन्नति सत्यमाप्पु चलमायुं सौचमौदार्य्यम-
प्पु दिटं वज्रचे निन्दुवेम्ब गुणसंघावल्लें तालिद्रो-
कद वन्दि-प्रकरल्लें तम्मिपि कः केनार्य्यमेन्दिन्तु चा-
गद पेम्पिन्दमे गङ्ग-राजनेसेदं विधम्भराभागदोल् ॥ ८ ॥

तन्नरार्द सेनदन्ते केोन्नेल्लकोण्डार्यं...यं तूलिरे-
र्व्वेन्नदि धेर्य्यदिं कलहिं नरसिंहन्तन्नरासमं ।
निलयं माडि निमिर्च्चिं चिन्नु-नृपनान्वामार्गदि गङ्ग-
पडलमं कोण्डनराति-मूध-मुकुसिंगङ्ग-पण्डाधिपं ॥ ९ ॥

आतन-पिरियण्ण ॥

व्याप्ति-दिग्वलय-यश-
श्री-पतिविनुत-विनोद-पति धनपति वि-
द्यापतियेनिप्प सम्म-व-
भूपति जिनपतिपदाब्जभृङ्गनलिन्यं ॥ १० ॥

आतन मगि ॥

परम-श्रा-जिननाथ
गुरुगलु श्री-भानुकीर्त्ति वर मक्षी-
करनेनिप्प सहस्र दन्त
पुरुषन्तु यागपट्टे पदेदं नगमे ॥

कन्द ॥ आगलन पुण्यवोगल वि-
श्रागद कत्ति मकर-लग्न-सेख्यं गलन्ते-

यामदिनुदयिसिदं खसि-
भासुरतर-कीर्त्ति वेचदण्डाधीशं ॥१२॥

वृत्त ॥ माडिसिदं जिनेन्द्रभवनङ्गलना केलयादि-वीर्य्यदलु
रूढियिनेल्लो-वेचसेव बेलगोलदलु बहु-चित्र-निर्मितियिं ।
नोडिदरं मनङ्गोलिपुवेम्बिनमेच-चमूपनर्त्थि कै-
गूडे धरित्रि कोण्डु कोनेदाडे जनङ्गलिदाडे लोकैथि ॥१३॥

अन्तु दान-विनोदनुं जिनधर्म्माभ्युदय-प्रमोदनुमागि पल्लकाल सुखदिन्दु बलिक सन्यासन-विधियि शरीरमं विट्टु सुर-लोक निवासियादनित्त ॥

वृत्त ॥ मलवल्युदल-देश-कण्टकरनाट-न्दोसिरेङ्गोण्डुदो-
र्व्वलदि कोङ्गरनोसि वैरि नृपरं वेन्नट्टि गूडोविसुत्तन्य-मं-
डलमं तत्पतिगेय्दे माडि जगदोलु वीरके वानिन्तुगु-
न्दलेयादं फलि गङ्गनम्पतनयं श्री वोप्प-दण्डाधिपं ॥१४॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-सामन्ताधिपति महाप्रचण्डदण्डनायक वैरिभय-दायक द्रोह-गट्ट संग्रामजत्तलट्ट । दयावत्सराजं । कान्ता-मनोज्ञ । गोत्र-पवित्र । बुधजन-मित्र । श्रीमत्तु वोप्पदेव-दण्डनायकं । धर्म्मण्डनप्प एच्चि-राज दण्ड-नायकङ्गे परोक्ष-विनयं निसिधिगेयं निलिसि आसन माडिसिद पत्तदिगं । खण्ड-स्फुटितकवाहार-दानङ्कं । गङ्गसमुद्र-दलु १० खण्डुग गद्देयुं हूविन-तोटमुं वसदिय मूरुग किरु-गेरेयुं । येकन-कोरेय बेर्द लेयुं तम्म गुरुगलप्प श्रीमूलसङ्घद देसिग-गणद पुस्तक

[illegible] शुभचन्द्रसिद्धान्त-देव-शिष्यस्य माघ (ब)
चन्द्र देवस्य धारा-पूर्वके माडकोट्ट दत्ति ॥
श्लोक—यदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धरां।
षष्टिवर्ष-सहस्राणि विष्ठायां जायते कृमिः ॥१५॥

सोला—कालिगे दोरेयोलु—
गावक-वेसनेविराजद्वांकुलेयं-
नावोदोरे मरि गल गोले
भूवरदाग् एचिकब्बे क... र्रं ॥ १६ ॥

दानदोलनिनागा गो-
मालोकिसलोरे-ल गालिव .
कनागिर्दे-दु दुडुव
दानमन एचब्बेगलिनकरसिदळ् ॥ १७ ॥

[illegible] शुभचन्द्र [illegible] एचिकब्बेगु [illegible]

[illegible]

लिये गङ्ग समुद्र की कुछ भूमि का दान शुभचन्द्र सिद्धान्त देव के शिष्य माधवचन्द्र देव को किया। एचिराज की भार्या एचिकब्बे व उसकी बहन बागणब्बे ने यह लेख लिखाया। एचिकब्बे शुभचन्द्र देव की शिष्या थी। लेख में गङ्गराज की वंशावली इस प्रकार पाई जाती है—

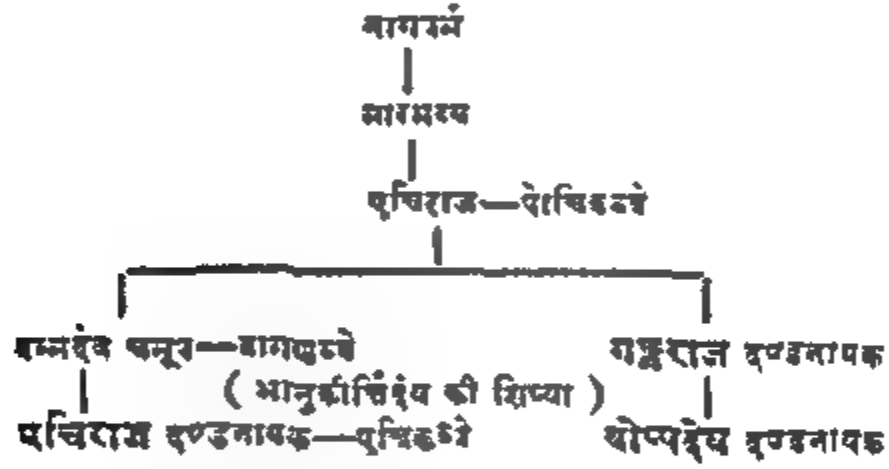

श्रवण बेल्गोल और आसपास के ग्रामों के अवशिष्ट लेख

अवशिष्ट शिलालेखों का निम्न प्रकार समय अनुमान किया जाता है

शक संवत् की आठवीं शताब्दि	१५२ १८६.
शक संवत् की सातवीं शताब्दि	१५३, १५७, १५८, १५६ १६०, १६१, १६२, १६४, १६०, १६२, १६३, १६४, १६५, १६७, १६८, २००, २०४, २०३, २०५, २०६, २०७ २०८, २१०, २११, २१२, २१३ २१४, २१५ २१७, २१८, २१६, २२०, २८४।
शक संवत् की आठवीं शताब्दि	१४७, १४६, १५४, १५५, १७४, १६१, २५३, २५६.
शक संवत् की नवमी शताब्दि	१५८, १५०, १५६, १७१, १८०, १८५, १८६, २०१, २०६, २२१, २२७, २३५, २३६, २३७, २५५, २७०, २८२, २८७, २६४, २६७, २६८ ३०७, ३१५, ४०६, ४१० ।

शक संवत् की दसवीं शताब्दि

१४८, १५०, १५१, १६३, १६५, १६६, १६७, १७२, १७३, १७४, १७७, १७८, १८२, २१६, २२३, २२८, २३६, २५४, २५७, २५८, २५६, २६०, २६१, २६२, २६३, २६४, २६६, २७२, २७३, २७४, २७७, २७८, २७६, २८०, २८१, २८५, २८६, २८८, २८६, २६०, २६१, २६२, २६३, २६५, २६६, २६६, ३०० ३०१, ३०२, ३०३, ३०४, ३०५, ३०६, ३०८, ३०६, ३१०, ३११, ३१२, ३१३, ३१४, ४६६.

शक संवत् की ग्यारहवीं शताब्दि

१६८, १६६, १७०, १७६, १८१, १८१, १८४, १८८, १६६ २०४, २२२, २२४, २२५, २३०, २३१, २४०, २४१, २४२ २४६, २६५, २६६, २६७, २७१, २७५, २७६, ३१६, ३५१, ३६०, ३६८, ३६६, ४४५ ४४६, ४४७, ४५४, ४५६, ४६० ४७३, ४७८, ४८८, ४८६,

शक संवत् की बारहवीं शताब्दि

१७६, १८०, २२६, २३२, २३३, २३४, २१८, २४३, २४४, २४५, २४६, २५१, २८३, ३१७, ३१८, ३१६, ३२०, ३२३, ३२४, ३२५, ३२६, ३२७, ३२८, ३६१, ४०१, ४०८, ४११, ४२६, ४३१, ४६१, ४७६, ४७१, ४७५, ४७६, ४८७, ४६० ।

शक संवत् की तेरहवीं शताब्दि	२४८, २५०, २५२, २९८, ३३०, ४०६, ४१३, ४१४, ४१८, ४२१, ४३०, ४३२, ४४२, ४४३, ४६२, ४६७ ४७७, ४८१, ४८४।
शक संवत् की चौदहवीं शताब्दि	२४७, ३४६ ३४७ ३०१, ३०२, ३०३, ३०४, ४८० ४९२ ४२३, ४२४, ४२५, ४२८, ४२९।
शक संवत् की पन्द्रहवीं शताब्दि	३२१ ३२२, ३५२, ३५३, ३५४ ३५५, ४०२, ४८३, ४८४।
शक संवत् की सोलहवीं शताब्दि	३३४, ३३५, ३७०, ३०५ ३०६, ३००, ३०१, ३१८, ३९९, ४०२, ४०३, ४०४, ४१२, ४१६, ४१९, ४४८, ४४९ ४५०, ४५१ ४५२ ४५३ ४६३ ४६४, ४६५ ४८२,
शक संवत् की सत्तरहवीं शताब्दि	३४५, ३४८, ३५७, ३०८ ३०९, ३८० ३९१, ३९४, ३९५, ४२७, ४४४।
शक संवत् की अठारहवीं शताब्दि	४१०, ४३८, ४३९, ४४०।

शक संवत् की दसवीं शताब्दि

१४८, १५०, १५१, १६३, १६५, १६६, १६
१७२, १७३, १७४, १७७, १७८, १८३, २१
२२३, २२८, २३६, २५४, २५७, २५८, २५
२६०, २६१, २६२, २६३, २६४, २६६, २७
२७३, २७४, २७७, २७८, २७६, २८०, २८
२८५, २८६, २८८, २८६, २९०, २९१, २९२
२९३, २९५, २९६, २९६, ३०० ३०१, ३०२
३०३, ३०४ ३०५, ३०६, ३०८, ३०६, ३१०
३११, ३१२, ३१३, ३१४, ४९६,

शक संवत् की ग्यारहवीं शताब्दि

१६८, १६६, १७० १७६, १८१, १८२, १८४,
१८८, १९६ २०४, २२२, २२४, २२५, २३०,
२३१, २४०, २४१, २४२ २४६, २५५, २६१,
२६७, २७१, २०५, २०६, ३१६, ३५१, ३६०,
३६८, ३६६, ४४५ ४४६, ४४७, ४५४, ४५६,
४६० ४७३, ४७८, ४८८, ४८६,

शक संवत् की बारहवीं शताब्दि

१०६, १८०, २२६, २३२, २३३, २३४, २३८
२४३, २४४, २४५, २४६, २५१, २८३, ३१७,
३१८, ३१६, ३२०, ३२३, ३२४, ३२५, ३२६,
३२७, ३२८, ३९१, ४०७, ४०८, ४११, ४२६
४३१, ४६१, ४६६, ४७१ ४७५, ४७६, ४८७,
४९०।

शक संवत् की तेरहवीं शताब्दि	२४८, २५०, २५२, २६८, ३३०, ४०६, ४१३, ४१४, ४१८, ४२१, ४३०, ४३२, ४४२, ४४३, ४६२, ४६७, ४७७, ४८१, ४८५।
शक संवत् की चौदहवीं शताब्दि	२४७, ३५६ ३५७, ३०१, ३०२, ३०३, ३०४, ४८० ४२२ ४२३, ४२४, ४२५, ४२८, ४२६।
शक संवत् की पन्द्रहवीं शताब्दि	३२१ ३२२, ३५२, ३५३, ३५४, ३५५, ४०२, ४८३, ४८४।
शक संवत् की सोलहवीं शताब्दि	३३४, ३३५, ३७०, ३०५ ३०६, ३०७, ३८१, ३१८, ३१६, ४०२, ४०३, ४०४, ४१२, ४१६, ४१६, ४४८, ४४६, ४५०, ४५१, ४५२ ४५३, ४६३, ४६४, ४६५, ४८२,
शक संवत् की सत्तरहवीं शताब्दि	३४५, ३४८, ३६७, ३०८ ३०६, ३८० ३८१, ३६४, ३६५, ४२७, ४४४।
शक संवत् की अठारहवीं शताब्दि	४१०, ४३८, ४३६, ४४०।

शक संवत् की दसवीं शताब्दि

१४८, १५०, १५१, १६३, १६५, १६६, १६
१७२, १७३, १७४, १७७, १७८, १८३, १
२२३, २२८, २३६, २५४, २५७, २५८, २५
२६०, २६१, २६२, २६३, २६४, २६६, २७
२७३, २७४, २७७, २७८, २७६, २८०, २८
२८५, २८६, २८८, २८६, २६०, २६१, २६२
२६३, २६५, २६६, २६६, ३०० ३०१, ३०२
३०३, ३०४ ३०५, ३०६, ३०८, ३०६, ३१०
३११, ३१२, ३१३, ३१४, ४६६,

शक संवत् की ग्यारहवीं शताब्दि

१६८, १६६, १७०, १७६, १८१, १८४, १८
१८८, १६६, २०४, २२२, २२४, २२५, २३०,
२३१, २४०, २४१, २४२ २४६, २६५, २६६,
२६७, २७१, २७५, २७६, ३१६, ३५१, ३६०,
३६८, ३६६, ४४५ ४४६, ४४७, ४५४, ४५६,
४६० ४७३, ४७८, ४८८, ४८६,

शक संवत् की बारहवीं शताब्दि

१०६, १८०, २२६, २३२, २३३, २३४, २१८,
२४३, २४५, २४५, २४६, २५१, २८३, ३१७,
३१८, ३१६, ३२०, ३२३, ३२४, ३२५, ३२६,
३२७, ३२८, ३६१, ४०७, ४०८, ४११, ४२६
४३१, ४६१, ४६६, ४७१, ४७५, ४७६, ४८७,
४६० ।

शक संवत् की तेरहवीं शताब्दि — २७८, २८०, २८२, २९८, ३३०, ४०६, ४१३, ४१४ ४१८, ४२१, ४३०, ४३२, ४४२, ४४३, ४६२, ४६३ ४७७, ४८१, ४८४।

शक संवत् की चौदहवीं शताब्दि — २४७, ३४६ ३४७ ३०१, ३०२, ३०३, ३०४, ४८० ४८२ ४८३, ४८४, ४८५, ४८८, ४८६।

शक संवत् की पन्द्रहवीं शताब्दि — २८१ ३२२ ३४२ ३४३ ३४४, ३४५ ४०२, ४८३, ४८४।

शक संवत् की सोलहवीं शताब्दि — ३१४, ३३५, ३७०, ३०५ ३०६, ३००, ३०१, ३१८, ३१६, ४०२, ४०३, ४०४, ४१२, ४१६, ४१६, ४४८, ४४६ ४४०, ४४१, ४५२ ४५३, ४६३ ४६४, ४६५ ४८२।

शक संवत् की सत्रहवीं शताब्दि — ३४५, ३४८, ३६७, ३०८ ३०६, ३८० ३८१, ३१४, ३१५ ४२७, ४४४।

शक संवत् की अठारहवीं शताब्दि — ४१०, ४३८, ४३६, ४४०।

शक संवत् की दसवीं शताब्दि

१४८, १५०, १५१, १६३, १६५, १६६, १
१७२, १७३, १७४, १७७, १७८, १८३, २
२२३, २२८, २२६, २५४, २५७, २५८, २
२६०, २६१, २६२, २६३, २६४, २६६, २
२७३, २७४, २७७, २७८, २७६, २८०, २
२८५, २८६, २८८, २८६, २६०, २६१, २
२६३, २६५, २६६, २६६, ३०० ३०१, ३०
३०३, ३०४ ३०५, ३०६, ३०८, ३०६, ३१०
३११, ३१२, ३१३, ३१४, ४६६,

शक संवत् की ग्यारहवीं शताब्दि

१६८, १६६, १७० १७६, १८१, १८२, १८
१८८, १६६, २०४, २२२, २२४, २२५, २३०
२३१, २४०, २४१, २४२ २४६, २६५, २६६
२६७, २७१, २७५, २७६, ३१६, ३५१, ३६०
३६८, ३६६, ४४५ ४४६, ४४७, ४५४, ४५६,
४६० ४७३, ४७८, ४८८, ४८६,

शक संवत् की बारहवीं शताब्दि

१०६, १८७, २२६, २३२, २३३, २३४, २३८
२४३, २४४, २४५, २४६, २५१, २८३, ३१७
३१८, ३१६, ३२०, ३२३, ३२४, ३२५, ३२६,
३२७, ३२८, ३६१, ४०७, ४०८, ४११, ४२६
४३१, ४६१, ४६६, ४७१, ४७५, ४७६, ४८७,
४६० ।

शक संवत् की तेरहवीं शताब्दि	२४८, २५०, २५२, २६८, ३३०, ४०६, ४१३, ४१४, ४१८, ४२१, ४३०, ४३२, ४४२, ४४३, ४६२, ४६७, ४७७, ४८१, ४८५।
शक संवत् की चौदहवीं शताब्दि	२४७, ३५६ ३५७, ३०१, ३०२, ३०३, ३०४, ४८० ४२२ ४२३, ४२४, ४२५, ४२८, ४२६।
शक संवत् की पन्द्रहवीं शताब्दि	३२१ ३२२ ३५२, ३५३, ३५४, ३५५, ४०२, ४८३, ४८४।
शक संवत् की सोलहवीं शताब्दि	३३४, ३३५, ३७०, ३०५ ३०६, ३०७, ३८१, ३६८, ३६६, ४०२, ४०३, ४०४, ४१२, ४१६, ४१६, ४४८, ४४६, ४५०, ४५१, ४५२ ४५३, ४६३ ४६४, ४६५ ४८२,
शक संवत् की सत्तरहवीं शताब्दि	३४५, ३४८, ३६७, ३७८, ३७६, ३८० ३६१, ३६४, ३६५, ४२७, ४४५।
शक संवत् की अठारहवीं शताब्दि	४१०, ४३८, ४३६, ४४०।

शक संवत् की दसवीं शताब्दि

१४८, १५०, १५१, १६३, १६५, १६६, १६७, १७२, १७३, १७४, १७७, १७८, १८२, २१६, २२३, २२८, २३६, २५४, २५७, २५८, २५६, २६०, २६१, २६२, २६३, २६४, २६६, २७२, २७३, २७४, २७७, २७८, २७६, २८०, २८१, २८५, २८६, २८८, २८६, २६०, २६१, २६२, २६३, २६५, २६६, २६६, ३०० ३०१, ३०२, ३०३, ३०४, ३०५, ३०६, ३०८, ३०६, ३१०, ३११, ३१२, ३१३, ३१४, ४६६.

शक संवत् की ग्यारहवीं शताब्दि

१६८, १६६, १७०, १७६, १८१, १८४, १८४, १८८, १६६, २०४, २२२, २२४, २२५, २३०, २३१, २४०, २४१, २४२, २४६, २५५, २६६, २६७, २७१, २०५, २०६, ३१६, ३५१, ३६०, ३६८, ३६६, ४४५, ४४६, ४४०, ४५४, ४५६, ४६० ४०३, ४०८, ४८८, ४८६,

शक संवत् की बारहवीं शताब्दि

१०६, १८०, २२६, २३२, २३३, २३४, २१८, २४३, २४४, २४५, २४६, २५१, २८३, ३१०, ३१८, ३१६, ३२०, ३२३, ३२४, ३२५, ३२६, ३२०, ३२८, ३६१, ४००, ४०८, ४११, ४२६, ४३१, ४६१, ४६६, ४०१, ४०५, ४०६, ४८०, ४६० ।

शक संवत् की तेरहवीं शताब्दि	२४८, २५०, २५२, २६८, ३३०, ४०६, ४१३, ४१४, ४१८, ४२१, ४३०, ४३२, ४४२, ४४३, ४६२, ४६७ ४७७, ४८१, ४८५।
शक संवत् की चौदहवीं शताब्दि	२४७, ३५६, ३५७, ३०१, ३०२, ३०३, ३०४, ४२० ४२२ ४२३, ४२४, ४२५, ४२८, ४२९।
शक संवत् की पन्द्रहवीं शताब्दि	३२१ ३२२ ३५२, ३५३, ३५४, ३५५, ४०२, ४८३, ४८४।
शक संवत् की सोलहवीं शताब्दि	३३४, ३३५, ३७०, ३०५ ३०६, ३०७, ३८१, ३९८, ३९९, ४०२, ४०३, ४०४, ४१२, ४१६, ४१९, ४४८, ४४९, ४५०, ४५१, ४५२ ४५३, ४६३, ४६४, ४६५ ४८२,
शक संवत् की सत्तरहवीं शताब्दि	३४५, ३४८, ३६७, ३०८, ३०९, ३८० ३९१, ३९४, ३९५, ४२७, ४४४।
शक संवत् की अठारहवीं शताब्दि	४१०, ४३८, ४३९, ४४० ।

चन्द्रगिरि पर्वत के अवशिष्ट लेख

पार्श्वनाथवस्ति के दक्षिण की ओर चट्टान पर

१४५ (३) श्रीदेवर पद। वमनि... ..

१४६ (४) मल्लिसेन भटारर गुरु चरेङ्गय्य तीर्थमं वन्दिसिदं।

१४७ (१०) श्रीधरन्

१४८ (४०८) नमोऽस्तु १४९ (४०९) श्रीरस्तु

१५० (४१०) सिन्दय्य १५१ (४११).....गिङ्ग...

कुन्द गङ्गर यण्ट...गद नण्ड

१५२ (११)

.....विणान्पतिः ।

आचार्य्य.....श्रीमान्शिष्यानेक-परिग्रहः ॥ १ ॥

.....विलासस्य निर्गाणा.....त्रनि

पद्मावत्यविरोधस्य गुणैर्देवी च कम्पिता ॥ २ ॥

द्वीपेऽर्द्ध पैरच गन्धश्च साकरोदधिम् . सान् ।

यत्र दिगिडक राजोऽरि माचो सन्निहितोऽभवत् ॥ ३ ॥

परित्यज्य गणं सर्व्वं चातुर्व्वर्ण्यं विशेषितं ।

आहारादिशरीरं च कटग्र-गिरावि ॥ ४ ॥

आचार्योऽरिष्टनेमीशः शुक्लध्यानोक्त कारणं

समाकृत्य गवरि रद्रिं गिद्ध-विधावस्थितः ॥ ५ ॥

१५३ (१३)

राग द्वेष-मदो-मान-क्रपगतशुद्धात्म सेवोद्भव्
येसुरा परम-प्रभाव-रिषियर्स्सर्व्वज्ञ-भट्टारकर्
...गादेव... ..न ..हित . स्वर्गु... ..प्रमोल्
श्री कौण्डोमल्ल-दुष्ट.....र् स्वर्गोपभोगनेरिदार्

[रागद्वेष रूपी अन्धकार से विमुक्त, शुद्धात्म सेवा से युक्त श्रेसुरा वाली परम-प्रभावी ऋषि, सर्वज्ञ भट्टारक... .. . . .शिखर पर..... ....अमल हृदयों से आच्छादित .. ..स्वर्ग के उपभोग का आरोहण किया।]

१५४ (१४) अरिष्टनेमिदेवर् कालस्पु-तीर्त्थदोलु मुक्-कालम पडेदु मु...

१५५ (१५) स्वस्ति श्री महावीर...मालूर तम्मडिगल मन्यसन दिन् इ-तम्मज्ञया निसिधिगे ।

१५६ (१६).....पादपमूल.....म-व्रत.....

१५७ (१७) स्वस्ति श्री भट्टारक चिट्टगपानदा तम्मडिगल शिष्यर् किरिय-वरा निसिधिगे ।

१५८ (२१)

स्वस्ति-भागदामदुरे उय्म् इनितान...शापदे पावु मुदिरेन् सकलकन्तर् एन्त् एनलू वरग.....ग ई महा पल्लवदुल् अक्षय-कीर्त्ति तुन्दुरुद वार्द्धिय मेल् अदु नोन्तु भक्तियिम

अखि-मणके रम्य-सुरलोक-सुखके भागि आ.....
पल्लवाचारि-लिकि (खि) तम् ।

[दक्षिण भाग की मदुरा (नगरी) से आकर और शाप के कारण सर्प द्वारा सताये जाकर, परीषहों के विचार करते ही करते, अक्षयकीर्ति भक्तिपूर्वक इस शिखर पर व्रतों का पालन करते हुए दुःख-सागर को पार कर, रमणीक सुरलोक-सुख के भागी हुए ।

पल्लवाचारि लिखित]

१५८ (२२)

श्री । बाल्ला मेल् सिखि-मेलेसर्प्पेद महा-दन्वामदुल् सल्वबोल्
माल्लाम्बाल-वर्षामदिन्तु नडदों नूरेण्टु-संवत्सरं
केलौय् पिन् कट वप्र-शैलमदर्द् एतम्मा क्षान्तूरनं
वाले 'पेग्गोरवं समाधि-नेरेदोन्नो-तेय्दिदौर् स्सिद्धियान् ॥

[इस लेख में काल्न्तूर के किसी मुनि के कटवप्र पर एक सौ आठ वर्ष तक तप के पश्चात् समाधिमरण की सूचना है ।]

१६० (२३)

नम स्वस्ति ।

...दे शास्त्रविदो येन गुणदेवाख्य-सूरिणे
कल्याण् पर्व्वत-विख्याते...नम...वमाग...
...द्वादश-वर्षा नुष्ठा.....
सम्यगाराधनं कृत्वा स्वर्गालय.....

[शास्त्रवेदी गुरुदेव सूरि को नमस्कार, जिन्होंने कटवप्र पर्वत के शिखर पर द्वादश व्रत धारण कर और सम्यगाराधन का पालन कर स्वर्गलाभ किया]

१६१ (२७)

श्री। मासेनर्म्मरम-प्रभाव-रिपियर् क्रूरस्वप्निना वेट्टदुल्
श्री-सङ्गङ्गुल पेल्द सिद्ध-समयन्तप्पादे नोन्तिम्बिनिन्
प्रासादान्तरमान्विचित्र-कनक-प्रज्वल्यदिन्मिरुदान्
सासिर्म्बर्म्बर-भूजे-वन्दुये अवर् स्वर्गाप्रमानेरिदार् ॥

[इस लेख में परम ऋषि 'मासेन' के समाधि मरण की सूचना है।]

१६२ (३६) श्री चिक्कुरापरविय गुरवर सिष्यर् सर्वणन्दि अवन् श्री वसुदेवन्।

१६३ (३७) श्रीमद् गङ्गान्व।

१६४ (३८) वीतरासि। १६५ (३९) श्रीचावुण्डय्य।

१६६ (४०) श्रीकविग्ल। १६७ (४१) श्रीमद् अद्वयोय।

१६८ (४२) श्रीविरेपय्य। १६९ (४३) श्रीमद् अकलङ्क पण्डितर्।

१७० (४४) श्री मुन।

१७१ (४५)...लम्बकुलान्तक वीरर वण्ड परिकरन किल्।

१७२ (४६) स्वस्ति श्री अण्णन कालेय पण्डित अत्वप्प वीर्यव वन्दि...

१७३ (४७) का...य भिर्ज्जग रायन कादगलै वन्ति
देवर वन्तिसिद ।

१७४ (४६) श्री दवणन्दि वलरर गुड्ड आसु...वन्दु तीर्थ
वन्दिसिद ।

१७५ (५८) अलस कुमारो महामुनि ।

१७६ (५१) श्री कण्टय ।

१७७ (५२) श्रीवर्म्म चन्द्रगीतय्य देवर वन्दिसिद

१७८ (५३) श्री इमकय । १७९ (५४) श्री विधिय्यम्म ।

१८० (५५) श्री नागवन्दि कित्तय्य देवर वन्दिसिदर् ।

१८१ (५६) स्वस्ति समधिगतपञ्चमहासब्द महासामन्त
अमगण्य

१८२ (५७) मारसन्द्र कैय कोट...गलवेय वीर कोट ।

१८३ (५८) मालव अमावर् ।

शान्तीश्वर वस्ति से नैऋत की ओर

१८४ (६०) श्री परंकरमाडग-वलर-चट्ट सुल वण्टरसुल ।

१८५ (६२) स्वस्ति श्री सेयव् गुडि.....न्दि-भटारर सिष्य
.. गर-भटारर सिष्य क...र...मि-भटार
अवर सिष्यर् पट्टदेवा .....सि-भटार कुमा
...न सिष्य न...मले मुनिर्कलिं वन्दि पमुमम्म
निसिदिगे ।

पार्श्वनाथ वस्ति में एक टूटे पाषाण पर

१८६ (६८) श्रीमत् वेट्टदवो...न मगल् वैजय्ये स्वपु-
नीर्मदोन्नद्धु नोन्तु मन्यमनै ।

१८७ (७१)

चन्द्रगुप्त वस्ति में पार्श्वनाथ स्वामी के सन्मुख एक छोटी मूर्ति के पादपीठ पर

(लगभग शक सं० ११००)

(अग्रभाग)

श्रीमद्राजविशीटकोटिघटित पादपद्मद्वयः
देवो जैन...रविन्द-दिनदृष्टागूरेवताबल्लभ ।
...वा...त-मन्वितो यतिपति... . ग्र-वल्लाकरः
सोऽयं निर्जित ..ङ्गो विजयतां श्रीभानुकीर्त्तिर्भुवि॥१॥
श्री-बालचन्द्र मुनिपादपद्मज... .. .. ..
जैनागमाम्बुनिधिवर्द्धन-पू..... ..... ः।
दुग्धाम्बुराशि-हर-हा

(पृष्ठभाग)

.. मलङ्कित (वसु) कैलास्यमेरुस्म.....ल्पमिनिव नर्मोरिव
विरवम...रिव महिमेवि वर्द्धमा.. जिन-पतिगे वर्द्धमान-मुनी
...सुर नदिव सार हा...र सुर हन्तिय रजतगिरिय चन्द्रन

बेल्लि पिरिदु वर...र्द्धमानर परमवपोध...रकीर्ति ...मुनं जगदोलु ॥

...च्चिह्नप्यरु ॥

तीर्थाधीश्वर-त्र

[इस लेख में भानुकीर्ति, बालचन्द्रमुनि और वर्द्धमान मुनि का उल्लेख है। अधूरा होने के कारण लेख का प्रयोजन ज्ञात नहीं हो सका।]

[पूर्वभाग का प्रथम पद्य पम्प रामायण आश्वास 1 पद्य 12 से मिलता है।]

१८८ (७२)

चन्द्रगुप्त वस्ति में पार्श्वनाथ जिनालय के क्षेत्रपाल के पादपीठ पर

(लगभग शक सं० १०६७)

....

...जनिष्ट.....रित्र...रखिला.....माला-शिलीमुख-वि-
राजित-पा..... ॥ १ ॥

तच्छिष्यो गुण... त यतिश्चारित्र-चक्रेश्वरः
तर्क-व्या...दि-शास्त्र-निपु...साहित्य-विद्या-नि...
मिथ्या-वादि-मदान्ध-सिन्धुर-घटा-सङ्.....रवो
भव्याम्भोज (यहाँ पाषाण टूट गया है).....॥२॥

(उसी पांठ के बायें पृष्ठ पर)

...जिनने शुभकीर्त्ति-देव-विदुषा विद्वेषि-भाषा-विष-
व्याला-आकुलिकेन जिह्वित-मतिर्व्वादी वराकस्सयं ॥३॥
घन-दर्पोन्नद्ध पैादु-खिविधर-पवियी वन्दनी वन्दनी व-
न्दने सन्-नैय्यायिकोपलिमिर-तरणियी वन्दनी-वन्दनी व-
न्दने सन्-मीमांसकोपत्करि-करिरिपु यीव न्दनी वन्दनी व-
न्दनं पो पो वादि-पोगेन्दुखिवुदु शुभकीर्त्तीद्ध-कीर्त्ति-
प्रथोपं ॥ ४ ॥
विदपोलियत्तजं पशुपति शार्द्धियेनिप्प मूवरं शुभकीर्त्ति-
व्रति-मल्लिषियोलु नामोचित-चरितरं वोडर्दडितर-वादिग-
लल्लवं ॥ ५ ॥
सिद्धद सरमं केल्द मवङ्गजदन्तलुकलाद्रे सभेयोलु
पोद्धि शुभकीर्त्ति-मुनिपनोलंङ्गल नुडियल्के वादिगल्गे-
ण्टेल्देयें ।
पो...स्वुदु वादि वृथायास विबुधोपहासमनुभानोप-
न्यास निश्री...वासं मन्दपुदे वादि-वजाङ्कुशनोल् ॥६॥
सत्सधर्म्मंगल् ॥

[यह लेख टूटा हुआ है पर इसके सब पद्य अन्य शिलालेखों से पूरे किये जा सकते हैं। इसके यहाँ पद्य शिलालेख नं० ५० (१४०) के पद्य ६,७,१८,२१,२० और २२ के समान हैं।]

१८६ (७१)

कत्तले वस्ति के सन्मुख चट्टान पर।

(लगभग शक सं० ५७२)

ममास्तूरान्व.....म कुले.....गद्गुरुः।
ख्यातो वृषभनन्दीति तपो-ज्ञानाब्धि-पारगः ॥ १ ॥
अन्तेवासी च तस्यासीदुपवास-परो गुरुः।
विद्या-सलिल-निर्द्धूत-शेमुषीको जितेन्द्रियः ॥ २ ॥
...म...त तपो.....तपसैवांग-प्रभावोऽस्य तु
वन्द्योऽनाहित-कामनो निरुपमः ख्याता स...ना...।
दृष्टा ज्ञान-विलोचनेन महता स्वायुष्यमेवं पुनः
पृ.....गृहं गुरुरसौ यो...स्थित...वरः ॥ ३ ॥
.....कटदप्र-शैल शिखरे सन्यस्य शास्त्र क्रमात्।
ध्यान.....दा...मणि-मुखे प्रक्षिप्य कर्म्मेन्धनं।
.....दिव्य-सुखं प्रशस्तक-धिया सम्प्राप्य सर्व्वेश्वर-
ज्ञानं...न्तमिदं किमत्र तपसा सर्व्वं सुखं प्राप्यते ॥ ४ ॥

१९० (७७)

(लगभग शक सं० ६२२)

सिद्धम्। श्री।
गति-चेष्टा-विरहं शुभाङ्गदे घनसारिष्टमान्विद्रुवल्
यतियं पेल्द विधानदिन्दु तोरदे कल्बप्पिना शैलदुल्

प्रथितार्यप्पदे नोन्त निश्चित-यशा दायुः-प्रभा...यक्
रिवति-दहा कमलोपमङ्ग सुभमुम् दाल्लेकदि निश्चितम् ॥

[इस लेख में किसी के समाधिमरण की सूचना है।]

१६१ (८८) सहदेव मालि।

१६२ (७६)

(लगभग शक सं० ६७२)

सुन्दरपेम्पदुमतपदोगिद.....वार्द्धनिन्द्यमेन्दु पिन्
वन्दनुरागविन्दु वलगो...ण्डु महोत्सवदेरि शैलमान्।
सुन्दरि सौख्यदार्यदेरदे...दु विमानमोदिरि चित्तदिम्
इन्द्र समानमप्प सुख.. ण्डदे'''खपदेन्दि दरगेवा ॥

[सौख्यदार्य (१ शुद्धमुनि) ने आकर हर्ष से पर्वत की वन्दना की और अन्त में यहां ही शरीर त्याग किया।]

१६३ (८०)

(लगभग शक सं० ६२२)

महादेवन्मुनिपुङ्गवन्महर्षि कलु पेर्रपं
महातवन्मरणमप्पे वलगा... कमु कण्डे...
महागिरि म ..गलेसलिसि मल्ला...नविन्तो-
महातवदोन्तु मल्लेमेल्वलुवदु दिवं पोक्क

[महादेव मुनिपुङ्गव ने मृत्युकाल निकट आया जान पर्वत पर तपश्चरण किया और स्वर्ग-गति प्राप्त की।]

१९४ (८१)

(लगभग शक सं० ६२२)

योग्यातिरेक्य-कैवल्य-बोध-प्राप्ति-महोत्सवे ।
ईशानाय नमो योगि-निष्ठायार् परमेष्ठिने ॥१॥
...रे क्वित्तूर-सङ्घस्य गगनस्य महस्पतिः ।
परिपू...चारि.....ध.....वाग.....
क्यया...

१९५ (८२) वज्रदेवाचार्य्यर पाऽगमण ।

१९६ (८३) स्वस्ति श्री पद्मनन्दिमुनिप.....प्रभुत्व.....
...दनिम्रा कुलदेवा..... . प्रभव...देप.....मा...
.....ख्य . ..

१९७ (८५) श्रीपुष्पणन्दिनिसिधिगे ।

१९८ (८६) . ...क . ..न तम्म.....गे ।

१९७ (८७) श्री बाट ।

२०० (८९) कनादे... .. ..ग-वंश...कलवप्पिन्दुगं.....

२०१ (९०) श्री धम्म । २०२ (९१) दल्लग पेल्दव्वन्याङ्...

२०३ (९२) स्वस्ति कोन्नूर सङ्कदि विशोकभटारर
निसिधिगे ।

२०४ (९४) श्रीमद् गौड देवर पाद ।

२०५ (९५).....व साधु-म...र धीरव्रत-संयता...मन
इन्द्रनन्दि आचार्य्य.....मे...र्म्म आमेर...न्तूरिदेर्म्म प्रभ-

लान्तरि.....भाव्यमन्वर्प्पिन्.. प्पं... . दि मोहमगल्द्
इन्वल्-विषयङ्गलनात्म-वश-क्रमविदु फट.....स्थिता-
राधिता...विमु .....श्वररि..... नन.....रेन्द्र-साम्य-
विभूति-सास्वतमेय्दिदान् ।

[संयमी इन्द्रनन्दि आचार्य ने मोह विषयादि को जीतकर कट (कट्र) पर्वत पर समाधि मरण किया ।]

२०६ (९६) स्वस्ति श्री फोनमूर मङ्गदा देव...यन्ति-
यर्भिसि...

२०७ (९७) नमिलूरा सिरिमङ्गद आर्जिगणदा राजी-
मती-गन्तियार्
अमलम् नल्वद शीलदि गुणदिना-मिकोत्तमर्म्मनेदोर् ।
नमगिन्दाल्दिदु पन्दु परि गिरियान्सन्यासनं योगदोल्
नमगा चिन्तयदुमें मन्त्रमप्पुरि ए स्वर्गालयं परिदार् ॥

[नमिलूर संघ, आर्जिगण की साध्वी राजीमती गन्ति ने पर्वत पर संन्यास धारण कर स्वर्ग-गति प्राप्त की ।

२०८ (९८) श्री स्वस्ति
तनगं मृत्यु-परवानरिदे पेर्त्तोक-यंशदोन्
फालनिनंकसुदे...पिन राज्य वोवलिन् ।
पा...क...मोदसु...तो.....मता कवि नि-
धानम.....सुर...ग गतियुल् नेरे-कोण्डन् ।

[इस लेख में पेर्त्तोक वंश के किसी व्यक्ति के समाधि-मरण का उल्लेख है]

२०९ (१००) परवतिमल्ल ।

२१० (१०१)...मले-मेल् अच.....महा.....वोल...

२११ (१०२) .. . जनल् नविलूर् अनेकगुणरा अ
सङ्घ.....दु..

... .मेनल्तिलकं.....आ...राचार्य्यर ।

.....भिमानमंदरे तोरदेन्दो राग-सौख्यागति

.....ददेन्दु पञ्चपदद दोषं निरासं.....

[नविलूर संघ के किसी आचार्य ने संन्यास धारण कर प्राणोत्सर्ग किया ।]

२१२ (१०३) स्वस्ति श्रीमत् नविलूर् सङ्घद पुस्तकगच्छद
चारि...य निसिधिगे ।

२१३ (१०४) श्री देवाचार्य्य.....निसिधि ।

२१४ (१०७) श्री

वन्दनुरागदिनेरदु प्रन्थेगल्ल कक्कमदरिशील...
वन्दनु मार्गदिनं तिमिरा विधिये नविलूर संघ.....
पेन्दरे बुद्धिय हारमनि...तियुं...य माचि-अरुवेगल्
.....लिप्पि नल् मुरर सौख्यमनिम्मोडगोण्डराद्गुम् ।

[नविलूर संघ के माचि अरुवे ने समाधि मरण किया ।]

२१५ (१०८) श्री

मेघनन्दि मुनि तान् नामेम्बूर्वर सङ्घद

.....तीर्थदि सिद्धियान्...

द्.. .... -- .. . .

....

२१६ (११०) श्रीकण्ठव्य ।

२१७ (१११) श्री

स.....ना.....नेगर्तेयगु सेदेवे-वदंसि दल्

मुगिव.....नोन्तुम्मेवोल्ल...उपमं

.....लि.....पौत्र नन्दिमुनिप.....

...माव्यं न.....यु.....समाधो दल्ल इदरुल् नोन्तु

सिद्धिस्थनादम् ।

[नन्दिमुनि के यहां समाधि सिद्धि प्राप्त की]

२१८ (११२) श्री नविन्नूर् सहुदा गुणमति-अम्बेगल्ल निसिधिगं ।

२१९ (१२५) अनेक शील गुणरोप्पिदारिन्तु लोकिक सुदुम्

नेनेगोन्दोड मुनिविन्दल् उपप्पले नोन्तु धाम्

समर्ग मृत्युवरवानरिदं श्री पुष्पिंग ....

[अनेक शील-गुण सम्पन्न पुष्पिंग के मृत्यु का आगमन जान...]

२२० (११६) ई-पुण्या...समान्सरंति

वरदोरेल्-नूर्वर लक्ष्मी-

श्रीपुरान्वय गन्धवर्म्मनमित-श्रीसङ्घदा पुण्यदो-

मन्पौरा...निदे.. रिवलघं...री-शिला-वल्ल.....

.....मान्नेरदुप.....इ .....

[इस लेख में श्रीसंघ, पुरान्वय के पूज्य गन्धवर्मा द्वारा इस शिला पर कुछ किये जाने का उल्लेख रहा है।]

कत्तले बस्ति के पीछे चट्टान पर

२२१ (४१२) चन्द्रप्प।

चामुण्डराय बस्ति के द्वारे के दक्षिण की शिला पर

२२२ (११६) श्रीमत् लक्खण देवर पाद।

चामुण्डराय बस्ति के द्वारे के दोनों बाजू

२२३ (१२२) श्री चामुण्डराजं माडिसिदं

चामुण्डराय बस्ति के द्वारे से बायीं ओर शिला पर

२२४ (१२३) (नागरी अक्षरों में) शान्तणन्दि देवर पाद

२२५ (१२४) " श्रीमत्तुचन्द्रकीर्त्ति देवर पाद।

तेरिन बस्ति के बायीं ओर एक स्तम्भ पर

२२६ (१३५) स्वस्ति

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं॥

तेरिन बस्ति के नवरङ्ग में एक टूटे पाषाण पर

२२७ (१३६) व·····ति कन्वप्पिनल्लि । मलद कुमारनन्दिभट्टारर सिपिचियर् सायिर्व्वे-कन्तियर..... वप्पिदिगल् ।

(एक बाजू में) विल·····स···सर्व्व· ····

तेरिन बस्ति के सम्मुख

२२८ (४२६)···स्वरेद यद्र···नरेंद्र कोल

२२९ (१३७)

तेरिन बस्ति के सम्मुख 'मेरु' के उत्तर मुख के ऊपरी भाग पर

(शक सं० १०३६)

भद्रं भूयाज्जिनेंद्राणां शासनायाघ-नाशिन ।
कु-तीर्थ-ध्वान्त-सङ्घात प्रभिन्न-घन भानवे ॥ १ ॥
सक वर्षं सायिरद
प्रकटमेनिस्पूवेलाम्भतुं नरेयुविरलु
सुकरमेनं हेमलाम्बियोल्
अकलङ्कद जेष्ट-सुद्ध-गुरु-मेरसियोल्लु ॥ २ ॥

वृष ॥

धरणी-पालकनप्प पोय्सलन राज-मंडिगस्वम्मुति-
र्भरनल् पोय्सल-मंडिपुं गुण-गदाम्भोराशिसंम्पोन्दु मु-

न्दर-गम्भीरद नेमि-से [ट्टि] युमिव श्रीजैन-धर्म्मके तायु-
गरंगल् तामेने मन्द पेम्पसदलम्पर्व्वित्तु भू-भागदोल् ॥३॥

कन्द ॥

अमल-यशरमल-गुण-गण-
रमलिन-जिन-शासन-प्रदीप करेनें पें-
म्पमर्हिरे पोटलल-सेट्टियु-
ममेय-गुणि नेमि-सेट्टियुं सुखदिनिरलु ॥ ४ ॥

अवर जननियरेनल्की-
भुवनतलं पोगल्ले माचिकब्बेयुमुयद्-
विविध-गुणि शान्तिकब्बेयु-
मवर्गलु जिन-जननियप्रकर्शीतलदोल् ॥ ५ ॥

(उसी 'लेख' के पश्चिम मुख के ऊपरी भाग पर)

जिन-गृहमं मनो-मुददे माडिसि मन्दरमं विनिर्म्मिसि-
र्दनुपम-भानुकीर्त्ति-मुनि-से···दिव्य-पदाब्ज-भृङ्गदोल् ।
मनमोसेदिर्व्वरं परम-दीक्षेयनोप्पिरे वास्तिदर्म्मज-
ञन-रवि कीर्त्तिसल्कं मरु-देवियु [मिम्] निसं
शान्तिकब्बेयुं ॥ ६ ॥

श्री मूलसङ्गदोल् म-
हा-महिमोन्नतमेनिप्प देसिग-गणदोलु
तामिर्व्वरमखिल-गुणो-
द्दामेयरेनें नेगरेरिन्दु नोन्तरमोन्दरे ॥ ७ ॥

जिन-पतिगं पूजेयं म-
न्मुनि-पतिगलुगल-दानमं भक्तियोलि-
म्बिने पोय्सल-सेट्टियुमोल्-
पिन कलियंने नेमि-सेट्टियुं माडिसिदर् ॥

[पोय्सल नरेश के प्रसिद्ध सेठी पोय्सलसेट्टि और नेमिसेट्टि की माताओं—आचिकब्बे और शान्तिकब्बे—ने जिनमन्दिर और वसतीश्वर निर्माण कराकर भानुकीर्ति मुनि से दीक्षा ली। उक्त सेठियों ने भक्ति-पूर्वक जिन-पूजन किया और दान दिये।]

गन्धवारण वस्ति के समीप एक टूटे पाषाण पर

२३० (१४४) नमसिद्धेभ्यः । शासनं जिनशासन

.....भ-चन्द्र

गन्धवारण वस्ति की सीढ़ियों के पास

२३१ (४२८) श्रीमतु रविचन्द्र देवर पाद

इरुवेब्रह्मदेवमन्दिर के मार्ग पर

२३२ (१४६) नेमगन पाद ।

२३३ (१४७) श्रीसिवगाऽय ।

२३४ (१४८) श्री फल्गुव्यन् ।

२३५ (१५०)

इरुवेब्रह्मदेवमन्दिर के द्वार की दक्षिण बाजू पर।

ने सेवल्कुन्द गुरु...दिसि पद्मं गुलिय...सिगेयिन्ले मले गङ्ग-

राज्य.....नेमदे मन्त्रि नरसिङ्ग...वङ्गलियं विशेषदि ॥

एरेगङ्ग-महामात्यं

...रेदं नव-गङ्ग-महिगे सफल-मतेयिं

गुलिपालनातनलियं

नेरे नेगल्दं नागवर्म्मनवनीवल्लभेाल् ॥ १ ॥

आतन पुत्रनब्धि-धृत-धाएयेालितने रामदेव...न

ईतने वत्सराजनिनेगीतने वांभगदत्तनागिविख्यातयसं

दगुल्द कु...मं तोरेदुन्नेरे नेान्तुमेतु

(शेष भाग टूट गया है)

[गङ्गराज्य के मन्त्री नरसिंह के जामाता। एरेगङ्ग के प्रधान मन्त्री।—.....जामाता नागवर्म के पुत्र ने—जो रामदेव, वत्सराज व भगदत्त के समान जगत्प्रसिद्ध थे—वैराग्य धारण कर.....]

उसी द्वार की बायीं बाजू पर

२३६ (१५१).....प्पिडिदुलु.....मारदो.....

...ब्बेदि...दृगघोल्ल आके जेगदि.....विमा...माडिसिद...

उसी मन्दिर के सन्मुख चट्टान पर

२३७ (१५२) खगभवभयकर्त्ति गोगिगय खाड-

नत्य.....र

२३८ (१५३) (नागरी अक्षरों में) चन्द्रकीर्त्ति ।

२३९ (१५४) श्रीमतु राचमल्ल देवर अङ्गि-ग येनवोर

मुक्करस्य बन्दिसिद

कात्र्चिन दोणे के आस-पास

२४० (१५६).....मुडिपिदरवर गुडि साथिन्बे
निसिदल पोलल्बेकान्तियर्गों.....गे ।

२४१ (१५७) श्रीमतु गण्डविसिद्धान्तदेवर गुड्ड
श्रीधर बोज ।

२४२ (१६०)

श्रीमत्परमगम्भीर स्याद्वादामोघलाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥
जगत्-त्रितयनाथाय नमो जन्मप्रमाथिने ।
नयप्रमाणवाग्वरिमध्वस्तध्वान्ताय शान्तये ॥ २ ॥
परमश्रीजिनधर्म्मनिर्म्मलयशो भव्याब्जिनीभास्करं
गुरुपादाम्बुजवृत्तनुद्धचरितं विप्रो.....मं मेदभू-
धरधैर्य्यं गुणरत्नवार्द्धि विलसत्सम्यक्चरित्राकरं
परमोत्साहदे रा..... ...म्बिलाभागदोलु ॥ ३ ॥

आ-पु.....माण-गुणगलं

२४३ (१६१) श्रीधनकीर्त्तिदेवर मानस्तम्भद कम्भ ।

२४४ (१६२) मानभ आनन्द-सवच्छदल्लि कट्टि-
सिद देोडेयु ।

राज्य.....नेमदे मन्त्रि नरसिङ्ग...तङ्गलियं विरोधदि ॥

एरेगङ्ग-महामात्यं

...रेदं नव-गङ्ग-महिगे सफल-मतेयिं

गुलिपालनातनलियं

नेरे नेगल्दं नागवर्म्मनवनीतङ्गेल् ॥ १ ॥

आतन पुत्रनन्धि-वृत-धारयोलितने रामदेव...न

ईतने वत्सराजनिलेगोतने सांभगदत्तनागिविख्यातनं

बगुल्द कु...मं तोरंदुन्नेरं नोन्तुमेतु

(शेष भाग टूट गया है)

[गङ्गराज्य के मन्त्री नरसिंह के जामाता। एरेगङ्ग के प्रधान मन्त्री।—..... जामाता नागवर्मा के पुत्र ने—जो रामदेव, वासव तथा भगदत्त के समान जगत्प्रसिद्ध थे—वैराग्य धारण कर.....]

उसी द्वार की बायीं बाजू पर

२३६ (१५१).....ण्डिदुलु.....मारदो.....

...ढेदि...दृगचेल्ल आके जेगदि.....विमा...माविसि...

उसी मन्दिर के सन्मुख चट्टान पर

२३७ (१५२) चगभचयचक्रवर्त्ति गोत्तिगय सान्-

नत्य.....र

२३८ (१५३) (नागरी अक्षरों में) चन्द्रकीर्त्ति।

२३९ (१५४) श्रीमतु राचमल्ल देवर जङ्गिन सेनबोव

मुवकरय वन्दिसिद

कात्रिचन दोणे के आस-पास

२४० (१५६).....मुडिपिदरवर गुडि सायिब्बे
निसिदल पोलब्बेकान्तियर्गे.....गं ।

२४१ (१५७) श्रीमत्तु गण्डविसिदान्तदेवर गुड्डं
श्रीधर बोज्ज ।

२४२ (१६०)

श्रीमत्परमगम्भीर स्याद्वादामोघलाञ्छने ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥
जगत्-त्रितयनाथाय नमो जन्मप्रमाथिने ।
नयप्रमाणवाग्रश्मिभक्तध्वान्ताय शान्तये ॥ २ ॥
परमश्रीजिनधर्म्मनिर्म्मलयशं भव्याब्जिनीभास्करं
गुरुपादाम्बुजभृङ्गबुद्धचरितं विप्रो.....मं मेरुभू-
धरधैर्य्यं गुणरत्नवाढिं विलसत्सम्यक्त्वरत्नाकरं
परमात्माद्दं रा..... ...म्बिनाभागदोलु ॥ ३ ॥

आ-पु.....माण-गुणगलं

२४३ (१६१) श्रीधनकीर्त्तिदेवर मानस्तम्भद कम्भ ।

२४४ (१६२) मानभ आनन्द-संवच्छदल्लि कट्टि-
सिद दोड्डेयु ।

राज्य.....नेमदे मन्त्रि नरसिङ्ग...ङ्गलिगे सिंगरि
एरेगङ्ग-महामात्यं
...रेदं नव-गङ्ग-महिगे सफल-मंत्रिं
गुलिपाञ्चनासननिगं
नेरे नेगल्दं नागवर्म्मनवनीतलदोल् ॥ १ ॥
आउन पुत्रनल्लि-गुन-धात्रयोलितनं रामदेव...न
ईतने यत्तराजनिनेगीतनं वा भगदत्तनागिविल्
लगुन्द कु...मं वीरदुन्नेरं नान्तुमेतु

(शेष भाग टूट गया है)

[गङ्गराज्य के मन्त्री नरसिंह के जामाता। देवगङ्ग के म
मन्त्री।—..... जामाता नागवर्म के पुत्र ने—जो रामदेव, अर्ज
भगदत्त के समान जगत्प्रसिद्ध थे—वैराग्य धारण कर.....]

उसी द्वार की बायीं बाजू पर

२३६ (१५१).....प्पिडिदुनु.....म
...द्वंदि...टगचोल आके जेगदि.....विमा..

उसी मन्दिर के सन्मुख चट्टान

२३७ (१५२) चगभचयचक्कवर्त्ति गो।
नत्य.....र
२३८ (१५३) (नागरी अक्षरों में) चन्द्र
२३९ (१५४) श्रीमतु राचमल्ल देवर जि
सुवकरय्य बन्दिसिद

चन्द्रगिरि की सीढ़ियों के बाईं ओर

२५२ (१७४) श्री नरवर जिनालय करे।
२५३ (४८१) श्री रणधीर

चन्द्रनाथ वस्ति के आस-पास

२५४ (४१३) .....चामुण्डय्य
२५५ (४१३) सेट्टय्य
२५६ (४१५) सिवमारन वसदि।
२५७ (४१६) वसह

सुपार्श्वनाथ वस्ति के सन्मुख

२५८ (४१७) श्री वैश्य २५९ (४१८) श्रीजक्कय्य
२६० (४१९) श्री कडुग
२६१ (४२०).....धनमा।

चामुण्डराय वस्ति के दक्षिण की ओर

२६२ (४२१) महामण्ड... ..श... ..
२६३ (४२२) श्री वास
२६४ (४२३) वसवय्य
२६५ (४२४) श्रीमर.....
२६६ (४२५) नरणय्य
२६७ (४२६).....रसप वम.....च निपिधिगं

२४५ (१६३) तम्मय्यङ्गे परोक्षविनयनिशिधि श्रीधरङ्गे परोक्ष-विनय तम्मवेगे परोक्ष-विनयनिशिदि ।

२४६ (१६४).....दलि क.....गो..... गलं गङ्ग...निसिदिगेय निरिक्षिदन् ॥ .....ह.....गमदे.....गलिय... सगि.....

भद्रबाहु गुफा के आग्नेय कोन पर

२४७ (१६८) श्रीमत् लक्ष्मीसेन भट्टारकदेवर शिष्यर मल्लिसेन-देवर निसिधि ।

चन्द्रगिरि की चोटी पर चरण-चिह्न के नीचे

२४८ (१६९) श्री भद्रबाहुभलिस्वामिय पाद ।

चन्द्रगिरि के मार्ग पर चरण-चिह्न के नीचे

२४९ (१७१) [तामिल अक्षरों में]

कोदइ-शङ्करनु मलयशारगलिङ्गु निन्दं कलनिक्कु मेर्कु निन् पुलिक्कु निरै ।

तोरनगम्ब के बायव्य में जिन-मूर्त्ति के पास

२५० (१७२) साम..... .देवरु.....

चामुण्डराय शिला पर मूर्त्तियों के नीचे

२५१ (१७३) श्रीफनकनन्दि देवरु पसि देवरु मलि-देवरु ।

चन्द्रगिरि की सीढ़ियों के बाईं ओर

५२ (१७४) श्री नरवर जिनालय करे।
५३ (४८१) श्री रणधीर

चन्द्रनाथ बस्ति के आस-पास

२५४ (४१३) .....चामुण्डरय
२५५ (४१३) सेट्टरय
२५६ (४१५) सिवमारन वसदि।
२५७ (४१६) वसह

सुपार्श्वनाथ बस्ति के सन्मुख

२५८ (४१७) श्री पेजरय २५९ (४१८) श्रीजक्कय
२६० (४१९) श्री कडुग
२६१ (४२०).....वनमा।

चामुण्डराय बस्ति के दक्षिण की ओर

२६२ (४२१) महामण्ड... ..ध... ..
२६३ (४२२) श्री धाम
२६४ (४२३) वसवरय
२६५ (४२४) श्रीमर.....
२६६ (४२५) नरवरय
२६७ (४२६).....रसप वम.....य निधिधिगं

इरुवेब्रह्मदेव मन्दिर के सन्मुख

२६८ (४३१) सचेोजनु २६९ (४३२) मेलुपय्य
२७० (४३३) श्री पृथुव
२७१ (४३४) चन्द्रादित्यं (चरणचिह्न)
२७२ (४३५) नागवर्म्मं वरदं
२७३ (४३६)...निगरजेयण्ण तंशवग्रगण्ड
२७४ (४३७) पुलियण्ण २७५ (४३८) सौम्य
२७६ (४३९) केमचय्य २७७ (४४०) नमोऽस्तु
२७८ (४४१) श्री ऐचय्यं विरोधिनिष्ठुरं
२७९ (४४२) यास

एरडुकट्टे बस्ति के पूर्व में

२८० (४२७) कगुत्तर

शान्तीश्वर बस्ति के पीछे

२८१ (४३०) श्रीमत् कम्मरपन्द आचिरग

कात्रिनदोणे के पास

२८२ (४४३) गुड कछं कदम्ब तरिसि.....

परकोटे के पूर्वी द्वारे के पास

२८३ (४४४) जिनन दोणे

लक्कुदोणे की पश्चिमी शिलापर

२८४ (४४५) श्री जिन मार्गश्रीनिलयप्रसन्नसूर्य्यचूडामणि।

२८५ (४४६) ओं विद्यदेव
२८६ (४४७) ओंमद् अकलंक
२८७ (४४८) ओं परवेण्डिदण्डनाथ देवरय्य
२८८ (४४९) ओं कविरत्न
२८९ (४५०) ओं मलय्य २९० (४५१) ओं चन्दवैद्य
२९१ (४५२) ओं नागदि आस्थान दण्डं
२९२ (४५३) ओं बागनण्ण न दण्डं
२९३ (४५४) ओं दासन भट्ट
२९४ (४५५) ओं बडवर दण्ड
२९५ (४५६) ओं नागवर्म्म
२९६ (४५७) ओं बलराज मालादित्यं
२९७ (४५८) ओंमद् मल्ल गोल्लर अरिष्टनेमि पण्डितर्
पर-गजद-भंजक ।
२९८ (४५९) ओं बडवर दण्ड
२९९ (४६०) ओं नागय्य
३०० (४६१) ओं देवय्य ३०१ (४६२) ओं सिन्दय्य
३०२ (४६३) ओं गोवयय्या ध्यिल्ल-चतुर्मुख
३०३ (४६४) ओं...गिवर्म्मं बावसि मला...वि मार्त्तण्ड

३०४ (४६५)

ओं मलधारिदेवरय्यनप्प ओं नयनन्दिविमुवर गुरु मपुवय्यंवर वन्दिसिद ॥

विधु-विधुघर-हास-पर्या-
म्बुधि-फेन-वियच्चराबलोपम-यशन-
भ्यधिकतर-भक्तियिन्द
मधुवं वन्दिल्लि देवर वन्दिसिद ॥

[मलधारिदेव के पिता नयनन्दि के शिष्य मधुवय्य ने देववन्दना की।]

३०५ (४६६) कण्णनम्बरसिय तम्म चावटयनुं दुम्मडय्यनुं नागवर्म्मनुं वन्दिल्लि देवर वन्दिसिदर् ॥

३०६ (४६७) श्री सन्द बेल्गोलदल्लं निन्दु...डने विद्दु सन्दमारय्य मनदल् आगल देवरेम्बर काण्व बगेयिन्द । श्री पेर्गेडे रेतय्यन वेदे सङ्कय्य ।

३०७ (४६८) श्रीमत् एरेयप गामुण्डनु मरय्यनु वन्दिल्लि व्रतकोण्डर

३०८ (४६९) श्री पुलिकल्लय्य

३०९ (४७०) श्री काश्यय्य

३१० (४७१) श्रीमन् एलगं कियद देव वसद

३११ (४७२) श्री मारसिङ्गय्य ३१२ (४७३) कत्तय्य

३१३ (४७४) पुलिचोरय्यं महाव्रजदोज...मणि-विवान-दोज तेज

३१४ (४७५) श्री कोपण तीर्थद

३१५ (४७६) सासिर गद्याण

विन्ध्यगिरि पर्वत के अवशिष्ट लेख

३१६ (१८१)

गोम्मटेश्वर के बायें चरण के समीप

श्री-चिटि-देवन पुत्र प्रताप-नारसिंह-देवन कय्यलु महा-प्रधान हिरिय-भण्डारि हुल्लमय्य गोमट-देवर पा.....
.....वरवरू.....दानक्कं सवणेरं विडिसि कोट्टर् ।

[महामन्त्री हुल्लमय्य ने चिटिदेव के पुत्र नारसिंहदेव से (भूमि) प्राप्त कर गोम्मटदेव और दान के हेतु अर्पण किये ।]

३१७ (१८७) श्रीमूलसङ्घ देशियगण पुस्तकगच्छ कोण्डकुन्दान्वय नयकीर्त्ति सिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगल गुरु वसविसेट्टि माडिसिदं ॥

३१८ (१८८) श्रीमूलसङ्घ देशियगण पुस्तकगच्छ कोण्डकुन्दान्वय नयकीर्त्ति सिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगल गुरु यसविसेट्टि माडिसिदं ॥

३१९ (१८९) श्रीमूलसङ्घ देशियगण पुस्तकगच्छ कोण्डकुन्दान्वयद श्रीनयकीर्त्ति सिद्धान्तचक्रवर्त्तिगल गुरु बल्देय[द] ण्डना [य] कं माडिसिदं ॥

३२० (१९०) श्रीमूलसङ्घ देशियगण पुस्तकगच्छ कोण्डकुन्दान्वयद श्री-नयकीर्त्ति

३२६ (१९६) श्रीनयकीर्त्ति सिद्धान्तचक्रवर्त्तिगल्ल गुरु वदियमसेट्टि माडिसिद सुमति भट्टारकर ॥

३२७ (१९७) श्री मूलसङ्घ देशियगण पुस्तकगच्छ कोण्डकुन्दान्वय नयकीर्त्ति सिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगल्ल गुरु वसविसेट्टि चतुर्व्विध-दानविनोदैकर माडिसिद ॥

३२८ (१९८) श्रीनयकीर्त्ति सिद्धान्त चक्रवर्त्तिगल्ल शिष्यर श्रीबालचन्द्र देवर गुरुगलेय महदेव सेट्टि अभिमट्टारकरं माडिसिद ॥

३२९ (१९९) शक वर्ष १२०२ नेय प्रमाथि सवत्सरद कार्त्तिक शुद्ध १० सोमवारदन्दु श्रीमनु-महा-प्रधानयव तिरुमप्प.....धिकारि सङ्गुदेवण्ण-नवर.. लु मङ्गण्णनवरु-श्रीगोम्मट ....मङ्गल महा श्री श्री ॥

३३० (२००) सर्वधारि-सवत्सरद चैत्र-शुद्ध-पाड्य बृहवार दन्दु श्रीगोम्मट-देवर नित्या-भिषेकक्के बिट्टिय हळिय मेलसिन सेवि सेट्टिय मग मादिसेट्टि कोट्ट...धार्य १ पण २ हालु मान ॥

सिद्धान्तचक्रवर्त्ति गल्ल गुरु बल्लेय दण्डनायकं माडिसिदं ॥

३२१ (१९१) दुर्म्मुखि संवत्सरद पुष्यमासद शुद्ध त्रिदिगं मङ्गलवार कोपणपुरद... ..य-सेट्टि गुम्मटसेट्टि दनद.....वादरु.....

३२२ (१९२) श्रीसवत् १५४८ वर्षे ज्येष्ट सुदि ३ रवि [नागरी लिपि में] वासरि गोम्मट स्वामी की जात्रा कियो गोमट बहुपाले प्रजौसवाले कदिकबंस अमचारी पुरस्थाने पुरी भ्रातृपुत्रसम...

३२३ (१९३) श्रीनयकीर्त्ति सिद्धान्तचक्रवर्त्ति गल्ल-शिष्यरु श्रीबालचन्द्र देवर गुरु अङ्किसेट्टि अभिनन्दन देवरं माडिसिदं ॥

३२४ (१९४) श्रीमूलसङ्घ देसियगण पुस्तकगच्छ कोण्डकुन्दान्वयद श्री-नयकीर्त्ति सिद्धान्तचक्रवर्त्तिगल गुरु कम्मटद रामि-सेट्टि माडिसिद ॥

३२५ (१९५) श्री नयकीर्त्ति सिद्धान्तचक्रवर्त्तिगल शिष्यरु श्रीबालचन्द्र देवर गुरु सुद्धद भानुदेव हेग्गडे माडिसिद अजित-भट्टारकरु ॥

३२६ (१९६) श्रीनयकीर्त्ति सिद्धान्तचक्रवर्त्तिगल गुड्ड वदियमसेट्टि माडिसिद सुमति भट्टारकरु ॥

३२७ (१९७) श्री मूलसङ्घ देशियगण पुस्तकगच्छ कोण्डकुन्दान्वय नयकीर्त्ति सिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगल गुड्ड वसविसेट्टि चतुर्व्विंशतितीर्त्थंकर माडिसिद ॥

३२८ (१९८) श्रीनयकीर्त्ति सिद्धान्त चक्रवर्त्तिगल शिष्यरु श्रीपालचन्द्र देवर गुड्डकलंक महदेव सेट्टि मल्लिभट्टारकरं माडिसिद ॥

३२९ (१९९) शक वर्ष १२०२ नेय प्रमाथि संवत्सरद कार्त्तिक शुद्ध १० सोमवारदन्दु श्रीमनु-महा-प्रधानरु तिरुमल्य.....धिकारि कम्भुदेवण-मगर.. ल मल्लण्णनवर-श्रीगोम्मट..... ....मङ्गल महा श्री श्री ॥

३३० (२००) सर्व्वधारि-संवत्सर चैत्र-शुद्ध-पाड्य शुक्रवार दन्दु श्रीगोम्मट-देवर नित्याभिषेकक्के बिट्टन दत्तिय मेदसिन सोपि सेट्टिय मग मादिसेट्टि कोट्ट...दाव १ पण २ दन्दु मान ॥

३३१ (२०१) संवत् १६३५...पिमतीच-स। फ
[नागरी लिपि में] सुदोय सेनवीरमतजी श्रो-जगतकरतश्रो
पदाभट्टोदराजो प्रसदोयदव...व...
मधोपदे श्रो-रायसोरवजो।

३३२ (२०२) संवत् १४४८ पराभव से. जे. सुद ३
[नागरी लिपि में] सूत्रधर जागुएजे श्रो-जगद्...श्राकपद
.....लं तदमत् मेवाराजद् भवतद्

३३३ (२०३) संवत् १४४८ वर्षे चैत्र वदि १४ १
[नागरी लिपि में] ने भट्टारक श्री जभयचन्द्रुकस्य शिष्य
ब्रह्मधर्मसचि ब्रह्मगुणसागरर्ण ॥
श्री का यात्रा सफल।

३३४ (२०४) गेरसोपेव ब्रप-नायकर मग सिङ्गणस्
गाहाद्रवेरसिरु

३३५ (२०५) सामाणो रक्षम ढक [ढंक]
[नागरी लिपि में] [६] नुमणो रूम थक [थेक]

[३३६ से ३४० तक के लेख नागरी अक्षरों में हैं]

३४१ (२०६) श्री भट्टारक भम शाभो हरिभचन्द्रदासजा
सवत १८८० पौषसुद पौनो १३ गुरोऽ।

[श्री भट्टारक भम। भाव हरिभचन्द्रदासजी सवत् १८०० पौषसुद पौर्ण १३ गुरो]

३३७ (२०७) श्री गणेसा अ नमः साधो कपूरचन्द मेतीचन्द शतीदी रा सावत १८०० मगशरा वदी १३ गराऊ।

[श्रीगणेशाय नमः। साव कपूरचन्द मोतीचन्द शतीदी रा संवत् १८०० मगसर वदि १३ गुरा]

३३८ (२०८) सवत १८४२ माह सद ५ अनदस अगरवल दूनवल पनपथय व सट भग-वनदस जतरक अय।

[संवत् १८४२ माह सुदी ५ आनदास अगरवाला दिल्लीवाला पनपथिया को सेठ भगवानदास आया का आये]

३३९ (२०९) सवत १८०० पोस वद १४ मङ्गराय वाजकीसनजी वसुवकेा पण्डेलवाल धुधवाल गङ्गारामज करणो भेाग.....

३४० (२१०) सवत १८०० मत असड सद १० सन-चरवर सवप रयज मङ्गकसनज शाज-दतज चनरय व दूनदयल अघट शाज-दतज इक जतर इसधन पठक अगरवल सरवग पनपथक गयलगत अयध

[संवत् १८०० मिती आषाढ़ सुदि १० शनीचरवार सन्तोषरायजी बालकिसनजी अजीतजी चैनराय व हीनदयाल व बेटा अजीतजी एक जातरा स्थान पेठका अगरवाला सरावगी पानीपत का गोचद गोथी आये थे]

३४१ (२११) सवत १८०० पस वद ६ मगसिर
वनवरलल्ल दनदयल क वट ।

३४२ (२१२) सवत १८१२ वसह सद ११ वर मगल
बलरम रमकसन क वट अ [गरव]
ल सर [वग क] स रय ग [कल]
गदय वसह.....इ.....र.....

[संवत् १८१२ वैसाख सुदि ११ वार मङ्गल बलीराम रामकिसन का बेटा अगरवाला केसोराय गोकलगढिया वैसाख.....]

३४३ (२१३) सवत १८४३ मत मह वद ३ लप [म]
ख-रयक वट तइर मल्ल नरठनवल्ल नव-
मल्ल गनरम धन.....पै.....
दज परप.....नरक सहनवल्ल

[संवत् १८४३ मिती माह वदि ३ लक्ष्मणराय का बेटा तोडरमल नाठनवाला (?) [मत]थ[मल्ल गनीराम धन..... ..]

३४४ (२१४) सवत १८१२ मत वसह वद ८ वर सन
सठ रजरम रमकरसन मगत रयक वट
गयल्ल गव...र.....सरपल्ल सभनथ वट
नय.....क वट ।

३४५ (२१५).....सद मगल वर नय.....
नरयनम वहड.....रथथ.....[
जहलय रमद्नमल्ल कसव.....यमहय

कमद जैनद्रथज.....वन... .....ग
.....रथम ... .

३४६ (२१६) कमवराय का बंटा सवत १८१२ वगद सद ११ वर मगल-वर सुमर-मलक वट मज-रम गगनय मडनगढ धनपचय अगरवल ।

३४७ (२१७) सवत १८०० ज्ट सद ३ करवधक गट इमलपन धनय यमद.....र... .. ३ ..लमराय.. रथज सुमरमज लसनय इलसरथ मकरकदम सरवग अगरवल धनपच गरगगत धनय सनेनय ।

३४८ (२१८) उदमग यगवल रवत.. रथप... . प यल ।

३४९ (२१९) सवत १८१२ यगद सद ८ नरवरथ सुकरदसक वट अयच ।

३५० (२२०) सवत १८१२ मत वगद सद ८ सनच-रक दन सतपरद: मगनरमक वट जा(ो-नक पत सरवग

३५१ (२२१)

अष्ट-दिक्पाल मण्डप की छत के मध्य भाग में गोलाकार

(उत्तर) अस्त्र-आदित्यकुशाधाभिश्के गवेन्द्रांका

३४१ (२११) सवत १८०० पस वद ६ मगसुवर
वनवरलल दनदयल क वट ।

३४२ (२१२) सवत १८१२ वसह सद ११ वर मगल
बलरम रमकसन क वट अ [गव]
ल सर [वग क] स रय ग [कल]
गढय वसह.....इ.....र.....

[संवत् १८१२ वैसाख सुदि ११ वार मङ्गल बलीराम रामकिसन का बेटा अगरवाला केसोराय गोकलगढिया वैसाख.....]

३४३ (२१३) सवत १८४३ मत सह वद ३ लप [म]
ण-रयक वट तइर मल नरठनवल नर-
मल गनरम धन.....पै.....
दज परप.....नरक सहनवल

[सवत् १८४३ मिती माह वदि ३ लछमणराय का बेटा तोदरमल नरठनवाला (?) [मत]ण[मल गनीराम धन.....]

३४४ (२१४) सवत १८१२ मत वसह वद ८ वर सत
मठ रजरम रमकरसन भगव रयक
गयल गत...र.....सरपल सुभनय वट
नय.....क वट ।

३४५ (२१५).....सद मगल वर नय.....
नरयनज वहड.....रयय.....[
जहवय रमदनमल कसद.....यमहव

कमद जैनद्रयज.....वन... .....ग

.....रलम ... .

३४६ (२१६) फमवराय का बेटा सुवत १८१२ वसप सद ११ बर मगल-वर सुमर-मल्लक वट मज-रम गगनय मडनगढ पनपथय अगरवल ।

३४७ (२१७) सुमत १८०० अट मद ३ करथक सट इमलपन वनय यमढ.....र... .. र ..लमराय...रयज द्रमरमज लसनय द्रलसरय वजकदस सरवग अगरवल पनपथ गरगगत वनय सननय ।

३४८ (२१८) उदसग अगवल रवत... रजप... .. प पल ।

३४९ (२१९) सुवत १८१२ वसद मद ८ नवलरय सकरदसक वट अयथ ।

३५० (२२०) सुवत १८१२ मत वसप सद ८ सनच-रक इन सवपरय: अगनरमक वट जांकर-नक पव सरवग

३५१ (२२१)

अष्ट-दिक्पाल मण्डप की छत के मध्य भाग में गोलाकार

(उत्तर) अरस्-आदित्यक्षवाचाम्विके गवोलविनि

३४१ (२११) सवत १८०८

वनवरखल्ल द

३४२ (२१२) सवत १८१२

बलरम रम

ल सर [वग

गढय वसह...

[सवत १८१२ वैसाख सुदि ११ वार

का बेटा अगरवाला केसोराय गोकलगढिया वैस

३४३ (२१३) सवत १८४३ मत

ण-रयक वट तेइर म

मल गनरम धन....

दज परप.....नरक

[संवत् १८४३ मिती माह वदि ३ लक्ष्मणराय

नरउनवाला (?) [नत]ध[मल गनीराम धन...

३४४ (२१४) सवत १८१२ मत वसह

सठ रजरम रमकरसन म

गयल गत...र.....सरपल

नय.....क वट ।

३४५ (२१५).....मद मगल वर

नरयनज वहड.....रथय

जहतय रमदनमल कसद.....

३५३ (२२९) .. ...क-सुं वत्सर श्रावण सु ५ ..

.. ..

... .

सि.....पाम. आ-मामहत्ति ना

क्रियना. व...मामके गसु दसु.. .

कटु...द्वारम्भ-नीरारम्भ-सकल-सुरवर्ना-

दाय-सकल-दश्मादाय आ . ग

आ-माम . ..गरि .. ..वरदगसु ।

[इस लेख में अब लगह और अनाज की आमदनी के किसी ग्राम दान का उल्लेख रहा है ।]

३५४ (२३०) कु..... .....काश . ... . अनुज .

कां . .. व सीमंग वेलद .. कण्डुव

.. ..पूर्वि ...आ-मामके ..दनु नीवे

नसुकाण्डु .. ... आ-मामहत्ति नमने

मसुड पश्चिमदनु पोत्रशास्पदे आ-कन्हाके

स्थायिवागि अनुभविसिकोण्डु बरबदु की

.... कव-साधन.....धी-मरवांद

..... कवसाधन .....वर्ग .....

माग-सुदन .. .. ..द आनीक.. ..

.....गाणदनुव .....द्वंजव...काश

मन्ने देवक सम्बेनदुव दिन्दव ...द

पुट्टिदर् प्पम्परान् हरिदेवं मन्त्रि-यूथाग्रणि
गुणि बल-
(पूर्व) देवण्णनेन्दिन्तिवर्म्मूवरुमुर्व्वी-ख्यात-कर्ण्णाटिक
कुल-तिलकम्मार्चि-राजङ्के मावन्दिरालु
प्रचण्ड-शक्तर्-
(दक्षिण) -जिनपति-पद-भक्तर्म्महाधारयुक्तर ॥
सकल-सचिव-नाथः साधितारति-यूथः ।
परिहृत-पर-दारो
(पश्चिम) .....भारती-कण्ठ-हारः ।
विदित-विशद-कीर्त्तिर्व्विश्रुतोदार-मूर्त्तिं-
स्स जयतु बलदेवः श्री जिनेन्द्राङ्घ्रि सेवः ॥

[अरसादित्य (व नृप आदित्य) और आचाम्बिके को सुख देने-वाले तीन पुत्र उत्पन्न हुए—पम्परान्, हरिदेव और मन्त्रि-समूह में अग्रगण्य, गुणी बलदेव । ये लोक-प्रसिद्ध कर्ण्णाटक कुल के तिलक, माचिराज के पितृव्य, शत्रुओं के लिए प्रचण्ड-शक्ति, जिन-पद-भक्त महा साहसी थे । समस्त मन्त्रियों के नाथ, शत्रुओं को वश करनेवाले, परस्त्री-त्यागी, सरस्वती देवी के कण्ठहार, विशुद्ध कीर्त्ति, प्रसिद्ध और उदार-मूर्त्ति जिनेन्द्र-पद-सेवी बलदेव जयवान् हो ।]

३५२ (२२२) कालायुक्त संवत्सरद माघ ब १२ लु
गुम्मि सेट्टि मग.....सेट्टि
दर्शनव् आदनु ॥
कालायुक्त संवत्सरद माघ ब १२...पुट्टिद
मग चिक्कण्णनु दर्शनव् आदक ॥

५३ (२२९) .. . ...क-सं वत्सर श्रावण ५...

... ...

... .

सि.....पाव... . आ-मामदक्षि ना..

क्रियना...य...ग्रामके मलु . दलु... ..

कटु...डारम्भ-नोरारम्भ-सकल-सुवर्ण्ण-

हाय-सकल-दवमादाय आ.....गर

आ-ग्राम .. ..ग११... ..वरदगलनु ।

[इस लेख में अय नगद और अनाज की आमदनी के किसी ग्राम न का उल्लेख हुआ है ।]

३५४ (२३०) कु.....फाल्ग.....अनुभ...

को .....य सोमेगे वेद.....कण्डुय

.....पूनि . ...आ-ग्रामके...पनु नीवे

सेसुकोण्डु... .... आ-ग्रामदलिन नमगे

मलुव पलिगेयनु पौत्रपारम्परे आ-चन्द्रार्क

स्थायियागि अनुभविसिकोण्डु बरुवदु यी

.....कय-साधन.....यी-मर्य्यादि

.....कयसाधन - .....र्य्या .....

नाग-गवुडन.....द स्थानीक.....

.....मार्पिगलुन.....इन्निय...याक

मल्वे देवक नज्जेगवुड हिन्दल.....द

कोत्तनगवुड बसट्टर गवुड.....हलिय
तिर्त्तवन मुयि मर्य्या.....

[यह किसी ग्राम का वैनामा सा ज्ञात होता है।]

३५५ (२३१) पण्डित देवरु माडित्तु माहाभिषेकद्दोळगे हालु-मोसरेगे २ पूजारिगे १ भागि केञ-सिगलिगे कलुकुटिगरिगे भागि २ भण्डि-कारङ्गे १ सर्व्विदवर कै सासिर वरु हरियाळो

[लेख का भावार्थ कुछ संदिग्ध है। शायद इसमें महाभिषेक के लिए व पुजारियों, कारीगरों और मजदूरों को पण्डित देव के दान का उल्लेख है।]

३५६ (२३२) श्रीमतु व्यय संवत्सरद माग सुद्ध १३ नेय त्रयोदसियलु करिय-कान्तण सेट्टियर मक्कलु करिय-विरमण सेट्टियर तम्म करियगुम्मट सेट्टियरु विडितियिन्द सङ्घव कुडिसोण्डु बेलुगुलदलु गुम्मटनाथन पादद मुन्दे रत्न-यद नोम्पिय बसादनेय माडि सङ्घरपूजेय माडि कीर्त्तिपुण्यवनु उपार्जिसिकोण्डरु।

[उक्त तिथि को करिय कान्तण सेट्टि के पुत्र व करिय विरमण सेट्टि के भ्राता गुम्मटसेट्टि ने एक संघ सहित बेलुगुल की वन्दना की और गोम्मटनाथ के दर्शन कर कीर्त्ति और पुण्य का उपार्जन किया।]

३५७ (२३३) श्रीमतु करिय बोम्मणगे गुम्मटनाथ नेगलि कं।

३५८ (२३९) संवत १८०० कत सद ६ सवत १८००
(नागरी लिपि में) पह-स २ पत दव पनपभ दनचद परवस्त
क वप ।

३५९ (२४८) सव १८०० मत पह सद ८ मगलधर
(नागरी लिपि में) कट रह व गरधर छल वजमल क वट व
मगतरय कट रयक वट वजमल गामट
मम क जत कर ।

३६० (२५१) (यह लेख, शिलालेख नं० ६० (२४०)
के प्रथम १५ वर्णों की हूबहू कापी मात्र है)

३६१ (२५२) स्वस्ति श्रीमतु बहुव्यवहारि मोससेय...
वि-सेट्टियर वावु माविसिद चवीसतीर्थं-
कर अष्टविधार्चनेगं वरिपनिवन्धियागि
माणिक्यनकर.....रस-नकरङ्गलु कोट्ट
पडिप...गं हाग ।...व-सेट्टि वाचिसेट्टि
चिक वाचिसेट्टि प २ अम्मेन्नेय केटि
सेट्टि चन्दिसेट्टि गुम्मिसेट्टि चिकतम्म,
प २ आदिसेट्टि चोडिसेट्टि १ वाचिसेट्टि
वयिविसेट्टि जक्कमैदुन वोरिसेट्टि
वाचि सेट्टि मारिसेट्टि वम्मिसेट्टि प २
माचि सेट्टि नम्मिसेट्टि मसणिसेट्टि केति-
सेट्टि प २ केतिसेट्टि रेविसेट्टि हरियम-
सेट्टि कोम्मिसेट्टि आदिसेट्टि चिक-केति

सेट्टि प २ पट्टण स्वामि चन्देसेट्टि सोम-
सेट्टि केतिसेट्टि प २ सोडलिसे सेट्टि
बाकवेचट्टि.....केमिसेट्टि प १...
..द.....चिक...हेग्गडिति पट्टण-
स्वामि मलिसेट्टि कामवे प २ वम्मेव
नायक देोवचे नायिकित्ति चिक पट्टण
स्वामि प २ बाहुबलिसेट्टि पारिपसेट्टि
बमविसेट्टि वरत बाहुबलि प २ सङ्क-
सेट्टि रुचिसेट्टि चौडिसेट्टि बाचिसेट्टि
सक्तिसेट्टि प २ नागिसेट्टि करियशान्ति-
सेट्टि बबणसेट्टि बेाप्पसेट्टि प २ मैलि-
सेट्टि महदेव सेट्टि हारुवसेट्टि प १
कावियेट्टिय पारिपसेट्टि शादिसेट्टि
प १ सेाहंयकपसेट्टि जक्तिसेट्टि प १
तिप्पसेट्टिय बमविसेट्टि चिक तिप्पि-
सेट्टि प १..... ...य पदुमनसामि-
सेट्टि बमक्षि पदुम प १ देसिसेट्टि
कलिसेट्टि केतिसेट्टि बम्मिसेट्टि प १...
यटद रायमल्लसेट्टि बर पट्टण स्वामि
अक्करस हेग्गलसेट्टि यीचसेट्टि पट्टण
स्वामि मलियेट्टि चाकिसेट्टि दासिसेट्टि
प २ नेमिसेट्टियक प २ नाविसेट्टि देवि-

सट्टि चट्टिसेट्टि कावबेसेट्टिवि प २
पट्टयखामि वोप्पिसेट्टि वोक्किसेट्टि तम्म
वोप्पिसेट्टि वसविसेट्टि भाडुवम्मिसेट्टि
जक्के अत्तियक प २ अङ्गरिक कालि-
सेट्टि सोमिसेट्टि चन्दिसेट्टि देविसेट्टि
चिक्क कालिसेट्टि प २ सोविसेट्टि चङ्गिसेट्टि
वम्मिसेट्टि प १ होम्मिसेट्टि पारिप सेट्टि
कुप्पबे प २ माचिसेट्टि चट्टिसेट्टि गङ्गि-
सेट्टि कालिसेट्टि मारिसेट्टि प २ मङ्गि-
सेट्टि वर्द्धमानसेट्टि पारिपसेट्टि प २
कालिसेट्टि देविसेट्टि वम्मसेट्टि प १
गुम्मिसेट्टि माकिसेट्टि गोम्मटसेट्टि
माचिसेट्टि प १ मसणिसेट्टि लक्कुमि-
सेट्टि प १ वहणिगेय वम्मबेय केटि-
सेट्टि प १ दनसेट्टिय म... वसेट्टि देमि-
सेट्टि चामबे प २ यात्तिकबेय वम्मि-
सेट्टि पारिपसेट्टि चिक्क पारिपसेट्टि चेलि-
सेट्टि सोमसेट्टि गोम्मट सेट्टि केतिसेट्टि प२
महदेवसेट्टिय चेट्टिसेट्टि रामिसेट्टि चट्टि-
सेट्टि प २ पदुमसेट्टि होल्बेसेट्टि गोम्मट-
सेट्टि लक्कुमिसेट्टि पोचम्म नाकिसेट्टि
महदेवसेट्टि प २ नागर-नविलेय केति-

[illegible]

श्रीमतु चारुकीर्त्ति पण्डित देवरु-गलु
अवर शिष्यर अभिनव-पण्डित-देवरुगलु
बेलुगुलद नाड गवुडुगलु माणिक्य नग-
रद दलवपण्डितु स्थानिकरु देवर... ..
.....वरु

[यह लेख अधूरा है। इसमें बेलुगुल के चारुकीर्त्ति पण्डितदेव अभिनव पण्डित देवका उल्लेख है]

३६३ (२६०) सके १६५५ आधोज वदि ७...खेरा-
(नागरी लिपि में) मासा पुत्र.....मसोमा..... श्री
सक.....धानापोसा.. .....
...गया सफल श्री।

३६४ (२६१) सके १६५१ आधोज-वद ७ खेरामासा
(नागरी लिपि में) पुत्र हीरासाहा पद्मपुरवला आत्रा सफल।

३६५ (२६२) सके १६६३ आधोज वद ७ खेरामासा
(नागरी लिपि में) पुत्र धरमासाहा पौत्र जागा.....
आत्रा सफल ॥

३६६ (२६३) सके १६५३ पौस वदि १२ शुक्रवारे
(नागरी लिपि) भण्डेवेद कीर्ति सहित उपरवल जाती
हीरासाह सुत हाससा सुत चागंवा
सोनाबाई राजाई गोमाई राधाई समाई
सहित आत्रा सफल करी कारज कर।

३६७ (२६४) चेय नाम संवत्सरद कार्तिक सुद्ध पट्टनो
(अखण्डबागिलु के पास पत्थर में) यि गुरुवार ॥

३६८ (२६५) स्वस्ति श्रीं मूल सङ्घ देशियगण
(द्वार के पास भुज- पुस्तकगच्छ श्रीगण्डविमुक्त सैद्धान्तदेवर
बलिस्वामी के पाद- पीठ पर) गुरु भरतेश्वर दण्डनायक माडिसिद ॥

३६९ (२६६)

[लेख नं० ३६८ के ही समान]

(द्वार के पास भरते-
श्वर के पादपीठ पर)

३७० (२७०) श्रीमतु आदित्य सुद्ध ६ ल्ल येगूर गामेय
नरसप्पसट्टियर मग वैयणनु स्वामि-दर्श-
नक्क माडि ई-कट्टे कट्टिय अरवडिगे
निर्मिसिदरु ॥

[इस लिखि देउ येगूर के गामेय नरसप्पसेट्टि के पुत्र वैयण ने स्वामी के दर्शन किये, यह कुण्ड बनवाया और उस पर पत्थर उठवाया।]

३७१ (२७१) मोमसेन देवर गुरु गोहण्य वैयण

३७२ (२७२) . भुवनकीर्त्तिदेवर शिष्य.....कार्ति-
देवर निसिधि ।

३७३ (२७३) धनशसिरुम्बा.....ल्ल ..ल.....

३७४ (२७४) सिंहनन्दि आचार्यंद ॥

३७५ (२७५) पुगावाई. .....जगदाई पट्टाग्र आवा
(बाकी लिखि दे) सुकल ॥

३७६ (२७६) पु बनाई पुत्र पण्डि...पु..

(नागरी लिपि में)

३७७ (२८०) श्रीमतु आम्बै बहुल १ यसु भारतेव नागप्पनटर मग जिनवसु वेदुगुत्त पाडकीर्ति भटार श्री पादव के शिष्य-दक श्री ॥

[नं० १७८ से ४०४ तक के लेख नागरी लिपि में हैं ।]

३७८ (२८३) चौतामनग वहरा माणकर ई-का

३७९ (२८४) सके १६४२ वैसाष वदी १३ पु गहाधा धर्मोसा कोहसा खो मानीकनाथ नमस्कार (कनाडी लिपि में) सावियन्ना

३८० (२८५) ग्रा ...प क १६४२. क वदी १३ सोमवारो आधा गरुड ॥

३८१ (२८६) श्री फाल्गुनं ॥

३८२ (२८७) शक १५६७ पार्थिव-नाम संवत्सरे वैसाष मास शुक्ल पक्ष चतुर्दशी दिवस श्री फाल्गुन सूर्यराज आतीय गोत्राया गाने सुवदी बाचुलाचों आपनाई वदो पुत्रो हुवे धवनपुत्र सुआजसाचों सभाई वदा पुत्रा वह मध्य सीमा मनुवाचा सहुवो-त्याचुंबसीत आवे सम्वटमावे हुवीव पुत्र सहुवो पदआदाचों सभाई वदो पुत्रो

द्वौ विट्टमार्य्यौ कमलाजा पुत्र एशोजा पदाजी सह्नवो द्वितीय पुत्र गेसाजीवि सम्प्रणमति हीरासा धरमासा माडगडो।

३८३ (२८८) साके १५७४ चैत्र सुधी ५ आल्वा। जगस वास्वान्त-पुसा त्याचे भाऊ गोनसा समसनी धर्म वृद्धि आ॥

३८४ (२८९) सक १५७४ चैत्र वद १० प। जीनासा सुत जीनदास

३८५ (२९०) चैत्र वदी ६ पं। सक १५७४ सा। अ-लीसा जात्रा सफल॥

३८६ (२९१) श्री काष्टसङ्घ माडवगडी १५७७ मनमथ नाम संवदसरे कार्तीक वदी १५ हीरासा घुमाईल पुत्र धरमासा ईराई पुत्र सानसा व हीरासा वप्तगडेसा वप दमा काचे जात्रा सफल माताई चे जात्रा॥

३८७ (२९२) सके १५७७ मनमथ नाम संवत्सरे कार-तिक वदी पाडिव १ वल्लीची मारमा काछावा मारमा जीवामा जीवाजी पाही घानयजी वानदीका जामखेडकर साता कार्तीमा करका जत्रा।

३८८ (२९३) सके १६७४ चै. वदी ६ धपाउसा मानीकमा जत्रा सफली॥

३८९ (२९४) १७६४ सुरजन सफल

३९० (२९५) सके १७५४ चैत्र वदी ५ अत्र करी सफल

३९१ (२९६) सुपुजीश नेमाजी सामजी सरत योगोई

३९२ (२९७) सके १६४० फालगुन सुदी १ गु. दे-
मामा मानोकसा गविल (कनाड़ो में)
देमामा रजा

३९३ (२९८) सके १५८४ वैशाष सुदी ७ श्री फाडा-
नइ पीठलागोत्रे लषसा पु हीरासा
रामामा आज्ञा सफल ।

३९४ (२९९) ग्रथग्र सागर पं। असवन्त ।

३९५ (३००) प गोविन्दा माध गड्डाई

३९६ (३०१) संवत् १७१८ वर्षे वैशाष सुदि ७ चन्द्रे
श्री काहासइ पण्डित

३९७ (३०२) सके १५६८ सावउरे फालगुन वदि ६
वदा... .स.....पुत्र चीलक.....
थायमा... ..अगार.....अ रघु.....
सा चीलक.....

३९८ (३०३) आम्बाजी का जन्माजी का वर

३९९ (३०४) माघ सुदि ६ पेडेक...ज्ञा घडे...आज्ञा
सफल ॥

श्रवण बेल्गुल नगर के अवशिष्ट लेख

४२६ (३३१)

शक्कुन वस्ति में पार्श्वनाथ की मूर्त्ति पर

श्री-सूरस्त-देशिगण-पुस्तकगच्छ-कोण्डकुन्दान्वयके
सिद्धान्त-चक्रवर्त्ती नयकीर्त्ति-मुनीश्वरो भाति ॥१॥
तच्छिष्योत्तम-बालचन्द्र-मुनिप-श्री-पाद-पद्म-प्रिया
मल्वोर्व्वी-नुत-चन्द्रमौलि-सचिवस्याद्धाङ्ग-लक्ष्मीरियं ।
शारदाम्बा रजताद्रि-हार-हर-हासोद्गणश्री-मञ्जरी-
पुञ्जीभूत-जगत्त्रया जिन-गृहं भक्त्या मुदाकारयत् ॥२॥

४२७ (३३२)...शातीराज सुश्रीपरा...गमधरेय

४२८ (३३७) श्रीमत्पण्डितदेवर गुड्डि देवराय महाराय राज्ञि भीमादेवि माडिसिद शान्तिनाथ स्वामि श्री ॥

४२९ (३३८) श्रीपण्डितदेवर गुड्डि बसवाधि माडिसिद वर्द्धमान स्वामि श्री ॥

४३० (३३९)

मज्जायि वस्ति के द्वितीय दरवाजे की पालट पर

अस्ति श्री सूरस्त देशिगणस्य-पुस्तकगच्छ-कोण्डकुन्दा-
न्वय श्रीमद्-अभिनव-नयकीर्त्ति-पण्डिताचार्यवर शिष्य

सम्यक्त्वचूड़ामणि रायपात्र-चूड़ामणि वेलगुलद मट्टारि माडिसिद त्रिभुवनचूड़ामणि येम्ब कैलासयके मट्टल्ल-महा श्री श्री श्री ॥

[श्री मूलसङ्घ देशिय गण, पुस्तक गच्छ, कोण्डकुन्दान्वय के अभिनव चारुकीर्ति पण्डिताचार्य के शिष्य वेलगुलवासी सम्यक्त्व चूड़ामणि मट्टारि द्वारा निर्मापित त्रिभुवन चूड़ामणि नामक जैनालय का मट्टल्ल हो।]

४२१ (२४८) .. ..छने ...शासने...परोक्ष
.....रय . दृभु.....नुदि... ....
लान्तरङ...ज्ञायदेवङ वतिमय्य.....य
...दाता . .. .वत्सिय्य .....
अभेयनन्दि .. .. सिद्धान्ति देवङ
देव ....ज्ञान्तिदेवङ.....
चन्द्र . .. .सुरकीर्त्ति त्रैवि... ..
चन्द्र भट्टा . ..गुणचन्द्र

.....भट्टारङ.....भट्टा-
रङ... . ङटका.....ङ

... .ग कमल.....प्रङ
. .. .ग्राहकस्पृष्ट वासु

पू...ब.....सिद्धति...ङ्कों...
.....ङ.....वागि सिद्ध

.....र्द श्रीमा.....तथा
त्मक तत्प.....वे ॥ श्रीकु.....पद
.....ताय.....रमस्त.....मू
अन्वयाभिधान अभिनव स्वार प पतु...
...चक्रवर्त्ति

.....मा र.....त्यमै...
..... गु.....
....
...कपदि.....

४३२ (३५०) पिङ्गल-स.....ड ५ लु स.....
तथ पुस्त.....न्वान्वयद.....
सि पण्डितापा.....तरकलगु.....र
मदनतिगं कि.....पिपूर धन.....
सि संण्डिपर.....येतुगुलकं प

४३३ (३५२)

पुर्णैया की सनद जो कागज पर लिखी हुई वेंकगुल के मठ में है

गुरु-संवत्सरद फाल्गुन ब ८ बुधवारदल्लु श्रीमनु
[illegible] किरुवारि ग्रामद नडुवेगे बरिसि कुडुवित्त कार्य

[धर्मस्थल के कोमार हेग्गडि ने आकर कृष्णराज वडयर के समय की एक सनद पेश की जिसमें किक्केरि तालुका के कबालु नामक ग्राम का येल्गुल के चिक्कदेवराय के समीप की दानशाला के हेतु दान दिये जाने का उल्लेख था। इसी सनद के अनुसार उक्त तिथि को पूर्णय्य ने यह सनद दे दी कि उक्त ग्राम की आय, जो उस समय ८० वराह थी, उक्त दानशाला और बेल्गुल के मठ के हेतु काम में लायी जाय। भविष्य में आय में जो वृद्धि हो वह भी इसी हेतु खर्च की जाय यह सनद उक्त तिथि को सरकारी दफ्तर में नकल कर ली गई।]

४३४ (३५४)

मुम्मडि कृष्णराज ओडेयर की सनद उसी मठ में कागज पर

श्रीकण्ठाच्युत-पद्मजादि-द्विपद्-वक्रोद्ध-तेजःछटा-
सम्भूतामतिभीषण-प्रहरण-प्रोद्भासि बाहाष्टकां।
गर्जत्-सैरिभ-दैत्य-पातित-महा-शूलां त्रिलोकी-भय-
प्रोन्माथ-व्रत-दीक्षितां भगवतीं चामुण्डिकां भावये ॥१॥

निदानं सिद्धानां निखिल-जगतां मूलमनघं
प्रमाणं लोकानां प्रणय-पदमप्राकृतगिरां।
परं वस्तु श्रीमत् परम-करुणासार-भरितं
प्रमोदानस्माकं दिशतु भवतामप्यविकलं ॥ २ ॥

हरेर्लीला-वराहस्य दंष्ट्रा-दण्डस्स पातु नः।
हैमाद्रि-कलशा यत्र धात्री छत्र-श्रियं दधौ ॥ ३ ॥

नमस्तेऽस्तु वराहाय भोगयोद्धरते महीं ।
सुर-सप्त-गतो यस्य मेढः कल्पक्षयायते ॥ ४ ॥
पातु वोऽपि जगन्ति सन्ततमकूपारादुरामुद्धरन्
घोंघा-घोर-घरेश्वरस्य भगवान्यस्यैक-दंष्ट्राङ्कुरे ।
कूर्मः क्रन्दति नाम्यति स्थिरमन. पत्रन्ति दिग्दन्तिनो
मेढः कांक्षति मेदिनी ग्रसति व्योमापि रोलम्बति ॥५॥

स्वस्ति श्री विजयाभ्युदय-सांवत्सराभ्यन्तर-शुक्ल वर्षगणतु १७५२ मन्द वर्तमान-विकृति-नाम-संवत्सरद आवण्ण ब० ४ सोमवारदन्दु आश्लेष-नक्षत्र आयुष्मान-योग कौलवा-नुवर्तिगलाद श्रिम्मडि-कृष्णराज-वडेयर अर पौत्रराद चामराज-वडेयरवर पुत्रराद आमत् सुमस्त-भूमण्डल-मण्डनायमान-निखिल-देशावतंस-कर्नाटक-जनपद-सम्पदभिवृद्धिगभूत आम-महापुर-महा-संस्थान-मध्य-रंगाभ्यमानाविकल-कलानिधि-कुल-कमलिनी-राज-विविधाल-प्रभुत्व- निखिल-राजाधिराज-महाराज-चक्रवर्ति-मण्ड-लानुभूत-दिव्य-रत्न-सिंहासनारूढ आयद्-राजाधिराज-राज-परमेश्वर श्रीद-प्रतापप्रतिम-वीर-नरपति विरुद-उन्नत-गण्डपेण्ड-वीर यदु-कुल-पयःपारावार-कलानिधि शत्रु-पक्षाकृत-कृतान्त-मकर-मत्स्य-तरम-क्रान्त-गण्ड-भेरुण्ड-भारद्वीवराद दनुपद्-गण्ड-कण्ठीरवाद-नक-विरुदांकुरादि महाप्रभु श्री कृष्णराज-वडेयरवर अवर धर्मपत्नि दोडकीर्ति-पण्डितार्य अवर धर्मपत्नि देवरसानगत्ति पतिव्रत-शीलादियिन कूडि दान-धर्माभि-वृद्धियागि मेरेदु बाळि ओडु नाम-शाश्वतवागि-उळिव-न्तिरे ।

किक्केरि-तालुकु श्रवणबेलगुल दक्षिरुव दोड्ड-देवरु १ अक्षिरुव चिक्करे-देवस्थान ७ चिक्कबेट्टद मेले यिरुव देवस्थान १६ ग्राम-दक्षिरुव देवस्थान ८ सद्दा देवस्थान ३२ के सह पडितर-दीपाराधने-वगे नडेयुव नगदु तस्तीकु १२०-शिवायि चारुकीर्त्ति पण्डिताचार्य मठक्के नडेयुव कब्बालु-ग्राम १ यिदरल्लि पडितर-दीपाराधनेगे मालुवदिल्लवादरिन्द मठक्के नडेयुव कब्बालु-ग्राम १ यिदरल्लि पडितर-दीपाराधनेगे मालुव-दिल्लवादरिन्द मठक्के नडेयुव कब्बालु ग्राम मात्र कायं माडिसि पडितर दीपाराधने नडेयुव बग्गे श्रवण बेलगुल ग्राम १ उचैनहल्लि ग्राम १ होसहल्लि ग्राम १ यी-गुरु-ग्रामवन्नु सर्व्व-मान्यवागि अप्पणे-कोडिसुवेकेन्दु अरमने समुरवद लक्ष्मी-पण्डितरु इज्जुल्लरिक्के-माडिकोण्डरिन्द मह नगदु तस्तीकु मोचोप माडिसि यिद्दु यी-गुरु-ग्राम-गलन्नु मह मदरि देवस्थानगल पडितर-दीपाराधने मुन्नाद बग्गे चारुकीर्त्ति-पण्डिताचार्य मठद कब्बालु-माडिकोट्टु ई-ग्रामगल्ल बेरीजु पञ्चमालु मुद्दुवलि पटि कलुहिसुवन्ते आगुव मजहुर आमीलगे निरूपमप्पणे-कोट्टिर मेरे आमीलन कडु मोहर दतर दाखले नोमि अर्जियल्लि मह्मूपागि बन्द पट्टे परान्वरिमि कट्टले-माडिसिरुव विवर बेरीजु ( ) कसवा अवय बेल्लगोल ग्राम अमलि १ दाखले कोपालु २ कोरे १ कट्टे २ के सह बेरीजु ( ) पैकि बजा आरि विना-मति-

(यहां तीनों गांवों का आय का पांच साल का पूरा ब्यारा दिया है)

यी-मेरे यिरुव मामगलु यिदर दाय्दे-माम केरे कट्टे मुन्तागि मदरि बेडगुलदयिरुव देरु-देवरु मुन्तागि ३२ देवस्थान मक्कगूडि-बेरद मेले यिरुव देवस्थान १ सहा मूवत्त-मूरु-देवस्थानद पडिवर दीपाराधने रथोत्सव मुन्ताद कार्य यी-देवस्थान गळिगे वर्षम्प्रति दानदोज्जि आगबेकेन्दु माडिसबेक कार्य सहा आत्रेय-सगोत्र आश्वलायन-सूत्र ऋग्वेद-शाखानुवर्ति गङ्गाद यिम्मडि-कृष्णराज-वडयरवर पौत्रराद चामराज-वडयरवर पुत्रराद श्रीमत्सकल-भूमण्डल-मण्डलायमान-निखिल-देशायत्त-कर्नाटक जनपद सम्पदधिष्ठानभूत श्रीमन्-महीसूर-महासंस्थान-मध्य-दंदीप्यमानाविकल-कलानिधि-कुल-क्रमागत-राज-क्षिति-पाल-प्रमुख-निखिल-राजाधिराज-महाराज-चक्रवर्ति-मण्डलानु-भूत-दिव्य-रत्न-सिंहासनारूढ श्रीमद् राजाधिराज राज परमेश्वर प्रौढ-प्रताप्रतिम-वीर-नरपति विरुदेन्तम्बर गण्ड भोंकैक-वीर यदु-कुल-पयः-पाराबार-कलानिधि शत्रु चक्राद्रि-कुठार-मकर-मत्स्य-शरभ-शाल्व-गण्डभेरुण्ड-परशिवराद दनुमद्-गरुड-कण्ठीर-वायनेक-विरुदाङ्कितराद महीसूर श्री-कृष्णराज-वडयरवर सर्वमान्यवागि अप्पले-कोडिसि-पंचेयाद-कारण यी-मामगलम् यी-यिक्कुलि-संवत्सरदारभ्य मडद इवालु-माडिकोट्टु निरुपा-धिक-सर्वमान्य-वागि नडसिकोण्डु बरुवन्ते आलुकु मजकूर मामोलगे सलदु अप्पले-कोडिसिधोतागि सदरि सलदिन मेरे यी-मूरु-मामगल यल्ले चतुर्सीमा-वक्कणे गडे बेरलु मने हत्त कैम्पु-नेलु कणिन मोलें यारलु-यैक पुर वर्ग येरु-कालिके जाम-

काणिके गुरु-काणिके काणिके वेडिके कन्विगद पोम्मु आरे-
पोम्मु हट्टि-पोम्मु मार्ग-करगपडि सुङ्क पोम्मु जाति-कूट समवा-
चार हुल्लु [illegible] चरादाय हेरादाय सीगे मट्टि पडङ्ग पोप्पलि
गिड-गावलु ब्राह्मण-निवेशन शूद्र-निवेशन सोरिगन तोट विरे-
हुल्ल श्रीगन्ध होरवाद मर बलि फल-वृक्ष मरिक मुन्ताद आ-
मकल स्वाम्यवन्नु रूहिसि कोल्लुत्ता अवर बेलगुल-मामडलि
नेरेयुर मन्ने-सुङ्कद हुट्टु बलियन्नु तेग दुकोल्लुत्ता यो-ऐवत्तिनलि
देवर सेवेगे उपयोग-माडिकोल्लुत्ता बरुवदु यो-मामगललि
हेमदागि कैरे कट्टे कास्वे अम्बे मुन्तागि कट्टिसि बाजे-गदु
मुन्तागि याव बाधिनल्लि येनु हेच्चु हुट्टु बलि माडि-कोण्डान्
मदरि देवर सेवे मुन्ताद्दक्के उपयोग-माडिकोल्लुवदु सम्वदागि
श्रवण बेलगुलद चारुकीर्त्ति-पण्डिताचार्य मठदक्के आत्रेय-सगोत्र
आश्वलायन-सूत्र ऋक-शाखानुवर्त्ति-गलाद विम्मडि-कृष्णराज
वडेयरवर पौत्रराद चामराज-वडेयरवर पुत्रराद श्रीमन्महा-
भूमण्डल-मण्डलनायमान-निखिल-देशावतंस-कर्नाटक-जनपद
सम्पदधिष्ठानभूत-श्रीमन्महीशूर-महासंस्थान-मध्य-देदीप्यमानमणि
कल्प-कलानिधि-कुल-क्रमागत-राज-शिविपाल-प्रमुख-निखिल-
राजाधिराज-महाराज चक्रवर्त्ति-मण्डलानुभूत-दिव्य-रत्न-सिंहा-
सनारूढ श्रीमद्-राजाधिराज राज-परमेश्वर प्रौढ-प्रतापप्रतिभा-
वीर-नरपति विरुदेन्तेम्बरगण्ड गोकैक-वीर यदु-कुल-पयः-पारा-
वार-कलानिधि शङ्ख-चक्रकुश-कुठार-मकर-मत्स्य-शरभ-सार्द्ध-
गण्डभेरुण्ड-धर्मो-वराह-हनूमद्रुद्र-कण्ठीरवाद्यनेक-विरुदावलि-

वराद महाशूर श्रीकृष्णराज-वडयर वरु वल्लगुलद देवस्थान गल्ल पत्तिर दीपाराधने रथोत्सव वर्त्तम्प्रति आगवरू दाग-दोशि-कंडमद वग्गे सहा वरसि कोट्ट सर्वमान्य-ग्राम-साधन सहि ॥

आदित्यचन्द्रावनिरोऽनलश्च
द्यौर्भूमिरापो हृदयं यमश्च ।
अहश्च रात्रिश्च उभे च सन्ध्ये
धर्मश्च जानाति नरस्य वृत्तं ॥ ६ ॥

स्वदत्ताद्विगुणं पुण्य परदत्तानुपालनं ।
परदत्तापहारेण स्वदत्तं निष्फलं भवेत् ॥ ७ ॥

स्वदत्तां पुत्रिका धात्रीं पितृ दत्तां सहोदरीं ।
अन्यदत्तां तु मातां स्याद् दत्तां भूमिं परित्यजेत् ॥८॥

स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धराम् ।
षष्टि वर्ष-सहस्राणि विष्ठायां जायते कृमिः ॥ ९ ॥

मद्वंशजाः परमहीपतिवंशजा वा
ये भूमिपास्तदनुमुज्ज्वलधर्मचित्ताः ।
मद्धर्ममेव सततं परिपालयन्ति
तत्पादपद्मयुगलं शिरसा नमामि ॥ १० ॥

व तारीख ८ माहे आगिष्ट सन् १८३० ने विसवि सत्त अरमने सुबराय मुनसि इजूरु पुत्तूरु सदरि अपले-कोडि-सिरुव मेरिगे असलि-ग्राम मूरु दासलि-ग्राम यरडु कोरे वन्दु कटे मूरक्के सह जारि विनायति सिरायि सालियाना कण्ठि-रायि वम्मैनूरु-अरवतारु वरहालु व्याजे वेरेंजु वल्ल पी-ग्राम-

[illegible]

[illegible]

[illegible]

श्री चारुकीर्ति-गुरुराडन्तेवासित्वमायुषाम् ।
मनोरथ-समृद्धये सन्मतिसागर-वर्णिना ॥ ६ ॥
धरणेन्द्र शालिग्रा शुम्भत्कुम्भकोणं वपुषा ।
अनन्तनाथ-बिम्बोऽयं स्थापितस्मन्प्रतिष्ठितः ॥ ७ ॥

श्री-पञ्चगुरुभ्यो नमः ।

४३६ (३५६)

उसी मठ में गोम्मटेश्वर की प्रभावलि की पीठ पर

(शक सं० १८८०)

(अन्य और शामिल)

श्री श्री-गोमटेशाय नमः

अशीत्यधिक-सप्त-शतोत्तर-सहस्र-सङ्ख्यित-शालिवाहन-शक-वर्षे एकविंशत्यधिक-पञ्चशतोत्तर-द्विसहस्र-प्रमित-श्रीमद्वति महावीर-वर्द्धमान-तीर्थङ्कर-मोक्षगताब्दे एकपञ्चाशद्गुणित-प्रभवादि-संवत्सरे-मति प्रवर्तमान-जयसंज्ञ नाम-संवत्सरे दक्षिणायने ग्रीष्मकाले आषाढ-शुक्ल-पूर्णिमायां शुभतिथौ श्री-दक्षिण-काशी-निर्विशेष-श्रीमद्-वेणुपुर-भण्डार-श्रीजिनचैत्यालये नित्य-पूजा-श्रीविहारमहोत्सवार्थं श्रीमच्चारुकीर्ति पण्डिताचार्य-वर्य्यमान्वेवासि-श्री-सन्मतिसागर-वर्णिना अभीष्ट-संसिद्धयर्थं श्रीमद्-गोमटेश्वर-स्वामि-मतिकृविरिय श्रीमज्जपरीमभिवसद्भ

गोपाल-आदिनाथ-श्रावकाभ्यां प्रतिष्ठापूर्वकं स्थापित ॥ भद्रं भूयात् ॥

४३७ (३५७)

नवदेवता मूर्त्ति के पृष्ठ भाग पर

(मन्थ और तामिल)

श्री शालिवाहन शकाब्दाः १७८० प्रभवादि संवत्सराः ५१ ल् शेल्लानिन्र कालयुक्ति नाम संवत्सर आषाढ़ शुद्ध पूर्णिमा-तिथियिल् श्रीमद् वेल्गुलमठत्तिल् श्रीमन् नित्य पूजा निमित्तं श्रीमत्पञ्चपरमेष्ठि प्रतिविम्बमानदु तञ्जनगरं पेरुमाल् श्रावकरालु संप्रिक्त उभयं ॥ वर्द्धतां नित्य मङ्गलं ॥

[वेल्गुल के मठ में नित्य पूजन के लिए तञ्जनगर के पेरुमाल श्रावक ने यह पञ्चपरमेष्ठी की मूर्त्ति अमुक तिथि को अर्पित की ।]

४३८ (३५८)

गणधर मूर्त्ति के पृष्ठ भाग पर

(मन्थ और तामिल)

वृषभसेन गणधरन् भरतेश्वर चक्रवर्त्ति गौतमगणधरन् श्रेणिक महामण्डलेश्वरन् (कन्नड में) कन्नडदल्लिरुव पद्मनैदयन धर्म्म ।

४३८ (३५८)

पञ्चपरमेष्ठि मूर्त्ति पर

(अन्य और तामिल)

बेलिगुल मदक्कु मन्नार्कोविल् सिन्नु मुदलियार् पेण्डादि पद्मावतियम्माल् उभयं शुभं ।

[मन्नार्कोविल के सिन्नुमुदलियार् की भार्या पद्मावतियम्माल् ने बेलगुल मठ को अर्पित की]

४४० (३६०)

चतुर्विंशति तीर्थङ्करमूर्त्ति के पृष्ठ भाग पर

(अन्य और तामिल)

स्वस्ति श्री बेल्गुलमठस्य तरुवूरु-अजिकाधर्मः

४४१ (३६१)

अनन्ततीर्थंकर प्रभावली के पृष्ठभाग पर

(अन्य और तामिल)

श्री शालिवाहन शकाब्दाः १७८० श्रीमत् पश्चिमतीर्थंकर मोक्षगताब्दः २५२१ प्रभवादिगताब्दः ५१ ल् शोल्लानिन्र काळयुक्तिनामसंवत्सर आषाढशुद्धपूर्णिमातिथियिल् श्रीमद्बेल्गुलनगरभट्टारजिनालयत्तिल् अनन्तव्रतोद्यापनानिमित्तं श्री

वृषभादनन्तचतुर्विंशतितीर्थंकरपर्य्यन्तचतुर्विंशतिजिनप्रतिबिम्बमानदु तज्ज-नगरं श्रीवीरं प्पावु श्रावकरालु शेट्टिवस्त उभयं वर्द्धतां नित्यमङ्गलं ॥

[बेलगुल नगर की भण्डार वस्ति में अनन्तव्रत के पूर्ण होने पर शुक्ल तिथि को तज्जनगर के श्रीवीरम् अप्पावु श्रावक ने प्रथम चतुर्विंश तीर्थंकरों की मूर्त्तियां अर्पित कीं ।]

४४२ (३६३) श्री चामुण्डरायन वस्तिय सीमे ।

४४३ (३६४) श्री नगर जिनालयद कैरे ।

४४४ (३६५) श्री चिक्कदेवराजेन्द्रमहास्वामियवरकल्याणि

४४५ (३६६) स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वर त्रिभुवनमल्ल वल्लकाडुगोण्ड भुजबलवीरगङ्ग विष्णु-वर्द्धन होय्सलदेवर विजयराज्यमुत्तरो-त्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्क...

४४६ (३६७)

जक्किकट्टे के दक्षिण में एक चट्टान पर जिन-मूर्त्ति के नीचे

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छन ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥

श्रीमूलसङ्घद देशियगणद पुस्तकगच्छद शुभचन्द्र-सिद्धान्त-देवर गुड्डि दण्डनायक-गङ्गराजनत्तिगे दण्डनायक-बोप्पदेवन

वृषभाद्यनन्तवीर्थंकरपर्य्यन्तचतुर्दशजिनप्रतिबिम्बमानदु तच्च-नगरं शाश्वतं श्रप्पावु श्रावकराल् शोभित्त नभयं वर्द्धतां नित्यमङ्गलं ॥

[वेलुगुळ नगर की भण्डार वस्ति में अनन्तव्रत के पूर्ण होने पर एक तिथि को तच्चनगर के शाश्वतम् अप्पार श्रावक ने प्रथम चतुर्दश तीर्थंकरों की मूर्त्तियां अर्पित कीं ।]

४४२ (३६३) श्री चामुण्डरायन वस्तिय सीमे ।

४४३ (३६४) श्री नगर जिनालयद कॅरे ।

४४४ (३६५) श्रीं त्रिकदेवराजेन्द्रमहास्वामियवरकल्याणि

४४५ (३६६) स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वर त्रिभुवनमल्ल तलकाडुगोण्ड भुजबलवीरगङ्ग विष्णु-वर्द्धन होय्सलदेवर विजयराज्यमुत्तरो-त्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्क...

४४६ (३६७)

जक्किकट्टे के दक्षिण में एक चट्टान पर जिन-मूर्त्ति के नीचे

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥

श्रीमूलसङ्घद देशियगणद पुस्तकगच्छद शुभचन्द्र-सिद्धान्त-देवर गुड्डि दण्डनायक-गङ्गराजनत्तिगे दण्डनायक-बोप्पदेवन

वृषभादनन्ततीर्थंकरपर्य्यन्तचतुर्विंशतिजिनप्रतिबिम्बमानदु तज्जनगरं शत्तिरं शप्पाचु श्रावकरालु गोदिस उभयं वर्द्धतां नित्यमङ्गलं ॥

[वे गुल्ल नगर की भण्डार वस्ति में जनलाभ के पूर्व होने पर इस तिथि को तज्जनगर के शत्तिरम् चप्पाउ श्रावक ने प्रथम चतुर्विंश तीर्थंकरों की मूर्तियां अर्पित कीं ।]

४४२ (३६३) श्री चामुण्डरायन बस्तिय सीमे ।

४४३ (३६४) श्री नगर जिनालयद कीरे ।

४४४ (३६५) श्री चिक्कदेवराजेन्द्रमहास्वामियवरकल्याणि

४४५ (३६६) स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वरं त्रिभुवनमल्ल तलकाडुगोण्ड भुजबलवीरगङ्ग विष्णुवर्द्धन होय्सलदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कं...

४४६ (३६७)

जक्किकट्टे के दक्षिण में एक चट्टान पर जिन-मूर्त्ति के नीचे

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥

श्रीमूलसङ्घद देशिगगणद पुस्तकगच्छद श्रुतचन्द्र-सिद्धान्तदेवर गुड्डि दण्डनायक-गङ्गराजनत्तिगे दण्डनायक-बोप्पदेवन

सायि अक्कमब्बे मोक्ष-तिलकमं नोन्तु नोम्बरं नयणन्द-देवर माडिसि प्रतिष्ठेय माडिसिदरु मङ्गलमहा श्री श्री ।

४४७ (३६८) स्वस्ति श्रीमत्सुभचन्द्रसिद्धान्तिदेवर गुड्डं श्रीमनु महाप्रचण्डदण्डनायक गङ्ग-पल्यगलत्तिगं शुभचन्द्र देवर गुडि जक्कि-मब्बे केरेय कट्टिसि नयणन्द देवर माडि-सिदरु मङ्गलमहा श्री श्री ॥

४४८ (३६९) पुट्टसामि चेन्नण कोलद मार्ग ।

४४९ (३७०) चेन्नण कोलद मार्ग ।

४५० (३७१) पुट्टसामि सट्टर मग चेन्नण हालुगोल ।

४५१ (३७२) चेन्नण अमृवकोल ।

४५२ (३७३) चेन्नण गङ्ग बावनी कोल ।

४५३ (३७४) श्री पुट्टसामि सट्टर मक्कलु चिक्कण तम्म चेन्नण आदि-वर्तद कोल जय जया ।

४५४ (३७५) श्री गोम्मट देवर अष्ट विधार्च्चनेगं.. हिरिय ...यिकूल.....ल...लज्जन कयिकन्तिय ...ज विट्ट दत्तिय श्रीमन्महा...चार्य्यरु हिरिय नयकीर्त्ति-देवरु चिक्कनय-कीर्त्ति देवरु आचन्द्रार्क्कतारवरं सलिसु-त्तिहरु मङ्गलमहा श्री श्री श्री क्षयसंवत्सरद चैत्र शुद्ध ७ मा । श्रीमन्महामण्डलाचार्य्यरु हिरियनयकीर्त्तिदेवर शिष्यरु चन्द्रदेवर

सुगात्रपद चतुर्भिर्मासोपवासैरिते.....रिह
कल्पतु सामनद सारिते.....

[यह लेख अपूर्ण है। इसके ऊपर और नीचे का भाग किसी ने लिख लिया है। लेख में चतुर्भिर्मासि मासोपवासै [illegible] अवशिष्ट पूरा है लिए इस लिपि को इस भूमि के दान का उल्लेख है। इस दान के ध्येय सवत्सरीमि और वसु सवत्सरीमि आचन्द्रार्कतारं विजय रहे।]

४५५ (४८०)

मठ में वर्द्धमान स्वामी की प्रभावली के पृष्ठ भाग पर

(प्रभ और तामिल)

श्रीवर्द्धमानायनम । शालिवाहन शकाब्दः १७८० श्रीमत्पथिमतीर्थंकरमोक्षगताब्दः २५२१ प्रभवादिगताब्दः ५१ नू योल्लानिन्र फाल्गुन नाम सवत्सर आषाढ़ शुद्ध पूर्णिमा दिवियिल् श्रीमद् येल्गुमठत्तिल् नित्यपूजा-निमित्तमाग श्री सन्मतिसागरवर्णिगलुदैय अभीष्टसिद्धयर्थं श्रीवीर-वर्द्धमान स्वामिप्रतिबिम्बं कर्णिदंशं शोण्णयम्याक्क शाप्पामालियाल् सैय्वित्त शासनं एवदा नित्यमङ्गलं ॥

४५६ (४८१)

चन्द्रनाथस्वामी की प्रभावली पर

(मंथलिपि में)

(शक स० १७७८)

श्री चन्द्रनाथाय नमः ॥

" अष्टा-सप्तत्यधिकास्सप्त-शतोत्तर-सहस्रकाब्दगुणिते ।

नगर में के अवशिष्ट लेख

शालीवाहन-शकनृप-संवत्सरके समायाते ॥ १ ॥
एकाब्ध-विंशति-युतात्पञ्चशतसहस्रयुग्मकाद्गुणिते ।
श्री-वर्द्धमान-जिनपति-मोक्ष-गताब्दे च सञ्जाते ॥ २ ॥
एकन्यूनशताब्दात्स्वभवादिगताब्दके च संगुणिते ।
एवं प्रवर्त्तमाने नवनामाब्दे समायाते ॥ ३ ॥
मीने मासि सिते पक्षे पूर्णिमायान्तिथौ पुनः ।
अवाक्-काशोत्तिविख्यात-वंस्तुने नगरे मठे ॥ ४ ॥
श्रीचारुकीर्त्ति-गुरुराडन्तेवासित्वं ईयुषां ।
मनोरथ-समृद्धूरै सन्मतिसागर-वर्णिनां ॥ ५ ॥
कुम्भकोण-पुरस्था श्री-नेमका श्रावकी शुभा ।
स्थापयामास सद्विम्बं चन्द्रनाथ-जिनेशिनः ॥ ६ ॥
प्रतिष्ठा-पूर्वकमित्थं-पुजार्थं भोपलब्धये ।
पञ्च-संसार-कान्तार-दहनाय शिवाय च ॥ ७ ॥

भद्रं भूयात् ।

४५७ (४८२)

नेमिनाथस्वामी की प्रभावली के पृष्ठ भाग पर

(अन्य अक्षरों में)

(शक सं० १७७८)

श्री नेमिनाथाय नमः ।
अष्टासप्तत्यधिकात्सप्तशतोत्तरसहस्रकाद्गुणिते ।
शालीवाहनशकनृपसंवत्सरके समायाते ॥ १ ॥

सुवानवद चतुर्विंशतीर्थंकरिते.....ति
कम्यलु सासनद सारिते.....

[यह लेख अधूरा है। इसके ऊपर और नीचे का भाग घिस
गया है। लेख में चतुर्विंशति तीर्थंकरों की अवस्थिति पूजन के
लिए इस तिथि को इस भूमि के दान का उल्लेख है। इस दान के
लेख यशकीर्ति और उभु यशकीर्ति आचार्यों के लिखे थे।]

४५५ (४८०)

मठ में वर्द्धमान स्वामी की प्रभावली के पृष्ठ भाग पर

(प्रथम और तृतीय)

श्रीवर्द्धमानायनमः। शालीवाहन शकाब्दः १७८७ श्री-मत्परमगंभीरस्याद्वादनायकाब्दः २५२१ प्रभवादिसंवत्सरः ४१ शोभननाम-संवत्सरे कार्तिकशुक्ल नाम केवलार्क श्रावण शुद्ध पूर्णिमा तिथौ श्रीमद् वेलगुलदलिल् निजपूजा-निमित्तमाग श्री चन्द्रगिरि पाद प्रक्षालन-पूर्वक अभीक्षसिद्धयर्थं श्रीवीर-वर्द्धमान स्वामिगे श्री कल्लिदेव पोय्सलवम्शद के सालागामिवान् तोरिसि धर्म पूर्वका निमम्दुत्त ॥

४५६ (४८१)

चन्द्रनाथस्वामी की प्रभावली पर

(पंचधातु में)

(शक सं० १७८८)

श्री चन्द्रनाथाय नमः ॥

[illegible]

नगर में के अवशिष्ट लेख

शालीवाहन-शकनृप-संवत्सरके समायाते ॥ १ ॥
एकान्न-विंशति-युतात्पञ्चशतसहस्रयुग्मकाद्गुणिते ।
श्री-वर्द्धमान-जिनपति-मोक्ष-गताब्दे च सङ्ख्याते ॥ २ ॥
एकन्यूनशताधीशभवाधिगताब्दके च सगुणिते ।
एवं प्रवर्त्तमाने नवनामाब्दे समायाते ॥ ३ ॥
मौने मासि सित पक्षे पूर्णिमायान्विधौ पुनः ।
अवाक्-काशीतिविख्यात-वस्तुने नगरे मठे ॥ ४ ॥
श्रीचारुकीर्त्ति-गुरवाऽन्तेवासित्वं ईयुषां ।
मनोरथ-समुद्भूते सन्मतिसागर-वर्णिनां ॥ ५ ॥
कुम्भकोण-पुरवा श्री-नेरुका श्रावकी शुभा ।
स्थापयामास मठिन्य चन्द्रनाथ-जिनेशिनः ॥ ६ ॥
प्रतिष्ठा-पूर्वकस्तिस्य-पूजार्थं भोपलरूपये ।
पञ्च-समार-कान्तार-दहनाय शिवाय च ॥ ७ ॥

भद्रं भूयात् ।

४५७ (४८२)

नेमिनाथस्वामी की प्रभावली के पृष्ठ भाग पर

(प्रन्थ अक्षरों में)

(शक सं० १७७८)

श्री नेमिनाथाय नमः ।
अष्टासप्तत्यधिकसप्तशतोत्तरसहस्रकाङ्कयिते ।
शालीवाहनशकनृपसवत्सरके समायाते ॥ १ ॥

सुवालयद चतुर्व्विंशतीर्थकरिगे.....रि
कय्यलु सासनद सारिगे.....

[यह लेख अपूरा है। इसके ऊपर और नीचे का भाग बिलकुल घिस गया है। लेख में चतुर्विंशति तीर्थंकरों की अष्टविध पूजा के लिए उक्त तिथि को कुछ भूमि के दान का उल्लेख है। इस दान के ज्येष्ठ नयकीर्त्ति और लघु नयकीर्त्ति आचन्द्रार्कतारं नियत रक्खें।]

४५५ (४८०)

मठ में वर्द्धमान स्वामी की प्रभावली के पृष्ठ भाग पर

(संस्कृत और तामिल)

श्रीवर्द्धमानायनमः। शालीवाहन शकाब्दः १७८० श्रीमत्यश्चिमतीर्थङ्करमोक्षगताब्दः २५२१ प्रभवादिगताब्दः ५१ दुर्मुखानिन्न फालयुक्ति नाम संवत्सर आषाढ़ शुद्ध पूर्णिमा तिथियिल् श्रीमद् वेल्गुमठत्तिल् नित्यपूजा-निमित्तमाग श्री सन्मतिसागरवर्णिगलुटैय अभीष्टसिद्धयर्थं श्रीवीर-वर्द्धमान स्वामिगळ् बिम्बं कर्णाटदेशं वेणिणयम्बाक्कं शान्तासामियाल् सेटिप्पु नर्ध पधवा नित्यमङ्गलं ॥

४५६ (४८१)

चन्द्रनाथस्वामी की प्रभावली पर

(संस्कृत में)

(शक सं० १७७८)

श्री चन्द्रनाथाय नमः ॥

अद्य-सप्तत्यधिकसप्त-शतोत्तर-सहस्रशाद्गुणिते ।

शालीवाहन-शकनृप-संवत्सरके समायाते ॥ १ ॥
एकाम्र-विंशति-युतात्पञ्चशतसहस्रयुग्मकाद्गुणिते ।
श्री-वर्द्धमान-जिनपति-मोक्ष-गताब्दे च सञ्जाते ॥ २ ॥
एकन्यूनशतार्धात्प्रथमादिगताब्दके च संगुणिते ।
एवं प्रवर्त्तमाने नलनामाब्दे समायाते ॥ ३ ॥
मीने मासि सिते पक्षे पूर्णिमायान्तिथौ पुनः ।
अवाक्-काशीतिविख्यात-वस्तुके नगरे मठे ॥ ४ ॥
श्रीचारुकीर्त्ति-गुरुराडन्तेवासित्वं ईयुषां ।
मनोरथ-समृद्धानां सन्मतिसागर-वर्णिनां ॥ ५ ॥
कुम्भकोण-पुरीया श्री-नेमका श्रावकी शुभा ।
स्थापयामास सद्भक्त्या चन्द्रनाथ-जिनेशिनः ॥ ६ ॥
प्रतिष्ठा-पूर्वकस्तस्य-पूजार्थं श्रेयसे स्वयं ।
पञ्च-सम्भार-काम्भार-इहनाय शिवाय च ॥ ७ ॥

भद्रं भूयात् ।

४५७ (४८२)

नेमिनाथस्वामी की प्रभावली के पृष्ठ भाग पर

(ग्रन्थ अक्षरों में)

(शक सं० १७७८)

श्री नेमिनाथाय नमः ।

अष्टासप्तत्यधिकात्सप्तशतोत्तरसहस्रकाद्गुणिते ।
शालीवाहनशकनृपसंवत्सरके समायाते ॥ १ ॥

४५९ (४८४)

गरगट्टे विजयराज्यम्म के घर जिनमूर्त्ति के पाद पीठ पर

श्रीमद् देवणन्दि भट्टारकर गुड्डि मालम्बे कडसवबादिय तीर्त्थद यमदिगे कोट्टल्

४६० (४८५)

गरगट्टे चन्द्रम्म के घर जिनमूर्त्ति के पादपीठ पर

श्रीमाकण्णबे कन्तियक कन्नसवबादिय तीर्त्थद वीर दिगे कोट्टल्

४६१ (४८६) मल्लिषेण। ४६२ (४८७) वीरण्ण।

४६३ (४८८) चिकण्ण सम्म चेन्नण्ण कोल्ल।

४६४ (४८९) पुटमाम्मि चेन्नण्ण मण्डप कोल्ल तोट।

४६५ (४९०) चिकण्ण त .....चेन्नण्ण कोल्ल।

४६६ (४९३) हालोरति।

४६७ (४९४) श्रीजिननाथ पुरद सीमे।

४६८ (५००)

मठ के दायीं ओर तेरिन मण्डप में स्थ पर

शालिवाहन शक १८०२ ने विकमनामसंवत्सरद माघ शुद्ध ५ ल्लु वीराजेन्द्रप्पाटेयल्लु इरुव रायण्णगेट्ट अत्तिगे जिन्नमन शंवर्त्त।

[वीर राजेन्द्रप्पाटे के रायण्णसेट्टि की भावज ने प्रदान किया]

एकान्नविंशतियुतात्पञ्चशतसहस्रयुग्मकाद्गते ।
श्रीवर्द्धमानजिनपतिमोक्षगताब्दे च सञ्जाते ॥ २ ॥
एकन्यूनशतार्द्धात्प्रभवादिगताब्दकं च सङ्गणिते ।
एवं प्रवर्त्तमाने नलनामाब्दे समायाते ॥ ३ ॥
मीने मासि सिते पक्षे पौर्णमास्यान्तिथौ पुनः ।
अवाक् काशीतिविख्यातबेल्गुलं नगरे वरे ॥ ४ ॥
भण्डारश्रीजैनगेहे श्रीविहारोत्सवाय च ।
अनन्तभवदावाग्नेरशमनाय शिवाय च ॥ ५ ॥
श्रीचारुकीर्त्तिगुरराडन्तेवासित्वमीयुषां ।
मनोरथसमृद्धानां सन्मतिसागरवर्णिनां ॥ ६ ॥
श्राद्धेनश्रेष्ठिना शुम्भत्कुम्भकोणमुपेयुषा ।
श्रीनेमिनाथबिम्बोऽयं स्थापितस्स प्रतिष्ठितः ॥ ७ ॥

४५८ (४८३)

पण्डित दौर्बलिशास्त्रि के घर शान्तिनाथ मूर्त्ति के पृष्ठभाग पर

(नागरी अक्षरों में)

सं १५७६ व० श्रा० १४४१ प्र० कर प्र० कु० सहित मौ० मासे श्रीउस० श्रा० सोनीसीहा भार्या धर्म्माई नाम्ना पुत्र सो सिङ्घारीया श्रेयोर्थं । वि...मासे० शु० प० ६ सोमे श्री शीतलनाथ बिम्बं कारितं । प्र० श्री० गृ० व० पाप । श्रीविक्षसामुस्करिभिः ।

४५५ (४८४)

मरगट्टे विजयराज्यश्री के पट्ट जिनमूर्ति के पादपीठ पर

श्रीमद् देवगुप्तसूरि आचार्य गुरुड़ श्रावक्य कारापनवासिद [illegible]

४५० (४८४)

मरगट्टे चन्द्रश्री के पट्ट जिनमूर्ति के पादपीठ पर

श्रीमत्तीर्थनाथ श्रीमत्तट कक्कारापनवासिद तीर्थंकर श्री [illegible]

४५१ (४८५) श्रीमत्तट । ४५२ (४८७) तीर्थंकर

४५३ (४८८) विजयसिंह तथा चैत्यालय श्रीमत्त ।

४५४ (४८९) पुरुषसिंह चैत्यालय मण्डप श्रीमत्त श्रीमत्त ।

४५५ (४९०) विजयसिंह व चैत्यालय श्रीमत्त ।

४५६ (४९१) हाथीसिंह ।

४५७ (४९२) श्रीजिनवाल पुत्र तीर्थ ।

४५८ (५००)

मठ के दायीं ओर मंत्रित मण्डप में एक पर

शालिवाहन शक १८८२ में विक्रमनामसंवत्सरस्य माघ, शुक्ल ४ रवि श्रीमाल-ज्ञातीयश्रेष्ठ हरिश्चन्द्रेण अस्मिन् जिन-भवन उत्तमे ।

[यह शिलालेख के सम्बन्धित श्री भावज ने प्रहार किया]

श्रवणबेल्गुल के आसपास के ग्रामों के शिलालेख।

जिननाथपुर के लेख

४६७ (३७८)

शान्तीश्वर बस्ती के द्वार पर

स्वस्ति श्रीजगनज...वलिय पुनकालर मगं जूनिकवन तम्मे
पोन्न पेर्म्मडियर मरुलारद गण्ड...सावितरदेव...स...पुग
... ..रि.....ल.....लरनडि...रं कादि कोन्दुजाल...ग्र
गन्नर योडिन उरं कपेयरं भु...सेमर सुरिगेय कलगमेनिसु रि...
विमि ग्रमकके कवन्दर नि...तन्न मोम्बकलु...गलु...गिडिर्,
व...मलु गुलिद...संकान्त.....गोलु मरि मरुलेडुर मन्
पेडिनोम्ब सि.....गिन्दे... .....र.....मा.....रगरे
. . गुलु तन्न...क.....लरुवदं

गन्नर प... . जिनतीर्थेय वा...तलु-ग्रमगण्यलु...ई
पोन्-ग...पडवरिगे ॥ ...सन्दनाग.....निर्वगलन...ग्रा
...लु गानल्ल चन्दल ... गु.....रागि.....वरि निर्-
'लेयनद्द माडिद ॥...ग्रगचित्र .....तनग.....विर.....
ल ल .. न . वि महमन्यलने गडयनिरुव...तल...दिन वर्-
नरल ..न मलु..

.....ग्रमरिद येन काल मल... . ल सन्यानवरि
.....दिरल.....ल...ल नडु-दरि...ल्ल नि...वरिन्दे ..
वरल . गाडगन्नान्न वन्नलूरिन्न...कुडदेयनिरि.....मार...
.....निर्व.....

श्रवणबेल्गुल के आसपास के ग्रामों के शिलालेख।

जिननाथपुर के लेख

४६६ (३७८)

शान्तीश्वर बस्ती के द्वार पर

स्वस्ति श्रीजगनज...वलिय पुनकालर मगं जूनिकवन वर्म्म चोल पेर्म्मडियर मरुलारद गण्ड...सावितरदेव...स...मुग ... ..रि.....ल.....लरनडि...रं कादि कोन्दुजाल...न् गङ्गर बीडिन वरं कचेयरं मु...सेमर सुरिगेल कलगमेनिसु रि... यिसि जसक्के कवन्दद नि...वन्न मोम्मक्कलु...गलु'''सिदिन् व...मल् तुलिद...गेकान्त.....गोल् मरि सत्तलेङ्कर अन्द पेकिनेम्ब सि.....गिङ्गे... .....र.....सा.....रपरि .....गुल् सव्व...क.....लल्लदं

गङ्गर प.....जिनतीर्त्थद वा...स्तल्-अमगण्यनु...ङ् चोल-स...पडवरिगे ॥ ...सन्दनाग.....निजेगजन...स्तव ...ल् यवनल्प चन्दम ... . गु.....दागि.....यदि जिन-पूजेयनेय्दं माडिदं ॥...लगचित्र .....वनग.....विद..... ल स.....न . दि महसन्यसने गडयनिप्प...वन्न...दिन वर-नेरय...त मनु...

.....अमरिद वेम काम मलं..... रद सन्यासनदि .....दिरन.....म...प नेट्टन्दवदि...सङ्ग नि...जर्धिल्लें... यनेंद...गाविगलात्म येन्तल् चित्त...कुडेदेयनिरि.....मोद... .....विदं.....

४७७ (३८६)

उसी ग्राम में एक चट्टान पर

.....सि.....श्री.....भल..... ..गिरे माडि...
.....इप्रतिय..... मुनिराजरिन्द .....विलु .....भरदिन्द
गमाधि...मुं नाडु प्रभु आगमु ।
नेरदिन्तेल्लकुमिडु कोटिरमब्धोरणियु मेरु भूः
धरमुं चन्द्रनुमक्कुंलु वसुधेपुं निन्वलेगं सल्विनं ॥ १ ॥
इन्द्र ई-धर्ममं किडिसिदवक गङ्गेय सदियलेक्कोटिमुनीन्द्रर'
कविलेयुं ब्राह्मणक्रम कोन्द ब्रह्मस्वमु होडरु ।

[इस टूटे हुए लेख में किसी दान का उल्लेख है जिसके विच्छेद से गङ्गा के तट पर सात करोड़ ऋषियों, कपिला गौओं और ब्राह्मणों की हत्या का पाप होगा]

४७७ (३८७) श्रीमतु सिङ्गय्य नायकर कोमरन निरू-
[काले गीत की भूमि में] पदिन्द वेक्कल गुडवप सेोवपनोलगाद
प्रभुगलुचामुण्डरायन वस्तिगे समर्पिसिद
सीमे श्री ।

[सिङ्गय्य नायक की आज्ञा से बेङ्गन के गुडवप सेोवप आदि प्रभुओं ने यह भूमि चामुण्डराय बस्ति के अर्पण की ।]

४७८ (३८८) श्रीविष्णुवर्धन• देवर हिरियदण्डनाय
गङ्गपय्य स्वामिद्रोह घट्ट श्रीवेलुगुल

लिदरु श्री सूलसङ्घद अभयदेवर नाम..
दे तन्मुचिपदत्...र इद ॥

४७४ (३८३) स्वस्ति श्री विजयाभ्युदय शालिवाह
यक वरुष १८१२ नेय विरोधि नाम
सवत्सरद वैशाख बहुल पञ्चमिय
श्रीमद् येल्गुल निवासियागिद मेडलिति
गोत्रजरादं श्री बुजबलैय्यनवरिगे निम्मे
सुखाभ्युदय प्राप्तयर्थ-वागि प्रतिष्ठे
माडिसिदं ॥

[यह लेख अरेगल् बस्ति की प्रतिमा पर है]

४७५ (३८५)

जिननाथपुर में तालाब के निकट एक चट्टान पर

साधारण-सवत्सरद श्रावण सु १ । आ । श्रीमन्महामण्डलाचार्यवर्यं राज-गुरुमण्डलाचार्य त्रिभुवन-मल्लकीर्त्ति-देवर शिष्यर नय कीर्त्ति-देवर तम्म गुरुगळु येरडनेयु माडिसिद चारित्र चैत्र-चारित्रेश्वर अष्ट-विधार्चनेगे त्रिभुवन-मल्लकीर्त्ति-देवं त्रि-दश नन्दन-वनदाळगे गद्दे सम्पगे रा २...अंक वाडिकाल मङ्गल-महा श्री श्री श्री ॥

[इस लिपि को महामण्डलाचार्य राजगुरु त्रिभुवनमल्लदेव के शिष्य नयकीर्त्तिदेव ने अपने गुरु जैसे की बनाई हुई मूर्ति के चारित्रदेव की अष्टविध पूजन के लिए एक भूमि का दान दिया]

वर्णन सच्चरित्र... . गदोलु ॥ जन-जिन-मधि.. निहा ...क..... नियवे ..न रूप-यौवन-गुणसम्पत्तियिन्दातं वसिगु.....भुवन-भूषण-बालचन्द्र...डदक , ड , व ..... वहड-वदु.. . गजराज.. सीत्र-ज्वरो.. कडकंपः प्रतिका...रिय...सक-वर्षद ११३६ नेय श्रीमुखसंवत्सर-द कार्त्तिक शुद्ध ५मो । प्रभात-समयदोल्सन्यमन-समन्वितं ॥

कन्द ।

पञ्च-नमस्कार मन
सच्चलिसदंन्तांप्पुदु सकल...
...वदु.....गडड
.....र दिविज-वधुग वल्लभनाहं ॥

...यम्म...सादरक. . .. .य यल्लडं ॥ मन्तु ..देवर धि ..यर दहन-स्तानदोल् परोड.. निमित्तवागि वैराजनि माडिसिद बालचन्द्र देवर मग.. न शिलाकूटं ॥ आत... .....शोल-मव... गुण.....द विभव .....भूतलदोल् कालव्वेयं सोवेगे रुग्मिणिगं वसिगं मरि दोरे मग.....वेनिसिदा-महासति यि.....स्तानमनरिदे.....भाव-संवत्सरद जेष्ठ-ब । द्वि । निशान्तदोल् सल्लेखन-विधियि समाधिय पडेदु स्वर्ग-प्राप्तेयादलु ॥ श्रीगान्धिनाथाय... ॥

नोसंदतु जिननाथ-पुरवमाडि य...॥१४
.....रवतु.....ड-परदुनंन कोडुव...
जगलवाडिव.....विष्णुवर्द्धन देव...
कोर परिहार ॥ द्रोहपरद्दु-नेडव कोडु।

[इस टूटे हुए लेख में विष्णुवर्द्धन नरेश के प्रधान दण्डनायक द्वारा बेलगुल में जिननाथपुर निर्माण कराये जाने का उल्लेख है]

४७८ (३८८)

जिननाथपुर में शान्तिनाथ बस्ति से पश्चिमोत्तर की ओर एक खेत में समाधिमण्डप पर

(शक सं० ११३६)

श्री गण धिराजन ।

स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलाचार्यवर्य राज-गुरुमण्डलिक पंच-महाशब्द श्री-नेमिसिद्धान्त चक्रवर्त्तिगलेन्तप्पं ॥

इन ।

[illegible]

तण्डन सच्चरित्र... ..गदोलु ॥ जन-जिन-मणि.. निहा ...कं.....नियवे.. न रूप-यौवन-गुणसम्पत्तियिन्दातं वर्त्तिगु.....भुवन-भूषण-बालचन्द्र...रहक . ल . व .. .. बहल-चदु... गजराज.. .तीव्र-ज्वरो.. कर्कशः प्रविका...रिय...सक-वर्षद ११३६ नेय श्रीमुखसंवत्सरद कार्त्तिक शुद्ध ५मो । प्रभात-समयदोल् सन्यसन-समन्वितं ॥

कन्द ।

पञ्च-नमस्कार मन
मञ्चलिसदन्तोप्पुदु सकल...
...बदु.....गरुह
.....र दिविज-वधुगं वल्लभनादं ॥

...यम्म...सादरक... ....
...य वल्लर्ं ॥ अन्तु ..देवर धि...यर बहन-स्तानदोल् परोक्ष...निमित्तवागि वैराजनि माडिसिद बालचन्द्र देवर मग...न शिलाकूटं ॥ मात.....धीर-भव... गुण.....द विभव.....भूतलदोल् कालञ्चेयं सोतेगं दगिसिगं रतिगे मरि दोरे मम.....वेनिसिदा-महासवि चयि.....स्तानमनरिदे.....भाव-संवत्सरद जेष्ट-ष । द्वि । निशान्तदोल् सल्लेखन-विधियि समाधिय पडेदु स्वर्ग-प्राप्तियादलु ॥ श्रीशान्तिनाथाय... ॥

तीर्थंकर जिननाथ-पुरप्रमाद्दि प...अरह
... ..रपत्तु.....ड-परदूनेम्ब कोड्ग...
जगल्लवाविद.....विष्णुवर्द्धन देवर...
को परिहार ॥ द्रोहपरदु-नेम्ब कोलु।

[इस टूटे हुए लेख में विष्णुवर्द्धन नरेश के प्रधान दण्डनायक गङ्गराज द्वारा बेलगुल में जिननाथपुर निर्माण कराये जाने का उल्लेख है]

४७६ (३८७)

जिननाथपुर में शान्तिनाथ वस्ति से पश्चिमोत्तर की ओर एक खेत में समाधिमण्डप पर

(शक सं० ११३६)

ओं नम सिद्धम् ।

स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलाचार्यवर्य्य राद्धान्तगुरुवलिगे चन्द्रप्रभ श्री-मेघचन्द्र-त्रैविद्यदेवरन्तेवलेन ॥

वृत्त ।

[illegible]

चिकसट्टुअ...प्र...न वरकोट कोडग...
.....ला समन महुल महा श्री श्री।

[इस टूटे हुए लेख में एक उद्यान के दान का उल्लेख है]

४८३ (३९३) दे... ..य-नायकन मग मादेय नायक
माडिसिद नन्दि

[मादेय नायक ने नन्दि निर्माण कराई]

कथठीरायपुर ग्राम के लेख

४८४ (३९५) श्रीमतु पण्डितदेवरगळ गुरु गलु वेल्तु-
गुरद नाड चेन्नग-गौण्डन मग नागगौण्ड
मुत्तगदहोन्न...लिय कल्लगौण्ड वीर गौण्ड-
नोम्मगाद गौडुगलु मङ्गायि माडिसिद बस्तिगे
कोट्ट वोडुर कट्टेय गाद्दे वेरलु यि-धर्म्मके
तप्पिदवरु वारणासियलु.. इक्कुकपिलेय
कोन्द पापके होह.....ल-महा श्री श्री श्री।

[पण्डितदेव के शिष्यों ने महावि की बनवाई हुई बस्ति को बहुरकोट्टे की भूमि प्रदान की। जो कोई इस दान का विच्छेद करे उसे बनारस में एक हजार कपिला गायों की हत्या का पाप हो।]

४८५ (३९६) श्री चामुण्डरायन पस्ति सोमे।

[इस टूटे हुए लेख में बेलिकुन्द के महामण्डलाचार्य नेमिचन्द्र पण्डित देव के शिष्य व बालचन्द्रदेव के तनय के उक्त तिथि को समाधिमरण का उल्लेख है। उनकी श्मशानभूमि पर यह शिलाद्वार बनवाया गया। लेख के अन्तिम भाग में साध्वी काडवे के समाधिमरण का उल्लेख है।]

जिल्लेनहल्लिग्राम के लेख

४८० (३६०) श्री शकवर्ष १५८६ प्रमादी च संवत्सरद वैशाख बहुल ११ यश्चि समुद्रादीश्वर स्वामियवर नित्यसमाराधने नित्योत्सव कोल्लंताट मण्टपद सेवेगं पुटसामि सेट्टियर मग चेन्नणनु बिट्ट जिल्लेयन हल्लिय ग्राम मक्कल मडा श्री श्री श्री।

[उक्त तिथि को पुटसामि के पुत्र चेन्नण ने समुद्रादीश्वर (चन्द्रनाथ) स्वामी के नित्य पूजनोत्सव के व कुण्ड, मण्डप और मन्दिर की रक्षा के हेतु जिल्लेयन हल्लि ग्राम का दान किया]

४८१ (३६१) श्री चामुण्डरायन बलिय सीमे ॥ श्री

हालुमत्तिगट्ट ग्राम के लेख

४८२ (३६२) दत्त.....शिव.....रद...धर्मुण्णर्ग
कोडगि तोड.....दा शिला शासन.....
करव वि...कन... .....धर्मुण्णर्ग।

चिक्कबेट्टण...प्र...न वरकोट कोडग...
.....ल्ल समन मङ्गल महा श्री श्री।

[इस टूटे हुए लेख में एक उद्यान के दान का उल्लेख है]

४८३ (३९३) दें.....य-नायकन मग मादेय नायक
माडिसिद नन्दि

[मादेय नायक ने नन्दि निर्माण कराई]

कल्लठीरायपुर ग्राम के लेख

४८४ (३९५) श्रीमत्तु पण्डितदेवरुगळ गुड्डगल्लु बेलु-
गुत्तद नाड चेन्नण-गौण्डन मग नागगौण्ड
मुत्तगदहोन्न...लिय कल्लगौण्ड बेर गौण्ड-
नोळगाद गौड्डगल्लु मङ्गायि माडिसिद वस्तिगे
कोट्ट बोट्टर कट्टेय गद्दे बेरल्लु यि-धर्म्मके
पण्डितरु धारवाडियल्लु... इल्लकपिलंय
कोन्द पापके होद्द.....ल-महा श्री श्री श्री।

[पण्डितदेव के शिष्यों ने मङ्गायि की बनवाई हुई वस्ति को कुछ खेत की भूमि प्रदान की। जो कोई इस दान का विच्छेद करे उसे बनारस में एक हजार कपिला गौओं की हत्या का पाप होवे।]

४८५ (३९६) श्री चामुण्डरायन वस्ति सीमे।

सोणेन हल्लिग्राम के लेख

४८६ (३६७)

(शक सं० १०४१)

स्यादवादमोघ-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-वाञ्छनं ।
ओघात्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥
भद्रमस्तुजिनशासनाय सम्पन्नताम्रतिविधान-हेतवे ।
अन्य वादि-मद-हस्ति-मस्तक-स्फाटनाय पटवे पटीयसे ॥२॥
नमः सिद्धेभ्यः ॥ नमो वीतरागाय ॥ नमो अर्हद्भ्यः ॥
अस्ति श्री-कौण्ड कुन्दाख्यं विख्याते देशिके गणे ।
सिंहणन्दि-मुनीन्द्रस्य गङ्ग-राज्य-विनिर्मितं ॥ ३ ॥

[आगे लेख की ४ थी से ४० वीं पंक्ति तक गङ्गवंश का वही वर्णन है जो नगर के ३०, ४०० के नीचे पद्य से आगे १४ वें पद्य तक पाया जाता है ।]

अस्मिन् समधिगत पञ्चमहाशब्द .... नूर्मोहि भव्यैर्न्नु
॥ १६ ॥

इसके आगे—

अन्तु श्रीमत्कोण्डकुन्दान्वय पुलिगेरे पुलिकुलतिलकं
निरत सकवर्ष १०४१ नेय विलम्बि संवत्सरद फाल्गुण
शुद्ध पंचमि बृहस्पतिवारदु मृगशिरा-नक्षत्रदल्लि कार्य
कार्यं सिद्धि-साधक गणिनियादि मूरुम्मानि देवाङ्गिरिय
मेल कोट्टि तोण्डिवाडिय सिरुवु कुन्दनहल्लिय हाग

दिग्जेय सारथ हुलुमाडिय गडि वेङ्गलु अहंनहल्लियिन्दा... मदिपुरक्के हिरिय-देवर वेट्टक्के होद इन्बट्टेयं गडि हडुवलु हिरिय...हल्ल नजुगेरे वेक्कनलिप...यडकलु गङ्गसमुद्रक्के पल्यद हडुवल दिण्णेयि पडुवलु गडि यिन्तो-चतुस्सीमेयं पूर्व्वि ...यक्कन.. नुं प्रत्यिवासद...पडु. ...गोम्मटपुरद पट्टण-स्वामि मल्लि सेट्टियरु...सेट्टि गण्डनारायण-सेट्टिगुं मुख्यवाद यकर-समूहनुमिर्, माडिद मर्य्यादे यिन्तोधर्म्ममं प्रतिपालिसु-वर्गे महा-पुण्य यक्कुं ॥

हृत ॥

प्रियदिन्दिन्तिदनेयदे काव पुरुषर्गायु महा-श्रीयुम-
क्केयिदं कायदे काव्य पापिगे कुरुक्षेत्रोर्व्वियोलु वारया-
णियोलक्कोटि-मुनीन्द्रर कविलेय वेदाध्यर कोन्दुहो-
न्दयसलार्ग्गुमेनुत्ते मारिदपुदो-शैलाक्षर मन्तवं ॥ १६ ॥

विरुद-रूकारि-मुख-तिलक गङ्गाधारि खंडरिसिद ॥

[इस लेख में लेख सं० १० (२७०) के समान चङ्गराज के कीर्त्तिवर्णन के पश्चात् उल्लेख है कि उन्होंने विष्णुवर्द्धन नरेश से सांविन्दवाडि ग्राम को पाकर उसे पार्श्वदेव और कुक्कुटेश्वर की पूजा के हेतु उक्त निधि को शुभचन्द्र सिद्धान्त देव का पादप्रक्षालन कर दान कर दिया। जो कोई इस दान का पालन करेगा वह दीर्घायु और वैभव सुख भोगेगा पर जो कोई इसका विच्छेद करेगा उसे कुरुक्षेत्र व वाराणसी में सात करोड़ ऋषियों, कपिला गौओं व वेदज्ञ पण्डितों की हत्या का पाप होगा। लेख को गङ्गाधारि ने उत्कीर्ण किया है।]

४८७ (३९८) ...रिसिदेवगे बिट्ट दत्तिय गद्देय.....

सायेन डल्लिग्राम के लेख

४८६ (३६७)

(शक सं० १७४१)

श्रीमत्परम-गम्भीर स्याद्वादामोघ-लाञ्छने ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासने जिन-शासने ॥ १ ॥
भद्रमस्तु जिनशासनाय सत्त्वसतां चक्रतिविधान-हेतवे ।
अन्यतार्थि-मद-स्तिमित-मस्तक-स्फाटनाय पटवे पटीयसे ॥
नमः सिद्धेभ्यः ॥ नमो वीतरागाय ॥ नमो अरहन्ताणं ॥
स्वस्ति श्री-फोण्डइ-वाक्यं विक्यात देशिक गणं ।
भिंडकान्दि-मुनीन्द्रस्य गद्य-राज्य-विनिर्मितं ॥ १ ॥

[आगे लेख की ८ से ११ पंक्ति तक गद्यात्मक श्री वही वर्णन है जो लेख के ४८ (३६५) वें लेख की तीसरी पद्य से आगे ११ वें पद्य तक पाया जाता है ।]

॥ १६ ॥

इसके बाद—

दिन्देय सारय हुलुमाडिय गडि तेङ्गुल्ल अहेनहल्लियिन्दा... मदिपुरक्कं हिरिय-देवर वेट्टक्कं होद इंब्बट्टेय गडि हडुवलु हिरिय...हल्ल नजुनेरे वेक्कनलिप...यडकलु गङ्गसमुद्रक्के पल्यद हडुवय दिण्णेयि पडुवलु गडि यिन्तो-चतुस्सीमेयं पूर्व्वि ...यक्कन.. नुं प्रत्यधिवासद...पडु. ...गोम्मटपुरद पट्टण-स्वामि मल्लि सेट्टियरु...सेट्टि गण्डनारायण-सेट्टियुं मुख्यवाद नकर-समूहनुमिर्दु माडिद मर्य्यादे यिन्तीधर्म्ममं प्रतिपालिसु-वर्गे महा-पुण्य अक्कुं ॥

. इवं ॥

त्रिपदिन्दिन्तिदनेय्दे काव पुरुषर्गायुं महा-श्रीयुम-क्कैयिदं कायदे काव्य पापिगे कुरुक्षेत्रोर्व्वियोलु वारणा-शियोलेक्कंकोटि-मुनीन्द्रर कविलेय वेदाढ्यर कोन्दुदो-न्दयसमार्गुमेनुर्ग मारिदपुदी-शैलाक्षर मन्तवं ॥ १६ ॥

विरुद-रुवारि-मुख-तिलक गङ्गाचारि सेंदरिमिद ॥

[इस लेख में लेख सं० ३० (१३०) के समान गङ्गराज के कीर्त्तिवर्णन के पश्चात् उल्लेख है कि उन्होंने त्रिपुरहर नरेश से गोविन्दवाडि ग्राम को पाकर उसे दानवीर और कुरुक्षेत्रेश्वर की पूजा के हेतु उक्त तिथि को शुभचन्द्र सिद्धान्त देव को पादप्रक्षालन कर दान कर दिया। जो कोई इस दान का पालन करेगा वह दीर्घायु और वैभव सुख भोगेगा पर जो कोई इसका विच्छेद करेगा उसे कुरुक्षेत्र व वाराणसी में सात करोड़ ऋषियों, कपिला गौओं व वेदज्ञ पण्डितों की हत्या का पाप होगा। लेख को गङ्गाचारि ने उत्कीर्ण किया है।]

४८७ (३९८) ...रिसिदेवगे बिट्ट दत्तिय गदेय.....

साणेन हड्डिग्राम के लेख

४८६ (३६०)

(शक सं० १०४१)

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

दिग्वेय सारद हुलुमाडिय गडि वेट्टलु अहंनहल्लियिन्दा... मदिपुरक्क हिरिय-देवर वेट्टक्कं होद इंन्वट्टेयं गडि हडुवलु हिरिय ..इल्ल नजुगेरे वेक्कनलिप...वडकलु गङ्गसमुद्रक्के पल्यद हडुवल दिण्णेयि पडुवलु गडि यिन्तो-चतुस्सीमेयं पूर्व्वि ...क्कन . नुं प्रत्यधिवासद...पडु .....गोम्मटपुरद पट्टण-स्वामि मल्लि सेट्टियर...सेट्टि गण्डनारायण-सेट्टियुं मुख्यवाद नकर-समूहमुमिर्ं माडिद मर्य्यादे यिन्तीधर्म्ममं प्रतिपालिसु-वगें महा-पुण्य मक्कुं ॥

शुभं ॥

त्रियदिन्दिन्तिदनेयूदे काव पुरुषर्गायुं महा-श्रीयुम-क्कंयिदं कायदे काव्व पापिगे कुरुक्षेत्रोर्व्वियोलु वारणा-सियोळंक्कोटि-मुनीन्द्रर कविलेय वेदाध्यर कोन्दुदो-न्दयसमार्गुमेनुगे सारिदपुदो-यीलाक्षर मन्तसं ॥ १६ ॥

विरुद-रूकारि-मुरु-तिलकं गङ्गाधारि खंडरिसिदं ॥

[इस लेख में लेख नं० ३० (२७०) के समान गङ्गराज के दीर्घवर्णन के पश्चात् कहा है कि उन्होंने विष्णुवर्द्धन नरेश से गोविन्दवाडि ग्राम को पाकर उसे पार्श्वदेव और कुक्कुटेश्वर की पूजा के हेतु उक्त निधि के शुभचन्द्र सिद्धान्त देव का पादप्रक्षालन का दान कर दिया। जो कोई इस दान का पालन करेगा वह दीर्घायु और वैभव सुख भोगेगा पर जो कोई इसका विच्छेद करेगा उसे कुरुक्षेत्र व वनारस में सात करोड़ ऋषियों, कपिला गौओं व वेदज्ञ पण्डितों की हत्या का पाप होगा। लेख को गङ्गाधारि ने उत्कीर्ण किया है।]

४८७ (३९८) ...रिसिदेवगें विट्ट दत्तिय गद्देय.....

सोने हल्लियाल के लेख

४८६ (३९७)

(शक सं० १०४१)

श्रीमत्परम-गम्भीर स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥
भद्रमस्तुजिनशासनाय सम्पन्नताम्प्रतिविधान-हेतवे ।
अन्यवादि-मद-हस्ति-मस्तक-स्फाटनाय पटवे पटीयसे ॥२॥
नमः सिद्धेभ्यः ॥ नमो वीतरागाय ॥ नमो अरहन्ताणं ॥
स्वस्ति श्री-कोण्डकुन्दाख्ये विख्याते देशिके गणे ।
सिंहणन्दि-मुनीन्द्रस्य गङ्ग-राज्य-विनिर्म्मिते ॥ ३ ॥

[आगे लेख की ४ थे ४० पंक्ति तक गङ्गराज का वंश वर्णन है और लेख के ४० (१४०) के तीसरे पद्य से आगे १४ वें पद्य तक पाया जाता है ।]

स्वस्ति समधिगत पञ्चमहाशब्द .... नूर्म्मडि भव्यकर्ण ॥ १५ ॥

इसका भाग—

भव्यजन वेदिकाप्रभु श्री पार्श्वदेवर पूजेगे कुडुतेरुवर देगं विरुद्ध शक-वर्ष १०४१ नेय विलम्बि संवत्सरद फाल्गुण-शुद्ध दशमि ब्रह्मवारदन्दु मुनिचन्द्र-सिद्धान्त-देवर शिष्यरप्प सिंह-नन्दिय भट्टि-देवरिगे मूडुव-ग्राम देवाङ्गदिय रूप वा . लोकोद्धारव निरद कुन्दकुन्दान्वय दोळ् [illegible]

दिन्नेय मारण हुलुमाडिय गडि तेङ्कलु अर्हनहल्लियिन्दा.
मदिपुरक्कं हिरिय-दवर वेट्टक्कं होद हेन्बट्टेयं गडि हडुव
हिरिय ..दन्न नजुगेरे वेक्कनलिप...यडकलु गङ्गसमुद्रक्क
चल्यद दडुवण दिण्णेयि पडुवलु गडि विन्तो-चतुस्सीमेयं पूर्व्वि
...यक्कन नुं प्रत्यधिकारद...पडु.. ...गोम्मटपुरद पट्टण-
स्वामि मल्लि सेट्टियर...सेट्टि गण्डनारायण-सेट्टियुं मुख्यवाद
नकर-समूहनुमिर्दु माडिद मर्य्यादे विन्तोंधर्म्मदं प्रतिपालिसु-
वर्गे महा-पुण्य मक्कुं ॥

त्रिपदिन्दिन्तिदनेय्दे काव पुरुषर्गायुं महा-श्रीयुम-
क्कंविदं कायदे काव पापिगे कुरुक्षेत्रोर्व्वियोलु वारणा-
सियोलक्कोटि-मुनीन्द्रर कविलेय वेदाव्यर कोन्दुदो-
न्दयमम्मार्गुमेनुत्ते मारिदपुदी-शैलाक्षर मन्तदं ॥ १६ ॥
विरुद-रुजारि-मुख-तिलक गङ्गाधारि खंडरिसिद ॥

[इस लेख में लेख नं० ६० (१३०) के समान गङ्गराज के कीर्त्तिवर्णन के पश्चात् उल्लेख है कि उन्होंने विष्णुवर्द्धन नरेश से गोविन्दवाडि ग्राम को पाकर उसे पार्श्वदेव और पुरुदेवस्वामी की पूजा के हेतु दान विधि से शुभचन्द्र सिद्धान्त देव का पादप्रक्षालन का दान कर दिया। जो कोई इस दान का पालन करेगा वह दीर्घायु और सब सुख भोगेगा पर जो कोई इसका विच्छेद करेगा उसे कुरुक्षेत्र के संग्राम में सात करोड़ ऋषियों, कपिला गौओं व वेदज्ञ पण्डितों की हत्या का पाप होगा। लेख को महाधारि ने उत्कीर्ण किया है।]

४८७ (३९८) ...रिसिदेवगे विट्ट दत्तिय गद्देय.....

साणेन हल्लिग्राम के लेख

४८६ (३६०)

(शक सं० १०४१)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥
भद्रमस्तु जिनशासनाय सम्पदतान्नतिविधान-हेतवे ।
अन्यवादि-मद-हस्ति-मस्तक-स्फाटनाय पटवे पटीयसे ॥२॥
नमः सिद्धेभ्य ॥ नमो वीतरागाय ॥ नमो अरहन्ताणं ॥
अस्ति श्री-कोण्डकुन्दाख्ये विख्याते देशिके गणे ।
सिंहणन्दि-मुनोद्भूत्य गङ्ग-राज्य-विनिर्म्मितं ॥ ३ ॥

[आगे लेख की ४ से ११ पंक्ति तक गङ्गराज का वंश है जो नम्बर ३० (१००) के तीसरे पद्य से आगे १४ वें पद्य में पाया जाता है ।]

अस्मिन् भरतक्षितौ पञ्चमहाशब्द . . . नूर्म्मेहि धन्यतमं ॥ १५ ॥

इसके आगे—

अन्तु वीरकाण्डु का पारवंदरस पुत्रों कुरुकुलेश्वर देवों विरुद सक्क-वर्ष १०४१ नय विलम्बि संवत्सर फाल्गुन शुद्ध पौर्णमि ब्रह्मवारदन्दु मुनय-ड-सिद्धान्त-देव का[ल] करुवे सिद्ध-वसदि गावि-दानविनो मूडल-गोल इलाकिरिय रल्ल का . तोण्डिनाड निम्ड कुन्दकुन्दान्वय देव[ग]

दिव्वेय सारद्द हुलुमाडिय गडि नेडुल्लु महंनहल्लियिन्दा...
मदिपुरक्कं हिरिय-देवर वेट्टक्कं होद देव्वट्टेयं गडि हडुवलु
हिरिय...इल्ल नजुगेरे बेक्कनिप...यडकलु गङ्गसमुद्रक्के
पल्यद हडुवण दिण्णेवि पडुवलु गडि विन्दो-चतुर्म्मोमेयं पूर्व्वि
...यक्कन . नुं प्रत्यधिवासद...पडु ...गोम्मटपुरद पट्टण-
स्वामि मल्लि सेट्टियर...सेट्टि गण्डनारायण-सेट्टिगं मुख्यवाद
नकर-समूहवुमिर् माडिद मर्य्यादे विन्दोधर्म्मसं प्रतिपालिसु-
वर्गे महा-पुण्य बक्कुं ॥
दु ॥

विषविन्दिन्तिदनेय्दे काव पुरुषर्गागु महा-भोगम-
क्केविदं कावदे कारद पापिगे कुरक्षेत्रोर्व्विगंतु वारणा-
सिरोलक्कोटि-मुनीन्द्रर कविवेय वेदाव्यर कोन्दुदो-
न्दवसरागुमेनुगे मारिदपुदी-शैलाकर गन्तर्व ॥ १६ ॥
विदद-रूवारि-मुख-तिलक गङ्गाधारि रंकरिसिद ॥

[इस लेख में लेख सं० ६० (३७०) के समान गङ्गराज के
वंशवर्णन के पश्चात् लेखक ने कहा है कि उन्होंने विरुपाक्ष के लेख से
उक्त ग्राम को पाकर उसे पार्श्वदेव और कुमुदेश्वर की पूजा
तथा नित्य और नैमित्तिक दान का प्रबन्ध किया था। जो कोई इस दान का पालन करेगा वह दीर्घायु और
पुण्य भोगेगा पर जो कोई इसका विच्छेद करेगा उसे कुरुक्षेत्र
के सात करोड़ ऋषियों, कपिला गौओं व वेदज्ञ पण्डितों का
पाप होगा। लेख को गङ्गाधारि ने स्वयं लिखा है।]
० (३९८) ...रिसिदेवगे विट्ट दत्तिद गद्देय.....

साणेन हल्लिग्राम के लेख

४८६ (३९७)

(शक सं० १०४१)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छन ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥
भद्रमस्तुजिनशासनाय सम्पदाम्त्रिविधान-हेतवे ।
अन्यवादि-मद-हस्ति-मस्तक-स्फाटनाय घटने पटीयसे ॥२॥
नमः सिद्धेभ्यः ॥ नमो वीतरागाय ॥ नमो अरुहन्ताय ॥
स्वस्ति श्री-कोण्डकुन्दाख्ये विख्याते देशिके गणे ।
सिंहणन्दि-मुनीन्द्रस्य गङ्ग-राज्य-विनिर्म्मितं ॥ ३ ॥

[आगे लेख की ४ से ४० पंक्ति तक गङ्गराज का वही वर्णन है जो लेख नं ६० (२३०) के तीसरे पद्य से आगे १४ वें पद्य तक पाया जाता है ।]

स्वस्ति समधिगत पञ्चमहाशब्द.....नूर्म्मडि धन्यनन्दे ॥ १५ ॥

इससे आगे—

अन्तु वेविकोण्डु श्री पार्श्वदेवर पूजेगं कुक्कुटेश्वर-देवर्गं विट्टर सक-वर्षं १०४१ नेय विलम्बि-संवत्सरद फाल्गुण-शुद्ध दशमि ब्रहवारदन्दु शुभचन्द्र-सिद्धान्ति-देवर कार्य कच्चिं विट्ट-दत्तिय गोवि-दवाडिगे मूडल-सोमे ईशान-दिशेय परेय कं...लोण्टिगेरेय निरह कुट्टिस्वहनहल्लिग होद बट्टेय

दिण्णेय सारद्द हुलुमाविय गडि वेल्गुल अहंनहल्लियिन्दा... मदिपुरक्के हिरिय-देवर वेट्टक्के होद हेब्बट्टेय गडि हडुवलु हिरिय...हल्ल नज्जुगेरे बेक्कनलिप...यडकलु गड्डसमुद्रक्के पश्चिम हडुवल दिण्णेयि पडुवलु गडि यिन्ती-चतुस्सीमेयं पूर्व्वि ...यक्कन . नुं प्रत्यधिवासद...पडु . ...गोम्मटपुरद पट्टण-स्वामि मल्लि सेट्टियर...सेट्टि गण्डनारायण-सेट्टिगुं मुख्यवाद नकर-समूहमुमिद्दं माडिद मर्य्यादे यिन्तीधर्म्मम प्रतिपालिसु-वर्गे महा-पुण्य अक्कुं ॥

वृत्तं ॥

त्रिपदिन्दिन्तिहनेय्दे काव पुरुषर्गाळु महा-श्रीयुम-
क्कैयिदं कायदे कारद पापिगे कुरुक्षेत्रोर्व्वियोलु वारणा-
शियोळक्कोटि-मुनीन्द्रर कविलेय वेदाढ्यर कोन्दुदो-
न्दयसमार्गुमेनुमं मारिदपुदो-गौडाधर मन्तवं ॥ १६ ॥

विरुद-रूवारि-मुग-तिलकं गङ्गाधारि खंडरिसिदं ॥

[इस लेख में लेख नं० ६० (२७०) के समान गङ्गराज के दीक्षित होने के पश्चात् उल्लेख है कि उन्होंने त्रिभुवन मल्ल से गोविन्दवाडि ग्राम को पाकर उसे पार्श्वदेव और कुक्कुटेश्वर की पूजा के लिए उस निधि का शुभचन्द्र सिद्धान्त देव का पादप्रक्षालन का दान कर दिया। जो कोई इस दान का पालन करेगा वह दीर्घायु और वैभव सुख भोगेगा पर जो कोई इसका विच्छेद करेगा उसे कुरुक्षेत्र व वाराणसी में सात करोड़ ऋषियों, कपिला गौओं व वेदज्ञ पण्डितों की हत्या का पाप होगा। लेख को गङ्गाधारि ने उत्कीर्ण किया है।]

४८७ (३६८) ...रिसिदेवगे बिट्ट दत्तिय गद्देय.....

साणेन हल्लिग्राम के लेख

४८६ (३६७)

(शक सं० १०४१)

श्रीमत्परम-गम्भीर स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥
भद्रमस्तुजिनशासनाय सम्पद्यतान्त्रतिविधान-हेतवे ।
अन्यवादि-मद-द्विप-मस्तक-स्फाटनाय पटवे पटीयसे ॥२॥
नमः सिद्धेभ्यः ॥ नमो वीतरागाय ॥ नमो अरहन्ताणं ॥
स्वस्ति श्री-कोण्डकुन्दाख्ये विख्याते देशिके गणे ।
सिंहणन्दि-मुनीन्द्रस्य गङ्ग-राज्य-विनिर्मिते ॥ ३ ॥

[आगे लेख की २ से ११ पंक्ति तक गङ्गराज का वंश वर्णन है और लेख में ६० (४७०) के नीचे पद्य से आगे १४ वें पद्य तक पाया जाता है ।]

स्वस्ति समधिगत पञ्चमहाशब्द .... नूर्म्मदि धन्यनल्ल
॥ १५ ॥

इससे आगे—

अन्तु वेडिकोण्डु श्री पार्श्वदेवर पूजेगं कुरुहुदेवर देवर्गं
दिवर शक-वर्ष १०४१ नेय विलम्बि संवत्सरद फाल्गुण
शुद्ध दशमि ब्रहवारदन्दु शुभचन्द्र-सिद्धान्त-देवर शिष्य
कनिके सिद्ध-दन्तिय गावि-दवाडिगे मुखम-गाम देवाद्दि [illegible]
पर [illegible] लोकादित्यर निरद कूडु-हल्लहल्लिय हाद [illegible]

दिव्वेय सारख हुलुमाडिय गडि नेडूलु अहंनहल्लियिन्दा...
मरिपुरक्कं दिरिय-देवर बेट्टक्कं हांद हेब्बट्टेयं गडि हदुवलु
दिरिय...हन्न नजुगेरे बेक्कनलिप...बडकलु गड्डसमुद्रक्कं
पल्यद हदुवल दिण्णेयि पदुवलु गडि विन्तो-चतुर्म्मीमेयं पूर्व्वि
...बक्कन . नु प्रत्यधिवासद...पदु ...गोम्मटपुरद पट्टण-
स्वामि मल्लि सेट्टियक...सेट्टि गण्डनारायण-सेट्टियु मुख्यवाद
नकर-समूहमुमिर्द माडिद मर्य्यादे विन्तोधर्म्मंमं प्रतिपालिसु-
वर्गे महा-पुण्य बक्कुं ॥

॥

प्रियदिन्दिन्दिदनेयुदं काव पुरुषर्गायु महा-श्रीपुम-
रक्केविदं कावदं काव पापिगे कुरुक्षेत्राम्बेवोलु वारला-
सिरोमक्कोटि-पुनीन्द्रदं कविप्रय वेदाल्पदं कान्दुदा-
न्दवसमार्गुमेनुतं नारिदपुरी-शैलाग्र सन्तर्द ॥ १६ ॥

विदद-रुवारि-मुख-तिलकं गङ्गाधारि रणरिंगिद ॥

[इस लेख से लेख सं० ३० (३३०) के समान गङ्गराज के श्रीविजयोंके के पश्चात् पता है कि उन्होंने विष्णुवर्द्धन कोंग से गोविन्दवाडि ग्राम को पाकर उसे पार्श्वदेव और पुरुदेवस्वामी की पूजा के हेतु उक्त जिन के सुपुत्र श्री सिद्धान्त देव को पादप्रक्षालन कर दान कर दिया। जो कोई इस दान का पालन करता वह दीर्घायु और वैभव सुख भोगेगा पर जो कोई इसका विच्छेद करेगा उसे कुरुक्षेत्र में समान करोड़ ब्राह्मणों, कपिलों, गौओं व वेदज्ञ ब्राह्मणों की हत्या का पाप होगा। लेख को महाकवि ने बनाकर लिखा है।]

४८७ (१९८) ...रिसिरेवगे विट्ठ दत्तिय गरेय.....

माणेन हल्लिग्राम के लेख

४८वाँ (३९०)

(शक सं० १०४१)

ओंनमस्सम-गम्भीर स्याद्वादामोघ-वाक्मुने ।
जोयात्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासने ॥ १ ॥
भद्रमस्तुजिनशासनाय सम्यक्तवाद्यतिविधान-हेतवे ।
अन्यवादि-मद-इस्ति-मस्तक-स्फाटनाय पटवे पटीयसे ॥२॥
नमः सिद्धेभ्यः ॥ नमो वीतरागाय ॥ नमो अर्हदभ्यः ॥
स्वस्ति श्री-कोण्डकुन्दाख्ये विख्याते देशिक गणे ।
सिंहणन्दि-मुनीन्द्रस्य गङ्ग-राज्य-विनिर्म्मिते ॥ ३ ॥

[आगे लेख की २ से ७ पंक्ति तक गङ्गराज का यश वर्णन है जो लेख के ७० (४००) वें नंबर के तीसरे पद्य से आगे ७ वें पद्य तक पाया जाता है ।]

स्वस्ति समधिगत पञ्चमहाशब्द . नृपतिं भुवनैक
॥ १६ ॥

इसका भावार्थ—

अन्तु [कोंडकुन्दान्वय का पारदेवर गुरु कुडुवेरदेवर] [विख्यात शक वर्ष १०४१ नेय विलम्बि संवत्सर फाल्गुण शुद्ध पञ्चमि आदित्यवार-दु एलवन्-सिद्धान्त-देव के [शिष्य] सिंह-नन्दि गणि-वडारिगल मुख्य-शिष्य [?] देव [?] . तोण्डनाड [?] सिंह [?] कुडुवडुगल्लिन [?]

दिन्देय सारद्द हुलुमाडिय गडि तेङ्कलु अहंनहल्लियिन्दा... मदिपुरक्के हिरिय-देवर वेट्टक्के होद हेन्वट्टेयं गडि हडुवलु हिरिय...हल्ल नञ्जुगेरे वेक्कनलिप...वडकलु गड्डसमुद्रक्के पल्यद हडुवल दिन्नेयि पडुवलु गडि यिन्तो-चतुस्सीमेयं पूर्व्वि ...क्कन.. नुं प्रत्यधिवासद...पडु.....गोम्मटपुरद पट्टण-स्वामि मल्लि सेट्टियर...सेट्टि गण्डनारायण-सेट्टियुं मुख्यवाद नकर-समूहनुमिर्दु माडिद मर्य्यादे यिन्तोधर्म्मयं प्रतिपालिसु-वर्गों महा-पुण्य अक्कुं ॥

वृत्तं ॥

प्रियदिन्दिन्तिदनेय्दे काव पुरुषर्गायुं महा-भोगमु-
क्कियिदं कायदे काव्व पापिगे कुरुक्षेत्रोर्व्वियोलु वारणा-
शियोलेक्कोटि-मुनीन्द्रर कविलेय वेदाढ्यर कोन्दुदो-
न्दयसमार्ग्गमेनुम्ने मारिदपुदो-शैलाग्रर सन्तवं ॥ १६ ॥

विरुद-रुजारि-भुज-तिलकं गङ्गाधारि सेंडरिसिदं ॥

[इस लेख में लेख सं० ३० (३४०) के समान गङ्गराज के कीर्त्तिवर्णन के पश्चात् उल्लेख है कि उन्होंने विष्णुवर्द्धन नरेश से गोविन्दवाडि ग्राम को पाकर उसे पार्श्वदेव और कुक्कुटेश्वर की पूजा के हेतु उक्त तिथि को शुभचन्द्र सिद्धान्त देव का पादप्रक्षालन कर दान कर दिया। जो कोई इस दान का पालन करेगा वह दीर्घायु और वैभव सुख भोगेगा पर जो कोई इसका विच्छेद करेगा उसे कुरुक्षेत्र व वाराणसी में सात करोड़ ऋषियों, कपिला गौओं व वेदज्ञ पण्डितों की हत्या का पाप होगा। लेख को गङ्गाचारि ने उत्कीर्ण किया है।]

४८७ (३९८) ...रिसिदेवगे विट्ट दत्तिय गद्देय.....

साणेन हल्लियाल के लेख

४८६ (३६७)

(शक सं० १०४१)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥
भद्रमस्तुजिनशासनाय सम्पद्यतामस्त्रतिविधान-हेतवे ।
अन्यवादि-मद-हस्ति-मस्तक-स्फाटनाय घटने पटीयसे ॥२॥
नमः सिद्धेभ्यः ॥ नमो वीतरागाय ॥ नमो अरहन्ताणं ॥
स्वस्ति श्री-कोण्डकुन्दाख्ये विख्याते देशिके गणे ।
सिंहणन्दि-मुनीन्द्रस्य गङ्ग-राज्य-विनिर्म्मितं ॥ ३ ॥

[आगे लेख की ५ से १० पंक्ति तक गङ्गराज का वही वर्णन है जो लेख नं १० (१४०) के नीचे पद्य से आगे १४ वें पद्य तक पाया जाता है ।]

स्वस्ति समधिगत पञ्चमहाशब्द.....नूर्म्मडि धन्यनन्दे ॥ १५ ॥

इससे आगे—

अन्तु वेडिकोण्डु श्री पार्श्वदेवर पूजेगं कुक्कुटेश्वर-देवर्गं विट्टर सक-वर्ष १०४१ नेय विलम्बि संवत्सरद फाल्गुण-शुद्ध दशमि ब्रह्मवारदन्दु शुभचन्द्र-सिद्धान्ति-देवर कार्ं कच्चिं विट्ट-दत्तिय गोविन्दवाडिगे मूडण-सीमे ईशान-दिशेय परेय कं...लोण्टिगेरेय निरह कल्लेल्लहनहल्लिग होद बांव

दिव्वेय सारण्ड हुलुमाडिय गडि वेट्टलु अर्हन्नहल्लियिन्दा... मदिपुरक्कं दिरिय-देवर वेट्टक्कं होद हेब्बट्टेयं गडि हडुवलु दिरिय...हल्ल नजुगेरे बेक्कनलिप...यडकलु गङ्गसमुद्रक्के चल्यद हडुवण दिण्णेयि पडुवलु गडि विन्तो-चतुस्सीमेयं पूर्व्वि ...क्कन.. तुं प्रत्यधिवासद...पडु.....गोम्मटपुरद पट्टण-स्वामि मल्लि सेट्टियरु...सेट्टि गण्डनारायण-सेट्टियुं मुख्यवाद नकर-समूहमुमिर्दु माडिद मर्य्यादे विन्तोधर्म्ममं प्रतिपालिसु-वर्गो महा-पुण्यं बक्कुं ॥

दुर्ग ॥

प्रियदिन्दिन्तिदनेय्दे काव पुरुषर्गायुं महा-श्रीयुम-
क्कैयिदं कायदे काव्व पापिगे कुरुक्षेत्रोर्व्वियोलु वारणा-
सियोलक्कोटि-मुनीन्द्रर कविसेय वेदाढ्यर कोन्दुदो-
न्दयसमार्ग्गुमेनुत्तं मारिदपुदो-श्रीशाखरं मन्तदं ॥ १६ ॥

विरुद-रुवारि-मुख-तिलकं गङ्गाचारि खंडरिसिदं ॥

[इस लेख में लेख सं० ६० (२७०) के समान गङ्गराज के कीर्त्तिवर्णन के पश्चात् उल्लेख है कि उन्होंने विष्णुवर्द्धन नरेश से गोविन्दवाडि ग्राम को पाकर उसे पार्श्वदेव और कुक्कुटेश्वर की पूजा के हेतु उक्त तिथि को शुभचन्द्र सिद्धान्त देव का पादप्रक्षालन कर दान कर दिया। जो कोई इस दान का पालन करेगा वह दीर्घायु और परम सुख भोगेगा पर जो कोई इसका विच्छेद करेगा उसे कुरुक्षेत्र व वाराणसी में सात करोड़ ऋषियों, कपिला गौओं व वेदज्ञ पण्डितों की हत्या का पाप होगा। लेख को गङ्गाचारि ने खंडरीसिद किया है।]

४८७ (३९८) ...रिसिदेवगे बिट्ट दत्तिय गद्देय.....

ब्रडेत्ति कवि सेटियुं मडना विट गदे
सलगे ओन्दु कोलग।

[इसमें कवि मेट्टि के कुछ भूमि के दान का उल्लेख है]

४८८ (३९९) श्री वृषभस्वामि

(खण्डित मूर्ति के पादपीठ पर)

४८९ (४००) श्री मूलसङ्घद देशिगणद पोस्तक गच्छद
श्री सुभचन्द्र सिद्धान्त देवर गुड्डि ज-
क्कियब्बे दण्डनायकिति साहलि.....
ं देवर्ग प्रतिष्टेयं माडि जक्कियब्बे...
...डर मग पयमगद स.....चुनरेय
... ..दवाडिय.....यलु सलगे बेदले
कोलगं ५ गोविन्द-पडिय कोलग १
बेदले कण्डुग।

[शुभचन्द्र सिद्धान्तदेव की शिष्या जक्कियब्बे ने मूर्ति की स्थापना कराई और गोविन्द पण्डित की दत्त भूमि अर्पण की।]

सुण्डहल्लिग्राम का लेख

४९० (४०७)

.....संवत्सरद मार्ग्गशिर शु. १० बुधवार
.....न्महामण्डलाचार्य्य नेमिचन्द्र
पण्डितदेवरु .....पट्टणस्वामि नागदेव
हेग्गडेयुं कोच्चगौडनुं..... ..न मग मार

गौड कोरेय कट्टिदनलेयेन्दु आत
हारिसुवुदिल्ल वा तेरव अय्दु इलविन
दो .. बेरल्ले इडुवल्ल मुतेरि सीमे
आवन म..... पय्यन्त सलुवन्तागि
कोट पत्तले मल्लिहिरव कविलेय कोन्द ॥

[यह लेख दान भूमि का पट्टा है। इसमें महामण्डलाचार्य मेलिचन्द्र पण्डित देव का उल्लेख करके कहा गया है कि मारगौड ने एक ताडाग बनाया, इसके लिए नागदेव हेग्गडे और केतुगौड ने उसे सदा के लिए उक्त भूमि का पट्टा दे दिया।]

बेक्कग्राम में बस्ती के सन्मुख एक पाषाण पर

(शक सं० १०९५)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥

श्रीकान्तापीनवक्षोरुहगिरिशिखरोज्जृम्भमानं विशालं
लोकाग्रक्षापलोपप्रवणविलसितं वीरविद्विड् महीपा-
नेकव्यामुक्तसञ्जीवनबहुलितोद्यद्गुणस्तोममुक्ता-
नीकं निष्कण्टकं निश्चलमनलेसगुं होय्सलक्षत्र-
वंशं ॥ २ ॥

अदरोल्मौक्तिकदन्ते पुट्टिदनिलापालौघचूडामणि-
त्वदिनुद्यद्गुणशोभेयिं खरुचियिं सद्वृत्तराराजित-

त्वदिनत्युन्नतजातियिं समभमेनल्सङ्गामरङ्गाग्रदेश्
मदवद्वैरिकुलप्रतापिविनयादित्यं धराधीश्वरं ॥३॥
क ॥ विनयादित्यन तनयं
जननुतन एरेयङ्गभूभुजं तत्तनुभं।
विनुतं विष्णुनृपालं
मनस्वि तत्पत्यं नेग.. नरसिंहं ॥ ४ ॥
इ ॥ नतनरपाज्जजालक विशालविजृम्भितबालभासुरो-
द्धतितिज..... .. गलनाहवरङ्गरामनू-
र्जितनिजपुण्यपुञ्जवचसाधितसर्व्व.....
.....महोन्नतिकेविन्देसेवं नरसिंह भूभुजं ॥ ५ ॥
क ॥ आ-नरसिंहनृपाङ्गं
भूतुत पट्टमहादेवि तत्सतियादन्न ।
मानिनिय् एचल देवियं
दानगुणव्यानकल्पलतेयोल् आ.. ... ॥ ६ ॥
इ ॥ भवनाशीशने मुन्नवेन्नु मदने पुट्टिर्दना-विष्णुने
[illegible] नरसिंहक्षोणिपालन्नल् ए-
चलदेविप्रियेगं परात्पेरिनं पुण्याधिक पुट्टिदं
वद्वैरिकुलान्तक नयनुज बल्लाल भूपालक ॥ ७ ॥
[illegible] सानाभिख्यातवहनयशोभासुरं पुट्टिदं
भन्नृपभूषं गोवनङ्कोङ्कणपरसम्भव पन्नरं।
[illegible] गोवनाद कदनवदनाद् गोरवं पोन्दे के-
[illegible] वीरबल्लालरं ॥८॥

रिपुराजन्नाजिमम्पत्सरसिरुह शरत्कालसम्पूर्णचन्द्रं
रिपुभूपावारदांपप्रकरपटुतरोद्भूतभूरिप्रतापं ।
रिपुराजन्यौघ...रखलसौ.....लोमप्रतापं
रिपुपृथ्वीपालजाल क्षुभितयमनिवं वीरमल्लालदेव ॥६॥

स्वस्ति समधिगत पञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वरं । द्वारावती-पुरवराधीश्वरं । तुलुवलक्ष्मलदविलयानिलं । दायाददुर्ग्ग-दावानलं । पाण्ड्यकुलकुलक्षपरकुलिशदण्ड । गण्डभेरुण्डं । मण्डलिकवेण्टंकार । चोलकटकसूरेकार । सङ्गमभीम । कलि-कालकाम । सकलवन्दिजनमनस्मन्तर्पण प्रवणतरवितरणविनोदं । वामन्तिकादेवीलब्धवरप्रसादं । यादवकुलाम्बरैकमणि । मण्डलिकचूडामणि । कदनप्रचण्ड । मलपरोल् गण्ड नामादि प्रशस्तिसहितं । श्रीमत् त्रिभुवनमल्ल गङ्गकाडु-कोंगु-नङ्गलि-नोळम्बवाडि-पनवसे-हानुङ्गलगण्ड भुजबलवीरगङ्गप्रतापहो-य्सलवंशाभरणदेवरु दक्षिणमहीमण्डलमं दुष्टनिग्रह-शिष्टप्रतिपालन-पूर्वकं सुखसङ्कथाविनोददिं होरसमुद्रोळ् राज्यं गेय्युत्तिरे ॥
वत्तिसामहविष्णुभूपालपादपद्मोपजीवि ॥

६ ॥ तुतें लोकाम्बिकेय माते स्वजनक श्रीयवराजं यशो-न्वितं यो-पम्रसदेशि वल्लभे जगद्विख्यातपुण्याधिपं ।
सुतनी-श्रो नरसिंहदेवमखिवाधीशं जियाधीशनी-पितदेवं वनगेन्होर्ड विदिसनो श्रीहुल्लगण्डाधिपं ॥ १० ॥

७ ॥ जनकतनुजातंयिन्दं
वनजाक्षवननितेयिन्दवगलवेनिपल् ।

जननुत पद्मलदेवियर—

नूत-पवित्रतविनमनतुरंवियन्नं ॥ ११ ॥

वत्पुत्र ॥

विमुत-नयकीर्त्ति-मुनिपद-

वनरुहभृङ्गं विदग्धवनिताङ्गं ।

कनकाचलगुरुवनुङ्गं

घनवैरिमदेभसिंहनी-नरसिंह ॥ १२ ॥

स्वस्ति श्री मूलसङ्घनिलयमूलसम्भवं निरवद्यविद्यावल्लभं देशियगण गजेन्द्रमान्द्रमद्यधारावभासकं। परमतमतमुतादिसन्त्रासकं । पुस्तकगच्छलच्छसरसीसरोजविराजमानं। कोण्डकुन्दान्वयगगनदिवाकरं । गाम्भीर्य्यरत्नाकरं । तपश्श्रीचन्द्रमप्प गुणभद्रसिद्धान्तदेवर शिष्यर् महामण्डलाचार्य्य नयकीर्त्ति सिद्धान्तदेवरेन्तप्परेन्दडे ॥

वृ ॥ स्मरशलाम्बुजदण्डचण्डमदवेतण्डं दयासिन्धु

बन्धुरभूभृद्वरशुद्धमोहवहल्लाम्भोरासिकुम्भोद्भवं ।

धरेयोल्तां नेगल्दं भयक्षयकरं लोभारिशोभाहरं

स्थिरनो-श्री-नयकीर्त्तिदेवमुनिपं सिद्धान्तचक्रेश्वरं ॥१३॥

वच्छिष्यर् ॥

उरगेन्द्रक्षीरनीराकररजतगिरिश्रीसितच्छत्रगङ्गा-

हरहासैरावतेभस्फटिकवृषभशुभ्राभ्रनीहारहारा-

मरराजश्वेतपङ्केरुहहलधरवाक्शङ्खहंसेन्दुकुन्दो-

रकरचन्द्रकीर्त्तिकान्तं बुधजनविनुतं भानुकीर्त्ति-
व्रतीन्द्र ॥ १४ ॥

सिद्धान्तोदधवर्द्धिवर्द्धनविधौ शुक्लैकपक्षोद्गत-
स्तारानामधिपो जितस्मरशरः पारात्र्यपारङ्गतः ।
विख्यातो नयकीर्त्ति देवमुनिपश्रीपादपद्माश्रित-
स्स श्रीमान्भुवि भानुकीर्त्ति मुनिपो जीयादपाराब्धि॥१५॥

शक वर्षद १०६१ नेय विजयसवत्सरद पौष्यबहुल चौतिमङ्गलवारदन्दु उत्तरायण सङ्क्रान्तियन्दि भानुकीर्त्ति सिद्धान्त देवरनधिपतिगलागि माडि तद्गुरुगलप्प नयकीर्त्ति-सिद्धान्तचक्रवर्त्तिगलन्वयापूर्व्वक माडि ॥

पृ ॥ अचलग्रामुवगोम्मटेशविनुगे श्रीपार्श्वदेवङ्गवु-
द्भ-चतुर्व्विंशतितीर्थ्यकर्ग्गवेसवी-सत्पूजेगं भोगक्कं ।
रुचिरान्नोत्करदानक्कं मुददे विद्दं वेक्कनेम्बूरनु-
द्भ-चरित्र सले मेरुवुम्बिनेगवी-वन्नूरलभूपोत्तमं ॥ १६ ॥

क्रमदिं गोम्मटतीर्थपूजेगवशेषाहारदानक्कवु-
त्तमरं मुदयरनागि माडि विदित श्री भानुकीर्त्तीश्वरं ।
विमदङ्गं-नयकीर्त्ति-देवयतिगाकल्पं सकस्त्येक्कने
सुमनस्कं विनुतुम्बपं विडिगिदं श्री वीरयन्नालनिं ॥१७॥

ग्राम सीमे ॥ (यहाँ सीमा का वर्णन है) इदु वेक्कन चतुसीमे ॥ स्वदत्तां परदत्तां वा (इत्यादि)

[चन्नरायपट्टन १४६]

[लेख नं० १२४ के समान होय्सल वंश के परिचय व वीरबल्लाल-देव के प्रतापवर्णन के पश्चात् बल्लाल नरेश के दण्डाधिपति हुल्ल का परिचय है। हुल्ल यक्षराज और लोकाम्बिके के पुत्र थे। उनकी पत्नी का नाम पद्मलदेवी और पुत्र का नरसिंह सचिवाधीश था। हुल्ल जिन-पदभक्त थे। इसके पश्चात् कहा गया है कि उक्त तिथि को गुरुभद्र के शिष्य नयकीर्ति के शिष्य भानुकीर्त्ति मुनीन्द्र को बल्लाल नरेश ने पार्श्व और चतुर्विंशति तीर्थंकर के पूजन के हेतु मारदहलि ग्राम का दान दिया। इसके कुछ पश्चात् हुल्लप ने बल्लालदेव से येरेक ग्राम का भी दान दिलवाया।]

४९२

हले बेलगोल में ध्वंस बस्ती के समीप एक पाषाण पर

(शक सं० १०१५)

भद्रमस्तु जिनशासनाय सम्पद्यतां प्रतिविधानहेतवे।
अन्यवादिमदहस्तिमल्लकरस्फाटनाय घटने पटीयसे ॥ १ ॥

स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय-श्री-पृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वरपरमभट्टारक सत्याश्रयकुलतिलक चालुक्याभरण श्रीमत् त्रिभुवन-मल्लदेवर राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कं सलुत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि। समधिगतपञ्चमहाशब्द महा-मण्डलेश्वर द्वारावतीपुरवराधीश्वर यादवकुलाम्बरद्युमणि

सम्यक्त्वचूडामणि मल्लपरोल्गण्डायनेकनामावलीसमालङ्कृत श्रीमत्
त्रिभुवनमल्ल-विनयादित्य-पोय्सलं ॥

श्रीमदादर्हत्परमेष्ठिनमणि- धोतीश्वरचामणि-
स्लेष्मसीहामणिर्नरश्वरशिर-प्रोन्मुद्रद्रत्नमणिः ।
जीवाप्तोक्तिपवेदवर्त्मगमणिर्लोकैकचिन्तामणि-
श्रीविष्णुर्विनयान्वितो गुणमणिः सम्यक्त्वचूडामणिः
॥ २ ॥

एरेद मनुजङ्के सुरभू-
मिरुहं शरदिन्दुबिम्बं कुलिशागारं ।
परवनितेगनिलयनेयं
धुरदोल्पोगर्दङ्के मिसुं विनयादित्यं ॥ ३ ॥

रक्कस-पोय्सलनेम्बा-
रक्करमं वरेदु पटमनत्तिदडिदिरालू ।
लक्कद मनमेक्कदं मद-
वक्कं निन्दपुवे समरमहृदयदोल् ॥ ४ ॥

बलिदङ्के मलेदङ्के मल्लपर
बलेयोल्बालिदुवनुद्दिमभयरसवसदि ।
बलियद मलेवद मल्लपर
बलेयोल्कैयिदुवनोडने विनयादित्यं ॥ ५ ॥

आ-पोय्सलभूपङ्के म-
हापालकुमारनिकरचूडारत्न ।

श्रीपति निजभुजविजय-म-
हीपति जनियिसिदनदटन **एरेयङ्ग** नृपं ॥ ६ ॥

वृत्त ॥ अनुपमकीर्त्ति मूरेनेय मारुति नाल्कनेयुग्रबहियय्-
देनेयसमुद्रमारेनेय पूगणेयेलनेयुर्व्वैरशनेय्
टनेय कुलाद्रियोम्भतनेयुद्दममेवहस्ति पत्तेने-
य निधानमूर्त्तियेनें पोल्लवरार् **एरेयङ्ग**देवनं ॥ ७ ॥

अरिपुरदोल्धगद्धगिलु धन्धगिलेम्बुदराति-भू...
र शिरदोलु...ठगिल्ठ .....एम्बुदु वरिभूतले-
श्वरकरुलोलु चिमिलिचमिचिमिलिचमिलेम्बुदु...पलिहि दु-
र्द्धरतरमेन्दोडल्कुरदं पोलुवराम्मलेराजराजनं ॥ ८ ॥

कन्द ॥ मुरिपुव पिडिव चक्रद
हतिगं केसरिगमा-फणिध्वंसिय वि-
स्फुरितनखहतिग**मेरेगन**
करवालगमिदिर्च्चि वर्द्दुङ्कचार्प्परुमोलरं ॥ ९ ॥

इर्म्मडि दधीचिमुनिगे प-
दिर्म्मडि गुप्तगे चारुदत्तगतल् ।
नूर्म्मडि रविसूनुगे सा-
सिर्म्मडि मेलु दानगुणदिन् **एरेयङ्ग**नृपं ॥ १० ॥

आ-महामण्डलेश्वरन गुरुगलेन्तप्परेन्दडे ॥

श्लोक ॥ श्रीमतो वर्द्धमानस्य वर्द्धमानस्य शासने ।
श्रीकोरण्डकुन्दनामाभून्मूलसङ्घमणी [गणी] ॥ ११ ॥
तस्यान्वयेऽजनि ख्याते विख्याते देशिके गणे ।

गुणी देवेन्द्र सैद्धान्तदेवो देवेन्द्रवन्दितः ॥ १२ ॥
जयति चतुर्मुखदेवो वाणीरमणहृदयवनजवनदिननाथः ।
मदनमदकुम्भिकुम्भस्थलदलनोन्मथपटिष्ठनिष्ठुरसिंहः ॥१३॥
तच्छिष्यो गोपनन्द्याख्यो बभूव भुवनस्तुतः ।
वाणीमुखाम्बुजालोकभास्करिप्पुनखिलदर्पणः ॥ १४ ॥
जयति भुवि गोपनन्दी जिनमतनलसञ्जनधितुहिनकरः ।
देशियगणाग्रगण्यो भव्याम्बुजखण्डखण्डकरः ॥ १५ ॥
इष ॥ पुट्टवर्णोभिरामनभिमानसुवर्णधराधरं तपो-
महत्तलक्ष्मिमवल्लभनिक्षतवन्दित गोपनन्दिया-
वद्दुध-राध्यमप्प पलकालदे निन्द जिनेन्द्रधर्म्मम
गद्दनृपालवन्दित विभूतिय रूढियनेय्दे माडिदं ॥१६॥
जिनपादाम्भोजभृङ्गं मदनमदहरं कर्म्मनिर्म्मूलनं वा-
ग्वनिताचित्तप्रियं वादिकुलकुधरवज्रायुधं चारु विद्व-
ज्जनदाग्रं भव्यचिन्तामणि सकलकलाकोविदं काव्यकला-
मननन्तानन्तदिन्दं पोगल्ते नेगल्दनी-गोपनन्दि-
व्रतीन्द्रं ॥ १७ ॥
मलेयदे साद्वय मट्टमिक भौतिक पोल्लि कडल्लि वागदि-
र्पोल तोल बुद्ध वाद तर्कदोरदे वैष्णव ब्रह्मकु वा-
गभरद पाडप्पु वेद गड चार्व्वक चार्व्वक निम्म दर्पमं
सलिपने गोपनन्दिमुनि पुट्टवनेम्ब मदान्धसिन्धुरं ॥१८॥
तर्कयल् जैमिनि तिण्णिकेण्डु परियल्वैशेषिकं पोगदु-
ण्डिगं योगत्समुगतं कडल्लि वल्लेगायल् श्रुतपादं विडल् ।

श्रीपति निजभुजविजय-म-
हीपति जनियिसिदनदटन् एरेयङ्ग नृपं ॥ ६ ॥

वृत्त ॥ अनुपमकीर्त्ति मूरनेय मारुति नाल्कनेयुपद्रविष्-
देनेयसमुद्रमारनेय पूगणेयेलनेयुर्व्वरिशनेष्
टनेय कुलाद्रियाम्मतनेयुद्दममेवहस्ति पत्तने-
य निधानमूर्त्तियेने पोल्बवरार् एरेयङ्गदेवनं ॥ ७ ॥

अरिपुरदोल्धगङ्गगिलु धन्यगिलेम्बुदराति-भू...
र शिरदोलु...ठगिल्ठ .....एम्बुदु वरिभूतले-
श्वरकरुलोलु चिमिलिचमिचिमिलिचमिचेम्बुदु...पलिदि ई
द्धरतरमेन्दोडल्कुरदं पोलुवराम्मलेराजराजनं ॥ ८ ॥

कन्द ॥ मुररिपुव पिडिव चक्रद
हतिगं केसरिगमा-फणिध्वंसिय वि-
स्फुरितनखहतिगमेरेगन
करवाल्गमिदिर्किचे वर्दुङ्कुवार्प्पलमोलरे ॥ ९ ॥

इर्म्मडि दधीचिमुनिगे प-
दिर्म्मडि गुप्तगे चारुदत्तगत्तल् ।
नुर्म्मडि रविसुनुगे सा-
सिर्म्मडि मेलु दानगुणदिन् एरेयङ्गनृपं ॥ १० ॥

आ-महामण्डलेश्वरन गुरुगलेन्तप्परेन्दडे ॥

श्लोक ॥ श्रीमतो वर्द्धमानस्य वर्द्धमानस्य शासने ।
श्रीकोण्डकुन्दनामाभून्मूलसङ्घामणी [गणी] ॥ ११ ॥
तस्यान्वयेऽजनि ख्याते विख्याते देशिके गणे ।

गुप्तो देवेन्द्र सैद्धान्तदेवो देवेन्द्रवन्दितः ॥ १२ ॥
जयति चतुर्मुखदेवो योगीश्वरहृदयवनजवनदिननाथः ।
मदनमदकुम्भिकुम्भस्थलदलनोल्बणपटिष्ठनिष्ठुरसिंहः ॥१३॥
तच्छिष्यो गोपनन्द्याख्यो बभूव भुवनस्तुतः ।
कार्त्तीमुखाम्बुजालोकभाजिष्णुमतिदर्पणः ॥ १४ ॥
जयति भुवि गोपनन्दी जिनमतजलराशिवृद्धिहिमकरः ।
दीक्षितगणाग्रगण्यो भव्याम्बुजखण्डखण्डकरः ॥ १५ ॥

इस ॥ पुट्टवसोलिरामनभिमानसुवर्म्मधराधरं तपो-
महकल्लोलिमवल्लभनिलालवन्दित गोपनन्दिया-
वद्रम-साध्यमप्प पलकालदे निन्द जिनेन्द्रधर्म्मं
गट्टनुपालरिन्दिन विभूतिय रूढियनेय्दे माडिदं ॥१६॥
जिनपादाम्भोजभृङ्गं मदनमदहरं कर्म्मनिर्म्मूलनं वा-
ग्वनितालिङ्गनप्रियं वादिकुलकुधरवज्रायुधं चारु विदु-
ज्जनपात्रं भव्यचिन्तामणि सकलकलाकोविदं काव्यकला-
मनजन्तानन्ददिन्दं पोगल्ते नेगल्दनी-गोपनन्दि-
व्रतीन्द्रं ॥ १७ ॥
मल्लेयदे साद्वर मट्टमिरु भौतिक पोद्दि कडङ्गि वागदि-
र्शोल सेंड्ड बुद्ध बौद्ध तलेदोरदे वैष्णव बङ्गडङ्गु वा-
ग्भरद पोडप्पु वेड्ड गड चार्व्वक चार्व्वक निम्म दर्प्पमं
सलिपलें गोपनन्दिमुनि पुट्टुवनेम्ब मदान्धसिन्धुरं ॥१८॥
वगेयल् जैमिनि तिप्पिकोण्डु परियल्वैशेषिकं पोगदु-
ण्डिगं योसल्सुगतं कडङ्गि वलगोयल्क् अक्षपादं बिडल् ।

पुरे लोकायतनेऽरे साङ्ग नक्षसहस्रम्म पट्टक
विगलोल्लूण्डित गोपनन्दिरिगिमलोद्भासि-
स्पर्शपुरे ॥ १
शिव मुद्धिवन्यवादिमुल्लमुद्रितनुद्धवादिवादिगजं-
केसरायवादरण्डनपरान्यमवान्धकुवादिदैत्यभू-
र्जटिकुविनयमेयमदवादिभयङ्करनेन्दु वण्डुवे
दुडुपदुपोल विरुदमनंदिवनु वादपदु गोपनन्दि ॥ २
रामतपोनिधान वसुधैकबन्धुत्व जैनशासना-
म्बरपरिपूर्णचन्द्र सकलागमतत्वपदार्थसाक्षि-
मतनामधेयराम गुणरत्नभूषण गोपनन्दि
भावनिलोकरक्ष वादनतिशंके गाधनिधानगामदाम् ॥ ३
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

(स्वदत्तां परदत्तां वा—इत्यादि श्लोकों के पश्चात्)

श्रीमन्महाप्रधान हिरिय दण्डाधिप... .....मव्यङ्के.....

.. ..

[चन्नरायपट्टन १४८]

[इस लेख में होयसल नरेश विनयादित्य और उनके पुत्र एरेयङ्ग की कीर्ति के पश्चात् कहा गया है कि त्रिभुवनमल्ल एरेयङ्ग ने उक्त तिथि को कडवप्पु पर्वत की वस्तियों के जीर्णोद्धार तथा आहारदान व वर्तन वस्त्र आदि के लिए अपने गुरु मूलसंघ देसीगण कुन्दकुन्दान्वय के देवेन्द्रसैद्धान्तिक व चतुर्मुखदेव के शिष्य, गोपनन्दि पण्डितदेव को राचनहल्ल व कल्लोल १२ का दान दिया। लेख में गोपनन्दि आचार्य की यह कीर्ति वर्णित है। उन्होंने जो जैनधर्म स्थगित हो गया था उसको गङ्गनरेशों की सहायता से विभूति बढ़ाई। उन्होंने माङ्गल्य, भौतिक, वैशेषिक, बौद्ध, वैष्णव, चार्वाक जैमिनि आदि सिद्धान्तवादियों को परास्त किया इत्यादि।]

४९२

चल्लग्राम के वरिरेदेव मन्दिर में एक पाषाण पर

(शक सं० १०४७)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥

स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वर द्वारावती-पुरवरेश्वर यादवकुलाम्बरद्युमणि सम्यक्त्वचूडामणि मल्लप-

रोलु गण्डनुद्दण्डमण्डलिकशिरोगिरिवज्रदण्ड तलकाडुगोण्ड वीर-विष्णुवर्द्धनदेवनातनन्वयक्रम यदुमोदलाहनेकराज सन्तानकदि यलिक्के ॥

यदुकुलकुलाद्रिशिखरदोल्
उदियिसिद दुर्निरीक्षतेजोद्दत स-
मदरातिराजमण्डल-
नुदात्तगुणरत्नवार्द्धि विनयादित्य ॥ २ ॥
आतन तनय सकल-म-
हीतल साम्राज्य लक्ष्मियुं तनगेऽ-
श्वेतातपत्रमागे पु-
रातननृपरोलगे वन्दन एरेयङ्ग नृपं ॥ ३ ॥
आ-विभुगे नेगर्द् एचल-
देविगमादसूनुभवर्ब्बल्लाल-
श्रीविष्णुवर्द्धन-
राविङ्कपनिधिगलनुज्जन उदयादित्य ॥ ४ ॥
नेनेयल्वापक्षयं नोडिदोडभिमत ससिद्धि सद्भक्तिविनं
मनमोल्दाराधिसल्काप्तुळवदादवनेवेल्दुदेम्बन्नेगम्पु-
त्रिन पुण्य वीरप्पा-नप्पननुपरोलन्यूननाद प्रतापा-
नसत्यत्यागयोषापरयपरिणत वीरविष्णुक्षितीश ॥५॥
• निर वद्यचरित्रधर्मान्वितनरनिप महाक्षत्रियश्रीकरोल्ला-
सरमुत्र श्रीदिनीपं दशरथतनय कृष्णराज वलिक्का-

• यहाँ एक पंक्ति का कमी है

वर सादरयक्के बन्दं यदुकुलतिलकं वीर विष्णु क्षितीशं ॥६॥
अदियमनेडिसेटमने रोडिसि कल्तु नृसिंहधर्म्मनेडिदनवनेटमं गुणिसि चेड्डिरि चेड्डिरियछि कल्तु कोण्डदिन कोङ्गरा-नेगर्द कोङ्गरनीचिसि पाण्ड्यनेडिदं यदुतिलकङ्गे विष्णुधरणीपतिगोडदरार्द्दरित्तियेल् ॥ ७ ॥
व ॥ अन्तदियमनदटलेदु नृसिंहधर्म्मसिद्धमं कदनदोलेच्चट्टि वैरिगल शिरोगिरिगलं दोर्दण्डवज्रदण्डदिन्दलरे पोरदु कल्ल पाल कुलमं कलकुलं माडि बगुल्दङ्गरन सम्राङ्गमुमनेलकुलिगोण्डु दक्षिणसमुद्रतीरं वरं समस्तभूमियुमने रक्षत्रछायेयिं प्रतिपालिसुत्तं सन्तवनपुरदोलसुखसङ्कथाविनोददिं राज्यं गेदनुत्तमिरं ॥

श्रीवीरविष्णुवर्द्धन-
देवं पटतर्क्कण्मुल्ल श्रीपाल-
त्रैविद्यव्रतिगी-त्रै-
नावसतमनधिकभक्तियिं माडिसिदं ॥ ८ ॥
पोसलेनें वा माडिसिदी-
वमदियुमं बाडमिदरमम्बन्धियेन-
रक्कसेवा.....
वमदियुमं वीर्य्यदलि कोट्टं मुददि ॥ ९ ॥
आकुलतिलकङ्गे गुरुकुलमाद श्रीमद्द्रमिणगणद नन्दिसङ्घद-रुङ्गुलान्वयदाचार्य्यावलियेन्तेन्दोडे ॥
क्रम इ...महावीर-

स्वामिय तीर्थंकर्के गौतमगणधरर्ग्गं ।

आ-मुनिपि वलिकार म-

हा-महि मरेनि..... ..... ॥ १० ॥

श्रुतकेवलिगलु पत्तवरु-

मनोतरादित्यनिक्कं वर्द्धमानो-

क्तियं समन्तभद्र-

प्रतिपर्त्तयंवरु समस्तविद्यानिधिगलु ॥ ११ ॥

अवरि वलिक्कम एकसन्धि-भुमसि-भट्टारकरवरि वलिक्कं वादीभसिंह श्रीमदकलङ्कदेवरवरि वक्रग्रीवाचार्य्यरवरि श्रीणन्दाचार्य्य . यक्कं राद्धवामुदवि सिंहनन्द्याचार्य्य-रवरि श्रीपालभट्टारकरवरि श्रीकनकसेन वादिराज-देव-रवरि वलिक्कं ॥

इवर ख्या .नेक्कं म...मनिलुमिसु...प्रभा-सं-

हतिविन्दे वस्तुतिर्प्पर्द्धनद्.. अधिकमे-

रिदं किञ्चित्करकिञ्चिन्न्यूनमेन्दु.....

... ..नोप्पद... . जगत्पूतमाश्चर्य्यभूतं ॥ १२ ॥

अवरि श्रीविजयर्भुवनविनूतरु शान्तिदेवर वरिं.....

वनद..... ■ व्रतिपरु ॥

आ-पुष्पसेन सिद्धान्तदेवरि वलिक ॥

गतसर्व्वाभिमानंसुगतनपगताप्रमादं कषादं

कृत..... ..... - पादा-

नतनादं मर्त्यमात्रङ्गल नुडिगलोल...नेनसल्पर्व्वि लोकां-

अतनाऽर्हन्मताम्भोनिधिविधुविभवं **वादिराज**...॥१३॥

.....**शान्तिषेणा**रवरवरिं बलिक्क ॥

पेरतें सप्तर्द्धि यिं सम्भविकुमोदवुगुं प्रातिहार्य्यङ्गलेल्लं
नेरदिर्क्कुं रोतियिन्दे-समवसितियुमी-कट्टकालप्रभावं ।
पेरपिङ्गल्की-महायोगियोलेने तपमुं योग्यतालक्ष्मियुं कण्-
डेरेदन्ताग्गिप्पुदिन्दन्दनुपममपरातीतदिव्यप्रभावं ॥ १४ ॥

कन्तुवनान्तुमेटदे...यदोडिसि दुर्म्मदकर्म्मवैरि-वि-
क्रान्तमनेटदे लङ्घिसि महापुरमाग दि ।
...ना-तीर्थनाथरेनं रूढियनान्त **कुमारसेन** सै-
द्धान्तिकरादमुज्जलिसिदग्गिर्जनधर्म्मयशोविकासमं ॥ १५ ॥

मल्लं सन्द योग्यतेय... ....
.. म्मेसेद दुर्द्धरतपोविभूतिय पेम्पि ।
कलियुगगणधरेम्बुदु
नेम्मनेल्ल **भल्लिषेण** मलधारिगळं ॥ १६ ॥

इगस्याद्वादभूभृद्भुवनतुपमघट्-तर्क्कभास्वन्नरम्पा-
ग्रेसहर्प्पान्धवादिद्विरदघटेयं विक्रमश्रीदियिन्दं ।
विद्यासिंहीरतिव्याप्तियोलु सुखियिसुत्तिर्प्पुदु वत्साहदि प्रे-
विय-**श्रीपाल**-योगीश्वरनेनिप महावादिमत्तेभसिंहं
॥१७॥

भावन विषयमो षट्त-
र्क्कावलिवल्लभङ्गिसङ्गवं **श्रीपाल**-

त्रैविद्यगद्यपद्य-व-

चोविन्यासं निसर्गविजयविलास ॥ १८ ॥

तमगाज्ञावशमादुदुन्नतमहीभृत्कोटि वि-

प्पमर्दच्चो-धरेगेय्दे तम्म मुखदोल्पट्-तर्क्कवारासि-कि-

ञ्चममापोशनमात्रमादुदेनलीमातेनगस्त्य प्रभा-

वमुमं कोल्पडिसित्तु पेम्पि...श्रीपाल-योगीन्द्रनं॥१९॥

वर्गलागद सूचित-

मार्गोपन्यासदलवु मार्कोल्लल्लन्ता-

भर्गाङ्गमरिदेनल्के नि-

र्गलमादत्त ..चोर्य्यं व्रतियोल् ॥ २० ॥

इन्तु निरवद्यस्याद्वादभूषणरुं गणपोषणसमेतरमागि वादी-

भसिंह वादिकोलाहल तार्किकचक्रवर्त्तियेन्द निजान्वयनामङ्गल-

नोल्लकोण्डु अन्वयनिवारकरुं श्रीमदकलङ्क-मतावलम्बनरं

षट्तर्कपण्मुखरमसारसंसारव्यापारपराङ्मुखरमाद श्रीपाल

त्रैविद्यदेवर्मों ॥

शल्यत्रयरहितर्गा-

शल्यग्रामनुपमं कोदूरिनृपङ्-

शल्यं सकलकलान्वय-

कल्यं श्रीविष्णुभक्तियं तां मेरेदं ॥ २१ ॥

अन्तो-वसदिय खण्डस्फुटितशीर्णोद्धारकर्मी-सम्बन्धि

रिषिमुखायदाहारदानर्क्कं कच्चिगोण्ड वीरगङ्ग विष्णुवर्द्धन

पोय्सलदेवं सकवर्ष १०४७ नेयिवेसरद वर्षाकालदल्लि

कादेरो वीरद हुडे यहोन्नेयनु शल्यदुरुवं तोर्त्तदल्लि तम्म बम-दियुं श्रीपालत्रैविद्यदेवर्ंगे कैयारे येरेदु श्रीवीर-विष्णु-वर्द्धनं कोट्टिदूर सीमा सम्बन्धमेन्तेन्दोडे (यहाँ सीमा का वर्णन है) इन्तीचतुस्सीमेयिन्दोळगुळद सर्व्वबाधापरिहारमागि बिट्टु कोट्ट श्री वीरविष्णुवर्द्धनदेवं कोट्ट श्रीपाल त्रैविद्य-देवर तम्म माडिसिद होय्सल जिनालयके बिट्ट वलवृत्ति वेल्दले पूर मुन्दण हादरिवाडोळगागि मत्तर नाल्कु प्रतिकेरेयुं हिरियकेरेय केळगे गद्दे मळगे एरु तोप्प श्रीन्दु देवाङ्गद केरे वोळगागि चतुस्सीमेयुं वसदिगं माडि बिट्टु कोट्ट भूमि विदर सीमे मुळलु केमरकेरेगिन्दि मण्ण हुल्ल तंदु होन्नमरके होद कट्टे हदुव हिरियकेरेयोळगेरे बदग होन्नेमरक्के होद होन्नेय कट्टे।

[चन्नरायपट्टन १४१]

[इस लेख में होय्सल वंश के विनयादित्य, एरेयङ्ग और विष्णुवर्द्धन के प्रताप-वर्णन के पश्चात् कहा गया है कि विष्णुवर्द्धन पोय्सळदेव ने एक तिथि को वसतियों के जीर्णोद्धार तथा ऋषियों को आहारदान के लिए श्रीपालत्रैविद्यदेव को हल्ल नामक ग्राम का दान दिया। श्रीपाल त्रैविद्यदेव द्रमिल संघ व अरुङ्गलान्वय के आचार्य थे। इस अन्वय की परम्परा इस प्रकार दी हुई है। महावीर स्वामी के पश्चात् गौतम गणधर हुए। फिर कई श्रुतकेवलियों के पश्चात् समन्तभद्र प्रतीप हुए। उनके पश्चात् क्रम से एकसंधिसुमति भट्टारक, वादीभसिंह अकलङ्कदेव, वक्रग्रीवाचार्य, श्रीनन्दाचार्य, सिंहनन्दाचार्य, श्रीपाल भट्टारक, कनकसेन, वादिराजदेव, श्रीविजय, शान्तिदेव, पुष्पसेनसिद्धान्त-देव, वादिराज, शान्तिसेनदेव, कुमारसेन सैद्धान्तिक, मल्लिषेण मल्लधारि

हेसरुच्चङ्गियकोटेय-

नसदृशभुजबलदे मुन्ने कोण्डरसुगक्षा-

रसहायशूरशनिवा-

रसिद्धिगिरिदुर्गमल्लबल्लालनवोल् ॥ १० ॥

एकाङ्गवीर शूद्रक-

नाकारमनोजनत्थैसुरवरु तुरगा-

नीक-वर-वत्स-राजन-

नेकपभगदत्तनस्ते बल्लालनृपं ॥ ११ ॥

गद्य ॥ स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वरं । द्वारावती पुरवराधीश्वरं । तुलुव बलजलधि बडवानलं । पाण्डव-कुलदावानलं । मण्डलिकयेण्टकारं खोलकटकसूरेकारं । वामन्तिकादेवीलब्धवरप्रसाद । वितरणविनोदं । यादव-कुलाम्बरद्युमणि । मण्डलिकमुकुटचूडामणि । अप्रहाय शूर नृपगुणाधारं । शनिवारसिद्धि । सद्धर्मबुद्धि । गिरि-दुर्गमल्ल । रिपुक्षयसेन । परशुरामं । रणरङ्गभीम । कदनप्रचण्ड । मल्लपरोल्लगण्ड नामादिप्रशस्तिसहितं फाल्गुनशुक्लपक्षदलु नोळम्बवाडि धनवासेहानुक्लोगण्ड भुजबलवीरगङ्गप्रवापदोरसमुद्र बल्लालदेवरं शिवमहीमण्डलं सद्धर्मं परिपालिसुत्तं दोरसमुद्र नेल्लेयोळिनोन्तुसुखदुद्वा-विनोदं राज्यं गेय्युत्तमिरे तत्पाद पद्मोपजीवि ॥

भरतागमवन्द्य-

करणोपनिषत्सुराधनाटककाव्यो-

रूरविदुज्जनमुखनेनिष-
श्रियपुष्पं चन्द्रमौलिमन्त्रिप्रणमं ॥ १२ ॥
मुखमृणालनृपालदलिखनुजाहण्डं पदःपूरदा-
रमुखारकटिकन्दुकुन्दकमनीयायपयोराशिरे-
शिरदिवकनपारपुष्पनिवयं निरसेदविदुज्जन-
मुखनर्पो-विमुखचन्द्रमौलिसपिर्यं धन्यं वेरर्दन्यरं
॥ १३ ॥
श्रा-चन्द्रमौलिगणिप्रक-
श्रापमुद्रुनकीर्तिगणदरविभर-
द्वाधाम्बिकं गुणवतिं ग-
दाधारमंते स्थिरवलभेयादल् ॥ १४ ॥
हरिणीलोचने पद्मानने घनपाविघनाभोगधा-
मुर बिम्बाधरं कोकिलस्वने सुगन्धश्वासे चम्पकतनू-
दरि मृद्वालिनीलकेशे कलहंसीयाने सत्कम्बुक-
न्धरेपद्मालयेदेवि कन्तु सतियं सौन्दर्य्यदिन्दिलिपल्
॥१५॥
त्रिभुवनै ॥ सुकविसुरतरुश्रिचंचना-
यक चन्द्राम्बिकेय मगलेनिप सेवय ना-
यकनव्य तावि यादा-
म्बिकं देशिदण्डनायकं तिरियण्णं ॥ १६ ॥
भयलोभदुर्क्षभ सम्मेय-
नायकनिष्टुकीर्सि किरियण्णं मा-

रेयनायकं भगिनि च-
लियब्बरसि कामदेवनणुगिन तम्मं ॥ १७ ॥

भूविनुतनात्मजातं
सेवण्णं चन्द्रमौलि पति तनगं कला-
कोविदनेन्दन्दाचल-
देवियवोल्नोन्त सवियरार्व्वसुमतियोल् ॥ १८ ॥

गौरितपङ्गलं नेगल्दुतुं नेरेदल्गड चन्द्रमौलियं-
ल्लारियर्गिन्नवे सोवगु पेल्पलवुं भवदोल्निरन्तरम्
सारतपङ्गलं पडेदु ताम्नेरेदं गड चन्द्रमौलिग-
म्भीरयेनिप्प तन्नेनिपाचलेवोल्सोवगिङ्गे नोन्तरार्
॥१९॥

तद्गुरुकुल श्रीमूलसङ्घ देशियगण पुस्तकगच्छ कोण्ड-
कुन्दान्वयदोल् ॥

क ॥ विदित गुणचन्द्रसिद्धा-
न्तदेव सुवनात्मवेदि परमतभूभृ-
द्विदुर नयकीर्त्तिसिद्धा-
न्तदेवनेसेदं मुनीन्द्रनपगतवन्द्यं ॥ २० ॥

परमागमवारिधिहिम-
किरणं राद्धान्तचक्रिनयकीर्त्तियमी-
श्वरशिष्यनमलनिजचि-
त्परिणतनध्यात्मिबालचन्द्र मुनीन्द्रं ॥ २१ ॥

भार्दि देवगुरु श्रीमंदाल् जिनपतिशोभमवंदेवाद्रव-
न्दिरमं माडिसिदंदिनूत नयकीर्त्तिब्रतींद्रांगिन्द्र-
भाषुरशिष्यासम बालचन्द्रमुनिपादाम्भोजिनीलले सु-
स्थिरदप्पावदेवि कीर्त्तिविसरशाखके मद्भुविय
॥ २२ ॥

ष ॥ शकवर्षद मासिरदनूरनाल्कनेय प्लवसंवत्सरद पौष-
शुक्लदरिगे गुरुवारदुत्तरायणसंक्रान्तियन्दु ॥

ए ॥ श्रीवनिता चन्द्रमौलिसविधं निजयशनेसाचिक्कुना-
शोभगुणालि माडिसिद पार्श्वजिनेश्वरगेहदुद्भपू-
जानिगं देवं धर्म्मयनहळियनिसनुदारि वीर-ध-
ल्लालनृपालकं वसुमतिवनुमुन्निनमेरदे सलिसले
॥ २३ ॥

वदवनिपनिष्ठ दर्शय-
नदनाधसे बालचन्द्रमुनिराजरा-
पदयुगमं पूजिसि चतु-
रदधिवरं निमिरे कीर्ति जिनपतिगिपल् ॥ २४ ॥

अन्तु धारापूर्व्वकमागि कोट्ट वद्दामसीमे (यहां तीन पंक्तियों में सीमा आदि का वर्णन है)

आमन्महामण्डलाचार्य्यनयकीर्त्तिदेवर धर्म्मयनहळियलु कम्बेयगद्दियं माडिसि श्रीपार्श्वनाथप्रतिष्ठेयं माडि देवरष्ट-विधार्च्चनेगे सोमसमुद्र कोरेय कोट्टगे मोदलेरियल्लि गद्दे सलगे येरडु वडगण दाडिनलु वेदलु नानूरुवं नयकीर्त्तिदेवर मारेय

नायकन मग सेवण्णनु गौड गौडनोलगाद प्रजेगलुं आचन्द्रार्क
वर सल्वन्तागि बिट्ट दत्तिमङ्गल महा श्री ॥

[चन्नरायपट्टण १२०]

[इस लेख में लेख नं० २६ के समान होय्सळ वंश की प्रशंसा व लेख नं० १२४ के समान होय्सळनरेशों का बल्लाळदेव तक। बल्लाळदेव के मंत्री चट्टमौळि और उनकी धर्मपत्नी आचळदेवी के दान आदि का वर्णन है। तत्पश्चात् कहा गया है कि आचळदेवी ने बड़ी भक्ति से बेल्गुळ तीर्थ पर पार्श्वनाथ मन्दिर निर्माण कराया और इसके लिए बल्लाळदेव से बम्मेयनहळि ग्राम मोल ले कर उसे अपने गुरु नयकीर्ति सिद्धान्तदेव के शिष्य माळचन्द्रमुनि की पादपूजा कर इस मन्दिर को दान कर दिया।

लेख के अन्तभाग में उल्लेख है कि महामण्डलाचार्य नयकीर्ति ने बम्मेयनहळि में एक नई बस्ती निर्माण कराई और उसमें पार्श्वनाथ की प्रतिष्ठा की और कुछ भूमि का दान दिया।]

४९५

कुम्बेन हळ्ळि ग्राम में आञ्जनेय मन्दिर के समीप एक पाषाण पर

(लगभग शक सं० ११२२)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥
नमोऽस्तु ॥

श्रीपतिभन्मदिन्दमेव यादवर्वंशदोळाद वर्षियो-
र्व्वीपतियप्पनोळ्वें मलनेन्द नृपं बोम्मिदेवं कान-

आसपास के ग्रामों के अभिलेख

पिवनन्दनाख्यं मुनि पोयसलवंशरत्नं पोय्सु गहु वि-
ख्यातियतो नगरत्तवंशगल पोय्सलवंश नामदि ॥२॥

विनयादित्यनृपालन
तनुजनेरेयङ्गभूपालन पुत्रं ।
कनकाचलांतरं वि-
ष्णुगुपाल...तनात्मजं ॥ ३ ॥
... यं परकल-मं-
दोरलमाप्रायं क्षितिय ... ।
रवंताववत्रनाग पु-
।।लन नूतनोद्धिसिद...वन्द्रासनपूर्व ॥ ४ ॥
एवत्र गुरुवनाख्यं वादिराज स्वयंकृतः ।
तदेव गौरवं तत्र पुरावामुपसिः कथं ॥ ५ ॥
सर्वं परन्द योग्यतोयन-
र्गाभिषिद दुर्धरवंशविभूतिय वेण्वं ।
कविगुणगणधरंम्बुदु
जगत्तं मल्लिषेणमलधारिगलं ॥ ६ ॥
समगाप्रावणमादुदुनतमहीभृत्कोटि सम्मिन्दं वि-
ष्यमर्दनं-परनेम्दं तम्म गुप्तदोल्पट्टतर्वारासिवि-
भ्रममपोगानमात्रमादुदनदि मातेनाल्यप्रभा-
वमुमं कोल्पडिसिद्धु पेम्पिनेसकं श्रीपालयोगीन्द्रना॥७॥
अवरमशिष्यर श्री वादिराजदेवर तम्म सत्यद पुण्येयन
दृढियदु तम्म गुरुगलिगे परोक्षविनयमागि परवादिमल्लजिनाल

यमेन्दु कन्नेवसदियं माडिसि देवरष्टविधार्च्चनेगं आहारदान हिरियकेरेय गोडियहल्लिगद्दे मज्जगे एरडु कोलग इत्तु मत्ति वो विट्टि सेट्टियकेरेयुं अवर केलद बेदले सलल एरडुवं सर्व्वबाध परिहारमागि विट्ट दत्ति ॥

(स्वदत्तां परदत्तां आदि श्लोक)

श्रीमन्महाप्रधानं सर्व्वाधिकारि तन्त्राधिष्ठायके कम्मट माचय्यनुं माव बलय्यनुं देवर नन्दादीपिगेगे गाजद सुङ्क विट्टरु ॥ कण्डवनायकन मदवलिगे राचवेनायकितिय मग कुन्दाडहेग्गडे नयकरदेवर वेसदि माडिसिद बसदि ॥ स्वस्ति श्रीमन्महाप्रधान सर्व्वाधिकारि हिरियभण्डारि हुल्लपय्यल मेनुत अधाध्यक्षद हेग्गडे हरियण्णं कुम्बेयनहोलय देवर माडिसि कोट्ट ॥

ओपाल श्रीविजयदेवर शिष्यर परद शान्तिसिद्ध पण्डित-र्गेयु अवर पुत्र परवादिमल्ल पण्डितर्गेयुं अवर तम्म उमेदवारर आतन तम्म वादिराजदेवर्ग्गं वादिराजदेवर पारम्पर्य्यं माडि कोट्ट ॥

[अवशिष्ट १९]

[इस लेख में पूर्वोक्त श्रीविजयदेव तक होय्सल वंश के वंश के पश्चात् वादिराज मल्लिषेण मलधारि की शिष्य का वर्णन है और जिन वर्द्धमान के अन्वेता श्रीपाल त्रैविद्य का उल्लेख है। इन्हीं वादिराजदेव के अपने गुरु के स्वर्गवास होने पर परवादिमल्ल विजयदेव कराया और उनकी अर्द्धांगिनी पुजन तथा आहार दान के लिये कुछ भूमि का दान दिया।

महाप्रधान सर्वाधिकारी सन्धिविग्रहायक कम्मट मारय्य तथा उनके रक्षपुर बलुरय ने जिनालय में दीपक के लिए तेल के टेस का दान दिया।

वृन्दयनायक की भार्या राचले तथा नायकिति के पुत्र कुन्दाद देगड़े ने नयकदेव की आज्ञा से बस्ती निर्माण कराई।

इसी प्रकार महाप्रधान सर्वाधिकारी हिरिय भण्डारी हुलय के साले अरसाप्पय दरियण्ण ने कुन्थुनाथ के देव की प्रतिष्ठा कराई।

वादिराजदेव ने ये दान श्रीपाल त्रैविद्यदेव के शिष्य शान्तिसिंग-पण्डित व पार्श्वदिमलपण्डित व रामेयाड व वादिराजदेव को दिये।]

४९६

चन्नरायपट्टन में गड्ढे रामेश्वर मन्दिर के सन्मुख एक पाषाण पर

(शक सं० ११०८)

[ऊपर का भाग टूट गया है]

.....श्रेष्ठगुरुं पेगाडे सत्यधिष्ठिर.....नवसंकारधि-ष्ठायक..... यन्यनं पुधनिधियं ॥

सोगयिसुव गङ्गवाडिगं
मागमेनं न . पुदरंदालु।
मिगं दिग्विजयूर आगा-
नगरं बेट्टनिपुदल्ते मोनेगनकट्टं ॥ १ ॥
धनकाचलकूटदंतालु
धनपथमं मुट्टि नेट्टनमर्दोप्पुविनं।

यमेन्दु कन्नेवसदियं माडिसि देवरष्टविधार्च्चनेगं आहारदानं हिरियकेरेय गोडियहळ्ळिगरे सलगे एरडु कोलग हत्तु अळि तेंकिन बिट्टि सेट्टियकेरेयुं अदर केलद बेदले सलगं एरडुवं सर्व्वबाध परिहारमागि बिट्ट दत्ति ॥

(स्वदत्तां परदत्तां आदि श्लोक)

श्रीमन्महाप्रधानं सर्व्वाधिकारि सन्धाधिष्ठायकं कम्मटा मायण्णनुं माव बल्लय्यनुं देवर नन्दादीपिगेगे गाणद हत्तं बिट्टरु ॥ कण्डचनायकन मदवलिगे राचवेनायकितिय मग कुन्दाडेगगडे नयकदेवर बेसदि माडिसिद बसदि ॥ स्वस्ति श्रीमन्महाप्रधान सर्व्वाधिकारि हिरियभण्डारि हुल्लयहुल मेंदुव अधाध्यक्ष हेग्गडे हरियण्णं कुम्बेयनहळ्ळिय देवर माडिसि कोट्ट ॥

श्रीपाल त्रैविद्यदेवर शिष्यर पदद **शान्तिसिद्ध** पण्डितर गोंयु अवर पुत्र **परवादिमल्ल** पण्डितर गोंयु अवर तम्म उभयवादिगळ आतन तम्म **वादिराजदेवन्** वादिराजदेवर पादप्रक्षालन माडि कोट्टरु ॥

[अवशिष्टांश नष्ट]

[इस लेख में पूर्वार्द्ध अवश्य नष्ट होगया है अर्थात् वह से प्रारम्भ होकर वादिराज मल्लिषेण मलधारि का कीर्त्ति का वर्णन है और फिर पट्टावली के अनुसार श्रीपाल त्रैविद्यदेव का वर्णन है। इसके बाद वादिराजदेव ने अपने गुरु के स्वर्गवास होने पर 'परवादिमल्ल विजयोत्सव' किया और उनकी अष्टविध पूजन तथा आहार-दान के लिये ६५ भूमि का दान दिया।

महाप्रधान सर्वाधिकारी सन्धिविग्रहिक कुमार आत्रेय तथा उनके सद्गुरु भट्टारक के निर्माण में दीपक के लिए तेल के दैनिक दान दिया।

पुण्यवर्धक श्री आर्या राचवे तथा वासवेति के पुत्र कुन्दाइ इंगरे ने अपने ईश्वर की आज्ञा से दानी विनियोग कराई।

इसी प्रकार महाप्रधान सर्वाधिकारी हिरिय भण्डारी दुग्गय के साथ अपने धर्मगुरु व पुण्यवर्धक के ईश्वर की प्रतिष्ठा कराई।

वादिराजदेव ने दो हाथ ऊँचाई पंडितदेव के शिष्य शान्तिसिंग-पण्डित व वासवेन्द्रपण्डित व उमेशवर व वादिराजदेव को दिये।]

५६६

चन्नरायपट्टन में गड्ढे रामेश्वर मन्दिर के सन्मुख एक पाषाण पर

(शक सं० ११०८)

[ऊपर का भाग टूट गया है]

.....श्रेष्ठगुरुं पोगले सत्यधिधिसिर.....नवसंकाररधि-ष्ठायक..... धण्डनं धुधनिधिर्यं ॥

सोगविसुव गङ्गवाडिगे
मेगमेन न ..पुदरोल्।
मिगे दिण्डिगूर शाखा-
नगरं बेट्टनिपुदस्ते मोनेगनकट्टं ॥ १ ॥

कनकाचलकूटदंतेसु
धनपद्मं मुट्टि नेट्टनमर्दोप्पुविनं।

यमेन्दु कन्नेवसदिय माडिसि देवरष्टविधार्च्चनेगं आहारदान हिरियकेरेय गोडियहल्लिगद्दे सलगे परडु कोलग इत्तु अद्दि वृ मिट्टि सेट्टियकेरेयुं अदर केलद बेदले सलगे परडुवं सर्व्वबाध परिहारमागि बिट्ट दत्ति ॥

(स्वस्ति परदत्तां आदि श्लोक)

श्रीमन्महाप्रधानं सर्व्वाधिकारि सन्त्राधिष्ठायक कम्मटा माचय्यनुं माव बलय्यनुं देवर नन्दादीपिगेगे गाणद हुट्टुं बिट्टरु ॥ कण्डयनायकन मदवलिगे राचवेनायकितिय मग कुन्वाडहेग्गडे नयपक्कदेवर वेसदि माडिसिद वसदि ॥ अदि श्रीमन्महाप्रधान सर्व्वाधिकारि हिरियभण्डारि कुल्लपट्टण मेलुग अधाध्यक्ष हेग्गडे हरियण्णं कुन्वेयनहल्लिय देवर माडिसि कोट्ट ॥

श्रीपाल त्रैविद्यदेवर शिष्यरु परर शान्तिसिद्ध पण्डित-देवरु अवर पुत्र परवादिमल्ल पण्डितदेवरुं अवर तम्म उभयवादिगल आतन तम्म वादिराजदेवरुं वादिराजदेवर भावपूर्व्वक माडि कोट्टरु ॥

[अवशिष्ट भाग]

[इस लेख में पार्श्वनाथ बसदि के देवताओं के लिए वादिराज मलिषेण मलधारि की कीर्ति का वर्णन है और पार्श्वनाथ के अभिषेक के लिए कोलग का उल्लेख है। इसमें जिन वादिराजदेव के अवश्य गुरु के समाधिमरण दान पर 'परवादिमल्ल विरुदांकित कराया और स्वयं अष्टविध पूजन तथा आहार दान के लिए एक भूमि का दान दिया।

महाप्रधान सर्वाधिकारी सन्धिविग्रहाधिकारी कन्नट माधव्य तथा उनके रक्षपुर वासुदेव ने जिनालय में दीपक के लिए तेल के टेक्स का दान दिया।

कुण्डवनायक की भार्या लक्ष्मी तथा नायकिति के पुत्र कुन्दाद हेगड़े ने नयकीर्तिदेव की आज्ञा से बस्ती निर्माण कराई।

इसी प्रकार महाप्रधान सर्वाधिकारी हिरिय भण्डारी हुलिव के साले अरसाण्ण हरिपण्ण ने कुमुदवहल्लि के देव की प्रतिष्ठा कराई।

वादिराजदेव ने ये दान श्रीपाल त्रैविद्यदेव के शिष्य शान्तिसेन-पण्डित व परवादिमहल्लपण्डित व श्रमेणाड व वादिराजदेव को दिये।]

४९६

चन्नरायपट्टन में गढ़े रामेश्वर मन्दिर के सन्मुख एक पाषाण पर

(शक सं० ११०८)

[ऊपर का भाग टूट गया है]

.....श्रेष्ठगुणं पेगाडे सत्यधिधिष्ठिर.....नवसंकाररधि-
ष्ठायक..... यण्णनं बुधनिधियं ॥

सोगयिसुव गङ्गवाडिगे
सोगसेनं स ..पुदरोल् ।
मिगं दिण्डिगूर शासा-
नगरं बोट्टनिपुदस्ते मोनेगनकट्टं ॥ १ ॥

घनकाचलकूटदवोलु
घनघर्म मुट्टि नेट्टनमर्दिप्पुविनं ।

यमेन्दु कन्नेवमदियं माडिसि देवरष्टविधार्च्चनेगं आहारदानक हिरियकेरेय गौडियहल्लिगद्दे मत्तगे एरडु कोलग हत्तु मत्ति बेडु विट्टि सेट्टियकेरेयुं अदर केलद बेदवे सलगं एरडुवं सर्व्वबाध परिहारमागि विट्ट दत्ति ॥

(स्वदत्तां परदत्तां आदि श्लोक)

श्रीमन्महाप्रधानं सर्व्वाधिकारि तन्त्राधिष्ठायकं कम्मटर माचय्यनुं माव बल्लय्यनुं देवर नन्दादीपिगेगे गाणद मुडुवं विट्टरु ॥ कण्डवनायकन मदवलिगे रायवेनायकिविव मग कुन्दाडहेग्गडे नयचक्रदेवर बसदि माडिसिद धर्मदि ॥ स्वस्ति श्रीमन्महाप्रधान सर्व्वाधिकारि हिरियभण्डारि हुल्लयङ्गल मेदुन अध्याय्यद हेग्गडे हरियण्ण कुम्बेयनहल्लिय देवर माडिसि कोट्ट ॥

श्रीपाल त्रैविद्यदेवर शिष्यरु पदद शान्तिसिङ्ग पण्डितर्गेयु अवर पुत्र परवादिमल्ल पण्डितर्गेयुं अवर तम्म उमेयाण्डगं मातन तम्म वादिराजदेवङ्ग वादिराजदेवरु धारापूर्व्वकं माडि कोट्टरु ॥

[चन्द्रराजपट्टन १२१]

[इस लेख में पूर्ववत् बल्लालदेव तक होय्सल वंश के वर्णन के बाद वादिराज मल्लिषेण मलधारि की कीर्त्ति का वर्णन है और फिर अध्येता श्रीपाल योगीन्द्र का उल्लेख है। इनके शिष्य वादिराजदेव ने अपने गुरु के स्वर्गवास होने पर 'परवादिमल्ल जिनालय' निर्माण कराया और उसकी अष्टविध पूजन तथा आहार-दान के लिये कुछ भूमि का दान दिया।

महाप्रधान सर्वाधिकारी सन्धिविग्रहाधिकृत कायस्थ आसवाम तथा उसके परिवार के शिवालय के दीपक के लिए भूमि के क्रय का दान दिया।

दूतकवलाधिकृत श्री आर्य दासक तथा सार्थवाहिनी के पुत्र कुलदास द्वारा ये समस्त्रक्षर श्री आसवाम की आज्ञा से दानी लिखित कराई

इसी प्रकार महाप्रधान सर्वाधिकारी हिरण्य अध्यक्षी कुलदास व सार्थवाह अध्यक्षक हरिदत्त व कुलदासादि के दत्त का अभिलेख कराई।

पादिराजपुर व से दान श्रीमान् ईश्वरदत्त के लिए [illegible] परिवार व सार्थवाहिनीसपरिवार व समस्त व पा दासादत्त का दिये]

४०६

अक्षुरावपट्टन में गाहुं रत्नेश्वर मन्दिर के सम्मुख एक पाषाण पर

(लेख सं० १६०.)

[स्थल का नाम ज्ञात नहीं है]

.. अक्षुरावपट्टन पाषाण सत्यकुलोद्भित अमरकोटाधिप

शासक अमरदेव पुत्रोत्पादित ..

आसविपुल गाहुरोक्ष

अक्षुरावपट्ट के पुत्ररत्नेन्दु।

जिसे दिग्विजयी आसवा-

ग्राम वासुदेवपुरी को अमरकोट ..।

आसवाम्बरकुल दत्तेन्दु

अमरकोट इन्दि गोत्रसम्भूतेन ।

मोनेगनकट्टदल्लर्जत-

जिन गृहमं रामदेवविभु माडिसिदं ॥ २ ॥

तद्गुरुकुलमेन्नेन्दडे। श्रीनयकीर्त्तिसिद्धान्तचक्रवर्त्तिगल-शिष्यरु।

विदिताध्यात्मिकबालचन्द्रमुनिराजेन्द्रप्रशिष्यप्रशं-

सितवन्द्यर्मुनिमेघचन्द्ररनघर्मांभोदयामागरा-

म्युदयपोस्तकगच्छदेशिकगण श्रीकोण्डकुन्दान्वया-

स्पदहांपक्कैरमोप्पुवर्व्वसुधेयोल्लालचेवोल्दिमेयिं ॥३॥

शकवर्ष १९०८ नेय विश्वावसु संवत्सरदुत्तरायण संक्रान्ति-यादिवारदन्दु बनवसेकारर मोत्तदनायकरु दिण्डियूरवृत्तिय गावुण्डप्रभुगलुं मेलिनासिर्व्वरु शान्तिनाथदेवरष्टविधार्च्चनेगं खण्डस्फुटजीर्णोद्धारक्कं श्रुतियराहारदानक्कं सर्व्वाबाधपरिहार-मागि मेघचन्द्रदेवर्गे धारापूर्वकं माडि कोट्ट गद्देबेदनेल्लवन्नु लेन्तेन्दडे। (यहां दान का विवरण है)

[चन्नरायपट्टन १६१]

[.....गङ्गवाडि के मोनेगनकट्टे का दिण्डिगूर एक शाखा नगर था। मोनेगनकट्टे में रामदेवविभु ने एक विशाल जिनालय निर्माण कराया। रामदेव के गुरु, नयकीर्त्तिसिद्धान्तचक्रवर्ती के शिष्य प्रख्यातिक बालचन्द्र मुनि के प्रधान शिष्य मेघचन्द्र थे। उक्त तिथि को बनवसे के कर्मचारी मोत्तद नायक तथा दिण्डियूरवृत्ति के गौण्ड और प्रभुओं ने शान्तिनाथ भगवान के अष्टविधार्चन के तथा जीर्णोद्धार व आहारदान के हेतु उक्त भूमि का दान मेघचन्द्रदेव को कर दिया।]

४८७

लगभग ग्राम में पुरानी नगरी के दक्षिण पार्श्व पर एक पाषाण पर

(अभिलेख सं० १८१०)

[illegible]

[illegible]

भीमार्जुन-सरकुमारि-
सीमाकनकनकं नम्मुरिन्दं.....।
आदन्यारेयानेवसु-
रामसुतं भरतराजरण्डाधिपरा॥ ३ ॥

श्रीविष्णु पोम्मनुन्नि-
यानेप .. ..रप्प.....मापिमि...।
. रिविर भरत चक्रिगल्
...रिमुरेनेयसुमुमन्निपरगेल्लरं ॥ ४ ॥

मकरध्वजनोडिगलु
मेरे राज्यमाविन्नासमं मेरेयलुवो-
रिरियान नेरगु.....
.....मन्दे पट्टानेयुमार्द ॥ ५ ॥

आदन मति मुन्द नेगल्दा-
मोतेगलन्यतिगे वा..... .....
..... .दोरेयेनलक्षदं
भूदेवदानं जक्कणब्बेगुन्दिदर्हरिये ॥ ६ ॥

.....यानेदण्णायकनेरेयन...न जक्कियब्बेगे सुवरव...
.....परगु... ...भरतचाकुवलिगलेनिप्पर् ॥ ७ ॥

अन्तवरन्तेनं ॥

श्रीमत्सेर्मडे माचिराजगिरियोत्पुट्टे सन्मार्गदि-
न्दामाश्रीमरुदेवियेम्ब नलिनीवासक्के सन्दाजन-

प्रेमे श्रीजिनमार्गदेवकरणं यत्र प्रतिष्ठक्रम
.....

.....

.....

धारापूर्व्वकदि तग-
दूरं वग्गलब्बम्मगट्टवं बसदिगे सले ।
धारिणियरियल्विट्ट-
र्म्मूरविशशिवारमेरुगल्लिल्विनेगं ॥ १३ ॥

परमजिनेश्वरपूजेगे
पिरिदुं सद्धर्मियिन्दे कोडियकेंय ।
वरगुणराशगवुण्डं
निरुतं कल्याणकीर्त्ति मुनिपङ्गिसं ॥ १४ ॥

भूविनुतं कलि-वेाप्पं
देवङ्गं चरणिङ्गे नेमवेर्गडेय मगं ।
भूविदितमागे कोट्टं
तावरेगेरेयल्लि गद्दे खण्डुग वेान्दं ॥ १५ ॥

कल्याणकीर्त्ति कीर्त्तिसु-
वल्युदयं मूरुलोकमं व्यापिसि कै-
वल्यदोडगुडि सले मा-
णल्यमुमादत्तु विन्वे चिन्त्यङ्गलवोल् ॥ १६ ॥

(स्वदत्तां परदत्तां वा आदि श्लोक)

[चन्नरायपट्टन १०८]

[इस लेख में चालुक्यत्रिभुवनमल्ल व विष्णुवर्द्धन पोरसलदेव के राज्य में नयकीर्त्ति के स्वर्गवास हो जाने पर कामले हुआ तगडूर में जिनालय निर्माण कराये जाने व अष्टविधार्चन, आहारदान तथा

[ब्याख्या के हेतु रामगुप्त और माधव नामक दोनों 'गणपति' और 'सामन्त' का दान दिये जाने का वर्णन है। रामगुप्त ने जिस प्रयोजन के लिए 'वेतन' की वृद्धि करवाई होगी वृद्धि का दी। अतः यह अन्य दानों का भी वर्णन है। अन्त में कल्याणकर्त्ता की प्रशंसा के पद्य हैं।]

४८

गुहिय ग्राम के अदलदधिने नामक कुण्ड में

एक शिलालेख पर

(आसपास के ग्रामों के [illegible])

[illegible]

[illegible]

आदि प्रकाश)

[illegible]

[illegible]

[illegible]

४६६

मललकेरे ग्राम में ईश्वर मन्दिर के सन्मुख एक पाषाण पर

(शक सं० ११७०)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥

भद्रं भूयाज्जिनेन्द्राणां शासनायाघनाशिने ।
कुतीर्थ्यध्वान्तसङ्घातप्रभिन्नघनभानवे ॥ २ ॥

यु ॥ यदुवंशचितिपालकं श्रयापुरी वासन्विका.....
मदनागिर्प्पिन.....युराजित...मेल्पाये शा्ल...
...जैन मुनीश्वरं पिडिद.. .....
....पोदेदं.....॥ ३ ॥

श्रा होय्सलान्वयदोल ॥
यु ॥ भूनाथासेव्यपादं निरिवरिपुमहीपालविध्वंस केलो-
क्कीनाथं वैरिभूमृन्मृगगहनदवन्ताने दुर्ग्ग.....
...ना...रामनेत्रोभयद... ...श्रीसन्नामं-
तानेन्द्रोविरक्तोक...मलिसिदं वीरयदलालभूपं
॥ ४ ॥

गोपतिगानपनिकरं
गोपतिगे.....वागोरडं ।

गोपतिपादत्वा ..

गोपति खड्गालगालगं मरसिंहं ॥ ४ ॥

६ ॥ जिना पैतिलन्द्रपत्रमंत्रिज समामरु रमल-

...रूषर्ष. ...रक्षाकिन्दहिलसिंह ...हंस .

...रवर पैत्रवाकुलमहा ...मु यमय ...

आंहोमेंहयरदव ...

भामानीकामलाज

...मामाहुलदै गलिता ...रमल

मोम' ...मलाकुलाकिला

...मेंहयरदव...कु ...

५ ॥ ...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

श्वरदेवरु दक्षिणमण्डलम् दुष्टनिग्रहशिष्टपरिपालनपू-
र्व्वकं राज्यं गेय्दुत्तमिरे ।

तत्पादपद्मोपजीवि सेनानाथशिरोमणि वन्दिजन-चिन्तामणि सुजनवनजवनपतङ्गं राजदलपत...सलिगं कलिगन्नडुरा स्वामि-दण्डेशनेन्तेप्पनेन्दडे ॥

वृ ॥ श्रीयं विस्तीर्णवक्षस्थलनिलयदो.....

श्रीयं कूर्म्मालं केलीसदनदोलोलवि वाल्दि विख्यातकीर्ति-
श्रीयिन्दाशान्तम् रञ्जिसे निजविजय...स्वान्तजातं...
...ग्रिय सैन्याधिनाथं नेगल्दनुरुगुणस्तोमनुर्व्वीललामं
॥ ८ ॥

आतननुजं ॥

क ॥ ...रु देत्त.....
...सिरमं ब्रह्मसैन्यनाथं विप्रं ।
धुरदोलतिचतुरं निज-
.....वीर...तिगे सिरदा...तिय...॥ ९ ॥

आमन्त्रि ॥

मालिनी ॥ मनुचरितनुदारं वत्समन्त्रिप्रगल्भं
जिनसदनसमूहाधारसारानुशा...म् ।
तनगे... .. . ग्गिद पूर्णपुण्यं
जननुतविजयण्णं मन्त्रिगोत्राग्रगण्यं ॥ १० ॥

क ॥ कामं कमनीयगुणं
धीमन्तसिरोजयन्धनलिल.....।

आगमिकसंदर्भसिद्धान्त-सिद्धि
श्रीमुखवस्त्रिकाविचारकोविंशतयः ॥ ११ ॥

शासननीतिनक्रम ॥
शास्त्रार्थनिर्णयाधारान्निर्णय सुधर्मोत्तरकालम्
शास्त्रार्थं मुखवस्त्रिकायाश्च ... ...
शैक्षकोक्तवस्त्रागमसन्दर्भं न मुख वस्त्रम्
... ...

अभयचन्द्रक ३३३ भू० १६१.
अभयनन्दि पण्डित २२ भू० ११८, १५३.
अभयदेव ४७३ भू० १५६.
अभयनन्दि, त्रै०यो०के शिष्य ४७,५०.
अभयसूरि १०५.
अभिनवचारुकीर्ति प० आ० १३२, भू० ४६, १६०.
अभिनव पं० पंडितदेव के शिष्य, १०५, ३६२. भू० १३५, १६१.
अभिनव प० आ० ४२१ भू० १६०.
अभिनव श्रुतमुनि १०५ भू० १२५.
अमरकीर्ति, धर्मभूषण के शिष्य, १११ भू० १३६.
अमरनन्दि १०५.
अरिष्टनेमि पं. २९७ भू० ११८,
अरिष्टनेमि २५ भू० १४.
अरिष्टनेमि गुरु १५२ भू० १११, १४९.
अरुंगलान्वय ४९३ भू० १३६, १४८.
अर्जुनदेव १०५.
अर्हद्दास कवि १०५ भू० ३८.
अर्हद्बलि १०५ भू० ५९, १३४.
अविद्धकर्ण, पद्मनन्दि व कुमारदेव गोल्लाचार्यके शिष्य ४० भू० १३२.
अविनीत भू० १२८.
आजीगण २०७.
आर्यदेव ५४ भू० १३९.

इ

इङ्गुडेश्वरबलि १०५, १०८, १३९ भू० ११५, १४६.
इन्द्रनन्दि ५४, २०५ भू० ७७, १२०, १२८, १३९, १४५, १४८, १५२.
इन्द्रभूति (देखो गौतम) ५४, १०५ भू० १२५.
इन्द्रभूषण, लक्ष्मीसेन के शिष्य, ११६ भू० १६१.
ईशान १९४.

उ

उग्रसेन गुरु, पद्मिनिगुरु के शिष्य, ८ भू० १५०.
उत्तरपुराण, गुणभद्रकृत, भू० ३०, ७६.
उदयचन्द्र ४२,१०५,११७.भू० १५६.
उपवासपर, वृषभनन्दिके शिष्य, १६१.
उल्लिकलगुरु ११ भू० १५०.

ऋ

ऋषभसेनगुरु १४.

ए

एकवसतति पद्मनन्दिकृत भू० ११३.
एकसंधिसुमतिभट्टारक ४९३, भू० १३७.

क

कण्णब्बे कन्ति (आर्यिका) ४६०.
कनकचन्द्र ११३ भू० १३७.
कनकनन्दि ४०, ४४, २५१ भू० ६०, १५५, १५८.
कनकश्री कन्ति (आर्यिका) १११.
कनकसेन, बलदेवमंत्रीके गुरु, ११ भू० १४९.
कनकसेन-वादिराज ४९३ भू० ११६.
कमलभद्र ५४ भू० १३९.

गण्डविमुक्त, माधनन्दिके शिष्य, ४०, २४१, ३६८, ३६९, भू० १३२, १५५.
गण्डविमुक्त म०=कुक्कुटासन म०, दिवाकरनन्दिके शिष्य ४३.
गण्डविमुक्त गौलमुनि=म० हेमचन्द्र, ५५, भू० १३३.
गण्डविमुक्त (वादि चतुर्मुख रामचन्द्र) देवकीर्तिके शिष्य, ४० भू० ११२.
गण्डविमुक्त लि० दे० ५०० भू० ३९, ९३, ९४, ११०, ११८, १५३.
गुणकीर्ति ३० भू० १५१.
गुणकीर्ति १०५.
गुणचन्द्र (भट्ट) ४२, ५५, ७०, ९०, १२४, १३७, ४९१, ४९४, भू० ९६, ९७, १३३, १४६.
गुणचन्द्र ४३१ भू० १५९.
गुणचन्द्र म० दे०, शान्तीश के शिष्य, भू० ८२.
गुणदेव ४७७.
गुणदेवसूरि १६० भू० १५१.
गुणनन्दि, बलाकपिञ्छके शिष्य ४२, ४३, ४७, ५०, १०५.
गुणभद्र, जिनसेनके शिष्य १०५ भू० ७६, १३४.
गुणभूषित २१ भू० १५०.
गुणसेन ९, ५४ भू० १४०, १५०.
गुप्तिगुप्त भू० ६५, १२८.
गुम्मट, °देव, °नाथ, °स्वामी, °टेश्वर, गोमट, °देव, °टेश, °टेश्वर इत्यादि= बाहुबलि ४५, ५९, ८०-९६, १०३, १०५-१०७, ११०, ११३, ११५, ११८, ११९, १२३, १३१, १३४, १३७, १४०, १४३, ३१६, ३२२, ३२९, ३३०, ३५६, ३५७, ३५९, ३६०, ४१७, ४२१, ४२४, ४३२, ४३६, ४५४, ४८६.
गृद्धपिञ्छ ४०, ४२, ४३, ५०, १०५, १०८, २२९ भू० १४०.
गोपनन्दि, चतुर्मुखके शिष्य ५५, ४९२ भू० ५३, ७५, ८७, ११३, १४२, १५३.
गोम्मटसारवृत्ति (अभयचन्द्रकृत) भू० ७२.
गोम्मटेश्वरचरित (अनन्तकविकृत) भू० २३, २७, ४८, १०७.
गोल्लाचार्य ४०, ४७, ५०, भू० १११, १३२, १४२.
गोवर्धन १, १०५, भू० ५६, ५७, ६०, ६२, १२५.
गौतम १, ४०, ४२, ४३, ४७, ५०, ५४, १०५, १०८, ४१८, ४९१, भू० ६२, १२९-१३१, ११६, १३८.
गौलदेव, °मुनि=म० हेमचन्द्र, गोल्लनन्दिके शिष्य, ५५.

च

चतुर्मुख (द्रुमसेनदि) ५५, ४९१, भू० १११.

जयभद्र १०५ मू० १२६, १२७.
जठजल्पि १०५.
जसकीर्ति=यशःकीर्ति, गोपनन्दि के शिष्य, ५५, १३३.
जिनचन्द ५५, १०५ मू० १३३, १४२.
जिनचन्द, कुन्दकुन्द के गुरु मू० १२८.
जिनसेन ४७, ५०, १०५, ४२२ मू० २४, ७६, १३४, १६१.
जिनेन्द्रबुद्धि=देवनन्दि ४०, १०५, १०८ मू० १४१.
जैनाभिषेक (पूज्यपादकृत) ४० मू० १४१.
जैनेन्द्र (व्याकरण पूज्यपादकृत) ४०, ५५, मू० १४१.

त

तमरेल गच्छ ५०० मू० १४८.
तत्त्वार्थसूत्र (उमास्वातिकृत) १०५ मू० १४०.
तत्त्वार्थसूत्रटीका (शिवकोटिकृत) १०५ मू० १४१.
तपोभूषण १०५.
तार्किक चक्रवर्ति ३० ४१६.
तीर्थद गुरु १२.
त्रिदिवेशगणप=देवसंघ १०५.
त्रिभुवनदेव, देवकीर्ति के शिष्य, ३९, ४० मू० ९६, १५७.
त्रिभुवनदेव, गोपनन्दि के शिष्य, ५५, मू० १३३.
त्रिलोकनन्दि, माघनन्दि के शिष्य ५५, मू० १३३.
त्रिलोकसार (नेमिचन्द्रकृत) मू० ३०.
त्रिलोक प्रज्ञप्ति (ग्रंथ) मू० ३०.
त्रैकाल्ययोगी ४७३ मू० १५६.
त्रैकाल्ययोगी गोल्लाचार्य के शिष्य ४७, ४७, ५० मू० १३३, १४३.
त्रैलेख ४७, ५०, ५४, ५६.
त्रैविद्यदेव ११४.

द

दक्षिणाचार्य=भद्रबाहु मू० ५९, ६०.
दक्षिणकुक्कुटेश्वर=गुम्मट ११८.
दयापाल, मतिसागरके शिष्य, ५४ मू० १३९.
दयापाल प० (महासूरि) ५४ मू० १३९.
दर्शनसार (देवसेनकृत) मू० १४८.
दामनन्दि, रविचन्द्रके शिष्य ४३, ४३, १०५.
दामनन्दि=दामनन्दि, (यशकीर्तिके शिष्य) १२८, १३० मू० १५६.
दामनन्दि, चतुर्मुखदेवके शिष्य, ५५, मू० १३३, १४३.
दिव्यसूरिशास्त्र ४९६ मू० १८७.
दिवाकरनन्दि, चन्द्रकीर्तिके शिष्य ४१, १३९, मू० १५४.
देवकीर्ति, गण्डविमुक्तके शिष्य, १९, ४०, १०५, मू० ५२, ९६, ११६, १३३.
देवचन्द्र ४०, १०५, मू० ६०.
देवनन्दि, जिनेन्द्रबुद्धि, पूज्यपाद, ४०, १०५, ४५१ मू० ७१, १३३, १३८, १४१, १५१.

देवश्री पत्नि (आर्यिका) १२३.
देवसेन १०५, १०८ मु० १४५
देवसेन (दर्शनसार कर्ता) मु० १४८.
देवेन्द्र (श्वे०) मु० १४१
देवेन्द्र, गुणभद्रके शिष्य ४१, ५०, ५५, ४१२ मु० १३३, १५१
देवेन्द्र, जयकुंजरदेवके शिष्य ५५, मु० १३३.
देवेन्द्र विशालकीर्ति १३१ मु० १३६
देवोपुत्त १०५.
देव, देविग, देवियण्ण ४०-४१, ४५-५०, ५१, ५५, ५६, ५१, ५७, ७१, ९०, १०५, १०८, १३३, १३४, १३० १३२, १३५, १३८, १३९, १४४, १४५, १४७-१४०, १४८, १४० १४०, १४१, १४३, १४३, १४० १४५, १४७, १४६, १४९, १५१ १५३, १५८, १५६, १५९ १५० १३३, १३३, १३४ १३०
धनंजय ११२ मु० १३३ १३०
धनसेन (धनञ्जयसेन) मु० ३३
धनसेन १०५ मु० १३३ १३०

ध

धर्म कुसरा(सेनगण) ८०-८१ १३०
धर्म श्री १०१ मु० १३०
धर्मचन्द्र १०५ मु० १३०
धर्म १०५
धर्मभूषण ४०-४१ ३३० १३०
मु० १३३
धर्मभूषण, आचार्यान्वय शिष्य १०१ मु० १३६
धर्मभूषण, सूरस्थान्वय शिष्य १०१ मु० १३६
धर्मसेन ८ मु० १०६ १०८ ९ ०
धवल (ग्रंथ) मु० ८१
धारसेन ९ १०५ मु ३३ १०६
धुरसेन मु० १३६ १३०

न

नकुलार्य (आचार्य) ८०
नगर १०५ मु० १३३
नन्दिसंघ [illegible] ८० ८१ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १०० १०१ १०२ १०३ १०४ १०५ १०६ १०७ १०८ १०९ ११० १११ ११२ ११३ ११४ ११५ ११६ ११७ ११८ ११९ १२० १२१ १२२ १२३ १२४ १२५ १२६ १२७ १२८ १२९ १३० १३१ १३२ १३३ १३४ १३५ १३६ १३७ १३८ १३९ १४० १४१ १४२ १४३ १४४ १४५ १४६ १४७ १४८ १४९ १५० १५१ १५२ १५३ १५४ १५५ १५६ १५७ १५८ १५९ १६० १६१ १६२ १६३ १६४ १६५ १६६ १६७ १६८ १६९ १७० १७१ १७२ १७३ १७४ १७५ १७६ १७७ १७८ १७९ १८० १८१ १८२ १८३ १८४ १८५ १८६ १८७ १८८ १८९ १९० १९१ १९२ १९३ १९४ १९५ १९६ १९७ १९८ १९९ २०० २०१ २०२ २०३ २०४ २०५ २०६ २०७ २०८ २०९ २१० २११ २१२ २१३ २१४ २१५ २१६ २१७ २१८ २१९ २२० २२१ २२२ २२३ २२४ २२५ २२६ २२७ २२८ २२९ २३० २३१ २३२ २३३ २३४ २३५ २३६ २३७ २३८ २३९ २४० २४१ २४२ २४३ २४४ २४५ २४६ २४७ २४८ २४९ २५० २५१ २५२ २५३ २५४ २५५ २५६ २५७ २५८ २५९ २६० २६१ २६२ २६३ २६४ २६५ २६६ २६७ २६८ २६९ २७० २७१ २७२ २७३ २७४ २७५ २७६ २७७ २७८ २७९ २८० २८१ २८२ २८३ २८४ २८५ २८६ २८७ २८८ २८९ २९० २९१ २९२ २९३ २९४ २९५ २९६ २९७ २९८ २९९ ३०० ३०१ ३०२ ३०३ ३०४ ३०५ ३०६ ३०७ ३०८ ३०९ ३१० ३११ ३१२ ३१३ ३१४ ३१५ ३१६ ३१७ ३१८ ३१९ ३२० ३२१ ३२२ ३२३ ३२४ ३२५ ३२६ ३२७ ३२८ ३२९ ३३० ३३१ ३३२ ३३३ ३३४ ३३५ ३३६ ३३७ ३३८ ३३९ ३४० ३४१ ३४२ ३४३ ३४४ ३४५ ३४६ ३४७ ३४८ ३४९ ३५० ३५१ ३५२ ३५३ ३५४ ३५५ ३५६ ३५७ ३५८ ३५९ ३६० ३६१ ३६२ ३६३ ३६४ ३६५ ३६६ ३६७ ३६८ ३६९ ३७० ३७१ ३७२ ३७३ ३७४ ३७५ ३७६ ३७७ ३७८ ३७९ ३८० ३८१ ३८२ ३८३ ३८४ ३८५ ३८६ ३८७ ३८८ ३८९ ३९० ३९१ ३९२ ३९३ ३९४ ३९५ ३९६ ३९७ ३९८ ३९९ ४०० ४०१ ४०२ ४०३ ४०४ ४०५ ४०६ ४०७ ४०८ ४०९ ४१० ४११ ४१२ ४१३ ४१४ ४१५ ४१६ ४१७ ४१८ ४१९ ४२० ४२१ ४२२ ४२३ ४२४ ४२५ ४२६ ४२७ ४२८ ४२९ ४३० ४३१ ४३२ ४३३ ४३४ ४३५ ४३६ ४३७ ४३८ ४३९ ४४० ४४१ ४४२ ४४३ ४४४ ४४५ ४४६ ४४७ ४४८ ४४९ ४५० ४५१ ४५२ ४५३ ४५४ ४५५ ४५६ ४५७ ४५८ ४५९ ४६० ४६१ ४६२ ४६३ ४६४ ४६५ ४६६ ४६७ ४६८ ४६९ ४७० ४७१ ४७२ ४७३ ४७४ ४७५ ४७६ ४७७ ४७८ ४७९ ४८० ४८१ ४८२ ४८३ ४८४ ४८५ ४८६ ४८७ ४८८ ४८९ ४९० ४९१ ४९२ ४९३ ४९४ ४९५ ४९६ ४९७ ४९८ ४९९ ५०० ५०१ ५०२ ५०३ ५०४ ५०५ ५०६ ५०७ ५०८ ५०९ ५१० ५११ ५१२ ५१३ ५१४ ५१५ ५१६ ५१७ ५१८ ५१९ ५२० ५२१ ५२२ ५२३ ५२४ ५२५ ५२६ ५२७ ५२८ ५२९ ५३० ५३१ ५३२ ५३३ ५३४ ५३५ ५३६ ५३७ ५३८ ५३९ ५४० ५४१ ५४२ ५४३ ५४४ ५४५ ५४६ ५४७ ५४८ ५४९ ५५० ५५१ ५५२ ५५३ ५५४ ५५५ ५५६ ५५७ ५५८ ५५९ ५६० ५६१ ५६२ ५६३ ५६४ ५६५ ५६६ ५६७ ५६८ ५६९ ५७० ५७१ ५७२ ५७३ ५७४ ५७५ ५७६ ५७७ ५७८ ५७९ ५८० ५८१ ५८२ ५८३ ५८४ ५८५ ५८६ ५८७ ५८८ ५८९ ५९० ५९१ ५९२ ५९३ ५९४ ५९५ ५९६ ५९७ ५९८ ५९९ ६०० ६०१ ६०२ ६०३ ६०४ ६०५ ६०६ ६०७ ६०८ ६०९ ६१० ६११ ६१२ ६१३ ६१४ ६१५ ६१६ ६१७ ६१८ ६१९ ६२० ६२१ ६२२ ६२३ ६२४ ६२५ ६२६ ६२७ ६२८ ६२९ ६३० ६३१ ६३२ ६३३ ६३४ ६३५ ६३६ ६३७ ६३८ ६३९ ६४० ६४१ ६४२ ६४३ ६४४ ६४५ ६४६ ६४७ ६४८ ६४९ ६५० ६५१ ६५२ ६५३ ६५४ ६५५ ६५६ ६५७ ६५८ ६५९ ६६० ६६१ ६६२ ६६३ ६६४ ६६५ ६६६ ६६७ ६६८ ६६९ ६७० ६७१ ६७२ ६७३ ६७४ ६७५ ६७६ ६७७ ६७८ ६७९ ६८० ६८१ ६८२ ६८३ ६८४ ६८५ ६८६ ६८७ ६८८ ६८९ ६९० ६९१ ६९२ ६९३ ६९४ ६९५ ६९६ ६९७ ६९८ ६९९ ७०० ७०१ ७०२ ७०३ ७०४ ७०५ ७०६ ७०७ ७०८ ७०९ ७१० ७११ ७१२ ७१३ ७१४ ७१५ ७१६ ७१७ ७१८ ७१९ ७२० ७२१ ७२२ ७२३ ७२४ ७२५ ७२६ ७२७ ७२८ ७२९ ७३० ७३१ ७३२ ७३३ ७३४ ७३५ ७३६ ७३७ ७३८ ७३९ ७४० ७४१ ७४२ ७४३ ७४४ ७४५ ७४६ ७४७ ७४८ ७४९ ७५० ७५१ ७५२ ७५३ ७५४ ७५५ ७५६ ७५७ ७५८ ७५९ ७६० ७६१ ७६२ ७६३ ७६४ ७६५ ७६६ ७६७ ७६८ ७६९ ७७० ७७१ ७७२ ७७३ ७७४ ७७५ ७७६ ७७७ ७७८ ७७९ ७८० ७८१ ७८२ ७८३ ७८४ ७८५ ७८६ ७८७ ७८८ ७८९ ७९० ७९१ ७९२ ७९३ ७९४ ७९५ ७९६ ७९७ ७९८ ७९९ ८०० ८०१ ८०२ ८०३ ८०४ ८०५ ८०६ ८०७ ८०८ ८०९ ८१० ८११ ८१२ ८१३ ८१४ ८१५ ८१६ ८१७ ८१८ ८१९ ८२० ८२१ ८२२ ८२३ ८२४ ८२५ ८२६ ८२७ ८२८ ८२९ ८३० ८३१ ८३२ ८३३ ८३४ ८३५ ८३६ ८३७ ८३८ ८३९ ८४० ८४१ ८४२ ८४३ ८४४ ८४५ ८४६ ८४७ ८४८ ८४९ ८५० ८५१ ८५२ ८५३ ८५४ ८५५ ८५६ ८५७ ८५८ ८५९ ८६० ८६१ ८६२ ८६३ ८६४ ८६५ ८६६ ८६७ ८६८ ८६९ ८७० ८७१ ८७२ ८७३ ८७४ ८७५ ८७६ ८७७ ८७८ ८७९ ८८० ८८१ ८८२ ८८३ ८८४ ८८५ ८८६ ८८७ ८८८ ८८९ ८९० ८९१ ८९२ ८९३ ८९४ ८९५ ८९६ ८९७ ८९८ ८९९ ९०० ९०१ ९०२ ९०३ ९०४ ९०५ ९०६ ९०७ ९०८ ९०९ ९१० ९११ ९१२ ९१३ ९१४ ९१५ ९१६ ९१७ ९१८ ९१९ ९२० ९२१ ९२२ ९२३ ९२४ ९२५ ९२६ ९२७ ९२८ ९२९ ९३० ९३१ ९३२ ९३३ ९३४ ९३५ ९३६ ९३७ ९३८ ९३९ ९४० ९४१ ९४२ ९४३ ९४४ ९४५ ९४६ ९४७ ९४८ ९४९ ९५० ९५१ ९५२ ९५३ ९५४ ९५५ ९५६ ९५७ ९५८ ९५९ ९६० ९६१ ९६२ ९६३ ९६४ ९६५ ९६६ ९६७ ९६८ ९६९ ९७० ९७१ ९७२ ९७३ ९७४ ९७५ ९७६ ९७७ ९७८ ९७९ ९८० ९८१ ९८२ ९८३ ९८४ ९८५ ९८६ ९८७ ९८८ ९८९ ९९० ९९१ ९९२ ९९३ ९९४ ९९५ ९९६ ९९७ ९९८ ९९९ १००० १००१ १००२ १००३ १००४ १००५ १००६ १००७ १००८ १००९ १०१० १०११ १०१२ १०१३ १०१४ १०१५ १०१६ १०१७ १०१८ १०१९ १०२० १०२१ १०२२ १०२३ १०२४ १०२५ १०२६ १०२७ १०२८ १०२९ १०३० १०३१ १०३२ १०३३ १०३४ १०३५ १०३६ १०३७ १०३८ १०३९ १०४० १०४१ १०४२ १०४३ १०४४ १०४५ १०४६ १०४७ १०४८ १०४९ १०५० १०५१ १०५२ १०५३ १०५४ १०५५ १०५६ १०५७ १०५८ १०५९ १०६० १०६१ १०६२ १०६३ १०६४ १०६५ १०६६ १०६७ १०६८ १०६९ १०७० १०७१ १०७२ १०७३ १०७४ १०७५ १०७६ १०७७ १०७८ १०७९ १०८० १०८१ १०८२ १०८३ १०८४ १०८५ १०८६ १०८७ १०८८ १०८९ १०९० १०९१ १०९२ १०९३ १०९४ १०९५ १०९६ १०९७ १०९८ १०९९ ११०० ११०१ ११०२ ११०३ ११०४ ११०५ ११०६ ११०७ ११०८ ११०९ १११० ११११ १११२ १११३ १११४ १११५ १११६ १११७ १११८ १११९ ११२० ११२१ ११२२ ११२३ ११२४ ११२५ ११२६ ११२७ ११२८ ११२९ ११३० ११३१ ११३२ ११३३ ११३४ ११३५ ११३६ ११३७ ११३८ ११३९ ११४० ११४१ ११४२ ११४३ ११४४ ११४५ ११४६ ११४७ ११४८ ११४९ ११५० ११५१ ११५२ ११५३ ११५४ ११५५ ११५६ ११५७ ११५८ ११५९ ११६० ११६१ ११६२ ११६३ ११६४ ११६५ ११६६ ११६७ ११६८ ११६९ ११७० ११७१ ११७२ ११७३ ११७४ ११७५ ११७६ ११७७ ११७८ ११७९ ११८० ११८१ ११८२ ११८३ ११८४ ११८५ ११८६ ११८७ ११८८ ११८९ ११९० ११९१ ११९२ ११९३ ११९४ ११९५ ११९६ ११९७ ११९८ ११९९ १२०० १२०१ १२०२ १२०३ १२०४ १२०५ १२०६ १२०७ १२०८ १२०९ १२१० १२११ १२१२ १२१३ १२१४ १२१५ १२१६ १२१७ १२१८ १२१९ १२२० १२२१ १२२२ १२२३ १२२४ १२२५ १२२६ १२२७ १२२८ १२२९ १२३० १२३१ १२३२ १२३३ १२३४ १२३५ १२३६ १२३७ १२३८ १२३९ १२४० १२४१ १२४२ १२४३ १२४४ १२४५ १२४६ १२४७ १२४८ १२४९ १२५० १२५१ १२५२ १२५३ १२५४ १२५५ १२५६ १२५७ १२५८ १२५९ १२६० १२६१ १२६२ १२६३ १२६४ १२६५ १२६६ १२६७ १२६८ १२६९ १२७० १२७१ १२७२ १२७३ १२७४ १२७५ १२७६ १२७७ १२७८ १२७९ १२८० १२८१ १२८२ १२८३ १२८४ १२८५ १२८६ १२८७ १२८८ १२८९ १२९० १२९१ १२९२ १२९३ १२९४ १२९५ १२९६ १२९७ १२९८ १२९९ १३०० १३०१ १३०२ १३०३ १३०४ १३०५ १३०६ १३०७ १३०८ १३०९ १३१० १३११ १३१२ १३१३ १३१४ १३१५ १३१६ १३१७ १३१८ १३१९ १३२० १३२१ १३२२ १३२३ १३२४ १३२५ १३२६ १३२७ १३२८ १३२९ १३३० १३३१ १३३२ १३३३ १३३४ १३३५ १३३६ १३३७ १३३८ १३३९ १३४० १३४१ १३४२ १३४३ १३४४ १३४५ १३४६ १३४७ १३४८ १३४९ १३५० १३५१ १३५२ १३५३ १३५४ १३५५ १३५६ १३५७ १३५८ १३५९ १३६० १३६१ १३६२ १३६३ १३६४ १३६५ १३६६ १३६७ १३६८ १३६९ १३७० १३७१ १३७२ १३७३ १३७४ १३७५ १३७६ १३७७ १३७८ १३७९ १३८० १३८१ १३८२ १३८३ १३८४ १३८५ १३८६ १३८७ १३८८ १३८९ १३९० १३९१ १३९२ १३९३ १३९४ १३९५ १३९६ १३९७ १३९८ १३९९ १४०० १४०१ १४०२ १४०३ १४०४ १४०५ १४०६ १४०७ १४०८ १४०९ १४१० १४११ १४१२ १४१३ १४१४ १४१५ १४१६ १४१७ १४१८ १४१९ १४२० १४२१ १४२२ १४२३ १४२४ १४२५ १४२६ १४२७ १४२८ १४२९ १४३० १४३१ १४३२ १४३३ १४३४ १४३५ १४३६ १४३७ १४३८ १४३९ १४४० १४४१ १४४२ १४४३ १४४४ १४४५ १४४६ १४४७ १४४८ १४४९ १४५० १४५१ १४५२ १४५३ १४५४ १४५५ १४५६ १४५७ १४५८ १४५९ १४६० १४६१ १४६२ १४६३ १४६४ १४६५ १४६६ १४६७ १४६८ १४६९ १४७० १४७१ १४७२ १४७३ १४७४ १४७५ १४७६ १४७७ १४७८ १४७९ १४८० १४८१ १४८२ १४८३ १४८४ १४८५ १४८६ १४८७ १४८८ १४८९ १४९० १४९१ १४९२ १४९३ १४९४ १४९५ १४९६ १४९७ १४९८ १४९९ १५०० १५०१ १५०२ १५०३ १५०४ १५०५ १५०६ १५०७ १५०८ १५०९ १५१० १५११ १५१२ १५१३ १५१४ १५१५ १५१६ १५१७ १५१८ १५१९ १५२० १५२१ १५२२ १५२३ १५२४ १५२५ १५२६ १५२७ १५२८ १५२९ १५३० १५३१ १५३२ १५३३ १५३४ १५३५ १५३६ १५३७ १५३८ १५३९ १५४० १५४१ १५४२ १५४३ १५४४ १५४५ १५४६ १५४७ १५४८ १५४९ १५५० १५५१ १५५२ १५५३ १५५४ १५५५ १५५६ १५५७ १५५८ १५५९ १५६० १५६१ १५६२ १५६३ १५६४ १५६५ १५६६ १५६७ १५६८ १५६९ १५७० १५७१ १५७२ १५७३ १५७४ १५७५ १५७६ १५७७ १५७८ १५७९ १५८० १५८१ १५८२ १५८३ १५८४ १५८५ १५८६ १५८७ १५८८ १५८९ १५९० १५९१ १५९२ १५९३ १५९४ १५९५ १५९६ १५९७ १५९८ १५९९ १६०० १६०१ १६०२ १६०३ १६०४ १६०५ १६०६ १६०७ १६०८ १६०९ १६१० १६११ १६१२ १६१३ १६१४ १६१५ १६१६ १६१७ १६१८ १६१९ १६२० १६२१ १६२२ १६२३ १६२४ १६२५ १६२६ १६२७ १६२८ १६२९ १६३० १६३१ १६३२ १६३३ १६३४ १६३५ १६३६ १६३७ १६३८ १६३९ १६४० १६४१ १६४२ १६४३ १६४४ १६४५ १६४६ १६४७ १६४८ १६४९ १६५० १६५१ १६५२ १६५३ १६५४ १६५५ १६५६ १६५७ १६५८ १६५९ १६६० १६६१ १६६२ १६६३ १६६४ १६६५ १६६६ १६६७ १६६८ १६६९ १६७० १६७१ १६७२ १६७३ १६७४ १६७५ १६७६ १६७७ १६७८ १६७९ १६८० १६८१ १६८२ १६८३ १६८४ १६८५ १६८६ १६८७ १६८८ १६८९ १६९० १६९१ १६९२ १६९३ १६९४ १६९५ १६९६ १६९७ १६९८ १६९९ १७०० १७०१ १७०२ १७०३ १७०४ १७०५ १७०६ १७०७ १७०८ १७०९ १७१० १७११ १७१२ १७१३ १७१४ १७१५ १७१६ १७१७ १७१८ १७१९ १७२० १७२१ १७२२ १७२३ १७२४ १७२५ १७२६ १७२७ १७२८ १७२९ १७३० १७३१ १७३२ १७३३ १७३४ १७३५ १७३६ १७३७ १७३८ १७३९ १७४० १७४१ १७४२ १७४३ १७४४ १७४५ १७४६ १७४७ १७४८ १७४९ १७५० १७५१ १७५२ १७५३ १७५४ १७५५ १७५६ १७५७ १७५८ १७५९ १७६० १७६१ १७६२ १७६३ १७६४ १७६५ १७६६ १७६७ १७६८ १७६९ १७७० १७७१ १७७२ १७७३ १७७४ १७७५ १७७६ १७७७ १७७८ १७७९ १७८० १७८१ १७८२ १७८३ १७८४ १७८५ १७८६ १७८७ १७८८ १७८९ १७९० १७९१ १७९२ १७९३ १७९४ १७९५ १७९६ १७९७ १७९८ १७९९ १८०० १८०१ १८०२ १८०३ १८०४ १८०५ १८०६ १८०७ १८०८ १८०९ १८१० १८११ १८१२ १८१३ १८१४ १८१५ १८१६ १८१७ १८१८ १८१९ १८२० १८२१ १८२२ १८२३ १८२४ १८२५ १८२६ १८२७ १८२८ १८२९ १८३० १८३१ १८३२ १८३३ १८३४ १८३५ १८३६ १८३७ १८३८ १८३९ १८४० १८४१ १८४२ १८४३ १८४४ १८४५ १८४६ १८४७ १८४८ १८४९ १८५० १८५१ १८५२ १८५३ १८५४ १८५५ १८५६ १८५७ १८५८ १८५९ १८६० १८६१ १८६२ १८६३ १८६४ १८६५ १८६६ १८६७ १८६८ १८६९ १८७० १८७१ १८७२ १८७३ १८७४ १८७५ १८७६ १८७७ १८७८ १८७९ १८८० १८८१ १८८२ १८८३ १८८४ १८८५ १८८६ १८८७ १८८८ १८८९ १८९० १८९१ १८९२ १८९३ १८९४ १८९५ १८९६ १८९७ १८९८ १८९९ १९०० १९०१ १९०२ १९०३ १९०४ १९०५ १९०६ १९०७ १९०८ १९०९ १९१० १९११ १९१२ १९१३ १९१४ १९१५ १९१६ १९१७ १९१८ १९१९ १९२० १९२१ १९२२ १९२३ १९२४ १९२५ १९२६ १९२७ १९२८ १९२९ १९३० १९३१ १९३२ १९३३ १९३४ १९३५ १९३६ १९३७ १९३८ १९३९ १९४० १९४१ १९४२ १९४३ १९४४ १९४५ १९४६ १९४७ १९४८ १९४९ १९५० १९५१ १९५२ १९५३ १९५४ १९५५ १९५६ १९५७ १९५८ १९५९ १९६० १९६१ १९६२ १९६३ १९६४ १९६५ १९६६ १९६७ १९६८ १९६९ १९७० १९७१ १९७२ १९७३ १९७४ १९७५ १९७६ १९७७ १९७८ १९७९ १९८० १९८१ १९८२ १९८३ १९८४ १९८५ १९८६ १९८७ १९८८ १९८९ १९९० १९९१ १९९२ १९९३ १९९४ १९९५ १९९६ १९९७ १९९८ १९९९ २००० २००१ २००२ २००३ २००४ २००५ २००६ २००७ २००८ २००९ २०१० २०११ २०१२ २०१३ २०१४ २०१५ २०१६ २०१७ २०१८ २०१९ २०२० २०२१ २०२२ २०२३ २०२४ २०२५ २०२६ २०२७ २०२८ २०२९ २०३० २०३१ २०३२ २०३३ २०३४ २०३५ २०३६ २०३७ २०३८ २०३९ २०४० २०४१ २०४२ २०४३ २०४४ २०४५ २०४६ २०४७ २०४८ २०४९ २०५० २०५१ २०५२ २०५३ २०५४ २०५५ २०५६ २०५७ २०५८ २०५९ २०६० २०६१ २०६२ २०६३ २०६४ २०६५ २०६६ २०६७ २०६८ २०६९ २०७० २०७१ २०७२ २०७३ २०७४ २०७५ २०७६ २०७७ २०७८ २०७९ २०८० २०८१ २०८२ २०८३ २०८४ २०८५ २०८६ २०८७ २०८८ २०८९ २०९० २०९१ २०९२ २०९३ २०९४ २०९५ २०९६ २०९७ २०९८ २०९९ २१०० २१०१ २१०२ २१०३ २१०४ २१०५ २१०६ २१०७ २१०८ २१०९ २११० २१११ २११२ २११३ २११४ २११५ २११६ २११७ २११८ २११९ २१२० २१२१ २१२२ २१२३ २१२४ २१२५ २१२६ २१२७ २१२८ २१२९ २१३० २१३१ २१३२ २१३३ २१३४ २१३५ २१३६ २१३७ २१३८ २१३९ २१४० २१४१ २१४२ २१४३ २१४४ २१४५ २१४६ २१४७ २१४८ २१४९ २१५० २१५१ २१५२ २१५३ २१५४ २१५५ २१५६ २१५७ २१५८ २१५९ २१६० २१६१ २१६२ २१६३ २१६४ २१६५ २१६६ २१६७ २१६८ २१६९ २१७० २१७१ २१७२ २१७३ २१७४ २१७५ २१७६ २१७७ २१७८ २१७९ २१८० २१८१ २१८२ २१८३ २१८४ २१८५ २१८६ २१८७ २१८८ २१८९ २१९० २१९१ २१९२ २१९३ २१९४ २१९५ २१९६ २१९७ २१९८ २१९९ २२०० २२०१ २२०२ २२०३ २२०४ २२०५ २२०६ २२०७ २२०८ २२०९ २२१० २२११ २२१२ २२१३ २२१४ २२१५ २२१६ २२१७ २२१८ २२१९ २२२० २२२१ २२२२ २२२३ २२२४ २२२५ २२२६ २२२७ २२२८ २२२९ २२३० २२३१ २२३२ २२३३ २२३४ २२३५ २२३६ २२३७ २२३८ २२३९ २२४० २२४१ २२४२ २२४३ २२४४ २२४५ २२४६ २२४७ २२४८ २२४९ २२५० २२५१ २२५२ २२५३ २२५४ २२५५ २२५६ २२५७ २२५८ २२५९ २२६० २२६१ २२६२ २२६३ २२६४ २२६५ २२६६ २२६७ २२६८ २२६९ २२७० २२७१ २२७२ २२७३ २२७४ २२७५ २२७६ २२७७ २२७८ २२७९ २२८० २२८१ २२८२ २२८३ २२८४ २२८५ २२८६ २२८७ २२८८ २२८९ २२९० २२९१ २२९२ २२९३ २२९४ २२९५ २२९६ २२९७ २२९८ २२९९ २३०० २३०१ २३०२ २३०३ २३०४ २३०५ २३०६ २३०७ २३०८ २३०९ २३१० २३११ २३१२ २३१३ २३१४ २३१५ २३१६ २३१७ २३१८ २३१९ २३२० २३२१ २३२२ २३२३ २३२४ २३२५ २३२६ २३२७ २३२८ २३२९ २३३० २३३१ २३३२ २३३३ २३३४ २३३५ २३३६ २३३७ २३३८ २३३९ २३४० २३४१ २३४२ २३४३ २३४४ २३४५ २३४६ २३४७ २३४८ २३४९ २३५० २३५१ २३५२ २३५३ २३५४ २३५५ २३५६ २३५७ २३५८ २३५९ २३६० २३६१ २३६२ २३६३ २३६४ २३६५ २३६६ २३६७ २३६८ २३६९ २३७० २३७१ २३७२ २३७३ २३७४ २३७५ २३७६ २३७७ २३७८ २३७९ २३८० २३८१ २३८२ २३८३ २३८४ २३८५ २३८६ २३८७ २३८८ २३८९ २३९० २३९१ २३९२ २३९३ २३९४ २३९५ २३९६ २३९७ २३९८ २३९९ २४०० २४०१ २४०२ २४०३ २४०४ २४०५ २४०६ २४०७ २४०८ २४०९ २४१० २४११ २४१२ २४१३ २४१४ २४१५ २४१६ २४१७ २४१८ २४१९ २४२० २४२१ २४२२ २४२३ २४२४ २४२५ २४२६ २४२७ २४२८ २४२९ २४३० २४३१ २४३२ २४३३ २४३४ २४३५ २४३६ २४३७ २४३८ २४३९ २४४० २४४१ २४४२ २४४३ २४४४ २४४५ २४४६ २४४७ २४४८ २४४९ २४५० २४५१ २४५२ २४५३ २४५४ २४५५ २४५६ २४५७ २४५८ २४५९ २४६० २४६१ २४६२ २४६३ २४६४ २४६५ २४६६ २४६७ २४६८ २४६९ २४७० २४७१ २४७२ २४७३ २४७४ २४७५ २४७६ २४७७ २४७८ २४७९ २४८० २४८१ २४८२ २४८३ २४८४ २४८५ २४८६ २४८७ २४८८ २४८९ २४९० २४९१ २४९२ २४९३ २४९४ २४९५ २४९६ २४९७ २४९८ २४९९ २५०० २५०१ २५०२ २५०३ २५०४ २५०५ २५०६ २५०७ २५०८ २५०९ २५१० २५११ २५१२ २५१३ २५१४ २५१५ २५१६ २५१७ २५१८ २५१९ २५२० २५२१ २५२२ २५२३ २५२४ २५२५ २५२६ २५२७ २५२८ २५२९ २५३० २५३१ २५३२ २५३३ २५३४ २५३५ २५३६ २५३७ २५३८ २५३९ २५४० २५४१ २५४२ २५४३ २५४४ २५४५ २५४६ २५४७ २५४८ २५४९ २५५० २५५१ २५५२ २५५३ २५५४ २५५५ २५५६ २५५७ २५५८ २५५९ २५६० २५६१ २५६२ २५६३ २५६४ २५६५ २५६६ २५६७ २५६८ २५६९ २५७० २५७१ २५७२ २५७३ २५७४ २५७५ २५७६ २५७७ २५७८ २५७९ २५८० २५८१ २५८२ २५८३ २५८४ २५८५ २५८६ २५८७ २५८८ २५८९ २५९० २५९१ २५९२ २५९३ २५९४ २५९५ २५९६ २५९७ २५९८ २५९९ २६०० २६०१ २६०२ २६०३ २६०४ २६०५ २६०६ २६०७ २६०८ २६०९ २६१० २६११ २६१२ २६१३ २६१४ २६१५ २६१६ २६१७ २६१८ २६१९ २६२० २६२१ २६२२ २६२३ २६२४ २६२५ २६२६ २६२७ २६२८ २६२९ २६३० २६३१ २६३२ २६३३ २६३४ २६३५ २६३६ २६३७ २६३८ २६३९ २६४० २६४१ २६४२ २६४३ २६४४ २६४५ २६४६ २६४७ २६४८ २६४९ २६५० २६५१ २६५२ २६५३ २६५४ २६५५ २६५६ २६५७ २६५८ २६५९ २६६० २६६१ २६६२ २६६३ २६६४ २६६५ २६६६ २६६७ २६६८ २६६९ २६७० २६७१ २६७२ २६७३ २६७४ २६७५ २६७६ २६७७ २६७८ २६७९ २६८० २६८१ २६८२ २६८३ २६८४ २६८५ २६८६ २६८७ २६८८ २६८९ २६९० २६९१ २६९२ २६९३ २६९४ २६९५ २६९६ २६९७ २६९८ २६९९ २७०० २७०१ २७०२ २७०३ २७०४ २७०५ २७०६ २७०७ २७०८ २७०९ २७१० २७११ २७१२ २७१३ २७१४ २७१५ २७१६ २७१७ २७१८ २७१९ २७२० २७२१ २७२२ २७२३ २७२४ २७२५ २७२६ २७२७ २७२८ २७२९ २७३० २७३१ २७३२ २७३३ २७३४ २७३५ २७३६ २७३७ २७३८ २७३९ २७४० २७४१ २७४२ २७४३ २७४४ २७४५ २७४६ २७४७ २७४८ २७४९ २७५० २७५१ २७५२ २७५३ २७५४ २७५५ २७५६ २७५७ २७५८ २७५९ २७६० २७६१ २७६२ २७६३ २७६४ २७६५ २७६६ २७६७ २७६८ २७६९ २७७० २७७१ २७७२ २७७३ २७७४ २७७५ २७७६ २७७७ २७७८ २७७९ २७८० २७८१ २७८२ २७८३ २७८४ २७८५ २७८६ २७८७ २७८८ २७८९ २७९० २७९१ २७९२ २७९३ २७९४ २७९५ २७९६ २७९७ २७९८ २७९९ २८०० २८०१ २८०२ २८०३ २८०४ २८०५ २८०६ २८०७ २८०८ २८०९ २८१० २८११ २८१२ २८१३ २८१४ २८१५ २८१६ २८१७ २८१८ २८१९ २८२० २८२१ २८२२ २८२३ २८२४ २८२५ २८२६ २८२७ २८२८ २८२९ २८३० २८३१ २८३२ २८३३ २८३४ २८३५ २८३६ २८३७ २८३८ २८३९ २८४० २८४१ २८४२ २८४३ २८४४ २८४५ २८४६ २८४७ २८४८ २८४९ २८५० २८५१ २८५२ २८५३ २८५४ २८५५ २८५६ २८५७ २८५८ २८५९ २८६० २८६१ २८६२ २८६३ २८६४ २८६५ २८६६ २८६७ २८६८ २८६९ २८७० २८७१ २८७२ २८७३ २८७४ २८७५ २८७६ २८७७ २८७८ २८७९ २८८० २८८१ २८८२ २८८३ २८८४ २८८५ २८८६ २८८७ २८८८ २८८९ २८९० २८९१ २८९२ २८९३ २८९४ २८९५ २८९६ २८९७ २८९८ २८९९ २९०० २९०१ २९०२ २९०३ २९०४ २९०५ २९०६ २९०७ २९०८ २९०९ २९१० २९११ २९१२ २९१३ २९१४ २९१५ २९१६ २९१७ २९१८ २९१९ २९२० २९२१ २९२२ २९२३ २९२४ २९२५ २९२६ २९२७ २९२८ २९२९ २९३० २९३१ २९३२ २९३३ २९३४ २९३५ २९३६ २९३७ २९३८ २९३९ २९४० २९४१ २९४२ २९४३ २९४४ २९४५ २९४६ २९४७ २९४८ २९४९ २९५० २९५१ २९५२ २९५३ २९५४ २९५५ २९५६ २९५७ २९५८ २९५९ २९६० २९६१ २९६२ २९६३ २९६४ २९६५ २९६६ २९६७ २९६८ २९६९ २९७० २९७१ २९७२ २९७३ २९७४ २९७५ २९७६ २९७७ २९७८ २९७९ २९८० २९८१ २९८२ २९८३ २९८४ २९८५ २९८६ २९८७ २९८८ २९८९ २९९० २९९१ २९९२ २९९३ २९९४ २९९५ २९९६ २९९७ २९९८ २९९९ ३०००

बालचन्द, अभयचन्द्रके शिष्य, ४१ मू० ११०.
बालचन्द, माघनन्दिके शिष्य, ५५ मू० १११.
बालसरस्वती उ०, ५५ मू० ८३.
बालेन्दु (देखो बालचन्द्र, अभयचन्द्रके शिष्य)
बाहुबलि (भुजबलि, दोर्बलि,) देखो गुम्मट ४५, ३६५.
बाहुबलि चरित मू० १८, ११.
बुद्धिल १,१०५ मू० ६१, १११.
बृहत्कथाकोश (हरिषेणकृत) मू० ५६.
बेलगोलगोम्मटेश्वर चरित मू० ५.
बोम्मण कवि ४५ मू० २२.
बोम्मलदेवि ४८, १०१
ब्रह्मज्ञानसागर, अभयचन्द्रके शिष्य, १११, मू० ११३.
ब्रह्मदेव (टीकाकार) मू० १२.
ब्रह्म नेमिदत्त अभयचन्द्र स० १११ मू० ११३.
ब्रह्महेमाल १२०

भ.

भट्टाकलंक (देखो अकलंक) ५१, १०१, मू० ११८.
भट्टाकलंक, अकलंकके शिष्य, ११९.
भद्रबाहु (भद्रबाहु) ३, १०, ४०, ५१, ७१, १०९, १०८ मू० १३, १८, २८-३६, ६९, ११०, १०६, १४१, १६८, १८९.
भद्रबाहु चरित (रत्ननन्दिकृत) मू० २८, ६०
भद्रबाहुस्वामी २४८.
भरत व भरतेश्वर ७९, ११५, ११८.
भानुकीर्ति, पद्मनन्दिगुरुके शिष्य, १० मू० ११२.
भानुकीर्ति, नयकीर्तिके शिष्य, ८६, ७०, १०५, १२१, ११४, ११८, ११७, ११८, १४८, १६१, ३९१, मू० ४८, ९६ ९७, १५४, १५५, १५६.
भानुकीर्ति, माघनन्दिके शिष्य, ४९१, मू० १५९.
भानुचन्द्र, त्रिभुवनराजगुरु, शि० व० १११, मू० ११७.
भुजबलिचरित (पद्मकविकृत) मू० २१, २८, १०५.
भुजबलि शतक (दोर्बलिकृत) मू० २१, २६, ११, ११०.
भूतकीर्ति देव १०१ मू० ११८.
भूतबलि, अर्हद्बलिके शिष्य १०५ मू० १२९, ११८.

म

मङ्गरायकवि १०८ मू० १८.
मण्डलाचार्य ३०५१, ४८, ६१, १११.
मण्डलदेवगण्ड ११५ मू० ११५, ११८.
मतिसागर, भावसेनके शिष्य ०१ मू० १२९.
मल्लिषेणप्रशस्ति (देखो नगरतालुक) ८०, ९५ मू० १४०.
मल्लि शिष्य १०८.
मल्लिषेण मन्त्रवादी ४८, १६९.

मलधारि देव ११३ भू० १३७.
मलधारि देव, धीरदेवके शिष्य ४२, ४३.
मलधारि, नयनन्दिविमुक्तके शिष्य, १०४ भू० १५२.
मलधारि मल्लिषेण, अजितसेनके शिष्य, ५४, ४९३, ४९५ भू० ११६, ११७, १४०, १५८.
मलधारि रामचन्द्र, अनन्तकीर्तिके शिष्य, ४१.
मलधारि स्वामी ११८ भू० १५.
मलधारि हेमचन्द्र, गोपनन्दिके शिष्य, ५५ भू० १३३.
मल्लिदेव २५१.
मल्लिषेण ४६१ भू० १५८.
मल्लिसेन भट्टारक १४६ भू० ११८, १५२.
मल्लिसेन, लक्ष्मीसेनके शिष्य १४७ भू० १६०.
महदेव १५१ भू० १५१.
महामण्डलाचार्य ३० ४०, ८९, ९६, ११९, ११० ११७, ४०५, ४०९, ४१०.
महावीर १०५ भू० ११८.
महावीराचार्य (गणितसार कर्ता) भू० ७६.
महासेन (देखो आसेन)
महिधर १०५ भू० ११८.
महेन्द्रकीर्ति, लक्ष्मीसेनके शिष्य ४७, ५०.
महेन्द्रचन्द्र ५५ भू० १३३.
महेश्वर ५४ भू० ११८.
माधवनन्दि १०५ भू० ११४.
माधवनन्दि, कुमुदचन्द्रके शिष्य १२९
माधवनन्दि, कुलचन्द्रके शिष्य ४० भू० ११२, ११३.
माधवनन्दि, कुलभूषणके शिष्य ४०, भू० ११०.
माधवनन्दि, गुणगुप्तके शिष्य भू० ११८.
माधवनन्दि, चतुर्मुखके शिष्य ५५ भू० ११३.
माधवनन्दि, चारुकीर्तिके शिष्य ८१ भू० ११०.
माधवनन्दि, जयकीर्तिके शिष्य ८१, ११४, ११८, ११० भू० १५७.
माधवनन्दि, धीरदेवके शिष्य ४९.
माधवनन्दि भट्टारक, भानुकीर्तिके शिष्य ४९९ भू० १५९
माधवनन्दि यती ४९९ भू० १००
माधवनन्दि सि० च० १११ भू० १५९
माधवनन्दि सि० दे० ४७१.
माधिवनन्दि १०५
माधिवनन्दि, गुणचन्द्रके शिष्य ८१
माधव, देवकीर्तिके शिष्य १९ भू० १६, १५७
माधवचन्द्र, गुणचन्द्रके शिष्य ४१ १४४ भू० १५२.
माधवसेन संघी (अ० देखो) ११९
माधवसेन सूरि (अ० देखो) १११ भू० १५१.

मुनिचन्द्रदेव, उदयचन्द्रके शिष्य ११७ भू० १५९.
मुनिवंशाभ्युदय (चिदानन्दकृत) भू० २७, ४५, ५९, ६२, १०५.
मूलसंघ ४०, ४१, ४३, ४५-५०, ५३, ५५, ५६, ५९, ६३, ६४, ९०, १०५, १११, १२४, १२९, १३०, १३२, १३७, १३८, १४४, २२९, २१७, २१८-२२०, २२४, २२७, २२९, २३०, २३८, २३९, ४२१, ४२६, ४१०, ४४६, ४७१, ४७३, ४८९, ४९१, ४९२, ४९४, ४९९, ५०० भू० १०३, १२९, १२१, १२३, १२५, १२६, १४४.
मेघचन्द्र, गुणचन्द्रके सहपाठी, ४२
मेघचन्द्र, नयकीर्तिके शिष्य, ४३.
मेघचन्द्र, बालचन्द्रके शिष्य, ४९६, भू० १५०
मेघचन्द्र, माघनन्दिके शिष्य, ५५ भू० १२२.
मेघचन्द्र, वासवेन्दिके गुरु ४१.
मेघचन्द्र, सकलचन्द्रके शिष्य ४०, ५०, ५१, ५६, भू० ९१, ९२, १२६, १९४
मेघनन्दि २१९ भू० १००, १२१
मेघसेन १०० भू० १२४
मेघसेनमुनि ४१ भू० १२१
मेरेय १०१ भू० १२०.
मोक्ष १०१ भू० १२९
मौनीगुरु २, ९ भू० १४९.
मौर्य १०५ भू० १२५.

य

यशोबाहु १०५.
यशःकीर्ति, गोपनन्दिके शिष्य ५५ भू० ११२, १२१, १४१.
यशःपाल भू० १२६, १२७.
यशोबाहु भू० १२६.
यशोभद्र भू० १२६, १२७.

र

रत्नकरण्ड श्रावकाचार (समन्तभद्रकृत) भू० ७६.
रत्ननन्दि, भक्तिकीर्तिके शिष्य भू० ५८, ६०.
रत्नमालिका (अमोघवर्षकृत) भू० ७६.
रविचन्द्र, कुलभूषणके शिष्य ४१, ४३, २११.
रविचन्द्र ५२ भू० १५१.
रसरत्नाकर (नागार्जुनकृत) ४० भू० १४३.
रामकीर्ति ११९ भू० १११.
रामसेनिका (देवसेनकृत) भू० २१, २२, ३०.
रायचन्द्रजी शास्त्रमाला २०७.
लक्ष्मीचन्द्र, बालचन्द्रके शिष्य ४१ भू० १३०.
लाडबागड ४० भू० ५०.
लाड-बागडगण १३०.
लोकविभाग (सर्वनन्दिकृत) ५४.

ल

लक्खणदेव ११२.
लक्खणनन्दि, देवकीर्ति प० दे० के शिष्य १९, ४० मू० ९६, १५७.
लक्ष्मीसेन, राजकीर्तिके शिष्य ११९, मू० १६१.
लक्ष्मीसेनभट्टारक १४७.
लक्षितकीर्ति, अनन्तकीर्तिके शिष्य मू० १४, ५८.
लोह (लोहार्य) १, १०५, मू० ६१, ११५, ११६, १२७.

व

वकनाथ ५५, मू० १११, १४६.
वकपीर ५४, ४५१ मू० ११७, ११८.
वज्रनन्दि ५४ मू० ११८.
वप्पदेव ५५ मू० १११.
वर्धमानदेव ५१ मू० १५५.
वर्धमानाचार्य मू० ७५.
वलि १०५.
वसुदेव १०५ मू० ११८.
वसुनन्दि १०५.
वादिकोलाहल १, ५४, ४५१.
वादिगज १०५.
वादिचतुर्मुख ३० ४०.
वादिराज ४५१, ४५४, ४५५ मू० ८१, ९५, ११७, १५८.
वादिराज, अरिसागरके शिष्य ५४, मू० ११९, १४१.
वादिसिंह ३० मू० १४१.
वादीभकेसरी ३० ५१.
वादीभसिंह ४५१.
वायुभूति १०५ मू० १२५
वासवचन्द्र, चतुर्मुख देवके शिष्य, ५९ मू० ८१, १११, १४१
विजय १०५ मू० १२६.
विजयधवल (ग्रंथ) ४११.
विद्याधनञ्जय ३० ५४ मू० ११९
विद्यानन्दि १०५
विनीत १०५ मू० ११८
विमलचन्द्र ५४ मू० ११९
विशाख १, १०५ मू० ५७, ५९, ६१, ६२, १२६
विशोक भट्टारक १०१ मू० १५१.
विष्णु १०५ मू० ६०, ६१, १२५.
विष्णुदेव १, १२५
वीर १०५ मू० ११८.
वीरनन्दि, मेघचन्द्रके शिष्य, ४१, ५०.
वीरनन्दि, महेन्द्रकीर्तिके शिष्य, ४०, ५०.
वीरसेन ४०, ५०.
वृषभनाथ ४०, ५०.
वृषभनन्दि ११, ५५, १०१ मू० १४१, १५१.
वृषभसेन १८.
वृषभसेन ३१०.
वेदेन्दु १९.
वैद्यराज (पूज्यपादस्वामी) मू० १०१.

श

शब्दचतुर्मुख ५४ मू० ८१.
शब्दब्रह्मभट्टारक (पूज्यपादस्वामी) मू० १४१.

शशिमति गन्ति (आर्यिका) ३५.
शाकटायन सूत्रन्यास भू० १४१.
शान्तकीर्ति, अजितकीर्तिके शिष्य ७२ भू० १६२.
शान्तनन्दि २२४.
शान्तराज पं०, भू० १९, २१, ३३.
शान्तिकीर्ति ११२, ११३ भू० १३७.
शान्तिदेव ५४, ४९३ भू० ८६, १३७, १४०.
शान्तिनाथ, अजितसेनके शिष्य, ५४ भू० १४०.
शान्तिभट्टारकाचार्य ११३ भू० १३७.
शान्तिसिंग पं० ४९५ भू० १५८.
शान्तिसेन १७–१८ भू० ५६, १४९.
शान्तिसेनदेव ४९३ भू० ११७.
शान्तीश, गुणचन्द्र म०के गुरु भू० ८२.
शास्त्रसार (ग्रंथ) १२९ भू० १००.
शिवकोटि, °आचार्य, °सूरि, समन्तभद्रके गुरु, १०५ भू० १३४, १४१.
शुभकीर्ति, चतुर्मुखदेवके शिष्य, ५५ भू० १३३.
शुभकीर्ति, देवकीर्तिके शिष्य, ४० भू० ११६
शुभकीर्ति, देवेन्द्र विशालकीर्तिके शिष्य, १११ भू० १३६.
शुभकीर्ति, बालचन्द्रके शिष्य, ५०, १८८ भू० १५५.
शुभचन्द्र, देवकीर्तिके शिष्य, ४० भू० ११६.
शुभचन्द्र, गं० वि० म० दे० के शिष्य, ४३, ४५–४९, ५९, ६३–६५, ९०, १३९, १४४, ३६०, ४४६, ४४७, ४८६, ४८९ भू० ४९, ९१, ९२, १५३, १५५.
शुभचन्द्र, माघनन्दिके शिष्य, ४७१ भू० ९८, १३०, १५८.
शुभचन्द्र, म० रामचन्द्रके शिष्य ४१ भू० ११२.
श्रीकीर्ति १०५.
श्रीदेव १४५.
श्रीदेवाचार्य २१३ भू० १५२.
श्रीधरदेव, दामनन्दिके शिष्य, ४३,४३.
श्रीनन्द्याचार्य ४९३ भू० ११७.
श्रीपाल ५४, ४९३, ४९५, भू० ८८, ९९, ११७, १३९, १५८.
श्रीपुरान्वय (देखो पुरान्वय) २१० भू० १४७.
श्रीभूषण १०५.
श्रीमति गन्ति (आर्यिका) १३१
श्रीवर्धदेव ५४ भू० ११८.
श्रीविजय ५४, ४९३ भू० ७५, ११७, १३९.
श्रीविहार (उत्सव) ४१५, ८१५.
श्रीसेन २२०.
श्रुतकीर्ति ८०, १०५, १०८ भू० १३५, १४१.
श्रुतकेवलि ४०, ५८, १०५, १०८.
श्रुतबिन्दु (चन्द्रकीर्तिका) ५४ भू० १३९.

सिंहनन्दि ५४, ३७४, ४८६, भू० ७१, ७२, १३८.
सिंहनन्दिभट्टाचार्य ११३ भू० १३७.
सिंहनन्याचार्य ३७४, ४९३, भू० २६ १३७, १६०.
सिंहणार्य १०५.
सिंहसंघ १०५, १०८ भू० १४५.
सुजनोत्तंस=बोप्पकवि ८५.
सुधर्म १०५ भू० १२५-१२७.
सुभद्र १०५ भू० १२६.
सुमतिदेव ५४ भू० १३८.
सुमतिशतक (सुमति देवकृत) ५४.
सुरकीर्ति ४३१ भू० १५८.
सेनसघ १०५, १०८.
सोमदेव भू० ७७.
सोमचन्द्र ११३ भू० १३७
सोमश्री (आर्यिका) ११३.
सोमसेनदेव ३७१ भू० १६०.
स्थलपुराण (ग्रंथ) भू० २३, २७.
स्थूलभद्र भू० ५७.
स्वामी ५४ भू० ८३.
स्वास्म्यशास्त्र (पूज्यपादकृत) ४० भू० १४१.

ह

हनसोगे शाखा ७० भू० १४६.
हरिषेण (कथाकोषकर्ता) भू० ५६.
हलधर १०५ भू० १२८.
हस्तिय नयकीर्ति ८९, ४५४, ४७५.
हरिवंशपुराण भू० ३०, १२५, १२७.
हेमचन्द्राचार्य (श्वे०) भू० ६६.
हेमचन्द्रकीर्ति, शान्तिकीर्तिके शिष्य ११२.भू० १६०.
हेमसेन ५४ भू० १३९.

अनुक्रमणिका २

इस अनुक्रमणिकामें जैन मुनि, आर्यिका, कवि व
प्रकारके नामोंका समावेश किया गया है। नामके पश्चा
भू० के पश्चात्के अंकोंसे भूमिका-पृष्ठका तात्पर्य है।

इस अनुक्रमणिकामें निम्नलिखित संकेताक्षरोंका प्रयोग
उ०=उपाधि। को० ब०=कोल्हापुर नरेश। गं० ब०=
गंग राजकुमार। ग्रं०=ग्रंथ। ग्रा०=ग्राम। च० ब०=चंगाल्व
चालुक्य नरेश। चामु०=चामुण्डराय। चो० रा०=चोल रा
चोल सेनापति। जा०=जाति। जै० मं०=जैन मंदिर। दु०=
मित्र। दु०=दुर्ग। द्वि०=द्वितीय। न०=नदी। नि० सर०=नि
ब०=नोळम्ब नरेश। पा० सर०=पाण्ड्य सरदार। पु०=पुरुष
मित्र पृथि। पौ० ब०=पौरावाड नरेश। प्र०=प्रथम। मै०=
मैसूर नरेश। मौ० ब०=मौर्य नरेश। रा० ब०=राष्ट्रकूट नरेश।
कूट राजकुमार। रा० वं०=राजवंश। वि० ब०=विजयनगर न
पृथ्वीराम नरेश। सर०=सरदार। सरो०=सरोवर। से० सेनापति।
हो० ब०=होय्सल नरेश।

अ

अकलंकदेव=कुण्ड द्वि०, रा० व०, भू० ७६

अक्कनबसदि=पार्श्वनाथ मंदिर भू० ४३, ६७

अक्कबे, चन्द्रमौलि मं० की माता १२८ भू० ६७.

अक्षपाद रा० ५५

अक्षयकीर्तिव्रतकथा भू० १८.

अक्षले, ग्रा० ६.

अक्षराजी पु०, भू० १०.

अक्षपाद जा० ३२८ १४७ भू० ११०.

अजितादेवी चामु० की मा

अजेदार राष्ट्र अजेदारेचामु

अज्जण्ण पु० १७१ भू०

अञ्जनगिरि क्षेत्र० ४१

अत्तिमब्बे, ग्रा०, भू० १०१

अत्तिमब्बे, अंतिमब्बे, ११४, १४८, भू० ५०

अदंडिस्वामि को० ब० ४१८, भू० ११०

अदियम चो० से० ५३, ९०, १३८, १६०, ४८६, ८९३ भू० ९०.
अध्याडिनायक पु० ७४.
अनन्तपुर, जिला, भू० १११.
अन्दमासल्ल, स्था० २४.
अन्धाप्पुरचोल दु० ५६.
अन्याय (एक टैक्स) १२८.
अप्रतिमवीर उ० ४३४.
अभ्यागते (एक टैक्स) १३७.
अमर, हुब्ब म०के भ्राता १३८ भू० ९५.
अमोघवर्ष प्र०, रा० न०, भू० ७६.
अमोघवर्ष तृ०=अद्देग, रा० न०, भू० ७४, ७७.
अम्मेले, ग्रा० ३६१
अम्मनहट्ट, स्था० ५९.
अम्मावोंडे, ग्रा० ६८.
अरकेरे, ग्रा० १२० भू० १०९.
अरकेल्गुड तालुका, भू० १०९.
अरसादित्य, म० ३५१.
अरिराय विभाड, उ० ११६.
अरेगलबस्ति भू० ५१.
अरेयकेरे, सरो० ५१.
अर्ककीर्ति, व० १०५.
अर्जुनहीनग्राम, ३८२.
अर्थर वेल्सली साहब भू० १८.
अर्हन्नन्दि, ग्रा० ८३, ८८६.
अलसकुमार, पु० १०५ भू० ११०.
अलाउद्दीन खिलजी भू० ८५.
अलियमल्लिसेट्टि, ८०.
अल्ल, सर०, ३८.
अवधदेश, भू० ११९.
अवरेहाल ग्रा० १२२.
अशोक, न०, भू० ६८.
अहमदनगर भू० १०१.
अहितमार्तण्ड, उ० ३८.
अगडि, ग्रा० ३६१ भू० ८३.
अंगरिक-कालिसेट्टि, पु० ३६१.
आदने अक्षरी मं०, भू० ६८.
आगरा नगर, भू० ११९.
आचलदेवि, आचले, आचाम्बा, आदित्यवंश=चन्द्रमौलि मं० की भार्या, १०७, १२४, ४२६, ४९४ भू० ४४, ९७, ९८.
आचलदेवि, हेम्माडिदेवकी भार्या १२४.
आचार्यिके, अरसादित्यकी भार्या, १५१.
आत्रेयस गोत्र ८१४.
आदितीर्थ, कुण्ड, १२१, ४५१.
आदिलशाह भू० १०१.
आनेयगोन्दि, ग्रा० १३६.
आर्य, ग्रा० ८९.
आलेगोम्मु (एक टैक्स) ८१४.
आलेयुड (एक टैक्स) ८१४.
आम्बुरतम्मडिगड, पु० १५५.
आश्वलायन सूत्र, मं० ८१४.
आहवमल्ल, च०व० ५४ भू० ८१, १४०.
आहवमल्ल-सोमेश्वर, रा० ४०, भू० ८८.

इ

इक्कारेरी, मुडबद्रिकी रानी, भू० १४.
इक्कुर, ग्रा० ११.

ओम्मालिगेबहाल, स्था० ५१.
ओरेयूर, चो० रा० ५००, मू० ११०, १११.

क

कगेरे, ग्रा० ९० मू० ९६.
कबिनदोणे, कुण्ड, मू० १४.
कटकसेसे (एक टैक्स) ११७.
कडप्प= सिद्धवेट २७–२९, ३३, १५२, १५९, १८९ मू० ६३, ६४, ११६.
कडवदहोल, कुण्ड १२४.
कडसतगाडि, ग्रा० ४५९, ४६०.
कणार, रा० ४९३.
कतले बस्ति मू० ५, १३, ९१.
कदन कंठेय उ० १८.
कदम्ब, गु०, मू० १४.
कदम्ब, रा० वं० ११८, २८२, मू० १०८.
कदम्बहल्लि, ग्रा०, मू० १०१.
कदिक दश १२२.
कन्नडा, वादिग्ज ८००, ८०८.
कन्नाचार, लिपी ९८.
कबेगाल, स्था०, मू० ८२, ९०, ९१.
कबे बसदि, जैनमंदिर ११५.
कबेंब, नगर, मू० ८६
कमिड, रा० १९.
कमाउ, ग्रा० ८११, ८१८
कमड, ग्रा० ८३ मू० १००.
कम्बनुवाडु, नाड, ९१, ४९२.
कम्बादुरायन बसदि, स्था० ११८.
कम्बिणदपोम्बु, एक टैक्स ४१४.
कमलपुर, कमुठपुर ११८, ४०५.
कम्पिला, रानी १५२.
कम्ब राजकुमार, गं० रा०, मू० ७८, ७९.
कम्मण्ण, रा० रा० १९.
कम्मट, टकसाल १२४.
कम्मनेन्य लोहित गोत्र ४७०.
करवप, स्था० १४७.
करहाटक, स्था० ५४ मू० १४१.
करिकाल चोल व०, मू० १११.
कर्कराज, रा० व०, मू० ७७, ८१.
कर्णाट, कर्णाटक, देश, ८३, १०१, ४१४, मू० ५९
कर्णाटक कुल १५१.
कलचुरि नरेश मू० ५०, ५८.
कलचुरि, ग्रा० १५९.
कलचाल, व० ५१, ११८.
कलबे, स्था० ११८.
कलश, ग्रा० ४१८.
कलिंगतोलप्पड, उ० ५७, मू० ७९.
कलिङ्ग, देश ११८, ४९९.
कलिङ्गवे वासुदेव, गु० १८.
कल्लहिनाडु, प्रांत ५३, ५५.
कल्लि, कल्लुंबि, व०, मू० ११–१३.
कल्याणु, कल्याणु, कल्याणु-पट्टवेट ३, २१, २८, ३८, ४०, ११८, १६०, १६१, १७३, १९०, १९९, २२०, मू० ५९.
कवाल, ग्रा०, मू० ४८, १०३.
कवि, गु० ५३ मू० ११३.

कल्याणी, चो० राजधानी भू० ८१.
कल्हल, एक नाला ५९.
कल्हि, प्रा० १३६.
कवा, प्रा० ३६.
कवाचारि, लेखक ५१.
कवि सेट्टि, प्र० ८९ भू० १२०.
कांचीपुर ५४, ९०, ११८, १६०, ४८६, भू० ७६, १४१.
कांचीदेश ४५५.
कांडर, प्रा० १४.
कांडारम्भ, एक टैक्स १५३.
कादम्बरी प्रं०(नागदेवकृत) भू० ११७.
काडुवट्टि, पल्लव नरेशोंकी उ० १८.
कापुर जिला भू० ८१
कान्यकुब्जनगर=कन्नौज भू० ५९.
कापालिक १८.
काम, (देखो मूल काम)
कामदेव, उच्छङ्गि सर० ४०, ९०, १२४, ११० भू० ११२.
कामलदेवी, नागदेव म० की पुत्री ४२ ११०.
कारकल, प्रा०, भू० ३४.
कालनूर, स्था०, भू० ११६.
कालबाडिगे, एक टैक्स ४३४.
कालम्बे, स्त्री, भू० ५२.
कालल्लदेवी, चामु० की माता भू० २४.
कावेरी, नदी, ५९ भू० १०९.
काशी नगर ८४, ४३५, ४३६.
काश्यप गोत्र ९८, ११७.
किकोरि, स्था० ४३३, ४३४.
किनूर=कीर्तिपुर ७.
किराड, जा० ३८.
किरियकलन सेट्टि, पु० ४२४.
किरिय चांडेय, पु० ८७.
किल्केरे स्था० २४.
कीर्तिनारायण, उ० ५७ भू० ७९
कीर्तिवर्म्मा, चा० न०, भू० ७५, ८०, ८१.
कुक्कुटसर्प ८५.
कुन्थनाथ जिनालय, भू० १०५.
कुम्भकोण, स्था० ४३५, ४५६, ४५७.
कुम्मट, स्था० ११० भू० ९७.
कुम्बेयनहल्लि, प्रा० ४९५.
कुरुक्षेत्र ५३, ५६, ५९, ८३, ४८६.
कुर्ग नगर, भू० ८३, ११०.
कुलोत्तुङ्ग चङ्गाल्व भट्टदेव, स० न० १०३ भू० १११.
कूगेब्रह्मदेव बस्ति, भू० १२.
कृष्ण (प्र०) रा० न०, भू० ७५.
कृष्ण (द्वि०) रा० न०, भू० ७६, ८०.
कृष्ण (तृ०) °राज, °राजेन्द्र, रा० न० ३८, ५४, ५७ भू० ७२, ७६–८०.
कृष्ण, °नृप, °राज, ओडेयर (प्र०) मै० न० ८३ भू० ४८, १०७.
कृष्णराज ओडेयर (तृ०) मै० न० ९८, ४३३, ४३४, भू० २०, २१, ३३, ४७, १०७, १०८.
कृष्णराज बहादुर वर्तमान मै० न०, भू० ३३, १०८.
कृष्णवेण्णा=कृष्णा नदी ११८.

केतङ्केरे, सरो० १२४.
केतिसेट्टि पु० ९५, १०४, ११०, १६१, भू० १२२.
केदार नाडरस सर० ४० भू० ११२
केन्तादिवहल, एक नाला १२४.
केम्पम्मणि श्री भू० ६.
केम्बरेयहल, एक नाला १२४.
केलियदेरी, केलेयन्दरसि, विनयादित्य हो० न० की रानी, १२४, ११७, ११८, ४९४, भू० ८७.
केलङ्केरे, ग्रा० ४०, ११७ भू०७५,९६.
केसहल्लि, ग्रा० ४८६.
केशवनाथ, महादेव च० न० के मं० १०१ भू० १६.
केदम, एक राजा १८.
कोङ्ग ग्रा० ५१, १४८.
कोङ्गवाडु, प्रदेश ११७.
कोङ्गराय तलपुर पु० ११८.
कोङ्गलि, ग्रा० ५६.
कोङ्गाल्व, रा० वं० ५०० भू० ८१, १०९
कोट्टु, ग्रन्थ ५६, १२८, ११०, ११०, १४८, ४९१, ४९४, ४९७, ४९९, भू० १०.
कोट्टपुर भू० ५६, ६०.
कोड्ड, स्था० ९.
कोड्डा, स्था० १०९.
कोनवन्द्र, ब्रा० ६० भू० ०८, ०८.
कोन्न, कोन्नर, ग्रा० ८०, ११०, १४८, भू० ९६.
कोपणपुर, स्था० १२१.
कोमरुर, पु० ५१, ५६, ११४, ११७, ११८, १४४.
कोलार, कुवलाल, राजधानी भू० ७१.
कोलाल ग्रा० ५६.
कोलिपाके, स्था० ४०८.
कोल्लापुर=कोल्हापुर ४०, ४२१, ४७१.
कोवल, स्था० २४.
कोशिक=श्रीराम् ११६.
कौण्डिन्य गोत्र ४०, ४१, ४५, ५१, ९०, १४४, १६०, ४८६.

ख

खचरपरी=श्रीमूलवासन, पी० वं० ११८.
खण्डलि, वंश १२८, ११०.
खाण्ड (एक देश) ११०.
खानहल, पु० ११९.
खुतरी, ईरान का बादशाह भू० ८०.
खेतपाल, पु० १६१–११५.
खोडिगदेव, रा० वं०, भू० ८८.

ग

गङ्ग, रा० वं० १८, ८५, ५८, ५९, ५९, ८५, १०९, ११०, ११८, १२१, १६१, २१५, ४१९, ४८६, भू० ००–०५, ८८, १०९ १८२.
गङ्ग, गङ्गल, गङ्गराज, श्रीपुरुष वं० ४१–४८, ५१, ६१, १०, ९९, ९६, ९०, ११०, १४८, १६०, ४८६, ४८८, ४८४, ४६१,

गेडेगलाभरण, उ०, भू० ७९.
गेरवाल=वघेरवाल ११८, ११९, ३८२.
गेरसोप्पे, स्था० ९७, ९९, १००–१०२, १३४, १३५, ३३४ भू० ४७.
गेसाजी, पु०, ३८२.
गोग्गि, सर० ३३७.
गोणूर, ग्रा० ३८.
गोदावरी नदी ५९.
गोनासा, पु० ३८२, ३८३, भू० ११९.
गोम्मटपुर, श्रवण बेल्गुल ९२, १२८, ११७, ११८, ४८९.
गोम्मटसेट्टि, पु० ८१, ३६१, भू० ९९.
गोम्मटेश्वर मूर्ति भू० १७.
गोयिल गोत्र ३८०, ३४४, भू० १२०.
गोलकुण्डा, राजधानी, भू० १०१.
गोल्ल देश ४०, ४७, ५०.
गोविन्द, पु० ३९५, ४०४.
गोविन्द (द्वि०) रा० न०, भू० ७५.
गोविन्द (तृ०) रा० ना०, भू० ७६, ७८, ७९.
गोविन्दवाडि, स्था० २४, ५१, ४८९, भू० ९१.
गोविन्दसेट्टि, पु० ९७.
गौड, गौड, देश १२४, ११०, ११८, ४५१, भू० १४२.
गौरवा कन्नि, श्री ११२.

घ

घटकवाट, स्था० ११८.
घेरवाल=वघेरवाल.

च

चक्रगोट्ट, नृ० ५१, ५६, ११८.
चगभक्षण चक्रवर्ती, उ० ११७ भू० ८१.
चङ्गनाडु=हुणसूर ताल्लुका, भू० १११.
चङ्गाल्व, रा० व० १०१, भू० ८४, १०९, ११०
चतुस्समयसमुद्धरण, ग्र० ५१
चतुर्मुख कल्कि, न०, भू० ३०.
चन्दले, चन्दाम्बिके, चन्दव्वे, नागदे० की भार्या, ४२, ११०.
चन्दाचारिग (लोहकार) ३८१.
चन्दिकव्वे=चन्दले ५१.
चन्द्रप्रभ वस्ति, भू० ८.
चन्द्रमौलि, मं० १०७, १३४, ४३६, ४५८, भू० ४४, ९७, ९८.
चरेन्नय्य, पु० १८९, भू० ११८.
चलदङ्कमल्ल, उ० ५७.
चलदङ्कार, उ० ५७ भू० ९२.
चलदङ्कराव, उ० १८१, ४९९, भू० ७९.
चलदुत्तरङ्ग, उ०, १८.
चलुव अरसु, पु० ९८.
चाकिसेट्टि, पु० १९१.
चागदकम्ब=स्थागदस्तम्भ ११० भू० ४०.
चागल देवी, नारसिंह प्र०, पो० ४० की रानी ११८.

छ
छन्दोम्बुधि, नामवर्मकृत, ग्रं०,भू०११७.
ज
जक्कणब्बे, जक्कमब्बे, (गङ्गराजकी भावज) ४३, ४४६, ४४७, भू० ५४, ९२.
जक्करसुर होयसलसेट्टि, पु० १६१.
जक्किकट्टे, सरो०, भू० ४९.
जक्किराज, हुल्लके पिता, १३८, भू० ९५.
जगदेकवीर, उ० १८, १०९.
जगदेव, वेल्लगु सर०, भू० १०६.
जगदेव, चो० से० ११८.
जगलट्ट, जगुलट्ट (बोधा) ४३, ५३.
जगवुर, ग्रा० ११७, ११८.
जय, °सिंह (प्र०) चा० न० ५४ भू० ८१, ११९, १८१.
जालिहुद, एक टैक्स, ८१८.
जालिमर्जिब, एक टैक्स ८१८.
जावलि, मङ्गप से० की भार्या, इक्कारकी माता ८१, भू० १०८.
जायसवाल, भू० ६८.
जिनपेट्टे, सरो०, भू० ८६.
जिननाथपुर, ग्रा०, भू० ५०, ५२.
जिनचन्द्र, पु० ७१
जिनदेव (ब) चामु० के पुत्र १०, भू० ९, ११.
जिननाथपुर, ग्रा० ८०, ८१, ११३, ८६०, ८७८, भू० ८८, ९८.
जिनवर्म, पु० ८०८.
जिनवल्लभ, ग्रा० ८१.
जीमूतवाहन, न० ५१.
जीवापेट, स्था० ४०४.
जैनमठ, भू० ४७.
जैमिनि, दा० ५५, ४९२.
जोगब्बे, जोगाम्बा, बम्मदेवकी भार्या, ४४, १३०.
ट
टाकरी लिपि, भू० ११९.
टामस साहब भू० ६७, ६८.
ठ
ठट्ट, दे० ५४, भू० १४१.
त
तच्चूर ग्रा० ४४०.
तञ्जनगरम्, तञ्जपुरी=तञ्जोर ४१६, ४१७, ४४१.
तट्टगेरे, स्था० २४.
तरिहलि, ग्रा० ११८.
तरेकाडु=तलकाडु, पु० ११.
तलकाडु, तलकानपुर पु० ४५, ५१, ५६, ५९, ९०, ११८, ११०, ११७, ११८, १८१, १८४, १६०, ८८५, ८८१, ४९१, ४९३, ८९४, ४९७, भू० ८१, ८८, ९०.
तलेयूर, ग्रा० ५६, ८११.
ताकाबोदा, युद्धस्थान, भू० १०१.
तारेकेरे, सरो०, भू० ५२.
तिरुक=तार्निक, तिरुक, ग्रा० ८५, ५१, ९०, १६० भू० ९०.
तिरुपेनुर, एक टैक्स, ११८.

तिम्मराज, एनूर मूर्ति प्रतिष्ठापक, भू० १५.
तिरिकुल, परिया जा०, ११६.
तिरुनारायणपुर=मेल्कोटे, ग्रा० ११६.
तीर्थद बसदि, कलत्तवाडिका जै० मं० ४५९, ४६०.
तुङ्गभद्रा=तुङ्गभद्रा नदी, १२१
तुलुव, देश, ५१, ११४, ११०, ११७, ४९१, ४९४.
तेवगुडि, ग्रा० १८५.
तेरकल, ग्रा०, भू० १११
तेरिन बस्ति, बाहुबलि बस्ति, भू० ११, ११, ८८.
तेरेवूर, ग्रा० ५१, ५६, ४११
[illegible] द तैलप, ग्रा० न०, भू० ७७, ८१, ११७.
तोण्ड, देश ५१.
त्यागद ब्रह्मदेव स्तम्भ=बागडे, भू० ४०
त्रिभुवन चूडामणि=मेगलिबस्ति ११९, ४१० भू० ४६.
त्रिभुवनमल्ल, ड० ४५, ५१, ५६, ५९, ६८, ९०, ११४, ११०, ११७, १६०, ४४५, ४८६, ४९१, ४९२, ४९७, भू० ८९, ८९, ११०.
त्रिभुवनमल्ल देव, °देवहि=त्रिभुवनमल्लि देव (चतुर्थ) ग्रा० न० ४५, ५९, १४४, भू० ८९.
त्रैलोक्यरक्षक=त्रैलोक्य रक्षाबन्ध, भू० ९.
त्र्यम्बकपाल, स्था० १५०.

द

दण्डि, कवि, ५४ भू० ११८
दत्तीवि, पी० ग्रु० ४९
दन्तिदुर्ग, रा० व०, भू० ७५, ८०, ८१.
दशरथ, पौ० न० ११८, भू० ४९१, ४९९
दामोदरजि=श्रीपोंड्रार ४१४
दानचन्द पुरवाल, पु० १५८.
दानमल, पु० १४५
दानशाले बस्ति, भू० ४५
दाम=दामोदर, चो० से० ९०, ११०, ४८९, भू० ९०, १०९.
दासोज, मूर्तिकार, ५०, भू० ७
दिण्डिक, दिण्डिराज, १५१, भू० १११, १४९
दिवाकर नागवर्म, पु० ९४
दिवाकर, वी० व०, भू० १०९
दीवर, पी० व० ४११
दीवरराज, पु० १४०, १५१
दुर्विनीत, ग० व०, भू० ७१
देमति, देमवति, देमिसेट्ट=देवमति, की ४६, ४९ भू० ९१
देवकीर्ति पण्डा, भू० ५८.
देवगिरि, भू० ९१
देवण दण्डनायक, ९२.
देवण्णसेट्टि, ग्रा० १११
देवर मेडहळ्ळि १४०.
देवरहोन्न, ग्रा० १००.
देवराज ड०, मि० व०, भू० ११, १०१.

देवराट्, देवराय, द्वि०, वि० न० १२५, भू० १०४, १०५.
देवराजे अरसु, म० ९८.
देवराय महाराज, भू० ४६,
देवीरम्मणि, स्त्री भू० ६.
देशकुलकर्णि, उ०, ११६.
दोड कृष्णराज वडेयरैय (प्र०) मै० न० ८६.
दोडनकट्टे, ग्रा० १३३.
दोड्डदेवराज ओडेयर, मै० न०, भू० ४५.
दोरसमुद्र=द्वारावती ९६, ४९१,४९४.
द्रोहघरट्ट, उ० ४४, ५९, ९०, १४४, ३६०, ४७८, ४८६.
द्वारावती, द्वारावतीपुर (दोरसमुद्र) ४५, ५३, ५६, ५९, ८१, ९०, १२४, १३०, १३७, १४४, ३६०, ४८६, ४९१–४९४, ४९७, ४९९, भू० ८१, ८४, ८६.

ध

धनायी, स्त्री ११९.
धरणेन्द्र शाह्नी पु० ४१५.
धरमचन्द, पु० ११८, भू० ४१.
धरमासा, पु० ३८६.
धर्मस्तल=धर्मस्थल ४३३.
धर्मांसा, पु० ३६५, ३७९.
धवलसर, धवल सरोवर ५४, १०८, भू० १.
धारा नगरी ५५, १३८.
[illegible] ५४, ४९२, भू० १८१, [illegible] १४२.
ध्रुव, रा० न०, भू० ७५, ७८, ७९.

न

नकुलार्य, मं० ५००, भू० ११०.
नगर जिनालय १०८, १२९–१३१, २५२, ४४३, भू० ४५.
नञ्जलि, दु० ५६, १२४, १३०, १३० १३७, १४४, ४९१,४९४ ४९७.
नञ्जरायपट्टण, ग्रा० १०३, भू० ३६.
नदि (राष्ट्र) ३४.
नन्द, रा० व०, भू० ६९.
नन्नि, नो० न०, भू० १०९.
नरग, सर० ३८.
नरसिंग, "सिंह" वर्म, चो० सर० ९०, १३८, १४४, ३६०, ४८६, भू० ९०, १०९.
नरसिंहाचार रायबहादुर, भू० ६३,७०.
नविलूर, ग्रा० २४.
नहुष, पौ० न० ५६.
नाग, °देव, वम्मदेव म० के पुत्र ४३, १२२, १३०, १३७, ४९०.
नागकुमार, पौ० न०, भू० ४७.
नागति, स्था० २९१ भू० ११८.
नागदेव, म० बलदेवके पुत्र ५१, भू० १३, ४५, ९८.
नागनायक सर० १८, भू० ११३.
नागरनाविले स्था० ३६१.
नागले, बूचण म० की माता ४६, ४९.
नागवर्म, नरसिंह म० के गाती भू०७५.
नागवर्म, मूर्तिकार, २७२, भू० ११०, ११८.

पातालमल्ल, सर० १८, १०९.
पानीपथ ११८, १४०, १४६, १४७, १५८ भू० १२०.
पाभसे, इ० १८.
पार्श्वनाथ वस्ति भू० ४, १६, ६१, ९७.
पासवाड, एक देश ४१४.
पिंग, पिंगल, योधा ५८ भू० ७९.
पिंगल दण्ड नायक, उ० ४०.
पीलखा गोत्र १९३ भू० ११९.
पुंडगेरि, भू० ५.
पुन्नाड देश, भू० ५७.
पुरवर्ग, एक देश ४१४.
पुरवाल, ज्ञा० १५८.
पुरेपान, स्था० १२१
पुलिंग, पं० न० ५६.
पुलकेशी प्र०, रा० न०, भू० ४०.
पूर्णय्य, कृष्णराज भू०, मै० न० के पि० ४११ भू० १००
पेनुगोंड—हनावती, राजधानी, भू० १११.
पेनुगुण्ड, ग्रा० ५४
पेरुमालोपक—ब्राह्मी १११.
पेनेलचपु मिंग ४८.
पेरंड, स्था० १३.
पैलार्य, कु० २०८.
पोंडवर्धन, भू० १०९.
पोकरहल, पोकरणिपल्ल, पोकरहल्ली, पोकरल्ली, पोकरवली माता ४८, ५०, ५९, ६०, ९०, १००, ११०, ४६१ भू० ६, ९३, ९९.
पोम्बुच, पोम्बुर्च, इ० ५१, ५६, १४४.
पोय्सल, रा० वं० ५१, ५४, ५६, २२९.
पोय्सलपेट्टि, भू० १२, ४८.
पोय्सूरपत्तन देश, भू० ५६.
पोदनपुर, भू० २४, २६.
प्रचण्ड दण्ड नायक, उ० ५१, ५१.
प्रताप चक्रवर्ति, उ० ९०, ९६, ११६, ११०.
प्रताप नारसिंह=नारसिंह प्र०, हो० न० ११६.
प्रतापपुर, ग्रा० ४०.

फ

फ्लीट, डीबर भू० ६१, १५, ७०.

ब

बङ्गपुर=बङ्गपुर १८, ५५, ११० भू० ७१, ९६.
बङ्गोर नगर, भू० ७१, ९१.
बडरवण्ड, इ० २०९, २१८.
बनवासे (बनवासि) इ०, व प्रान्त १८, ११८, ११०, ११०, ४५१, ४९८, ४९९, ४९८.
बलिंग, बलिगा, ग्रा०, १००.
बल्ल, देश, वं० १४४ भू० ६१, ९२.
बल्लेरायि० ८१, १२१, ११८, ११०.
बल्लेयवङ्ग, ग्रा० ११८, ४५० भू० ८८, ९८.
बल्लेल गावड वं० ११८, १११, ४५०.
बहुकोटि, बहो०, ११०, ११८.
बाण, बाहु, भू० १०१.

बम्बर देश ११८.
बलगुल (बेल्गुल) ४१४
बलदेव, बल, बलण, मं० ५१–५२, १५१, भू० १५,११.
बलि, बलीन्द्र, पं० न० ५१,११८.
बलिपुर ५५, भू० ८२.
बलेवपहण, •हण, इ० ५६.
बल=बलदेव म० ५१.
बलम=बलभ रा० न० २४.
बल्लाल,प्र०, हो० न० १०५, १०८, ११५, ११७, १४४, ४९१, ४९३ भू० ४८, ८४,८७, १००.
बल्लाल, वीर बल्लाल, द्वि०, हो० न० ९०,१२४,१३०,४९४,४९५ भू० ४४ ४५, ५१, ८४, ८५, ९५, ९६, ९८, ९९.
बल्लेव, से० ३१९, ३२०.
बल्लेयकेरे, सरो० ११७, ११८.
बसदि, एक टैक्स, ११७.
बसविसेट्टि, पु० ७८, ८६, ८७,११८, १२७, १६१ भू० १६, १७, १२१.
बस्तिहल्लि, ग्रा० १०७.
बहमिगे, ग्रा० १६१.
बहमनी राज्य भू० १०१.
बागडेगे, ग्रा० ८५.
बागण•वे, स्त्री १४४, २५१.
बागियूर, ग्रा० ६१.
बाणारसि (काशीपुरी) ५१, ५६, ५९, ८३, ११६.
बायिक, शोभा ६१.
बारकनूर, ग्रा० ९४
बालकिसनजी, पु० ११९, १४०.
बालादित्य, सर० २९६, भू० ११ ११८.
बालुराय, पु० १४२
बास, पु० २६३, २७९, २९२.
बाहुबलि, पु० १६१.
बाहुबलि बस्ति=ठोरिनबस्ति, भू० १
बाहुबलिसेट्टि, प्र० ७८, ८६, १६१.
बिटेयनहल्लि, ग्रा० ११०.
बिट्टिदेव=विष्णुवर्धन, हो० न० ५ ११६.
बिडिसि, ग्रा० २५६.
बिदर राज्य, भू० १०१.
बिदियमसेट्टि, पु० ८६, १२७.
बिन्दुसार, मौ० न०, भू० ६८.
बिम्बसार=श्रेणिक मौ० न०, भू० ६
बिम्बसेट्टियकेरे, सरो० ११७, ११
बिरुदस्तावि मुखतिलक, उ० ४१,४ ४७, ५१, ५९, ४८६.
बिरुदेन्तेम्बर गण्ड, उ० ४१४.
बिलिकेरे, ग्रा० ९८.
बिल्हण कवि, भू० ८१.
बीजापुर राज्य भू० ८०, १०१.
बीरधन केरे सरो० ११७, ११८.
बीरबोर, उ० ५७.
बुक्कण, से० ८२ भू० १०४.
बुक्कराय, वि० न० ८२, ११६, १०१, १०२, १०४.
बुचानन साहब, भू० १८.

बूचण, बूचिमय्य, बूचिराज, मं० ४०, ४६, ४९, ११५ भू० ९१, ११२.
बेक्क, प्रा० ९०, १०७, १२४, २१२, ४७५, ४७७ भू० ९६, ९७.
बेक्कनकेरे, सरो० १४४.
बेगूर, प्रा० ३७०, भू० १२२.
बेंडिगे, एक टैक्स, ४३४.
बेडुगनहल्लि, प्रा० ११७, ११८.
बेर्क=बेक्क, प्रा० ५९, ४९१.
बेलगोल, बेलगुल, बेल्गोल, २४, ४४, ५६, ५९, ६७, आदि.
बेलिकुम्ब, स्था० ४७९, भू० ५२.
बेलुकरे, बेलुकेरे, स्था० ४१, भू० ११२.
बेलुगुलनाडु प्रदेश, ४८४.
बेल्लूर राजधानी, भू० ८४.
बैच, बैचप, से० ८२, १०४. भू० १०४.
बैयण, पु० ३७० भू० १२२.
बैरोज, मूर्तिकार. ४७९, भू० ५२.
बोकवे हेग्गडिति स्त्री ३६१.
बोकिमय्य, छेत्रक ५३.
बोकिसेट्टि, पु० ७८, ८६, ८७, ३६१.
बोगाय्च, सैनिक ६०.
बोगार राज, सर० ४१.
बोगेय, योधा ६०.
बोप्प, °देव, से० १४४, भू० ४९.
बोप्पण चैत्यालय=त्रैलोक्यरञ्जन ६६, भू० ९.
बोम्मिसेट्टि, पु० ८४, १०४, १३७.
बोम्मण, म० ८४, १०३.
बोम्मण, बोम्मण्ण कवि ८४ भू० १०५, १०६.
बोयिग, योधा ६०.
बौद्ध ३९, ४०, ४९२.
बौरिंग साहब, भू० १८.
ब्रह्मक्षत्रकुल १०९ भू० ७३.
ब्रह्मदेव मंदिर, भू० ४२.
ब्रह्मदेव स्तम्भ, भू० ३७.

भ

भगदत्त, पौ० न० ५३, २३५, ४९४.
भगवानदास, पु० ३३८.
भण्डारि बस्ति=भव्यचूडामणि ११७, ४३५, ४३६, ४४१, ४५७, भू० ४२, ४३, ४९, ९४, १०६.
भण्डेवाड, प्रा० ३६६.
भद्रबाहुकी गुफा, भू० १५, ५५.
भरत, °भव्य, °ईश्वर, से० ४०, ११५, ३६८, ३६९ भू० १५, १९, ९३, ११३
भरतेश्वर मूर्ति, भू० १३.
भल्लातकीपुर, भू० १०६.
भव्यचूडामणि, उ० ११८.
भव्यचूडामणि=भण्डारिबस्ति ११७, भू० ४३, ९५.
भाइ, दर्शक १०५.
भाइपद, स्था०, भू० ५८.
भानुदेव हेग्गडे, पु० ३३५.

महासामन्ताधिपति, उ० ४३, ४४, ४७, १४४.
महीपाल कन्नौज न०, भू० ७६.
माकणब्बे, गंगराजकी मातामह, ४४, ४५, ५९, ९०, ३६०, ४८६ भू० ८९.
माचिकब्बे, पोय्सलसेट्टिकी माता, २२९ भू० ८८.
माचिकब्बे, शान्तलदेवीकी माता, ५०, ५३, ५६, भू० १२, ९३.
माचिराज, पु० ३५१, ४९७
माडगद, माडवगढ, ३८२, ३८६, भू० ११९, १२०.
माडिगूर, ग्रा० ११६.
माणिक्कदेव, सर० १०५ भू० ११२.
माणिक्य भण्डारि, उ० ४०, १२८.
मातूर, वंश, ३८.
मानगप, इरुगपके पिता, ८२ भू० १०४.
मानभ पु०, भू० १५.
मान्यखेट, न०, भू० ७६.
मार, मारमय्य, गंगराजके पितामह ४४, ४५, ५९, ९०, १४४, ३६०, ४८६ भू० ८९.
मार, सोवण नायकके पुत्र १२४.
मारगौण्डनहल्लि, ग्रा० ८६.
मारसिंग, °गय्य, शान्तलदेवीके पिता, ५३, ५६, ३११, भू० ९३, ११७.
मारसिंग=गंगवज्र, गं० न०, भू० ७४.
मारसिंह, गं० न० ३८, भू० ११, ७२, ७३, ८१, ७४–७९, ११७.
मारुहल्लि, ग्रा०, भू० ९७.
मारेयनायक, पु० ४९४.
मार्गेडेमल=पिट्टुग, सर० ५८ भू० ७९.
मालव, देश, ५४, १३८, ४९९ भू० ७६, १४१.
मावन गन्धहस्ति, उ० ५८ भू० ७९.
मासवाडिनाड, प्रदेश, १२४.
मुण्डा लिपि भू० ११९.
मुत्तगदहोत्रहल्लि, ग्रा० १३३.
मुदगेरे ताल्लुक, भू० ८३.
मुद्राराक्षस, ग्रं०, भू० ६८, ६९.
मुनिगुण्ड सीमे, प्रदेश, ११६.
मुल्लूर, ग्रा० ४४, ५४, भू० ९०.
मुहम्मद तुग़लक, भू० १०१.
मूडबिद्री, ग्रा०, भू० ४४.
मूलभद्र कुल, १२८, १३०.
मेरुगिरि कुल ४७४.
मैगस्थनीज़, भू० ६७.
मैसूर, मैयिसूर, महिसूर, महीसूर, ८१, ८४, ९८, १४०, ४२४, भू० ७१, १०५, ११०.
मोडेनविले, ग्रा०, ५१, ५६.
मोतीचन्द्र, पु० ३३७.
मोनेगनकडे, ग्रा०, ४९६.
मोरयूर, ग्रा० ४०८.
मोरिङ्केरे, स्था० ५१, भू० ९३.
मोसले, ग्रा० ८६, ८७, ३६१.
मौर्य, रा० वं०, भू० ६९.

य

यक्षराज, बुक्कके पिता, ४०, ११७, ४११.

यगलिय, ग्रा० ८९.
यदु, पौ० न० ५६, ११७, ११८.
यदु, कुल, ४३४, ४९९.
यदुतिलक, उ० ४९३.
यवरेगोत्र ११८.
यशस्वती, भरतकी माता, भू० २४.
यादव, कुल, ४५, ५३, ५६, ५९, ८१, ९०, १२४, १३०, १३७, ११८, १४४, ३६०, ४८६, ४९१–४९५, ४९७, ४९९, भू० ८१, ११०.
विक्रमादित्य, ८२.
वेरुआविके, एक टैक्स, ४३४.
वोणम्बरायण, मं० ११८, भू० ९५.

र

रक्षसमणि-मंगलवत्र ६० भू० ७४, ७७, ११७.
रत्न्य, पु०, भू० ४२.
रतिवर्ण, उ० ५७ भू० ७९.
रणरङ्गभीम उ० ४९४.
रणरङ्गसिंग उ० १०९.
रणसिंग, म० १०९.
रणावलोक कव्वय, उ० व० ९४.
रत्नचम्बिल, न०, भू० १४१.
रत्नसागर पु० ४०३.
राइस साहब, भू० ६१, ६८.
राक्षस, मं०, भू० ६९.
राचनहल्लि, ग्रा० ८१.
राचमल्ल, देव, पं० व० ८५, ११७, ११९, भू० ९, १४, १५, १६, ७१, ७८.
राचेयनहल्लि, राचनहल्ल, ग्रा० १२९, ४९२, भू० ५१.
राजकीर्ति, पु० ११९.
राजचूडामणि मार्गेडेमल, रा० न० इन्द्र चतुर्थके श्वसुर ५७, ५८ भू० ७९
राजतरंगिणी, ग्र०, भू० ६८.
राजमार्तण्ड, उ० ५७, ४९७ भू० ७९
रावादित्य, चो० न०, भू० ७७
रावादित्य, चा० न० १८, भू० ८१
राजेन्द्र चोल, न०, भू० १०९.
राजेन्द्र चोल को० न०, भू० ११०
राजेन्द्र पृथ्वी, को० न० ५००.
राम, पौ० व० ४९९.
रामचन्द्र प०, पु० ३६१.
रामदेवनायक, सोमेश्वरके मंत्री ११८, भू० ९९.
रामराव, वि० व०, भू० १०१.
रामानुज, वैष्णवाचार्य ११६, भू० १४.
रामेश्वर, हिन्दू तीर्थ ८४.
रायराचचूडामणि उ० ४१०.
रायरायपुर, पु० ५१, १२४, ११७.
राष्ट्रकूट, रा० वं०, भू० ७५, ८१.
रुक्मिणीदेवी, कृष्णकी रानी ५६.
रूपनारायण वसदि-कोल्लपुरका वं० व० ४०.
रेवारि, केरल ५४.
रैसिदेव, वड्डाउ [दि० के से० ४७१, भू० ५१, ९८.
रोह, उ० ५२.

ल

लक्कले, लक्कवे, लक्षिदेवि, लक्ष्मीदेवी, =गंगराजकी भार्या, ४५–४९, ५९, ६३, भू० ११, ९१, ९२.
लक्कि, स्त्री भू० १५.
लक्किदोणे, कुण्ड, भू० १५.
लक्ष्मण, हुलके भ्राता १२८, भू० ९५.
लक्ष्मणराय, पु० ३४३.
लक्ष्मादेवी, लक्ष्मीदेवी=विष्णुवर्धनकी रानी १२४, १३७, १३८, ४९४, भू० ९४.
लक्ष्मीधर=लक्ष्मण, रामके भ्राता ५१.
लक्ष्मीपण्डित, पु० ४३४.
लट्टू, डाक्टर, भू० ६३.
ललितसरोवर ७९ भू० ३५.
लंकापुरी १०९
लाडदेश १२४, १३०, ४९१.
लाट=गुजरात, भू० ७६.
लोकविद्याधर, पु० ६१, भू० ७४.
लोकायत दर्शन ४९२.
लोकाम्बिका, हुलकी माता ४०, १३७, १३८, ४९१, भू० ९५.
लोकिगुण्डि, ग्रा० ५३, १३०, १४४.
ल्यूमन साहब, भू० ६७.

व

वट्टापुर=वट्टापुर ५५.
वडिव, को० न०, भू० ११०.
वम्मल, न० ३८.
वज्जलदेव, वज्जिलदेव, चा०न० १०९ भू० ७८.
वट्टव्यवहारि, उ० ८६, ३६१.
वट्टेग, रा० न० अमोघवर्ष तृ० ६०, भू० ७४.
वत्सराज, न० ५३, १४४, २३५, ४९४, ४९९, भू० ११८.
वनगजमल्ल, उ० ३८.
वनवासि=वनवासे, राज्य ३८, ११८.
वरुण, ग्रा०, भू० ८२.
वर्धमानाचारि, लेखक ४३, ४४, ५९.
वलभ गोत्र ४०५.
वल्लभराज=कृष्ण द्वि०, रा० न०, भू० ७६.
वल्लूर, ग्रा० १३८.
वसुधैकबान्धव, उ० ४७१.
वस्तियग्राम ८३.
वाजि वंश ४०, १३७, १३८ भू० ९५.
वातापि=बदामी, राजधानी भू० ८०.
वाराणसी=बनारस १३३, १४०, ४८६.
वासन्तिकादेवी १२४, १२०, १३७.
विक्रमाङ्कदेव चरित, ग्रं०, भू० ८१.
विक्रमादित्य, चा० न० ४९४ भू० ८०, ८१.
विजयनगर, भू० १०१.
विजयमल्ल, पु० ३५९.
विनयादित्य, हो० न० ५४, ५६, १२४, १३०, १३७, १३८, १४४, ४९१–४९५ भू० ८४–८७, ९४, ९८, १४०.
विनेयादित्य=विनयादित्य, हो० न० ५१

विन्ध्यगिरि १८.
विराट पी० न० ११८.
विलसनकट, एरो० ५३, ५६.
विशाखा (राज्ञी) १.
विशाखादत्त पंडित, मै०, मू० ३३.
विष्णु, °वर्धन, होन०३३–४५, ४७, ५०, ५२, ५३, ५६, ५५, ६२, ६०, ११४, ११०, ११७, ११८, १४४, १६०, ४४५, ४७८, ४८६, ४९१–४९५, ४९७ मू० ६, १०–१२, १४, १६, ४९, ५०, ८३–९५, १००, १११.
विष्णुभट, मू० १४३.
वीरगङ्ग, उ० ४५, ५१, ५६, ५९, ६०, ११४, ११०, ११७, १६०, ४४५, ४८६, ४९३.
वीर नारसिंह (द्वि०) होन० ८१.
वीर नारसिंह (तृ०) होन० ८६.
वीर पञ्चराय ११० मू० १०९.
वीर पाण्डय, कारकल मूर्तिके प्रतिष्ठापक, मू० १४.
वीर बल्लाल (द्वि०) होन० ८०, १००, १२४, १२८, ११०, ४९३, ४९९.
वीर राजेन्द्र पेडे, आ० ४१०.
वेणूर, आ० १५३.
वेल्लोल-वेल्लोल १७–१९.
वेल्लार, आ० ७.
वेलूरु, आ० ८०.
वैशेषिक, दर्शन ३९.
वैष्णव, सम्प्रदाय ११६, ४९२, मू० १०२.

श

शङ्कराजा, मू० ३०.
शङ्कर नायक, एर० ७३, ११०, १४९, मू० १०९.
शत्रुभयङ्कर म० ५४.
शनिवार सिद्धि ह० ११४, ४१८, ४९९.
शबर, जा० ३८.
शम्भुदेव, चन्द्रगौडि ब०के पिता ११८ मू० ९७.
शम्भुनाथ, पु० १४८.
शरच्चन्द्र पाण्डय, प्रा०, मू० ९९.
शरपुर-अर्गळि, आ० ५६, ४९०, मू० ८३, ८८.
शान्त-देवराज ४९९ मू० ९९
शान्तवर्म, पु०, मू० ३३.
शान्तल देवी, पूंवरासकी भार्या ११९ मू० ९०.
शान्तला, शान्तलदेवी, प्रभु,६५५५ राणी ५०, ५३, ५६, ६९ ७०, ७१, ७९, ९३.
शान्तलेश्वरी, ८८५५५ ८८ ११९ मू० १६, ८८.
शान्तिनाथ ८५५ मू० ७, ५०, ९१
शान्तिसेन ८५५ मू० १६, ८१, १०६
शान्तलेश्वरी-पुष्पवृष्टि ५६ मू० १०, १६.

शाह कपूरचन्द पु० ३३७.
शाह हरखचन्द पु० ३३६.
शिकारपुर ग्रा०, भू० ८२.
शिबि, पौ० न० १३८.
शिवगङ्ग, स्था० ५३ भू० ९३.
शिवमार (द्वि०) ब० न० २५६ भू० ८, ७४, ७८.
शिवमारन बसदि भू० ७४.
शिशुपाल, पौ० न० ३८.
शुभतुङ्ग, कृष्ण (द्वि०) रा० न०, भू० ७६
शूद्रक, पौ० न० ४९४.
शैशुनाग, रा० व०, भू० ६९.
श्रवण बेल्गुल ४३३, ४३४.
श्रियादेवी, सिंगिमय्यकी भार्या, ५३.
श्रीकरणद हेग्गडे, उ०, ४०.
श्रीकरण रेचिमय्य, मं० ४७१.
श्रीधरबोज, मूर्तिकार, २४१, भू० ११८.
श्रीनिलय=नगर जिनालय, भू० ४५.
श्रीपुरुष, गं० न०, भू० ८, ७१.
श्रीपृथ्वीवल्लभ उ०, भू० ७६.
श्रेणिक, न० ४३८.

ष

षड्दर्शनस्थापनाचार्य, उ०, ८४.
षड्धर्मचक्रेश्वर, उ० १४०.

स

सगर, पौ० न० १२४.
सग्राम जगदेव, उ० ४७, ५३, १४४.
सत्यमगउ, ग्रा० ९८.
सत्याश्रयकुलतिलक, उ०, १४४, ४९२, ४९७.
सन्तोषराय, पु० ३४०, ३५०.
सनधिगतसत्व महाशब्द, उ० ४३, ४४, ४७, ५६, ९०, ११३, १२४, १३०, १३७, १४४, ३६०, ४९२, ४९४, ४९७, भू० ८२, ११०, ११८.
सनवाचार, एक टैक्स, ४३४.
सराउगे, ग्रा० ३४०, ३५०, भू० १२०.
सर्पचूडामणि, पु० १३७.
सर्वनन्दि, पु० १६२.
सळ, हो० न० ४९४, ४९५, भू० ८३, ८५.
सल्य, ग्रा० ५९, ४९३, ४९५, भू० ८८.
सवणेरु, ग्रा० ८०, ९०, ११७, ११८, ३६१, भू० ९५, ९६.
सवतिगंधवारण बस्ति, ५३, ५६, भू० ११, ९२, ९३.
सागर, ग्रा० १२४.
साणेनहल्लि, ग्रा०, भू० ४१, ५४.
सावन्त बसदि, कोल्हापुरका जै० मं० ४७१.
साविमळे, गिरि, ५३.
साहस तुङ्ग (दन्तिदुर्ग, रा० न० I) ५४, भू० ७९, ८०, ११९.
सिद्धिमय्य, पु०, भू० ९३.
सिद्धवस्ति, भू० १८, १०६.
सिद्धशिला=सिद्धशिला, भू० १९.

हीरासा, पु० ३६४, ३६६, ३८२ ३८६, ३९३.
हुलिगेरे, ग्रा० १३१.
हुल्ल, °राज, बल्लाल द्वि० के से०, ४०, ४२, ८०, ९०, १२४, १३७, १३८, ३१६, ४९१, भू० ४३, ७५, ९४–९७.
हुल्लपट्ट, ग्रा० १२४.
हुल्लहण, एक टैक्स, ४३४.
हुल्लेय, पु० ८७.
हेज्जेड, ग्रा० ५३.
हेडेजोय, पु० १४३.
हेमवती नदी, भू० १०९.
हेम्माडिदेव, सर०, १२४,
हेगंडेकण्ण, पु०, भू० ८०.
होन्नचगेरे, ग्रा० ९६.
होन्नलि, ग्रा० ४८४.
होन्निसेट्टि, पु० ८७, ३६१.
होन्नेनहल्लि, ग्रा० १०७.
होन्नेय, पु० ८७.
होय्सळ, रा० व० ४४, ४७, १२ १२९, १३०, १३७, १३८, ४५ ४९२, ४९४, ४९५, ४९७, ४ भू० ८१–८३, १०१.
होय्सल सेट्टि, पु० ८६, ३६१.
होय्सलाचारि, लेखक, ४४.
होलिसेट्टि, पु० ८६.
होलेसेट्टि, पु० ३६१.
होसगेरे, सरो० ५९.
होसपट्टण, ग्रा० १३६.
होसबोलल, ग्रा० ८४.
होसहल्लि, ग्रा० ८३, ८४, ४१४.